

कुरआँन मजीद

कंज़ुल ईमान (हिन्दी)

अज़
सय्यदुना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी
फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

रज़ा एकेडमी

कंज़ुल ईमान
फ़ी
तर्जमतिल क़ुरऑन

तर्जमा

सय्येदुना अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा
क़ादिरी बरैलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु

ब-फ़ैज़

हुज़ूर मुफ़्ति-ए-अअ्ज़म हज़रत अल्लामा शाह मुहम्मद
मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी रदियल्लाहु तआला अन्हु

हिन्दी लिपि

जनाब हाजी मुहम्मद तौफ़ीक़ रज़वी (नवी वाला)
(सदर, रज़ा एकेडमी, शाख नांदेड़)

पुरूफ़रीडिंग

जनाब मुहम्मद शमीम अंजुम नूरी (बी०ए०) (प्रतापगढ़ी)

शाएअ कर्दा

रज़ा एकेडमी

26, कांबेकर स्ट्रीट, मुंबई न. 400 003

सने-इशाअत 10 शव्वालुलमुकर्रम 1418 हिजरी, फ़रवरी 1998.

सिलसिल-ए-इशाअत नं. 101

अर्ज़े नाशिर

मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अअ्ला हज़रत, सय्येदुना इमाम अहमद रज़ा ख़ान क़ादिरी बरैलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु का शुमार बर्रे सग़ीर, पाक व हिन्द के उन दीनी व मिल्ली रहनुमाओं में होता है, जिनसे एक ज़माना फ़ैज़याब हो रहा है। आप जिस दौर में बर्रे सग़ीर के मुसलमानों की दीनी क़यादत फ़रमा रहे थे, वो बड़ा पुर आशोब दौर था। अंग्रेज़ और अह्ले हुनूद, मुस्लिम तहज़ीब-ो तमद्दुन को ख़त्म कर देने के दर पे थे। वो लोग मुसलमानों के दिलों को रूहे इस्लाम और रूहे इश्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से ख़ाली कर के उन्हें अपने कूव्वत-ो इक़्तिदार के सामने झुकाने के लिए साज़िशें कर रहे थे कि ऐसे नाज़ुक वक़्त में इमाम अहमद रज़ा ख़ान क़ादिरी बरैलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु की ललकार ने उन के मन्सूबों पर पानी फ़ेर दिया। आप ने इल्मी और अमली जिहाद फ़रमा कर मुसलमानों को उनका भूला हुआ सबक़ याद दिलाया।

अअ्ला हज़रत बरैलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने मुख़्तलिफ़ उलूम और फुनून पर एक हज़ार से ज़ाएद किताबें और रिसाले तस्नीफ़ फ़रमाए, जो आप की जलालते इल्मी के शाहकार हैं। उनमें फ़ताव-ए-रज़विया जिसकी बारह जिल्दों को रज़ा एकेडमी मुंबई ने 25 सफ़रूल मुज़फ्फ़र 14 15 हिजरी यानी सन् 1994 ई. को शाएअ किया। और कुरऑन मजीद का तर्जमा कंज़ुल ईमान इम्तियाज़ी शान रखते हैं।

कंज़ुल ईमान ने मुख़्तसर मुद्दत में जो मक़बूलियत हासिल की है, वो शायद ही किसी और तर्जमे को नसीब हुई हो। कंज़ुल ईमान यूँ तो ब-ज़ाहिर एक सलीस (आसान) उर्दू तर्जमा है, लेकिन सच्ची बात तो ये है कि आसान तर्जमा होने के साथ साथ मोअ्तबर व मुस्तनद तफ़ासीर का खुलासा और निचोड़ भी है। कंज़ुल ईमान के एक-एक सतर से इश्क़े रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फूटा पड़ता है।

यूँ तो कंज़ुल ईमान शरीफ़ का तर्जमा अब तक दुनिया की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में शाएअ हो चुका है, जो हमारी मअ्लूमात में है वो इस तरह हैं। **उर्दू, अंग्रेज़ी, डच, मोरेशन, बंगला, सिन्धी, गुजराती,** वग़ैरहुम।

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन अब रज़ा एकेडमी मुंबई को ये शरफ़ हासिल हो रहा है कि वो कंज़ुल ईमान को हिन्दी रसमुलखत में पहली बार शाएअ कर रही है। ज़ेरे नज़र हिन्दी के इस तर्जमे को सब से पहले हिन्दी रसमुलख़त में जनाब हाजी मुहम्मद तौफ़ीक़ साहिब रज़वी (सदर रज़ा एकेडमी, नायगाँव) ने किया। उसके बाद जनाब शैख़ महमूद साहिब व जनाब मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब (बाटली वाला)ने, फिर जनाब मौलाना नौशाद आलम साहिब ने व जनाब मौलाना अब्दुल क़ादिर साहिब हबीबी ने, फिर जनाब मुहम्मद सुहेल साहिब रज़वी और जनाब मुहम्मद असलम साहिब ने और धुलिया के जनाब सय्येद अंजुम अली रज़वी ने इस हिन्दी तर्जमे के रस्मुलखत को बग़ौर देखा।

हिन्दी तर्जमा की सिहत अअ्ला हज़रत अलैहिर्रहमा के एक क़दीम नुसख़े से मौलाना मुहम्मद असलम रज़ा साहिब मिस्बाही व जनाब मुहम्मद शमीम अंजुम साहिब नूरी ने हरफ़-ब-हरफ़ मिलाया जो रज़ा एकेडमी में महफ़ूज़ है।

सब से आख़िर में जनाब मुहम्मद शमीम अंजुम साहिब नूरी प्रतापगढ़ी ने काफ़ी मेहनत और लगन से हिन्दी पुरूफ़ रीडिंग के फ़राईज़ अंजाम दे कर इस काम को पायए तक्मील तक पहुँचाया।

जनाब मुहम्मद आरिफ़ साहिब रज़वी ने बड़ी दिल जमई से इसकी इशाअत में कोशिशो मेहनत की। जनाब मुहम्मद रफ़ीक़ साहिब बरकाती ने भी इसकी इशाअत में बड़ा तआवुन किया। दुआ है कि मौला तआला हम सबको इसकी जज़ा अता फ़रमाए और हम सब को सय्येदुना सरकारे अअ्ला हज़रत व हुज़ूर मुफ़्ति-ए-अअ्ज़म रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल फ़रमाए और ख़ातिमा बिलख़ैर हो। **आमीन !**

इतनी काविशों के बाद भी अगर हिन्दी रसमुलख़त में किसी क़िस्म की कोई ग़लती या तस्हीह आप हज़रात की नज़र से गुज़रे तो बराहे करम रज़ा एकेडमी मुंबई को ज़रूर आगाह फ़रमा दें ताकि दूसरे एडीशन में दुरूस्त कर दिया जाए।

आज ज़रूरत इस बात की है कि कंज़ुल ईमान शरीफ़ को शहर-शहर, गाँव घर-घर पहुँचाया जाए ताकि हम सब मस्लके अअ्ला हज़रत की रौशनी सिराते मुस्तक़ीम पर चलते हुए कामयाबी की मंज़िल पालें।

असीरे मुफ़्ति-ए- अअ्ज़म,

मुहम्मद सईद नूरी

बानी व जनरल सेक्रेट्री

रज़ा एकेडमी - मुंबई.

२७ रमज़ानुलमुबारक १४१८ हिजरी

786/92

कंज़ुल ईमान की ख़ुसूसियात

क़ुरऑन तो ईमान बतांता है इन्हें
ईमान ये कहता है मेरी जान हैं ये

सरकारे अअ्ला हज़रत अज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीन-ो मिल्लत सय्येदुना इमाम अहमद रज़ा खान अलैहिर्रहमत-ो वर्रिद्वान ने तमाम आलमे इस्लाम, बिलखुसूस बर्रे सग़ीर और हिन्द-ो पाक के मुसलमानों पर ''कंज़ुल ईमान फ़ी तर्जमतिल कुरऑन'' की शकल में एक ऐसा अज़ीम एह्सान फ़रमाया जिसे ग़ैरों ने सराहते हुए तस्लीम किया और अपनों ने उसे अपने क़ल्ब-ो ज़िहन के महफ़ूज़ खानों में दमे - आख़ीर तक सजाए रखने में अपनी अैन सआदत समझी और समझते रहें गे। आपने कुरआनि-मुक़द्दस का ऐसा आसान और बा-मुहावरा उर्दू तर्जमा फ़रमाया कि रूहे-कुरऑन की हक़ीक़ी रौशनी से ईमान-ो अक़ीदा का वो महल मुनव्वर हो उठा जिसे औरों के तर्जमों ने बद अक़ीदगी और गुमराही की काल कोठरी में क़ैद कर रखा था।

कंज़ुल ईमान के एक-एक लफ़्ज़ से इश्क़े रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और जमीअ अंबिया अलैहिमुस्सलाम के अदब-ो एह्तराम की वो ख़ुश्बू उड़ती है जिस से खुश अक़ीदा मुसलमानों के ज़िहन-ो दिमाग़ मुअत्तर हो जाते हैं। यहाँ ज़्यादा तफ़्सील की गुंजाइश नहीं है इसलिए सिर्फ़ चन्द नमूने आप के सामने पेश करने का शरफ़ हासिल करके फ़ैसला आप ही पर छोड़ता हूँ कि मैं अपने दअ्वे मे कहाँ तक हक़ ब-जानिब हूँ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तर्जमा :— शुरूअ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला

(शाह अब्दुल क़ादिर)

शुरूअ करता हूँ मैं साथ नाम अल्लाह बख़्शिश करने वाले मेहरबान के

(शाह रफ़ीयुद्दीन)

शुरूअ अल्लाह निहायत रहम करने वाले बार बार रहम करने वाले के नाम से

(अब्दुल माजिद दर्याबादी देवबन्दी)

शुरूअ करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान निहायत रहम वाले हैं

(अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी)

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

(अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा)

उपर के तमाम तर्जमे पढ़िए, सब ने इसी तरह तर्जमा किया हैं "शुरूअ करता हूँ अल्लाह के नाम से या शुरूअ साथ नाम अल्लाह के" तर्जमा करने वालों का क़ौल खुद अपनी ज़बान से ग़लत हो गया क्यों कि शुरूअ करता हूँ से तर्जमा शुरूअ किया है। अल्लाह के नाम से शुरूअ नहीं किया उस पर तुर्रा ये कि अशरफ़ अली थानवी ने आखिर में "हैं" बढ़ा दिया, उनके मानने वाले ये बताएं कि "हैं" किस लफ़्ज़ का तर्जमा है। अअ्ला हज़रत का क़ौल और तर्जमा दोनों दुरूस्त और सही है कि जब अल्लाह के नाम से शुरूअ करना है तो लफ़्ज़ "अल्लाह" ही को पहले आना चाहिए।

وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ۔

سورۃ انفال، آیت ۳۰

तर्जमा : और वो भी फ़रेब करते थे और अल्लाह भी फ़रेब करता था - और अल्लाह का फ़रेब सब से बेहतर है

(शाह अब्दुल क़ादिर)

और मक्र करते थे वो और मक्र करता था अल्लाह तआला और अल्लाह तआला नेक मक्र करने वालों का है

(शाह रफ़ीयुद्दीन)

और वो तो अपनी तद्बीर कर रहे थे और अल्लाह मियाँ अपनी तद्बीर कर रहे थे और सब से मुस्तहकम तद्बीर वाला अल्लाह है

(अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी)

और वो अपना सा मक्र करते थे और अल्लाह अपनी ख़ुफ़िया तद्बीर फ़रमाता था - और अल्लाह की ख़ुफ़िया तद्बीर सब से बेहतर

(अअ्‌ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा)

उर्दू तर्जमा में जो अल्फ़ाज़ इस्तेअ्‌माल हुए वो खुदा की शान के किसी तरह भी लाएक़ नहीं। अल्लाह तआला की तरफ़ मक्र, फ़रेब उसकी शान के लाएक़ हरगिज नहीं है तर्जमा करने में ग़लती इस वजह से हुई कि अल्लाह और रसुल को अपने अफ़्आल पर क़यास किया इसी वजह से तर्जमा करने वालों ने हँसी, मज़ाक़, ठठ्ठा, मक्र, फ़रेब, को अल्लाह और रसूल की सिफ़त ठहराया है सब से बढ़कर अशरफ़ अली थानवी ने अल्लाह पाक की इज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिए ''मियाँ'' का इस्तेअ्‌माल बढ़ा दिया जब कि मियाँ इन्सान की सिफ़त है ऊपर के तर्जमा में अल्लाह को भी फ़रेब करने वाला बताया है जब कि अल्लाह तमाम अैबों से पाक है।

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ـ
پ ۳۰، سورۃ الضحٰی آیت ۷

तर्जमा और पाया तुझको भटकता फिर राह दी

(शाह अब्दुल क़ादिर)

और पाया तुझको राह भूला हुआ पस राह दिखाई

(शाह रफ़ीयुद्दीन)

और आपको बेख़बर पाया सो रस्ता बताया

(अब्दुल माजिद दर्याबादी देवबन्दी)

और अल्लाह तआला ने आपको (शरीअत से) बेख़बर पाया सो आपको (शरीअत का) रास्ता बतला दिया

(अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी)

और तुम्हें अपनी महब्बत में ख़ुदरफ़्ता पाया तो अपनी तरफ़ राह दी

(अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा)

ऊपर की आयत मे लफ़्ज़ "   " इस्तेअ्माल हुआ है उसके मशहूर मअ्नी गुमराही और भटकना हैं चुनान्चे कुछ तर्जमा करने वालों ने मुख़ातिब पर क़लम की नोक के बजाए ख़ंजर पेवस्त कर दिया। ये न देखा कि तर्जमा मे किसको भटकता और भूला हुआ कहा जा रहा है क्या ये अन्दाज़ रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान और मर्तबा के लाएक़ है सब तर्जमों को देखने के बाद अअ्ला हज़रत का तर्जमा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़्मत-ो शान को ध्यान में रखकर पढ़ें तो दिल अक़ीदत-ो महब्बत से झूम उठता है।

فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ۔

پ ۲۵ ، سورۂ شوریٰ آیت ۲۴

तर्जमा : सो अगर अल्लाह चाहे तो मुहर कर दे तेरे दिल पर

(शाह अब्दुल क़ादिर)

पस अगर चाहता अल्लाह, मुहर रख देता ऊपर दिल तेरे के

(शाह रफ़ीयुद्दीन)

तो अगर अल्लाह चाहे तो आपके क़ल्ब पर मुहर लगा दे

(अब्दुल माजिद दर्याबादी देवबन्दी)

सो खुदा अगर चाहे तो आपके दिल पर बंद लगा दे

(अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी)

और अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रहमत-ो हिफ़ाज़त की मुहर लगा दे

(अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा)

तमाम तर्जमो से ये अन्दाज़ा होता है कि

के बाद मुहर लगा ने की कोई जगह थी तो यही थी किस क़दर भयानक तसव्वुर है कि वो ज़ाते-अतहर कि जिनके सरे मुबारक पर इसरा का ताज रखा गया आज उन्ही से फ़रमाया जा रहा है कि हम चाहे तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। काश तर्जमा करने वाले ये समझते कि जिनके क़ल्बे मुबारक पर अल्लाह तआला की रहमत-ो अनवार की बारिश हो रही है उस पर सिर्फ़ हिफ़ाज़त और रहमत की ही मुहर लगाई जा सकती है।

اَلرَّحْمٰنُ ۙ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ﴿۲﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ﴿۳﴾
عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾ پ ۲۷ سورۃ الرحمٰن۔ آیت ۱ – ۴

तर्जमा : रह्मान ने सिखाया कुरऑन, बनाया आदमी, फिर सिखाई उसको बात

(शाह अब्दुल क़ादिर)

रह्मान ने सिखाया कुरऑन, पैदा किया आदमी को, सिखाया उसको बोलना

(शाह रफ़ीयुद्दीन)

खुदाए रह्मान ही ने कुरऑन की तअ्लीम दी, उसी ने इन्सान को पैदा किया उसको गोयाई सिखाई

(अब्दुल माजिद दर्याबादी देवबन्दी)

रह्मान ने कुरऑन की तअ्लीम दी, उसने इन्सान को पैदा किया फिर उसको गोयाई सिखाई

(अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी)

रह्मान ने अपने महबूब को कुरऑन सिखाया, इन्सानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया, 'मा काना मा यकून' का बयान उन्हें सिखाया

(अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा)

ऊपर के तमाम तर्जमों में रह्मान ने सिखाया कुरऑन। सवाल पैदा होता है कि किसको सिखाया कुरऑन। क्यों कि कुरऑन खुद इस बात का गवाह है कि " " अल्लाह ने आपको हर उस चीज़ का इल्म दिया जो आप न जानते थे। अअ्ला हज़रत का तर्जमा कुरऑन की रूह का मुँह बोलता सबूत है।

يَـٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ ۔ پ ۱۰۔ سورہ انفال۔ آیت ۶۴

तर्जमा : ऐ नबी ।

(शाह अब्दुल क़ादिर,
शाह रफ़ीयुद्दीन,
अब्दुल माजिद दर्याबादी देवबन्दी,
अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी)

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले

(अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा)

क़ुरआनि करीम में लफ़्ज़ रसूल और नबी कई जगह पर आया है तर्जमा करने वालों की ज़िम्मादारी है कि वो उसका भी तर्जमा करे। लफ़्ज़ रसूल का तर्जमा पैग़म्बर तो सही है लेकिन नबी का तर्जमा नबी दुरूस्त नहीं है। नबी का तर्जमा अअ्ला हज़रत ने नबी की शान के मुताबिक़ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले फ़रमाया।

وَمَآ أُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۔ پ ۲ سورہ بقرۃ آیت ۱۷۳

तर्जमा : और जिस पर नाम पुकारा अल्लाह के सिवा का

(शाह अब्दुल क़ादिर)

और जो कुछ पुकारा जावे ऊपर उसके वास्ते ग़ैरुल्लाह के

(शाह रफ़ीयुद्दीन)

और जो जानवर ग़ैरुल्लाह के लिए नामज़द कर दिया गया हो

(अब्दुल माजिद दर्याबादी देवबन्दी,
अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी)

और वो जिसके ज़िब्ह में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया हो

(अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा)

जानवर कभी शादी के लिए नामज़द होता है कभी अक़ीक़ा, वलीमा, कुर्बानी और इसाले-सवाब के लिए मसलन ग्यारहवीं शरीफ़, बारहवीं शरीफ़ तो गोया हर वो जानवर जो इन मज़कूरा नामों पर नामज़द किया गया है वो तर्जुमा करने वालों के नज़दीक हराम है।

अअ्ला हज़रत ने हदीस-ो फ़िक़ह व तफ़्सीर के मुताबिक़ तर्जमा किया "जिसके ज़िब्ह में ग़ैरे खुदा का नाम पुकारा गया हो" इस तर्जमा से
का मसअ्ला वाज़ेह हो गया।

सिर्फ़ इन्हीं चन्द मिसालों से ये बात अच्छी तरह वाज़ेह हो जाती है कि अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमा को कुरऑन फ़हमी (समझ) में काफ़ी महारत हासिल थी। आपने अपने तर्जमा में खुदा की शाने उलूहिय्यत और नबी की शाने महबूबीय्यत व खातमीय्यत का पास व लिहाज़ बरक़रार रखा और इश्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वो शमअ रौशन फ़रमाई कि हम गुलाममाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप की बारगाह में यूँ खिराजे अक़ीदत पेश करते हुए फ़ख्र महसूस करते हैं।

डाल दी क़ल्ब में अज़्मते मुस्तफ़ा
सय्येदी अअ्ला हज़रत पे लाखों सलाम

मुहम्मद शमीम अंजुम नूरी
(बी०ए०)

सूरए फ़ातिहा
मक्की है इस में सात आयतें और एक रुकूअ है

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعُ اٰيٰتٍ

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

१. सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहानवालों का।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١﴾

२. बहुत मेहरबान रह़मत वाला।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾

३. रोज़े-जज़ा का मालिक ।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٣﴾

४. हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿٤﴾

५. हम को सीधा रास्ता चला।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿٥﴾

६. रास्ता उनका जिन पर तू ने एहसान किया।

७. न उनका जिन पर ग़ज़ब हुआ और न बहके हुओं का।

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ﴿٦﴾ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَتَانِ وَسِتٌّ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى
لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ ﴿٢﴾
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ
يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ ۙ ﴿٣﴾
وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ
وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ ﴿٤﴾
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ
ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾
خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى
سَمْعِهِمْ ۗ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫
وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٧﴾
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا

सूरए बक़रह
मदनी है इस में दोसौ छयासी आयतें और चालीस रूकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

२. वो बुलंद रुतबा किताब (क़ुरआॅन) कोई शक की जगह नहीं इस में हिदायत है डर वालों को।

३. वो जो बे देखे ईमान लाएँ। और नमाज़ क़ाएम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएँ।

४. और वो कि ईमान लाएँ उस पर जो ऐ महबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा और आख़िरत पर यक़ीन रखें ।

५. वही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर है और वही मुराद को पहुंचने वाले।

६. बेशक वो जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है उन्हें बराबर है, चाहे तुम उन्हें डराओ या न डराओ वो ईमान लाने के नहीं।

७. अल्लाह ने उनके दिलों पर और कानों पर मुहर कर दी और उनकी आँखों पर घटा टोप है । और उनके लिए बड़ा अज़ाब।

रूकूअ २

८. और कुछ लोग कहते है कि

हम अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाए और वो ईमान वाले नही।

९. फ़रेब दिया चाहते है अल्लाह और ईमान वालो को और हक़ीक़त में फ़रेब नही देते मगर अपनी जानो को और उन्हें शुऊर नही।

१०. उनके दिलो में बीमारी है तो अल्लाह ने उन की बीमारी और बढ़ाई और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है, बदला उनके झूट का।

११. और जो उन से कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो । तो कहते हैं हम तो सँवारने वाले है।

१२. सुनता है वही फ़सादी हैं मगर उन्हें शुऊर नहीं,

१३. और जब उन से कहा जाए ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए है तो कहें क्या हम अहमक़ो की तरह ईमान ले आएँ सुनता है वही अहमक़ है मगर जानते नहीं।

१४. और जब ईमान वालो से मिलें तो कहे हम ईमान लाए और जब अपने शैतानो के पास अकेले हों तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो यूँही हँसी करते हैं।

१५. अल्लाह उन से इस्तिहज़ा फ़रमाता है (जैसा उसकी शान के

بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ
بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾
يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَ
مَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ
اللّٰهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿١٠﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ
قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ﴿١١﴾
اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ
لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ
النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ
السُّفَهَآءُ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ
وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾
وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا
وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ قَالُوْٓا اِنَّا
مَعَكُمْ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾
اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ

लाएक़ है) और उन्हे ढील देता है कि अपनी सरकशी मे भटकते रहे।

१६. ये वो लोग है जिन्हो ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी तो उनका सौदा कुछ नफ़अ़ न लाया और वो सौदे की राह जानते ही न थे।

१७. उनकी कहावत उस की तरह है जिसने आग रौशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा अल्लाह उनका नूर ले गया और उन्हें अँधेरियों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं सूझता।

१८. बहरे गूंगे अन्धे तो वो फिर आने वाले नहीं।

१९. या जैसे आस्मान से उतरता पानी कि उस में अंधेरीयाँ हैं और गरज और चमक अपने कानो मे उँगलियाँ ठूंस रहे हैं, कड़क के सबब, मौत के डर से और अल्लाह काफ़िरों को, घेरे हुए है।

२०. बिजली यूँ मअ़लूम होती है कि उनकी निगाहें उचक ले जाएगी जब कुछ चमक हुई उसमें चलने लगे और जब अंधेरा हुआ खड़े रह गए, और अल्लाह चाहता तो उनके कान और आँखे ले जाता बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

रुकूअ़ ३

२१. ऐ लोगो अपने रब को पूजो जिस ने तुम्हे और तुम से अगलो को

طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾
أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَٰلَةَ
بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَٰرَتُهُمْ وَ
مَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾
مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا
فَلَمَّآ أَضَآءَتْ مَا حَوْلَهُۥ ذَهَبَ اللَّهُ
بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَٰتٍ
لَّا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾
صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾
أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيهِ ظُلُمَٰتٌ
وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ أَصَٰبِعَهُمْ
فِيٓ ءَاذَانِهِم مِّنَ الصَّوَٰعِقِ حَذَرَ
الْمَوْتِ وَاللَّهُ مُحِيطٌۢ بِالْكَٰفِرِينَ ﴿١٩﴾
يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَٰرَهُمْ كُلَّمَآ
أَضَآءَ لَهُم مَّشَوْا فِيهِ وَإِذَآ أَظْلَمَ
عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَآءَ اللَّهُ لَذَهَبَ
بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَٰرِهِمْ إِنَّ اللَّهَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾
يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي
خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ

पैदा किया, ये उम्मीद करते हुए, कि तुम्हें परहेजगारी मिले।

२२. और जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना और आस्मान को अेमारत बनाया और आस्मान से पानी उतारा तो उस से कुछ फल निकाले तुम्हारे खाने को तो अल्लाह के लिए जान बूझकर बराबर वाले न ठहराओ।

२३. और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो हम ने अपने (उन ख़ास) बन्दे पर उतारा तो उस जैसी एक सूरत तो ले आओ और अल्लाह के सिवा, अपने सब हिमायतियों को बुलालो, अगर तुम सच्चे हो।

२४. फिर अगर न ला सको और हम फ़रमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो उस आग से, जिसका ईंधन आदमी और पत्थर है तैयार रखी है काफ़िरों के लिए।

२५. और ख़ुशख़बरी दे, उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किए, कि उनके लिए बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें रवाँ जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा, (सूरत देखकर) कहेंगे, ये तो वही रिज़्क़ है जो हमें पहले मिला था और वो (सूरत में) मिलता जुलता उन्हें दिया गया और उनके लिए उन बाग़ों में सुथरी बीबियाँ हैं और वो उन में हमेशा रहेंगे।

لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۙ ﴿٢١﴾
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا
وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا
لَكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا وَأَنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾
وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ
عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِنْ مِثْلِهِ
وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ
اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾
فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا
النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ
أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٤﴾
وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا
مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا ۙ قَالُوا هَٰذَا
الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۖ وَأُتُوا بِهِ
مُتَشَابِهًا ۖ وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ
مُطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥﴾

२६. बेशक अल्लाह इस से हया नही फरमाता कि मिसाल समझाने को कैसी ही चीज का ज़िक्र फरमाए मच्छर हो या उस से बढ कर तो वो जो ईमान लाए, वो तो जानते है कि ये उनके रब की तरफ़ से हक है रहे काफ़िर, वो कहते है ऐसी कहावत मे अल्लाह का क्या मक़सूद है अल्लाह बहुतेरो को इस से गुमराह करता है और बहुतेरो को हिदायत फ़रमाता है और इस से उन्हे गुमराह करता है जो बे हुक्म हैं।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِ أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

२७. वो जो अल्लाह के अहद को तोड देते हैं पक्का होने के बाद, और काटते है उस चीज़ को जिसके जोड़ने का खुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन मे फ़साद फैलाते है वही नुक्सान में है।

الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٢٧﴾

२८. भला तुम क्यों कर खुदा के मुनकिर होगे, हालाकि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हे जिलाया फिर तुम्हे मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा फिर उसी की तरफ़ पलट कर जाओगे।

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾

२९. वही है जिसने तुम्हारे लिए बनाया जो कुछ ज़मीन में है। फिर आस्मान की तरफ़ इस्तिवा (क़स्द) फ़रमाया तो ठीक सात आस्मान बनाए और वो सब कुछ जानता है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾

रुकूअ ४

३०. और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रीश्तों से फरमाया, मैं ज़मीन

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي

में अपना नाएब बनानेवाला हूँ बोले क्या ऐसे को (नाएब) करेगा जो उसमें फ़साद फैलाए और ख़ून रेज़ियाँ करेगा और हम तुझे सराहते हुए, तेरी तसबीह करते और तेरी पाकी बोलते हैं। फ़रमाया मुझे मअ़लूम है जो तुम नही जानते।

३१. और अल्लाह तआ़ला ने आदम को तमाम (अशिया के) नाम सिखाए फिर सब (अशिया) को मालाइका पर पेश कर के फ़रमाया सच्चे हो तो इनके नाम तो बताओ।

३२. बोले पाकी है तुझे हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया बेशक तू ही इल्म व हिकमत वाला है।

३३. फ़रमाया ऐ आदम बता दे इन्हें सब (अशिया के) नाम जब उन्हे सब के नाम बता दिए फ़रमाया मैं न कहता था कि मैं जानता हूँ आस्मानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो।

३४. और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो सबने सज्दा किया सिवा इब्लीस के कि मुनकिर हुआ और गुरूर किया और काफ़िर हो गया।

جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ؕ قَالُوا
أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا
وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ إِنِّي
أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾
وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ
عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ
أَنْبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَٰؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٣١﴾
قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا
مَا عَلَّمْتَنَا ؕ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ
الْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾
قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ ۖ
فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ
أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَ
مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾
وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ
فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ؕ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ
وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾

३५. और हम ने फ़रमाया ऐ आदम तू और तेरी बीवी इस जन्नत में रहो और खाओ इस में से बे रोक टोक जहाँ तुम्हारा जी चाहे मगर इस पेड़ के पास न जाना कि हद से बढ़ने वालों में हो जाओगे।

३६. तो शैतान ने जन्नत से उन्हें लग़ज़िश दी और जहाँ रहते थे वहाँ से उन्हें अलग कर दिया और हम ने फरमाया नीचे उतरो आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है।

३७. फिर सीख लिए आदम ने अपने रब से कुछ कलिमा तो अल्लाह ने उसकी तौबा क़बूल की बेशक वही है बहुत तौबा क़बूल करनेवाला मेहरबान।

३८. हम ने फ़रमाया तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पैरो हुआ उसे न कोई अन्देशा न कुछ ग़म।

३९. और वो जो कुफ़्र करें और मेरी आयतें झुटलायेंगे वो दोज़ख वाले हैं उनको हमेशा उस में रहना।

रुकूअ ५

४०. ऐ यअ़क़ूब की अवलाद याद करो मेरा वो एहसान जो मैं ने तुम पर किया और मेरा अहद पूरा

وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ
الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ
شِئْتُمَا ۠ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ
فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٥﴾
فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا
مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۠ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾
فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ
فَتَابَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾
قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا
يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ
هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
ع خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾
يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ
الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا

करो मै तुम्हारा अहद पूरा करूंगा और ख़ास मेरा ही डर रखो।

४१. और ईमान लाओ उस पर जो मै ने उतारा उसकी तस्दीक़ करता हुआ जो तुम्हारे साथ है और सब से पहले उसके मुनकिर न बनो और मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो और मुझ ही से डरो।

४२. और हक़ से बातिल को न मिलाओ और दीदा व दानिस्ता हक़ न छुपाओ।

४३. और नमाज़ क़ाएम रखो और ज़कात दो और रूकूअ करनेवालों के साथ रूकूअ करो।

४४. क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालाँकि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।

४५. और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उनपर जो दिल से मेरी तरफ़ झुकते हैं।

४६. जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की तरफ़ फिरना।

रूकूअ ६

४७. ऐ अवलादे-यअ़क़ूब याद करो मेरा वो एहसान जो मै ने तुम पर किया और ये कि इस सारे ज़माने पर तुम्हें बड़ाई दी।

بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ
فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾
وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا
مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۪
وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ
وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾
وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ
تَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾
وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾
اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ
اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۭ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٤٤﴾
وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ وَاِنَّهَا
لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿٤٥﴾ لا
الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ
وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿٤٦﴾ ع
يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ
الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

४८. और डरो उस दिन से जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला न हो सकेगी और न (काफ़िर के लिए) कोई सिफ़ारिश मानी जाए और न कुछ लेकर (उसकी) जान छोड़ी जाए और न उनकी मदद हो।

४९. और (याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी कि वो तुम पर बुरा अज़ाब करते थे तुम्हारे बेटों को ज़िबह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी बला थी।

५०. और जब हमने तुम्हारे लिए दरिया फाड़ दिया तो तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔन वालों को तुम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया।

५१. और जब हम ने मूसा से चालीस रात का वअ़दा फ़रमाया फिर उसके पीछे तुमने बछड़े की पूजा शुरूअ. कर दी और तुम ज़ालिम थे।

५२. फिर उसके बाद हम ने तुम्हें मुआफ़ी दी कि कही तुम एहसान मानो।

५३. और जब हमने मूसा को किताब अता की और हक़ व बातिल में तमीज़ कर देना कि कहीं तुम राह पर आओ।

५४. और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम तुम ने बछड़ा बना कर अपनी जानों पर ज़ुल्म

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ
نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ
وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾
وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَ
فِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾
وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ
وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ
تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾
وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً
ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهٖ
وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾
ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾
وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ
اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ

किया तो अपने पैदा करनेवाले की तरफ रुजूअ लाओ तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो ये तुम्हारे पैदा करनेवाले के नज़दीक तुम्हारे लिए बेहतर है तो उसने तुम्हारी तौबा क़बूल की बेशक वही है बहुत तौबा क़बूल करनेवाला मेहरबान।

५५. और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे जब तक एअ्लानिया ख़ुदा को न देखलें तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे!

५६. फिर मरे पीछे हमने तुम्हें ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एहसान मानो।

५७. और हम ने अब्र को तुम्हारा साएबान किया और तुम पर मन और सलवा उतारा खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और उन्हों ने कुछ हमारा न बिगाड़ा हाँ अपनी ही जानों को बिगाड़ करते थे।

५८. और जब हम ने फ़रमाया इस बस्ती में जाओ फिर इसमें जहाँ चाहो बे रोक टोक खाओ और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो और कहो हमारे गुनाह मुआफ हों हम तुम्हारी ख़ताएँ बख़्श देंगे और क़रीब है कि नेकी वालों को और ज़्यादा दें।

५९. तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी जो फ़रमाई गई थी उसके सिवा तो हमने आस्मान से उनपर अज़ाब

الْعِجْلَ فَتُوبُوٓا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوٓا
أَنفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِندَ
بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ٥٤
وَإِذْ قُلْتُمْ يَٰمُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ
حَتَّىٰ نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ
الصَّٰعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ٥٥
ثُمَّ بَعَثْنَٰكُم مِّنۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ٥٦
وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا
عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ كُلُوا
مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا
وَلَٰكِن كَانُوٓا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ٥٧
وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ
فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا
وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا
حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطَٰيَٰكُمْ وَسَنَزِيدُ
الْمُحْسِنِينَ ٥٨
فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ
الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى

الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا
كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾
وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا
اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانفَجَرَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَ
اشْرَبُوا مِن رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾
وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ
عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ
يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ مِن
بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا
وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي
هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا
مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَ
ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ
وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ
بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾

उतारा बदला उनकी बे हुकमी का।

रुकूअ ७

६०. और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया इस पत्थर पर अपना असा मारो फ़ौरन उसमे से बारह चश्मे बह निकले हर गिरोह ने अपना घाट पहचान लिया खाओ और पियो खुदा का दिया और ज़मीन मे फ़साद उठाते न फिरो।

६१. और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम से तो एक खाने पर हरगिज़ सब्र न होगा तो आप अपने रब से दुआ कीजिए कि ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हमारे लिए निकाले कुछ साग और ककड़ी और गेहूँ और मसूर और पियाज़ फ़रमाया क्या अदना चीज़ को बेहतर के बदले मांगते हो अच्छा मिस्र या किसी शहर में उतरो वहाँ तुम्हें मिलेगा जो तुम ने मांगा और उनपर मुक़र्रर कर दी गई ख़्वारी और नादारी और खुदा के ग़ज़ब में लौटे ये बदला था उसका कि वो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते और अंबिया को ना हक शहीद करते ये बदला था उनकी ना फ़रमानियों और हद से बढ़ने का।

रुकूअ ८

६२. बेशक ईमानवाले नीज़
यहूदियों और नसरानियों और सितारा
परस्तों में से वो कि सच्चे दिल से
अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान
लाएँ और नेक काम करें उनका सवाब
उनके रब के पास है और न उन्हें कुछ
अन्देशा हो और न कुछ ग़म।

६३. और जब हम ने तुम से
अ़हद लिया और तुम पर तूर को
ऊँचा किया लो जो कुछ हम तुम को
देते हैं ज़ोर से और उसके मज़मून
याद करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें
परहेज़गारी मिले।

६४. फिर उसके बाद तुम फिर
गए तो अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और
उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम
टोटेवालों में हो जाते।

६५. और बेशक ज़रूर तुम्हें
मअ़लूम है तुम में कि वो जिन्हों ने
हफ़्ता में सरकशी की तो हम ने उनसे
फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुतकारे
हुए।

६६. तो हम ने (उस बस्ती का)
ये वाक़िआ उसके आगे और पीछे
वालों के लिए इब्रत कर दिया और
परहेज़गारों के लिए नसीहत।

६७. और जब मूसा ने अपनी
क़ौम से फ़रमाया ख़ुदा तुम्हें हुक्म

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا
وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ
صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾
وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا
فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ
بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ
فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَ
رَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا
مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا
قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾
فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ
يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً
لِلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾
وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ

देता है कि एक गाय ज़िबह् करो बोले
कि आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं फ़रमाया
ख़ुदा की पनाह कि मैं जाहिलों से हूं।

६८. बोले अपने रब से दुआ
कीजिए वो हमें बता दे गाय कैसी
कहा वो फ़रमाता है कि वो एक गाय
है न बूढी और न ओसर बल्कि इन
दोनों के बीच में तो करो जिसका तुम्हें
हुक्म होता है।

६९. बोले अपने रब से दुआ
कीजिए हमें बता दे उसका रंग क्या है
कहा वो फ़रमाता है वो एक पीली
गाय है जिसकी रंगत डहडहाती देखने
वालों को ख़ुशी देती।

७०. बोले अपने रब से दुआ
कीजिए कि हमारे लिए साफ़ बयान
कर दे वो गाय कैसी है बेशक गायों
में हम को शुबह पड़ गया और अल्लाह
चाहे तो हम राह पा जाएंगे।

७१. कहा वो फ़रमाता है कि वो
गाय है जिस से ख़िदमत नहीं ली
जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को
पानी दे बेऐब है जिस में कोई दाग़
नहीं बोले अब आप ठीक बात लाए
तो उसे ज़िब्ह् किया और (ज़िब्ह्) करते
मअ्लूम न होते थे।

रुकूअ ९

७२. और जब तुम ने एक ख़ून
किया तो एक दूसरे पर उसकी तोहमत

يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ قَالُوا
أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ
أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا
هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ
لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ
ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا
لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ
صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ
النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا
هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا
إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾
قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا
ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي
الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا ۚ
قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا
ع وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾
وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ

डालने लगे और अल्लाह को ज़ाहिर करना जो तुम छुपाते थे।

७३. तो हम ने फ़रमाया उस मक़्तूल को उस गाय का एक टुकडा मारो अल्लाह यूँ ही मुर्दे जिलाएगा और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है कि कहीं तुम्हें अक़्ल हो।

७४. फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए तो वो पत्थरों की मिस्ल हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा करें और पत्थरों में तो कुछ वो हैं जिन से नदियाँ बह निकलती हैं और कुछ वो हैं जो फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वो हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं और अल्लाह तुम्हारे कोतकों से बे ख़बर नहीं।

७५. तो ऐ मुसलमानों क्या तुम्हें ये तमअ है कि ये (यहूदी) तुम्हारा यक़ीन लाएँगे और उन में का तो एक गिरोह वो था कि अल्लाह का कलाम सुनते फिर समझने के बाद उसे दानिस्ता बदल देते।

७६. और जब मुसलमानों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब आपस में अकेले हों तो कहें वो इल्म जो अल्लाह ने तुम पर खोला मुसलमानों से बयान किए देते हो कि उस से

وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾
فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ
يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ
اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾
ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ
قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا
يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ
مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ
الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ
خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾
اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ
كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ
اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا
عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾
وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا
اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى
بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا
فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ

عِنْدَ رَبِّكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٦﴾
أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا
يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٧﴾
وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ
الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا
يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ
بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا
مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا
قَلِيلًا فَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ
أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا
يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾
وَقَالُوا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا
مَعْدُودَةً قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ
اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ
عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾
بَلَىٰ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ
بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾

तुम्हारे रब के यहाँ तुम्हीं पर हुज्जत लाएं क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।

७७. क्या नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ वो छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं।

७८. और उन में कुछ अनपढ़ हैं कि जो किताब को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना या कुछ अपनी मन घड़त और वो निरे गुमान में हैं।

७९. तो ख़राबी है उनके लिए जो किताब अपने हाथ से लिखे फिर कह दें ये खुदा के पास से है कि उसके अेवज़ थोड़े दाम हासिल करें तो ख़राबी है उनके लिए उनके हाथों के लिखे से और ख़राबी उनके लिए उस कमाई से।

८०. और बोले हमें तो आग न छूएगी मगर गिन्ती के दिन तुम फ़रमादो क्या खुदा से तुम ने कोई अहद ले रखा है जब तो अल्लाह हरगिज़ अपना अहद ख़िलाफ़ न करेगा या खुदा पर वो बात कहते हो जिसका तुम्हे इल्म नहीं।

८१. हाँ क्यों नहीं जो गुनाह कमाए और उसकी खता उसे घेरले वो दोज़ख़ वालों में है उन्हे हमेशा उस में रहना।

८२ और जो ईमान लाए और अच्छे काम किए वो जन्नत वाले है उन्हे हमेशा उस में रहना।

रुकूअ १०

८३. और जब हमने बनी इसराईल से अहद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और माँ बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिसकीनों से और लोगों से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ाएम रखो और ज़कात दो फिर तुम फिर गए मगर तुम में के थोड़े और तुम रुगरदां हो।

८४. और जब हम ने तुम से अहद लिया कि अपनों का ख़ून न करना और अपनों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर तुम ने उसका इक़रार किया और तुम गवाह हो।

८५. फिर ये जो तुम हो अपनों को क़त्ल करने लगे और अपने में से एक गिरोह को उनके वतन से निकालते हो उनपर मदद देते हो (उनके मुख़ालिफ़ को) गुनाह और ज़्यादती में और अगर वो क़ैदी हो कर तुम्हारे पास आएं तो बदला दे कर छुड़ा लेते हो और उनका निकालना तुम पर हराम है तो क्या खुदा के कुछ हुक्मों पर ईमान लाते हो और कुछ से इन्कार करते हो तो जो तुम मे ऐसा करे उसका बदला

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۗ وَ بِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا وَّ ذِي الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى
وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ قُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا
وَّ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَ
اَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾
وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ
دِمَآءَكُمْ وَ لَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ
مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَ اَنْتُمْ
تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾
ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ
وَ تُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ
دِيَارِهِمْ ۫ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ
وَ الْعُدْوَانِ ؕ وَ اِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى
تُفٰدُوْهُمْ وَ هُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ
اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ

وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ
يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ
اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾

क्या है मगर ये कि दुनिया में रुसवा हो और कयामत में सख़्त तर अज़ाब की तरफ़ फेरे जाएँगे और अल्लाह तुम्हारे कोतकों से बे ख़बर नहीं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
بِالْاٰخِرَةِ ۫ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ
ع وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾

८६. ये है वो लोग जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी मोल ली तो न उनपर से अज़ाब हल्का हो और न उनकी मदद की जाए।

रुकूअ ११

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ
قَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۫ وَاٰتَيْنَا
عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۗ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ
رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ
اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۫ وَ
فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٧﴾

८७. और बेशक हम ने मूसा को किताब अता की और उसके बाद पै-दर-पै रसूल भेजे और हम ने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियाँ अता फ़रमाई और पाक रुह से उसकी मदद की तो क्या जब तुम्हारे पास कोई रसूल वो ले कर आए जो तुम्हारे नफ़्स की ख़्वाहिश नहीं तकब्बुर करते हो तो उन (अंबिया) में एक गिरोह को तुम झुटलाते हो और एक गिरोह को शहीद करते हो।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۗ بَلْ
لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

८८. और यहूदी बोले हमारे दिलों पर परदे पड़े है बल्कि अल्लाह ने उन पर लअ्नत की उनके कुफ़्र के सबब तो उनमें थोड़े ईमान लाते हैं।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ
اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا

८९. और जब उनके पास अल्लाह की वो किताब (कुरआन) आई जो उनके साथ वाली किताब (तौरेत) की तस्दीक़ फ़रमाती है और उससे पहले

مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ
كَفَرُوا ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا
كَفَرُوا بِهِ ۚ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى
الْكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾

वो उसी नबी के वसीले से काफ़िरों पर फ़तह मांगते थे तो जब तशरीफ़ लाया उनके पास वो जाना पहचाना उससे मुनकिर हो बैठे तो अल्लाह की लअ़नत मुनकिरों पर।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ أَنْ
يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَنْ
يُنَزِّلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَىٰ مَنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ
عَلَىٰ غَضَبٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ
مُهِينٌ ﴿٩٠﴾

९०. किस बुरे मोलों उन्हों ने अपनी जानों को ख़रीदा कि अल्लाह के उतारे से मुनकिर हो इसकी जलन से कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर चाहे 'वही' उतारे तो ग़ज़ब पर ग़ज़ब के सज़ावार हुए और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا أَنْزَلَ
اللَّهُ قَالُوا نُؤْمِنُ بِمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا
وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ
مُصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ
تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾

९१. और जब उन से कहा जाए कि अल्लाह के उतारे पर ईमान लाओ तो कहते हैं वो जो हम पर उतरा उसपर ईमान लाते है और बाक़ी से मुनकिर होते हैं हालाँकि वो हक़ है उनके पास वाले की तस्दीक़ फ़रमाता हुआ तुम फ़रमाओ कि फिर अगले अंबिया को क्यों शहीद किया अगर तुम्हें अपनी किताब पर ईमान था।

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ
اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ
ظَالِمُونَ ﴿٩٢﴾

९२. और बेशक तुम्हारे पास मूसा खुली निशानियाँ ले कर तशरीफ़ लाया फिर तुम ने उसके बाद बछड़े को मअ़बूद बना लिया और तुम ज़ालिम थे।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ

९३. और (याद करो) जब हम ने तुम से पैमान लिया और कोहे तूर

को तुम्हारे सरों पर बुलंद किया लो जो हम तुम्हे देते है ज़ोर से और सुनो बोले हम ने सुना और न माना और उनके दिलों में बछड़ा रच रहा था उनके कुफ़्र के सबब तुम फरमादो क्या बुरा हुक्म देता है तुम को तुम्हारा ईमान अगर ईमान रखते हो।

९४. तुम फ़रमाओ अगर पिछला घर अल्लाह के नज़दीक ख़ालिस तुम्हारे लिए हो न औरों के लिए तो भला मौत की आरज़ू तो करो अगर सच्चे हो।

९५. और हरगिज़ कभी उसकी आरज़ू न करेंगे उन बद अअ्मालियों के सबब जो आगे कर चुके और अल्लाह खूब जानता है ज़ालिमो को।

९६. और बेशक तुम ज़रूर उन्हे पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते है और मुशरिकों से एक को तमन्ना है कि कहीं हज़ार बरस जिए और वो उसे अज़ाब से दूर न करेगा इतनी उमर दिया जाना और अल्लाह उन के कौतक देख रहा है।

रुकूअ १२

९७. तुम फ़रमा दो जो कोई जिबरईल का दुश्मन हो तो उस (जिबरईल) ने तो तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से यह कुरआन उतारा

الطُّورَ ۚ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ
وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ
بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ
إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾
قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ
عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ
النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾
وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾
وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ
حَيَاةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ يَوَدُّ
أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَ
مَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ
أَنْ يُعَمَّرَ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا
ع يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾
قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ
فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ
مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى

अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत व बिशारत मुसलमानों को।

९८. जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और रसूलों और जिबरईल और मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का ।

९९. और बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें उतारीं और उनके मुनकिर न होंगे मगर फ़ासिक़ लोग।

१००. और क्या जब कभी कोई अहद करते हैं उनमें के एक फ़रीक़ उसे फेंक देता है बल्कि उनमें बहुतेरों को ईमान नहीं।

१०१. और जब उनके पास तशरीफ़ लाया अल्लाह के यहाँ से एक रसूल उनकी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता तो किताब वालों से एक गिरोह ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी गोया वो कुछ इल्म ही नहीं रखते।

१०२. और उसके पैरो हुए जो शैतान पढ़ा करते थे सल्तनते सुलैमान के ज़माने में और सुलैमान ने कुफ़्र न किया हाँ शैतान काफ़िर हुए लोगों को जादू सिखाते हैं और वो (जादू) जो बाबिल में दो फ़रिश्तों हारूत व मारूत पर उतरा और वो दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक ये न कह

وَبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ
رُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَ مِيْكٰىلَ فَاِنَّ
اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾
وَ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۚ
وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾
اَوَ كُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ
فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾
وَ لَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ
اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ
فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ
كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾
وَ اتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى
مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ
وَ لٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ
النَّاسَ السِّحْرَ ۤ وَ مَآ اُنْزِلَ عَلَى
الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۭ
وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ

لेते कि हम तो निरी आज़माइश है तो अपना ईमान न खो तो उन से सीखते वो जिस से जुदाई डाले मर्द और उसकी औरत में और उससे ज़रर नही पहुँचा सकते किसी को मगर खुदा के हुक्म से और वो सीखते हैं जो उन्हे नुक़्सान देगा नफ़्अ न देगा और बेशक ज़रूर उन्हे मअ्लूम है कि जिस ने ये सौदा लिया आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज़ है वो जिसके बदले उन्होंने अपनी जानें बेची किसी तरह उन्हें इल्म होता।

१०३. और अगर वो ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो अल्लाह के यहाँ का सवाब बहुत अच्छा है किसी तरह उन्हें इल्म होता।

रुकूअ १३

१०४. ऐ ईमान वालों राईना न कहो और यूँ अर्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

१०५. वो जो काफ़िर हैं किताबी या मुशरिक वो नहीं चाहते कि तुम पर कोई भलाई उतरे तुम्हारे रब के पास से और अल्लाह अपनी रहमत से ख़ास करता है जिसे चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ
فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۚ وَمَا هُمْ
بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَ
لَا يَنْفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ
اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ
أَنْفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ١٠٢
وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ
مِنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ ۖ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ١٠٣ ع
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا
وَقُولُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوا ۗ وَلِلْكَافِرِينَ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ١٠٤
مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ
الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ
عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَاللَّهُ
يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ١٠٥

१०६. जब कोई आयत हम मनसूख़ फ़रमाएँ या भुला दें तो उससे बेहतर या उस जैसी ले आऐंगे क्या तुझे ख़बर नही कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

१०७. क्या तुझे ख़बर नहीं कि अल्लाह ही के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई हिमायती न मददगार।

१०८. क्या ये चाहते हो कि अपने रसूल से वैसा सवाल करो जो मूसा से पहले हुआ था और जो ईमान के बदले कुफ़्र ले वो ठीक रास्ता बहक गया।

१०९. बहुत किताबियों ने चाहा काश तुम्हें ईमान के बाद कुफ़्र की तरफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से बाद उसके कि हक़ उनपर ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है तो तुम छोड़ो और दरगुज़र करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

११०. और नमाज़ क़ाएम रखो और ज़कात दो और अपनी जानों के लिए जो भलाई आगे भेजोगे उसे

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا
نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَاۤ اَوْ مِثْلِهَا ؕ
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٦﴾
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٧﴾
اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ
كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَ
مَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾
وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ
كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ
مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ
فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ
بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾
وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ
وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ

تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾

अल्लाह के यहाँ पाओगे बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا
مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ
اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١١١﴾

१११. और अहले-किताब बोले हरगिज़ जन्नत में न जाएगा मगर वो जो यहूदी या नसरानी हो ये उनकी ख़याल बन्दियाँ है तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील अगर सच्चे हो।

بَلٰى مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَ
هُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
ع يَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾

११२. हाँ क्यों नहीं जिसने अपना मुँह झुकाया अल्लाह के लिए और वो नेकोकार है तो उसका नेग उसके रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म।

रुकूअ १४

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى
عَلٰى شَیْءٍ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى
لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَیْءٍ وَّهُمْ
يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ
لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

११३. और यहूदी बोले नसरानी कुछ नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं हालाँकि वो किताब पढ़ते हैं इसी तरह जाहिलों ने उनकी सी बात कही तो अल्लाह क़यामत के दिन उनमें फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ रहे हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ
اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى
فِیْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ

११४. और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह की मस्जिदों को रोके उनमें नामे-खुदा लिए जाने से और उनकी वीरानी में कोशिश करे उनको न पहुँचता था कि मस्जिदों में

जाएं मगर डरते हुए उनके लिए दुनिया में रुसवाई है और उनके लिए आख़ेरत में बड़ा अज़ाब।

११५. और पूरब व पच्छिम सब अल्लाह ही का है तो तुम जिधर मुँह करो उधर वजहुल्लाह (खुदा की रहमत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह) है। बेशक अल्लाह वुसअतवाला और इल्मवाला है।

११६. और बोले खुदा ने अपने लिए अवलाद रखी पाकी है उसे बल्कि उसीकी मिल्क है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है सब उसके हुज़ूर गरदन डाले हैं।

११७. नया पैदा करने वाला आस्मानों और ज़मीन का और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उससे यही फ़रमाता है कि हो जा वो फ़ौरन हो जाती है।

११८. और जाहिल बोले अल्लाह हम से क्यों नहीं कलाम करता या हमें कोई निशानी मिले इनसे अगलों ने भी ऐसी ही कही इनकी सी बात इनके उन के दिल एक से हैं बेशक हम ने निशानियाँ खोल दी यक़ीन वालों के लिए।

११९. बेशक हम ने तुम्हें हक़ के साथ भेजा खुशख़बरी देता और डर सुनाता और तुम से दोज़ख वालों का सवाल न होगा।

أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ
فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾
وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا
تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾
وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ
بَلْ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ
كُلٌّ لَهُ قَانِتُونَ ﴿١١٦﴾
بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِذَا
قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ
فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾
وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ
لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ ۗ
كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۘ تَشَابَهَتْ
قُلُوبُهُمْ ۗ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يُوقِنُونَ ﴿١١٨﴾
إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۖ
وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾

१२०. और हरगिज़ तुम से यहूद और नसारा राज़ी न होंगे जब तक तुम उनके दीन की पैरवी न करो तुम फ़रमादो अल्लाह ही की हिदायत, हिदायत है और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों का पैरो हुआ बाद इसके कि तुझे इल्म आ चुका तो अल्लाह से तेरा कोई बचाने वाला न होगा और न मददगार।

१२१. जिन्हें हम ने किताब दी है वो जैसी चाहिए उसकी तिलावत करते हैं वही उसपर ईमान रखते हैं और जो उसके मुनकिर हों तो वही ज़ियांकार हैं।

रुकूअ १५

१२२. ऐ अवलादे यअ़कूब याद करो मेरा एहसान जो मैं ने तुम पर किया और वो जो मैं ने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें बड़ाई दी।

१२३. और डरो उस दिन से कि कोई जान दूसरे का बदला न होगी और न उसको कुछ ले कर छोड़ें और न काफ़िर को कोई शिफ़ारिश नफ़अ़ दे और न उनकी मदद हो।

१२४. और जब इब्राहीम को उसके रब ने कुछ बातों से आज़माया तो उसने वो पूरी कर दिखाईं फ़रमाया मैं तुम्हें लोगों का पेशवा बनानेवाला हूँ

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَ
لَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ
قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ
وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ
الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ
مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّ
لَا نَصِيْرٍ ﴿۱۲۰﴾
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ
حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ
بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾
يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ
الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۲﴾
وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ
نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ
وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾
وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ
فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ

अर्ज़ की और मेरी अवलाद से फ़रमाया मेरा अ़हद ज़ालिमों को नहीं पहुँचता।

१२५. और (याद करो) जब हम ने इस घर को लोगों के लिए मरजअ़ और अमान बनाया और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर खूब सुथरा करो तवाफ़ वालों और एअ़तिकाफ़ वालों और रूकूअ़ सुजूद वालों के लिए।

१२६. और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने कि ऐ मेरे रब इस शहर को अमानवाला करदे और इसके रहने वालों को तरह तरह के फलों से रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाएँ फ़रमाया और जो काफ़िर हुआ थोड़ा बरतने को उसे भी दूंगा फिर उसे अज़ाबे दोज़ख की तरफ़ मजबूर कर दूंगा और वो बहुत बुरी जगह है पलटने की।

१२७. और जब उठाता था इब्राहीम उस घर की नीवें और इस्माईल ये कहते हुए ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता।

१२८. ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे हुज़ूर गरदन रखने वाला और

إِمَامًا ۖ قَالَ وَمِن ذُرِّيَّتِي ۖ قَالَ
لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ﴿١٢٤﴾
وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ
وَأَمْنًا ۖ وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ
إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَا
إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا
بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَ
الرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾
وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ
هَٰذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ
مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ آمَنَ مِنْهُم
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ قَالَ وَ
مَن كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ
أَضْطَرُّهُ إِلَىٰ عَذَابِ النَّارِ ۖ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٢٦﴾
وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ
مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ ۖ رَبَّنَا
تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾
رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ

وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً
لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ
اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾

हमारी औलाद में से एक उम्मत तेरी फ़रमाँ बरदार और हमें हमारी अेबादत के क़ाअेदे बता और हम पर अपनी रहमत के साथ रुजूअ फ़रमा बेशक तू ही है बहुत तौबा कबूल करने वाला मेहरबान।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ
يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ۭ
ع اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾

१२९. ऐ रब हमारे और भेज उनमें एक रसूल उन्ही में से कि उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और उन्हे तेरी किताब और पुख़्ता इल्म सिखाए और उन्हे ख़ूब सुथरा फ़रमाए बेशक तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला।

रुकूअ १६

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ
اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَقَدِ
اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي
الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾

१३०. और इब्राहीम के दीन से कौन मुँह फेरे सिवा उसके जो दिल का अहमक है और बेशक ज़रूर हमने दुनिया में उसे चुन लिया और बेशक वो आख़िरत में हमारे ख़ास कुर्ब की काबलियत वालों में है।

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ
اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾

१३१. जब कि उससे उसके रब ने फ़रमाया गरदन रख अर्ज़ की मैं ने गरदन रखी उस के लिए जो रब है सारे जहान का।

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَ
يَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى
لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ
اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ ؕ

१३२. और उसी दीन की वसीय्यत की इब्राहीम ने अपने बेटों को और यअ़कूब ने कि ऐ मेरे बेटो ! बेशक अल्लाह ने ये दीन तुम्हारे लिए चुन लिया तो न मरना मगर मुसलमान।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۗءَ اِذْ حَضَرَ
يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ

१३३. बल्कि तुम में कि ख़ुद मौजूद थे जब यअ़कूब को मौत आई जब कि उसने अपने बेटों से फ़रमाया

मेरे बअद किस की पूजा करोगे बोले हम पूजेंगे उसे जो खुदा है आपका और आप के आबा इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ का एक खुदा और हम उसके हुज़ूर गरदन रखे हैं।

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي ۖ قَالُوا نَعْبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِلَٰهًا وَاحِدًا وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾

१३४. ये एक उम्मत है कि गुज़र चुकी उन के लिए है जो उन्होंने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम कमाओ और उनके कामों की तुम से पुरसिश न होगी।

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٤﴾

१३५. और किताबी बोले यहूदी या नसरानी हो जाओ राह पाओगे तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन लेते है जो हर बातिल से जुदा थे और मुशरिकों से न थे।

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تَهْتَدُوا ۗ قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٣٥﴾

१३६. यूँ कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतारा गया इब्राहीम व इस्माईल व इसहाक़ व यअ़कूब और उनकी अवलाद पर और जो अता किए गए मूसा व ईसा और जो अता किए गए बाक़ी अंबिया अपने रब के पास से हम उन में किसी पर ईमान में फ़र्क़ नही करते और हम अल्लाह के हुज़ूर गरदन रखे है।

قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾

१३७. फिर अगर वो भी यूँ ही ईमान लाए जैसा तुम लाए जब तो वो हिदायत पा गए और अगर मुँह फेरे

فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا

فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيكَهُمُ
اللَّهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾

तो वो निरी ज़िद में है तो ऐ महबूब अन्क़रीब अल्लाह उनकी तरफ़ से तुम्हे किफायत करेगा और वही है सुनता जानता।

صِبْغَةَ اللَّهِ ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ
مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُ
عَابِدُونَ ﴿١٣٨﴾

قُلْ أَتُحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ
رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَ
لَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ
مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾

१३८. हम ने अल्लाह की रैनी (रंगाई) ली और अल्लाह से बेहतर किस की रैनी? (रंगाई)और हम उसी को पूजते है तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के बारे मे झगड़ते हो हालाँ कि वो हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी और हमारी करनी (हमारे अअ़माल) हमारे साथ और तुम्हारी करनी (तुम्हारे अअ़माल) तुम्हारे साथ और हम निरे उसी के है।

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَ
إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ
وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ
قُلْ أَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ ۗ وَ
مَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً
عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾

१४०. बल्कि तुम यूँ कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल व इसहाक़ व यअ़कूब और उनके बेटे यहूदी या नसरानी थे तुम फ़रमाओ क्या तुम्हें इल्म ज़्यादा है या अल्लाह को और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिस के पास अल्लाह की तरफ़ की गवाही हो और वो उसे छुपाए और ख़ुदा तुम्हारे कौतकों से बेख़बर नहीं।

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا
تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾ ع

१४१. वो एक गिरोह है कि गुज़र गया उनके लिए उनकी कमाई और तुम्हारे लिए तुम्हारी कमाई और उनके कामो की तुम से पुर्सिश न होगी।

रुकूअ १७

१४२. अब कहेंगे बेवकूफ़ लोग, किस ने फेर दिया मुसलमानों को, उन के उस क़िब्ला से, जिस पर थे तुम फ़रमादो कि पूरब पच्छिम सब अल्लाह ही का है जिसे चाहे सीधी राह चलाता है।

१४३. और बात यूँही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़्ज़ल, कि तुम लोगों पर गवाह हो और यह रसूल तुम्हारे निगेहबान व गवाह और ऐ महबूब तुम पहले जिस क़िब्ला पर थे हमने वो इसी लिए मुकर्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पांव फिर जाता है और बेशक यह भारी थी मगर उन पर, जिन्हें अल्लाह ने हिदायत की और अल्लाह की शान नहीं कि तुम्हारा ईमान अकारत करे बेशक अल्लाह आदमियों पर बहुत मेहरबान, मेहर वाला है।

१४४. हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आस्मान की तरफ़ मुँह करना तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ला की तरफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है अभी अपना मुँह फेरदो मस्जिदे हराम की तरफ़ और ऐ मुसलमानों तुम जहाँ कहीं हो अपना मुँह उसी की तरफ़

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا
وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا
عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٤٢﴾
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا
لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ
وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ۗ
وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ
عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ
الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى
عَقِبَيْهِ ۚ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا
عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ۚ وَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ
بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٣﴾
قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى
السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪
فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا
وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۚ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

करो और वो जिन्हे किताब मिली है ज़रूर जानते है कि ये उनके रब की तरफ़ से .हक़ है और अल्लाह उन के कोतकों (अअ्माल) से बे ख़बर नही।

१४५. और अगर तुम उन किताबियो के पास हर निशानी लेकर आओ वो तुम्हारे क़िब्ला की पैरवी न करेगे और न तुम उन के क़िब्ला की पैरवी करो और वो आपस मे भी एक दूसरे के क़िब्ला के ताबेअ नही और (ऐ सुननेवाले कसे बाशद) अगर तू उन की ख़्वाहिशो पर चला बाद इसके कि तुझे इल्म मिल चुका तो उस वक्त तू ज़रूर सितमगार होगा।

१४६. जिन्हे हमने किताब अता फरमाई वो उस नबी को ऐसा पहचानते है जैसे आदमी अपने बेटो को पहचानता है और बेशक उन मे एक गिरोह जान बूझ कर .हक़ छुपाते है।

१४७. (ऐ सुननेवाले) यह .हक़ है तेरे रब की तरफ़ से (या .हक़ वही है जो तेरे रब की तरफ़ से हो) तो ख़बरदार तू शक न करना।

रुकूअ १८

१४८. और हर एक के लिए तवज्जह की एक सम्त है कि वो उसी के तरफ़ मुँह करता है तो यह चाहो कि नेकियों मे औरो से आगे निकल जाए तुम कहीं हो अल्लाह तुम सब को इकट्ठा ले आयेगा बेशक अल्लाह जो चाहे करे

१४९. और जहां से आओ अपना मुँह मस्जिदे .हराम की तरफ़ करो और वो ज़रूर तुम्हारे रब की तरफ़ से .हक़

أُوتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
يَعْمَلُونَ ﴿١٤٤﴾
وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ
بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ
بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ
قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ
مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ
إِنَّكَ إِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِينَ ﴿١٤٥﴾
الَّذِينَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُونَهُ
كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا
مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾
اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُمْتَرِينَ ﴿١٤٧﴾ ع
وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا فَاسْتَبِقُوا
الْخَيْرٰتِ ۗ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللّٰهُ
جَمِيعًا ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾
وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ

مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾
وَ مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا
يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۚ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَ
اخْشَوْنِيْ ۚ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ
وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾
كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا
عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ
تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾
فَاذْكُرُوْنِيْۤ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَ
لَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ
وَالصَّلٰوةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۗ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ لٰكِنْ
لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾

है और अल्लाह तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं।

१५०. और ऐ महबूब तुम जहाँ से आओ अपना मुँह मस्जिदे हराम की तरफ करो और ऐ मुसलमानो तुम जहाँ कहीं हो अपना मुँह उसी की तरफ़ करो कि लोगों को तुम पर कोई हुज्जत न रहे मगर जो उनमें ना इन्साफी करें तो उन से न डरो और मुझ से डरो और यह इस लिए है कि मै अपनी नेअ्मत तुम पर पूरी करु और किसी तरह तुम हिदायत पाओ।

१५१. जैसा हमने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फरमाता है और तुम्हें पाक करता और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है और तुम्हें वो तअ्लीम फ़रमाता है जिसका तुम्हें इल्म न था।

१५२. तो मेरी याद करो मै तुम्हारा चरचा करूंगा और मेरा हक़ मानो और मेरी ना शुक्री न करो।

रूकूअ १९

१५३. ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ मे मदद चाहो बेशक अल्लाह साबिरों के साथ है।

१५४. और जो खुदा की राह में मारे जाएँ उन्हे मुर्दा न कहो बल्कि वो ज़िन्दा है, हाँ तुम्हें ख़बर नहीं।

१५५ और जरूर हम तुम्हें आज़माएँगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालो और जानों और फलों की कमी से और खुशख़बरी सुना उन सब वालों को।

१५६. कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम अल्लाह के माल हैं और हमको उसी के तरफ़ फिरना।

१५७. ये लोग हैं जिन पर उनके रब की दुरूदें हैं और रहमत और यही लोग राह पर हैं।

१५८. बेशक सफ़ा और मरवह अल्लाह के निशानों से है तो जो उस घर का हज या उमरा करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे और जो कोई भली बात अपनी तरफ़ से करे तो अल्लाह नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है।

१५९. बेशक वो जो हमारी उतारी हुई रौशन बातों और हिदायत को छुपाते है बाद इसके कि लोगो के लिए हम उसे किताब में वाज़ेह फ़रमा चुके उन पर अल्लाह की लअ्नत है और लअ्नत करने वालो की लअ्नत।

१६०. मगर वो जो तौबा करें और सँवारें और ज़ाहिर करें तो मैं उन की तौबा क़बूल फ़रमाऊँगा और मैं ही हूँ बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेहरबान।

१६१. बेशक वो जिन्हो ने कुफ़्र किया और काफ़िर ही मरे उन पर

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ
وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنفُسِ
وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾
الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ
قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٦﴾
أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ
وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾
إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ
اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ
وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ
عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾
إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ
الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِن بَعْدِ مَا
بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ
يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ﴿١٥٩﴾
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا
فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ

लअ्नत है अल्लाह और फ़रिश्तो और आदमियो सब की।

१६२. हमेशा रहेंगे उसमे न उन पर से अज़ाब हलका हो और न उन्हे मुहलत दीजाए।

१६३. और तुम्हारा मअ्बूद एक मअ्बूद है उस के सिवा कोई मअ्बूद नहीं मगर वही बड़ी रह्मत वाला मेहरबान।

रुकूअ़ २०

१६४. बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती कि दरिया में लोगों के फ़ाएदे लेकर चलती है और वो जो अल्लाह ने आसमान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को उस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओ की गर्दिश और वो बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बान्धा है इन सब में अक़्लमन्दों के लिए ज़रूर निशानियाँ हैं।

१६५. और कुछ लोग अल्लाह के सिवा और मअ्बूद बना लेते हैं कि उन्हें अल्लाह की तरह मह्बूब रखते हैं, और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की महब्बत नहीं और कैसे हो अगर देखें ज़ालिम वो वक़्त जब कि अज़ाब उन की आँखों के

كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ
وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾
وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
ع الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾
اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَ
الْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ
بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا
مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ
وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٦٤﴾
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ
اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا
لِّلّٰهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ
يَرَوْنَ الْعَذَابَ اَنَّ الْقُوَّةَ

सामने आएगा इसलिए कि सारा ज़ोर खुदा को है. और इसलिए कि अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है.

१६६. जब बेज़ार होंगे पेशवा अपने पैरोओं से और देखेंगे अज़ाब और कट जायेंगी उन सब की डोर.

१६७. और कहेंगे पैरो काश हमें लौटकर जाना होता (दुनिया में) तो हम उनसे तोड़ देते जैसे उन्होंने हम से तोड़ दी यूँही अल्लाह उन्हें दिखायेगा उनके काम उन पर हसरतें होकर और वो दोज़ख़ से निकलने वाले नहीं।

रुकूअ २१

१६८. ऐ लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में हलाल पाकीज़ा है और शैतान के क़दम पर क़दम न रखो बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

१६९. वो तो तुम्हें यही हुक्म देगा बदी और बेहयाई का और ये कि अल्लाह पर वो बात जोड़ो जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं।

१७०. और जब उनसे कहा जाए अल्लाह के उतारे पर चलो तो कहें बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर अपने बाप दादा को पाया क्या अगरचे उनके बाप दादा न कुछ अक़्ल रखते

لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾
اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا وَ رَاَوُا الْعَذَابَ وَ تَقَطَّعَتْ
بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾
وَ قَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا
كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا
مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ
حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَ مَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ
مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ ع
يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى
الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖؗ وَّ لَا تَتَّبِعُوْا
خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾
اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَ الْفَحْشَآءِ
وَ اَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا
لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾
وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ
اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ

हों न हिदायत।

१७१. और काफ़िरो की कहावत उस की सी है जो पुकारे ऐसे को कि खाली चीख पुकार के सिवा कुछ न सुने, बहरे, गूंगे, अन्धे, तो उन्हें समझ नहीं।

१७२. ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़े और अल्लाह का एहसान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो।

१७३. उसने यही तुम पर हराम किये है मुर्दार और खून और सूवर का गोश्त और वो जानवर जो ग़ैरे खुदा का नाम लेकर ज़बह किया गया, तो जो नाचार हो न यूँ कि ख़्वाहिश से खाए और न यूं कि ज़रूरत से आगे बढ़े तो उस पर गुनाह नहीं बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

१७४. वो जो छुपाते हैं अल्लाह की उतारी किताब और उस के बदले ज़लील क़ीमत ले लेते है वो अपने पेट में आग ही भरते है, और अल्लाह क़यामत के दिन उन से बात न करेगा और न उन्हें सुथरा करे, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

१७५. वो लोग है जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली और बख़्शिश

شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾
وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ
الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا
دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ
فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ
اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾
اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ
وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ
لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ
وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا
قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ
بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ
اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ

بِالْهُدٰى وَ الْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ
فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ ۗ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى
ع الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾
لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ
قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ
الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ وَ الْكِتٰبِ
وَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ
ذَوِى الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنَ
وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَ السَّآئِلِيْنَ وَ
فِى الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى
الزَّكٰوةَ ۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا
عٰهَدُوْا ۚ وَ الصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ
وَ الضَّرَّآءِ وَ حِيْنَ الْبَاْسِ ۗ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۗ وَ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ۗ اَلْحُرُّ

के बदले अज़ाब तो किस दर्जा उन्हे आग की सहार है (बरदाश्त है)।

१७६. ये इसलिए कि अल्लाह ने किताब हक़ के साथ उतारी और बेशक जो लोग किताब में इख़तिलाफ़ डालने लगे वो ज़रूर परले सिरे के झगड़ालू है।

रुकूअ २२

१७७. कुछ असल नेकी ये नहीं कि मुँह मशरिक या मग़रिब की तरफ़ करो हाँ असल नेकी ये कि ईमान लाये अल्लाह और क़यामत और फ़रिश्तो और किताब और पैग़म्बरों पर और अल्लाह की महब्बत में अपना अज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदनें छुड़ाने में और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें और अपना क़ौल पूरा करने वोले जब अहद करें और सब्र वाले मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त यही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की और यही परहेज़गार है।

१७८. ऐ ईमान वालो तुम पर फ़र्ज़ है कि जो नाहक़ मारे जाएँ उन के खून का बदला लो आज़ाद के बदले

आजाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत तो जिस के लिए उसके भाई की तरफ़ से कुछ मुआफी हुई तो भलाई से तक़ाज़ा हो और अच्छी तरह् अदा यह तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारा बोझ हलका करना है और तुम पर रह्मत तो इस के बाद जो ज़्यादती करे उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

१७९. और खून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ऐ अक़्लमन्दों कि तुम कहीं बचो।

१८०. तुम पर फ़र्ज़ हुआ कि जब तुम में किसी को मौत आए अगर कुछ माल छोड़े तो वसीय्यत कर जाए अपने माँ बाप और क़रीब के रिश्तेदारों के लिये मुवाफ़िक़े दस्तूर ये वाजिब है परहेज़गारों पर।

१८१. तो जो वसीय्यत को सुन सुनाकर बदल दे उस का गुनाह उन्हीं बदलने वालों पर है बेशक अल्लाह सुनता जानता है।

१८२. फिर जिसे अन्देशा हुआ कि वसीय्यत करने वाले ने कुछ बे इन्साफी या गुनाह किया तो उसने उन में सुलह् करा दी उसपर कुछ गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثٰى
بِالْأُنْثٰى ۗ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ
أَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ
وَأَدَآءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ۗ ذٰلِكَ
تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ
فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ
عَذَابٌ أَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾
وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰأُولِي
الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾
كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖۚ الْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ
حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾
فَمَنْ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ
فَإِنَّمَا إِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ۗ
إِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾
فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا أَوْ
إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۗ
إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨٢﴾

मेहरबान है।

रुकूअ २३

१८३ ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले।

१८४. गिन्ती के दिन हैं, तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इस की ताक़त न हो वो बदला दें एक मिस्कीन का खाना फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़्यादा करे तो वो उसके लिए बेहतर है और रोज़ा रखना तुम्हारे लिए ज़्यादा भला है अगर तुम जानो।

१८५. रमज़ान का महीना जिसमें कुरऑन उतरा लोगों के लिए हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रौशन बातें तो तुम में जो कोई ये महीना पाए ज़रूर इसके रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो तो इतने रोज़े और दिनों में, अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इसलिए कि तुम गिन्ती पूरी करो और अल्लाह की बड़ाई बोलो इस पर कि उसने तुम्हें हिदायत की

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُتِبَ عَلَيْكُمُ
ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ
مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٨٣﴾

أَيَّامًا مَّعْدُودَٰتٍ ۚ فَمَن كَانَ
مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ
فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى
ٱلَّذِينَ يُطِيقُونَهُۥ فِدْيَةٌ طَعَامُ
مِسْكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا
فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُۥ ۚ وَأَن تَصُومُوا۟ خَيْرٌ
لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾

شَهْرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِىٓ أُنزِلَ
فِيهِ ٱلْقُرْءَانُ هُدًى لِّلنَّاسِ
وَبَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْهُدَىٰ وَٱلْفُرْقَانِ ۚ
فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ ٱلشَّهْرَ
فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا
أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ
أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ ٱللَّهُ بِكُمُ
ٱلْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ ٱلْعُسْرَ
وَلِتُكْمِلُوا۟ ٱلْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا۟

اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

और कही तुम हक़ गुज़ार हो।

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ
فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ
الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا
لِىْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِىْ لَعَلَّهُمْ
يَرْشُدُوْنَ ﴿۱۸۶﴾

१८६. और ऐ महबूब जब तुमसे मेरे बन्दे मुझे पूछे तो मै नज़दीक हूं दुआ कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की जब मुझे पुकारें तो उन्हें चाहिए मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लायें कि कहीं राह पायें।

اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ
اِلٰى نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ
وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ
اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ
اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا
عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَ
ابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۪
وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ
لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ
الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا
الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ
وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِى الْمَسٰجِدِ ؕ

१८७. रोज़ों की रातों मे अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिए हलाल हुआ वो तुम्हारी लिबास हैं और तुम उनके लिबास, अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़यानत मे डालते थे तो उसने तुम्हारी तौबा कुबूल की और तुम्हें मुआफ़ फ़रमाया तो अब उन से सोहबत करो और तलब करो जो अल्लाह ने तुम्हारे नसीब में लिखा हो और खाओ और पियो यहाँ तक कि तुम्हारे लिए ज़ाहिर होजाए सफ़ेदी का डोरा, सियाही के डोरे से (पौ फटकर) फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो और औरतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदो मे एअ्तिकाफ़ से हो ये अल्लाह की हदें है इन के पास न जाओ अल्लाह

यूँ ही बयान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़गारी मिले।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾

१८८. और आपस मे एक दूसरे का माल ना-हक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उन का मुक़दमा इसलिए पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल नाजाएज़ तौर पर खालो जान बूझ कर।

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ
لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ
ع بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾

रुकूअ २४

१८९. तुम से नए चाँद को पूछते हैं तुम फ़रमादो वो वक़्त की अलामतें है लोगों और हज के लिए और ये कुछ भलाई नहीं कि घरों में पछेत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ हाँ भलाई तो परहेज़गारी है और घरों में दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।

يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ
هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ
وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ
مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ
مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ
اَبْوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾

१९०. और अल्लाह की राह में लड़ो उनसे जो तुमसे लड़ते हैं और हद से न बढ़ो अल्लाह पसन्द नहीं रखता हदसे बढ़ने वालों को।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾

१९१. और काफ़िरों को जहाँ पाओ मारो और उन्हें निकाल दो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला था और उन का

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ
وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ

وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ
وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِندَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ
فَإِن قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ
جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾

फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है और मस्जिदे हराम के पास उन से न लड़ो जब तक वो तुम से वहाँ न लड़ें और अगर तुम से लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो काफ़िरों की यही सज़ा है।

فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾

१९२. फिर अगर वो बाज़ रहें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ
وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ ۖ فَإِنِ
انتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى
الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾

१९३. और उनसे लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़ितना न रहे और एक अल्लाह की पूजा हो फिर अगर वो बाज़ आएं तो ज़्यादती नहीं मगर ज़ालिमों पर ।

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ
وَالْحُرُمَاتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنِ
اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ
بِمِثْلِ مَا اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩٤﴾

१९४. माहे हराम के बदले माहे हराम और अदब के बदले अदब है जो तुम पर ज़्यादती करे उस पर ज़्यादती करो उतनी ही जितनी उसने की और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि आल्लाह डर वालों के साथ है।

وَأَنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا
ع بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَأَحْسِنُوا ۛ

१९५. और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो और भलाई वाले होजाओ बेशक

भलाई वाले अल्लाह के महबूब हैं।

१९६. और हज और उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो फिर अगर तुम रोके जाओ तो कुरबानी भेजो जो मुयस्सर आए और अपने सर न मुंडाओ जबतक कुरबानी अपने ठिकाने न पहुँच जाए फिर जो तुम में बीमार हो या उसके सर में कुछ तकलीफ़ है तो बदला दे, रोज़े या ख़ैरात या कुरबानी फिर जब तुम इतमिनान से हो तो जो हज से उमरा मिलाने का फ़ायदा उठाए उस पर कुरबानी है जैसी मुयस्सर आए फिर जिसे मक़दूर न हो तो तीन रोज़े हज के दिनो में रखे और सात जब अपने घर पलटकर जाओ ये पूरे दस हुए ये हुक्म उस के लिए है जो मक्का का रहने वाला न हो, और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो के अल्लाह कि अज़ाब सख़्त है।

रुकूअ २५

१९७. हज के कई महीने है जाने हुए तो जो उन में हज की नियत करे तो न औरतों के सामने सोहबत का तज़किरा हो न कोई गुनाह न किसी से झगड़ा हज के वक्त तक, और तुम जो भलाई करो अल्लाह उसे जानता है

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٩٥﴾

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۚ فَإِنْ
أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ
الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ
حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ فَمَنْ
كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى
مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ
أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ
فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ
فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ
فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ
فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ
تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ
لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوا
ع أَنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾

الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَعْلُومَاتٌ ۚ فَمَنْ
فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَ
لَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ

وما تفعلوا من خير يعلمه الله
وتزودوا فإن خير الزاد التقوى
واتقون يأولي الألباب ١٩٧

और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़गारी है और मुझ से डरते रहो ऐ अक़्ल वालो।

ليس عليكم جناح أن تبتغوا
فضلا من ربكم فإذا أفضتم
من عرفت فاذكروا الله عند
المشعر الحرام واذكروه كما
هدىكم وإن كنتم من قبله
لمن الضالين ١٩٨

१९८. तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो तो जब अ़रफ़ात से पलटो तो अल्लाह की याद करो, मशअ़रे ह़राम के पास और उस का ज़िक्र करो जैसे उसने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और बेशक इससे पहले तुम बहके हुए थे।

ثم أفيضوا من حيث أفاض
الناس واستغفروا الله إن الله
غفور رحيم ١٩٩

१९९. फिर बात ये है कि ऐ कुरैशियो तुम भी वही से पलटो जहाँ से लोग पलटते हैं, और अल्लाह से मुआफ़ी मांगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

فإذا قضيتم مناسككم فاذكروا
الله كذكركم آباءكم أو أشد
ذكرا فمن الناس من يقول ربنا
آتنا في الدنيا وما له في الآخرة
من خلاق ٢٠٠

२००. फिर जब अपने ह़ज के काम पूरे कर चुको तो अल्लाह का ज़िक्र करो जैसे कि अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे बल्कि उससे ज़्यादा और कोई आदमी यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में दे और आख़ेरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं।

ومنهم من يقول ربنا آتنا في
الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة

२०१. और कोई यूँ कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

२०२. ऐसों को उन की कमाई से भाग है (खुशनसीबी) और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है।

२०३. और अल्लाह को याद करो गिने हुए दिनो में तो जल्दी करके दो दिन में चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उस पर गुनाह नही परहेज़गार के लिए और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उसी की तरफ़ उठना है।

२०४. और बअ्ज़ आदमी वो है कि दुनिया की ज़िन्दगी में उस की बात तुझे भली लगे और अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह लाए और वो सब से बड़ा झगड़ालू है।

२०५. और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फसाद डालता फिरे और खेती और जानें तबाह करे और अल्लाह फसाद से राज़ी नहीं।

२०६. और जब उससे कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उसे और ज़िद चढे गुनाह की ऐसे को दोज़ख काफ़ी है और वो ज़रूर बहुत बुरा बिछौना है।

२०७. और कोई आदमी अपनी

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِمَّا كَسَبُوا ۚ
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَعْدُودَاتٍ ۚ
فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ
عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ
لِمَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا
أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللَّهَ عَلَىٰ
مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾

وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ
لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ
وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾
وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ
الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ ۚ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ ۚ
وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ

जान बेचता है अल्लाह की मरज़ी चाहने में और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है।

२०८. ऐ ईमान वालो इस्लाम में पुरे दाख़िल हो और शैतान के क़दमों पर न चलो बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

२०९. और अगर उसके बाद भी बिचलो कि तुम्हारे पास रौशन हुक्म आचुके तो जानलो कि अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है।

२१०. काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर यही कि अल्लाह का अज़ाब आए छाए हुए बादलों में और फ़रिश्ते उतरें और काम हो चुके और सब कामों की रूजूअ अल्लाह की तरफ़ है।

रूकूअ २६

२११. बनी इस्राईल से पुछो हमने कितनी रौशन निशानियाँ उन्हें दी और जो अल्लाह की आई हुई नेअ्मत को बदल दे तो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

२१२. काफ़िरों की निगाह में दुनिया की ज़िन्दगी आरास्ता की गई और मुसलमानों से हँसते हैं और डर वाले

ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ
بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِی
السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٨﴾

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ
الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ﴿٢٠٩﴾

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ
اللّٰهُ فِیْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِیَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾

سَلْ بَنِیْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ اٰيَةٍۭ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ
نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ
فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا
وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ
وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ

उन से ऊपर होंगे क़यामत के दिन और खुदा जिसे चाहे बे गिन्ती दे।

الْقِيٰمَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾

२१३. लोग एक दीन पर थे फिर अल्लाह ने अंबिया भेजे खुशख़बरी देते और डर सुनाते और उन के साथ सच्ची किताब उतारी कि वो लोगों में उन के इख़्तिलाफ़ो का फ़ैसला करदें, और किताब में इख़्तिलाफ़ उन्हीं ने डाला जिनको दी गई थी बाद इस के कि उन के पास रौशन हुक्म आचुके आपस की सरकशी से तो अल्लाह ने ईमान वालों को वो हक़ बात सुझा दी जिस में झगड़ रहे थे, अपने हुक्म से, और अल्लाह जिसे चाहे सीधी राह दिखाए।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۗ
فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَ
مُنْذِرِيْنَ ۖ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ
اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا
جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ
فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ۗ
وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾

२१४. क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर अगलों की सी रूदाद (हालत) न आई पहुंची उन्हे सख़्ती और शिद्दत और हिला हिला डाले गए यहाँ तक कि कह उठा रसूल और उसके साथ के ईमान वाले कब आयेगी अल्लाह की मदद सुन लो बेशक अल्लाह की

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ
وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ ۗ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ
وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ۗ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ

मदद क़रीब है।

२१५. तुम से पूछते है क्या ख़र्च करे तुम फ़रमाओ जो कुछ माल, नेकी मे ख़र्च करो तो वो माँ बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों और राहगीर के लिए है और जो भलाई करो बेशक अल्लाह उसे जानता है।

२१६. तुम पर फ़र्ज़ हुआ ख़ुदा की राह में लड़ना और वो तुम्हें नागवार है और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वो तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसंद आए और वो तुम्हारे हक़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

रुकूअ २७

२१७. तुम से पूछते है माहे ह़राम में लड़ने का हुक्म तुम फ़रमाओ इस में लड़ना बड़ा गुनाह है और अल्लाह की राह से रोकना और उस पर ईमान न लाना और मस्जिदे ह़राम से रोकना और उस के बसने वालों को निकाल देना, अल्लाह के नज़दीक ये गुनाह उससे भी बड़े हैं और उन का फ़साद क़त्ल से सख़्त तर है, और हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहाँ तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर बन पड़े

اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۥ قُلْ
مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ
وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا
مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ
لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا
وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ
تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ
قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ
وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ
بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ
اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ
وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَ
لَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى
يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ

और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे, फिर काफ़िर होकर मरे तो उन लोगो का किया अकारत गया दुनिया मे और आख़िरत में और वो दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना।

२१८. वो जो ईमान लाए और वो जिन्होंने अल्लाह के लिए अपने घर बार छोड़े और अल्लाह की राह में लड़े वो रहमते इलाही के उम्मीदवार है और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

२१९. तुम से शराब और जुए का हुक्म पूछते है तुम फ़रमा दो कि उन दोनों मे बड़ा गुनाह है और लोगो के कुछ दुनियावी नफ़अ भी और उन का गुनाह उन के नफ़अ से बड़ा है और तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो फ़ाज़िल बचे, इसी तरह अल्लाह तुम से आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम ।

२२०. दुनिया और आख़िरत के काम सोचकर करो और तुम से यतीमो का मसअला पूछते हैं तुम फ़रमाओ उन का भला करना बेहतर है और अगर अपना उनका ख़र्च मिलालो तो वो तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा ख़ूब जानता है बिगाड़ने वाले को संवारने

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ ۚ قُلِ الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١٩﴾

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ

वाले से और अल्लाह चाहता तो तुम्हे मशक़्क़त में डालता बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है।

२२१. और शिर्क वाली औरतों से निकाह न करो जबतक मुसलमान न हो जाएँ और बेशक मुसलमान लौंडी मुशरिका से अच्छी हैं अगरचे वो तुम्हें भाती हों और मुशरिकों के निकाह में न दो जबतक वो ईमान न लाएँ और बेशक मुसलमान गुलाम मुशरिक से अच्छा अगरचे वो तुम्हें भाता हो वो दोज़ख की तरफ़ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत और बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है अपने हुक्म से और अपनी आयतें लोगों के लिए बयान करता है कि कहीं वो नसीहत मानें.

रुकूअ २८

२२२. और तुमसे पूछते हैं हैज़ का हुक्म तुम फ़रमाओ वो नापाकी है, तो औरतों से अलग रहो हैज़ के दिनों और उनसे नज़दीकी न करो जबतक पाक न होलें फिर जब पाक होजाएँ तो उनके पास जाओ जहाँ से तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया बेशक अल्लाह पसन्द करता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٠﴾

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۭ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۭ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ښ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾ ع

وَيَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَاۗءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْھُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْھُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَأْتُوْا حَرْثَكُمْ
اَنّٰى شِئْتُمْ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾

२२३. तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिये खेतियाँ है तो आओ अपनी खेतियो में जिस तरह् चाहो और अपने भले का काम पहले करो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उससे मिलना है और ऐ मह्बूब बिशारत दो ईमान वालों को।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ
اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ
النَّاسِ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۴﴾

२२४. और अल्लाह को अपनी क़समों का निशाना न बनालो कि ऐह्सान और परहेज़गारी और लोगों में सुलह् करने की क़सम करलो और अल्लाह सुनता जानता है।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ
اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا
كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
حَلِيْمٌ ﴿۲۲۵﴾

२२५. अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता उन क़समों में जो बे इरादा ज़ुबान से निकल जाए हाँ उस पर गरिफ्त फ़रमाता है जो काम तुम्हारे दिलों ने किए और अल्लाह बख़्शने वाला, हिल्म वाला है।

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ
تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ فَاِنْ فَآءُوْ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۲۶﴾

२२६. वो जो क़सम खा बैठते हैं अपनी औरतों के पास जाने की उन्हें चार महीने की मुहलत है पस अगर इस मुद्दत में फिर आए तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۷﴾

२२७. और अगर छोड़ देने का इरादा पक्का कर लिया तो अल्लाह सुनता जानता है।

وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ
ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ
يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ

२२८. और तलाक़ वालियाँ अपनी जानों को रोके रहें तीन हैज़ तक और उन्हे ह्लाल नहीं कि छुपाएँ वो जो अल्लाह ने उन के पेट में पैदा किया,

अगर अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखती है और उन के शौहरो को उस मुद्दत के अन्दर उन के फेर लेने का हक़ पहुंचता है अगर मिलाप चाहे और औरतो का भी हक़ ऐसा ही है जैसा उन पर है शरअ के मुवाफ़िक़ और मर्दों को उन पर फ़ज़ीलत है और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

إِن كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ ۚ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ
فِي ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا ۚ
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾

रूकूअ २९

२२९. ये तलाक़ दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है न कोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ देना है और तुम्हें रवा नही कि जो कुछ औरतों को दिया उसमें से कुछ वापस लो मगर जब दोनो को अन्देशा हो कि अल्लाह कि हदें क़ायम न करेंगे फिर अगर तुम्हें खौफ़ हो कि वो दोनो ठीक इन्ही ह़दों पर न रहेंगे तो उन पर कुछ गुनाह नही इसमें जो बदला देकर औरत छुट्टी ले ये अल्लाह की हदे है इन से आगे न बढ़ो और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़े तो वही लोग ज़ालिम हैं।

الطَّلَاقُ مَرَّتَانِ ۖ فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ
أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ۗ وَلَا يَحِلُّ
لَكُمْ أَن تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ
شَيْئًا إِلَّا أَن يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا
حُدُودَ اللَّهِ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا
يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ ۗ تِلْكَ
حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ وَمَن
يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ﴿٢٢٩﴾

२३०. फिर अगर तीसरी तलाक़ उसे दी तो अब वो औरत उसे ह़लाल न होगी जबतक दुसरे ख़ाविन्द के पास न रहे फिर वो दूसरा अगर उसे तलाक़ दे दे तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि

فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِن
بَعْدُ حَتَّىٰ تَنكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۗ
فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا

फिर आपस में मिल जाएं अगर समझते हो कि अल्लाह की हदें निबाहेंगे और ये अल्लाह की हदें है जिन्हें बयान करता है, दानिशमन्दों के लिए।

أَنْ يَّتَرَاجَعَآ إِنْ ظَنَّآ أَنْ يُّقِيمَا حُدُودَ اللّٰهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُودُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾

२३१. और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उनकी मीआद आ लगे तो उस वक़्त तक या भलाई के साथ रोकलो या नेकोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ दो और उन्हें ज़रर देने के लिये रोकना ना हो कि हद से बढ़ो और जो ऐसा करे वो अपना ही नुक़्सान करता है और अल्लाह की आयतों को ठट्ठा न बनालो और याद करो अल्लाह का एहसान जो तुम पर है और वो जो तुम पर किताब और हिक़्मत उतारी तुम्हें नसीहत देने को और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ أَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۗ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۗ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۚ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾ ع

रूकूअ ३०

२३२. और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उन कि मीआद पूरी हो जाए तो ऐ औरतों के वालियो उन्हें न रोको इससे कि अपने शौहरों से निकाह़ करलें जब कि आपस में मुवाफ़िक़े शरअ़ रज़ामन्द हो जायें ये नसीहत उसे दी जाती है जो तुम में से अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखता हो ये तुम्हारे लिये ज़्यादा सुथरा और पाकीज़ा

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ أَنْ يَّنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ ذٰلِكُمْ أَزْكٰى لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ
حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ
يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ
رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ
لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ
وَالِدَةٌ ۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ
بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ
فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ
مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ
وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا
اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا
سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ
اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ
اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ

है और अल्लाह जानता है और तुम नही जानते।

२३३. और माएँ दूध पिलाएँ अपने बच्चो को पूरे दो बरस उस के लिए जो दूध की मुद्दत पूरी करनी चाहे और जिसका बच्चा है उस पर औरतो का खाना और पहनना है हस्बे दस्तूर किसी जान पर बोझ न रखा जाएगा मगर उस के मक़्दुर भर, माँ को ज़रर न दिया जाए उसके बच्चे से और न अवलाद वाले को उसकी अवलाद से या माँ ज़रर न दे अपने बच्चे को और न अवलाद वाला अपनी अवलाद को और जो बाप का क़ायम मुक़ाम है उस पर भी ऐसा ही वाजिब है फिर अगर माँ बाप दोनों आपस की रज़ा और मश्वरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर गुनाह नहीं और अगर तुम चाहो कि दाइयो से अपने बच्चों को दूध पिलवाओ तो भी तुम पर मुज़ायक़ा नहीं जब कि जो देना ठहरा था भलाई के साथ उन्हें अदा कर दो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

२३४. और तुम में जो मरें और बीबियाँ छोड़ें वो चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें तो जब उन की इद्दत पूरी होजाए तो ऐ वालियो

فِىٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ
بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِىٓ
اَنْفُسِكُمْ ۗ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ
وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ
تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا
عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ
اَجَلَهٗ ۗ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا
فِىٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾ ع

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ
النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا
لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى
الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ
قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًۢا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا
عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ

तुम पर मुआखिज़ा नही उस काम मे जो औरतें अपने मुआमले मे मुवाफिके शरअ करें और अल्लाह को तुम्हारे कामो की ख़बर है।

२३५. और तुम पर गुनाह नही इस बात मे जो पर्दा रखकर तुम औरतो के निकाह् का पयाम दो या अपने दिल मे छुपा रखो, अल्लाह जानता है कि अब तुम उनकी याद करोगे हाँ उनसे खुफ़िया वअ्दा न कर रखो मगर ये कि इतनी बात कहो जो शरअ मे मअ्रुफ़ है और निकाह् की गिरह पक्की न कर जबतक लिखा हुआ हुक्म अपनी मीआद को न पहुंचले और जानलो कि अल्लाह तुम्हारे दिल की जानता है तो उससे डरो और जानलो कि अल्लाह बख़्शने वाला हिल्मवाला है।

रुकूअ ३१

२३६. तुम पर कुछ मुतालबा नही तुम औरतो को तलाक़ दो जबतक तुमने उनको हाथ न लगाया हो या कोई महेर मुकर्रर कर लिया हो और उनको कुछ बरतने को दो मक़दूर वाले पर उसके लाएक़ और तंगदस्त पर उसके लाएक़ ह्स्बे दस्तूर कुछ बरतने की चीज़ ये वाजिब है भलाई वालो पर।

२३७. और अगर तुमने औरतो को बे छुए तलाक़ दे दी और उनके लिये कुछ महेर मुकर्रर कर चुके थे तो

जितना ठहरा था उसका आधा वाजिब है मगर ये कि औरतें कुछ छोड़ दें या वो ज़्यादा दे जिसके हाथ में निकाह की गिरह है और ऐ मर्दो तुम्हारा ज़्यादा देना परहेज़गारी से नज़दीक तर है और आपस में एक दुसरे पर एहसान को भुला न दो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

२३८. निगहबानी करो सब नमाज़ों की और बीच की नमाज़ की और खड़े हो अल्लाह के हुज़ूर अदब से।

२३९. फिर अगर ख़ौफ में हो तो पियादा या सवार जैसे बन पड़े फिर जब इतमिनान से हो तो अल्लाह की याद करो जैसा उसने सिखाया जो तुम न जानते थे।

२४०. और जो तुम में मरें और बीबियाँ छोड़ जाएँ वो अपनी औरतों के लिए वसीय्यत कर जाएँ साल भर तक नान नफ़क़ा देने की बे निकाले फिर अगर वो खुद निकल जाएँ तो तुम पर इसका मुआख़िज़ा नहीं जो उन्होंने अपने मुआमले में मुनासिब तौर पर किया और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

२४१. और तलाक़ वालियों के लिए भी मुनासिब तौर पर नान व नफ़क़ा है ये वाजिब है परहेज़गारों पर।

२४२. अल्लाह यूँहीं बयान करता है तुम्हारे लिए अपनी आयतें कि कहीं

فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا
أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَا الَّذِي بِيَدِهِ
عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ
لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ
إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٧﴾

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ
الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ﴿٢٣٨﴾

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ
فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ
مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٩﴾

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ
أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا
إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي
أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾

وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿٢٤١﴾

كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ

तुम्हें समझ हो।

रुकूअ ३२

२४३. ऐ महबूब क्या तुमने न देखा था उन्हें जो अपने घरो से निकले और वो हज़ारों थे मौत के डर से तो अल्लाह ने उनसे फ़रमाया मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है मगर अक्सर लोग ना शुकरे हैं।

२४४. और लड़ो अल्लाह की राह में और जान लो कि अल्लाह सुनता जानता है।

२४५. है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े हसन दे तो अल्लाह उसके लिए बहुत गुना बढ़ा दे, और अल्लाह तंगी और कशाइश करता है और तुम्हें उसी की तरफ़ फिर जाना।

२४६. ऐ महबूब क्या तुमने न देखा बनी इसराईल के एक गिरोह को जो मूसा के बाद हुआ जब अपने एक पैग़म्बर से बोले हमारे लिए खड़ा करदो एक बादशाह कि हम खुदा की राह में लड़ें, नबी ने फ़रमाया क्या तुम्हारे अन्दाज़ ऐसे हैं कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाए तो फिर न करो बोले हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह की राह मे न लड़ें हालाँकि हम निकाले गए है अपने वतन और अपनी अवलाद से तो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़

ع لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ
دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ
فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ
اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْا
اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا
حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً
وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُطُ وَاِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْ بَنِيْ اِسْرَآءِيْلَ
مِنْ بَعْدِ مُوْسٰى اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ
ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ
عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا قَالُوْا
وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَ

اَبْنَآىِٕنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ
بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ؕ قَالُوْٓا
اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ
اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً
مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰهُ
عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ؕ
وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ
يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَ
اٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ
اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ
مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّىْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ

किया गया मुँह फेर गए मगर उन में के थोड़े और अल्लाह खूब जानता है ज़ालिमों को।

२४७. और उनसे उन के नबी ने फ़रमाया बेशक अल्लाह ने तालूत को तुम्हारा बादशाह बनाकर भेजा है बोले उसे हम पर बादशाही क्यों कर होगी और हम उससे ज़्यादा सल्तनत के मुस्तहिक़ हैं और उसे माल में भी वुसअत नहीं दी गई फ़रमाया उसे अल्लाह ने तुम पर चुन लिया और उसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़्यादा दी और अल्लाह अपना मुल्क जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है।

२४८. और उनसे उनके नबी ने फ़रमाया उसकी बादशाही की निशानी ये है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें मोअज़्ज़ज़ मूसा और मोअज़्ज़ज़ हारून के तरके की, उठाते लाएँगे उसे फ़रिश्ते बेशक उसमें बड़ी निशानी है तुम्हारे लिए अगर ईमान रखते हो।

रुकूअ ३३

२४९. फिर जब तालूत लश्करों को लेकर शहर से जुदा हुआ बोला बेशक अल्लाह तुम्हें एक नहर से

فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ
بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ
فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ
بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ
يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ
فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٢٤٩﴾

आज़माने वाला है तो जो उसका पानी पिये वो मेरा नही और जो न पिये वो मेरा है मगर वो जो एक चुल्लू अपने हाथसे लेले तो सबने उससे पिया मगर थोड़ों ने फिर जब तालूत और उसके साथके मुसलमान नहर के पार गए बोले हम में आज ताक़त नहीं जालूत और उस के लश्करों की बोले वो जिन्हे अल्लाह से मिलने का यक़ीन था कि बारहा कम जमाअत ग़ालिब आई है ज़्यादा गिरोह पर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह साबिरों के साथ है।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا
رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا
وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٥٠﴾ؕ

२५०. फिर जब सामने आए जालूत और उस के लश्करों के अर्ज़ की ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल और हमारे पाँव जमे रख और काफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर।

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ دَاوٗدُ
جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ
وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ
اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ
لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ
فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٥١﴾

२५१. तो उन्होंने उनको भगा दिया अल्लाह के हुक्म से और क़त्ल किया दाऊद ने जालूत को और अल्लाह ने उसे सल्तनत और हिकमत अता फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखाया और अगर अल्लाह लोगों में बअ्ज़ से बअ्ज़ को दफ़अ न करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह होजाए मगर अल्लाह सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ
وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٥٢﴾

२५२. ये अल्लाह की आयतें है कि हम ए महबूब तुम पर ठीक ठीक पढ़ते है और तुम बेशक रसूलों में हो।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ
وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ وَاٰتَيْنَا
عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا
اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ
بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ
اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَ
مِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا
اقْتَتَلُوْا وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا
يُرِيْدُ

२५३. ये रसूल है कि हमने उनमें एक को दूसरे पर अफ़ज़ल किया उनमें किसी से अल्लाह ने कलाम फ़रमाया और कोई वो है जिसे सब पर दर्जों बुलंद किया और हमने मरियम के बेटे ईसा को खुली निशानियाँ दीं और पाकीज़ा रूह से उसकी मदद की और अल्लाह चाहता तो उनके बाद वाले आपस में न लड़ते, बाद इसके कि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकीं लेकिन वो मुख़तलिफ़ हो गए। उनमें कोई ईमान पर रहा और कोई काफ़िर हो गया और अल्लाह चाहता तो वो न लड़ते मगर अल्लाह जो चाहे करे।

रुकूअ ३४

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا
رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ
لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ
وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ

२५४. ऐ ईमान वालो अल्लाह की राह में हमारे दिए में से ख़र्च करो वो दिन आने से पहले जिसमें न ख़रीद-फ़रोख़्त है न काफ़िरों के लिए दोस्ती और न शफ़ाअत और काफ़िर खुद ही ज़ालिम हैं।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ
لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا

२५५. अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं वो आप ज़िंदा और औरों का क़ायम रखने वाला। उसे न ऊँघ आए न नींद। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में

वो कौन है जो उसके यहाँ सिफारिश करे बे उसके हुक्म के जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे और वो नहीं पाते उसके इल्म में से मगर जितना वो चाहे उसकी कुर्सी में समाए हुए हैं। आसमान और ज़मीन और उसे भारी नहीं इनकी निगेहबानी और वही है बुलंद बड़ाई वाला।

२५६. कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में, बेशक खूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से, तो जो शैतान को न माने और अल्लाह पर ईमान लाये उसने बड़ी मोहकम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और अल्लाह सुनता जानता है।

२५७. अल्लाह वाली है मुसलमानों का, उन्हें अंधेरियों से नूर की तरफ़ निकालता है और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं, वो उन्हें नूर से अंधेरियों की तरफ़ निकालते हैं। यही लोग दोज़ख़ वाले है इन्हे हमेशा उस में रहना।

रुकूअ ३५

२५८. ऐ महबूब क्या तुमने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उसके रब के बारे में, इसपर कि अल्लाह ने उसे बादशाही दी, जबकि इब्राहीम

بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ
مَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ
مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ
كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَ
لَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾

لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ قَدْ تَّبَيَّنَ
الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ
اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى
لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ
مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
ع النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ
فِيْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ اِذْ

ने कहा कि मेरा रब वो है कि जिलाता और मारता है, बोला मैं जिलाता और मारता हूँ इब्राहीम ने फ़रमाया तो अल्लाह सूरज को लाता है पूरब (मशरिक़) से तू उसको पच्छिम (मग़रिब) से ले आ तो होश उड़ गए काफ़िर के और अल्लाह राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को।

قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَ
يُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَ أُمِيتُ قَالَ
إِبْرٰهِيمُ فَإِنَّ اللّٰهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ
مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ
الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ وَ اللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ﴿٢٥٨﴾

२५९. या उसकी तरह जो गुज़रा एक बस्ती पर और वो ढई (मसमार हुई) पड़ी थी अपनी छतों पर बोला इसे क्यों कर जिलाएगा अल्लाह इसकी मौत के बाद, तो अल्लाह ने उसे मुर्दा रखा सौ बरस, फिर ज़िन्दा कर दिया फ़रमाया तू यहाँ कितना ठहरा अर्ज़ की दिन भर ठहरा हूँगा या कुछ कम। फ़रमाया नहीं तुझे सौ बरस गुज़र गए, और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक-बू-न लाया और अपने गधे को देख कि जिसकी हड्डियाँ तक सलामत न रहीं और ये इसलिए कि तुझे हम लोगों के वास्ते निशानी करें और इन हड्डियों को देख क्यों कर हम इन्हें उठान देते फिर इन्हें गोश्त पहनाते है जब यह मुआमला उसपर ज़ाहिर हो गया बोला मै खूब जानता हूँ कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِيَ
خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوشِهَا قَالَ أَنّٰى
يُحْيِي هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا
فَأَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ
قَالَ كَمْ لَبِثْتَ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا
أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ
مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلٰى طَعَامِكَ
وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانْظُرْ إِلٰى
حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ
وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا
ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ
قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾

२६०. और जब अर्ज़ की इब्राहीम ने ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे, तू क्यो कर मुर्दे जिलाएगा। फ़रमाया क्या तुझे यकीन नही अर्ज़ की यक़ीन क्यो नही मगर ये चाहता हूँ कि मेरे दिल को क़रार आजाए। फ़रमाया तो अच्छा चार परिंदे लेकर अपने साथ हिला ले, फिर उनका एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे। फिर उन्हे बुला वो तेरे पास चले आएँगे पाँव से दौड़ते और जान रख कि अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

रुकूअ ३६

२६१. उनकी कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह मे ख़र्च करते है उस दाने की तरह जिस ने उगाई सात बाले हर बाल में सौ दाने और अल्लाह इससे भी ज्यादा बढ़ाए जिसके लिए चाहे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है।

२६२. वो जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, फिर दिए पीछे न एहसान रखें न तकलीफ़ दें उनका नेग (इनआ़म) उनके रब के पास है और उन्हें न कुछ अंदेशा हो न कुछ ग़म।

२६३. अच्छी बात कहना और

وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِـۧمُ رَبِّ أَرِنِى كَيْفَ
تُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن ۖ
قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِى ۖ
قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ ٱلطَّيْرِ
فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ ٱجْعَلْ عَلَىٰ
كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ
ٱدْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَٱعْلَمْ أَنَّ
ع ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾

مَّثَلُ ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ
فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنۢبَتَتْ
سَبْعَ سَنَابِلَ فِى كُلِّ سُنۢبُلَةٍ مِّا۟ئَةُ
حَبَّةٍ ۗ وَٱللَّهُ يُضَٰعِفُ لِمَن يَشَآءُ ۗ
وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾

ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُمْ فِى
سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَآ
أَنفَقُوا۟ مَنًّا وَلَآ أَذًى ۙ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ
عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾

قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ

दरगुज़र करना उस ख़ैरात से बेहतर है जिसके बाद सताना हो और अल्लाह बे परवाह हिल्म वाला है।

२६४. ऐ ईमानवालो अपने सदक़े बातिल न करदो एहसान रखकर और ईज़ा देकर उसकी तरह जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिए ख़र्च करे और अल्लाह और क़यामत पर ईमान न लाए तो उसकी कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उसपर मिट्टी है अब उसपर ज़ोर का पानी पड़ा जिसने उसे निरा पत्थर कर छोड़ा। अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएँगे और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता।

२६५. और उनकी कहावत जो अपने माल अल्लाह की रज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को उस बाग़ की सी है जो भोड़ (रेतली ज़मीन) पर हो, उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया। फिर अगर ज़ोर का मेंह उसे न पहुंचे तो ओस काफ़ी है और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

२६६. क्या तुममें कोई उसे पसंद रखेगा कि उसके पास एक बाग़ हो

مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ
غَنِىٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا
صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى كَالَّذِىْ
يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ
فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ
فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ
لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَىْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦٤﴾
وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ
ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا
مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ
اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا
ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ
فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾
اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ
جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِىْ

खजूरों और अंगूरों का, जिस के नीचे नदियाँ बहतीं, उसके लिए उसमें हर क़िस्म के फलों से है और उसे बुढ़ापा आया और उसके नातवाँ बच्चे हैं, तो आया उसपर एक बगोला जिस में आग थी तो जल गया, ऐसा ही बयान करता है अल्लाह तुम से अपनी आयतें कि कहीं तुम ध्यान लगाओ।

रुकूअ ३७

२६७. ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाला और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि दो, तो उसमें से और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक उसमें चश्मपोशी न करो और जान रखो कि अल्लाह बे परवाह सराहा गया है।

२६८. शैतान तुम्हें अंदेशा दिलाता है मोहताजी का और हुक्म देता है बे हयाई का और अल्लाह तुमसे वअ़दा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़्ल का और अल्लाह वुसअ़त वाला इल्म वाला है।

२६९. अल्लाह हिकमत देता है, जिसे चाहे और जिसे हिकमत मिली उसे बहुत भलाई मिली और नसीहत नहीं मानते मगर अक़्ल वाले।

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ
كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ
ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۚۖ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ
فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ ع

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا
لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا
الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ
بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ
وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَ
يَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ
مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾ ۖ ۙ

يُّؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ
يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِىَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ
وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

२७०. और तुम जो ख़र्च करो या मन्नत मानो अल्लाह को उसकी ख़बर है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

२७१. अगर ख़ैरात एअलानिया दो तो वो क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपाकर फ़कीरों को दो ये तुम्हारे लिए सबसे बेहतर है और उसमें तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

२७२. उन्हे राह देना तुम्हारे ज़िम्मे लाज़िम नहीं, हां अल्लाह राह देता है जिसे चाहता है और तुम जो अच्छी चीज़ दो तो तुम्हारा ही भला है और तुम्हें ख़र्च करना मुनासिब नहीं मगर अल्लाह की मरज़ी चाहने के लिए और जो माल दो तुम्हें पूरा मिलेगा और नुक़्सान न दिए जाओगे।

२७३. उन फ़कीरों के लिए जो राहे खुदा में रोके गए, ज़मीन में चल नहीं सकते नादान उन्हे तवगर समझे बचने के सबब तू उन्हें उनकी सूरत से पहचान लेगा लोगों से सवाल नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो अल्लाह उसे जानता है।

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۷۱﴾

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۲﴾

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۷۳﴾

रुकूअ ३८

الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُم بِاللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝٢٧٤

२७४. वो जो अपने माल ख़ैरात करते है रात में और दिन में, छुपे और ज़ाहिर। उनके लिए उनका नेग (इनआम, हिस्सा) है उनके रब के पास उनको न कुछ अंदेशा हो न कुछ ग़म।

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ
إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ
الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا ۗ
وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا ۚ
فَمَن جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّهِ
فَانتَهَىٰ فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى
اللَّهِ ۖ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝٢٧٥

२७५. वो जो सूद खाते है क़यामत के दिन न खड़े होंगे, मगर जैसे खड़ा होता है वो जिसे आसेब ने छूकर मख़बूत बना दिया हो ये इसलिए कि उन्हों ने कहा बैअ भी तो सूद ही के मानिंद है और अल्लाह ने हलाल किया बैअ को और हराम किया सूद, तो जिसे उसके रब के पास से नसीहत आई और वो बाज़ रहा तो उसे हलाल है जो पहले ले चुका और उसका काम खुदा के सुपुर्द है और जो अब ऐसी हरकत करेगा तो वो दोज़ख़ी है वो उसमें मुद्दतों रहेंगे।

يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُرْبِي الصَّدَقَاتِ ۗ
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ۝٢٧٦

२७६. अल्लाह हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को और अल्लाह को पसंद नहीं आता कोई नाशुक्रा बड़ा गुनहगार।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝٢٧٧

२७७. बेशक वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किए और नमाज़ कायम की और ज़कात दी उनका नेग (इनआम) उनके रब के पास है और न उन्हे कुछ अंदेशा हो, न कुछ ग़म।

२७८. ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद, अगर मुसलमान हो।

२७९. फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन करलो अल्लाह और अल्लाह के रसूल से लड़ाई का, और अगर तुम तौबा करो तो अपना अस्ल माल लेलो न तुम किसी को नुक़्सान पहुँचाओ न तुम्हें नुक़्सान हो।

२८०. और अगर क़र्ज़दार तंगीवाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक, और क़र्ज़ उसपर बिलकुल छोड़देना तुम्हारे लिए और भला है अगर जानो।

२८१. और डरो उस दिन से जिसमें अल्लाह की तरफ़ फिरोगे और हर जान को उसकी कमाई पूरी भर दी जाएगी और उनपर ज़ुल्म न होगा।

रुकूअ ३९

२८२. ऐ ईमान वालो जब तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी दैन का लेन देन करो तो उसे लिख लो और चाहिए कि तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला ठीक ठीक लिखे और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे अल्लाह ने सिखाया है तो उसे लिख देना चाहिए और जिस पर हक़ आता है वो लिखाता जाए और अल्लाह से डरे जो उस का रब है और हक़ में

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ
وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِنْ
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٢٧٨

فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ
مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ تُبْتُمْ
فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ
وَلَا تُظْلَمُونَ ٢٧٩

وَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَى
مَيْسَرَةٍ وَأَنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ٢٨٠

وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى
اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَا
كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ٢٨١

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ
بِدَيْنٍ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى فَاكْتُبُوهُ
وَلْيَكْتُبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ
وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا
عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ
الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ

से कुछ रख न छोड़े. फिर जिसपर हक़ आता है अगर बेअक़्ल या नातवाँ हो या लिखा न सके तो उसका वली इन्साफ से लिखाए और दो गवाह करलो अपने मर्दों मे से फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें ऐसे गवाह जिनको पसंद करो कि कही उनमें एक औरत भूले तो उस एक को दूसरी याद दिला दे और गवाह जब बुलाए जाएँ तो आने से इन्कार न करें और उसे भारी न जानों कि दैन छोटा हो या बड़ा उसकी मिआद तक लिखत करलो ये अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इन्साफ की बात है। इसमें गवाही खूब ठीक रहेगी और ये उससे क़रीब है कि तुम्हे शुबह न पड़े मगर ये कि कोई सरे दस्त का सौदा दस्त ब दस्त हो तो उसके न लिखने का तुम पर गुनाह नहीं और जब ख़रीद व फ़रोख़्त करो तो गवाह करलो और न किसी लिखने वाले को ज़रर दिया जाए न गवाह को (या न लिखनेवाला ज़रर दे न गवाह) और जो तुम ऐसा करो तो ये तुम्हारा फ़िस्क़ होगा और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुम्हें सिखाता

رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ
فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ
سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ
اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ
بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ
مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا
رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ
تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ
تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا
الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا
مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ
صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ
ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ
لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا
اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً
تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْٓا
اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ
وَّلَا شَهِيْدٌ ۬ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ
فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

है और अल्लाह सब कुछ जानता है।

२८३. और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न पाओ तो गिरो (रहेन) हो क़ब्ज़े में दिया हुआ और अगर तुम में एक को दूसरे पर इत्मिनान होतो वो जिसे उस ने अमीन समझा था अपनी अमानत अदा कर दे और अल्लाह से डरे जो उसका रब है और गवाही न छुपाओ और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उसका दिल गुनहगार है और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।

रुकूअ ४०

२८४. अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ तुम्हारे जी में है या छुपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा तो जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा और अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है।

२८५. रसूल ईमान लाया उसपर जो उसके रब के पास से उसपर उतरा और ईमान वाले सबने माना। अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों को ये कहते हुए कि हम उसके किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं

وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٢﴾

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا
كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ۗ فَاِنْ اَمِنَ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى
اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ۗ
وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۗ وَمَنْ
يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ۗ وَاللّٰهُ
ع بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ
وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ
تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ۗ فَيَغْفِرُ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ
مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۗ كُلٌّ اٰمَنَ
بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۚ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۚ
وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ

رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۚ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

करते और अर्ज़ की कि हमने सुना और माना तेरी मुआफी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही तरफ़ फिरना है।

२८६. अल्लाह किसी जान पर बोझ नही डालता मगर उसकी ताक़त भर उसका फ़ायदा है जो अच्छा कमाया और उसका नुक़्सान है जो बुराई कमाई ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूले या चूकें, ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तूने हमसे अगलों पर रखा था। ऐ रब हमारे और हम पर वो बोझ न डाल जिसकी हमें सहार (बर्दाश्त) न हो और हमें मुआफ फ़रमा दे और बख़्श दे, और हम पर मेहर कर तु हमारा मौला है तो काफ़िरों पर हमें मदद दे।

सूरए आले-इमरान

मदनी है और इसमें दोसौ आयतें और बीस रूकूअ है

سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ مَدَنِيَّةٌ وَآيَاتُهَا مِائَتَانِ وَعِشْرُونَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

الم ﴿١﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ التَّوْرَاةَ وَالْإِنْجِيلَ ﴿٣﴾ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِلنَّاسِ وَأَنْزَلَ

२. अल्लाह है जिसके सिवा किसी की पूजा नहीं आप ज़िन्दा औरों का क़ायम रखने वाला।

३. उसने तुम पर ये सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उसने इससे पहले तौरेत और इंजील उतारी

४. लोगों को राह दिखाती और

الْفُرْقَانَ ۗ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۗ وَاللَّهُ
عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ④

फ़ैसला उतारा बेशक वो जो अल्लाह की आयतों से मुनकिर हुए उनके लिए सख़्त अज़ाब है, और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي
الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ⑤

५. अल्लाह पर कुछ छुपा नहीं ज़मीन में न आसमान में।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ
كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ⑥

६. वही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है माओं के पेट में जैसी चाहे उसके सिवा किसी की इबादत नहीं इज़्ज़त वाला हिकमत वाला।

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ
مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ
الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ فَأَمَّا
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ
مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ
وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ
إِلَّا اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ
يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ
رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ⑦

७. वही है जिस ने तुम पर ये किताब उतारी। इसकी कुछ आयतें साफ़ मअ़ना रखतीं हैं वो किताब की अस्ल हैं और दूसरी वो हैं जिनके मअ़ना में इश्तेबाह है वो जिनके दिलों में कजी है वो इश्तेबाह वाली के पीछे पड़ते हैं गुमराही चाहने और उसका पहलू ढूंढने को, और उसका ठीक पहलू अल्लाह ही को मअलूम है और पुख़्ता इल्म वाले कहते है हम उसपर ईमान लाए सब हमारे रब के पास से है और नसीहत नहीं मानते मगर अक़्ल वाले।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا
وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۚ

८. ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बाद इसके कि तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रहमत अता

إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾

कर बेशक तू है बड़ा देने वाला।

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ
لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ
الْمِيعَادَ ﴿٩﴾ ع

९. ऐ रब हमारे बेशक तू सब लोगों को जमअ करने वाला है उस दिन के लिए जिसमें कोई शुबह नही बेशक अल्लाह का वअ़दा नहीं बदलता।

रुकूअ २

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ
أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ
شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ﴿١٠﴾

१०. बेशक वो जो काफ़िर हुए उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह से उन्हें कुछ न बचा सकेंगे और वही दोज़ख़ के ईंधन हैं।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن
قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ
اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ﴿١١﴾

११. जैसे फ़िरऔन वालों और उनसे अगलों का तरीक़ा उन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं तो अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उनको पकड़ा और अल्लाह का अज़ाब सख़्त।

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ
وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ﴿١٢﴾

१२. फ़रमा दो काफ़िरों से कोई दम जाता है कि तुम मग़लूब होगे और दोज़ख़ की तरफ़ हाँके जाओगे और वो बहुत ही बुरा बिछौना।

قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ
الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُم
مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ
بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ

१३. बेशक तुम्हारे लिए निशानी थी दो गिरोहों में जो आपस मे भिड़ पड़े। एक जत्था अल्लाह की राह में लड़ता और दुसरा काफ़िर कि उन्हे आँखों देखा अपने से दूना समझें और अल्लाह अपनी मदद से ज़ोर देता है जिसे चाहता है बेशक इस में अक़्लमंदों

की इबादत नहीं इज्जत वाला हिकमत वाला।

१९. बेशक अल्लाह के यहाँ इस्लाम ही दीन है और फूट में न पड़े किताबी, मगर बाद इसके कि उन्हें इल्म आ चूका अपने दिलों की जलन से और जो अल्लाह की आयतों का मुन्किर हो तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

२०. फिर ऐ महबूब अगर वो तुमसे हुज्जत करें तो फ़रमा दो मैं अपना मुँह अल्लाह के हुज़ूर झुकाए हूँ और जो मेरे पैरो हुए और किताबियों और अनपढ़ों से फ़रमाओ क्या तुमने गरदन रखी पस अगर वो गरदन रखें जब तो राह पा गए और अगर मुँह फेरें तो तुम पर तो यही हुक्म पहुँचा देना है और अल्लाह बन्दों को देख रहा है।

रुकूअ ३

२१. वो जो अल्लाह की आयतों से मुन्किर होते और पैग़म्बरों को नाहक़ शहीद करते और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को क़त्ल करते है उन्हें खुशख़बरी दो दर्दनाक अज़ाब की ।

२२. ये हैं वो जिनके अअ़्माल अकारत गए दुनिया व आख़ेरत में और उनका कोई

بِالْقِسْطِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۣ
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ
بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾

فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ
لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۭ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ۭ
فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ۭ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ
يَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ
الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ
النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾

मददगार नहीं।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

२३. क्या तुमने उन्हें न देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला किताबुल्लाह की तरफ़ बुलाए जाते हैं कि वो उनका फ़ैसला करे फिर इनमें का एक गिरोह उससे रूगरदाँ होकर फिर जाता है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

२४. यह जुरअत उन्हें इसलिए हुई कि वो कहते हैं हरगिज़ हमें आग न छुएगी मगर गिन्ती के दिनों और उनके दीन में उन्हें फ़रेब दिया उस झूठ ने जो बाँधते थे।

فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

२५. तो कैसी होगी जब हम उन्हें इकट्ठा करेंगे उस दिन के लिए जिसमें शक नहीं और हर जान को उसकी कमाई पूरी भर (बिल्कुल पूरी) दी जाएगी और उनपर ज़ुल्म न होगा।

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾

२६. यूँ अर्ज़ कर ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक, तू जिसे चाहे सलतनत दे और जिससे चाहे सलतनत छीन ले और जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू सब कुछ कर सकता है।

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ

२७. तू दिन का हिस्सा रात में डाले और रात का हिस्सा दिन में डाले और मुर्दा से ज़िन्दा निकाले और ज़िन्दा

وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

से मुर्दा निकाले और जिसे चाहे बे गिन्ती दे।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾

२८. मुसलमान काफ़िरो को अपना दोस्त न बना लें मुसलमानो के सिवा और जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ इलाक़ा न रहा मगर ये कि तुम उनसे कुछ डरो और अल्लाह तुम्हे अपने ग़ज़ब से डराता है और अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है।

قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾

२९. तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने जी की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह को सब मअलूम है और जानता है जो कुछ आसमानों मे है और जो कुछ ज़मीन मे है और हर चीज़ पर अल्लाह का क़ाबू है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُحْضَرًا ۛ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾ ع

३०. जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया हाज़िरी पाएगी और जो बुरा काम किया उम्मीद करेगी काश मुझमे और इसमे दूर का फ़ासला होता और अल्लाह तुम्हें अपने अज़ाब से डराता है और अल्लाह बन्दो पर मेहरबान है।

रुकूअ ४

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣١﴾

३१. ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमॉबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हे दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

३२. तुम फ़रमादो कि हुक्म मानो अल्लाह और रसूल का फिर अगर वो मुँह फेरे तो अल्लाह को ख़ुश नहीं आते काफ़िर।

اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ
اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾

३३. बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम और नूह और इब्राहीम की आल और इमरान की आल को सारे जहान से।

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ۗ وَ اللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾

३४. ये एक नस्ल है एक दूसरे से और अल्लाह सुनता जानता है।

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ
نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا
فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾

३५. जब इमरान की बीबी ने अर्ज़ की ऐ रब मेरे मैं तेरे लिए मन्नत मानती हुँ जो मेरे पेट में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे तो तू मुझसे कुबूल करले। बेशक तू ही है सुनता जानता।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ
وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰى ۗ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
وَضَعَتْ ۗ وَ لَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ
وَ اِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَ اِنِّيْۤ اُعِيْذُهَا
بِكَ وَ ذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ
الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾

३६. फिर जब उसे जना बोली ऐ रब मेरे ये तो मैने लड़की जनी और अल्लाह को ख़ूब मालूम है जो कुछ वो जनी और वो लड़का जो उसने मांगा इस लड़की सा नहीं और मैं ने उसका नाम मरियम रखा और मै उसे और उसकी औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ रान्दे हुए शैतान से।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّ
اَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّ كَفَّلَهَا

३७. तो उसे उसके रब ने अच्छी तरह क़ुबूल किया और उसे अच्छा परवान चढ़ाया और उसे ज़करिया की

زَكَرِيَّا ۚ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ
يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ
مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

निगेहबानी में दिया जब ज़करिया उसके पास उसकी नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उसके पास नया रिज़्क़ पाते कहा ऐ मरियम यह तेरे पास कहाँ से आया बोली वो अल्लाह के पाससे है बेशक अल्लाह जिसे चाहे बे गिन्ती दे।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ
هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ
إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾

३८. यहाँ पुकारा ज़करिया अपने रब को बोला, ऐ रब मेरे, मुझे अपने पाससे दे सुथरी औलाद बेशक तू ही है दुआ सुनने वाला।

فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي
فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ
بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ
وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِنَ
الصَّالِحِينَ ﴿٣٩﴾

३९. तो फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वो अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था। बेशक अल्लाह आपको मुज़दह देता है यह्या का जो अल्लाह की तरफ़ के एक कलमा की तस्दीक़ करेगा और सरदार और हमेशा के लिए औरतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ासों में से।

قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَ
قَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ
قَالَ كَذَٰلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٤٠﴾

४०. बोला ऐ मेरे रब, मेरे लड़का कहाँ से होगा मुझे तो पहुँच गया बुढ़ापा और मेरी औरत बाँझ। फ़रमाया अल्लाह यूँ ही करता है जो चाहे।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ۖ قَالَ
آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ
إِلَّا رَمْزًا ۗ وَاذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا

४१. अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिए कोई निशानी कर दे। फ़रमाया तेरी निशानी ये है कि तीन दिन तू लोगों से बात न करे मगर इशारे से और अपने रब की बहुत याद कर और

कुछ दिन रहे और तड़के उसकी पाकी बोल।

रुकूअ ५

४२. और जब फ़रिश्तो ने कहा ऐ मरियम बेशक अल्लाह ने तुझे चुन लिया और खूब सुथरा किया और आज सारे जहाँ की औरतो से तुझे पसन्द किया।

४३. ऐ मरियम अपने रब के हुज़ूर अदब से खड़ी हो और उसके लिए सज्दा कर और रूकूअ वालों के साथ रूकूअ कर।

४४. यह ग़ैब की ख़बरें है की हम ख़ुफ़िया तौर पर तुम्हें बताते हैं और तुम उनके पास न थे जब वो अपने क़लमों से कुरआ डालते थे कि मरियम किस की परवरिश में रहे और तुम उनके पास न थे जब वो झगड़ रहे थे।

४५. और याद करो जब फ़रिश्तों ने मरियम से कहा ऐ मरियम अल्लाह तुझे बशारत देता है अपने पाससे एक कलमे की जिसका नाम है मसीह ईसा मरियम का बेटा रू-दार (बाइज़्ज़त) होगा दुनिया और आख़ेरत में और कुर्ब वाला।

४६. और लोगों से बात करेगा पालने में और पक्की उम्र में और ख़ासों में होगा।

४७. बोली ऐ मेरे रब मेरे बच्चा कहाँ से होगा मुझे तो किसी शख़्स ने हाथ न लगाया। फ़रमाया अल्लाह यूँ ही पैदा करता है जो चाहे जब किसी काम का हुक्म फ़रमाए तो उससे यही

ع وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٤١﴾

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ
اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ
عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ
وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ
اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ
يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ
عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا
وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ
وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ قَالَ كَذٰلِكِ
اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا

कहता है कि होजा वो फ़ौरन हो जाता है।

فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٤٧

४८. और अल्लाह सिखाएगा किताब और हिकमत और तौरेत और इंजील।

وَ يُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِيْلَ ۝٤٨

४९. और रसूल होगा बनी इसराईल की तरफ़ यह फरमाता हुआ कि मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूँ तुम्हारे रब की तरफ़ से कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंद की सी मूरत बनाता हूँ फिर उसमें फूंक मारता हूँ तो वो फ़ौरन परिंद होजाती है अल्लाह के हुक्म से, और मैं शिफ़ा देता हूँ मादरज़ाद अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले को और मैं मुर्दे जिलाता हूँ अल्लाह के हुक्म से और तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते और जो अपने घरों में जमअ कर रखते हो बेशक उन बातों में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।

وَ رَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ اُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَ الْاَبْرَصَ وَ اُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ اُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَ مَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٤٩

५०. और तस्दीक़ करता आया हूँ अपने से पहली किताब तौरेत की और इसलिए कि हलाल करूं तुम्हारे लिए कुछ वो चीजें जो तुम पर हराम थीं, और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लाया हूँ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

وَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ لِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ۝٥٠

५१. बेशक मेरा तुम्हारा सब का रब अल्लाह है तो उसी को पूजो ये है सीधा रास्ता.

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٥١

५२. फिर जब ईसा ने उनसे

فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ

قَالَ مَنْ اَنْصَارِیْٓ اِلَی اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾

कुफ़्र पाया बोला कौन मेरे मददगार होते है अल्लाह की तरफ़ हवारियों ने कहा हम दीने ख़ुदा के मददगार है। हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएँ कि हम मुसलमान है।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۵۳﴾

५३. ऐ रब हमारे, हम उसपर ईमान लाए जो तूने उतारा और रसूल के ताबेअ़ हुए तो हमें हक़ पर गवाही देने वालो मे लिख ले।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَیْرُ الْمٰكِرِیْنَ ﴿۵۴﴾

५४. और काफ़िरो ने मक्र किया और अल्लाह ने उनके हलाक की खुफ़िया तदबीर फ़रमाई और अल्लाह सबसे बेहतर छुपी तदबीर वाला है।

रुकूअ ६

اِذْ قَالَ اللّٰهُ یٰعِیْسٰۤی اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ وَرَافِعُكَ اِلَیَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَیْنَكُمْ فِیْمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۵۵﴾

५५. याद करो जब अल्लाह ने फ़रमाया ऐ ईसा मै तुझे पूरी उम्र तक पहुँचाऊंगा और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूंगा और तुझे काफ़िरों से पाक कर दूँगा और तेरे पैरोओ को क़यामत तक तेरे मुनकिरो पर ग़लबा दूँगा। फिर तुम सब मेरी तरफ़ पलट कर आओगे तो मै तुममें फ़ैसला फ़रमा दूँगा जिस बात में झगड़ते हो।

فَاَمَّا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِیْدًا فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۵۶﴾

५६. तो वो जो काफ़िर हुए मैं उन्हें दुनिया व आख़ेरत मे सख़्त अज़ाब करूँगा और उनका कोई मददगार न होगा।

وَاَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

५७. और वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किए अल्लाह उनका

فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ
الظّٰلِمِينَ ﴿٥٧﴾

नेग (इनआम) उन्हें भरपूर देगा और ज़ालिम अल्लाह को नहीं भाते।

ذٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَ
الذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾

५८. ये हम तुम पर पढ़ते है कुछ आयतें और हिकमत वाली नसीहत।

إِنَّ مَثَلَ عِيسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ
اٰدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾

५९. ईसा की कहावत अल्लाह के नज़दीक आदम की तरह है उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया होजा वो फ़ौरन होजाता है।

اَلْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ
الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾

६०. ऐ सुननेवाले ये तेरे रब की तरफ़ से हक़ है तो शक वालों में न होना।

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا
نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ۚ
ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللّٰهِ
عَلَى الْكٰذِبِينَ ﴿٦١﴾

६१. फिर ऐ महबूब जो तुमसे ईसा के बारे में हुज्जत करें बाद इसके कि तुम्हें इल्म आ चुका तो उनसे फ़रमा दो आओ हम बुलाएँ अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें और अपनी जाने और तुम्हारी जानें फिर मुबाहेला करें तो झूठों पर अल्लाह की लअनत डालें।

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَ
مَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللّٰهُ ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ
لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

६२. यही बेशक सच्चा बयान है और अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब है हिकमत वाला।

६३. फिर अगर वो मुँह फेरें तो अल्लाह फ़सादियों को जानता है।

فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ٦٣

रुकूअ ७

६४. तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो ऐसे कलिमा की तरफ़ आओ जो हममें, तुममें यकसाँ है ये कि इबादत न करें मगर खुदा की और उसका शरीक किसी को न करें और हममें कोई एक दूसरे को रब न बना ले अल्लाह के सिवा फिर अगर वो न मानें तो कह दो तुम गवाह रहो कि हम मुसलमान हैं।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ٦٤

६५. ऐ किताब वालो इब्राहीम के बाब में क्यों झगड़ते हो तौरेत व इंजील तो न उतरी मगर उनके बाद तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْإِنجِيلُ إِلَّا مِن بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٦٥

६६. सुनते हो ये जो तुम हो उसमें झगड़े जिसका तुम्हें इल्म था तो उसमें क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें इल्म ही नहीं और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُم بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ٦٦

६७. इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी बल्कि हर बातिल से जुदा मुसलमान थे और मुश्रिकों से न थे।

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَٰكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ٦٧

६८. बेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज़्यादा हक़दार वो थे जो उनके पैरो हुए और ये नबी और ईमानवाले और ईमानवालो का वाली अल्लाह है।

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرٰهِيمَ لَلَّذِينَ
اتَّبَعُوهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ
اٰمَنُوا وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾

६९. किताबियो का एक गिरोह दिल से चाहता है कि किसी तरह तुम्हे गुमराह करदे और वो अपने ही आप को गुमराह करते है और उन्हे शऊर नही।

وَدَّتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ
لَوْ يُضِلُّونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾

७०. ऐ किताबियो अल्लाह की आयतो से क्यो कुफ़्र करते हो हालाँकी तुम खुद गवाह हो।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٧٠﴾

७१. ऐ किताबियों हक़ में बातिल क्यों मिलाते हो और हक़ क्यो छुपाते हो हालाँकि तुम्हें ख़बर है।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ
بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَ
ع أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾

रुकूअ ८

७२. और किताबियों का एक गिरोह बोला वो जो ईमान वालों पर उतरा सुबह को उसपर ईमान लाओ और शाम को मुनकिर हो जाओ शायद वो फिर जाएँ।

وَقَالَتْ طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ
اٰمِنُوا بِالَّذِيٓ أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ
اٰمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوٓا
اٰخِرَهُ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾

७३. और यक़ीन न लाओ मगर उसका जो तुम्हारे दीन का पैरो हो तुम फरमादो कि अल्लाह ही की हिदायत, हिदायत है (यक़ीन काहे का न लाओ) इसका कि किसी को मिले जैसा तुम्हे

وَلَا تُؤْمِنُوٓا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ
قُلْ إِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ أَنْ
يُّؤْتٰٓى أَحَدٌ مِّثْلَ مَآ أُوتِيتُمْ

اَوْ يُحَاجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْؕ قُلْ
اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ
يَّشَآءُؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۚ ﴿٧٣﴾
يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُؕ وَاللّٰهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾
وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ
تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَۚ وَ
مِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ
لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ
قَآئِمًاؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ
عَلَيْنَا فِى الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌۚ وَ
يَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَ
هُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾
بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى
فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧٦﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ
وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ
لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا
يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ

मिला या कोई तुम पर हुज्जत ला सके तुम्हारे रब के पास तुम फरमादो कि फ़ज़्ल तो अल्लाह ही के हाथ है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है।

७४. अपनी रहमत से ख़ास करता है जिसे चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

७५. और किताबियों में कोई वो है कि अगर तू उसके पास एक ढेर अमानत रखे तो वो तुझे अदा कर देगा और उनमे कोई वो है कि अगर एक अशरफ़ी उसके पास अमानत रखे तो वो तुझे फेर कर न देगा मगर जबतक तू उसके सर पर खड़ा रहे ये इसलिए कि वो कहते है कि अनपढो के मुआमले में हमपर कोई मुआखिज़ा नही और अल्लाह पर जान बूझ कर झूठ बाँधते है।

७६. हाँ क्यो नहीं जिसने अपना अहद पूरा किया और परहेज़गारी की और बेशक परहेज़गार अल्लाह को खुश आते है।

७७. वो जो अल्लाह के अहद और आपनी क़समो के बदले ज़लील दाम लेते है आखेरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं और अल्लाह न उनसे बात करे न उनकी तरफ़ नज़र फ़रमाए क़यामत

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۷﴾

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ
بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ
وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۸﴾

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ
الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ
يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ
بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا
كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۙ﴿۷۹﴾

وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ
وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ
بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۸۰﴾

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ
اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ

के दिन और न उन्हे पाक करे और उनके लिए दर्दनाक अजाब है।

७८. और उनमें कुछ वो है जो जबान फेर कर किताब में मेल (मिलावट) करते है कि तुम समझो ये भी किताब में है और वो किताब मे नही और वो कहते है ये अल्लाह के पास से है और वो अल्लाह के पास से नही और अल्लाह पर दीदा व दानिस्ता झूठ बाँधते है।

७९. किसी आदमी का ये हक़ नही कि अल्लाह उसे किताब और हुक्म व पैग़म्बरी दे फिर वो लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड कर मेरे बन्दे होजाओ, हाँ ये कहेगा कि अल्लाह वाले होजाओ इस सबब से कि तुम किताब सिखाते हो और इस से कि तुम दर्स करते हो।

८०. और न तुम्हे ये हुक्म देगा कि फ़रिश्तो और पैग़म्बरों को खुदा ठहरा लो, क्या तुम्हे कुफ्र का हुक्म देगा बाद इसके कि तुम मुसलमान हो लिए।

रुकूअ ९

८१. और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उनका अहद लिया जो मैं तुमको किताब और हिकमत दूँ फिर

तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वो रसूल कि तुम्हारी किताबो की तस्दीक फ़रमाए तो तुम ज़रूर ज़रूर उसपर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उसकी मदद करना। फ़रमाया क्यों तुमने इकरार किया और उसपर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सबने अर्ज़ की हमने इक़रार किया, फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मै आप तुम्हारे साथ गवाहों मे हूँ।

८२. तो जो कोई इसके बाद फिरे तो वही लोग फ़ासिक़ हैं।

८३. तो क्या अल्लाह के दीन के सिवा और दीन चाहते है और उसी के हुज़ूर गरदन रखे है जो कोई आसमानो और ज़मीन में है ख़ुशी से और मजबूरी से और उसी की तरफ़ फिरेंगे।

८४. यूँ कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतरा इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक और यअकूब और उनके बेटों पर और जो कुछ मिला मूसा और ईसा और अंबिया को उनके रब से, हम उनमें किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी के हुज़ूर गरदन झुकाए हैं।

८५. और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वो हरगिज़ उससे क़ुबूल न किया जाएगा और वो आख़िरत में ज़ियांकार से है।

جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ
ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ
اِصْرِىْ ؕ قَالُوْۤا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا
وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾
فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾
اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗۤ
اَسْلَمَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾
قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَ
مَاۤ اُنْزِلَ عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ
وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَ
مَاۤ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ
مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ
مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾
وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا
فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ
مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ
اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ
حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾

८६. क्यो कर अल्लाह ऐसी क़ौम की हिदायत चाहे जो ईमान लाकर काफ़िर होगाए और गवाही दे चुके थे कि रसूल सच्चा है और उन्हे खुली निशानियाँ आ चुकी थीं और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ
اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾

८७. उनका बदला ये है कि उनपर लअ़नत है अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियों की सब की।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾

८८. हमेशा उसमें रहें न उनपर से अज़ाब हल्का हो और न उन्हें मोहलत दी जाए।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ
وَاَصْلَحُوْا ۟ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾

८९. मगर जिन्होंने उसके बाद तौबा की और आपा सँभाला तो ज़रूर अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ
ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿٩٠﴾

९०. बेशक वो जो ईमान लाकर काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े, उनकी तौबा हरगिज़ कुबूल न होगी और वही हैं बहके हुए।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ
كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ
مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى
بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا
لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾

९१. वो जो काफ़िर हुए और काफिर ही मरे उनमें किसी से ज़मीन भर सोना हरगिज़ कुबूल न किया जाएगा अगरचे अपनी ख़लासी को दे उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है और उनका कोई यार नहीं।

रुकूअ १०

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا
تُحِبُّوْنَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ
فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٩٢﴾

९२. तुम हरगिज़ भलाई को न पहुँचोगे जब तक राहे खुदा मे अपनी प्यारी चीज़ खर्च न करो और तुम जो कुछ खर्च करो अल्लाह को मअलूम है।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى
نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ۗ
قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٣﴾

९३. सब खाने बनी इसराईल को हलाल थे मगर वो जो यअकूब ने अपने ऊपर हराम कर लिया था तौरेत उतरने से पहले तुम फ़रमाओ तौरेत लाकर पढ़ो अगर सच्चे हो।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾

९४. तो उसके बाद जो अल्लाह पर झूठ बाँधे तो वही ज़ालिम है।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۗ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ
اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٥﴾

९५. तुम फ़रमाओ अल्लाह सच्चा है तो इब्राहीम के दीन पर चलो जो हर बातिल से जुदा थे और शिर्क वालों में न थे।

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ
لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى
لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾

९६. बेशक सबमें पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुआ, वो है जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा।

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ
وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۗ وَلِلّٰهِ

९७. उसमें खुली निशानियाँ है, इब्राहीम के खड़े होने की जगह और

जो उसमें आये, अमान में हो और अल्लाह के लिए लोगों पर उस घर का हज करना है जो उस तक चल सके और जो मुनकिर हो तो अल्लाह सारे जहान से बे परवाह है।

عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٩٧﴾

९८. तुम फ़रमाओ ऐ किताबियों अल्लाह की आयतें क्यों नहीं मानते और तुम्हारे काम अल्लाह के सामने हैं।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾

९९. तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो क्यों अल्लाह की राह से रोकते हो उसे, जो ईमान लाये उसे टेढ़ा किया चाहते हो और तुम खुद उसपर गवाह हो और अल्लाह तुम्हारे कौतकों (बुरे अअमाल) से बेखबर नहीं।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾

१००. ऐ ईमानवालों अगर तुम कुछ किताबियो के कहे पर चले तो वो तुम्हारे ईमान के बाद तुम्हें काफ़िर कर छोड़ेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تُطِيعُوا فَرِيقًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كَافِرِينَ ﴿١٠٠﴾

१०१. और तुम क्यों कर कुफ़्र करोगे, तुमपर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती है और तुममें उसका रसूल तशरीफ़ लाया और जिसने अल्लाह का सहारा लिया तो जरूर वो सीधी राह दिखाया गया।

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ آيَاتُ اللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۗ وَمَنْ يَعْتَصِمْ بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٠١﴾ ع

रुकूअ ११

१०२. ऐ ईमान वालो अल्लाह

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ

से डरो जैसा उससे डरने का हक़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान।

१०३. और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो सब मिलकर आपस में फट न जाना (फ़िरक़ों में न बट जाना) और अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब तुममें बैर था उसने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया तो उसके फ़ज़्ल से तुम आपस में भाई हो गए और तुम एक ग़ारे दोज़ख़ के किनारे पर थे तो उसने तुम्हें उससे बचा दिया अल्लाह तुमसे यूँही अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम हिदायत पाओ.

१०४. और तुममें एक गिरोह ऐसा होना चाहिए कि भलाई की तरफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुराई से मनअ करें और यही लोग मुराद को पहुँचे।

१०५. और उन जैसे न होना जो आपस मे फट गए और उनमें फूट पड़ गई। बाद इसके कि रौशन निशानियाँ उन्हें आ चुकी थीं और उनके लिए बड़ा अज़ाब है।

१०६. जिस दिन कुछ मुँह उजाले होंगे और कुछ मुँह काले तो वो, जिनके

حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾
وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا
تَفَرَّقُوْا وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ
فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا وَكُنْتُمْ
عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ
مِّنْهَا كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ
اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾
وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ
اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا
وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ
الْبَيِّنٰتُ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ﴿١٠٥﴾
يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ

मुंह काले हुए क्या तुम ईमान लाकर काफ़िर हुए तो अब अज़ाब चखो अपने कुफ़्र का बदला।

१०७. और वो जिनके मुंह उजाले हुए वो अल्लाह की रहमत में है वो हमेशा उसमें रहेंगे।

१०८. ये अल्लाह की आयतें हैं कि हम ठीक ठीक तुमपर पढ़ते हैं और अल्लाह जहान वालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता।

१०९. और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह ही की तरफ़ सब कामों की रुजूअ है।

रुकूअ १२

११०. तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मनअ करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर किताबी ईमान लाते तो उनका भला था, उनमें कुछ मुसलमान है और ज़्यादा काफ़िर।

१११. वो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे मगर यही सताना और अगर तुमसे लड़े तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जाएंगे फिर उनकी मदद न होगी।

११२. उनपर जमा दी गई ख्वारी

أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٦﴾
وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ
فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ﴿١٠٧﴾
تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ
وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِلْعَالَمِينَ ﴿١٠٨﴾
وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
ع وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿١٠٩﴾
كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ
تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَوْ آمَنَ
أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ
مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ
الْفَاسِقُونَ ﴿١١٠﴾
لَنْ يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى وَإِنْ
يُقَاتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ ثُمَّ
لَا يُنْصَرُونَ ﴿١١١﴾
ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا

ثُقِفُوٓا إِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ
مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُو بِغَضَبٍ مِّنَ
اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ
ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ
حَقٍّ ۚ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا
يَعْتَدُونَ ﴿١١٢﴾

जहाँ हो, अमान न पाएँ मगर अल्लाह की डोर और आदमियों की डोर से और ग़ज़बे इलाही के सज़ावार हुए और उनपर जमा दी गई मोहताजी, इसलिए कि वो अल्लाह की आयतों से कुफ्र करते और पैग़म्बरों को नाहक़ शहीद करते ये इसलिए कि ना फ़रमा बरदार और सरकश थे।

لَيْسُوا سَوَآءً ۗ مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ
أُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَتْلُونَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ
الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ﴿١١٣﴾

११३. सब एक से नहीं किताबियों में कुछ वो है कि हक़ पर क़ायम हैं, अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं रात की घड़ियों में और सज्दा करते हैं।

يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرٰتِ ۖ
وَأُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿١١٤﴾

११४. अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाते है और भलाई का हुक्म देते और बुराई से मनअ़ करते हैं और नेक कामों पर दौड़ते है और ये लोग लाएक़ हैं।

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ
يُّكْفَرُوهُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿١١٥﴾

११५. और वो जो भलाई करें उनका हक़ न मारा जाएगा और अल्लाह को मअलूम है डर वाले।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ
أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا ۖ وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ

११६. वो जो काफ़िर हुए उनके माल और अवलाद उनको अल्लाह से कुछ न बचा लेंगे और वो जहन्नमी है।

उनको हमेशा उसमें रहना।

فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿١١٦﴾

११७ कहावत उसकी जो इस दुनिया की ज़िन्दगी में ख़र्च करते है, उस हवा की सी है जिसमें पाला हो वो एक ऐसी क़ौम की खेती पर पड़ी जो अपना ही बुरा करते थे तो उसे बिल्कुल मार गई और अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म न किया हाँ वो ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते है।

مَثَلُ مَا يُنفِقُونَ فِي هَٰذِهِ الْحَيَوٰةِ
الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ
حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ
وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ أَنفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾

११८. ऐ ईमान वालो ग़ैरों को अपना राज़दार न बनाओ वो तुम्हारी बुराई में कमी नहीं करते, उनकी आरज़ू है जितनी ईज़ा तुम्हें पहुँचे बैर उनकी बातों से झलक उठा और वो जो सीने मे छुपाए हैं, और बड़ा है हमने निशानियाँ तुम्हें खोलकर सुना दीं अगर तुम्हें अक़्ल हो।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا
بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ
خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ
الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي
صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾

११९. सुनते हो ये जो तुम हो, तुम तो उन्हें चाहते हो और वो तुम्हे नहीं चाहते और हाल ये कि तुम सब किताबों पर ईमान लाते हो और वो जब तुमसे मिलते हैं कहने है, हम ईमान लाए और अकेले हों तो तुमपर उंगलियाँ चबाएँ, गुस्से से तुम फ़रमादो कि मर जाओ अपनी घुटन में। अल्लाह ख़ूब जानता है दिलों की बात।

هَٰٓأَنتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ
وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا
لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا
عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ
قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾

१२०. तुम्हें कोई भलाई पहुँचे

إِن تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَ

तो उन्हे बुरा लगे और तुमको बुराई पहुँचे तो उसपर खुश हो और अगर तुम सब्र और परहेज़गारी किए रहो तो उनका दाँव तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा बेशक उनके सब काम खुदा के घेरे मे है।

रुकूअ १३

१२१. और याद करो ऐ महबूब जब तुम सुबह को अपने दौलतखाने से बरआमद हुए मुसलमानों को लड़ाई के मोर्चों पर क़ायम करते और अल्लाह सुनता, जानता है।

१२२. जब तुम में कि दो गिरोहों का इरादा हुआ कि ना मर्दी कर जायें और अल्लाह उनका सँभालने वाला है और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए।

१२३. और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की, जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे तो अल्लाह से डरो, कही तुम शुक्र गुज़ार हो।

१२४. जब ऐ महबूब तुम मुसलमानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें ये काफ़ी नही कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे, तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर।

१२५. हाँ क्यों नहीं अगर तुम सब्रो-तक़्वा करो और काफ़िर उसी दम तुमपर आ पड़े तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद को पाँच हज़ार फ़रिश्ते निशान वाले भेजेगा।

१२६. और ये फतह अल्लाह ने न की मगर तुम्हारी खुशी के लिए

إِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا
وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ
كَيْدُهُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ
مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾
إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا
وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾
وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ
فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾
إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ
أَنْ يُمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِنَ
الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ﴿١٢٤﴾
بَلَىٰ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُمْ
مِنْ فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ
بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَ

और इसीलिए कि इससे तुम्हारे दिलों को चैन मिले और मदद नहीं मगर अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाले के पाससे।

१२७. इसलिए कि काफ़िरों का एक हिस्सा काट दे या उन्हें ज़लील करे कि ना मुराद फिर जाएँ।

१२८. ये बात तुम्हारे हाथ नहीं, या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे या उनपर अज़ाब करे कि वो ज़ालिम है।

१२९. और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान।

रुकूअ १४

१३०. ऐ ईमान वालो सूद दूनादून न खाओ और अल्लाह से डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें फ़लाह़ मिले।

१३१. और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिए तैयार रखी है।

१३२. और अल्लाह व रसूल के फ़रमांबरदार रहो इस उम्मीद पर कि तुम रह़म किए जाओ।

१३३. और दौड़ो अपनी रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिस की चौड़ान मे सब आसमान व ज़मीन आजाए, परहेज़गारो के लिए तैयार रखी है।

لِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ
إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾
لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا
أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنقَلِبُوا خَائِبِينَ ﴿١٢٧﴾
لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ
يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ
ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾
وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ
مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾ ع
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا
أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾
وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿١٣١﴾
وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ﴿١٣٢﴾
وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ
وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ
أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾

१३४. वो जो अल्लाह की राह मे खर्च करते है, खुशी मे और रंज मे और गुस्सा पीने वाले और लोगो से दरगुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह के महबूब है।

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٤﴾

१३५. और वो कि जब कोई बेहयाई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करे, अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की मुआफ़ी चाहें और गुनाह कौन बख्शे सिवा अल्लाह के और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न जायें।

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٣٥﴾

१३६. ऐसों को बदला उनके रब की बख़्शिश और जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें रवाँ हमेशा उनमें रहें और कामियों (नेक लोगों)का क्या अच्छा नेग (इनआम, हिस्सा) है।

أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ مَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿١٣٦﴾

१३७. तुमसे पहले कुछ तरीक़े बरताओ में आ चुके हैं तो ज़मीन में चलकर देखो कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿١٣٧﴾

१३८. ये लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़गारों को नसीहत है।

هَٰذَا بَيَانٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾

१३९. और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ तुम्ही ग़ालिब आओगे, अगर

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ

ईमान रखते हो।

إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

१४०. अगर तुम्हे कोई तकलीफ पहुँची तो वो लोग भी वैसी ही तकलीफ पा चुके है और ये दिन है जिनमें हमने लोगो के लिये बारियाँ रखी है और इसलिये कि अल्लाह पहचान करादे ईमानवालों की, और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मरतबा दे और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को।

إِنْ يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ
قَرْحٌ مِثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا
بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ
آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ
لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾

१४१. और इस लिये कि अल्लाह मुसलमानों का निखार कर दे और काफ़िरों को मिटा दे।

وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
يَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ﴿١٤١﴾

१४२. क्या इस गुमान मे होकि जन्नत में चले जाओगे और अभी अल्लाह ने तुम्हारे ग़ाजियों का इम्तेहान न लिया और न सब्र वालों की आज़माइश की।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ
وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا
مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ﴿١٤٢﴾

१४३. और तुम तो मौत की तमन्ना किया करते थे उसके मिलने से पहले तो अब वो तुम्हे नज़र आई आँखो के सामने।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ
قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ
وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿١٤٣﴾ ع

रूकूअ १५

१४४. और मुहम्मद तो एक रसूल है। उनसे पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वो इन्तेकाल फरमाएँ या शहीद हों तो तुम उलटे पाँव फिर जाओगे और जो उलटे पाँव फिरेगा

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ
خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ أَفَإِنْ
مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ
أَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ

فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ وَسَيَجْزِى
اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝١٤٤

अल्लाह का कुछ नुक़्सान न करेगा और अनक़रीब अल्लाह शुक्र वालों को सिला देगा।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۗ وَمَنْ
يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَ
مَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۗ
وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ۝١٤٥

१४५. और कोई जान बे हुक्मे खुदा, मर नही सकती। सब का वक़्त लिखा रखा है और जो दुनिया का इनआम चाहे हम उसमें से उसे दे और जो आखेरत का इनआम चाहे हम उसमें से उसे दें और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अता करें।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ
رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ
اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا
ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۗ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٤٦

१४६. और कितने ही अंबिया ने जिहाद किया उनके साथ बहुत खुदा वाले थे तो न सुस्त पडे उन मुसीबतों से जो अल्लाह की राह में उन्हे पहुँची और न कमज़ोर हुए और न दबे और सब्र वाले अल्लाह को महबूब है।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا
رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا
فِىْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٤٧

१४७. और वो कुछ भी न कहते थे सिवा इस दुआ के कि ऐ हमारे रब बख़्श दे हमारे गुनाह, और जो ज़्यादतियाँ हमने अपने काम में कीं और हमारे क़दम जमा दे और हमें उन काफ़िर लोगों पर मदद दे।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ
ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٤٨ ع

१४८. तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया का इनआम दिया और आखेरत के सवाब की खूबी, और नेकी वाले अल्लाह को प्यारे है।

रुकूअ १६

१४९. ऐ ईमानवालो अगर तुम
काफ़िरों के कहे पर चले तो वो तुम्हें
उलटे पाँव लौटा देंगे फिर टोटा खाके
पलट जाओगे।

१५०. बल्कि अल्लाह तुम्हारा मौला है
और वो सबसे बेहतर मददगार।

१५१. कोई दम जाता है कि हम
काफ़िरों के दिलों में रोअ्‌ब डालेंगे कि
उन्होंने अल्लाह का शरीक ठहराया
जिसपर उसने कोई समझ न उतारी
और उनका ठिकाना दोज़ख है और
क्या बुरा ठिकाना ना इन्साफ़ों का ।

१५२. और बेशक अल्लाह ने
तुम्हें सच कर दिखाया अपना वअ़दा,
जबकि उसके हुक्म से काफ़िरों को
क़त्ल करते थे यहाँ तक कि जब तुमने
बुज़दिली की और हुक्म में झगड़ा
डाला और ना फ़रमानी की। बाद इसके
कि अल्लाह तुम्हें दिखा चुका तुम्हारी
खुशी की बात। तुममें कोई दुनिया
चाहता था और तुममें कोई आखेरत
चाहता था फिर तुम्हारा मुँह उनसे फेर
दिया कि तुम्हें आज़माए और बेशक
उसने तुम्हें मुआफ़ कर दिया और
अल्लाह मुसलमानों पर फ़ज़्ल करता है।

१५३. जब तुम मुँह उठाए चले

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن تُطِيعُوا۟
ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يَرُدُّوكُمْ عَلَىٰٓ
أَعْقَٰبِكُمْ فَتَنقَلِبُوا۟ خَٰسِرِينَ ﴿١٤٩﴾

بَلِ ٱللَّهُ مَوْلَىٰكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ
ٱلنَّٰصِرِينَ ﴿١٥٠﴾

سَنُلْقِى فِى قُلُوبِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟
ٱلرُّعْبَ بِمَآ أَشْرَكُوا۟ بِٱللَّهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهِۦ سُلْطَٰنًا ۖ وَمَأْوَىٰهُمُ ٱلنَّارُ ۚ
وَبِئْسَ مَثْوَى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٥١﴾

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ ٱللَّهُ وَعْدَهُۥٓ إِذْ
تَحُسُّونَهُم بِإِذْنِهِۦ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا فَشِلْتُمْ
وَتَنَٰزَعْتُمْ فِى ٱلْأَمْرِ وَعَصَيْتُم
مِّنۢ بَعْدِ مَآ أَرَىٰكُم مَّا تُحِبُّونَ ۚ
مِنكُم مَّن يُرِيدُ ٱلدُّنْيَا وَمِنكُم
مَّن يُرِيدُ ٱلْءَاخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ
عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَا
عَنكُمْ ۗ وَٱللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى
ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٢﴾

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُۥنَ عَلَىٰٓ أَحَدٍ

وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ
فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِكَيْلَا تَحْزَنُوا
عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۗ
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾

जाते थे और पीठ फेर कर किसी को न देखते और दूसरी जमाअत में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे तो तुम्हें ग़म का बदला ग़म दिया और मुआफ़ी इसलिये सुनाइ कि जो हाथ से गया और जो उफ़्ताद पड़ी उसका रंज न करो और अल्लाह को तुम्हारे कामो की ख़बर है।

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ
أَمَنَةً نُعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِنْكُمْ ۖ
وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ
يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ
الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ
الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ
كُلَّهُ لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ
مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ
لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا
هَاهُنَا ۗ قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ
لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ
إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا
فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا
فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ﴿١٥٤﴾

१५४. फिर तुम पर ग़म के बाद चैन की नींद उतारी कि तुम्हारी एक जमाअत को घेरे थी और एक गिरोह को अपनी जान की पड़ी थी, अल्लाह पर बेजा गुमान करते थे जाहिलियत के से गुमान कहते क्या इस काम में कुछ हमारा भी एख़्तियार है तुम फ़रमा दो कि एख़्तियार तो सारा अल्लाह का है अपने दिलों मे छुपाते है जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते कहते हैं हमारा कुछ बस होता तो हम यहाँ न मारे जाते। तुम फ़रमादो कि अगर तुम अपने घरों में होते जब भी जिनका मारा जाना लिखा जा चुका था अपनी क़त्लगाहों तक निकल कर आते और इसलिये कि अल्लाह तुम्हारे सीनो की बात आज़माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे खोल दे और अल्लाह दिलों की बात जानता है।

१५५. बेशक वो जो तुम में से फिर

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ
الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ
الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ
عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
حَلِيمٌ ١٥٥

गये जिस दिन दोनों फौजे मिली थी, उन्हे शैतान ही ने लग़ज़िश दी उनके बअज़ अअमाल के बाइस और बेशक अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, हिल्म वाला है।

रुकूअ १७

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا
كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ
إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا
غُزًّى لَّوْ كَانُوا عِندَنَا مَا مَاتُوا
وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ
حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُحْيِي
وَيُمِيتُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ١٥٦

१५६. ऐ ईमान वालो उन काफ़िरों की तरह न होना जिन्होंने अपने भाइयों की निसबत कहा, जब वो सफ़र या जिहाद को गए कि हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते इसलिये कि अल्लाह उनके दिलों में उसका अफ़सोस रखे और अल्लाह जिलाता और मारता है और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ
مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ
خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ١٥٧

१५७. और बेशक अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की बख़्शिश और रहमत उनके सारे धन दौलत से बेहतर है।

وَلَئِن مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ
تُحْشَرُونَ ١٥٨

१५८. और अगर तुम मरो या मारे जाओ तो अल्लाह ही की तरफ़ उठना है।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ لِنتَ لَهُمْ

१५९. तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ महबूब तुम

وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ
لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ عَنْهُمْ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي
الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ١٥٩

उनके लिये नर्म दिल हुए और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते तो वो ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान हो जाते तो तुम उन्हें मुआफ़ फ़रमाओ और उनकी शफ़ाअत करो और कामों में उनसे मश्वरा लो और जो किसी बात का इरादा पक्का करलो तो अल्लाह पर भरोसा करो बेशक तवक्कुल वाले अल्लाह को प्यारे हैं।

إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ
وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي
يَنْصُرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ١٦٠

१६०. अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वो तुम्हें छोड़ दे तो ऐसा कौन है जो फिर तुम्हारी मदद करे और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ وَمَنْ
يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَ
هُمْ لَا يُظْلَمُونَ ١٦١

१६१. और किसी नबी पर ये गुमान नहीं हो सकता कि वो कुछ छुपा रखे और जो छुपा रखे वो क़यामत के दिन अपनी छुपाई चीज़ लेकर आयेगा फिर हर जान को उनकी कमाई भरपूर दी जाएगी और उनपर ज़ुल्म न होगा।

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ
بَاءَ بِسَخَطٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ١٦٢

१६२. तो क्या जो अल्लाह की मरज़ी पर चला वो उस जैसा होगा जिसने अल्लाह का ग़ज़ब ओढ़ा और उसका ठिकाना जहन्नम है और क्या बुरी जगह पलटने की।

هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ
بِمَا يَعْمَلُونَ ١٦٣

१६३. वो अल्लाह के यहाँ दर्जा-दर्जा है और अल्लाह उनके काम देखता है।

१६४. बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुआ मुसलमानो पर कि उनमें उन्ही में से एक रसूल भेजा जो उनपर उसकी आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब व हिकमत सिखाता है और वो जरूर इससे पहले खुली गुमराही में थे।

१६५. क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे कि उससे दूनी तुम पहुँचा चुके हो तो कहने लगो कि ये कहाँ से आई तुम फ़रमा दो कि वो तुम्हारी ही तरफ़ से आई बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

१६६. और वो मुसीबत जो तुम पर आई जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थी वो अल्लाह के हुक्म से थी और इसलिये कि पहचान करा दे ईमान वालों की।

१६७. और इसलिये कि पहचान करादे उनकी जो मुनाफ़िक़ हुए और उनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राह मे लड़ो या दुश्मन को हटाओ, बोले अगर हम लड़ाई होती जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते और उस दिन ज़ाहिरी ईमान की बनिस्बत खुले कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब है। अपने मुँह से

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ
يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ
اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا
قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا وَقِيْلَ
لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ
قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ هُمْ لِلْكُفْرِ
يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ
يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ

कहते है जो उनके दिल मे नही और अल्लाह को मअलूम है जो छुपा रहे है।

१६८. वो जिन्होने अपने भाइयां के बारे मे कहा और आप बैठ रहे कि वे हमारा कहा मानते तो न मारे जाते तुम फ़रमा दो तो अपनी ही मौत टाल दो अगर सच्चे हो।

१६९. और जो अल्लाह की राह मे मारे गये हरगिज़ उन्हें मुर्दा न खयाल करना, बल्कि वो अपने रब के पास ज़िन्दा है, रोज़ी पाते हैं।

१७०. शाद है उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया और खुशियाँ मना रहे है। अपने पिछलों की जो अभी उनसे न मिले कि उनपर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म।

१७१. खुशियाँ मनाते है अल्लाह की नेअमत और फ़ज़्ल की, और ये कि अल्लाह ज़ाएअ नही करता अज्र मुसलमानों का।

रुकूअ १८

१७२. वो जो अल्लाह व रसूल के बुलाने पर हाज़िर हुए, बाद इसके कि उन्हें ज़खम पहुँच चुका था, उनके नेको कारों और परहेज़गारों के लिये

فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾
الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا
لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۗ قُلْ فَادْرَءُوا
عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾
وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِندَ
رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾
فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ
وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا
بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾
يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَ
فَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾
الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِن
بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ
أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾

बड़ा सवाब है।

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ
النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ
فَزَادَهُمْ إِيمَانًا ۖ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ
وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾

१७३. वो जिनसे लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे लिये जत्था जोड़ा तो उनसे डरो, तो उनका ईमान और ज़ायद हुआ और बोले अल्लाह हमको बस है और क्या अच्छा कारसाज़।

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ
لَمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ وَاتَّبَعُوا
رِضْوَانَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ
عَظِيمٍ ﴿١٧٤﴾

१७४. तो पलटे अल्लाह के एहसान और फ़ज़्ल से कि उन्हें कोई बुराई न पहुँची और अल्लाह की ख़ुशी पर चले और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ
فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٥﴾

१७५. वो तो शैतान ही है कि अपने दोस्तों से धमकाता है तो उनसे न डरो और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ
فِي الْكُفْرِ ۚ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ
شَيْئًا ۗ يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ
حَظًّا فِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ﴿١٧٦﴾

१७६. और ऐ महबूब तुम उनका कुछ ग़म न करो जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं वो अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे और अल्लाह चाहता है कि आखेरत में उनका कोई हिस्सा न रखे और उनके लिये बड़ा अज़ाब है।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ
لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

१७७. वो जिन्होंने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया। अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।

१७८. और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वो जो हम उन्हें ढील देते हैं, कुछ उनके लिये भला है हम तो इसीलिये उन्हें ढील देते है कि और गुनाह में बढ़े और उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِأَنْفُسِهِمْ ۚ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٧٨﴾

१७९. अल्लाह मुसलमानों को इस हाल पर छोड़ने का नहीं जिसपर तुम हो जबतक जुदा न कर दे गन्दे को सुथरे से और अल्लाह की शान ये नहीं कि ऐ आम लोगो तुम्हें ग़ैब का इल्म देदे हाँ अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों से, जिसे चाहे तो ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूलों पर और अगर ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिये बड़ा सवाब है।

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٩﴾

१८०. और जो बुख़्ल करते है उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी, हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वो उनके लिये बुरा है। अनक़रीब वो जिस में बुख़्ल किया था, क़यामत के दिन उनके गले का तौक़ होगा और अल्लाह ही वारिस है आसमानों और ज़मीन का और अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَهُمْ ۖ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٨٠﴾

रुकूअ १९

१८१. बेशक अल्लाह ने सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह मुहताज है और हम ग़नी अब हम लिख रखेंगे

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۘ

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ
بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾

उनका कहा, और अंबिया को उनका ना हक़ शहीद करना और फ़रमाएँगे कि चखो आग का अज़ाब।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ
اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ﴿١٨٢﴾

१८२. ये बदला है उसका जो तुम्हारे हाथो ने आगे भेजा और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا
أَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا
بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ
جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ
وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨٣﴾

१८३. वो जो कहते हैं अल्लाह ने हमसे इक़रार कर लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लायें जबतक ऐसी कुरबानी का हुक्म न लाये, जिसे आग खाये तुम फ़रमा दो, मुझ से पहले बहुत रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियाँ और ये हुक्म लेकर आए जो तुम कहते हो, फिर तुमने उन्हें क्यों शहीद किया अगर सच्चे हो।

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ
مِنْ قَبْلِكَ جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ
وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٤﴾

१८४. तो ऐ महबूब अगर वो तुम्हारी तकज़ीब करते है तो तुमसे अगले रसूलों की भी तकज़ीब की गई है जो साफ़ निशानियाँ और सहीफ़े और चमकती किताब लेकर आए थे।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَإِنَّمَا
تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فَمَنْ
زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ
فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا
مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿١٨٥﴾

१८५. हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़यामत ही को पुरे मिलेंगे, जो आग से बचाकर जन्नत में दाख़िल किया गया वो मुराद को पहुँचा, और दुनिया की जिन्दगी तो यही धोके का माल है।

لَتُبْلَوُنَّ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ
وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى
كَثِيرًا وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ
ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٦﴾

१८६. बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़माइश होगी, तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों और मुशरिकों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो तो ये बड़ी हिम्मत का काम है।

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا
تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ
وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبِئْسَ
مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٧﴾

१८७. और याद करो जब अल्लाह ने अहद लिया उनसे जिन्हें किताब अता हुई कि तुम ज़रूर उसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना तो उन्होंने उसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उसके बदले ज़लील दाम हासिल किये तो कितनी बुरी खरीदारी है।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا
أَتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ
يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ
الْعَذَابِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨٨﴾

१८८. हरगिज़ न समझना उन्हें जो खुश होते हैं अपने किये पर, और चाहते हैं कि बे किये उनकी तअरीफ़ हो ऐसों को हरगिज़ अज़ाब से दूर न जानना और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٨٩﴾

१८९. और अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाही और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

रुकूअ २०

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ
لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾

१९०. बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियाँ हैं अक़्लमन्दों के लिये।

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾

१९१. जो अल्लाह की याद करते है, खड़े और बैठे और करवट पर लेटे और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते है ऐ रब हमारे तूने ये बेकार न बनाया पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾

१९२. ऐ रब हमारे बेशक जिसे तू दोज़ख़ में लेजाये, उसे ज़रूर तू ने रूसवाई दी और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾

१९३. ऐ रब हमारे हमने एक मुनादी को सुना कि ईमान के लिये निदा फ़रमाता है कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाये ऐ रब हमारे, तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराईयाँ महव फ़रमा दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾

१९४. ऐ रब हमारे और हमें दे वो जिसका तूने हमसे वअ़दा किया है अपने रसूलों की मअ़रिफ़त, और हमें क़यामत के दिन रूसवा न कर, बेशक तू वअ़दा ख़िलाफ़ नहीं करता।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ

१९५. तो उनकी दुआ सुन ली उनके रब ने, कि मैं तुममें कामवाले की मेहनत अकारत नही करता मर्द हो या औरत, तुम आपस में एक हो तो वो जिन्होंने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गये और मेरी राह में

सताये गये, और लड़े और मारे गये। मै ज़रूर उनके सब गुनाह उतार दूँगा, और ज़रूर उन्हें बाग़ों में ले जाऊँगा जिन के नीचे नहरें रवाँ, अल्लाह के पास का सवाब और अल्लाह ही के पास अच्छा सवाब है।	وَ اُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَ قٰتَلُوْا وَ قُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ١٩٥
१९६. ऐ सुनने वाले काफ़िरों का शहरों में एहले गेहले फिरना हरगिज़ तुझे धोका न दे।	لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ١٩٦
१९७. थोड़ा बरतना उनका ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरा बिछौना।	مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ١٩٧
१९८. लेकिन वो जो अपने रब से डरते हैं, उनके लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बहें। हमेशा उनमें रहें अल्लाह की तरफ़ की मेहमानी और जो अल्लाह के पास है वो नेकों के लिये सबसे भला।	لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ١٩٨
१९९. और बेशक कुछ किताबी ऐसे है कि अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उसपर जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो उनकी तरफ़ उतरा उनके दिल अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए, अल्लाह की आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते ये वो हैं जिनका सवाब उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है।	وَ اِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ١٩٩

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَ
رَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾ ع

२००. ऐ ईमानवालों सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगेहबानी करो और अल्लाह से डरते रहो, इस उम्मीद पर कि कामियाब हो।

सूरए निसा

मदनी है इसमें एक सौ छिहत्तर आयात और चौबीस रूकूअ हैं

سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَّسِتٌّ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعٌ وَّعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ
مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا
كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ
تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ﴿١﴾

१. ऐ! लोगों अपने रब से डरो, जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी में से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औरत फैला दिये और अल्लाह से डरो जिसके नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लेहाज़ रखो बेशक अल्लाह हर वक़्त तुम्हें देख रहा है।

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا
الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ
اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿٢﴾

२. और यतीमों को उनके माल दो और सुथरे के बदले गन्दा न लो और उनके माल अपने मालों मे मिलाकर न खा जाओ। बेशक यह बड़ा गुनाह है।

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى
فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ
مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ
اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ؕ ﴿٣﴾

३. और अगर तुम्हें अन्देशा हो कि यतीम लड़कियों में इन्साफ़ न करोगे तो निकाह में लाओ जो औरतें तुम्हें खुश आयें दो-दो, और तीन-तीन और चार-चार, फिर अगर डरो कि दो बीबियों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो या कनीज़ें जिनके तुम मालिक हो, ये उससे ज़्यादा क़रीब है कि तुमसे ज़ुल्म न हो।

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ
فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ
نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ④

४. और औरतों को उनके महर खुशी से दो। फिर अगर वो अपने दिल की खुशी से महर में से तुम्हें कुछ देदें तो उसे खाओ रचता पचता।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ
جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ
فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ⑤

५. और बे अक़्लों को उनके माल न दो जो तुम्हारे पास है जिनको अल्लाह ने तुम्हारी बसर औक़ात किया है और उन्हें उसमें से खिलाओ और पहनाओ उनसे अच्छी बात कहो।

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ
فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا
اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا
وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ
غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا
فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ فَاِذَا دَفَعْتُمْ
اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ؕ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ⑥

६. और यतीमों को आज़माते रहो, यहाँ तक कि जब वो निकाह़ के क़ाबिल हों तो अगर तुम उनकी समझ ठीक देखो तो उनके माल उन्हें सुपुर्द कर दो, और उन्हें न खाओ ह़द से बढ़ कर और इस जल्दी में कि कहीं बड़े ना हो जायें और जिसे ह़ाजत न हो वो बचता रहे, और जो ह़ाजतमन्द हो वो बक़दरे मुनासिब खाये, फिर जब तुम उनके माल उन्हें सुपुर्द करो तो उनपर गवाह करलो और अल्लाह काफ़ी है ह़िसाब लेने को।

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ
وَالْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ
الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ
اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ⑦

७. मर्दों के लिये ह़िस्सा है। उसमें से जो छोड़ गये माँ बाप और क़राबत वाले और औरतों के लिये हिस्सा है उसमें से जो छोड़ गये माँ, बाप और क़राबत वाले तरका थोड़ा हो या बहुत ह़िस्सा है अन्दाज़ा बाँधा हुआ।

८. फिर बाँटते वक़्त अगर रिश्तेदार और यतीम और मिसकीन आ जायें तो उसमें से उन्हें भी कुछ दो और उनसे अच्छी बात कहो।

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُوا الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ فَارْزُقُوهُم مِّنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٨﴾

९. और डरें वो लोग अगर अपने बाद नातवाँ औलाद छोड़ते तो उनका कैसा उन्हें ख़तरा होता, तो चाहिये कि अल्लाह से डरें और सीधी बात करें।

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٩﴾

१०. तो जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं, वो तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (आतिशकदे) में जायेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾ ع

रुकूअ २

११. अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है, तुम्हारी अवलाद के बारे में। बेटे का हिस्सा दो बेटियों बराबर है। फिर अगर निरी लड़कियाँ हों, अगरचे दो से ऊपर तो उनको तरके की दो तिहाई और अगर एक लड़की होतो उसका आधा और मय्येत के माँ बाप को हर एक को उसके तरके से छटा अगर मय्येत के अवलाद हो फिर अगर उसकी अवलाद न हो और माँ-बाप छोड़ें तो माँ का तिहाइ फिर अगर उसके कई बहन भाई हों तो माँ का छटा, बाद उस वसीयत के जो कर गया और दैन

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِن كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِن كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِن كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِن لَّمْ يَكُن لَّهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِن كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ ۚ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ

دَيْنٍ ۗ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ
اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ فَرِيْضَةً
مِّنَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا
حَكِيْمًا ﴿١١﴾
وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ
اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا
تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ
بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا
تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ
فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ
مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ
بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ
يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗۤ اَخٌ
اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا
السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ
فَهُمْ شُرَكَآءُ فِى الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ
وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ
مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

के तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम क्या जानो कि उनमें कौन तुम्हारे ज़्यादा काम आयेगा ये हिस्सा बाँधा हुआ है। अल्लाह की तरफ़ से। बेशक अल्लाह इल्मवाला हिकमत वाला है।

१२. और तुम्हारी बीबियाँ जो छोड़ जायें उसमें से तुम्हें आधा है अगर उनकी औलाद न हो। फिर अगर उनकी औलाद होतो उनके तरके में से तुम्हें चौथाई है जो वसीयत वो कर गई और दैन निकाल कर और तुम्हारे तरके में औरतों का चोथाई है, अगर तुम्हारे औलाद न हो। फिर अगर तुम्हारे औलाद होतो उनका तुम्हारे तरके में से आठवाँ जो वसीयत तुम कर जाओ और दैन निकालकर और अगर किसी ऐसे मर्द या औरत का तरका बटता हो जिसने माँ, बाप, औलाद कुछ न छोड़े और माँ की तरफ़ से उसका भाई या बहन है तो उनमें से हर एक को छटा। फिर अगर वो बहन भाई एक से ज़्यादा होतो सब तिहाई में शरीक हैं। मय्येत की वसीयत और दैन निकाल कर जिसमें उसने नुक़्सान न पहुँचाया हो ये अल्लाह का इर्शाद है और अल्लाह इल्म वाला, हिल्म वाला है।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑬

१३. ये अल्लाह की हदें है और जो हुक्म माने अल्लाह और अल्लाह के रसूल का अल्लाह उसे बागो में ले जायेगा जिनके नीचे नहरें रवाँ हमेशा उनमें रहेंगे और यही है बड़ी कामयाबी।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ
حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪
وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑭ ع

१४. और जो अल्लाह और उसके रसूल की ना फ़रमानी करे और उसकी कुल हदों से बढ़ जाये। अल्लाह उसे आग में दाखिल करेगा, जिसमें हमेशा रहेगा और उसके लिए ख्वारी का अज़ाब है।

रुकूअ ३

وَالّٰتِیْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ
نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ
اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ
فِی الْبُيُوْتِ حَتّٰی يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ
اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ⑮

१५. और तुम्हारी औरतों में जो बदकारी करें उनपर खास अपने में के चार मर्दो की गवाही लो, फिर अगर वो गवाही दे दें तो उन औरतों को अपने घर में बन्द रखो यहाँ तक कि उन्हें, मौत उठाले या अल्लाह उनकी कुछ राह निकाले।

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ
فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا
عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا
رَّحِيْمًا ⑯

१६. और तुम में जो मर्द औरत ऐसा काम करे उनको ईज़ा दो फिर अगर वो तौबा करलें और नेक हो जाएँ तो उनका पीछा छोड़ दो। बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला मेहरबान है।

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَی اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ
يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ
مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ

१७. वो तौबा जिसका कुबूल करना अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वो उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठे फिर थोड़ी देर में तौबा करले। ऐसों पर अल्लाह अपनी

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾

रहमत से रूजुअ करता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ
السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰۤى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ
الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَ
لَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ
اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمًا ﴿١٨﴾

१८. और वो तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रहते है, यहाँ तक कि जब उनमे किसी को मौत आये तो कहे अब मैं ने तौबा की। और न उनकी जो काफ़िर मरें उनके लिये हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ
لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ
وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ
مَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰۤى
اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ
خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿١٩﴾

१९. ऐ ईमानवालों तुम्हें हलाल नहीं कि औरतों के वारिस बन जाओ ज़बरदस्ती। और औरतों को रोको नहीं इस नीय्यत से कि जो महर उनको दिया था उस में से कुछ लेलो, मगर उस सूरत में कि सरीह बेहयाई का काम करें और उन से अच्छा बरताव करो फिर अगर वो तुम्हें पसन्द न आयें तो क़रीब है कि कोई चीज़ तुम्हें नापसन्द हो और अल्लाह उस में बहुत भलाई रखे।

وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ
زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا
فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ
بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢٠﴾

२०. और अगर तुम एक बीबी के बदले दूसरी बदलना चाहो और उसे ढेरों माल दे चुके हो तो उसमें से कुछ वापस न लो क्या उसे वापस लोगे झूठ बाँध कर और खुले गुनाह से?

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنكُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾

२१. और क्यों कर उसे वापस लोगे। हालाँकि तुम में एक दूसरे के सामने बे परवा हो लिया और वो तुम से गाढ़ा अहद ले चुकी।

وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم مِّنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾ ع

२२. और बाप दादा की मनकूहा से निकाह न करो मगर जो हो गुज़रा वो बेशक बे हयाई और ग़ज़ब का काम है और बहुत बुरी राह।

रुकूअ ४

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُم مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُم مِّن نِّسَائِكُمُ اللَّاتِي دَخَلْتُم بِهِنَّ فَإِن لَّمْ تَكُونُوا دَخَلْتُم بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَن تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٢٣﴾

२३. हराम हुई तुम पर तुम्हारी माएँ और बेटियाँ और बहनें और फूफियाँ और ख़ालायें और भतीजियाँ और भांजियाँ और तुम्हारी माएँ जिन्होंने दूध पिलाया और दूध की बहनें और औरतों की माएँ और उन की बेटियाँ जो तुम्हारी गोद में है उन बीबियों से जिन से तुम सोहबत कर चुके हो, तो फिर अगर तुमने उनसे सोहबत न की हो तो उनकी बेटियों में हरज नहीं और तुम्हारी नस्ली बेटों की बीबिएं और दो बहनें इकट्ठी करना, मगर जो हो गुज़रा। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

२४. और हराम है शौहरदार औरतें मगर काफ़िरों की औरतें जो तुम्हारी मिल्क में आ जाएँ ये अल्लाह का नविश्ता है तुम पर और उनके सिवा जो रहे वो तुम्हें हलाल है कि अपने मालों के एवज़ तलाश करो क़ैद लाते न पानी गिराते तो जिन औरतों को निकाह में लाना चाहो उनके बंधे हुए महर उन्हें दो और क़रारदाद के बाद अगर तुम्हारे आपस में कुछ रज़ामंदी हो जाए तो उसमें गुनाह नहीं बेशक अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

२५. और तुममें बे मक़दूरी के बाइस जिनके निकाह में आज़ाद औरतें ईमान वालियाँ न हों तो उनसे निकाह करे जो तुम्हारे हाथ की मिल्क है ईमान वाली कनीज़ें और अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है तुम में एक दूसरे से हैं तो उनसे निकाह करो उनके मालिकों की इजाज़त से और हस्बे दस्तूर उनके महर उन्हें दो क़ैद में आतियाँ न मस्ती निकालती और न यार बनाती जब वो क़ैद में आजायें फिर बुरा काम करें तो उनपर उस सज़ा की आधी है जो आज़ाद औरतों पर है ये उसके लिए जिसे तुम

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ
وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ
اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ
مُسٰفِحِيْنَ ۗ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ
مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ
بِهٖ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾
وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا
اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ
فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ
فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ
بِاِيْمَانِكُمْ ۗ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ
فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ
غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ
اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا
عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ۚ

में से ज़िना का अंदेशा है और सब्र करना तुम्हारे लिए बेहतर है और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है।

रुकूअ ५

२६. अल्लाह चाहता है कि अपने अहकाम तुम्हारे लिए बयान करदे और तुम्हें अगलों की रविशें बता दे और तुम पर अपनी रहमत से रूजुअ फ़रमाये और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

२७. और अल्लाह तुम पर अपनी रहमत से रूजुअ फ़रमाना चाहता है और जो अपने मज़ों के पीछे पड़े हैं वो चाहते हैं कि तुम सीधी राह से बहुत अलग हो जाओ।

२८. अल्लाह चाहता है कि तुमपर तख़फ़ीफ़ करे और आदमी कमज़ोर बनाया गया।

२९. ऐ ईमानवालो आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ मगर ये कि कोई सौदा तुम्हारी बाहमी रज़ामंदी का हो और अपनी जानें क़त्ल न करो बेशक अल्लाह तुम पर मेहरबान है।

३०. और जो ज़ुल्म व ज़्यादती से ऐसा करेगा तो अन्क़रीब हम उसे

ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ
وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
ع غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۵﴾

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ
يَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ﴿۲۶﴾

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ
وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ
اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿۲۷﴾

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَ
خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿۲۸﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا
اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ
تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ
وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۲۹﴾

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّ
ظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَ

आग में दाख़िल करेंगे और ये अल्लाह को आसान है।

३१. अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिनकी तुम्हें मुमानअत है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे और तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

३२. और उसकी आरज़ू न करो जिससे अल्लाह ने तुममें एक को दूसरे पर बड़ाई दी मर्दों के लिए उनकी कमाई से हिस्सा है और औरतों के लिए उनकी कमाई से हिस्सा और अल्लाह से उसका फ़ज़्ल मांगो बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।

३३. और हमने सबके लिए माल के मुस्तहिक बना दिए हैं जो कुछ छोड़ जाएं माँ, बाप और क़राबत वाले और वो जिनसे तुम्हारा हलफ़ बंध चुका उन्हें उनका हिस्सा दो बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है।

रुकूअ ६

३४. मर्द अफ़्सर हैं औरतों पर इसलिए कि अल्लाह ने उनमें एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इसलिए कि मर्दों ने उनपर अपने माल ख़र्च किए तो नेक बख़्त औरतें अदब वालियाँ हैं ख़ाविंद के पीछे हिफ़ाज़त रखती है

كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

إِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ
نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ
مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ
بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۗ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ
مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ۗ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ
مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۗ وَسْئَلُوا اللّٰهَ مِنْ
فَضْلِهٖ ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ
الْوَالِدٰنِ وَالْأَقْرَبُوْنَ ۗ وَالَّذِيْنَ
عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ۗ
إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ ع

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا
فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ
وَّبِمَآ أَنْفَقُوْا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۗ
فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ

بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ۗ وَالّٰتِىْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِى الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

जिस तरह अल्लाह ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और जिन औरतों की ना फ़रमानी का तुम्हें अंदेशा हो तो उन्हें समझाओ और उनसे अलग सोओ और उन्हें मारो फिर अगर वो तुम्हारे हुक्म में आजाएँ तो उनपर ज़्यादती की कोई राह न चाहो बेशक अल्लाह बुलंद बड़ा है।

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿٣٥﴾

३५. और अगर तुमको मियाँ बीबी के झगड़े का ख़ौफ़ हो तो एक पंच मर्द वालों की तरफ़से भेजो और एक पंच औरत वालों की तरफ़ से ये दोनों अगर सुलह् कराना चाहेंगे तो अल्लाह उनमें मेल कर देगा बेशक अल्लाह जानने वाला खबरदार है।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ ﴿٣٦﴾

३६. और अल्लाह की बंदगी करो और उसका शरीक किसी को न ठहराओ और माँ, बाप से भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और पास के हमसाए और दूर के हमसाए और करवट के साथी और राहगीर और अपनी बांदी गुलाम से, बेशक अल्लाह को खुश नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ

३७. जो आप बुख़्ल करें और औरों से बुख़्ल के लिए कहें और

अल्लाह ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाएँ और काफ़िरों के लिए हमने ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।

३८. और वो जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं और ईमान नहीं लाते अल्लाह और न क़यामत पर और जिसका मुसाहिब शैतान हुआ तो कितना बुरा मुसाहिब है।

३९. और उनका क्या नुक़सान था अगर ईमान लाते अल्लाह और क़यामत पर और अल्लाह के दिए में से उसकी राह में ख़र्च करते और अल्लाह उनको जानता है।

४०. अल्लाह एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी होतो उसे दूनी करता और अपने पाससे बड़ा सवाब देता है।

४१. तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाए और ऐ महबूब तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान बनाकर लाए।

४२. उस दिन तमन्ना करेंगे वो जिन्होंने कुफ़्र किया और रसूल की ना फ़रमानी की काश उन्हें मिट्टी मे दबा कर ज़मीन बराबर कर दी जाए और कोई बात अल्लाह से न छुपा सकेंगे।

بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ
مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٣٧﴾
وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ
النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا
فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾
وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ
وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ
مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾
فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ
بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ
شَهِيْدًا ؕ ﴿٤١﴾
وقف النبي عليه السلام
يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا
الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ
وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿٤٢﴾

रुकूअ ७

४३. ऐ ईमानवालो नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ जबतक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो और न नापाकी की हालत में बे नहाए मगर मुसाफ़िरी में और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में या तुममें से कोई क़ज़ाए हाजत से आया या तुमने औरतों को छुआ और पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुँह और हाथों का मसह करो बेशक अल्लाह मुआफ़ करने वाला बख़्शने वाला है।

४४. क्या तुमने उन्हें न देखा जिनको किताब से एक हिस्सा मिला गुमराही मोल लेते है और चाहते हैं कि तुम भी राह से बहक जाओ।

४५. और अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे दुश्मनों को और अल्लाह काफ़ी है वाली और अल्लाह काफ़ी है मददगार ।

४६. कुछ यहूदी कलामों को उनकी जगह से फेरते हैं और कहते है हमने सुना और न माना और सुनिए आप सुनाए न जाए और राइना कहते हैं ज़बानें फेर कर और दीन में तअना के

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ
وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا
تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ
سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ
مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ
النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا
صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ
وَاَيْدِيْكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا
غَفُوْرًا ﴿٤٣﴾

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿٤٤﴾

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ۚ وَكَفٰى
بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا
وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ
وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا

فِي الدِّيْنِ ۗ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا
وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ
خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ
اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٤٦﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا
بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ
مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا
عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ
اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۗ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ
مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ
يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ
وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى
اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ
بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا
يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

लिए और अगर वो कहते है कि हमने सुना और माना और हुज़ूर हमारी बात सुनें और हुज़ूर हम पर नज़र फ़रमाए तो उनके लिए भलाई और रास्ती में ज़्यादा होता लेकिन उन पर तो अल्लाह ने लअनत की उनके कुफ़्र के सबब तो यक़ीन नहीं रखते मगर थोड़ा।

४७. ऐ किताब वालो ईमान लाओ उसपर जो हमने उतारा तुम्हारे साथ वाली किताब की तस्दीक़ फ़रमाता क़ब्ल इसके कि हम बिगाड़ दें कुछ मुँहों को तो उन्हें फेर दें उनकी पीठ की तरफ़ या उन्हें लअनत करें जैसी लअनत की हफ़्ता वालों पर और खुदा का हुक्म होकर रहे।

४८. बेशक अल्लाह उसे नहीं बख़्शता कि उसके साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है और जिसने खुदा का शरीक ठहराया उसने बड़ा गुनाह का तूफ़ान बाँधा।

४९. क्या तुमने उन्हें न देखा जो खुद अपनी सुथराई बयान करते हैं बल्कि अल्लाह जिसे चाहे सुथरा करे और उनपर ज़ुल्म न होगा दानए-खुर्मा के डोरे बराबर।

५०. देखो कैसा अल्लाह पर झूठ बाँध रहे हैं और ये काफ़ी है सरीह

الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُبِينًا ﴿٥٠﴾ ع

गुनाह।

रुकूअ ८

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا
مِنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ
وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ
كَفَرُوا هَٰؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ
آمَنُوا سَبِيلًا ﴿٥١﴾

५१. क्या तुमने वो न देखे जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला ईमान लाते है बुत और शैतान पर और काफ़िरों को कहते हैं कि ये मुसलमानो से ज़्यादा राह पर हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَمَنْ
يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ
نَصِيرًا ﴿٥٢﴾

५२. ये हैं जिन पर अल्लाह ने लअनत की और जिसे ख़ुदा लअनत करे तो हरगिज़ उसका कोई यार न पायेगा।

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِنَ الْمُلْكِ فَإِذًا
لَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٣﴾

५३. क्या मुल्क में उनका कुछ हिस्सा है ऐसा हो तो लोगों को तिल भर न दें।

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا
آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ
آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ﴿٥٤﴾

५४. या लोगों से हसद करते है उसपर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया तो हमने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और हिकमत अता फ़रमाई और उन्हें बड़ा मुल्क दिया।

فَمِنْهُمْ مَنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُمْ
مَنْ صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ
سَعِيرًا ﴿٥٥﴾

५५. तो उनमें कोई इसपर ईमान लाया और किसी ने इससे मुँह फेरा और दोज़ख़ काफ़ी है भड़कती आग।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ

५६. जिन्होंने हमारी आयतों का इन्कार किया अनक़रीब हम उनको आग

نُصْلِيهِمْ نَارًا ۚ كُلَّمَا نَضِجَتْ
جُلُودُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا
لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾

में दाखिल करेंगे जब कभी उनकी खालें पक जायेंगी हम उनके सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अज़ाब का मज़ा लें बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

وَالَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ
لَهُمْ فِيهَا أَزْوٰجٌ مُطَهَّرَةٌ ۖ وَ
نُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾

५७. और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए अनक़रीब हम उन्हें बाग़ों में ले जायेंगे जिनके नीचे नहरें रवाँ उनमें हमेशा रहेंगे उनके लिए वहाँ सुथरी बीबियाँ है और हम उन्हें वहाँ दाखिल करेंगे जहाँ साया ही साया होगा।

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمٰنٰتِ
إِلَىٰ أَهْلِهَا ۙ وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ
النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ
اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ
سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾

५८. बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिनकी हैं उन्हें सुपुर्द करो और ये कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो बेशक अल्लाह तुम्हें क्याही खूब नसीहत फ़रमाता है बेशक अल्लाह सुनता देखता है।

يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا أَطِيعُوا اللّٰهَ
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ
مِنْكُمْ ۚ فَإِنْ تَنٰزَعْتُمْ فِي شَيْءٍ
فَرُدُّوهُ إِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ
تُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ ذٰلِكَ

५९. ऐ ईमानवालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उनका जो तुममें हुकूमत वाले हैं फिर अगर तुममें किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुज़ूर रूजूअ करो अगर अल्लाह और

ﻉ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٥٩﴾

क़यामत पर ईमान रखते हो ये बेहतर है और उसका अंजाम सबसे अच्छा।

رکوع ٩

रुकूअ ९

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۭ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿٦٠﴾

६०. क्या तुमने उन्हे न देखा जिनका दअवा है कि वो ईमान लाये उसपर जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और उस पर जो तुमसे पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैतान को अपना पंच बनाएँ और उनको तो हुक्म ये था कि उसे असलन न मानें और इबलीस ये चाहता है कि उन्हें दूर बहकावे।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿٦١﴾

६१. और जब उनसे कहा जाए कि अल्लाह की उतारी हुई किताब और रसूल की तरफ़ आओ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़ तुमसे मुँह मोड़ कर फिर जाते हैं।

فَكَيْفَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا وَّتَوْفِيْقًا ﴿٦٢﴾

६२. कैसी होगी जब उनपर कोई उफ़्ताद पड़े बदला उसका जो उनके हाथों ने आगे भेजा फिर ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों अल्लाह की कसम खाते कि हमारा मक़सूद तो भलाई और मेल ही था।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۤ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًۢا بَلِيْغًا ﴿٦٣﴾

६३. उनके दिलों की तो बात अल्लाह जानता है तो तुम उनसे चश्म पोशी करो और उन्हें समझा दो और उनके मुआम्ले में उनसे रसा बात कहो।

६४. और हमने कोई रसूल न भेजा मगर इसलिए कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत की जाए और अगर जब वो अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हो और फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमायें तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पायें।

६५. तो ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वो मुसलमान न होंगे जबतक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनायें फिर जो कुछ तुम हुकम फ़रमादो अपने दिलों में उससे रूकावट न पायें और जी से मान लें।

६६. और अगर हम उनपर फ़र्ज़ करते कि अपने आप को क़त्ल करदो या अपने घर बार छोड़कर निकल जाओ तो उनमें थोड़े ही ऐसा करते और अगर वो करते जिस बात की उन्हें नसीहत दी जाती है तो उसमें उनका भला था और ईमान पर ख़ूब जमना।

६७. और ऐसा होता तो ज़रूर हम उन्हें अपने पाससे बड़ा सवाब देते।

६८. और ज़रूर उनको सीधी राह की हिदायत करते।

६९. और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने तो उसे उनका

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ جَاۗءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ
وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا
اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾
فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى
يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ
لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا
قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾
وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا
اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ
مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ۭ وَلَوْ
اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ
خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿٦٦﴾ ۙ
وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا
عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾ ۙ
وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰۗىِٕكَ
مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ

النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ
وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾

साथ मिलेगा जिनपर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया यअनी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग ये क्या ही अच्छे साथी है।

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى
ع بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾

७०. ये अल्लाह का फ़ज़्ल है और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला।

रुकूअ १०

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ
فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾

७१. ऐ ईमान वालो होशियारी से काम लो फिर दुश्मन को तरफ़ थोड़े थोड़े होकर निकलो या इकट्ठे चलो.

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ
اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾

७२. और तुममें कोई वो है कि जरूर देर लगायेगा फिर अगर तुम पर कोई उफ़्ताद पड़े तो कहे ख़ुदा का मुझ पर एहसान था कि मै उनके साथ हाज़िर न था।

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ
لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَ
بَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ
فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾

७३. और अगर तुम्हें अल्लाह का फ़ज़्ल मिले तो ज़रूर कहे गोया तुममें उसमें कोई दोस्ती न थी ऐ काश मैं उनके साथ होता तो बड़ी मुराद पाता।

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۭ
وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ
اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾

७४. तो उन्हें अल्लाह की राह में लड़ना चाहिए जो दुनिया की ज़िन्दगी बेच कर आख़ेरत लेते है और जो अल्लाह की राह में लड़े फिर मारा जाये या ग़ालिब आए तो अनक़रीब हम उसे बड़ा सवाब देगे।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ

७५. और तुम्हें क्या हुआ कि न लड़ो अल्लाह की राह मे और कमज़ोर

وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ
الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ
لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
نَصِيْرًا ۗ ﴿٧٥﴾

मर्दों और औरतें और बच्चों के वास्ते जो ये दुआ कर रहे हैं कि ऐ हमारे रब हमें इस बस्ती से निकाल जिसके लोग ज़ालिम है और हमें अपने पाससे कोई हिमायती दे दे और हमें अपने पास से कोई मददगार देदे।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا
اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ
كَانَ ضَعِيْفًا ﴿٧٦﴾ ع

७६. ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते है और कुफ़्फ़ार शैतान की राह में लड़ते है तो शैतान के दोस्तों से लड़ो बेशक शैतान का दाव कमज़ोर है।

रुकूअ ११

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ
كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ
النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ
خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ
عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى
اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا
قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى

७७. क्या तुमने उन्हें न देखा जिनसे कहा गया अपने हाथ रोक लो और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो फिर जब उनपर जिहाद फ़र्ज़ किया गया तो उनमें बअज़े लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह से डरें या उससे भी ज़ायद और बोले ऐ रब हमारे तूने हमपर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया थोड़ी मुद्दत तक हमें और जीने दिया होता तुम फ़रमादो कि दुनिया का बरतना थोड़ा है और डरवालों के लिए आख़ेरत अच्छी और तुम पर तागे

وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٧﴾
اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ
وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ
وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا
هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ
سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ
قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ
هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ
حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾
مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ
اللّٰهِ ۫ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ
نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾
مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ
وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ
حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾ ط
وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا
مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ
غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ

बराबर ज़ुल्म न होगा।

७८. तुम जहाँ कहीं हो मौत तुम्हें आ लेगी अगरचे मज़बूत क़िलों में हो और उन्हें कोई भलाई पहुँचे तो कहें ये अल्लाह की तरफ़ से है और उन्हें कोई बुराई पहुँचे तो कहें ये हुज़ूर की तरफ़ से आई तुम फ़रमादो सब अल्लाह की तरफ़ से है तो उन लोगों को क्या हुआ कोई बात समझते मअलूम ही नहीं होते।

७९. ऐ सुननेवाले तुझे जो भलाई पहुँचे वो अल्लाह की तरफ़ से है और जो बुराई पहुंचे वो तेरी अपनी तरफ़ से है और ऐ महबूब हमने तुम्हें सब लोगों के लिए रसूल भेजा और अल्लाह काफ़ी है गवाह।

८०. जिसने रसूल का हुक्म माना बेशक उसने अल्लाह का हुक्म माना और जिसने मुँह फेरा तो हमने तुम्हें उनके बचाने को न भेजा।

८१. और कहते हैं हमने हुक्म माना फिर जब तुम्हारे पाससे निकल कर जाते हैं तो उनमें एक गिरोह जो कह गया था उसके खिलाफ़ रात को मनसूबे गाँठता है और अल्लाह लिख रखता है उनके रात के मनसूबे तो ऐ

महबूब तुम उनसे चश्म पोशी करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह काफ़ी है काम बनाने को।

८२. तो क्या ग़ौर नहीं करते कुरआन में और अगर वो ग़ैरे ख़ुदा के पास से होता तो ज़रूर उसमें बहुत इख़तेलाफ़ पाते।

८३. और जब उनके पास कोई बात इत्मिनान या डर की आती है उसका चर्चा कर बैठते हैं और अगर उसमें रसूल और अपने ज़ी इख़्तेयार लोगों की तरफ़ रूजूअ लाते तो ज़रूर उनसे उसकी हक़ीक़त जान लेते ये जो बादमें काविश करते हैं और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो ज़रूर तुम शैतान के पीछे लग जाते मगर थोड़े।

८४. तो ऐ महबूब अल्लाह की राह में लड़ो तुम तकलीफ़ न दिए जाओगे मगर अपने दम की और मुसलमानों को आमादा करो क़रीब है कि अल्लाह काफ़िरो की सख़्ती रोक दे और अल्लाह की आँच (जंगी ताक़त) सबसे सख़्त तर है और उसका अज़ाब सबसे कर्रा (ज़बरदस्त)।

८५. जो अच्छी सिफ़ारिश करे

مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ
وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
وَكِيْلًا ﴿٨١﴾

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۗ وَلَوْ
كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا
فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾

وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ
اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ۗ وَلَوْ رَدُّوْهُ
اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ
لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ۗ
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ
رَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا
قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ
اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۗ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ
تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً

يَكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ
يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ
كِفْلٌ مِّنْهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾

उस के लिए उसमें से हिस्सा है और जो बुरी सिफ़ारिश करे उसके लिए उसमें से हिस्सा है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا
بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾

८६. और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उससे बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वही कहदो बेशक अल्लाह हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۗ وَمَنْ
ع اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾

८७. अल्लाह है कि उसके सिवा किसी की बंदगी नहीं और वो ज़रूर तुम्हें इकट्ठा करेगा क़यामत के दिन, जिसमें कुछ शक नहीं और अल्लाह से ज़्यादा किसकी बात सच्ची।

रुकूअ १२

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ
وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ۗ
اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ
اللّٰهُ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ
لَهٗ سَبِيْلًا ﴿٨٨﴾

८८. तो तुम्हें क्या हुआ कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो फ़रीक़ हो गये और अल्लाह ने उन्हे औंधा कर दिया उनके कोतकों (करतूतों) के सबब क्या ये चाहते हो के उसे राह दिखाओ जिसे अल्लाह ने गुमराह किया और जिसे अल्लाह गुमराह करे तो हरगिज़ तू उसके लिए राह न पायेगा।

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا
فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ
اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۗ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ

८९. वो तो ये चाहते हैं कि कहीं तुम भी काफ़िर हो जाओ जैसे वो काफ़िर हुए तो तुम सब एक से होजाओ तो उनमें किसी को अपना दोस्त न बनाओ जबतक अल्लाह की राह में

घर बार न छोड़ें, फिर अगर वो मुँह फ़ेरें तो उन्हे पकड़ो और जहाँ पाओ क़त्ल करो और उनमें किसी को न दोस्त ठहराओ न मददगार ।

९०. मगर वो जो ऐसी क़ौम से इलाक़ा रखते हैं कि तुममें उनमें मुआहिदा है या तुम्हारे पास यूँ आए कि उनके दिलों में सकत न रही कि तुमसे लड़ें या अपनी क़ौम से लड़ें और अल्लाह चाहता तो ज़रूर उन्हें तुम पर क़ाबू देता तो वो बेशक तुमसे लड़ते फिर अगर वो तुमसे कनारा करें और न लड़ें और सुलह का पयाम डालें तो अल्लाह ने तुम्हें उनपर कोई राह न रखी।

९१. अब कुछ और तुम ऐसे पाओगे जो ये चाहते हैं कि तुमसे भी अमान में रहें और अपनी क़ौम से भी अमान में रहे जब कभी उनकी क़ौम उन्हें फ़साद की तरफ़ फेरे तो उसपर औंधे गिरते हैं फिर अगर वो तुमसे कनारा न करें और सुलह की गरदन न डालें और अपने हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और जहाँ पाओ क़त्ल करो और ये है जिनपर हमने तुम्हें सरीह इख़्तेयार दिया।

रुकूअ १३

९२. और मुसलमानों को नहीं पहुँचता कि मुसलमान का ख़ून करे

حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۠ وَلَا تَتَّخِذُوْا
مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٨٩﴾

اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ
وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ
صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ
يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ
اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا
اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ
عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ۭ كُلَّمَا
رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ
فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ
السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ
وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ۭ
وَاُولٰۗىِٕكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ
ع سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا

إِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا
فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ
إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦٓ إِلَّآ أَن يَصَّدَّقُوا۟ ۚ فَإِن
كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ وَ
إِن كَانَ مِن قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم
مِّيثَٰقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ
وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ
تَوْبَةً مِّنَ ٱللَّهِ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ﴿٩٢﴾

मगर हाथ बहक कर और जो किसी मुसलमान को नादानिस्ता क़त्ल करे तो उसपर एक मम्लूक मुसलमान का आज़ाद करना है और ख़ून बहा मक़तूल के लोगों को सुपुर्द किए जाएँ मगर ये कि वो मुआफ़ करदें फिर अगर वो उस क़ौम से हो जो तुम्हारी दुश्मन है और खुद मुसलमान है तो सिर्फ़ एक मम्लूक मुसलमान का आज़ाद करना और अगर वो उस क़ौम में हो कि तुममें उनमें मुआहिदा है तो उसके लोगों को ख़ून बहा सुपुर्द किया जाये और एक मुसलमान मम्लूक आज़ाद करना तो जिसका हाथ न पहुँचे वो लगातार दो महीने के रोज़े रखे ये अल्लाह के यहाँ उसकी तौबा है और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है।

وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهُۥ
جَهَنَّمُ خَٰلِدًا فِيهَا وَغَضِبَ ٱللَّهُ
عَلَيْهِ وَلَعَنَهُۥ وَأَعَدَّ لَهُۥ عَذَابًا
عَظِيمًا ﴿٩٣﴾

९३. और जो कोई मुसलमान को जान बूझकर कत्ल करे तो उसका बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उसमें रहे और अल्लाह ने उसपर ग़ज़ब किया और उस पर लअनत की और उसके लिए तैयार रखा बड़ा अज़ाब ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا ضَرَبْتُمْ
فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَتَبَيَّنُوا۟ وَلَا تَقُولُوا۟
لِمَنْ أَلْقَىٰٓ إِلَيْكُمُ ٱلسَّلَٰمَ لَسْتَ
مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ ٱلْحَيَوٰةِ

९४. ऐ ईमान वालो जब तुम जिहाद को चलो तो तहक़ीक़ कर लो और जो तुम्हें सलाम करे उससे ये न कहो कि तू मुसलमान नहीं तुम जीती दुनिया का असबाब चाहते हो तो अल्लाह

के पास बहुतेरी ग़नीमते है पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुम पर एहसान किया तो तुम पर तहक़ीक़ करना लाज़िम है बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामो की खबर है।

९५. बराबर नही वो मुसलमान के बे उज़्र जिहाद से बैठ रहे और वो कि राहे खुदा में अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं। अल्लाह ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करने वालों का दर्जा बैठने वालों से बड़ा किया और अल्लाह ने सबसे भलाई का वअ़दा फ़रमाया और अल्लाह ने जिहाद वालों को बैठने वालों पर बड़े सवाब से फ़ज़ीलत दी है।

९६. उसकी तरफ़ से दर्जे और बख़्शिश और रहमत और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

रुकूअ १४

९७. वो लोग जिन की जान फ़रिश्ते निकालते हैं इस हाल में कि वो अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे उनसे फ़रिश्ते कहते हैं तुम काहे में थे कहते है कि हम ज़मीन में कमज़ोर थे कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उसमें हिजरत करते तो

الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ
كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ
عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٤﴾

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُونَ فِي
سَبِيلِ اللّٰهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِينَ دَرَجَةً
وَكُلًّا وَعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى وَفَضَّلَ
اللّٰهُ الْمُجٰهِدِينَ عَلَى الْقٰعِدِينَ
أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٩٥﴾

دَرَجٰتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٩٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفّٰهُمُ الْمَلٰئِكَةُ
ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ
قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي
الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ
اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا

فَأُولٰٓئِكَ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ
مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

ऐसों का ठिकाना जहन्नम है और बहुत बुरी जगह पलटने की।

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ
وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾

९८. मगर वो जो दबा लिए गए मर्द और औरतें और बच्चे जिन्हे न कोई तदबीर बन पड़े न रास्ता जाने।

فَأُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾

९९. तो क़रीब है अल्लाह ऐसो को मुआफ फ़रमाए और अल्लाह मुआफ़ फ़रमाने वाला बख्शने वाला है।

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ
فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ
وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا
اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ
الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ
ع وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾

१००. और जो अल्लाह की राह मे घरबार छोड़कर निकलेगा वो ज़मीन में बहुत जगह और गुंजाईश पायेगा और जो अपने घरसे निकला अल्लाह व रसूल की तरफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे पर हो गया और अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है।

रूकूअ १५

وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ
الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا
لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾

१०१. और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर गुनाह नही कि बअज़ नमाज़ें क़स्र से पढ़ो अगर तुम्हें अंदेशा होकि काफ़िर तुम्हे ईजा देंगे बेशक कुफ़्फ़ार तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ

१०२. और ऐ महबूब जब तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो फिर नमाज़ में

الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ فَ اِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٠٢﴾

इनकी इमामत करो तो चाहिए कि उनमें एक जमाअत तुम्हारे साथ हो और वो अपने हथियार लिए रहें फिर वो जब सज्दा करलें तो हटकर तुमसे पीछे होजाएँ और अब दूसरी जमाअत आए जो उस वक़्त तक नमाज़ में शरीक न थी अब वो तुम्हारे मुक़्तदी हों और चाहिए कि अपनी पनाह और अपने हथियार लिए रहें काफ़िरों की तमन्ना है कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने असबाब से ग़ाफ़िल होजाओ तो एक दफ़अ तुम पर झुक पड़ें और तुम पर मुज़ाएक़ा नहीं अगर तुम्हें मेंह के सबब तकलीफ़ हो या बीमार हो कि अपने हथियार खोल रखो और अपनी पनाह लिए रहो। बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ख़्वारी का अज़ाब तैयार कर रखा है।

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿١٠٣﴾

१०३. फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लेटे, फिर जब मुतमइन हो जाओ तो हस्बे दस्तूर नमाज़ क़ायम करो बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बाँधा हुआ फ़र्ज़ है।

وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ اِنْ تَكُوْنُوْا

१०४. और काफ़िरों की तलाश

में सुस्ती न करो अगर तुम्हे दुःख पहुँचता है तो उन्हे भी दुःख पहुँचता है जैसा तुम्हें पहुँचता है और तुम अल्लाह से वो उम्मीद रखते हो जो वो नही रखते और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है।

रूकूअ १६

१०५. ऐ महबूब बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी कि तुम लोगों मे फ़ैसला करो जिस तरह तुम्हें अल्लाह दिखाए और दग़ा वालों की तरफ़ से न झगड़ो।

१०६. और अल्लाह से मुआफ़ी चाहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

१०७. और उनकी तरफ़ से न झगड़ो जो अपनी जानों को खयानत मे डालते हैं। बेशक अल्लाह नहीं चाहता किसी बड़े दग़ाबाज़ गुनाहगार को।

१०८. आदमियों से छुपते हैं और अल्लाह से नहीं छुपते और अल्लाह उनके पास है जब दिल में वो बात तजवीज़ करते हैं जो अल्लाह को नापसन्द है और अल्लाह उनके कामों को घेरे हुए हैं।

१०९. सुनते हो ये जो तुम हो दुनिया की जिंदगी में तो उनकी तरफ़ से झगड़े तो उनकी तरफ़ से कौन झगड़ेगा अल्लाह से क़यामत के दिन या कौन उनका वकील होगा।

११०. और जो कोई बुराई या

تَأْلَمُوْنَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُوْنَ كَمَا تَأْلَمُوْنَ
وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٠٤﴾ ع
إِنَّآ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ أَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ
وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿١٠٥﴾
وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٦﴾
وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ
أَنْفُسَهُمْ ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ
خَوَّانًا أَثِيْمًا ﴿١٠٧﴾
يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ
مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُوْنَ
مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿١٠٨﴾
هٰٓأَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ أَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ
عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿١٠٩﴾

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ
ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿١١٠﴾

अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पायेगा।

وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ
عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا
حَكِيْمًا ﴿١١١﴾

१११. और जो गुनाह कमाए तो उसकी कमाई उसी की जान पर पड़े और अल्लाह इ़ल्म व ह़िकमत वाला है।

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً اَوْ اِثْمًا
ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓئًا فَقَدِ احْتَمَلَ
بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾ ع

११२. और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए फिर उसे किसी बे गुनाह पर थोप दे उसने ज़रूर बोहतान और खुला गुनाह उठाया।

रुकूअ़ १७

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ
لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ
وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا
يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَیْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ
عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ
مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ
اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾

११३. और ऐ महबूब अगर अल्लाह का फ़ज़्ल-ो रहमत तुम पर न होता तो उनमें के कुछ लोग ये चाहते कि तुम्हें धोका दे दें और वो अपने ही आप को बहका रहे हैं और तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिकमत उतारी और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और अल्लाह का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है।

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا
مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ
اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ

११४. उनके अक्सर मश्वरों में कुछ भलाई नहीं मगर जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुलह करनेका और जो अल्लाह की

ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ
نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾

रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अनक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ
سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَ
نُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ۭ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾ ع

११५. और जो रसूल का खिलाफ़ करे बाद इसके कि हक़ रास्ता उसपर खुल चुका और मुसलमानों की राह से जुदा राह चले, हम उसे उसके हाल पर छोड देंगे और उसे दोज़ख में दाखिल करेंगे और क्या ही बुरी जगह पलटने की।

रुकूअ १८

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ
يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۭ
وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ
ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾

११६. अल्लाह इसे नहीं बख्शाता कि उसका कोई शरीक ठहराया जाए और उससे नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है और जो अल्लाह का शरीक ठहराए वो दूर की गुमराही में पड़ा।

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا ۚ وَ
اِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لا

११७. ये शिर्क वाले अल्लाह के सिवा नहीं पूजते मगर कुछ औरतों को और नहीं पूजते मगर सरकश शैतान को।

لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ
عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾ لا

११८. जिस पर अल्लाह ने लअनत की और बोला क़सम है मैं ज़रूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहराया हुआ हिस्सा लूँगा।

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ
فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّتَّخِذِ
الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ
خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾ ط

११९. क़सम है मैं ज़रूर बहका दूँगा और ज़रूर उन्हें आरज़ूयें दिलाउँगा और ज़रूर उन्हें कहूँगा कि वो चौपायो के कान चीरेंगे और ज़रूर उन्हें कहूँगा कि वो अल्लााह की पैदा की हुई चीज़ें बदल देंगे और जो अल्लाह को छोड़कर शैतान को दोस्त बनाये वो सरीह टोटे में पड़ा।

१२०. शैतान उन्हें वअ़दे देता है और आरज़ूयें दिलाता है और शैतान उन्हें वअ़दे नहीं देता मगर फ़रेब के।	يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾
१२१. उनका ठिकाना दोज़ख़ है उससे बचने की जगह न पायेंगे।	اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾
१२२. और जो ईमान लाए और अच्छे काम किए कुछ देर जाती है कि हम उन्हें बाग़ों में ले जायेंगे जिनके नीचे नहरें बहें, हमेशा हमेशा उनमें रहें अल्लाह का सच्चा वअ़दा और अल्लाह से ज़्यादा किस की बात सच्ची।	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۖ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۖ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾
१२३. काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है और न किताब वालों की हवस पर, जो बुराई करेगा उसका बदला पायेगा और अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पायेगा न मददगार।	لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ۖ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾
१२४. और जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औरत और हो मुसलमान तो वो जन्नत में दाख़िल किए जायेंगे और उन्हें तिल भर नुक़्सान न दिया जायेगा।	وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾
१२५. और इससे बेहतर किस का दीन, जिसने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और वो नेकी वाला है और इब्राहीम के दीन पर जो हर बातिल से जुदा था और अल्लाह	وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَاتَّخَذَ

ने इब्राहीम को अपना गहरा दोस्त बनाया।

اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾

१२६. और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन मे और हर चीज़ पर अल्लाह का काबू है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾

रुकूअ १९

१२७. और तुमसे औरतों के बारे मे फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमादो कि अल्लाह तुम्हें उनका फ़तवा देता है और वो जो तुम पर कुरआन में पढ़ा जाता है उन यतीम लड़कियों के बारे में कि तुम उन्हें नहीं देते जो उनका मुक़र्रर है और उन्हें निकाह में भी लाने से मुँह फेरते हो और कमज़ोर बच्चों के बारे में और ये कि यतीमों के हक़ में इन्साफ़ पर क़ायम रहो और तुम जो भलाई करो तो अल्लाह को उसकी खबर है।

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ۗ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾

१२८. और अगर कोई औरत अपने शौहर की ज़्यादती या बे रग़बती का अंदेशा करे तो उनपर गुनाह नही कि आपस में सुलह़ करलें और सुलह़ खूब है और दिल लालच के फंदे में है और अगर तुम नेकी और परहेज़गारी करो तो अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है।

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۗ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۗ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ۗ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٢٨﴾

१२९. और तुमसे हरगिज़ न हो सकेगा कि औरतों को बराबर रखो और चाहे कितनी ही हिर्स करो तो ये तो न हो कि एक तरफ़ पूरा झुक

وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا

जाओ कि दूसरी को अधर मे लटकती छोड़ दो और अगर तुम नेकी और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

१३०. और अगर वो दोनो जुदा हो जाएँ तो अल्लाह अपनी कशाइश से तुम मे हर एक को दूसरे से बे नियाज़ कर देगा और अल्लाह कशाइश वाला हिकमत वाला है।

१३१. और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानो मे है और जो कुछ ज़मीन मे और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हमने उनसे जो तुमसे पहले किताब दिए गए और तुमको कि अल्लाह से डरते रहो और अगर कुफ़्र करो तो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और अल्लाह बे नियाज़ है सब ख़ूबियो सराहा।

१३२. और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीनों में और अल्लाह काफ़ी है कारसाज़।

१३३. ऐ लोगो वो चाहे तो तुम्हे ले जाए और औरों को ले आए और अल्लाह को इसकी कुदरत है।

१३४. जो दुनिया का इनआम चाहे तो अल्लाह ही के पास दुनिया व आख़िरत दोनो का इनआम है और अल्लाह ही सुनता देखता है।

كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۗ
وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٢٩﴾
وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ
سَعَتِهٖ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿١٣٠﴾
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۗ
وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَكَانَ
اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾
اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَ
يَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى
ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿١٣٣﴾
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا
فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ
وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾ ع

रुकूअ २०

१३५. ऐ ईमान वालो इन्साफ़ पर ख़ूब क़ायम हो जाओ अल्लाह के लिये गवाही देते चाहे उसमें तुम्हारा अपना नुक़सान हो या माँ, बाप का या रिश्तेदारों का जिसपर गवाही दो वो ग़नी हो या फ़क़ीर हो बहरहाल अल्लाह को इसका सबसे ज्यादा इख़्तियार है तो ख़्वाहिश के पीछे न जाओ कि हक़ से अलग पड़ो और अगर तुम हेरफेर करो या मुँह फेरो तो अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ
بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى
اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ
اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ
اَوْلٰى بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى
اَنْ تَعْدِلُوْا وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾

१३६. ऐ ईमानवालो ईमान रखो अल्लाह और अल्लाह के रसूल पर, और उस किताब पर जो अपने इन रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो पहले उतारी और जो न माने अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और किताबों और रसूलों और क़यामत को तो वो ज़रूर दूर की गुमराही में पड़ा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ
قَبْلُ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا ﴿١٣٦﴾

१३७. बेशक वो लोग जो ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर ईमान लाए, फिर काफ़िर हुए, फिर और कुफ़्र में बढ़े। अल्लाह हरगिज़ न उन्हें बख़्शे न उन्हें राह दिखाये।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ
اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا
لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا
لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿١٣٧﴾

१३८. ख़ुशख़बरी दो मुनाफ़िक़ों को, कि उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٣٨﴾

१३९. वो जो मुसलमानों को

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ

مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ أَيَبْتَغُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ١٣٩

छोडकर काफ़िरों को दोस्त बनाते है क्या उनके पास इज़्ज़त ढूँडते है तो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह के लिए है।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مِثْلُهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ١٤٠

१४०. और बेशक अल्लाह तुम पर किताब में उतार चुका कि जब तुम अल्लाह की आयतों को सुनो कि उनका इन्कार किया जाता है, और उनकी हँसी बनाई जाती है तो उन लोगों के साथ न बैठो जबतक वो और बात में मशगूल न हों वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को सबको जहन्नम में इकट्ठा करेगा।

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ١٤١ ع

१४१. वो जो तुम्हारी हालत तका करते हैं तो अगर अल्लाह की तरफ़ से तुमको फ़तह मिले कहें क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों का हिस्सा हो तो उनसे कहें क्या हमें तुम पर क़ाबू न था? और हमने तुम्हें मुसलमानों से बचाया तो अल्लाह तुम सब में क़यामत के दिन फ़ैसला कर देगा और अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर कोई राह न देगा।

रुकूअ २१

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ

१४२. बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने

خَادِعُهُمْ ۚ وَإِذَا قَامُوٓا إِلَى الصَّلٰوةِ
قَامُوا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ
وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٤٢﴾

गुमान में आल्लाह को फ़रेब दिया चाहते है और वही उन्हें ग़ाफ़िल करके मारेगा और जब नमाज़ को खड़े हों तो हारे जी से लोगों को दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नही करते मगर थोड़ा।

مُذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ إِلٰى
هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۗ وَمَنْ
يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ
سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾

१४३. बीच में डगमगा रहे हैं न इधर के न उधर के और जिसे अल्लाह गुमराह करे तो उसके लिए कोई राह न पाएगा।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا
الْكٰفِرِيْنَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
أَتُرِيْدُوْنَ أَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ
سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾

१४४. ऐ ईमान वालो काफ़िरों को दोस्त न बनाओ मुसलमानों के सिवा क्या ये चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह के लिए सरीह हुज्जत करलो।

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ
مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾

१४५. बेशक़ मुनाफ़िक़ दोज़ख के सबसे निचे तबक़े में है और तू हरगिज़ उनका कोई मददगार न पाएगा।

إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَأَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا
بِاللّٰهِ وَأَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَأُولٰٓئِكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ
الْمُؤْمِنِيْنَ أَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾

१४६. मगर वो जिन्होंने तौबा की और सवँरे और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थामी और अपना दीन खालिस अल्लाह के लिए कर लिया तो ये मुसलमानों के साथ हैं और अनक़रीब अल्लाह मुसलमानों को बड़ा सवाब देगा।

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ
وَاٰمَنْتُمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

१४७. और अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम हक़ मानो और ईमान लाओ और अल्लाह है सिला देने वाला जानने वाला।

१४८. अल्लाह पसन्द नहीं करता बुरी बात का एअ्लान करना मगर मज़्लूम से और अल्लाह सुनता जानता है।

१४९. अगर तुम कोई भलाई एअलानिया करो या छुप कर या किसी की बुराई से दरगुज़रो तो बेशक अल्लाह मुआफ़ करनेवाला कुदरत वाला है।

१५०. वो जो अल्लाह और उसके रसूलों को नहीं मानते और चाहते हैं कि अल्लाह से उसके रसूलों को जुदा कर दें और कहते हैं हम किसी पर ईमान लाये और किसी के मुन्किर हुए और चाहते हैं कि ईमान व कुफ़्र के बीच में कोई राह निकाल लें।

१५१. यही हैं ठीक ठीक काफ़िर और हमने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।

१५२. और वो जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी पर ईमान में फ़र्क़ न किया उन्हें अनक़रीब अल्लाह उनके सवाब देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

रुकूअ २२

१५३. ऐ महबूब अहले किताब तुमसे सवाल करते हैं कि उनपर आसमान

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ
الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ
تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ
وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ
وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ
وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۙ ﴿١٥٠﴾

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ
يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ
سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ
عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ

سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِنْ ذَٰلِكَ فَقَالُوا
أَرِنَا اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ
بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ
بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا
عَنْ ذَٰلِكَ ۚ وَآتَيْنَا مُوسَىٰ سُلْطَانًا
مُبِينًا ﴿١٥٣﴾

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ بِمِيثَاقِهِمْ
وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَ
قُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَ
أَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿١٥٤﴾

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ
بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ
حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۚ بَلْ
طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ
إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥٥﴾

وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ
بُهْتَانًا عَظِيمًا ﴿١٥٦﴾

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى
ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ

से एक किताब उतार दो तो वो तो मूसा से उससे भी बड़ा सवाल कर चुके कि बोले हमें अल्लाह को एअ़लानिया दिखा दो तो उन्हें कड़क ने आ लिया उनके गुनाहों पर फिर बछड़ा ले बैठे बाद इसके कि रौशन आयतें उनके पास आ चुकीं तो हमने ये मुआफ़ फ़रमा दिया और हमने मूसा को रौशन ग़लबा दिया।

१५४. फिर हमने उनपर तूर को ऊँचा किया उनसे अहद लेने को और उनसे फ़रमाया कि दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो और उनसे फ़रमाया कि हफ़्ता में हद से न बढ़ो और हमने उनसे गाढ़ा अहद लिया।

१५५. तो उनकी कैसी बद-अहदियों के सबब हमने उनपर लअ़नत की और इसलिये कि वो आयाते इलाही के मुन्किर हुए और अंबिया को नाहक़ शहीद करते और उनके इस कहने पर कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ हैं बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र के सबब उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े।

१५६. और इस लिये कि उन्होंने कुफ़्र किया और मरयम पर बड़ा बोहतान उठाया।

१५७. और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरयम अल्लाह के

وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِن شُبِّهَ لَهُمْ ۚ
وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي
شَكٍّ مِّنْهُ ۚ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ
إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ
يَقِينًا ﴿١٥٧﴾

بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٥٨﴾

وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا
لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ
الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ﴿١٥٩﴾

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا
عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَ
بِصَدِّهِمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ﴿١٦٠﴾

وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ
وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ
وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ﴿١٦١﴾

لَّٰكِنِ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ
وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ

रसूल को शहीद किया और है ये कि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी बल्कि उनके लिये उनकी शबीह का एक बना दिया गया और वो जो उसके बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं ज़रूर उसकी तरफ़ से शुबह में पड़े हुए है उन्हें उसकी कुछ भी ख़बर नहीं मगर यही गुमान की पैरवी और बेशक उन्होंने उसको क़त्ल नहीं किया।

१५८. बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

१५९. कोई किताबी ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उसपर ईमान न लाये और क़यामत के दिन वो उनपर गवाह होगा।

१६०. तो यहूदियों के बड़े ज़ुल्म के सबब हमने वो बअज़ सुथरी चीज़ें कि उनके लिये हलाल थीं उनपर हराम फ़रमा दीं और इसलिये कि उन्होंने बहुतों को अल्लाह की राह से रोका।

१६१. और इसलिये कि वो सूद लेते हालांकि वो इससे मनअ़ किये गये थे और लोगों का माल नाहक़ खा जाते और उनमें जो काफ़िर हुए हमने उनके लिये दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

१६२. हाँ जो उनमें इल्म में पक्के और ईमान वाले हैं वो ईमान लाते है

اِلَيۡكَ وَمَاۤ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِكَ
وَالۡمُقِيۡمِيۡنَ الصَّلٰوةَ وَالۡمُؤۡتُوۡنَ
الزَّكٰوةَ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ
الۡاٰخِرِ ؕ اُولٰٓـئِكَ سَنُؤۡتِيۡهِمۡ اَجۡرًا
عَظِيۡمًا ﴿۱۶۲﴾

उसपर जो ऐ महबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुमसे पहले उतरा और नमाज़ क़ायम रखने वाले और ज़कात देने वाले और अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अनक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।

रुकूअ २३

اِنَّاۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ كَمَاۤ اَوۡحَيۡنَاۤ
اِلٰى نُوۡحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ‌ ۚ
وَاَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰۤى اِبۡرٰهِيۡمَ وَاِسۡمٰعِيۡلَ
وَاِسۡحٰقَ وَيَعۡقُوۡبَ وَالۡاَسۡبَاطِ وَ
عِيۡسٰى وَاَيُّوۡبَ وَيُوۡنُسَ وَهٰرُوۡنَ
وَسُلَيۡمٰنَ‌ ۚ وَاٰتَيۡنَا دَاوٗدَ زَبُوۡرًا ﴿۱۶۳﴾

१६३. बेशक ऐ महबूब हमने तुम्हारी तरफ़ 'वही' भेजी जैसे 'वही' नूह और उसके बाद पैग़म्बरों को भेजी और हमने इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और यअ़कूब और उनके बेटों और ईसा और अय्यूब और युनुस और हारून और सुलेमान को 'वही' की और हमने दाऊद को ज़बूर अता फ़रमाई।

وَرُسُلًا قَدۡ قَصَصۡنٰهُمۡ عَلَيۡكَ
مِنۡ قَبۡلُ وَرُسُلًا لَّمۡ نَقۡصُصۡهُمۡ
عَلَيۡكَ‌ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوۡسٰى
تَكۡلِيۡمًا ﴿۱۶۴﴾

१६४. और रसूलों को जिनका ज़िक्र आगे हम तुमसे फ़रमा चुके और उन रसूलों को जिनका ज़िक्र तुमसे न फ़रमाया और अल्लाह ने मूसा से हक़ीक़तन कलाम फ़रमाया।

رُسُلًا مُّبَشِّرِيۡنَ وَمُنۡذِرِيۡنَ لِئَلَّا
يَكُوۡنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ ۢ
بَعۡدَ الرُّسُلِ‌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيۡزًا
حَكِيۡمًا ﴿۱۶۵﴾

१६५. रसूल खुशख़बरी देते और डर सुनाते कि रसूलों के बाद अल्लाह के यहाँ लोगों को कोई उज़्र न रहे और

अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ
اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ۗ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿١٦٦﴾

१६६. लेकिन ऐ महबूब अल्लाह उसका गवाह है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा वो उसने अपने इल्म से उतारा है और फ़रिश्ते गवाह हैं और अल्लाह की गवाही काफ़ी है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًاۢ
بَعِيْدًا ﴿١٦٧﴾

१६७. वो जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका बेशक वो दूर की गुमराही में पड़े।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ
اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ
طَرِيْقًا ﴿١٦٨﴾

१६८. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और हद से बढ़े अल्लाह हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा और न उन्हें कोई राह दिखाये।

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾

१६९. मगर जहन्नम का रास्ता कि उसमें हमेशा हमेशा रहेंगे और ये अल्लाह को आसान है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ
بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ
وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا
حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾

१७०. ऐ लोगो तुम्हारे पास ये रसूल हक़ के साथ तुम्हारे रब की तरफ़ से तशरीफ़ लाये हैं तो ईमान लाओ अपने भले को और अगर तुम कुफ़्र करो तो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन मे है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ
وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۚ

१७१. ऐ किताब वालो अपने दीन में ज़्यादती न करो और अल्लाह पर न कहो मगर सच मसीह ईसा मरयम का बेटा अल्लाह का रसूल ही है और उसका एक कल्मा कि मरयम की तरफ़ भेजा और उसके यहाँ की एक रूह तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीन न कहो बाज़ रहो अपने भले को अल्लाह तो एक ही खुदा है पाकी उसे इससे कि उसके कोई बच्चा हो, उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और अल्लाह काफ़ी कारसाज़।

रुकूअ २४

१७२. मसीह अल्लाह का बन्दा बनने से कुछ नफ़रत नहीं करता और न मुक़र्रब फ़रिश्ते और जो अल्लाह की बन्दगी से नफ़रत और तकब्बुर करे तो कोई दम जाता है कि वो उन सब को अपनी तरफ़ हांकेगा।

१७३. तो वो जो ईमान लाये और अच्छे काम किये उनकी मज़दूरी उन्हें भरपूर देकर और अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज़्यादा देगा और वो जिन्होंने नफ़रत और तकब्बुर किया था उन्हें दर्दनाक सज़ा देगा और अल्लाह के सिवा न अपना कोई हिमायती पायेंगे न मददगार।

१७४. ऐ लोगो बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से वाज़ेह दलील आई और हमने तुम्हारी तरफ़ रौशन

إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا
إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ فَآمِنُوا
بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ
انتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَٰهٌ
وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ أَن يَكُونَ لَهُ
وَلَدٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ١٧١

لَّن يَسْتَنكِفَ الْمَسِيحُ أَن يَكُونَ
عَبْدًا لِّلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ
وَمَن يَسْتَنكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَ
يَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ١٧٢

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُم
مِّن فَضْلِهِ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا
وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ١٧٣
وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ
وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ١٧٤

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم بُرْهَانٌ

नूर उतारा।

१७५. तो वो जो अल्लाह पर ईमान लाये और उस की रस्सी मज़बूत थामी तो अनक़रीब अल्लाह उन्हें अपनी रहमत और फ़ज़्ल में दाखिल करेगा और उन्हें अपनी तरफ़ सीधी राह दिखायेगा।

१७६. ऐ महबूब तुम से फ़तवा पूछते हैं, तुम फ़रमादो कि अल्लाह तुम्हें कलाला में फ़तवा देता है अगर किसी मर्द का इन्तेक़ाल हो जो बे औलाद है उसकी एक बहेन हो तो तरका में से उसकी बहेन का आधा है और मर्द अपनी बहेन का वारिस होगा बहेन के औलाद ना हो फिर अगर दो बहनें हों तरका में उनका दो तिहाई और अगर भाई बहेन हों मर्द भी और औरतें भी तो मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर अल्लाह तुम्हारे लिये साफ़ बयान फ़रमाता है कि कहीं बहक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ जानता है।

सूरए माइदा

मदनी है और इसमें एक सौ बीस आयात और सोलह रूकूअ हैं।

अल्लाह के नामसे शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला।

مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا
مُّبِينًا ﴿١٧٥﴾
فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا
بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ
وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا
مُّسْتَقِيمًا ﴿١٧٦﴾
يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي
الْكَلَالَةِ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ
وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا
تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُن لَّهَا
وَلَدٌ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا
الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ وَإِن كَانُوا إِخْوَةً
رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنثَيَيْنِ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَن
تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٧﴾

سورة المائدة مدنية وهي مائة وعشرون آية وستة عشر ركوعا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ
أُحِلَّتْ لَكُم بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا

रुकूअ १

१. ऐ ईमान वालो अपने क़ौल पूरे करो तुम्हारे लिये हलाल हुए बेज़बान मवेशी मगर वो जो आगे सुनाया जायेगा तुमको लेकिन शिकार हलाल न समझो जब तुम एहराम में हो बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है जो चाहे।

२. ऐ ईमानवालो हलाल न ठहरालो अल्लाह के निशान और न अदब वाले महीने और न हरम को भेजी हुई कुरबानियाँ और न जिनके गले में अलामतें आवेज़ां और न उनका माल-ो आबरू जो इज़्ज़तवाले घर का क़स्द करके आयें, अपने रब का फ़ज़्ल और उसकी खुशी चाहते और जब एहराम से निकलो तो शिकार कर सकते हो! और तुम्हें किसी क़ौम की अदावत कि उन्होंने तुमको मस्जिदे हराम से रोका था ज़्यादती करने पर न उभारे और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़्यादती पर बाहम मदद न दो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

३. तुम पर हराम है मुर्दार और खून और सूव्वर का गोश्त और वो जिसके ज़िबह में गैरे खुदा का नाम पुकारा गया और जो गला घोटने से मरे और बेधार की चीज़ से मारा हुआ और

مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ
وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا
يُرِيدُ ①

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تُحِلُّوا
شَعَٰٓئِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ
وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَٰٓئِدَ وَلَآ
ءَآمِّينَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ فَضْلًا
مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَٰنًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ
فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَـَٔانُ
قَوْمٍ أَن صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ أَن تَعْتَدُوا ۘ وَتَعَاوَنُوا عَلَى
الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى
الْإِثْمِ وَالْعُدْوَٰنِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ②

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ
وَلَحْمُ الْخِنزِيرِ وَمَآ أُهِلَّ لِغَيْرِ
اللَّهِ بِهِۦ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ
وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَآ أَكَلَ
السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ

عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا
بِالْاَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ اَلْيَوْمَ
يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ اَلْيَوْمَ
اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ
نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ
دِيْنًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ
غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ قُلْ
اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ
مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ
مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ فَكُلُوْا مِمَّآ
اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ
اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ
سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٤

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَطَعَامُ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ
وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ وَالْمُحْصَنٰتُ

जो गिरकर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया मगर जिन्हें तुम ज़िबह करलो और जो किसी थान पर ज़िबह किया गया और पाँसे डालकर बाँटा करना ये गुनाह का काम है आज तुम्हारे दीन की तरफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई तो उनसे न डरो और मुझ से डरो आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुमपर अपनी नेअमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया तो जो भूक प्यास की शिद्दत में नाचार हो यूँकि गुनाह की तरफ़ न झुके तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

४. ऐ महबूब तुमसे पूछते हैं कि उनके लिये क्या हलाल हुआ तुम फ़रमादो कि हलाल की गई तुम्हारे लिये पाक चीज़ें और जो शिकारी जानवर तुमने सुधा लिये उन्हें शिकार पर दौड़ाते जो इल्म तुम्हें ख़ुदा ने दिया उसमें उन्हें सिखाते तो खाओ उसमें से जो वो मार कर तुम्हारे लिये रहने दें और उस पर अल्लाह का नाम लो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह को हिसाब करते देर नहीं लगती।

५. आज तुम्हारे लिये पाक चीज़ें

مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ
اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ
وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ
عَمَلُهٗ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ
ع الْخٰسِرِيْنَ ۝٥

हलाल हुई और किताबियों का खाना तुम्हारे लिये हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिये हलाल है और पारसा औरतें मुसलमान और पारसा औरतें उनमें से जिनको तुमसे पहले किताब मिली जब तुम उन्हें उनके महर दो क़ैद में लाते हुए, न मस्ती निकालते न आशना बनाते और जो मुसलमान से काफ़िर हो उसका किया धरा सब अकारत गया और वो आख़िरत में ज़ियाँकार है।

रुकूअ २

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ
اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ
وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا
بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ
وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا وَ
اِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ
اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ
الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ
تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا
فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ
مِّنْهُ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ
عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ
لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ

६. ऐ ईमानवालो जब नमाज़ को खड़े होना चाहो तो अपना मुँह धोओ और कोहनियों तक हाथ और सरों का मसह करो और गट्टों तक पाँव धोओ और अगर तुम्हें नहाने की हाजत हो तो खूब सुथरे हो लो और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई कज़ाए-हाजत से आया या तुमने औरतों से सोहबत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुँह और हाथों का उस से मसह करो! अल्लाह नहीं

चाहता कि तुमपर कुछ तंगी रखे हाँ ये चाहता है कि तुम्हें ख़ूब सुथरा करदे और अपनी नेअमत तुम पर पूरी करदे कि कहीं तुम एहसान मानो।

७. और याद करो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर और वो अ़हद जो उसने तुम से लिया जब कि तुमने कहा, हमने सुना और माना और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह दिलों की बात जानता है।

८. ऐ ईमानवालो अल्लाह के हुक्म पर ख़ूब क़ायम होजाओ। इन्साफ़ के साथ गवाही देते और तुमको किसी क़ौम की अ़दावत इसपर न उभारे कि इन्साफ़ न करो। इन्साफ़ करो वो परहेज़गारी के ज़्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

९. ईमानवाले नेकोकारों से अल्लाह का वअ़दा है कि उनके लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।

१०. और वो जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुठलाईं वही दोज़ख़ वाले है।

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝٦
وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُمْ
بِهٖٓ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝٧
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ
لِلّٰهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا
يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰٓ أَلَّا
تَعْدِلُوا اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ
لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ
خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝٨
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ
عَظِيمٌ ۝٩
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيٰتِنَآ
أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيمِ ۝١٠
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَنْ

११. ऐ ईमानवालो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब एक क़ौम ने चाहा कि तुम पर दस्त दराज़ी करें तो उसने उनके हाथ तुम पर से रोक दिये और अल्लाह से डरो और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।

रुकूअ ३

१२. और बेशक अल्लाह ने बनी इसराईल से अहेद लिया और हमने उन में बारह सरदार क़ायम किये और अल्लाह ने फ़रमाया बेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ ज़रूर, अगर तुम नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उनकी तअज़ीम करो और अल्लाह को क़र्ज़े-हसन दो बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूँगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊँगा जिनके नीचे नहरें रवाँ, फिर उसके बाद जो तुममें से कुफ़्र करे वो ज़रूर सीधी राह से बहका।

१३. तो उनकी कैसी बद-अहदियों पर हमने उन्हें लअनत की और उनके दिल सख़्त कर दिये। अल्लाह की बातों को उनके ठिकानों से बदलते हैं और भुला बैठे, बड़ा हिस्सा उन नसीहतों

يَبْسُطُوٓا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ
أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَعَلَى
اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي
إِسْرَآءِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ
عَشَرَ نَقِيبًا ۖ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي
مَعَكُمْ ۖ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَوٰةَ
وَآتَيْتُمُ الزَّكَوٰةَ وَآمَنتُم
بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ
اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّأُكَفِّرَنَّ عَنكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ فَمَن
كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ مِنكُمْ فَقَدْ ضَلَّ
سَوَآءَ السَّبِيلِ ﴿١٢﴾

فَبِمَا نَقْضِهِم مِّيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ
وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً ۖ يُحَرِّفُونَ
الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ ۙ وَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا
ذُكِّرُوا بِهِ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَىٰ
خَائِنَةٍ مِّنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ

का जो उन्हें दी गई और तुम हमेशा उनकी एक न एक दग़ा पर मुत्तलअ होते रहोगे सिवा थोड़ों के, तो उन्हें मुआफ़ करदो और उन से दरगुज़रो बेशक एहसान वाले अल्लाह को महबूब है।

१४. और वो जिन्होंने दअवा किया कि हम नसारा हैं हमने उनसे अहद लिया तो वो भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हे दी गई तो हमने उनके आपस में क़यामत के दिन तक बैर और बुग्ज़ डाल दिया और अनक़रीब अल्लाह उन्हें बता देगा जो कुछ करते थे।

१५. ऐ किताब वालो बेशक तुम्हारे पास हमारे ये रसूल तशरीफ़ लाये कि तुमपर ज़ाहिर फ़रमाते है बहुत सी वो चीज़ें जो तुमने किताब मे छुपा डाली थी और बहुत सी मुआफ़ फ़रमाते हैं। बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया और रौशन किताब।

१६. अल्लाह उससे हिदायत देता है उसे, जो अल्लाह की मरज़ी पर चला, सलामती के रास्ते और उन्हें अंधेरियों से रौशनी की तरफ़ ले जाता है अपने हुक्म से और उन्हे सीधी राह

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۚ إِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣﴾
وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ
أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا
مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ ۚ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ
بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾
يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ
تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ
كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ
وَكِتَابٌ مُبِينٌ ﴿١٥﴾
يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ
سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُمْ مِنَ
الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ
إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ
الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ

مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ
الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ
فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ
يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ
اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ
يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ
بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؗ
وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ
رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ
مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا
مِنْ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ
بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
ع شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٩﴾

दिखाता है।

१७. बेशक काफ़िर हुए वो जिन्होंने कहा कि अल्लाह मसीह बिन मरयम ही है तुम फ़रमादो फिर अल्लाह का कोई क्या कर सकता है। अगर वो चाहे कि हलाक कर दे मसीह बिन मरयम और उसकी माँ और तमाम ज़मीन वालों को और अल्लाह ही के लिये है सल्तनत आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की जो चाहे पैदा करता है और अल्लाह सबकुछ कर सकता है।

१८. और यहूदी और नसरानी बोले कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं। तुम फ़रमा दो फिर तुम्हें क्यों तुम्हारे गुनाहों पर अज़ाब फ़रमाता है बल्कि तुम आदमी हो उसकी मख़लूक़ात से जिसे चाहे बख़्शता है और जिसे चाहे सज़ा देता है और अल्लाह ही के लिए है सल्तनत आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की और उसी की तरफ़ फिरना है।

१९. ऐ किताब वालो बेशक तुम्हारे पास हमारे ये रसूल तशरीफ़ लाये कि तुमपर हमारे अहकाम ज़ाहिर फ़रमाते है बाद उसके कि रसूलों को आना मुद्दतों बन्द रहा था कि कभी कहो कि

हमारे पास कोई खुशी और डर सुनाने वाला न आया तो ये खुशी और डर सुनाने वाले तुम्हारे पास तशरीफ़ लाये हैं और अल्लाह को सब क़ुदरत है।

रुकूअ ४

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَٰقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا وَآتَاكُمْ مَا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِنَ الْعَٰلَمِينَ ﴿٢٠﴾

२०. और जब मूसा ने कहा अपनी क़ौम से ऐ मेरी क़ौम अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो कि तुममें से पैग़म्बर किए और तुम्हे बादशाह किया और तुम्हें वो दिया जो आज सारे जहान में किसी को न दिया।

يَٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَٰسِرِينَ ﴿٢١﴾

२१. ऐ क़ौम उस पाक ज़मीन में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखी है और पीछे न पलटो कि नुक़सान पर पलटो गे।

قَالُوا يَٰمُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دَٰخِلُونَ ﴿٢٢﴾

२२. बोले ऐ मूसा उसमें तो बड़े ज़बरदस्त लोग हैं और हम उसमें हरगिज़ दाख़िल न होंगे जबतक वो वहाँ से न निकल जाये। हाँ वो वहाँ से निकल जाएँ तो हम वहाँ जायें।

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غَٰلِبُونَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

२३. दो मर्द कि अल्लाह से डरने वालों में से थे अल्लाह ने उन्हें नवाज़ा बोले कि ज़बरदस्ती दरवाज़े में उनपर दाख़िल हो अगर तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गए तो तुम्हारा ही ग़लबा है और अल्लाह ही पर भरोसा

قَالُوا يَٰمُوسَىٰ إِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ

करो अगर तुमहे ईमान है।

२४. बोले ऐ मूसा हम तो वहाँ कभी न जाएंगे जबतक वो वहाँ है तो आप जाइये और आपका रब तुम दोनों लड़ो, हम यहाँ बैठे हैं।

२५. मूसा ने अर्ज़ की कि रब मेरे मुझे इख़्तियार नहीं मगर अपना और अपने भाई का तो तू हमको इन बे हुक्मों से जुदा रख।

२६. फ़रमाया तो वो ज़मीन उनपर हराम है चालीस बरस तक भटकते फिरे ज़मीन में तो तुम उन बेहुकमों का अफ़सोस न खाओ।

रुकूअ ५

२७. और उन्हें पढ़कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर, जब दोनों ने एक एक नियाज़ पेश की तो एक की क़ुबूल हुई और दूसरे की न क़बूल हुई बोला क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा कहा अल्लाह उसी से क़ुबूल करता है जिसे डर है।

२८. बेशक अगर तू अपना हाथ मुझपर बढ़ायेगा कि मुझे क़त्ल करे तो मै अपना हाथ तुझपर न बढ़ाऊँगा कि तुझे क़त्ल करूँ मैं अल्लाह से डरता हूँ जो मालिक सारे जहान का।

أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هٰهُنَا
قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّيْ لَآ أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِيْ
وَأَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِيْنَ
سَنَةً يَتِيْهُوْنَ فِي الْأَرْضِ فَلَا
تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ
إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا
وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ قَالَ
لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ
مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾

لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَا
أَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ
إِنِّيْ أَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾

إِنِّيْ أُرِيْدُ أَنْ تَبُوْٓأَ بِإِثْمِيْ وَإِثْمِكَ
فَتَكُوْنَ مِنْ أَصْحٰبِ النَّارِ وَذٰلِكَ
جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ
فَأَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٣٠﴾
فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ
لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ
قَالَ يٰوَيْلَتٰى أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ
مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ
أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِينَ ﴿٣١﴾
مِنْ أَجْلِ ذٰلِكَ كَتَبْنَا عَلٰى
بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ
نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي
الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا
وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ
جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا
بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا
مِنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْأَرْضِ
لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾
إِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللّٰهَ
وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ
فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ

२९. मैं तो ये चाहता हूँ कि मेरा और तेरा गुनाह दोनों तेरे ही पल्ले पड़े तो तु दोज़ख़ी होजाये और बे इन्साफ़ों की यही सज़ा है।

३०. तो उसके नफ़्स ने उसे भाई के क़त्ल का चाव दिलाया तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नुक़्सान में।

३१. तो अल्लाह ने एक कौवा भेजा ज़मीन कुरेदता कि उसे दिखाये क्यों कर अपने भाई की लाश छुपाये बोला हाये ख़राबी मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता, तो पछताता रह गया।

३२. इस सबब से हमने बनी इसराईल पर लिख दिया कि जिसने कोई जान क़त्ल की बग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद किये तो गोया उसने सब लोगों को क़त्ल किया और जिसने एक जान को जिला लिया उसने गोया सब लोगों को जिला लियाऔर बेशक उनके पास हमारे रसूल रौशन दलीलों के साथ आये फिर बेशक उनमें बहुत उसके बाद ज़मीन में ज़्यादती करने वाले हैं।

३३. वो कि अल्लाह और उसके

أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم مِّنْ خِلَافٍ
أَوْ يُنفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ لَهُمْ
خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن
تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا
إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي
سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم
مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ
مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ
يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾

يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ
وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٧﴾

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا

रसूल से लड़ते और मुल्क मे फ़साद करते फिरते है उनका बदला यही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जायें या सूली दिये जायें या उनके एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं। ये दुनिया में उनकी रूसवाई है और आख़िरत में उनके लिये बड़ा अज़ाब।

३४. मगर वो जिन्होंने तौबा करली इससे पहले कि तुम उनपर क़ाबू पाओ तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

रूकूअ ६

३५. ऐ ईमानवालो अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला ढूँढो और उसकी राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।

३६. बेशक वो जो काफ़िर हुए जो कुछ ज़मीन में है सब और उस की बराबर और अगर उनकी मिल्क हो कि उसे देकर क़यामत के अज़ाब से अपनी जान छुड़ायें तो उनसे न लिया जायेगा और उनके लिये दु:ख का अज़ाब है।

३७. दोज़ख से निकलना चाहेंगे और वो उससे न निकलेंगे और उनको

أَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا
نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾

दवामी सज़ा है।

३८. और जो मर्द या औरत चोर हो तो उनका हाथ काटो उनके किये का बदला अल्लाह की तरफ़ से सज़ा और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَ
أَصْلَحَ فَإِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾

३९. तो जो अपने ज़ुल्म के बाद तौबा करे और सँवर जाये तो अल्लाह अपनी मेहर से उस पर रूजूअ फ़रमायेगा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۗ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَ
يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾

४०. क्या तुझे मअलूम नही कि अल्लाह के लिये है आसमानो और ज़मीन की बादशाही। सज़ा देता है जिसे चाहे और बख़्शता है जिसे चाहे, और अल्लाह सबकुछ कर सकता है।

يٰٓأَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ
يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ
قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ
قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ
سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ
اٰخَرِيْنَ لَمْ يَأْتُوْكَ ۖ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۖ يَقُوْلُوْنَ إِنْ
أُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَإِنْ لَّمْ
تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ۚ وَمَنْ يُّرِدِ

४१. ऐ रसूल तुम्हे ग़मगीन न करे वो जो कुफ़्र पर दौड़ते है जो कुछ वो अपने मुँह से कहते है हम ईमान लाये और उनके दिल मुसलमान नही और कुछ यहूदी झूठ खूब सुनते है और लोगो की खूब सुनते है जो तुम्हारे पास हाज़िर न हुए अल्लाह की बातो को उनके ठिकानो के बाद बदल देते

اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ
اللّٰهِ شَيْـًٔا ۭ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ
اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ۭ لَهُمْ فِي
الدُّنْيَا خِزْيٌ ښ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝41

हैं कहते हैं ये हुक्म तुम्हें मिले तो मानो और ये न मिले तो बचो और जिसे अल्लाह गुमराह करना चाहे तो हरगिज़ तू अल्लाह से उसका कुछ बना न सकेगा। वो है कि अल्लाह ने उनका दिल पाक करना न चाहा। उन्हें दुनिया में रूसवाई है और उन्हें आख़ेरत में बड़ा अज़ाब।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ۭ
فَاِنْ جَاۗءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ
اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ
فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَـيْـــًٔا ۭ وَاِنْ حَكَمْتَ
فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝42

४२. बड़े झूठ सुनने वाले बड़े हरामख़ोर तो अगर तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों उनमें फ़ैसला फ़रमाओ, या उनसे मुँह फेर लो और अगर तुम उनसे मुँह फेर लोगे तो वो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे और अगर उनमें फ़ैसला फ़रमाओ तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो बेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को पसन्द हैं।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ
التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ
يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ وَمَآ
اُولٰۗىِٕكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝43 ع

४३. और वो तुमसे क्यों कर फ़ैसला चाहेंगे हॉलाकि उनके पास तौरेत है जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है। बई-हमा उसीसे मुँह फेरते हैं और वो ईमान लाने वाले नहीं।

रुकूअ ७

اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى
وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ
الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا

४४. बेशक हमने तौरेत उतारी उसमें हिदायत और नूर है। उसके मुताबिक़ यहूद को हुक्म देते थे, हमारे

اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا
عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا
النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا
بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾

फ़रमाँबरदार नबी और आलिम और फ़क़ीह कि उनसे किताबुल्लाह की हिफ़ाज़त चाही गई थी और वो उस पर गवाह थे तो लोगों से ख़ौफ़ न करो और मुझ से डरो और मेरी आयतों के बदले ज़लील क़ीमत न लो और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे वही लोग काफ़िर हैं।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ
بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ
بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ
بِالسِّنِّ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ
تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ۚ وَ
مَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

४५. और हमने तौरेत में उनपर वाजिब किया कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और ज़ख़्मों में बदला है फिर जो दिल की ख़ुशी से बदला करा दे तो वो उसका गुनाह उतार देगा और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे तो वही लोग ज़ालिम हैं।

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ
مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ
مِنَ التَّوْرٰىةِ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ
فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ
هُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾

४६. और हम उन नबियों के पीछे उनके निशाने क़दम पर ईसा इब्ने मरयम को लाये, तस्दीक़ करता हुआ तौरेत की जो इससे पहले थी और हमने इसे इन्जील अता की जिसमें हिदायत और नूर है और तस्दीक़ फ़रमाती

وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ
الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ
لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً
وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ
اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ
فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ
اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ
تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ ۙ

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ
اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ

है तौरेत की कि इससे पहले थी और हिदायत और नसीहत परहेज़गारों को।

४७. और चाहिये कि इन्जील वाले हुक्म करें उसपर जो अल्लाह ने उसमें उतारा और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें तो वही लोग फ़ासिक़ है।

४८. और ऐ महबूब हमने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उनपर मुहाफ़िज़-ो गवाह तो उनमें फ़ैसला करो अल्लाह केउतारे से और ऐ सुननेवाले उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करना अपने पास आया हुआ हक़ छोड़कर हमने तुम सब के लिए एक एक शरीअत और रास्ता रखा और अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत कर देता मगर मंज़ूर ये है कि जो कुछ तुम्हें दिया उसमें तुम्हे आज़माये तो भलाइयों की तरफ़ सबक़त चाहो तुम सबका फिरना अल्लाह ही की तरफ़ है तो वो तुम्हें बता देगा जिस बात में तुम झगड़ते थे।

४९. और ये कि ऐ मुसलमान अल्लाह के उतारे पर हुक्म कर और

उनकी ख़्वाहिशों पर न चल और उनसे बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश न दे दें किसी हुक्म में जो तेरी तरफ़ उतरा फिर अगर वो मुँह फेरें तो जान लो कि अल्लाह उनके बअज़ गुनाहों की सज़ा उनको पँहुचाया चाहता है और बेशक बहुत आदमी बेहुक्म है।

५०. तो क्या जाहिलियत का हुक्म चाहते हैं और अल्लाह से बेहतर किस का हुक्म यक़ीन वालों के लिये।

रुकूअ ८

५१. ऐ ईमान वालो यहूद व नसारा को दोस्त न बनाओ। वो आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं और तुममें जो कोई उनसे दोस्ती रखेगा तो वो उन्हीं में से हैं बेशक अल्लाह बे-इन्साफ़ों को राह नहीं देता।

५२. अब तुम उन्हें देखोगे जिनके दिलों में आज़ार है कि यहूद व नसारा की तरफ़ दौड़ते हैं कहते हैं हम डरते हैं कि हमपर कोई गर्दिश आजाये तो नज़दीक है कि अल्लाह फ़तह लाये या अपनी तरफ़ से कोई हुक्म फिर उस पर जो अपने दिलों में छुपाया था पच्छताते रह जायें।

اللّٰهُ اِلَيْكَ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ
اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ
بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا
مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۝٤٩
اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۭ وَ
مَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ
يُّوْقِنُوْنَ ۝٥٠ ع
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا
الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَاۗءَ ۘ بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ
مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥١
فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى
اَنْ تُصِيْبَنَا دَاۗىِٕرَةٌ ۭ فَعَسَى اللّٰهُ
اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ
عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰي مَآ اَسَرُّوْا
فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ۝٥٢ ط
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۗءِ

وقف لازم
وقف منزل عند البعض
وقف غفران

५३ और ईमान वाले कहते हैं क्या यही है जिन्होंने अल्लाह की क़सम खाई थी अपने हलफ़ में पूरी कोशिश से कि वो तुम्हारे साथ हैं उनका किया धरा सब अकारत गया तो रह गये नुक़सान में।

५४. ऐ ईमानवालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अनक़रीब अल्लाह ऐसे लोग लायेगा कि वो अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त अल्लाह की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है।

५५. तुम्हारे दोस्त नहीं मगर अल्लाह और उसका रसूल और ईमानवाले कि नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए हैं।

५६. और जो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों को अपना दोस्त बनाये तो बेशक अल्लाह ही का गिरोह ग़ालिब है।

रुकूअ ९

५७. ऐ ईमान वालो जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी खेल बना लिया है वो

الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ
إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۚ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ
فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ﴿٥٣﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ
عَن دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ
يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ
يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَ
لَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ۚ ذَٰلِكَ
فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾
إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ
آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَ
يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾
وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ
آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا
الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَ
لَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

जो तुमसे पहले किताब दिए गए और काफ़िर उनमें किसी को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान रखते हो।

५८. और जब तुम नमाज़ के लिये अज़ान दो तो उसे हँसी -खेल बनाते हैं ये इसलिए कि वो निरे-बे-अक़्ल लोग हैं।

५९. तुम फ़रमाओ ऐ किताबीयो तुम्हें हमारा क्या बुरा लगा यही ना कि हम ईमान लाये अल्लाह पर और उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और उसपर जो पहले उतरा और ये कि तुम में अक्सर बे हुक्म हैं।

६०. तुम फ़रमाओ क्या मैं बतादूँ जो अल्लाह के यहाँ उससे बदतर दर्जे में हैं वो जिन पर अल्लाह ने लअनत की और उनपर ग़ज़ब फ़रमाया और उनमें से कर दिये बंदर और सुव्वर और शैतान के पुजारी उनका ठिकाना ज़्यादा बुरा है और ये सीधी राह से ज़्यादा बहके।

६१. और जब तुम्हारे पास आयें तो कहते हैं हम मुसलमान हैं और वो आते वक़्त भी काफ़िर थे और जाते वक़्त भी काफ़िर और अल्लाह ख़ूब

مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا
هُزُوًا وَلَعِبًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ
مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا
أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ
وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ ﴿٥٩﴾

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذَٰلِكَ
مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ مَنْ لَعَنَهُ
اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ
الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ ۚ
أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ عَنْ
سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٦٠﴾

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا
وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ
خَرَجُوا بِهِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا
يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾

जानता है जो छुपा रहे हैं।

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى
الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ
لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾

६२. और उनमें तुम बहुतों को देखोगे कि गुनाह और ज़्यादती और हरामख़ोरी पर दौड़ते हैं बेशक बहुत ही बुरे काम करते हैं।

لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ
عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ
لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾

६३. उन्हें क्यों नहीं मनअ करते उनके पादरी और दर्वेश गुनाह की बात कहने और हराम खाने से बेशक बहुत ही बुरे काम कर रहे है।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ۭ
غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ
بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ
يَشَاۗءُ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا
وَّكُفْرًا ۭ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبَغْضَاۗءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ كُلَّمَآ
اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ
وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ۭ وَاللّٰهُ
لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾

६४. और यहूदी बोले अल्लाह का हाथ बंधा हुआ है उनके हाथ बाँधे जायें और उनपर इस कहने से लअ़नत है बल्कि उसके हाथ कुशादा है अता फ़रमाता है जैसे चाहे और ऐ महबूब ये जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पाससे उतरा उससे उनमें बहुतों को शरारत और कुफ़्र में तरक़्क़ी होगी और उनमे हमने क़यामत तक आपस में दुश्मनी और बैर डाल दिया जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है और ज़मीन में फ़साद के लिये दौड़ते फिरते हैं और अल्लाह फ़सादियों को नहीं चाहता।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا
لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾

६५. और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो ज़रूर हम उनके गुनाह उतार देते और

ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते।

६६. और अगर वो क़ायम रखते तौरेत और इन्जील और जो कुछ उनकी तरफ़ उनके रब की तरफ़ से उतरा तो उन्हें रिज़्क़ मिलता ऊपर से और उनके पाँव के नीचे से उनमें कोई गिरोह अगर एअतेदाल पर है और उनमें अक्सर बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं।

रुकूअ १०

६७. ऐ रसूल पहुँचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ से और ऐसा न हो तो तुमने उसका कोई पयाम न पहुँचाया और अल्लाह तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से बेशक अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता।

६८. तुम फ़रमा दो ऐ किताबियों तुम कुछ भी नहीं हो जबतक न क़ायम करो तौरेत और इन्जील और जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पाससे उतरा और बेशक ऐ महबूब वो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पाससे उतरा उससे उनमें बहुतों को शरारत और कुफ़्र की और तरक़्क़ी होगी तो तुम काफ़िरों का कुछ ग़म न खाओ।

६९. बेशक वो जो अपने आप को मुसलमान कहते हैं और इसी तरह यहूदी और सितारा परस्त और नसरानी

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ
لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ
اَرْجُلِهِمْ ۭ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۭ
ع وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَاۗءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ٦٦
يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ ۭ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا
بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ
مِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ٦٧
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰي شَيْءٍ
حَتّٰي تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ
وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ
فَلَا تَاْسَ عَلَي الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ٦٨
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾
لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ
وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رُسُلًا ۖ كُلَّمَا
جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ
أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا
يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾
وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا
وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ
عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ
بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ
الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا
اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ
بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ
وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ
ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا إِلَٰهٌ

उनमे जो कोई सच्चे दिलसे अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाये और अच्छे काम करे तो उनपर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म।

७०. बेशक हमने बनी इसराईल से अहद लिया और उनकी तरफ़ रसूल भेजे जब कभी उनके पास कोई रसूल वो बात लेकर आया जो उनके नफ़्स की ख़्वाहिश न थी एक गिरोह को झुठलाया और एक गिरोह को शहीद करते है।

७१. और इस गुमान मे है कि कोई सजा न होगी तो अन्धे और बहरे हो गये फिर अल्लाह ने उनकी तौबा कुबूल की फिर उनमें बहुतेरे अन्धे और बहरे हो गये और अल्लाह उनके काम देख रहा है।

७२. बेशक काफ़िर है वो जो कहते है कि अल्लाह वही मसीह मरयम का बेटा है और मसीह ने तो ये कहा था ऐ बनी इसराईल अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा रब और तुम्हारा रब बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराये तो अल्लाह ने उसपर जन्नत हराम कर दी और उसका ठिकाना दोज़ख है और ज़ालिमो का कोई मददगार नही।

७३. बेशक काफिर है जो कहते है अल्लाह तीन खुदाओं मे का तीसरा

وَاحِدٌ ۚ وَإِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ
لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

है और खुदा तो नहीं मगर एक खुदा और अगर अपनी बात से बाज़ न आये तो जो इनमें काफ़िर मरेंगे उनको ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।

اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾

७४. तो क्यों नही रूजूअ करते अल्लाह की तरफ़ और उससे बख़्शिश मांगते और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान।

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَ
اُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ
اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ
انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾

७५. मसीह बिन मरयम नहीं मगर एक रसूल उस से पहले बहुत रसुल हो गुज़रे और उसकी माँ सिद्दीका है दोनो खाना खाते थे देखो तो हम कैसी साफ़ निशानियाँ उनके लिये बयान करते है फिर देखो वो कैसे औंधे जाते हैं।

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا
لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ
وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾

७६. तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा एसे को पूजते हो जो तुम्हारे नुक़्सान का मालिक न नफ़अ का और अल्लाह ही सुनता जानता है।

قُلْ يٰاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا
فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْا
اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ
وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ
السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ ع

७७. तुम फ़रमाओ ऐ किताब वालो अपने दीन में नाहक़ ज़्यादती न करो और ऐसे लोगों की ख़्वाहिश पर न चलो जो पहले गुमराह हो चुके और बहुतो को गुमराह किया और सीधी राह से बहक गये।

रुकूअ ११

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ

७८. लअ्नत किये गये वो जिन्होंने

إِسْرَآءِيلَ عَلَىٰ لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى
ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا
يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾

कुफ़्र किया बनी इसराईल में दाउद और ईसा बिन मरयम की ज़ुबान पर ये बदला उनकी ना फ़रमानी और सरकशी का ।

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَن مُّنكَرٍ فَعَلُوهُ ۚ
لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾

७९. जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।

تَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ
كَفَرُوا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ
أَنفُسُهُمْ أَن سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَ
فِي الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿٨٠﴾

८०. उनमें तुम बहुत को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते है, क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये खुद आगे भेजी ये कि अल्लाह का उनपर ग़ज़ब हुआ और वो अज़ाब में हमेशा रहेंगे।

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ
وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ
أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ
فَاسِقُونَ ﴿٨١﴾

८१. और अगर वो ईमान लाते अल्लाह और उन नबी पर और उसपर जो उनकी तरफ़ उतरा तो काफ़िरों से दोस्ती न करते मगर उनमें तो बहुतेरे फ़ासिक़ हैं।

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ
آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ
وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ
آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ ۚ ذَٰلِكَ
بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَ
أَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾

८२. ज़रूर तुम मुसलमानों का सबसे बढ़कर दुश्मन यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसलमानों की दोस्ती में सबसे ज़्यादा क़रीब उनको पाओगे जो कहते थे हम नसारा है ये इसलिये कि उनमें आलिम और दर्वेश हैं और ये ग़ुरूर नहीं करते।

८३. और जब सुनते है वो जो रसूल की तरफ़ उतरा तो उनकी आँखें देखो कि आँसुओं से उबल रही है इसलिये कि वो हक़ को पहचान गये कहते है ऐ रब हमारे, हम ईमान लाये तो हमें हक़ के गवाहों में लिख ले।

८४. और हमें क्या हुआ कि हम ईमान न लायें अल्लाह पर और उस हक़ पर कि हामारे पास आया और हम तमअ करते हैं कि हमें हमारा रब नेक लोगों के साथ दाख़िल करे।

८५. तो अल्लाह ने उनके इसकहने के बदले उन्हे बाग़ दिये जिनके नीचे नहरें रवाँ हमेशा उनमें रहेंगे ये बदला है नेकों का।

८६. और वो जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुठलाईं वो हैं दोज़ख़ वाले।

रुकूअ १२

८७. ऐ ईमान वालो हराम न ठहराओ वो सुथरी चीज़ें कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल कीं और हद से न बढ़ो बेशक हद से बढ़ने वाले अल्लाह को नापसन्द हैं।

८८. और खाओ जो कुछ तुम्हें अल्लाह ने रोज़ी दी हलाल पाकीज़ा और डरो अल्लाह से जिसपर तुम्हें ईमान है।

८९. अल्लाह तुम्हे नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत फ़हमी की क़समों पर, हाँ उन क़समों पर गिरफ़्त फ़रमाता है

وَ اِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ
تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا
عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا
فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۳﴾
وَ مَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَا جَآءَنَا
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَ نَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا
مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۴﴾
فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ
ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۵﴾
وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۸۶﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ
مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۸۷﴾
وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪
وَّ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾
لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْۤ اَيْمَانِكُمْ
وَ لٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ

فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ
مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ
كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ
اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۭ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ
وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ
رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ
وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ
الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ
وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾

لَيْسَ عَلَي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

जिन्हें तुमने मज़बूत किया तो ऐसी क़सम का बदला दस मिसकीनों को खाना देना अपने घरवालों को जो खिलाते हो उसके औसत में से या उन्हें कपड़े देना या एक बुर्दा आज़ाद करना तो जो इनमें से कुछ न पाये तो तीन दिन के रोज़े ये बदला है तुम्हारी क़समों का जब क़सम खाओ और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो इसी तरह अल्लाह तुमसे अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम एहसान मानो।

९०. ऐ ईमानवालों शराब और जुवा और बुत और पाँसे नापाक ही हैं शैतानी काम तो इनसे बचते रहना कि तुम फ़लाह पाओ।

९१. शैतान यही चाहता है कि तुममें बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जुए में और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आये ।

९२. और हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और होशियार रहो फिर अगर तुम फिर जाओ तो जान लो कि हमारे रसूल का ज़िम्मा सिर्फ़ वाज़ेह तौर पर हुक्म पहुँचा देना है।

९३. जो ईमान लाये और नेक काम किये उनपर कुछ गुनाह नहीं जो

कुछ उन्होंने चखा जब कि डरें और ईमान रखें और नेकियाँ करें फिर डरें और ईमान रखे फिर डरें और नेक रहें और अल्लाह नेकों को दोस्त रखता है।

रुकूअ १३

९४. ऐ ईमानवालो ज़रूर अल्लाह तुम्हें आज़मायेगा ऐसे बअज़ शिकार से जिस तक तुम्हारा हाथ और नेज़े पहुंचे कि अल्लाह पहचान करा दे, उनकी जो उससे बिन देखे डरते है फिर उसके बाद जो हद से बढ़े उसके लिये दर्दनाक अज़ाब है।

९५. ऐ ईमानवालो शिकार न मारो जब तुम एहराम में हो और तुममें जो उसे क़स्दन क़त्ल करे तो उस का बदला ये है कि वैसा ही जानवर मवेशी से दे तुम में कि दो सिक़ह आदमी उसका हुक्म करें ये कुर्बानी हो कअबा को पहुँचती या कफ़्फ़ारा दे चन्द मिस्कीनों का खाना या उसके बराबर रोजे कि अपने काम का वबाल चखे अल्लाह ने मुआफ किया जो हो गुज़रा और जो अब करेगा अल्लाह उससे बदला लेगा और अल्लाह ग़ालिब है बदला लेने वाला।

९६. हलाल है तुम्हारे लिये दरिया

الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا
اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ
اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ
ع وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ
بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ
وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ
بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ
فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ
وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ
مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ
النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ
هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ
مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا
لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا
سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ
وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ
صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا
اللَّهَ الَّذِىٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾

का शिकार और उसका खाना तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ायेदे को और तुम पर हराम है ख़ुश्की का शिकार जबतक तुम एहराम में हो और अल्लाह से डरो जिसकी तरफ़ तुम्हें उठना है।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ
قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْىَ
وَالْقَلَٰٓئِدَ ۚ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوٓا أَنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْأَرْضِ
وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

९७. अल्लाह ने अदब वाले घर कअ़बा को लोगों के क़ियाम का बाइस किया और हुरमत वाले महीने और हरम की क़ुर्बानी और गले में अ़लामत आवेज़ां जानवरों को ये इसलिये कि तुम यक़ीन करो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और ये कि अल्लाह सब कुछ जानता है।

اِعْلَمُوٓا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَ
أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾

९८. जान रखो कि अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान।

مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾

९९. रसूल पर नहीं मगर हुक्म पहुँचाना और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।

قُل لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ
وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ
فَاتَّقُوا اللَّهَ يٰٓأُولِى الْأَلْبٰبِ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾ ع

१००. तुम फ़रमा दो कि गन्दा और सुथरा बराबर नहीं अगरचे तुझे गन्दे की कसरत भाये तो अल्लाह से डरते रहो ऐ अ़क़्ल वालो कि तुम फ़लाह पाओ।

रुकूअ़ १४

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَسْـَٔلُوا عَنْ
أَشْيَآءَ إِن تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ وَ
إِن تَسْـَٔلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْءَانُ

१०१. ऐ ईमान वालो ऐसी बातें न पूछो जो तुम पर ज़ाहिर की जायें तो तुम्हें बुरी लगें और अगर उन्हें उस वक़्त पूछोगे कि क़ुरआन उतर रहा है

تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۗ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जायेंगी अल्लाह उन्हें मुआफ़ कर चुका है और अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ
اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

१०२. तुमसे अगली एक क़ौम ने उन्हें पूछा फिर उनसे मुनकिर हो बैठे।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ
وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ
وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

१०३. अल्लाह ने मुक़र्रर नहीं किया है कान चिरा हुआ और न बिजार और न वसीला और न हामी। हाँ काफ़िर लोग अल्लाह पर झूठा इफ़्तेरा बाँधते है और उनमें अक्सर निरे बे अक़्ल है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا
وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۗ اَوَلَوْ كَانَ
اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا
يَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٤﴾

१०४. और जब उनसे कहा जाये आओ उस तरफ़ जो अल्लाह ने उतारा और रसूल की तरफ़ कहें हमें वो बहुत है जिसपर हमने अपने बाप दादा को पाया क्या अगरचे उनके बाप दादा न कुछ जाने और न राह पर हों।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ
لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۗ
اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

१०५. ऐ ईमानवालों तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुआ जबकि तुम राह पर हो तुम सबकी रूजूअ अल्लाह ही की तरफ़ है फिर वो तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ
اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ

१०६. ऐ ईमानवालो तुम्हारी आपस की गवाही जब तुम में किसी

को मौत आये वसीय्यत करते वक़्त तुममें के दो मोअतबर शख़्श हों या ग़ैरों में के दो जब तुम मुल्क में सफ़र को जाओ फिर तुम्हें मौत का हदिसा पहुँचे उन दोनों को नमाज़ के बाद रोको वो अल्लाह की क़सम खायें अगर तुम्हें कुछ शक पड़े हमहलफ़ के बदले कुछ माल न खरीदेंगे अगरचे क़रीब का रिश्तेदार हो और अल्लाह की गवाही न छुपायेंगे ऐसा करें तो हम ज़रूर गुनहगारों में हैं।

१०७. फिर अगर पता चले कि वो किसी गुनाह के सज़ावार हुए तो उनकी जगह दो और खड़े हों उनमें से कि उस गुनाह यानी झूठी गवाही ने उनका हक़ लेकर उनको नुक़्सान पहुँचाया जो मय्येत से ज़्यादा क़रीब हों तो अल्लाह की क़सम खायें कि हमारी गवाही ज़्यादा ठीक है उन दो की गवाही से और हम हद से न बढ़ें ऐसा हो तो हम ज़ालिमों में हों।

१०८. ये क़रीबतर है उससे कि गवाही जैसी चाहिये अदा करें या डरें कि कुछ क़समें रद्द कर दी जायें उनकी क़समों के बाद और अल्लाह से डरो और हुक्म सुनो और अल्लाह बे हुक्मों को राह नहीं देता।

الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ
اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ
ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ
مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ
بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ
ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ
ذَا قُرْبٰى وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ
اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

فَاِنْ عُثِرَ عَلٰٓى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ اِثْمًا
فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ
اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ
بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا
وَمَا اعْتَدَيْنَآ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى
وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ
بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٨﴾ ع

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ

रुकूअ १५

१०९. जिस दिन अल्लाह जमअ फ़रमायेगा रसूलों को फिर फ़रमायेगा तुम्हें क्या जवाब मिला, अर्ज़ करेंगे हमें कुछ इल्म नही बेशक तू ही है सब ग़ैबों का जानने वाला।

११०. जब अल्लाह फ़रमायेगा ऐ मरयम के बेटे ईसा याद कर मेरा एहसान अपने उपर और अपनी माँ पर जब मैं ने पाक रूह से तेरी मदद की तू लोगों से बातें करता पालने में और पक्की उम्र होकर और जब मैं ने तुझे सिखाई किताब और हिकमत और तौरेत और इन्जील और जब तू मिट्टी से परिन्द की सी मूरत मेरे हुक्म से बनाता फिर उसमें फूंक मारता तो वो मेरे हुक्म से उड़ने लगती और तू मादरज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को मेरे हुक्म से शिफ़ा देता और जब तू मुर्दों को मेरे हुक्म से ज़िन्दा निकालता और जब मैंने बनी इसराईल को तुझसे रोका जब तू उनके पास रौशन निशानियाँ लेकर आया तो उनमें के काफ़िर बोले कि ये तो नहीं मगर खुला जादू।

१११. और जब मैंने हवारियों के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ बोले हम ईमान लाये और गवाह रह कि हम मुसलमान हैं।

أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ
عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١٠٩﴾

إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ
نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ إِذْ
أَيَّدْتُكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ
فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ
وَالْإِنْجِيلَ ۖ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ
كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنْفُخُ فِيهَا
فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي ۖ وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ
وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ
بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ
عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا
سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿١١٠﴾

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا
بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ
بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ

هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا
مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۚ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ
إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾
قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ
قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا
وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِينَ ﴿١١٣﴾
قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ
أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُونُ
لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِّنْكَ
وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِينَ ﴿١١٤﴾
قَالَ اللّٰهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ
يَكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَإِنِّيٓ أُعَذِّبُهُ عَذَابًا
لَّآ أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِينَ ﴿١١٥﴾
وَإِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ
ءَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ
إِلٰهَيْنِ مِنْ دُونِ اللّٰهِ ۚ قَالَ سُبْحٰنَكَ
مَا يَكُونُ لِيٓ أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي
بِحَقٍّ ۚ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ
تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَآ أَعْلَمُ مَا فِي

११२. जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा बिन मरयम क्या आपका रब ऐसा करेगा कि हमपर आसमान से एक ख़्वान उतारे कहा अल्लाह से डरो अगर ईमान रखते हो।

११३. बोले हम चाहते हैं कि उसमें से खायें और हमारे दिल ठहरें और हम आंखों देख लें कि आपने हमसे सच फ़रमाया और हम उसपर गवाह हो जायें।

११४. ईसा बिन मरयम ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह ऐ रब हमारे हम पर आसमान से एक ख़्वान उतार कि वो हमारे लिये ईद हो हमारे अगलों पिछलों की और तेरी तरफ़ से निशानी और हमें रिज़्क़ दे और तू सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।

११५. अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उसे तुमपर उतारता हूँ फिर अब जो तुममें कुफ़्र करेगा तो बेशक मैं उसे वो अज़ाब दूँगा कि सारे जहान में किसी पर न करूंगा।

रुकूअ १६

११६. और जब अल्लाह फ़रमायेगा ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तूने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी माँ को दो ख़ुदा बना लो अल्लाह के सिवा अर्ज़ करेगा पाकी है तुझे मुझे रवा नहीं कि वो बात कहूँ जो मुझे नहीं पहुँचती अगर मैंने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मअ्लूम होगा

तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो जो तेरे इल्म में है बेशक तू ही है सब ग़ैबों का खूब जानने वाला।

११७. मैने तो उनसे न कहा मगर वही जो तूने मुझे हुक्म दिया था कि अल्लाह को पूजो जो मेरा भी रब और तुम्हारा भी रब और मैं उनपर मुत्तलअ था जबतक मैं उनमें रहा फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो तूही उनपर निगाह रखता था और हर चीज़ तेरे सामने हाज़िर है।

११८. अगर तु उन्हें अज़ाब करे तो वो तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिक्मत वाला।

११९. अल्लाह ने फ़रमाया कि ये है वो दिन जिसमें सच्चों को उनका "सच", काम आयेगा उनके लिये बाग़ है जिनके नीचे नहरें रवाँ हमेशा हमेशा उनमें रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी ये है बड़ी कामयाबी।

१२०. अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन और जो कुछ इनमें है सबकी सल्तनत और वो हर चीज़ पर क़ादिर है।

सूरए अनआम

मक्की है इसमें एकसौ पैसठ आयात और बीस रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला।

نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ
اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ
عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ
وَأَنْتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾

إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِنْ
تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾

قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ
صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

سُورَةُ الْأَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ

रुकूअ १

१. सब खूबियाँ अल्लाह को जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और अंधेरियाँ और रौशनी पैदा की उसपर काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं।

२. वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर एक मिआद का हुक्म रखा और एक मुक़र्रर वअदा उसके यहाँ है फिर तुम लोग शक करते हो।

३. और वही अल्लाह है आसमानों और जमीन का उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मअलूम है और तुम्हारे काम जानता है।

४. और उनके पास कोई भी निशानी अपने रब की निशानियों से नही आती मगर उससे मुँह फेर लेते हैं।

५. तो बेशक उन्होने हक़ को झुठलाया जब उनके पास आया तो अब उन्हें ख़बर हुआ चाहती है उस चीज़ की जिसपर हँस रहे थे।

६. क्या उन्होंने न देखा कि हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपा दी उन्हें हमने ज़मीन में वो जमाव दिया जो तुमको न दिया और उनपर मौसलाधार पानी भेजा और उनके नीचे नहरें बहाई तो उन्हें हमने उनके गुनाहो के सबब

وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۬
ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ①

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ
قَضٰى اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ
ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ②

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ؕ
يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ
مَا تَكْسِبُوْنَ ③

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ
اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ④

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ
يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑤

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ
قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ
نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ
مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ
وَاَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ⑥

हलाक किया और उनके बाद और संगत उठाई।

७. और अगर हम तुमपर काग़ज़ में कुछ लिखा हुआ उतारते के वो उसे अपने हाथों से छूते जब भी काफ़िर कहते के ये नहीं मगर खुला जादू।

८. और बोले उनपर कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया और अगर हम फ़रिश्ता उतारते तो काम तमाम हो गया होता फिर उन्हें मोहलत न दी जाती।

९. और आगर हम नबी को फ़रिश्ता करते जब भी उसे मर्द ही बनाते और उनपर वही शुबह रखते जिसमें अब पड़े हैं।

१०. और ज़रूर ऐ महबूब तुमसे पहले रसूलों के साथ भी ठट्ठा किया गया तो वो जो उनसे हँसते थे उनकी हँसी उन्हीं को ले बैठी।

रूकूअ २

११. तुम फ़रमा दो ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ।

१२. तुम फ़रमाओ किसका है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, तुम फ़रमाओ अल्लाह का है। उसने अपने करम के ज़िम्मे पर रहमत लिख ली है बेशक ज़रूर तुम्हें क़यामत के

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَٰبًا فِى قِرْطَاسٍ
فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟
إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝٧

وَقَالُوا۟ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَ
لَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِىَ ٱلْأَمْرُ ثُمَّ
لَا يُنظَرُونَ ۝٨

وَلَوْ جَعَلْنَٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَٰهُ رَجُلًا
وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا يَلْبِسُونَ ۝٩

وَلَقَدِ ٱسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ
فَحَاقَ بِٱلَّذِينَ سَخِرُوا۟ مِنْهُم مَّا كَانُوا۟
بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ۝١٠ ع

قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ ثُمَّ ٱنظُرُوا۟
كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُكَذِّبِينَ ۝١١

قُل لِّمَن مَّا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ
قُل لِّلَّهِ ۚ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ ٱلرَّحْمَةَ ۚ
لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ لَا رَيْبَ
فِيهِ ۚ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝١٢

दिन जमअ़ करेगा इसमें कुछ शक नहीं वो जिन्होंने अपनी जान नुक़सान में डाली ईमान नहीं लाते।

१३. और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में और वही है सुनता जानता।

१४. तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा किसी और को वाली बनाऊँ। वो अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन पैदा किये और वो खिलाता है और खाने से पाक है। तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म हुआ है कि सबसे पहले गरदन रखूँ और हरगिज़ शिर्क वालों में से न होना।

१५. तुम फ़रमाओ अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं तो मुझे बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है।

१६. उस दिन जिससे अ़ज़ाब फेर दिया जाये ज़रूर उसपर अल्लाह की मेहर हुई और यही खुली कामयाबी है।

१७. और अगर तुझे अल्लाह कोई बुराई पहुँचाये तो उसके सिवा उसका कोई दूर करने वाला नहीं और अगर तुझे भलाई पहुँचाये तो वो सबकुछ कर सकता है।

१८. और वही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और वही है हिक़मत वाला

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ وَ
هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾
قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۭ
قُلْ اِنِّىْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ
مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾
قُلْ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾
مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ
رَحِمَهٗ ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾
وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ
لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۭ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ
فَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾
وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ
الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾
قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۭ
قُلِ اللّٰهُ ۣ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ

ख़बरदार।

१९. तुम फ़रमाओ सबसे बड़ी गवाही किसकी तुम फ़रमाओ कि अल्लाह गवाह है मुझ में और तुम में और मेरी तरफ़ इस कुरऑन की 'वही' हुई कि मै उससे तुम्हें डराऊँ और जिन जिन को पहुँचे तो क्या तुम ये गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ और खुदा हैं तुम फ़रमाओ कि मैं ये गवाही नहीं देता! तुम फ़रमाओ कि वो तो एक ही मअबूद है और मैं बेज़ार हूँ उनसे जिनको तुम शरीक ठहराते हो।

२०. जिनको हमने किताब दी इस नबी को पहचानते है जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं जिन्होंने अपनी जान नुक़्सान में डाली वो ईमान नहीं लाते।

रुकूअ ३

२१. और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी आयतें झुटलाये बेशक ज़ालिम फ़लाह न पायेगें।

२२. और जिस दिन हम सबको उठायेंगे फिर मुश्रिकों से फ़रमायेंगे कहाँ है तुम्हारा वो शरीक जिनका तुम दअवा करते थे।

२३. फिर उनकी कुछ बनावट न रही मगर ये कि बोले हमें अपने रब अल्लाह की क़सम के हम मुश्रिक न थे।

وَاُوْحِیَ اِلَیَّ ھٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ
بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ
اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّاۤ
اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ
اِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾
اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ
كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِیْنَ
خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى
اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ
لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۱﴾
وَیَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِیْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ
لِلَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا اَیْنَ شُرَكَآؤُكُمُ
الَّذِیْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۲۲﴾
ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا
وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِیْنَ ﴿۲۳﴾
اُنْظُرْ كَیْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

२४. देखो कैसा झूट बाँधा खुद अपने ऊपर और गुम गई उनसे जो बातें बनाते थे।

२५. और उनमें कोई वो है जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाता है और हमने उनके दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि उसे न समझें और उनके कान में टेंट और अगर सारी निशानियाँ देखें तो उनपर ईमान न लायेंगे यहाँतक के जब तुम्हारे हुज़ूर तुम से झगड़ते हाज़िर हों, तो काफ़िर कहें ये तो नहीं मगर अगलों की दास्तानें।

२६. और वो उससे रोकते और इससे दुर भागते हैं और हलाक नहीं करते मगर अपनी जानें और उन्हें शुऊर नहीं।

२७. और कभी तुम देखो जब वो आग पर खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे काश किसी तरह हम वापस भेजे जायें और अपने रब की आयतें न झुटलायें और मुसलमान हो जायें।

२८. बल्कि उनपर खुल गया जो पहले छुपाते थे और अगर वापस भेजे जायें तो फिर वही करें जिससे मनअ किये गये थे और बेशक वो ज़रूर झूठे हैं।

२९. और बोले वो तो यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है और हमें उठना नहीं।

३०. और कभी तुम देखो जब

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ وَجَعَلْنَا
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَ
فِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِن يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ
لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ
يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾
وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْأَوْنَ عَنْهُ ۖ
وَإِن يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾
وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا
يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِآيَاتِ رَبِّنَا
وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾
بَلْ بَدَا لَهُم مَّا كَانُوا يُخْفُونَ
مِن قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا
نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾
وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَ
مَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾
وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ
قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ

وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا
كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾

अपने रब के हुजूर खड़े किये जायेंगे फ़रमायेगा क्या यह हक़ नही कहेंगे क्यों नही हमें अपने रब की क़सम फ़रमायेगा तो अब अज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का।

रुकूअ ४

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَ
هُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ
أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾

३१. बेशक "हार" मे रहे वो जिन्होंने अपने रब से मिलने का इन्कार किया यहाँतक कि जब उनपर क़यामत अचानक आगई बोले, हाय अफ़सोस हमारा इस पर कि उसके मानने मे हमने तक़सीर की और वो अपने बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए है अरे कितना बुरा बोझ उठाये हुए है।

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ
وَلَلدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ
يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾

३२. और दुनिया की ज़िन्दगी नहीं मगर खेल कूद और बेशक पिछला घर भला उनके लिये जो डरते है तो क्या तुम्हें समझ नहीं।

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ ۖ
فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ الظَّالِمِينَ
بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٣٣﴾

३३. हमें मअ़लूम है कि तुम्हें रंज देती है वो बात जो ये कह रहे है तो वो तुम्हें नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम अल्लाह की आयतों से इन्कार करते है।

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ
فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا
حَتَّىٰ أَتَاهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ
اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ نَبَإِ
الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٤﴾

३४. और तुमसे पहले रसूल झुटलाये गये तो उन्हों ने सब्र किया उस झुटलाने पर और ईज़ाऐं पाने पर यहाँतक कि उन्हें हमारी मदद आई और अल्लाह की बातें बदलने वाला कोई नहीं और तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आ ही चुकी है।

وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ

فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا
فِي الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ
فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٥﴾
اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ۭ وَالْمَوْتٰى
يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٦﴾
وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ
اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾
وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰۗىِٕرٍ
يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ۭ
مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ
اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ
فِي الظُّلُمٰتِ ۭ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ۭ
وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰي صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾
قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ

३५. और अगर उनका मुँह फेरना तुम पर शाक गुज़रा है तो अगर तुमसे हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग तलाश करलो या आसमान में ज़ीना फिर उन के लिये निशानी ले आओ और अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकट्ठा कर देता तो ऐ सुननेवाले तू हरगिज़ नादान न बन।

३६. मानते तो वही है जो सुनते हैं और उन मुर्दा दिलों को अल्लाह उठायेगा फिर उस की तरफ़ हांके जायेंगे।

३७. और बोले उनपर कोई निशानी क्यों न उतरी उन के रब की तरफ़ से तुम फ़रमाओ कि अल्लाह क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे लेकिन उनमें बहुत निरे जाहिल हैं।

३८. और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्द कि अपने परों पर उड़ता है मगर तुम जैसी उम्मतें हमने इस किताब में कुछ उठा न रखा फिर अपने रब की तरफ़ उठाये जायेंगे।

३९. और जिन्होनें हमारी आयतें झुटलाईं बहरे और गूँगे हैं अन्धेरों में अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रास्ता डाल दे।

४०. तुम फ़रमाओ भला बताओ

أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ ۚ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾

तो अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आये या क़यामत क़ायम हो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे अगर सच्चे हो।

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَاءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

४१. बल्कि उसी को पुकारोगे तो वो अगर चाहे जिस पर उसे पुकारते हो, उसे उठा ले और शरीकों को भूल जाओगे।

रुकूअ ५

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾

४२. और बेशक हमने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो उन्हें सख़्ती और तकलीफ़ से पकड़ा कि वो किसी तरह गिड़गिड़ाएं।

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُم بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

४३. तो क्यों न हो कि जब उन पर हमारा अज़ाब आया तो गिड़गिड़ाये होते लेकिन उनके दिल तो सख़्त होगये और शैतान ने उन के काम उनकी निगाह में भले कर दिखाये।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾

४४. फिर जब उन्होंने भुला दिया जो नसीहतें उनको की गई थीं हमने उनपर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहाँतक कि जब ख़ुश हुए उसपर जो उन्हें मिला तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वो आस टूटे रह गये।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

४५. तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की और सब ख़ूबियों सराहा अल्लाह रब सारे जहान का।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ

४६. तुम फ़रमाओ भला बताओ तो, अगर अल्लाह तुम्हारे कान आँख

लेले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर
दे तो अल्लाह के सिवा कौन खुदा है
कि तुम्हें ये चीजें ला दे देखो हम
किस किस रंग से आयतें बयान करते
हैं फिर वो मुँह फेर लेते है।

४७. तुम फ़रमाओ भला बताओ
तो अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब
आये अचानक या खुल्लम खुल्ला तो
कौन तबाह होगा सिवा ज़ालिमों के।

४८. और हम नहीं भेजते रसूलों
को मगर खुशी और डर सुनाते तो जो
ईमान लाये और संवरे उन को न कुछ
अन्देशा और न कुछ ग़म।

४९. और जिन्होंने हमारी आयतें
झुठलायीं उन्हे अज़ाब पहुंचेगा बदला
उन की बे हुक्मी का।

५०. तुम फ़रमा दो मैं तुम से
नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के
खज़ाने है और न ये कहूँ कि मैं आप
ग़ैब जान लेता हूँ और न तुम से ये
कहूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ मैं तो उसी का
ताबेअ़ हूँ जो मुझे 'वही' आती है,
तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जायेंगे
अन्धे और अँखियारे तो क्या तुम ग़ौर
नहीं करते।

रुकूअ ६

५१. और इस कुरऑन से उन्हें
डराओ जिन्हें खौफ़ हो कि अपने रब
की तरफ़ यूँ उठाये जायें कि अल्लाह
के सिवा न उन का कोई हिमायती हो

وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ
مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ
انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ
يَصْدِفُونَ ﴿٤٦﴾

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ
اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا
الْقَوْمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٧﴾

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ
وَمُنذِرِينَ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾
وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ
الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾

قُل لَّا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ
اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ
لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ
إِلَيَّ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ
ع أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

وَأَنذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَن يُحْشَرُوا
إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُم مِّن دُونِهِ وَلِيٌّ

न कोई सिफ़ारशी इस उम्मीद पर कि वो परहेज़गार हो जायें।

وَلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

५२. और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम उस की रज़ा चाहते तुम पर उनके हिसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे हिसाब से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो ये काम इन्साफ़ से बईद है।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم
بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ
مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَيْءٍ
وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِم مِّن شَيْءٍ
فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾

५३. और यूँही हमने उनमें एक को दूसरे के लिए फ़ितना बनाया कि मालदार काफ़िर मुहताज मुसलमानों को देख कर कहें क्या ये है जिन पर अल्लाह ने एहसान किया हममें से क्या अल्लाह खूब नहीं जानता हक़ मानने वालों को।

وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ
لِّيَقُولُوا أَهَٰؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِم
مِّن بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ
بِالشَّاكِرِينَ ﴿٥٣﴾

५४. और जब तुम्हारे हुज़ूर वो हाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्म-ए-करम पर रहमत लाज़िम करली है कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर उस के बाद तौबा करे और सँवर जाये तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا
فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ
عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ
مِنكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ
مِن بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾

५५. और इसी तरह हम आयतों को मुफ़स्सल बयान फ़रमाते हैं और इसलिये कि मुजरिमों का रास्ता ज़ाहिर हो जाये।

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ
سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾ ع

रुकूअ ७

५६. तुम फ़रमाओ मुझे मनअ

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ

किया गया है कि उन्हें पूजूँ जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर नहीं चलता। यूँ हो तो मैं बहक जाऊँ और राह पर न रहूँ।

५७. तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ और तुम उसे झुठलाते हो मेरे पास नहीं जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो हुक्म नहीं मगर अल्लाह का वो हक़ फ़रमाता है और वो सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला।

५८. तुम फ़रमाओ अगर मेरे पास होती वो चीज़ जिस की तुम जल्दी कर रहे हो तो मुझ में तुम में काम ख़त्म हो चुका होता और अल्लाह खूब जानता है सितमगारों को।

५९. और उसी के पास है कुन्जियां ग़ैब की उन्हें वही जानता है और जानता है जो कुछ खुशकी और तरी में है और जो पत्ता गिरता है वो उसे जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन की अंधेरियों में और न कोई तर और न खुश्क जो एक रौशन किताब में लिखा न हो।

६०. और वही है जो रात को तुम्हारी रुहे क़ब्ज़ करता है और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ फिर तुम्हे

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ قُلْ لَّآ
أَتَّبِعُ أَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَّمَآ
أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾
قُلْ إِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ۚ مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ
بِهٖ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ ۚ يَقُصُّ الْحَقَّ
وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾
قُلْ لَّوْ أَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ
بِهٖ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾
وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ
إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ
وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا
وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْأَرْضِ وَ
لَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ إِلَّا فِيْ كِتٰبٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾
وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ
مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ
فِيْهِ لِيُقْضٰٓى أَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ

दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मिआद पूरी हो फिर उसी की तरफ़ फिरना है फिर वो बता देगा जो कुछ तुम करते थे।

रूकूअ ८

६१. और वही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और तुम पर निगेहबान भेजता है यहाँतक कि जब तुममें किसी को मौत आती है हमारे फ़रिश्ते उस की रूह क़ब्ज़ करते हैं और वो क़ुसूर नहीं करते।

६२. फिर फेरे जाते हैं अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ़ सुनता है उसी का हुक्म है और वो सब से जल्द हिसाब करने वाला ।

६३. तुम फ़रमाओ वो कौन है जो तुम्हें नजात देता है जंगल और दरिया की आफ़तों से जिसे पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता कि अगर वो हमें इससे बचावे तो हम ज़रूर एहसान मानेंगे।

६४. तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें निजात देता है उससे और हर बेचैनी से फिर तुम शरीक ठहराते हो।

६५. तुम फ़रमाओ वो क़ादिर है कि तुम पर अज़ाब भेजे, तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पावों के तले (नीचे) से या तुम्हें भिड़ा दे मुख़तलिफ़ गिरोह करके और एक को दूसरे की सख़्ती चखाये देखो हम क्यों कर तरह-तरह

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا
ع كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ
عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ
لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٦١﴾

ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ
أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ﴿٦٢﴾
قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ مِنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً
لَئِنْ أَنْجَانَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ
مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٣﴾

قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ
كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٦٤﴾

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ
عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ
مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ
شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ
بَعْضٍ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ

لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

से आयतें बयान करते हैं कि कहीं उन को समझ हो।

وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُلْ
لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿٦٦﴾

६६. और उसे झुठलाया तुम्हारी क़ौम ने और यही हक़ है तुम फ़रमाओ मैं तुम पर कुछ कड़ोड़ा (हाकिमेआला) नहीं।

لِكُلِّ نَبَإٍ مُسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

६७. हर चीज़ का एक वक़्त मुक़र्रर है और अनक़रीब जान जाओगे।

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي
آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا
فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ
الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ
مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾

६८. और ऐ सुननेवाले जब तू उन्हे देखे जो हमारी आयतों में पढ़ते हैं तो उन से मुँह फेर लें जब तक और बात मे पड़ें और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आये पर ज़ालिमो के पास न बैठ।

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ
حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَٰكِنْ ذِكْرَىٰ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾

६९. और परहेज़गारों पर उनके हिसाब से कुछ नहीं हाँ नसीहत देना, शायद वो बाज़ आयें।

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَ
لَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَ
ذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا
شَفِيعٌ ۚ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ
لَا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا
بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَ

७०. और छोड़ दे उनको जिन्होंने अपना दीन हँसी खेल बना लिया और उन्हें दुनिया की जिन्दगानी ने फ़रेब दिया और कुरआन से नसीहत दो कि कहीं कोई जान अपने किये पर पकड़ी न जाये अल्लाह के सिवा न उसका कोई हिमायती हो न सिफ़ारशी और अगर अपने ऐवज़ सारे बदले दे तो उस से न लिये जाये ये हैं वो जो अपने किये पर पकड़े गये उन्हें पीने

को खौलता पानी और दर्दनाक अज़ाब बदला उनके कुफ़्र का।

रुकूअ ९

७१. तुम फ़रमाओ क्या हम अल्लाह के सिवा उस को पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा और उल्टे पाँव पलटा दिये जायें बाद उसके कि अल्लाह ने हमें राह दिखाई उस की तरह जिसे शैतान ने ज़मीन में राह भुला दी हैरान है उसके रफ़ीक़ उसे राह की तरफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ तुम फ़रमाओ कि अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है और हमें हुक्म है कि हम उसके लिये गरदन रख दें जो रब है सारे जहान का।

७२. और ये कि नमाज़ क़ायम रखो और उससे डरो और वही है जिस की तरफ़ तुम्हें उठना है।

७३. और वही है जिसने आसमान व ज़मीन ठीक बनाये और जिस दिन फ़ना हुई हर चीज़ को कहेगा होजा वो फ़ौरन हो जायेगी, उसकी बात सच्ची है और उसी की सल्तनत है जिस दिन सूर फूँका जायेगा हर छुपे और ज़ाहिर को जानने वाला और वही हिकमत वाला ख़बरदार।

७४. और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा क्या तुम बुतों को ख़ुदा बनाते हो बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूँ।

७५. और इसी तरह हम इबराहीम

ع عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ٧٠

قُلْ أَنَدْعُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَا لَا
يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰى أَعْقَابِنَا
بَعْدَ إِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ
الشَّيٰطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهٗ
أَصْحٰبٌ يَدْعُونَهٗ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا
قُلْ إِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى وَ
أُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ٧١

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوهُ وَهُوَ
الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ٧٢

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
ع بِالْحَقِّ وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ
قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ
فِي الصُّورِ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهٰدَةِ
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ٧٣

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ
أَصْنَامًا آلِهَةً إِنِّي أَرٰىكَ وَقَوْمَكَ
فِي ضَلٰلٍ مُبِينٍ ٧٤

وَكَذٰلِكَ نُرِي إِبْرٰهِيمَ مَلَكُوتَ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ
الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾
فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ
قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ
لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾
فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ
فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ
لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّاۤلِّيْنَ ﴿٧٧﴾
فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا
رَبِّيْ هٰذَاۤ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَتْ قَالَ
يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْۤءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾
اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَاۤ اَنَا
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾
وَحَاۤجَّهٗ قَوْمُهٗ ۚ قَالَ اَتُحَاۤجُّوْنِّيْ
فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۚ وَلَاۤ اَخَافُ
مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَاۤءَ رَبِّيْ
شَيْـًٔا ۚ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ
اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾

को दिखाते हैं सारी बादशाही आसमानों और ज़मीन की और इसलिए कि वो ऐनुलयक़ीन वालों मे होजायें।

७६. फिर जब उन पर रात का अँधेरा आया एक तारा देखा बोले इसे मेरा रब ठहराते हो फिर जब वो डूब गया बोले मुझे खुश नहीं आते डूबने वाले।

७७. फिर जब चाँद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो फिर जब वो डूब गया कहा अगर मुझे मेरा रब हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता।

७८. फिर जब सूरज जगमगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो ये तो उन सब से बड़ा है फिर जब वो डूब गया कहा ऐ क़ौम, मैं बेज़ार हूँ उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो।

७९. मैं ने अपना मुँह उसकी तरफ़ किया जिसने आसमान और ज़मीन बनाये एक उसी का होकर और मैं मुश्रिकों में नहीं।

८०. और उनकी क़ौम उनसे झगड़ने लगी कहा क्या अल्लाह के बारे मे मुझसे झगड़ते हो तो वो मुझे राह बता चुका और मुझे उन का डर नही जिन्हे तुम शरीक बताते हो, हाँ जो मेरा ही रब कोई बात चाहे मेरे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत है तो क्या तुम नसीहत नही मानते।

८१. और मै तुम्हारे शरीकों से

क्यों कर डरूँ और तुम नहीं डरते कि तुम ने अल्लाह का शरीक उसको ठहराया जिस की तुम पर उसने कोई सनद न उतारी तो दोनों गिरोहों में अमान का ज़्यादा सज़ावार कौन है अगर तुम जानते हो।

८२. वो जो ईमान लाये और अपने ईमान में किसी नाहक़ की आमेज़िश न की उन्हीं के लिये अमान है और वही राह पर है।

रूकूअ १०

८३. और ये हमारी दलील है कि हमने इब्राहीम को उस की क़ौम पर अता फ़रमाई हम जिसे चाहें दर्जों बुलंद करें बेशक तुम्हारा रब इल्म-ो हिकमत वाला है।

८४. और हमने उन्हें इसहाक़ और यअ़क़ूब अता किये उन सब को हमने राह दिखाई और उनसे पहले नूह को राह दिखाई और उस की औलाद में से दाउद और सुलैमान और अय्यूब और युसुफ़ और मूसा और हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकोकारों को।

८५. और ज़करिया और यहिया और ईसा और इलयास को ये सब हमारे क़ुर्ब के लायक़ हैं।

८६. और इसमाईल और यसअ और यूनुस और लूत को और हमने हर एक को उसके वक़्त में सबपर फ़ज़ीलत दी

८७. और कुछ उनके बाप दादा

وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ
اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ
عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۭ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ
بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ
بِظُلْمٍ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ
مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾
وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰي
قَوْمِهٖ ۭ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَاۗءُ ۭ
اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾
وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ كُلًّا
هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ
وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَ
اَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰي وَهٰرُوْنَ ۭ
وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ۭ
كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾
وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَ
لُوْطًا ۭ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾

और औलाद और भाइयों में से बअ्ज़
को और हमने उन्हें चुन लिया और
सीधी राह दिखाई।

८८. ये अल्लाह की हिदायत है
कि अपने बंदों में जिसे चाहे दे और
अगर वो शिर्क करते तो ज़रूर उन का
किया अकारत जाता।

८९. ये है जिन को हमने किताब
और हुक्म और नुबूवत अ़ता की तो
अगर ये लोग उससे मुनकिर हों तो
हमने उसके लिए एक ऐसी कौम लगा
रखी है जो इन्कार वाली नहीं।

९०. ये है जिन को अल्लाह ने
हिदायत की तो तुम उन्हीं की राह
चलो तुम फ़रमाओ मैं कुरआन पर
तुमसे कोई उजरत नहीं मांगता वो तो
नहीं मगर नसीहत सारे जहान को।

रुकूअ ११

९१. और यहूद ने अल्लाह की
क़द्र न जानी जैसी चाहिए थी जब
बोले अल्लाह ने किसी आदमी पर
कुछ नहीं उतारा तुम फ़रमाओ किसने
उतारी वो किताब जो मूसा लाए थे
रौशनी और लोगों के लिए हिदायत
जिस के तुम ने अलग-अलग काग़ज़
बना लिए। ज़ाहिर करते हो और बहुत
से छुपा लेते हो और तुम्हें वो सिखाया
जाता है जो न तुम को मअ्लूम था न
तुम्हारे बाप दादा को। अल्लाह कहो

وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ
وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ
فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا
بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ
اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ
اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ
قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ
بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ
تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ
كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ

फिर उन्हें छोड़ दो, उन की बेहूदगी में उन्हें खेलता।

९२. और ये है बरकत वाली किताब कि हमने उतारी तस्दीक़ फ़रमाती उन किताबों की जो आगे थीं और इसलिए कि तुम डर सुनाओ सब बस्तियों के सरदार को और जो कोई सारे जहाँ में इसके गिर्द हैं और जो आख़ेरत पर ईमान लाते हैं और अपनी इस किताब पर ईमान लाते हैं, और अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं।

९३. और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या कहे मुझे 'वही' हुई और उसे कुछ 'वही' न हुई और जो कहे अभी मैं उतारता हूँ ऐसा जैसा अल्लाह ने उतारा और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम मौत की सख़्तियों में और फ़रिश्ते हाथ फैलाए हुए हैं कि निकालो अपनी जानें आज तुम्हें ख़्वारी का अज़ाब दिया जायेगा बदला उसका कि अल्लाह पर झूठ लगाते थे और उसकी आयतों से तकब्बुर करते।

९४. और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और पीठ पीछे छोड़ आए जो मालो-मताअ़ हमने तुम्हें दिया था और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे

وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ
فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ
الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى
وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰي
صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ
اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ تَرٰٓي اِذِ الظّٰلِمُوْنَ
فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ بَاسِطُوْٓا
اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اَلْيَوْمَ
تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ
تَقُوْلُوْنَ عَلَي اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ
عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَاۗءَ
ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰي مَعَكُمْ شُفَعَاۗءَكُمُ

उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते जिनका तुम अपने में साझा बताते थे बेशक तुम्हारे आपस की डोर कट गई और तुम से गये जो दअवे करते थे।

रुकूअ १२

९५. बेशक अल्लाह दाने और गुठली को चीरने वाला है जिंदा को मुर्दा से निकालने और मुर्दा को जिंदा से निकालने वाला ये है अल्लाह तुम कहाँ औंधे जाते हो।

९६. तारीकी चाक करके सुबह निकालने वाला और उसने रात को चैन बनाया और सूरज और चाँद को हिसाब यह साधा (सुधाया हुआ) है ज़बरदस्त जानने वाले का ।

९७. और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए कि उनसे राह पाओ खुश्की और तरी के अंधेरों में हमने निशानियाँ मुफ़स्सल बयान करदी इल्मवालों के लिए।

९८. और वही है जिसने तुमको एक जान से पैदा किया फिर कहीं तुम्हें ठहरना है और कहीं अमानत रहना बेशक हमने मुफ़स्सल आयतें बयान करदीं समझवालों के लिए।

९९. और वही है जिसने आसमान से पानी उतारा तो हमने उससे हर उगने वाली चीज़ निकाली तो हमने उससे निकाली सब्ज़ी जिस में से दाने निकालते है एक दूसरे पर चढ़े हुए और खजूर के गाभे से पास-पास गुच्छे

الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا
لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ
مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ ع

اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى يُخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ
الْحَيِّ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا
وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ذٰلِكَ
تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا
بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ
وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ قَدْ
فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا
مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا
وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ

और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून और अनार किसी बातमें मिलते और किसी बात मे अलग उस का फल देखो जब फले और उसका पकना बेशक उस मे निशानियाँ है ईमान वालों के लिए।

१००. और अल्लाह का शरीक ठहराया जिनों को हालाँकि उसी ने उन को बनाया और उसके लिए बेटे, और बेटियाँ गढ़ लीं जहालत से पाकी और बरतरी है उसको उन की बतों से।

रुकूअ १३

१०१. बे किसी नमूना के आसमानों और जमीन का बनाने वाला उसके बच्चा कहाँ से हो हालाँकि उस की औरत नहीं और उसने हर चीज़ पैदा की और वो सब कुछ जानता है ।

१०२. ये है अल्लाह तुम्हारा रब उसके सिवा किसी की बंदगी नहीं हर चीज़ का बनाने वाला तो उसे पूजो वो हर चीज़ पर निगेहबान है।

१०३. आँखें उसे इहाता नहीं करती और सब आँखें उसके इहाता में है और वही है पूरा बातिन पूरा ख़बरदार।

१०४. तुम्हारे पास आँखें खोलने वाली दलीलें आईं तुम्हारे रब की तरफ़ से तो जिसने देखा तो अपने भले को और जो अन्धा हुआ अपने बुरे को और मैं तुम पर निगेहबान नहीं।

دَانِيَةٌ وَجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ
وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ
اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۗ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ
وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ
سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾
بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اَنّٰى يَكُوْنُ
لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۗ
وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾
لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ
الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾
قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ
اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۗ
وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا
دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾

१०५. और हम इसी तरह आयतें तरह-तरह से बयान करते है और इसलिए कि काफ़िर बोल उठें कि तुम तो पढ़े हो और इसलिए कि इसे इल्मवालों पर वाज़ेह करदें।

اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾

१०६. उस पर चलो जो तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ से 'वही' होती है उसके सिवा कोई मअबूद नही और मुश्रिकों से मुँह फेर लो।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۗ وَمَا
جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾

१०७. और अल्लाह चाहता तो वो शिर्क नहीं करते और हमने तुम्हें उनपर निगेहबान नहीं किया और तुम उन पर कड़ोड़े (हाकिमे-आला) नहीं।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ
كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠
ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

१०८. और उन्हें गाली न दो जिन को वो अल्लाह के सिवा पूजते हैं कि वो अल्लाह की शान में बे अदबी करेंगे ज़्यादती और जहालत से यूँही हमने हर उम्मत की निगाह में उसके अमल भले कर दिए है फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ फिरना है और वो उन्हें बता देगा जो करते थे।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ
لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۗ
قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا
يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾

१०९. और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में पूरी कोशिश से कि अगर उनके पास कोई निशानी आई तो ज़रूर उस पर ईमान लायेंगे तुम फ़रमादो कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं और तुम्हें क्या ख़बर कि जब वो आयें तो ये ईमान न लायेंगे।

وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا
لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ
ع فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾

११०. और हम फेर देते हैं उनके दिलों और आँखों को जैसा वो पहली बार उस पर ईमान न लाए थे और उन्हें छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटका करें।

रुकूअ १४

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَ
كَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ
كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا
اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾

१११. और अगर हम उनकी तरफ़ फ़रिश्ते उतारते और उनसे मुर्दे बातें करते और हम हर चीज़ उनके सामने उठा लाते जब भी वो ईमान लाने वाले न थे मगर ये कि खुदा चाहता लेकिन उनमें बहुत निरे जाहिल हैं।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا
شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ
بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
غُرُوْرًا ۭ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ
فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾

११२. और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों और जिनों में कि शैतान कि उनमें एक दूसरे पर खुफ़िया डालता है बनावट की बात धोके को और तुम्हारा रब चाहता तो वो ऐसा न करते तो उन्हें उन की बनावटों पर छोड़ दो।

وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ
وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

११३. और इसलिये कि उसकी तरफ़ उनके दिल झुकें जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और गुनाह कमायें जो उन्हें गुनाह कमाना है।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ
الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۭ
وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ
اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا
تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾

११४. तो क्या अल्लाह के सिवा मैं किसी और का फ़ैसला चाहूँ और वही है जिसने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सल किताब उतारी और जिनको हमने किताब दी वो जानते हैं कि ये तेरे रब की तरफ़ से सच उतरा है तो ऐ! सुननेवाले तू हरगिज़ शक वालों में न हो।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ۭ

११५. और पूरी है तेरे रब की

لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾

बात सच और इन्साफ़ में उसकी बातों का कोई बदलने वाला नहीं और वही है सुनता जानता।

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ
يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ اِنْ
يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا
يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾

११६. और ऐ सुननेवाले ज़मीन में अकसर वो है कि तू उनके कहे पर चले तो तुझे अल्लाह की राह से बहका दें वो सिर्फ़ गुमान के पीछे है और निरी अटकले (फ़ुज़ूल अन्दाज़े) दौड़ाते हैं।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

११७. तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन बहका उसकी राह से और वो खूब जानता है हिदायत वालों को।

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ
كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

११८. तो खाओ उसमें से जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया अगर तुम उसकी आयतें मानते हो।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ
اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ
عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ۗ
وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ
بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾

११९. और तुम्हें क्या हुआ कि उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया वो तो तुमसे मुफ़स्सल बयाना कर चुका जो कुछ तुम पर हराम हुआ मगर जब तुम्हें उससे मजबूरी हो और बेशक बहुतेरे अपनी ख़्वाहिशों से गुमराह करते हैं बे जाने, बेशक तेरा रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है।

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ۚ
اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ
بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾

१२०. और छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह, वो जो गुनाह कमाते हैं अनक़रीब अपनी कमाई की सज़ा पायेंगे।

१२१. और उसे न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया और वो बेशक हुक्म उदूली है और बेशक शैतान अपने दोस्तों के दिलों में डालते है कि तुम से झगड़े और अगर तुम उनका कहना मानो तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो।

وَلَا تَأْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ۗ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓـئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾

रुकूअ १५

१२२. और क्या वो कि मुर्दा था तो हमने उसे ज़िन्दा किया और उसके लिये एक नूर कर दिया जिससे लोगों मे चलता है वो उस जैसा हो जायेगा जो अंधेरियों मे है उनसे निकलने वाला नही यूँ ही काफ़िरों की आँख मे उनके अअ़माल भले कर दिये गए है।

اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۗ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾

१२३. और इसी तरह हमने हर बस्ती में उसके मुजरिमों के सरग़ना किये कि उसमें दाँव खेलें और दाँव नहीं खेलते मगर अपनी जानों पर और उन्हें शुऊ़र नही।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ۗ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

१२४. और जब उनके पास कोई निशानी आये तो कहते है हम हरगिज़ ईमान न लायेगे जबतक हमे भी वैसा ही न मिले जैसा अल्लाह के रसूलों को मिला अल्लाह ख़ूब जानता है जहाँ अपनी रिसालत रखे अनक़रीब मुजरिमो को अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत पहुँचेगी

وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ۘ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ۗ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌ

और सख़्त अज़ाब बदला उनके मक्र का।

१२५. और जिसे अल्लाह राह दिखाना चाहे उसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे गुमराह करना चाहे उसका सीना तंग ख़ूब रूका हुआ कर देता है गोया किसी की ज़बर्दस्ती से आसमान पर चढ़ रहा है अल्लाह यूँही अज़ाब डालता है ईमान न लाने वालों को।

१२६. और ये तुम्हारे रब की सीधी राह है हमने आयतें मुफ़स्सल बयान कर दीं नसीहत मानने वालों के लिये।

१२७. उनके लिये सलामती का घर है अपने रब के यहाँ और वो उनका मौला है ये उनके कामों का फल है।

१२८. और जिस दिन उन सबको उठायेगा और फ़रमायेगा ऐ जिन के गिरोह तुमने बहुत आदमी घेर लिये और उनके दोस्त आदमी अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हममें एक ने दूसरे से फ़ाएदा उठाया और हम अपनी उस मिआद को पहुँच गये जो तूने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमाई थी। फ़रमायेगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा उसमें रहो मगर जिसे ख़ुदा चाहे ऐ महबूब बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला इल्म वाला है।

१२९. और यूँ ही हम ज़ालिमों

بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾
فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ
صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ
يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا
كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ۚ كَذٰلِكَ
يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾
وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ۚ قَدْ
فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾
لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ
وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ
الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ
وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ
رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ
اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ
مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ
اللّٰهُ ۚ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾
وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ

بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾

में एक को दूसरे पर मुसल्लत करते है बदला उनके किये का।

रुकूअ १६

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ
رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ
اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَ
غَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا
عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾ ع

१३०. ऐ जिनो और आदमियो के गिरोह क्या तुम्हारे पास तुममें के रसूल न आये थे तुम पर मेरी आयतें पढ़ते और तुम्हें ये दिन देखने से डराते कहेंगे हमने अपनी जानों पर गवाही दी और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और खुद अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वो काफ़िर थे।

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ
الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾

१३१. ये इसलिये कि तेरा रब बस्तियों को जुल्म से तबाह नहीं करता कि उनके लोग बेख़बर हों।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا وَمَا
رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾

१३२. और हर एक के लिये उनके कामों के दर्जे हैं और तेरा रब उनके अअमाल से बेख़बर नहीं।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ اِنْ يَّشَاْ
يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ
مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ
قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾

१३३. और ऐ महबूब तुम्हारा रब बे पर्वाह है रहमत वाला ऐ लोगो वो चाहे तो तुम्हें ले जाये और जिसे चाहे तुम्हारी जगह ला दे जैसे तुम्हेंऔरों की औलाद से पैदा किया।

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ وَّمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾

१३४. बेशक जिसका तुम्हें वअदा दिया जाता है ज़रूर आनेवाली है और तुम थका नही सकते।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ

१३५. तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ

إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿١٣٥﴾

मै अपना काम करता हूं तो अब जानना चाहते हो किसका रहता है आखेरत का घर बेशक ज़ालिम फलाह नही पाते।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَٰذَا لِشُرَكَائِنَا ۖ فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ شُرَكَائِهِمْ ۗ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٦﴾

१३६. और अल्लाह ने जो खेती और मवेशी पैदा किये उनमे से एक हिस्सादार ठहराया तो बोले यह अल्लाह का है उनके ख़याल मे और ये हमारे शरीकों का तो वो जो उनके शरीकों का है वो तो खुदा को नहीं पहुँचता और जो खुदा का है वो उनके शरीको को पहुँचता है क्या ही बुरा हुक्म लगाते है।

وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾

१३७. और यूँ ही बहुत मुश्रिकों की निगाह मे उनके शरीकों ने अवलाद का कत्ल भला कर दिखाया है कि उन्हें हलाक करें और उनका दीन उनपर मुश्तबह करदें और अल्लाह चाहता तो ऐसा न करते तो तुम उन्हें छोड़ दो वो है और उनके इफ्तेरा।

وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا

१३८. और बोले ये मवेशी और खेती रोकी हुई है। उसे वही खाए जिसे हम चाहें अपने झूठे ख्याल से और कुछ मवेशी है जिनपर चढ़ना हराम ठहराया और कुछ मवेशी के जिब्ह पर अल्लाह का नाम नही लेते ये सब अल्लाह पर झूठ बांधना है

अनक़रीब वो उन्हे बदला देगा उनके इफ़्तेराओं का।

१३९. और बोले जो इन मवेशी के पेट में है वो निरा (ख़ालिस) हमारे मर्दों का है और हमारी औरतों पर हराम है और मरा हुआ निकले तो वो सब उसमें शरीक हैं क़रीब है कि अल्लाह उन्हें इनकी बातों का बदला देगा बेशक वो हिकमत व इल्म वाला है।

१४०. बेशक तबाह हुए वो जो अपनी अवलाद को क़त्ल करते है अहमक़ाना जहालत से और हराम ठहराते हैं वो जो अल्लाह ने उन्हें रोज़ी दी अल्लाह पर झूठ बांधने को बेशक वो बहके और राह न पाई।

रुकूअ १७

१४१. और वही है जिसने पैदा किए बाग़ कुछ ज़मीन परछए (छाए) हुए और कुछ बेछए (फैले) और खजूर और खेती जिसमें रंग रंग के खाने और ज़ैतुन और अनार किसी बात में मिलते और किसी में अलग, खाओ इसका फल जब फल लाये और उसका हक़ दो जिस दिन कटे और बेजा न ख़र्चो बेशक बेजा ख़र्च करने वाले इसे पसन्द नही करते।

१४२. और मवेशी में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ जमीन पर बिछे, खाओ उसमें से जो अल्लाह ने

كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هٰذِهِ الْأَنْعَامِ
خَالِصَةٌ لِذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰى
أَزْوَاجِنَا ۚ وَإِنْ يَكُنْ مَيْتَةً فَهُمْ
فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ
إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ
سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ
اللّٰهُ افْتِرَاءً عَلَى اللّٰهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾ ع

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ جَنّٰتٍ مَعْرُوشٰتٍ
وَغَيْرَ مَعْرُوشٰتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ
مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ
مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ كُلُوا مِنْ
ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ
حَصَادِهِ ۖ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤١﴾ ع

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۚ
كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوا

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾

तुम्हे रोज़ी दी और शैतान के क़दमों पर न चलो बेशक वो तुम्हारा सरीह दुश्मन है।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ
وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ
حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ
عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ نَبِّـُٔوْنِيْ
بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾

१४३. आठ नर और मादा एक जोड़ भेड़ का और एक जोड़ बकरी का तुम फ़रमाओ क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा या वो जिसे दोनों मादा पेट में लिये है किसी इल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो।

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ
اثْنَيْنِ ۗ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ
الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ
الْاُنْثَيَيْنِ ۗ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ
اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ
مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
ع لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٤﴾

१४४. और एक जोड़ा ऊँट का और एक जोड़ा गाय का तुम फ़रमाओ क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा या वो जिसे दोनो मादा पेट में लिये हैं कया तुम मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हे ये हुक्म दिया तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे कि लोगों को अपनी जहालत से गुमराह करे बेशक अल्लाह ज़ालिमों को राह नही दिखाता।

रुकूअ १८

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا
عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ
يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا
اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا

१४५. तुम फ़रमाओ मैं नहीं पाता उसमें जो मेरी तरफ़ 'वही' हुई किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम मगर ये कि मुर्दार हो या रगों का बहता ख़ून, या बद जानवर का गोश्त कि नजासत है या वो बे हुकमी का जानवर

जिसके ज़िब्ह में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया तो जो नाचार हुआ न यूँ कि आप ख़्वाहिश करे और न यूँ कि ज़रूरत से बढ़े तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٥﴾

१४६. और यहूदियों पर हमने हराम किया हर नाखुन वाला जानवर और गाय और बकरी की चरबी उनपर हराम की मगर जो उनके पीठ में लगी हो या आंत या हड्डी से मिली हो हमने यह उनकी सरकशी का बदला दिया और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾

१४७. फिर अगर वो तुम्हें झुटलाएँ तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब वसीअ़ रहमत वाला है और उसका अज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता।

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾

१४८. अब कहेंगे मुश्रिक कि अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा न हम कुछ हराम ठहराते ऐसा ही उनसे अगलों ने झुठलाया था यहाँ तक कि हमारा अज़ाब चखा, तुम फ़रमाओ क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है कि उसे हमारे लिये निकालो तुम तो निरे गुमान (ख़ामख़याली) के पीछे हो और तुम यूँ ही तख़मीने करते हो।

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاءَ
لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٤٩﴾

१४९. तुम फ़रमाओ तो अल्लाह ही की हुज्जत पूरी है तो वो चाहता तो तुम सब को हिदायत फ़रमाता।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ
يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا فَاِنْ
شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ
بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٠﴾ ع

१५०. तुम फ़रमाओ लाओ अपने वो गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने उसे हराम किया फिर अगर वो गवाही दे बैठें तो तू ऐ सुनने वाले उनके साथ गवाही न देना और उनकी ख़्वाहिशों के पीछे न चलना जो हमारी आयतें झुठलाते है और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और अपने रब का बराबर वाला ठहराते है।

रुकूअ १९

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ
عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّ
بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
مِّنْ اِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ
وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ
حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ
بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٥١﴾

१५१. तुम फ़रमाओ आओ मैं तुम्हे पढ़ सुनाऊँ जो तुम पर तुम्हारे रब ने हराम किया ये कि उसका कोई शरीक न करो और माँ बाप के साथ भलाई करो और अपनी अवलाद क़त्ल न करो मुफ़लिसी के बाइस हम तुम्हें और उन्हें सबको रिज़्क़ देंगे और बेहयाईयों के पास न जाओ जो उनमें खुली है और जो छुपी और जिस जान की अल्लाह ने हुरमत रखी उसे नाहक़ न मारो यह तुम्हे हुक्म फ़रमाया है कि तुम्हे अक़्ल हो।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا
بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ
اَشُدَّهٗ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ

१५२. और यतीमों के माल के पास न जाओ मगर बहुत अच्छे तरीक़े से जबतक वो अपनी जवानी को पहुँचे और नाप और तौल इन्साफ़ के साथ

पूरी करो हम किसी जान पर बोझ नहीं डालते मगर उस के मक़दूर भर और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो अगरचे तुम्हारे रिशतेदार का मुआमला हो और अल्लाह ही का अहद पूरा करो ये तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीहत मानो।

१५३. और ये कि ये है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और, और राहें न चलो कि तुम्हें उसकी राह से जुदा कर देंगी ये तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले।

१५४. फिर हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई पूरा एहसान करने को उसपर जो नेकोकार हैं और हर चीज़ की तफ़सील और हिदायत और रहमत कि कहीं वो अपने रब से मिलने पर ईमान लायें।

रुकूअ २०

१५५. और ये बरकत वाली किताब हमने उतारी तो इसकी पैरवी करो और परहेज़गारी करो कि तुम पर रहम हो।

१५६. कभी कहो कि किताब तो हमसे पहले दो गिरोहों पर उतरी थी और हमें उनके पढ़ने पढ़ाने की कुछ ख़बर न थी।

१५७. या कहो कि अगर हमपर किताब उतरती तो हम उनसे ज़्यादा ठीक राह पर होते तो तुम्हारे पास

بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ
وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا
قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَٰلِكُمْ
وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾
وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ
وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ
عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾
ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى
الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ
شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ
بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾
وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ
وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾
أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَىٰ
طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا
عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ﴿١٥٦﴾
أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ
لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ

بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّ
رَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِى
الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ
الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾

तुम्हारे रब की रौशन दलील और हिदायत और रहमत आई तो उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन जो अल्लाह की आयतों को झुटलाए और उनसे मुँह फेरे अनक़रीब वो जो हमारी आयतों से मुँह फेरते है हम उन्हें बुरे अज़ाब की सज़ा देंगे। बदला उनके मुँह फेरने का।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِىَ
بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَاْتِىْ بَعْضُ
اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا
لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ
فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انْتَظِرُوْٓا
اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

१५८. काहे के इन्तेज़ार में है मगर ये कि आयें उनके पास फ़रिश्ते या तुम्हारे रब का अज़ाब या तुम्हारे रब की एक निशानी आये जिस दिन तुम्हारे रब की वो एक निशानी आयेगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा जो पहले ईमान न लाए थे या अपने ईमान मे कोई भलाई न कमाई थी तुम फ़रमाओ रस्ता देखो हम भी देखते है।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا
شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِىْ شَىْءٍ ۗ اِنَّمَآ
اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا
كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

१५९. वो जिन्होंने अपने दीन में जुदा-जुदा राहें निकाली और कई गिरोह हो गये, ऐ महबूब तुम्हें उनसे कुछ एलाक़ा नहीं उनका मुआमला अल्लाह ही के हवाला है फिर वो उन्हें बता देगा जो कुछ वो करते थे।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ
اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا
يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

१६०. जो एक नेकी लाये तो उसके लिये उस जैसी दस है और जो बुराई लाये तो उसे बदला न मिलेगा मगर उसके बराबर और उनपर ज़ुल्म न होगा।

१६१. तुम फ़रमाओ बेशक मुझे मेरे रब ने सीधी राह दिखाई ठीक दीने इब्राहीम की मिल्लत जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिक न थे।

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۚ دِينًا قِيَمًا
مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

१६२. तुम फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानियाँ और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिये है जो रब सारे जहान का।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ
وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

१६३. उसका कोई शरीक नहीं मुझे यही हुक्म हुआ है और मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ।

لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَ
أَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

१६४. तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा और रब चाहूँ हालाँकि वो हर चीज़ का रब है और जो कोई कुछ कमाये वो उसी के ज़िम्मा है और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठायेगी फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ फिरना है। वो तुम्हें बता देगा जिसमें इख़्तिलाफ़ करते थे।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ
رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ
كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم
مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

१६५. और वही है जिसने ज़मीन में तुम्हें नायब किया और तुममें एक को दूसरे पर दर्जों बुलन्दी दी कि तुम्हें आज़माये उस चीज़ में जो तुम्हें अता की बेशक तुम्हारे रब को अज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वो ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ
وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ
لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۗ إِنَّ
رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿١٦٥﴾ ع

رکوع ۷ / रूकूअ ७

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَتَانِ وَسِتُّ اٰيٰتٍ وَاَرْبَعٌ وَعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

सूरए अअ़राफ़

मक्की है और इसमें दो सौ छः आयातें और चौबीस रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

रुकूअ १

الٓمّٓصٓ ①

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَیْكَ فَلَا یَكُنْ فِیْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِیْنَ ②

२. ऐ मह़बूब एक किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी गई तो तुम्हरा जी उससे न रुके इसलिये कि तुम उससे डर सुनाओ और मुसलमानों को नसीहत।

اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِیَآءَ قَلِیْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ③

३. ऐ लोगों उसपर चलो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पाससे उतरा और उसे छोड़कर और ह़ाकिमों के पीछे न जाओ बहुत ही कम समझते हो।

وَكَمْ مِّنْ قَرْیَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَیَاتًا اَوْ هُمْ قَآىٕلُوْنَ ④

४. और कितनी ही बस्तियाँ हमने हलाक कीं तो उनपर हमारा अज़ाब रात में आया या जब वो दोपहर को सोते थे।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِیْنَ ⑤

५. तो उनके मुँह से कुछ न निकला जब हमारा अज़ाब उनपर आया मगर यही बोले कि हम ज़ालिम थे।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِیْنَ اُرْسِلَ اِلَیْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِیْنَ ⑥

६. तो बेशक ज़रूर हमें पूछना है उनसे जिनके पास रसूल गये और बेशक ज़रूर हमें पूछना है रसूलों से।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَیْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآىٕبِیْنَ ⑦

७. तो ज़रूर हम उनको बता देंगे अपने इल्म से और हम कुछ ग़ाएब न थे।

وَالْوَزْنُ یَوْمَىٕذِ اِ۟لْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِیْنُهٗ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑧

८. और उस दिन तौल ज़रूर होनी है तो जिनके पल्ले भारी हुए वही मुराद को पहुंचे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ⑨

९. और जिन के पल्ले हलके हुए तो वही है जिन्होंने अपनी जान घाटे में डाली उन ज़्यादतियो का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَ
جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ ⑩

१०. और बेशक हमने तुम्हें ज़मीन में जमाव (ठिकाना) दिया और तुम्हारे लिये उसमें ज़िन्दगी के असबाब बनाये बहुत ही कम शुक्र करते हो।

रुकूअ २

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ
ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ
فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ ⑪

११. और बेशक हमने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक़शे बनाये फिर हमने मलाइका से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो वो सब सज्दे में गिरे मगर इबलीस ये सज्दावालों में न हुआ।

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ
قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ
نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ⑫

१२. फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तूने सज्दा न किया जब मैंने तुझे हुक्म दिया था बोला मैं इससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया।

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ
اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ
الصّٰغِرِيْنَ ⑬

१३. फ़रमाया तू यहाँ से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहाँ रह कर गुरूर करे निकल तू है ज़िल्लत वालो में।

قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ⑭

१४. बोला मुझे फुर्सत दे उस दिन तक कि लोग उठाये जायें।

قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ⑮

१५. फ़रमाया तुझे मुहलत है।

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾

१६. बोला तो कसम उसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उनकी ताक में बैठूंगा।

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾

१७. फिर ज़रूर मैं उनके पास आऊँगा उनके आगे और उनके पीछे और दाहिने और उनके बायें से और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार न पायेगा।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾

१८. फ़रमाया यहाँ से निकल जा रद्द किया गया रान्दा हुआ ज़रूर जो उनमें से तेरे कहे पर चला मैं तुम सबसे जहन्नम भर दूंगा।

وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

१९. और ऐ आदम तू और तेरा जोड़ा जन्नत में रहो तो उसमें जहाँ चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना कि हद से बढ़ने वालों में होओगे।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

२०. फिर शैतान ने उनके जी में खतरा डाला कि उन पर खोल दे उनकी शर्म की चीज़ें जो उनसे छुपी थीं और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने उस पेड़ से इसी लिये मना फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़रिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले।

२१. और उनसे क़सम खाई कि मैं तुम दोनों का ख़ैरख़्वाह हूँ।

وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّیْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۲۱﴾

२२. तो उतार लाया उन्हें फ़रेब से फिर जब उन्होंने वो पेड़ चखा उनपर उनकी शर्म की चीज़ें खुल गई और अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे और उन्हें उनके रब ने फ़रमाया क्या मैं ने तुम्हे उस पेड़ से मनअ न किया और न फ़रमाया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है।

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا یَخْصِفٰنِ عَلَیْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّیْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۲۲﴾

२३. दोनों ने अर्ज़ की ऐ रब हमारे हमने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हमपर रहम न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए।

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾

२४. फ़रमाया उतरो तुम में एक दूसरे का दुश्मन है और तुम्हें ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और बरतना है।

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِیْنٍ ﴿۲۴﴾

२५. फ़रमाया उसी में जियोगे और उसी में मरोगे और उसी में से उठाये जाओगे।

قَالَ فِیْهَا تَحْیَوْنَ وَفِیْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿۲۵﴾

रुकूअ ३

२६. ऐ आदम की औलाद बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक लिबास वो उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाये और एक वो कि तुम्हारी आराइश हो और परहेज़गारी का लिबास वो सबसे

یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَیْكُمْ لِبَاسًا یُّوَارِیْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِیْشًا ؕ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَیْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ

भला ये अल्लाह की निशानियों में से है कि कहीं वो नसीहत माने।

२७. ऐ आदम की अवलाद खबरदार तुम्हे शैतान फ़ित्ने में न डाले जैसा तुम्हारे माँ बाप को बहिश्त से निकाला, उतरवा दिये उनके लिबास कि उनकी शर्म की चीज़ें उन्हे नज़र पड़े बेशक वो और उसका कुंबा वहाँ से तुम्हे देखते है कि तुम उन्हे नही देखते बेशक हमने शैतानो को उनका दोस्त किया है जो ईमान नही लाते।

२८. और जब कोई बेहयाई करे तो कहते हैं हमने इसपर अपने बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमे इसका हुक्म दिया तो फ़रमाओ बेशक अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देता क्या अल्लाह पर वो बात लगाते हो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं।

२९. तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुकम दिया है और अपने मुँह सीधे करो हर नमाज़ के वक्त और उसकी इबादत करो निरे (ख़ालिस) उसके बन्दे होकर जैसे उसने तुम्हारा आग़ाज़ किया वैसे ही पलटोगे।

३०. एक फ़िरक़े को राह दिखाई और एक फिरक़े की गुमराही साबित हुई उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को वाली बनाया और समझते ये हैं कि वो राह पर है।

३१. ऐ आदम की अवलाद अपनी

ءَايَٰتِ ٱللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٢٦﴾

يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ كَمَآ
أَخْرَجَ أَبَوَيْكُم مِّنَ ٱلْجَنَّةِ يَنزِعُ عَنْهُمَا
لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْءَٰتِهِمَآ ۗ إِنَّهُۥ
يَرَىٰكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُۥ مِنْ حَيْثُ
لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ إِنَّا جَعَلْنَا ٱلشَّيَٰطِينَ
أَوْلِيَآءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٧﴾

وَإِذَا فَعَلُوا۟ فَٰحِشَةً قَالُوا۟ وَجَدْنَا
عَلَيْهَآ ءَابَآءَنَا وَٱللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ
إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ أَتَقُولُونَ
عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

قُلْ أَمَرَ رَبِّى بِٱلْقِسْطِ ۖ وَأَقِيمُوا۟
وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَٱدْعُوهُ
مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ
تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ
ٱلضَّلَٰلَةُ ۗ إِنَّهُمُ ٱتَّخَذُوا۟ ٱلشَّيَٰطِينَ
أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَيَحْسَبُونَ
أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ
كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا
ع تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾

ज़ीनत लो जब मस्जिद में जाओ और खाओ और पीओ और हद से न बढ़ो बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

रुकूअ ४

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ
الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ
كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ
يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾

३२. तुम फ़रमाओ किसने हराम की अल्लाह की वो ज़ीनत जो उसने अपने बन्दों के लिये निकाली और पाक रिज़्क़ तुम फ़रमाओ कि वो ईमानवालों के लिये है दुनिया में और क़यामत में तो ख़ास उन्हीं का है हम यूँ ही मुफ़स्सल आयतें बयान करते हैं इल्म वालों के लिये।

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ
مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَ
الْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ
بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ
مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

३३. तुम फ़रमाओ मेरे रब ने तो बेहयाइयाँ हराम फ़रमाई है जो उनमें खुली हैं और जो छुपी और गुनाह और नाहक़ ज़्यादती और ये कि अल्लाह का शरीक करो जिसकी उसने सनद न उतारी और ये कि अल्लाह पर वो बात कहो जिसका इल्म नहीं रखते।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ
اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً
وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾

३४. और हर गिरोह का एक वअ़दा है तो जब उनका वअ़दा आयेगा एक घड़ी न पीछे हो न आगे।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ

३५. ऐ आदम की अवलाद अगर तुम्हारे पास तुममें के रसूल आयें मेरी आयतें पढ़ते तो जो परहेज़गारी करे

مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ ءَايَٰتِى ۙ فَمَنِ
اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٥﴾

और सँवरे तो उसपर न कुछ ख़ौफ़ और न कुछ ग़म।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِـَٔايَٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا
عَنْهَآ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ النَّارِ ۖ هُمْ
فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٣٦﴾

३६. और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई और उनके मुक़ाबिल तकब्बुर किया वो दोज़खी है उन्हें उसमें हमेशा रहना।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى
اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِـَٔايَٰتِهِۦٓ ۚ
أُولَٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُم مِّنَ الْكِتَٰبِ ۖ
حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ
قَالُوٓا أَيْنَ مَا كُنتُمْ تَدْعُونَ
مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا
وَشَهِدُوا عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ
كَانُوا كَٰفِرِينَ ﴿٣٧﴾

३७. तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा या उसकी आयतें झुठलाई उन्हें उनके नसीब का लिखा पहुंचेगा यहाँतक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए उनकी जान निकालने आयें तो उनसे कहते हैं कहाँ हैं वो जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे कहते हैं वो हम से गुम गये और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वो काफ़िर थे।

قَالَ ادْخُلُوا فِىٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ
مِن قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ
فِى النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ
أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا
جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَىٰهُمْ لِأُولَىٰهُمْ

३८. अल्लाह उनसे फ़रमाता है कि तुम से पहले जो और जमाअतें जिन्न और आदमियों की आग में गईं उन्हीं में जाओ जब एक गिरोह दाख़िल होता है दूसरे पर लअनत करता है। यहाँतक कि जब सब उसमें जा पड़े तो पिछले पहलों को कहेंगे ऐ रब हमारे उन्होंने हमको बहकाया था तो

رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا
ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۬ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ
وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾

उन्हे आग का दूना अज़ाब दे फ़रमायेगा सबको दूना है मगर तुम्हें ख़बर नही।

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا
ع الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۳۹﴾

३९. और पहले से पिछलों से कहेंगे तो तुम कुछ हमसे अच्छे न रहे तो चखो अजाब बदला अपने किये का।

रुकूअ ५

اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا
عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ
وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ
الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ وَكَذٰلِكَ
نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۴۰﴾

४०. वो जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई और उनके मुक़ाबिल तकब्बुर किया उनके लिये आसमान के दरवाज़े न खोले जायेंगे और न वो जन्नत में दाख़िल हों जब तक सुई के नाके ऊँट दाख़िल न हो और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ
فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۱﴾

४१. उन्हें आग ही बिछौना और आग ही ओढ़ना और ज़ालिमों को हम ऐसाही बदला देते हैं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۴۲﴾

४२. और वो जो ईमान लाये और ताक़त भर अच्छे काम किये हम किसी पर ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं रखते वो जन्नत वाले हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना।

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ

४३. और हमने उनके सीनों में से कीने खींच लिये उनके नीचे नहरें

बहेंगी और कहेंगे सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने हमे इस की राह दिखाई और हम राह न पाते अगर अल्लाह हमे राह न दिखाता बेशक हमारे रब के रसूल हक़ लाये और निदा हुई कि ये जन्नत तुम्हें मीरास मिली, सिला तुम्हारे अअ़्माल का।

४४. और जन्नत वालों ने दोज़ख वालों को पुकारा कि हमें तो मिल गया जो सच्चा वअ़दा हमसे हमारे रब ने किया था तो क्या तुमने भी पाया जो तुम्हारे रब ने सच्चा वअ़दा तुम्हें दिया था बोले हाँ और बीच में मुनादी ने पुकार दिया कि अल्लाह की लअ़नत ज़ालिमों पर।

४५. जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उसे कजी चाहते हैं और आख़ेरत का इन्कार रखते है।

४६. और जन्नत और दोज़ख के बीच में एक पर्दा है और अअ़्राफ़ पर कुछ मर्द होंगे कि दोनों फ़रीक़ को उनकी पेशानियों से पहचानेंगे और वो जन्नतियों को पुकारेंगे कि सलाम तुम पर ये जन्नत में न गये और उसकी तमअ़ रखते है।

४७. और जब उनकी आँखे

غِلٍّ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا
لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا
أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ
رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا أَنْ
تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾
وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ
النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا
رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ
رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ
بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾
الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ
بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ﴿٤٥﴾
وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْأَعْرَافِ
رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ ۚ وَنَادَوْا
أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۚ
لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿٤٦﴾

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ٤٧ ع

दोज़खियों के तरफ़ फिरेंगी कहेंगे ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर।

रुकूअ ६

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ٤٨

४८. **और अअ्राफ़ वाले कुछ** मर्दों को पुकारेंगे जिन्हें उनकी पेशानी से पहचानते हैं कहेंगे तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जत्था और वो जो तुम गुरूर करते थे।

أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۚ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ٤٩

४९. क्या ये हैं वो लोग जिनपर तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उनपर अपनी रहमत कुछ न करेगा उनसे तो कहा गया कि जन्नत में जाओ न तुमको अन्देशा न कुछ ग़म।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۚ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ٥٠

५०. और दोज़खी बहिश्तियों को पूकारेंगे कि हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो या उस खाने का जो अल्लाह ने तुम्हें दिया कहेंगे बेशक अल्लाह ने उन दोनों को काफ़िरों पर हराम किया है।

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسَاهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ٥١

५१. जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया और दुनिया की ज़ीस्त ने उन्हे फ़रेब दिया तो आज हम उन्हे छोड़ देंगे जैसा उन्होंने इस दिन के मिलने का ख़याल छोड़ा था और जैसा हमारी आयतों से इन्कार करते थे।

وَلَقَدْ جِئْنَاهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ

५२. और बेशक हम उनके पास एक किताब लाये जिसे हमने एक बड़े

عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

इल्म से मुफ़स्सल किया हिदायत व रहमत ईमान वालों के लिये।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ
تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ
قَبْلُ قَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ
فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَاۗءَ فَيَشْفَعُوْا
لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ
كُنَّا نَعْمَلُ ۭ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ ع

५३. काहे की राह देखते हैं मगर उसकी कि इस किताब का कहा हुआ अन्जाम सामने आये जिस दिन उसका बताया अंजाम वाक़ेअ् होगा। बोल उठेंगे वो जो इसे पहले से भुलाये बैठे थे कि बेशक हमारे रब के रसूल हक़ लाये थे, तो हैं कोई हमारे सिफ़ारिशी जो हमारी शफ़ाअत करें, या हम वापस भेजे जायें कि पहले कामों के ख़िलाफ़ काम करें बेशक उन्होंने अपनी जानें नुक़्सान में डाली और उनसे खोये गये जो बुहतान उठाते थे।

रुकूअ ७

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ
اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَي الْعَرْشِ ۣ
يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ
وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۢ
بِاَمْرِهٖ ۭ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ۭ
تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾

५४. बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन छः दिन मे बनाये फिर अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उसके पीछे लगा आता है और सूरज और चाँद और तारों को बनाया सब उसके हुक्म के दबे हुए। सुनलो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह रब सारे जहान का।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۭ
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾ ج

५५. अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ

५६. और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ उसके सँवरने के बाद और

उससे दुआ करो डरते और तमअ करते बेशक अल्लाह की रहमत नेकों से क़रीब है।

५७. और वही है के हवायें भेजता है उस की रहमत के आगे मुज़दह सुनाती यहाँ तक कि जब उठा लायें भारी बादल हमने उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ चलाया फिर उससे पानी उतारा फिर उससे तरह-तरह के फल निकाले इसी तरह हम मुर्दो को निकालेंगे कही तुम नसीहत मानो।

५८. और जो अच्छी ज़मीन है उसका सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से निकलता है और जो ख़राब है उसमें नहीं निकलता मगर थोडा ब मुश्किल हम यूँ ही तरह-तरह से आयतें बयान करते हैं उनके लिये जो एहसान मानें।

रुकूअ ८

५९. बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं बेशक मुझे तुम पर बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

६०. उसकी क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते है।

६१. कहा ऐ मेरी क़ौम मुझमें

إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ
إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾
وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا
بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ
سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِن
كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾
وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ
رَبِّهِ ۖ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا
نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ
ع لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾
لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ
يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ
إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾
قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّ لٰكِنِّيْ
رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾

गुमराही कुछ नहीं मैं तो रब्बुल आलमीन का रसूल हूं।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَ
اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

६२. तुम्हे अपने रब की रिसालतें पहुँचाता और तुम्हारा भला चाहता और मैं अल्लाह की तरफ़ से वो इल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ
وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾

६३. और क्या तुम्हे इसका अचंभा हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत आई तुम में कि एक मर्द को मअरिफ़त कि वो तुम्हें डराये और तुम डरो और कहीं तुम पर रहम हो।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ
فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ ع

६४. तो उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने उसे और जो उसके साथ कश्ती में थे, निजात दी! और अपनी आयतें झुठलाने वालों को डुबो दिया बेशक वो अन्धा गिरोह था।

रुकूअ ९

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

६५. और आद की तरफ़ उनकी बिरादरी से हूद को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नही तो क्या तुम्हें डर नहीं।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ
اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ
مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

६६. उसकी क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें बेवक़ूफ़ समझते है और बेशक हम तुम्हें झूठों में गुमान करते हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ
رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

६७. कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे बेवक़ूफ़ी से क्या एलाक़ा मैं तो परवरदिगारे आलम का रसूल हूं।

६८. तुम्हें अपने रब की रिसालतें

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ
نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾

पहुंचाता हूँ और तुम्हारा मोअतमद ख़ैरख़्वा हूँ।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْ
بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ
بَصْطَةً فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

६९. और क्या तुम्हें इसका अचंभा हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत आई तुम में कि एक मर्द की मअरिफ़त कि वो तुम्हे डराये और याद करो जब उसने तुम्हें क़ौमे नूह का जा नशीन किया और तुम्हारे बदन का फ़ैलाओ बढ़ाया तो अल्लाह की नेअमतें याद करो कि कहीं तुम्हारा भला हो।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ
وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

७०. बोले क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम एक अल्लाह को पूजें और जो हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़ दें तो लाओ जिसका हमें वअदा दे रहे हो अगर सच्चे हो।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ
رِجْسٌ وَّغَضَبٌ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ
اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ
مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ فَانْتَظِرُوْٓا
اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾

७१. कहा ज़रूर तुमपर तुम्हारे रब का अज़ाब और ग़ज़ब पड़गया क्या मुझसे ख़ाली उन नामों में झगड़ रहे हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये अल्लाह ने उनकी कोई सनद न उतारी तो रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ देखता हूँ।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ
مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

७२. तो हमने उसे और उसके साथ वालों को अपनी एक बड़ी रहमत फ़रमाकर निजात दी और जो हमारी आयतें झुठलाते थे उनकी जड़ काट

दी और वो ईमान लाने वाले न थे।

रुकूअ १०

७३. और समूद की तरफ़ उनकी बिरादरी से स्वालेह़ को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नही बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रौशन दलील आई ये अल्लाह का नाक़ा है तुम्हारे लिये निशानी तो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन मे खाये और उसे बुराई से हाथ न लगाओ कि तुम्हे दर्दनाक अज़ाब आयेगा।

७४. और याद किया करो जब तुम को आद का जा नशीन किया और मुल्क मे जगह दी कि नर्म ज़मीन मे महल बनाते हो और पहाड़ो मे मकान तराशते हो तो अल्लाह की नेअमते याद करो और ज़मीन मे फ़साद मचाते न फिरो।

७५. उसकी क़ौम के तकब्बुर वाले कमज़ोर मुसलमानो से बोले क्या तुम जानते हो कि स्वालेह़ अपने रब के रसूल है, बोले वो जो कुछ लेकर भेजे गये हम उसपर ईमान रखते है।

७६. मुतकब्बिर बोले जिस पर तुम ईमान लाये हमे उससे इन्कार है।

بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾
ع وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ
اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ
وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾
وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ
عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِی الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ
مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ
الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ
وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾
قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ
قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ
اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا
مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ
اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾
قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا بِالَّذِیْۤ

اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ٧٦
فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ
رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ٧٧
فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ
دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ٧٨
فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ
اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ
وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ٧٩
وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ
الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ
مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ٨٠
اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ
دُوْنِ النِّسَآءِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ
مُّسْرِفُوْنَ ٨١
وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ
اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ٨٢
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ

७७. पस नाक़ा की कूचें काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ स्वालेह़ हम पर ले आओ जिस का तुम वअ़दा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो।

७८. तो उन्हें ज़लज़लों ने आ लिया तो सुबह़ को अपने घरों में औन्धे पड़े रह गये।

७९. तो स्वालेह़ ने उनसे मुँह फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुँचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम ख़ैरख़्वाहों के ग़रज़ी (पसंद करने वाले) ही नहीं।

८०. और लूत को भेजा जब उसने अपनी क़ौम से कहा क्या वो बेह़याई करते हो जो तुमसे पहले जहान में किसी ने न की।

८१. तुम तो मर्दों के पास शहवत से जाते हो। औरतें छोड़कर, बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र गये।

८२. और उसकी क़ौम का कुछ जवाब न था मगर यही कहना कि उनको अपनी बस्ती से निकाल दो ये लोग तो पाकीज़गी चाहते हैं।

८३. तो हमने उसे और उसके घरवालों को नजात दी मगर उस की

औरत वो रह जाने वालो में हुई।

८४. और हमने उनपर एक मेंह बरसाया तो देखो कैसा अन्जाम हुआ मुजरिमों का।

रुकूअ ११

८५. और मदयन की तरफ़ उनकी बिरादरी से शुएब को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं। बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आई तो नाप और तौल पूरी करो और लोगों की चीजे घटाकर न दो और ज़मीन में इन्तेज़ाम के बाद फ़साद न फैलाओ ये तुम्हारा भला है अगर ईमान लाओ।

८६. और हर रास्ते पर यूँ न बैठो कि राहगीरों को डराओ और अल्लाह की राह से उन्हें रोको जो उसपर ईमान लाए और उसमें कजी चाहो और याद करो जब तुम थोड़े थे, उसने तुम्हें बढ़ा दिया और देखो फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुआ।

८७. और अगर तुम में एक गिरोह उसपर ईमान लाया जो मैं लेकर भेजा गया और एक गिरोह ने न माना तो ठहरे रहो यहाँतक कि अल्लाह हम में फ़ैसला करे और अल्लाह का फ़ैसला सब से बेहतर ।

كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾
وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾
وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا
النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى
الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾
وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ
وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ
اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا
اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۪ وَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾
وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا
بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ
يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ
بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ
قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ
آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ
فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾

८८. उसकी कौम के मुतकब्बिर सरदार बोले ऐ शुएब क़सम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले मुसलमानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ कहा क्या अगरचे हम बेज़ार हों।

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا
فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ
مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ
فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ
وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى
اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ
الْفَاتِحِينَ ﴿٨٩﴾

८९. ज़रूर हम अल्लाह पर झूठ बाँधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आजाएँ बाद इसके कि अल्लाह ने हमें उससे बचाया है और हम मुसलमानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर ये कि अल्लाह चाहे जो हमारा रब है हमारे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत है अल्लाह ही पर भरोसा किया ऐ हमारे रब हममें और हमारी क़ौम में हक़ फ़ैसला कर और तेरा फ़ैसला सबसे बेहतर है।

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ
إِذًا لَخَاسِرُونَ ﴿٩٠﴾

९०. और उसकी क़ौम के काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुएब के ताबेअ हुए तो ज़रूर तुम नुक़सान में रहोगे।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي
دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩١﴾

९१. तो उन्हे ज़लज़ला ने आलिया तो सुबह़ अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَنْ لَمْ يَغْنَوْا
فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا

९२. शुएब को झुठलाने वाले गोया उन घरों में कभी रहे ही न थे

शुएब को झुठलाने वाले ही तबाही में पड़े।

كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ۝٩٢

९३. तो शुएब ने उनसे मुँह फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुँचा चुका और तुम्हारे भले को नसीहत की तो क्यों कर ग़म करूँ काफ़िरों का।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۝٩٣

रुकूअ १२

९४. और न भेजा हमने किसी बस्ती में कोई नबी मगर ये कि उसके लोगों को सख़्ती और तकलीफ़ में पकड़ा कि वो किसी तरह ज़ारी करें।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ۝٩٤

९५. फिर हमने बुराई की जगह भलाई बदल दी यहाँ तक कि वो बहुत हो गए और बोले बेशक हमारे बाप दादा को रंज-ो राहत पहुँचे थे तो हमने उन्हें अचानक उनकी ग़फ़लत में पकड़ लिया।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩٥

९६. और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो ज़रूर हम उनपर आसमान और ज़मीन से बरकतें खोल देते मगर उन्होंने तो झुठलाया तो हमने उन्हें उन के किए पर गिरफ़्तार किया।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٩٦

९७. क्या बस्तियों वाले नहीं डरते कि उनपर हमारा अज़ाब रात को आए जब वो सोते हों।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ۝٩٧

९८. या बस्तियों वाले नहीं डरते

اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ

بَأْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾

कि उनपर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आए
जब वो खेल रहे हों।

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ
مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ ع

९९. क्या अल्लाह की ख़फ़ी
तदबीर से बेख़बर है तो अल्लाह की
ख़फ़ी तदबीर से निडर नही होते मगर
तबाही वाले।

रुकूअ १३

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ
مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ
بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

१००. और क्या वो जो ज़मीन
के मालिकों के बाद उसके वारिस हुए
उन्हे इतनी हिदायत न मिली कि हम
चाहें तो उन्हे उनके गुनाहों पर आफ़त
पहुँचाएँ और हम उनके दिलों पर मुहर
करते हैं कि वो कुछ नही सुनते।

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ
اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا
كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ
عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾

१०१. ये बस्तियाँ है जिनके
अह्वाल हम तुम्हे सुनाते है और बेशक
उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें
लेकर आए तो वो इस क़ाबिल न हुए
कि वो उसपर ईमान लाते जिसे पहले
झुठला चुके थे अल्लाह यूँ ही छाप
लगा देता है काफ़िरों के दिलों पर ।

وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ
عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ
لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾

१०२. और उनमें अक्सर को
हमने क़ौल का सच्चा न पाया और
ज़रूर उनमें अक्सर को बे हुक्म ही
पाया।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى
بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا
بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

१०३. फिर उनके बाद हमने मूसा
को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन
और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा
तो उन्होंने उन निशानियों पर ज़्यादती
की तो देखो कैसा अन्जाम हुआ मुफ़्सिदों
का।

وَقَالَ مُوسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ
مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

१०४. और मूसा ने कहा, ऐ फ़िरऔन मैं परवर दिगारे आलम का रसूल हूँ।

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ
اِلَّا الْحَقَّ ۗ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾

१०५. मुझे सज़ावार है कि अल्लाह पर न कहूँ मगर सच्ची बात मैं तुम सब के पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ तो बनी इसराईल को मेरे साथ छोड़ दे।

قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَأْتِ
بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾

१०६. बोला अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो लाओ अगर सच्चे हो।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ
مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾

१०७. तो मूसा ने अपना असा डाल दिया वो फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़दहा हो गया।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ
لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

१०८. और अपना हाथ गिरेबान में डालकर निकाला तो वो देखने वालों के सामने जगमगाने लगा।

रुकूअ १४

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ
هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾

१०९. क़ौमे फ़िरऔन के सरदार बोले ये तो एक इल्म वाला जादूगर है।

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ
فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾

११०. तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाला चाहता है तो तुम्हारा क्या मश्वरा है।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي
الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾

१११. बोले उन्हें और उनके भाई को ठहरा और शहरों में लोग जमअ करने वाले भेज दे।

११२. कि हर इल्मवाले जादूगर को तेरे पास ले आएं।

११३. और जादूगर फ़िरऔन के पास आए बोले कुछ हमें इनआम मिलेगा अगर हम ग़ालिब आएं।

११४. बोला हाँ और उस वक़्त तुम मुक़र्रब हो जाओगे ।

११५. बोले ऐ मूसा या तो आप डालें या हम डालने वाले हों।

११६. कहा तुम ही डालो जब उन्होंने डाला लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें डराया और बड़ा जादू लाए।

११७. और हमने मूसा को 'वही' फ़रमाई कि अपना अ़सा डाल तो नागाह उनकी बनावटों को निगलने लगा।

११८. तो हक़ साबित हुआ और उनका काम बातिल हुआ।

११९. तो यहाँ वो मग़लूब पड़े और ज़लील होकर पलटे।

१२०. और जादूगर सज्दे में गिरा दिए गए।

१२१. बोले हम ईमान लाए जहान के रब पर

१२२. जो रब है मूसा और हारून का ।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾

وَجَآءَ ٱلسَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوٓاْ إِنَّ
لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ ٱلْغَٰلِبِينَ ﴿١١٣﴾

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾

قَالُواْ يَٰمُوسَىٰٓ إِمَّآ أَن تُلْقِيَ وَإِمَّآ
أَن نَّكُونَ نَحْنُ ٱلْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾

قَالَ أَلْقُواْۖ فَلَمَّآ أَلْقَوْاْ سَحَرُوٓاْ أَعْيُنَ
ٱلنَّاسِ وَٱسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَآءُو
بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَلْقِ
عَصَاكَۖ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا
يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾

فَوَقَعَ ٱلْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُواْ
يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾

فَغُلِبُواْ هُنَالِكَ وَٱنقَلَبُواْ صَٰغِرِينَ ﴿١١٩﴾

وَأُلْقِيَ ٱلسَّحَرَةُ سَٰجِدِينَ ﴿١٢٠﴾ ۩

قَالُوٓاْ ءَامَنَّا بِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٢١﴾

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ﴿١٢٢﴾

१२३. फ़िरऔन बोला तुम उसपर ईमान ले आए क़ब्ल इसके कि मै तुम्हे इजाज़त दूँ ये तो बड़ा जअ्ल (फ़रेब) है जो तुम सबने शहर मे फैलाया है कि शहर वालो को उससे निकाल दो तो अब जान जाओगे।

१२४. क़सम है कि मै तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूँगा फिर तुम सब को सूली दूँगा।

१२५. बोले हम अपने रब की तरफ़ फिरने वाले है।

१२६. और तुझे हमारा क्या बुरा लगा यही ना कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वो हमारे पास आएं ऐ रब हमारे हमपर सब्र उन्डेल दे और हमें मुसलमान उठा।

रुकूअ १५

१२७. और क़ौमें फ़िरऔन के सरदार बोले क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को इसलिए छोड़ता है कि वो ज़मीन में फ़साद फैलाएं और मूसा तुझे और तेरे ठहराए हुए मअबूदों को छोड़ दे बोला अब हम उनके बेटों को क़त्ल करेंगे और उनकी बेटियाँ ज़िन्दा रखेंगे और हम बेशक उनपर ग़ालिब हैं।

१२८. मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया अल्लाह की मदद चाहो और सब्र करो बेशक ज़मीन का मालिक अल्लाह है अपने बन्दों में जिसे चाहे वारिस बनाए और आख़िर मैदान परहेज़गारों के हाथ है।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ
اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ
فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ
خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾
قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ ج

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ
رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ ع

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ
مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ
وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ
اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْىٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا
فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ
وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا
مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

१२९. बोले हम सताए गए आपके आने से पहले और आपके तशरीफ़ लाने के बाद कहा क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और उसकी जगह ज़मीन का मालिक तुम्हे बनाए फिर देखे कैसे काम करते हो।

قَالُوٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾

रुकूअ १६

१३०. और बेशक हमने फ़िरऔन वालो को बरसो के क़हत और फलो के घटाने से पकड़ा कि कही वो नसीहत माने।

وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

१३१. तो जब उन्हे भलाई मिलती कहते ये हमारे लिए है और जब बुराई पहुँचती तो मूसा और उसके साथ वालो से बदशगुनी लेते सुनलो उनके नसीबा की शामत तो अल्लाह के यहाँ है लेकिन उनमें अक्सर को ख़बर नही।

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾

१३२. और बोले तुम कैसी भी निशानी लेकर हमारे पास आओ कि हमपर उससे जादू करो हम किसी तरह तुमपर ईमान लाने वाले नहीं।

وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

१३३. तो भेजा हमने उनपर तूफ़ान और टिड्डी और घुन (या कल्ली या जूएँ) और मेंडक और ख़ून जुदाजुदा निशानियाँ तो उन्होने तकब्बुर किया और वो मुजरिम क़ौम थी।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا
يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ
عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ
لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٣٤﴾

१३४. और जब उनपर अज़ाब पड़ता कहते ऐ मूसा हमारे लिए अपने रब से दुआ करो उस अहद के सबब जो उसका तुम्हारे पास है बेशक अगर तुम हमपर अज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएँगे और बनी इसराईल को तुम्हारे साथ कर देंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ
هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿١٣٥﴾

१३५. फिर जब हम उनसे अज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिए जिस तक उन्हें पहुँचना है जभी वो फिर जाते।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ
بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا
غٰفِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾

१३६. तो हमने उनसे बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया इसलिए कि हमारी आयतें झुठलाते और उनसे बेख़बर थे।

وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا
يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ
وَمَغَارِبَهَا الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۖ
وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ۖ وَ
دَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَ
قَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿١٣٧﴾ ع

१३७. और हमने उस क़ौम को जो दबा ली गई थी उस ज़मीन के पूरब पच्छिम का वारिस किया जिस में हमने बरकत रखी और तेरे रब का अच्छा वअदा बनी इसराईल पर पूरा हुआ बदला उनके सब्र का और हमने बरबाद कर दिया जो कुछ फ़िरऔन और उसकी क़ौम बनाती, और जो चुनाइयाँ उठाते थे (तामीर करते थे)।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ
فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى

१३८. और हमने बनी इसराईल को दरिया पार उतारा तो उनका गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ कि अपने

बुतों के आगे आसन मारे थे (जमकर बैठे थे) बोले ऐ मूसा हमें एक ख़ुदा बना दे जैसा उनके लिए इतने ख़ुदा है बोले तुम ज़रूर जाहिल लोग हो।

१३९. ये हाल तो बरबादी का है जिसमें ये लोग हैं और जो कुछ कर रहे हैं निरा बातिल है।

१४०. कहा क्या अल्लाह के सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा तलाश करूं हालाँकि उसने तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत दी।

१४१. और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी कि तुम्हें बुरी मार देते तुम्हारे बेटे ज़िबह करते और तुम्हारी बेटियाँ बाक़ी रखते और उसमें रब का बड़ा फ़ज़्ल हुआ।

रूकूअ १७

-१४२. और हमने मूसा से तीस रात का वअदा फ़रमाया और उनमें दस और बढ़ा कर पूरी की तो उसके रब का वअदा पूरी चालीस रात का हुआ और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा मेरी क़ौम पर मेरे नायब रहना और इसलाह करना और फ़सादियों की राह को दख़ल न देना।

१४३. और जब मूसा हमारे वअदे पर हाज़िर हुआ और उससे उसके रब ने कलाम फ़रमाया अर्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे

أَصْنَامٍ لَّهُمْ قَالُوا يَا مُوسَى اجْعَل
لَّنَا إِلَٰهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ قَالَ
إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾
إِنَّ هَٰؤُلَاءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبَاطِلٌ
مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾
قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَٰهًا وَهُوَ
فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤٠﴾
وَإِذْ أَنجَيْنَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يُقَتِّلُونَ
أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي
ع ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿١٤١﴾
وَوَاعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَ
أَتْمَمْنَاهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهِ
أَرْبَعِينَ لَيْلَةً وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ
هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ
وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾
وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ
رَبُّهُ قَالَ رَبِّ أَرِنِي أَنظُرْ إِلَيْكَ
قَالَ لَن تَرَانِي وَلَٰكِنِ انظُرْ

देखूँ फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा हाँ इस पहाड़ की तरफ़ देख ये अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अनक़रीब तू मुझे देख लेगा। फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा गिरा बेहोश फिर जब होश हुआ बोला पाकी है तुझे मैं तेरी तरफ़ रुजूअ लाया और मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ।

१४४. फ़रमाया ऐ मूसा मैंने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से, तो ले जो मैं ने तुझे अता फ़रमाया और शुक्र वालों में हो।

१४५. और हमने उसके लिए तख़्तियों में लिख दी हर चीज़ की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील और फ़रमाया ऐ मूसा इसे मज़बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इसकी अच्छी बातें इख़्तियार करें अनक़रीब मैं तुम्हें दिखाऊँगा बे हुक्मों का घर।

१४६. और मैं अपनी अयतों से उन्हे फेर दूँगा जो ज़मीन में ना हक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं और अगर सब निशानियाँ देखें उनपर ईमान न लाएँ और अगर हिदायत की राह देखें उसमें चलना पसन्द न करें और गुमराही का रास्ता नज़र पड़े तो उसमें चलने को मौजूद हो जायें ये इसलिए कि उन्होने

إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ
فَسَوْفَ تَرَانِي ۚ فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُ
لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ
صَعِقًا ۚ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَانَكَ
تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٣﴾

قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ
عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَاتِي وَبِكَلَامِي
فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٤﴾

وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ
شَيْءٍ مَوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ
شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ
يَأْخُذُوا بِأَحْسَنِهَا ۚ سَأُرِيكُمْ
دَارَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٤٥﴾

سَأَصْرِفُ عَنْ آيَاتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا
كُلَّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِنْ
يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ
سَبِيلًا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ
يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا

हमारी आयतें झुठलाईं और उन से बेख़बर बने।

बِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾

१४७. और जिन्होंने हमारी आयतें और आख़िरत के दरबार को झुठलाया उन का सब किया धरा अकारत गया उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वही जो करते थे।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۗ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾

रुकूअ १८

१४८. और मूसा के बाद उस की क़ौम अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बना बैठी बेजान का धड़ गाय की तरह आवाज़ करता क्या न देखा कि वो उनसे न बात करता है और न उन्हें कुछ राह बताए उसे लिया और वो ज़ालिम थे।

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۗ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾

१४९. और जब पछताए और समझे कि हम बहके, बोले अगर हमारा रब हम पर मेहर न करे और हमें न बख़्शे तो हम तबाह हुए।

وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

१५०. और जब मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा गुस्से में भरा झुन्झलाया हुआ, कहा तुम ने क्या बुरी मेरी जानशीनी की मेरे बाद क्या तुमने अपने रब के हुक्म से जल्दी की और तख़्तियाँ डाल दीं और अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगा कहा ऐ मेरे माँजाए, क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۗ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ

कि मुझे मार डालें तू मुझ पर दुश्मनों को न हँसा और मुझे ज़ालिमों में न मिला।

१५१. अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत के अन्दर ले ले और तू सब मेहर वालों से बढ़कर मेहर वाला।

रुकूअ ११

१५२. बेशक वो जो बछड़ा ले बैठे अन्क़रीब उन्हें उनके रब का ग़ज़ब और ज़िल्लत पहुँचना है दुनिया की ज़िन्दगी में और हम ऐसा ही बदला देते हैं बुहतानहायों (बाँधने वालोंको) को।

१५३. और जिन्होंने बुराइयाँ कीं और उनके बाद तौबा की और ईमान लाए तो उसके बाद तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है।

१५४. और जब मूसा का गुस्सा थमा तख़्तियाँ उठा लीं और उनकी तहरीर में हिदायत और रहमत है उनके लिए जो अपने रब से डरते हैं।

१५५. और मूसा ने अपनी क़ौम से सत्तर मर्द हमारे वअ़दे के लिए चुने फिर जब उन्हें ज़ल्ज़ले ने लिया, मूसा ने अर्ज़ की ऐ रब मेरे तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे हलाक कर

فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي
مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥٠﴾

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا
فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾ ع

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ
سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَذِلَّةٌ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا
مِنْ بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ
بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ
أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى
وَرَحْمَةٌ لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ
يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾

وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ
رَجُلًا لِمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ
الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
أَهْلَكْتَهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ

أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ
هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ ۖ تُضِلُّ بِهَا مَنْ
تَشَاءُ وَتَهْدِي مَنْ تَشَاءُ ۖ أَنْتَ وَلِيُّنَا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنْتَ خَيْرُ
الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾

देता क्या तू हमें उस काम पर हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बे अक़्लों ने किया वो नहीं मगर तेरा आज़माना तू उसे बहकाए जिसे चाहे और राह दिखाए जिसे चाहे तू हमारा मौला है तू हमें बख़्श दे और हमपर मेहर कर और तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है।

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ
عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَ
رَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا
لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾

१५६. और हमारे लिए इस दुनिया में भलाई लिख और आख़ेरत में बेशक हम तेरी तरफ़ रूजूअ लाए फ़रमाया मेरा अज़ाब मैं जिसे चाहूँ दूं और मेरी रहमत हर चीज़ को घेरे है तो अन्क़रीब मैं नेअ़मतों को उनके लिए लिख दूँगा जो डरते और ज़कात देते हैं और वो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ
الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا
عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ
يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ
وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ
عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي
كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ

१५७. वो जो गुलामी करेंगे उस रसूल बे पढ़े ग़ैब की ख़बरें देने वाले की जिसे लिखा हुआ पाएँगे अपने पास तौरेत और इन्जील मे! वो उन्हे भलाई का हुक्म देगा और बुराई से मनअ फ़रमाएगा और सुथरी चीज़ें उनके लिए हलाल फ़रमाएगा और गन्दी चीज़े उनपर हराम करेगा और उनपर से वो बोझ और गले के फन्दे जो उनपर थे उतारेगा तो वो जो इसपर ईमान लाएं

और उसकी तअज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उसके साथ उतरा वही बा मुराद हुए।

रुकूअ २०

१५८. तुम फ़रमाओ ऐ लोगों मैं तुम सब की तरफ़ उस अल्लाह का रसूल हूँ कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी को है उसके सिवा कोई मअबूद नही जिलाए और मारे तो ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल बे पढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान लाते हैं! और इनकी गुलामी करो कि तुम राह पाओ।

१५९. और मूसा की क़ौम से एक गिरोह है कि हक़ की राह बताता और उसी से इन्साफ़ करता।

१६०. और हमने उन्हें बांट दिया बारह क़बीले गिरोह गिरोह और हमने 'वही' भेजी मूसा को जब उससे उसकी क़ौम ने पानी मांगा कि इस पत्थर पर अपना असा मारो तो उसमें से बारह चश्मे फूट निकले हर गिरोह ने अपना घाट पहचान लिया और हमने उनपर अब्र सायेबान किया और उनपर मन

وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ
الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ
بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ
بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا
اُمَمًا ۭ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ
اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ
بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ
اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۭ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۭ وَظَلَّلْنَا
عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ

व सलवा उतारा खाओ हमारी दी हुई पाक चीज़ें और उन्होंने हमारा कुछ नुक़सान न किया लेकिन अपनी ही जानों का बुरा करते थे।

الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

१६१. और याद करो जब उनसे फ़रमाया गया इस शहर में बसो और इसमें जो चाहो खाओ और कहो गुनाह उतरे और दरवाज़े में सज्दे करते दाख़िल हो हम तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे अनक़रीब नेकों को ज़्यादा अता फ़रमाएगा।

وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ۭ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾

१६२. तो उनमें के ज़ालिमों ने बात बदल दी उसके ख़िलाफ़ जिसका उन्हें हुक्म था तो हमने उनपर आसमान से अज़ाब भेजा बदला उनके ज़ुल्म का।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾ ع

रुकूअ २१

१६३. और उनसे हाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया किनारे थी जब वो हफ़्ते के बारे में हद से बढ़ते जब हफ़्ते के दिन उनकी मछलियाँ पानी पर तैरती उनके सामने आतीं और जो दिन हफ़्ते का न होता न आतीं इस तरह हम उन्हें आज़माते थे उनकी बे हुक्मी के सबब।

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾

१६४. और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा क्यों नसीहत करते हो उन लोगों को जिन्हें अल्लाह हलाक

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ

करने वाला है या उन्हें सख़्त अज़ाब देने वाला बोले तुम्हारे रब के हुज़ूर मअ्ज़िरत को और शायद उन्हें डर हो।

१६५. फिर जब भुला बैठे जो नसीहत उन्हें हुई थी हमने बचा लिए वो जो बुराई से मनअ् करते थे और ज़ालिमों को बुरे अज़ाब में पकड़ा बदला उनकी ना फ़रमानी का।

१६६. फिर जब उन्होंने मुमानअत के हुक्म से सर कशी की हमने उनसे फ़रमाया होजाओ बंदर धुतकारे हुए।

१६७. और जब तुम्हारे रब ने हुक्म सुना दिया कि ज़रूर क़यामत के दिन तक उनपर ऐसे को भेजता रहूँगा जो उन्हें बुरी मार चखाए बेशक तुम्हारा रब ज़रूर जल्द अज़ाब वाला है और बेशक वो बख़्शने वाला मेहरबान है।

१६८. और उन्हें हमने ज़मीन में मुतफ़र्रिक़ कर दिया गिरोह गिरोह उनमें कुछ नेक हैं और कुछ और तरह के और हमने उन्हें भलाइयों और बुराइयों से आज़माया कि कहीं वो रूजूअ् लाएँ।

१६९. फिर उनकी जगह उनके बाद वो ना-ख़लफ़ आए कि किताब के वारिस हुए इस दुनिया का माल लेते हैं और कहते हैं अब हमारी

عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ
رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾
فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا
الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا
الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا
كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾
فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا
لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾
وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ
الْعَذَابِ ۗ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ
وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٦٧﴾
وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۖ
مِنْهُمُ الصَّالِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ
ذَٰلِكَ ۖ وَبَلَوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَ
السَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾
فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا
الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَٰذَا
الْأَدْنَىٰ وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَ

बख़्शिश होगी और अगर वैसा ही माल उनके पास और आए तो लेलें क्या उनपर किताब में अहद न लिया गया कि अल्लाह की तरफ़ निस्बत न करें मगर हक़ और उन्होंने उसे पढ़ा और बेशक पिछला घर बेहतर है परहेज़गारों को तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।

१७०. और वो जो किताब को मज़बूत थामते है और उन्होंने नमाज़ कायम रखी हम नेकों का नेग (अज्र) नहीं गंवाते।

१७१. और जब हमने पहाड़ उनपर उठाया गोया वो सायबान है और समझे कि वो उनपर गिर पड़ेगा लो जो हमने तुम्हें दिया ज़ोर से और याद करो जो उसमें है कि कहीं तुम परहेज़गार हो।

रुकूअ २२

१७२. और ऐ महबूब याद करो जब तुम्हारे रब ने अवलादें, आदम की पुश्त से उनकी नस्ल निकाली और उन्हे खुद उनपर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं सब बोले क्यों नहीं हम गवाह हुए कि कहीं क़यामत के दिन कहो कि हमें इसकी ख़बर न थी।

१७३. या कहो कि शिर्क तो

إِنْ يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِثْلُهُ يَأْخُذُوهُ
أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ الْكِتٰبِ
أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ
وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۗ وَالدَّارُ الْآخِرَةُ
خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾

وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتٰبِ وَ
أَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۗ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ
الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ
ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ ۚ
خُذُوا مَا آتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا
مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ
مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ
عَلَى أَنْفُسِهِمْ ۚ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ
قَالُوا بَلَىٰ ۛ شَهِدْنَا ۛ أَنْ تَقُولُوا
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا
غٰفِلِينَ ﴿١٧٢﴾

पहले हमारे बाप दादा ने किया और हम उनके बाद बचे हुए तो क्या तू हमें इसपर हलाक फ़रमाएगा जो अहले बातिल ने किया।

१७४. और हम इसी तरह आयतें रंग रंग से बयान करते हैं और इसलिए कि कहीं वो फिर आएँ।

१७५. और ऐ महबूब उन्हें उसका अहवाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दीं तो वो उनसे साफ़ निकल गया तो शैतान उसके पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया।

१७६. और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते मगर वो तो ज़मीन पकड़ गया और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ हुआ तो उसका हाल कुत्ते की तरह है तू उसपर हमला करे तो जबान निकाले और छोड़ दे तो ज़बान निकाले ये हाल है उनका जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाई तो तुम नसीहत सुनाओ कि कहीं वो ध्यान करें।

१७७. क्या बुरी कहावत है उनकी जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाई और अपनी ही जान का बुरा करते थे।

१७८. जिसे अल्लाह राह दिखाए तो वही राह पर है और जिसे गुमराह करे तो वही नुक़सान में रहे।

أَوْ تَقُولُوٓا إِنَّمَآ أَشْرَكَ ءَابَآؤُنَا
مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنۢ
بَعْدِهِمْ ۚ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
ٱلْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾
وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ وَلَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿١٧٤﴾
وَٱتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ٱلَّذِىٓ ءَاتَيْنَٰهُ
ءَايَٰتِنَا فَٱنسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ ٱلشَّيْطَٰنُ
فَكَانَ مِنَ ٱلْغَاوِينَ ﴿١٧٥﴾
وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَٰهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُۥٓ
أَخْلَدَ إِلَى ٱلْأَرْضِ وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ ۚ
فَمَثَلُهُۥ كَمَثَلِ ٱلْكَلْبِ ۚ إِن تَحْمِلْ
عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَث ۚ
ذَّٰلِكَ مَثَلُ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا
بِـَٔايَٰتِنَا ۚ فَٱقْصُصِ ٱلْقَصَصَ
لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾
سَآءَ مَثَلًا ٱلْقَوْمُ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا
بِـَٔايَٰتِنَا وَأَنفُسَهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٧٧﴾
مَن يَهْدِ ٱللَّهُ فَهُوَ ٱلْمُهْتَدِى ۖ وَ

१७९. और बेशक हमने जहन्नम के लिए पैदा लिए बहुत जिन्न और आदमी, वो दिल रखते है जिन मे समझ नही और वो आँखे जिनसे देखते नहीं और वो कान जिनसे सुनते नहीं वो चौपायों की तरह हैं बल्कि उनसे बढ़कर गुमराह वही ग़फ़लत में पड़े है।

१८०. और अल्लाह ही के है बहुत अच्छे नाम तो उसे उनसे पुकारो और उन्हें छोड़ दो जो उसके नामो में हक़ से निकलते है वो जल्द अपना किया पाएँगे।

१८१. और हमारे बनाए हुओं मे एक गिरोह वो है कि हक़ बताए और उसपर इन्साफ़ करें।

रुकूअ २३

१८२. और जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाई जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता अज़ाब की तरफ़ ले जाएँगे जहाँ से उन्हें ख़बर न होगी।

१८३. और मै उन्हे ढील दूँगा बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर बहुत पक्की है।

१८४. क्या सोचते नही कि उनके साहिब को जुनून से कुछ इलाक़ा नहीं वो तो साफ़ डर सुनाने वाले हैं।

१८५. क्या उन्होंने निगाह न की

مَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۸﴾

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ
لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ
لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ
لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ
بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪
وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ
سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ
بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۸۱﴾ ع

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ
مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۲﴾

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۱۸۳﴾

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ٚ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ
جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸۴﴾

اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ
وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ
اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ
يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾

आसमानों और ज़मीन की सल्तनत मे और जो-जो चीज़ अल्लाह ने बनाई और ये कि शायद उनका वअ़दा नज़दीक आ गया हो तो उसके बाद और कौनसी बात पर यक़ीन लाएँगे।

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۚ وَ
يَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾

१८६. जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटका करें।

يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ
قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا
يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا
بَغْتَةً ۭ يَسْــَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۭ
قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾

१८७. तुमसे क़यामत को पूछते हैं कि वो कब को ठहरी है तुम फ़रमाओ इसका इल्म तो मेरे रब के पास है उसे वही उसके वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। भारी पड़ रही है आसमानों और ज़मीन में तुम पर न आएगी मगर अचानक तुम से ऐसा पूछते है गोया तुम ने उसे खूब तहक़ीक़ कर रखा है तुम फ़रमाओ उसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं।

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّ
لَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ كُنْتُ
اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ
الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْۗءُ ۚ اِنْ اَنَا
اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾

१८८. तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का खुद मुख़्तार नहीं मगर जो अल्लाह चाहे और अगर मैं ग़ैब जान लिया करता तो यूँ होता कि मैं ने बहुत भलाई जमा कर ली और मुझे कोई बुराई न पहुँची मैं तो यही डर और खुशी सुनाने वाला हूँ उन्हें जो ईमान रखते हैं।

रुकूअ २४

१८९. वही है जिसने तुम्हे एक
जान से पैदा किया और उसीमें से
उसका जोड़ा बनाया कि उससे चैन
पाए फिर जब मर्द उसपर छाया उसे
एक हलका सा पेट रह गया तो उसे
लिए फिरा की फिर जब बोझल पड़ी
दोनों ने अपने रब से दुआ की ज़रूर
अगर तू हमें जैसा चाहिए बच्चा देगा
तो बेशक हम शुक्रगुज़ार होंगे.

१९०. फिर जब उसने उन्हें जैसा
चाहिये बच्चा अता फ़रमाया उन्होंने उसकी
अता में उसके साझी ठहराए तो अल्लाह
को बरतरी है उनके शिर्क से।

१९१. क्या उसे शरीक करते हैं
जो कुछ न बनाए और वो खुद बनाए
हुए हैं।

१९२. और न वो उनको कोई
मदद पहुँचा सकें और न अपनी जानों
की मदद करें।

१९३. और अगर तुम उन्हें राह
की तरफ़ बुलाओ तो तुम्हारे पीछे न
आयें तुमपर एकसा है चाहे उन्हें पुकारो
या चुप रहो।

१९४. बेशक वो जिनको तुम
अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी
तरह बन्दे हैं तो उन्हें पुकारो फिर वो

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ
وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا
لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ
حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ
دَعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا
لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ١٨٩

فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ
شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا فَتَعَالَى اللَّهُ
عَمَّا يُشْرِكُونَ ١٩٠

أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ
يُخْلَقُونَ ١٩١

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَ
لَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ١٩٢

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا
يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ
أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ١٩٣

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ

فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो ।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۖ أَمْ
لَهُمْ أَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۖ أَمْ لَهُمْ
أَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۖ أَمْ
لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۗ قُلِ
ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ
فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾

१९५. क्या उनके पावों है जिनसे चलें या उनके हाथ हैं जिनसे गिरफ़्त करें या उनके आँखें हैं जिनसे देखें या उनके कान हैं जिनसे सुनें तुम फ़रमाओ कि अपने शरीकों को पुकारो और मुझ पर दावँ चलो और मुझे मोहलत न दो।

إِنَّ وَلِـۧيَّ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ
الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾

१९६. बेशक मेरा वाली अल्लाह है जिसने किताब उतारी और वो नेकों को दोस्त रखता है।

وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ أَنْفُسَهُمْ
يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٧﴾

१९७. और जिन्हें उसके सिवा पूजते हो वो तुम्हारी मदद नहीं कर सकते और न खुद अपनी मदद करें।

وَإِنْ تَدْعُوْهُمْ إِلَى الْهُدٰى لَا
يَسْمَعُوْا ۖ وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ إِلَيْكَ
وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٩٨﴾

१९८. और अगर तुम उन्हें राह की तरफ़ बुलाओ तो न सुनें और तू उन्हें देखे कि वो तेरी तरफ़ देख रहे हैं और उन्हें कुछ भी नहीं सूझता ।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَ
أَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿١٩٩﴾

१९९. ऐ महबूब मुआफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुँह फेर लो ।

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ

२००. और ऐ सुनने वाले अगर शैतान तुझे कोई कोंचा (किसी बुरे काम पर उचकाए) दे तो अल्लाह की

पनाह मांग बेशक वही सुनता जानता है।

२०१. बेशक वो जो डर वाले हैं जब उन्हे किसी शैतानी ख़्याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उनकी आँखें खुल जाती हैं।

२०२. और वो जो शैतानों के भाई हैं शैतान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर कमी नही करते।

२०३. और ऐ महबूब जब तुम उनके पास कोई आयत न लाओ तो कहते है तुमने दिल से क्यों न बनाई तुम फ़रमाओ मैं तो उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ मेरे रब से 'वही' होती है ये तुम्हारे रब की तरफ़ से आँखें खोलना है और हिदायत और रहमत मुसलमानों के लिए।

२०४. और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगाकर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रहम हो।

२०५. और अपने रब को अपने दिल में याद करो ज़ारी और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुबह और शाम और गाफ़िलों में न होना।

२०६. बेशक वो जो तेरे रब के पास हैं उसकी इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उसकी पाकी बोलते और उसी को सज्दा क़रते है।

فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۚ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٠٠﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ
مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ
مُّبْصِرُوْنَ ﴿٢٠١﴾
وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ
ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾
وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا
اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى
اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ
رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠٣﴾
وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ
وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٢٠٤﴾
وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ
خِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ
بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ
مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٢٠٥﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ
عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ ع

सूरए अनफ़ाल

मदनी है और इसमें पछत्तर आयात और दस रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. ऐ महबूब तुमसे ग़नीमतों को पूछते है तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक अल्लाह और रसूल है तो अल्लाह से डरो और अपने आपस में मेल (सुलह सफ़ाई) रखो और अल्लाह और रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो।

२. ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाए उनके दिल डर जाएँ और जब उनपर उसकी आयतें पढ़ी जाएँ उनका ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें।

३. वो जो नमाज़ क़ायम रखें और हमारे दिए से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें।

४. यही सच्चे मुसलमान है इनके लिए दर्जे है इनके रब के पास और बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी।

५. जिस तरह ऐ महबूब तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से हक़ के साथ बरआमद किया और बेशक मुसलमानों का एक गिरोह उसपर नाख़ुश था.

६. सच्ची बात में तुमसे झगड़ते थे बाद इसके कि ज़ाहिर हो चुकी गोया वो आँखों देखी मौत की तरफ़

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّعَشْرُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ
لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا
ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١﴾

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ
اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّ
عَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٢﴾

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ
دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّ
رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٤﴾

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ
بِالْحَقِّ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
لَكٰرِهُوْنَ ﴿٥﴾

يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ

हाँके जाते हैं।

७. और याद करो जब अल्लाह ने तुम्हें वअदा दिया था कि उन दोनों गिरोहों में एक तुम्हारे लिए है और तुम ये चाहते थे कि तुम्हें वो मिले जिसमें काँटे का खटका नहीं (कोई नुक़सान न हो) और अल्लाह ये चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे।

८. कि सच को सच करे और झूठ को झूठा पड़े बुरा माने मुजरिम।

९. जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे तो उसने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूँ हजारों फ़रिश्तों की क़तार से।

१०. और ये तो अल्लाह ने किया मगर तुम्हारी ख़ुशी को और इसलिए कि तुम्हारे दिल चैन पायें और मदद नहीं मगर अल्लाह की तरफ़ से बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

रुकूअ २

११. जब उसने तुम्हें ऊँघ से घेर दिया तो उसकी तरफ़ से चैन थी (तसकीन थी) और आसमान से तुम पर पानी उतारा कि तुम्हें उससे सुथरा कर दे और शैतान की नापाकी तुमसे दूर फ़रमा दे और तुम्हारे दिलों को ढारस बँधाए और उससे तुम्हारे क़दम जमा दे।

كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ
يَنظُرُونَ ⑥

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ
أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ
الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَن
يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ
الْكَافِرِينَ ⑦

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ
كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ⑧

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ
أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ
مُرْدِفِينَ ⑨

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ
بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ
عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ⑩

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ
وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً
لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنكُمْ
رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ

१२. जब ऐ महबूब तुम्हारा रब फ़रिश्तों को 'वही' भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम मुसलमानों को साबित रखो अन्क़रीब मैं काफ़िरों के दिलों में हैबत डालूंगा तो काफ़िरों की गरदनों से उपर मारो और उनकी एक एक पोर (जोड़) पर ज़र्ब लगाओ।

१३. ये इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त की और जो अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त करे तो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

१४. ये तो चखो और उसके साथ ये है कि काफ़िरों को आग का अज़ाब है ।

१५. ऐ ईमानवालो जब काफ़िरों के लाम (लश्कर) से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन्हें पीठ न दो।

१६. और जो उस दिन उन्हे पीठ देगा मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअत में जा मिलने को तो वो अल्लाह के ग़ज़ब में पलटा और उसका ठिकाना दोज़ख है और क्या बुरी जगह पलटने की।

१७. तो तुमने उन्हें क़त्ल न किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया और ऐ मेहबूब वो ख़ाक जो तुमने फेंकी तुमने न फेंकी थी बल्कि अल्लाह ने फेंकी और इसलिए कि मुसलमानों को उससे अच्छा इनआम अता फ़रमाए

وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَٰٓئِكَةِ أَنِّي
مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا سَأُلْقِي
فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا
مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَٰفِرِينَ
عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوٓا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ
كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾

وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُٓ إِلَّا
مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ
فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَىٰهُ
جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ
وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ

رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً
حَسَنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾
ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾
اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ
وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ
اِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ
فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ
ع
اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ
تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا
وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾
اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ
الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾
وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ
وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ

बेशक अल्लाह सुनता जानता है।

१८. ये तो लो और उसके साथ ये है कि अल्लाह काफ़िरों का दाँव सुस्त करने वाला है।

१९. ऐ काफ़िरो अगर तुम फ़ैसला माँगते होतो ये फ़ैसला तुम पर आ चुका और अगर बाज़ आओ तो तुम्हारा भला है और अगर तुम फिर शरारत करो तो हम फिर सज़ा देंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हें कुछ काम न देगा चाहे कितना ही बहुत हो अगर उसके साथ ये है कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है।

२०. ऐ ईमानवालो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो और सुन सुनाकर उससे न फिरो।

२१. और उन जैसे न होना जिन्होंने कहा हमने सुना और वो नहीं सुनते।

२२. बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वो है जो बहरे, गूँगे हैं जिनको अक़्ल नहीं।

२३. और अगर अल्लाह उनमें कुछ भलाई जानता तो उन्हें सुना देता और अगर सुना देता जब भी अन्जामकार मुँह फेर कर पलट जाते।

२४. ऐ ईमानवालो अल्लाह और उसके रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिए बुलाए जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी और

जान लो कि अल्लाह का हुक्म आदमी और उसके दिली इरादों में हाइल हो जाता है और ये कि तुम्हें उसकी तरफ़ उठना है।

२५. और उस फ़ित्ना से डरते रहो जो हरगिज़ तुममें ख़ास ज़ालिमों को ही न पहुँचेगा और जान लो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

२६. और याद करो जब तुम थोड़े थे मुल्क में दबे हुए डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक न ले जाएँ तो उसने तुम्हें जगह दी और अपनी मदद से ज़ोर दिया और सुथरी चीज़ें तुम्हें रोज़ी दीं कि कहीं तुम एहसान मानो।

२७. ऐ ईमान वालो अल्लाह और रसूल से दग़ा न करो और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़यानत।

२८. और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फ़ित्ना है और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।

रुकूअ ४

२९. ऐ ईमानवालो अगर अल्लाह से डरोगे तो तुम्हें वो देगा जिस से हक़ को बातिल से जुदा कर लो और तुम्हारी बुराइयाँ उतार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

३०. और ऐ मेहबूब याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ मक्र करते थे

وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾
وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ
فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ
النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَ
رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ
وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ
فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ ع
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

कि तुम्हें बन्द कर लें या शहीद कर दें या निकाल दें और वो अपना सा मक्र करते थे और अल्लाह अपनी खुफ़िया तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की खुफ़िया तदबीर सब से बेहतर।

३१. और जब उनपर हमारी आयतें पढ़ी जाएँ तो कहते हैं हाँ हमने सुना हम चाहते तो ऐसी हम भी कह देते ये तो नहीं मगर अगलों के क़िस्से।

३२. और जब बोले कि ऐ अल्लाह अगर यही (कुरआन) तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई दर्दनाक अज़ाब हम पर ला।

३३. और अल्लाह का काम नहीं कि उन्हें अज़ाब करें जबतक ऐ महबूब तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो और अल्लाह उन्हें अज़ाब करने वाला नहीं जब तक वो बख़शिश माँग रहे हैं।

३४. और उन्हें क्या है कि अल्लाह उन्हें अज़ाब न करे वो तो मस्जिदे-हराम से रोक रहे हैं और वो उसके अहल नहीं उसके अवलिया तो परहेज़गार ही हैं मगर उनमें अक्सर को इल्म नहीं।

३५. और कअबा के पास उनकी नमाज़ नही मगर सीटी और ताली तो अब अज़ाब चखो बदला अपने कुफ्र का।

وَ اِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ
اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَ يَمْكُرُوْنَ وَ
يَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۳۰﴾
وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ
سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَاۤ ۙ
اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۱﴾
وَ اِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا
هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا
حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ
اَلِيْمٍ ﴿۳۲﴾
وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَ اَنْتَ
فِيْهِمْ ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ
وَ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۳۳﴾
وَ مَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَ هُمْ
يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ
مَا كَانُوْۤا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا
الْمُتَّقُوْنَ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾
وَ مَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ
اِلَّا مُكَآءً وَّ تَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا

३६ बेशक काफ़िर अपने माल ख़र्च करते है कि अल्लाह की राह से रोके तो अब उन्हें ख़र्च करेंगे फिर वो उनपर पछतावा होंगे फिर मग़लूब कर दिए जाएँगे और काफ़िरो का हश्र जहन्नम की तरफ़ होगा।

३७. इसलिए कि अल्लाह गन्दे को सुथरे से जुदा फ़रमा दे और नजासतों को तले उपर रखकर सब एक ढ़ेर बनाकर जहन्नम में डाल दे (वही नुक़सान पाने वाले हैं।)

रुकूअ ५

३८. तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वो बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वो उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया जाएगा और अगर फिर वही करें तो अगलो का दस्तूर गुजर चुका है।

३९. और उनसे लड़ो यहाँतक कि कोई फ़साद बाक़ी न रहे और सारा दीन अल्लाह ही का होजाए फिर अगर वो बाज़ रहे तो अल्लाह उनके काम देख रहा है।

४०. और अगर वो फिरे तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार।

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ
حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ
وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ
فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٣٧﴾

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ
لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا
فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ
وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ
انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾

وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ
نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

रुकूअ ५

४१. और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत लो तो उसका पाँचवाँ हिस्सा ख़ास अल्लाह और रसूल और क़राबत वालों और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों का है अगर तुम ईमान लाए हो अल्लाह पर और उसपर जो हमने अपने बन्दे पर फ़ैसला के दिन उतारा जिस दिन दोनों फ़ौजें मिलीं थीं और अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

४२. जब तुम नाले के इस कनारे थे और काफ़िर परले कनारे और काफ़िला तुमसे तराई में और अगर तुम आपस में कोई वअ़दा करते तो ज़रूर वक़्त पर बराबर न पहुँचते लेकिन ये इसलिये कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है कि जो हलाक हो दलील से हलाक हो और जो जिए दलील से जिए और बेशक अल्लाह ज़रूर सुनता जानता है।

४३. जब कि ऐ महबूब अल्लाह तुम्हें काफ़िरों को तुम्हारे ख़्वाब में थोड़ा दिखाता था और ऐ मुसलमानो अगर वो तुम्हें बहुत करके दिखाता तो ज़रूर तुम बुज़दिली करते और मुआमले में झगड़ा डालते मगर अल्लाह ने बचा

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ
فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَ
لِذِی الْقُرْبٰى وَالْیَتٰمٰى وَالْمَسٰكِیْنِ
وَابْنِ السَّبِیْلِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ
بِاللّٰهِ وَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا
یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۴۱﴾

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا وَهُمْ
بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ
اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ
لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ وَلٰكِنْ
لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ
لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَّ
یَحْیٰى مَنْ حَیَّ عَنْۢ بَیِّنَةٍ ؕ وَ
اِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۴۲﴾

اِذْ یُرِیْكَهُمُ اللّٰهُ فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا ؕ
وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ
وَلَتَنَازَعْتُمْ فِی الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌ

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾

लिया बेशक वो दिलों की बात जानता है।

وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤٤﴾

४४. और जब लड़ते वक़्त तुम्हे काफ़िर थोड़े करके दिखाए और तुम्हे उनकी निगाहों में थोड़ा किया कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है और अल्लाह की तरफ़ सब कामों की रूजूअ है।

रूकूअ ६

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾

४५. ऐ ईमान वालो जब किसी फ़ौज से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम रहो और अल्लाह की याद बहुत करो कि तुम मुराद को पहुँचो।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٤٦﴾

४६. और अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ो नहीं कि फिर बुज़दिली करोगे और तुम्हारी बँधी हुई हवा जाती रहेगी और सब्र करो बेशक अल्लाह सब्र वालों के साथ है।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَاۗءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾

४७. और उन जैसे न होना जो अपने घर से निकले इतराते और लोगों के दिखाने को और अल्लाह की राह से रोकते और उनके सब काम अल्लाह के क़ाबू में है।

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ …

४८. और जब कि शैतान ने उनकी निगाह में उनके काम भले कर दिखाए और बोला आज तुम पर कोई

مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ ۚ
فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ
عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ
مِّنكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ
إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ ۚ وَاللَّهُ شَدِيدُ
ع الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

शख्स ग़ालिब आने वाला नहीं और तुम मेरी पनाह में हो तो जब दोनों लश्कर आमने सामने हुए उल्टे पाँव भागा और बोला मै तुमसे अलग हूँ मै वो देखता हूँ जो तुम्हें नज़र नहीं आता मै अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

रुकूअ ७

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ
فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هَٰؤُلَاءِ
دِينُهُمْ ۗ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ
فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾

४९. जब कहते थे मुनाफ़िक़ और वो जिनके दिलों में आज़ार है कि ये मुसलमान अपने दीन पर मग़रूर हैं और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا ۙ
الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ
وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾

५०. और कभी तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते है मार रहे हैं उनके मुँह पर और उनकी पीठ पर और चखो आग का अज़ाब।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ
اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾

५१. ये बदला है उसका जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا بِآيَاتِ
اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ

५२. जैसे फ़िरऔन वालों और उनसे अगलों का दस्तूर वो अल्लाह की आयतों से मुनकिर हुए तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ा बेशक

إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

अल्लाह क़ूव्वत वाला सख़्त अज़ाब वाला है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِعْمَةً
أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا
بِأَنْفُسِهِمْ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾

५३. ये इसलिये कि अल्लाह किसी क़ौम से जो नेअमत उन्हे दी थी बदलता नहीं जब तक वो खुद न बदल जाएँ और बेशक अल्लाह सुनता जानता है।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِ
رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ
وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ
كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٥٤﴾

५४. जैसे फ़िरऔन वालों और उनसे अगलों का दस्तूर उन्होंने अपने रब की आयतें झूठलाई तो हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक किया और हमने फ़िरऔन वालों को डुबो दिया और वो सब ज़ालिम थे।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ
الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾

५५. बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वो हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते।

الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ ثُمَّ
يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ
وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٥٦﴾

५६. वो जिनसे तुमने मुआहदा किया था फिर हर बार अपना अहद तोड़ देते हैं और डरते नहीं।

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ
فَشَرِّدْ بِهِمْ مَنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ
يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

५७. तो अगर तुम उन्हें कहीं लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसा क़त्ल करो जिस से उनके पसमान्दों को भगाओ इस उम्मीद पर कि शायद उन्हें इबरत हो।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾

५८. और अगर तुम किसी क़ौम से दग़ा का अन्देशा करो तो उनका अहद उनकी तरफ़ फेंक दो बराबरी पर बेशक दग़ा वाले अल्लाह को पसन्द नहीं।

रुकूअ ८

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾

५९. और हरगिज़ काफ़िर इस घमन्ड में न रहें कि वो हाथ से निकल गए बेशक वो आजिज़ नहीं करते।

وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾

६०. और उनके लिए तय्यार रखो जो कूव्वत तुम्हें बन पड़े और जितने घोड़े बाँध सको कि उनसे उनके दिलोंमें धाक बिठाओ जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं और उनके सिवा कुछ औरों के दिलों मे जिन्हें तुम नहीं जानते अल्लाह उन्हें जानता है और अल्लाह की राह में जो कुछ ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा दिया जाएगा और किसी तरह घाटे में न रहोगे।

وَإِن جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

६१. और अगर वो सुलह की तरफ़ झुकें तो तुम भी झुको और अल्लाह पर भरोसा रखो बेशक वही है सुनता जानता।

وَإِن يُرِيدُوا أَن يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

६२. और अगर वो तुम्हें फ़रेब दिया चाहें तो बेशक अल्लाह तुम्हें काफ़ी है वही है जिसने तुम्हें ज़ोर दिया अपनी मदद का और मुसलमानों का।

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنفَقْتَ

६३. और उनके दिलों में मेल

مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّا أَلَّفْتَ
بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ
أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾

कर दिया अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर देते उनके दिल न मिला सकते लेकिन अल्लाह ने उनके दिल मिला दिए बेशक वही है ग़ालिब हिकमत वाला।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ
اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾

६४. ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) अल्लाह तुम्हें काफ़ी है और ये जितने मुसलमान तुम्हारे पैरो हुए।

रुकूअ ९

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ
عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِن يَكُن مِّنكُمْ
عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ
وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ يَغْلِبُوا
أَلْفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

६५. ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले मुसलमानों को जिहाद की तरग़ीब दो अगर तुम में कि बीस सब्र वाले होगें दो सौ पर ग़ालिब होंगे और अगर तुम में के सौ हों तो काफ़िरों के हज़ार पर ग़ालीब आयेंगे इसलिए कि वो समझ नहीं रखते ।

الْآنَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنكُمْ وَعَلِمَ
أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِن يَكُن مِّنكُم
مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ
وَإِن يَكُن مِّنكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا
أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ
الصَّابِرِينَ ﴿٦٦﴾

६६. अब अल्लाह ने तुम पर से तख़फ़ीफ़ फ़रमाई और उसे इल्म है कि तुम कमज़ोर हो तो अगर तुम में सौ सब्र वाले हों दो सौ पर ग़ालिब आयेंगें और अगर तुम में के हज़ार हों तो दो हज़ार पर ग़ालिब होंगे अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह सब्र वालों के साथ है।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَن يَكُونَ لَهُ
أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ ۚ

६७. किसी नबी को लाएक़ नहीं कि काफ़िरों को जिन्दा क़ैद करे जबतक

تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ
يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾

ज़मीन में उनका ख़ून ख़ूब न बहाए तुम लोग दुनिया का माल चाहते हो और अल्लाह आख़ेरत चाहता है और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ
فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾

६८. अगर अल्लाह पहले एक बात लिख न चुका होता तो ऐ मुसलमानों तुम ने जो काफ़िरोंसे बदले का माल ले लिया उसमें तुम पर बड़ा अज़ाब आता।

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٦٩﴾

६९. तो खाओ जो ग़नीमत तुम्हें मिली, हलाल पाकीज़ा और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

रुकूअ १०

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّمَن فِي
أَيْدِيكُم مِّنَ الْأَسْرَىٰ إِن يَعْلَمِ
اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ
خَيْرًا مِّمَّا أُخِذَ مِنكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٠﴾

७०. ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में है उनसे फ़रमाओ अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल में भलाई जानी तो जो तुमसे लिया गया उस से बेहतर तुम्हें अता फ़रमाएगा और तुम्हे बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَإِن يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا
اللَّهَ مِن قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

७१. और ऐ महबूब अगर वो तुम से दग़ा चाहेंगे तो इस से पहले अल्लाह ही को ख़यानत कर चुके हैं जिस पर उसने इतने तुम्हारे क़ाबू में दे दिए और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَ
جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ

७२. बेशक जो ईमान लाए और अल्लाह के लिए घर बार छोड़े और

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ
نَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا
مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ
حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ
فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا
عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِّيْثَاقٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾

अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से लड़े और वो जिन्होंने जगह दी और मदद की वो एक दूसरेके वारिस है और वो जो ईमान लाए और हिजरत न की तुम्हें उनका तरका कुछ नहीं पहुँचता जब तक हिजरत न करे और अगर वो दीन में तुम से मदद चाहें तो तुम पर मदद देना वाजिब है मगर ऐसी क़ौम पर कि तुम में उनमें मुआहदा है और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ
فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ
كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾

७३. और काफ़िर आपस में एक दूसरे के वारिस हैं ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ित्ना और बड़ा फ़साद होगा।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَ
جٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ
اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۚ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ
وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾

७४. और वो जो ईमान लाये और हिजरत की और अल्लाह की राह में लड़े और जिन्होंने जगह दी और मदद की वही सच्चे ईमान वाले है उनके लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا

وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ
وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى
بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾

७५. और जो बाद को ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया वो भी तुम्हीं में से है। और रिश्ते वाले एक से दूसरे ज़्यादा नज़दीक हैं अल्लाह की किताब मे बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।

सूरए तौबा

सُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَتِسْعٌ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَسِتَّ عَشَرَةَ رُكُوْعًا

मदनी है इसमें एकसौ उन्तीस आयात और सोलह रूकूअ हैं।

अल्लाहके नामसे शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहमतवाला

रूकूअ १

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى
الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ؕ ﴿١﴾
فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ
وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي
اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾
وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ
يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ
مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ
تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ
مُعْجِزِي اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ﴿٣﴾
اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ

१. बेज़ारी का हुक्म सुनाना है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उन मुश्रिकों को जिनसे तुम्हारा मुआहदा था और वो क़ायम न रहे।

२. तो चार महीने ज़मीन पर चलो फिरो और जान रखो कि तुम अल्लाह को थका नही सकते और ये कि अल्लाह काफ़िरों को रुसवा करने वाला है।

३. और मुनादी पुकार देना है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से सब लोगों में बड़े हज के दिन के अल्लाह बेज़ार है मुश्रिकों से और उसका रसूल तो अगर तुम तौबा करो तो तुम्हारा भला है और अगर मुँह फेरो तो जान लो कि तुम अल्लाह को न थका सकोगे और काफ़िरों को खुशख़बरी

सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की।

४. मगर वो मुश्रिक जिनसे तुम्हारा मुआहदा था फिर उन्होंने तुम्हारे अहद में कुछ कमी न की और तुम्हारे मुक़ाबिल किसी को मदद न दी तो उनका अहद ठहरी हुई मुद्दत तक पूरा करो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है।

५. फिर जब हुरमत वाले महीने निकल जाएँ तो मुश्रिकों को मारो जहाँ पाओ और उन्हें पकड़ो और क़ैद करो और हर जगह उनकी ताक में बैठो, फिर अगर वो तौबा करें और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें तो उनकी राह छोड़ दो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

६. और ऐ महबूब अगर कोई मुश्रिक तुम से पनाह मांगे तो उसे पनाह दो कि वो अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसकी अमन की जगह पहुँचा दो ये इसलिए कि वो नादान लोग हैं।

रुकूअ २

७. मुश्रिकों के लिये अल्लाह और उसके रसूल के पास कोई अहद क्यों कर होगा मगर वो जिनसे तुम्हारा

ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَمْ
يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا
إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ④

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا
الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَ
خُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا
لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا
وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَآتَوُا الزَّكَوٰةَ
فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ⑤

وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ
اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ
كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ
ع بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ⑥

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ
عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا
الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ

فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُتَّقِينَ ﴿٧﴾
كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا
فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُمْ
بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَ
أَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٨﴾
اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا
فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾
لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾
فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَ
آتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي
الدِّينِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾
وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ
عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ
فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ إِنَّهُمْ لَا
أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ﴿١٢﴾

मुआहदा मस्जिदे हराम के पास हुआ तो जब तक वो तुम्हारे लिए अहद पर क़ायम रहें तुम उनके लिये क़ायम रहो बेशक परहेज़गार अल्लाह को खुश आते है।

८. भला क्यों कर उनका हाल तो ये है कि तुमपर क़ाबू पाएँ तो न क़राबत का लेहाज़ करें न अहद का अपने मुँह से तुम्हें राज़ी करते हैं और उनके दिलों में इन्कार है और उनमें अकसर बे हुक्म हैं।

९. अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम मोल लिए तो उसकी राह से रोका बेशक वो बहुत ही बुरे काम करते है।

१०. किसी मुसलमान में न क़राबत का लेहाज़ करें न अहद का और वही सरकश है।

११. फिर अगर वो तौबा करें और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें तो वो तुम्हारे दीनी भाई हैं और हम आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं जानने वालों के लिए।

१२. और अगर अहद करके अपनी क़समें तोड़ें और तुम्हारे दीन पर मुँह आयें तो कुफ़्र के सरग़नों से लड़ो

बेशक उनकी क़समें कुछ नहीं इस उम्मीद पर कि शायद वो बाज़ आयें।

१३. क्या उस क़ौम से न लड़ोगे जिन्होने अपनी क़समें तोड़ीं और रसूल के निकालने का इरादा किया हालाँकि उन्हीं की तरफ़ से पहल हुई है क्या उनसे डरते हो तो अल्लाह इसका ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि उससे डरो अगर ईमान रखते हो।

१४. तो उनसे लड़ो अल्लाह उन्हें अज़ाब देगा तुम्हारे हाथों और उन्हें रूसवा करेगा और तुम्हें उनपर मदद देगा और ईमान वालों का जी ठन्डा करेगा।

१५. और उनके दिलों की घुटन दूर फ़रमाएगा और अल्लाह जिसकी चाहे तौबा क़ुबूल फ़रमाए और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

१६. क्या इस गुमान में हो कि यूँही छोड़ दिए जाओगे और अभी अल्लाह ने पहचान न कराई उनकी जो तुममें से जिहाद करेंगे और अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों के सिवा किसी को अपना महरमे-राज़ न बनाएंगे और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

रुकूअ ३

१७. मुश्रिकों को नहीं पहुँचता

أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوٓا
أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ
وَهُم بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ
أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن
تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ
وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَ
يَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ وَيَتُوبُ
اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿١٥﴾

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا
يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ
وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِن دُونِ اللَّهِ وَ
لَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ
ع وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَن يَعْمُرُوا
مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنفُسِهِم
بِالْكُفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ

कि अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें खुद अपने कुफ्र की गवाही देकर उनका तो सब कियाधरा अकारत है और वो हमेशा आग में रहेंगे।

१८. अल्लाह की मस्जिदें वही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते तो क़रीब है कि ये लोग हिदायत वालों में हों।

१९. तो क्या तुमने हाजियों की सबील और मस्जिदे हराम की ख़िदमत उसके बराबर ठहरा ली जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया वो अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता।

२०. वो जो ईमान लाए और हिजरत की और अपने माल-ो जान से अल्लाह की राह में लड़े अल्लाह के यहाँउनका दर्जा बड़ा है और वही मुराद को पहुँचे।

२१. उनका रब उन्हें खुशी सुनाता है अपनी रहमत और अपनी रज़ा की और उन बाग़ों की जिनमें उन्हें दायमी

وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾
إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ
إِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا
مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾
اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ
اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾
يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ
رِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ
مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا اِنَّ اللّٰهَ

नेअ़मत है।

२२. हमेशा हमेशा उनमें रहेंगे। बेशक अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।

२३. ऐ ईमान वालों अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वो ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें और तुममें जो कोई उनसे दोस्ती करेगा तो वही ज़ालिम है।

२४. तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुंबा और तुम्हारी कमाई के माल और वो सौदा जिसके नुक़्सान का तुम्हे डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान ये चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए और अल्लाह फ़ासिकों को राह नहीं देता।

रुकूअ़ ४

२५. बेशक अल्लाह ने बहुत जगह तुम्हारी मदद की और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत पर इतरा गए थे तो वो तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन इतनी वसीअ़ होकर

عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا
اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ
اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ۚ
وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ
وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ
وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ
تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ
تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ
فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۗ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ ع

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ
وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ
فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ
عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ج

तुम पर तंग हो गई फिर तुम पीठ देकर फिर गए।

२६. फिर अल्लाह ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर और मुसलमानों पर और वो लश्कर उतारे जो तुमने न देखे और काफ़िरों को अज़ाब दिया और मुनकिरों की यही सज़ा है।

२७. फिर इसके बाद अल्लाह जिसे चाहेगा तौबा देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

२८. ऐ ईमान वालो मुश्रिक निरे नापाक हैं तो इस बरस के बाद वो मस्जिदे हराम के पास न आने पायें और अगर तुम्हें मोहताजी का डर है तो अन्क़रीब अल्लाह तुम्हें दौलतमन्द कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे बेशक अल्लाह इल्म-ो हिक़्मत वाला है।

२९. लड़ो उनसे जो ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और क़यामत पर और हराम नहीं मानते उस चीज़ को जिसको हराम किया अल्लाह और उसके रसूल ने और सच्चे दीन के ताबेअ नहीं होते यानी वो जो किताब दिए गए जबतक अपने हाथ से जिज़िया न दें ज़लील होकर।

ثُمَّ أَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَأَنْزَلَ
جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۚ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ
نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ
بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ
عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ
مِنْ فَضْلِهٖٓ إِنْ شَآءَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ
مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ
دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ
حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّ
هُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ ع

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ

वَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾

रुकूअ ५

३०. और यहूदी बोले उज़ैर अल्लाह का बेटा है और नसरानी बोले मसीह अल्लाह का बेटा है ये बाते वो अपने मुँह से बकते हैं अगले काफ़िरों की सी बात बनाते हैं अल्लाह उन्हें मारे कहाँ औंधे जाते हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

३१. उन्होंने अपने पादरियों और जोगियों को अल्लाह के सिवा खुदा बना लिया और मसीह बिन मरयम को और उन्हे हुक्म न था मगर ये कि एक अल्लाह को पूजें उसके सिवा किसी की बन्दगी नही उसे पाकी है उनके शिर्क से।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾

३२. चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने मुँह से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर अपने नूर का पूरा करना पड़े बुरा माने काफ़िर।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

३३. वही है जिसने अपना रसूल हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे पड़े बुरा माने मुश्रिक।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ

३४. ऐ ईमान वालो बेशक बहुत

اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿٣٤﴾

पादरी और जोगी लोगों का माल नाहक़ खा जाते हैं और अल्लाह की राह से रोकते हैं और वो कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चाँदी और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें खुशख़बरी सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की।

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

३५. जिस दिन वो तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर उससे दाग़ेंगे उनकी पेशानियाँ और करवटें और पीठें ये है वो जो तुमने अपने लिए जोड़कर रखा था अब चखो मज़ा उस जोड़ने का।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَا اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٦﴾

३६. बेशक महीनों की गिन्ती अल्लाह के नज़दीक बारह महीने हैं अल्लाह की किताब में जब से उसने आसमान और ज़मीन बनाए उनमें से चार हुरमत वाले हैं ये सीधा दीन है इन महीनो में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो और मुश्रिकों से हर वक़्त लड़ो जैसा वो तुमसे हर वक्त लड़ते है और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

اِنَّمَا النَّسِيْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ

يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا
لِّيُوَاطِئُوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا
مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ
اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِی الْقَوْمَ
ع الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ
اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِیْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ
اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ
الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
فِی الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۳۸﴾

اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ
وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا
تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ
اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِیَ
اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ

३७. उनका महीने पीछे हटाना नही मगर और कुफ़्र मे बढ़ना इससे काफिर बहकाए जाते हैं एक बरस उसे हलाल ठहराते है और दूसरे बरस उसे हराम मानते है कि उस गिन्ती के बराबर हो जाएं जो अल्लाह ने हराम फ़रमाई और अल्लाह के हराम किए हुए हलाल कर लें उनके बुरे काम उनकी आँखों में भले लगते हैं और अल्लाह काफ़िरों को राह नही देता।

रुकूअ ६

३८. ऐ ईमान वालो तुम्हें क्या हुआ जब तुमसे कहा जाए कि खुदा की राह में कूच करो तो बोझ के मारे ज़मीन पर बैठ जाते हो क्या तुमने दुनिया की ज़िन्दगी आख़ेरत के बदले पसन्द कर ली और जीती दुनिया का असबाब आख़ेरत के सामने नहीं मगर थोड़ा।

३९. अगर न कूच करोगे तो तुम्हें सख़्त सज़ा देगा और तुम्हारी जगह और लोग ले आएगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे और अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

४०. अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उनकी

يِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ
فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَ
اَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ
كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ
وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا
بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا
لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ
عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ
لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ
يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾ ع

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ
حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا
وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾

मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुआ सिर्फ़ दो जान से जब वो दोनों ग़ार में थे जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने उसपर अपना सकीना उतारा और उन फ़ौजों से उसकी मदद की जो तुमने न देखी और काफ़िरों की बात नीचे डाली और अल्लाह ही का बोल-बाला है और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

४१. कूच करो हल्की जान से चाहे भारी दिलसे और अल्लाह की राह में लड़ो अपने माल और जान से ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर जानो।

४२. अगर कोई क़रीब माल या मुतवस्सित सफ़र होता तो ज़रूर तुम्हारे साथ जाते मगर उन पर तो मशक़्क़त का रास्ता दूर पड़ गया और अब अल्लाह की क़सम खाएँगे कि हमसे बन पड़ता तो ज़रूर तुम्हारे साथ चलते और अपनी जानों को हलाक करते हैं और अल्लाह जानता है के वो बेशक ज़रूर झूठे हैं।

रुकूअ ७

४३. अल्लाह तुम्हे मुआफ़ करे तुम ने उन्हे क्यों इज़्न दे दिया जबतक

न खुले थे तुम पर सच्चे और ज़ाहिर न हुए थे झूठे।

४४. और वो जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते है तुमसे छुट्टी न माँगेगे इस से कि अपने माल और जान से जिहाद करें और अल्लाह खूब जानता है परहेज़गारों को।

४५. तुम से ये छुट्टी वही माँगते हैं जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान नही रखते और उनके दिल शक में पड़े हैं तो वो अपने शक में डांवाडोल हैं।

४६. उन्हें निकलना मन्ज़ूर होता तो उसका सामान करते मगर खुदा ही को उनका उठना ना-पसन्द हुआ तो उनमें काहिली भर दी और फ़रमाया गया कि बैठे रहो बैठ रेहने वालों के साथ।

४७. आगर वो तुममें निकलते तो उनसे सिवा नुक़्सान कि तुम्हें कुछ न बढ़ता और तुम में फ़ितना डालने को तुम्हारे बीच में गुराबें दौड़ाते (फ़साद डालते) और तुममें उनके जासूस मौजूद हैं और अल्लाह खूब जानता है ज़ालिमों को।

४८. बेशक उन्होंने पहले ही फ़ितना चाहा था और ऐ महबूब तुम्हारे लिए तदबीरें उल्टी पल्टी यहाँ तक

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾

اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاۡاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۹﴾

कि हक़ आया और अल्लाह का हुक्म ज़ाहिर हुआ और उन्हे नागवार था।

४९. और उनमें कोई तुमसे यूं अर्ज़ करता है कि मुझे रूख़सत दीजिये और फ़ितने में न डालिए सुन लो वो फ़ितना ही में पड़े और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को।

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ﴿۵۰﴾

५०. अगर तुम्हे भलाई पहुँचे तो उन्हे बुरा लगे और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो कहे हमने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और खुशियाँ मनाते फिर जाएँ।

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۱﴾

५१. तुम फ़रमाओ हमें न पहुँचेगा मगर जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया वो हमारा मौला है और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿۵۲﴾

५२. तुम फ़रमाओ तुम हम पर किस चीज़ का इन्तेज़ार करते हो मगर दो खूबियों में से एक का और हम तुम पर इस इन्तेज़ार में हैं कि अल्लाह तुम पर अज़ाब डाले अपने पास से या हमारे हाथों तो अब राह देखो हम भी तुम्हारे साथ राह देख रहे है।

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۵۳﴾

५३. तुम फ़रमाओ कि दिल से ख़र्च करो या नागवारी से तुमसे हरगिज़

कुबूल न होगा बेशक तुम बे हुक्म लोग हो।

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ
نَفَقٰتُهُمْ إِلَّآ أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللّٰهِ
وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَأْتُوْنَ الصَّلٰوةَ
إِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ إِلَّا وَ
هُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

५४. और वो जो ख़र्च करते है उसका कुबूल होना बन्द न हुआ मगर इसीलिए कि वो अल्लाह और रसूल से मुनकिर हुए और नमाज़ को नही आते मगर जी हारे और ख़र्च नही करते मगर नागवारी से।

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ
إِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ
وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾

५५. तो तुम्हें उनके माल और उनकी अवलाद का तअज्जुब न आए अल्लाह यही चाहता है कि दुनिया की जिन्दगी में उन चीज़ों से उनपर वबाल डाले और अगर कुफ्र ही पर उनका दम निकल जाए।

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ
وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ
يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾

५६. और अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वो तुम में से हैं और तुम मे से हैं नहीं हाँ वो लोग डरते हैं।

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً أَوْ مَغٰرٰتٍ أَوْ
مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾

५७. आगर पाए कोई पनाह या ग़ार या समा जाने की जगह तो रस्सियाँ तोड़ाते उधर फिर जाएँगे।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ
فَإِنْ أُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَإِنْ لَّمْ
يُعْطَوْا مِنْهَآ إِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾

५८. और उनमें कोई वो है कि सदक़े बाँटने में तुम पर तअन करता है तो अगर उनमें से कुछ मिले तो राज़ी होजाए और न मिले तो जभी वो नाराज़ हैं।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَ

رَسُوْلُهٗ ۙ وَ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ رَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى
اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَ الْمَسٰكِيْنِ
وَ الْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَ الْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ
وَ فِى الرِّقَابِ وَ الْغٰرِمِيْنَ وَ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً
مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾

وَ مِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ
وَ يَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ
لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ يُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَ رَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ
وَ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ
وَ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ
اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾

اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ
وَ رَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ

५९. और क्या अच्छा होता अगर वो उसपर राज़ी होते जो अल्लाह व रसूल ने उन को दिया और कहते हमें अल्लाह काफ़ी है अब देता है हमें अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और अल्लाह का रसूल हमें अल्लाह ही की तरफ़ रग़बत है।

रुकूअ ८

६०. ज़कात तो उन्ही लोगों के लिए है मोहताज और निरे नादार और जो उसे तहसील करते लाए और जिनके दिलों को इस्लाम से उल्फ़त दी जाए और गरदने छुड़ाने में और कर्ज़दारों को और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िर को ये ठहराया हुआ है अल्लाह का और अल्लाह इल्म-ो हिकमत वाला है।

६१. और उनमें कोई वो हैं कि इन ग़ैब की ख़बरें देने वाले को सताते हैं और कहते हैं वो तो कान हैं तुम फ़रमाओ तुम्हारे भले के लिए कान हैं अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मुसलमानों की बात पर यक़ीन करते हैं और जो तुममें मुसलमान हैं उनके वास्ते रहमत है और जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

६२. तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खाते हैं कि तुम्हें राज़ी कर लें और अल्लाह व रसूल का हक़ ज़ायद था कि उसे राज़ी करते अगर ईमान रखते थे।

६३. क्या उन्हें ख़बर नहीं कि

जो ख़िलाफ़ करे अल्लाह और उसके रसूल का तो उसके लिए जहन्नम की आग है कि हमेशा उसमें रहेगा यही बड़ी रुसवाई है।

६४. मुनाफ़िक़ डरते है कि इनपर कोई सूरत ऐसी उतरे जो उनके दिलों की छुपी जता दे तुम फ़रमाओ हँसे जाओ अल्लाह को ज़रूर ज़ाहिर करना है जिसका तुम्हें डर है।

६५. और ऐ महबूब अगर तुम उनसे पूछो तो कहेंगे कि हम तो यूँही हँसी खेल में थे तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल से हँसते हो।

६६. बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसलमान होकर अगर हम तुममें से किसी को मुआफ़ करें तो औरों को अज़ाब देंगे इसलिए कि वो मुजरिम थे।

रुकूअ ९

६७. मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक थैली के चट्टे बट्टे हैं बुराई का हुकम दें और भलाई से मनअ करें और अपनी मुट्ठी बन्द रखें वो अल्लाह को छोड़ बैठे तो अल्लाह ने उन्हें छोड़ दिया बेशक मुनाफ़िक़ वही पक्के बे हुक्म हैं।

خَالِدًا فِيهَا ۚ ذٰلِكَ الْخِزْيُ
الْعَظِيمُ ﴿٦٣﴾
يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُونَ أَنْ تُنَزَّلَ
عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي
قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهْزِءُوا ۚ إِنَّ اللّٰهَ
مُخْرِجٌ مَا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾
وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا
نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللّٰهِ وَ
اٰيٰتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٥﴾
لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ
إِيمَانِكُمْ ۚ إِنْ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ
مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ
ع كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾
اَلْمُنٰفِقُونَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ
مِنْ بَعْضٍ ۘ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ
أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ
الْمُنٰفِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿٦٧﴾
وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِينَ وَالْمُنٰفِقٰتِ

وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ
هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾
كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ
مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۚ
فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ
بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ
كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۚ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾
اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ
اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۚ
اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾
وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

६८. अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक औरतों और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वअ़दा दिया है जिसमें हमेशा रहेंगे वो उन्हें बस है और अल्लाह की उनपर लअ़नत है और उनके लिए क़ायम रहने वाला अज़ाब है।

६९. जैसे वो जो तुमसे पहले थे तुमसे ज़ोर में बढ़कर थे और उनके माल और अवलाद तुम से ज़्यादा तो वो अपना हिस्सा बरत गए तो तुमने अपना हिस्सा बरता जैसे अगले अपना हिस्सा बरत गए और तुम बेहूदगी में पड़े जैसे वो पड़े थे उनके अमल अकारत गए दुनिया और आख़िरत में और वही लोग घाटे में हैं।

७०. क्या उन्हें अपने से अगलों की ख़बर न आई नूह की क़ौम और आद और समूद और इब्राहीम की क़ौम और मदयन वाले और वो बस्तियाँ कि उलट दी गईं उनके रसूल रौशन दलीलें उनके पास लाए थे तो अल्लाह की शान न थी कि उनपर ज़ुल्म करता बल्कि वो ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ालिम थे।

७१. और मुसलमान मर्द और

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ
الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيعُونَ
اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ
اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِينَ فِيهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً
فِي جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ
اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
ع الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ
وَالْمُنٰفِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾

يَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوا ؕ وَلَقَدْ
قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ
اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ
وَمَا نَقَمُوٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ
وَرَسُولُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوبُوا
يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا

मुसलमान औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं। भलाई का हुक्म दें और बुराई से मनअ़ करें और नमाज़ क़ाएम रखें और ज़कात दें और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें ये हैं जिनपर अन्क़रीब अल्लाह रहम करेगा बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।

७२. अल्लाह ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बाग़ों का वअ़दा दिया है जिनके नीचे नहरें रवां उन में हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा मकानों का बसने के बाग़ों में और अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी यही है बड़ी मुराद पानी।

रुकूअ़ १०

७३. ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर और उनपर सख़्ती करो और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरी जगह पलटने की।

७४. अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्होंने न कहा और बेशक ज़रूर उन्होंने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आकर काफ़िर हो गए और वो चाहा था जो उन्हें न मिला और उन्हें क्या बुरा लगा यही ना कि अल्लाह व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर

يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِى
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِى
الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا
مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ
مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ
وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى
يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا
وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ
الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾

الَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ
لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ
مِنْهُمْ ۗ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۡ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾

दिया तो अगर वो तौबा करें तो उनका भला है और अगर मुँह फेरें तो अल्लाह उन्हें सख़्त अज़ाब करेगा दुनिया और आख़ेरत में और ज़मीन में कोई न उनका हिमायती होगा न मददगार।

७५. और उनमें कोई वो है जिन्होंने अल्लाह से अहद किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएँगे।

७६. तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया उसमें बुख़्ल करने लगे और मुँह फेर कर पलट गए।

७७. तो उसके पीछे अल्लाह ने उनके दिलो मे निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उससे मिलेंगे बदला इसका कि उन्होंने अल्लाह मे वअदा झूठा किया और बदला इसका कि झूठ बोलते थे।

७८. क्या उन्हें ख़बर नही कि अल्लाह उनके दिल की छुपी और उनकी सरगोशी को जानता है और ये कि अल्लाह सब ग़ैबों का बहुत जानने वाला है।

७९. वो जो ऐब लगाते है उन मुसलमानों के दिल से ख़ैरात करते है और उनको जो नही पाते मगर अपनी मेहनत से तो उनसे हँसते है अल्लाह

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ
اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً
فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾

उनकी हँसी की सज़ा देगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

८०. तुम उनकी मुआफ़ी चाहो या न चाहो अगर तुम सत्तर बार उनकी मुआफी चाहोगे तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें नहीं बख़्शेगा ये इसलिए कि वो अल्लाह और उसके रसूल से मुनकिर हुए और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।

रुकूअ ११

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِى الْحَرِّ ؕ
قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ
لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾

८१. पीछे रह जाने वाले इस पर खुश हुए कि वो रसूल के पीछे बैठ रहे और उन्हें गवारा न हुआ कि अपने माल और जान से अल्लाह की राह में लड़े और बोले इस गरमी में न निकलो तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सबसे सख़्त गर्म है किसी तरह उन्हें समझ होती।

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

८२. तो उन्हें चाहिए कि थोड़ा हँसे और बहुत रोएँ बदला उसका जो कमाते थे।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ
فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ
تَخْرُجُوْا مَعِىَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا
مَعِىَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ
اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

८३. फिर ऐ महबूब अगर अल्लाह तुम्हें उनमें से किसी गिरोह की तरफ़ वापस ले जाए और वो तुमसे जिहाद के निकलने की इजाज़त माँगे तो तुम फ़रमाना कि तुम कभी मेरे साथ न चलो और हरगिज़ मेरे साथ किसी दुशमन से न लड़ो तुमने पहली दफ़अ बैठ रहना पसन्द किया तो बैठ रहो पीछे रह जाने वालों के साथ।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ

८४. और उनमें से किसी की मय्येत पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर खड़े होना बेशक अल्लाह और रसूल से मुनकिर हुए और फ़िस्क़ ही में मर गए।

أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِۦٓ ۖ إِنَّهُمْ كَفَرُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَمَاتُوا۟ وَهُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٨٤﴾

८५. और उनके माल या अवलाद पर तअज्जुब न करना अल्लाह यही चाहता है कि उसे दुनिया में उनपर वबाल करे और कुफ़्र ही पर उनका दम निकल जाए।

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَٰلُهُمْ وَأَوْلَٰدُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ ٱللَّهُ أَن يُعَذِّبَهُم بِهَا فِى ٱلدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَٰفِرُونَ ﴿٨٥﴾

८६. और जब कोई सूरत उतरे कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के हमराह जिहाद करो तो उनके मक़्दूर वाले तुमसे रुख़सत माँगते है और कहते है हमें छोड़ दीजिए कि बैठ रहने वालो के साथ होलें।

وَإِذَآ أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ ءَامِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَجَٰهِدُوا۟ مَعَ رَسُولِهِ ٱسْتَـْٔذَنَكَ أُو۟لُوا۟ ٱلطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا۟ ذَرْنَا نَكُن مَّعَ ٱلْقَٰعِدِينَ ﴿٨٦﴾

८७. उन्हें पसन्द आया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ हो जायें और उनके दिलों पर मोहर कर दी गई तो वो कुछ नहीसमझते।

رَضُوا۟ بِأَن يَكُونُوا۟ مَعَ ٱلْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾

८८. लेकिन रसूल और जो उनके साथ ईमान लाए उन्होंने अपने मालों और जानों से जिहाद किया और उन्हीं के लिए भलाइयाँ है और यही मुराद को पहुँचे।

لَٰكِنِ ٱلرَّسُولُ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ جَٰهَدُوا۟ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۚ وَأُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلْخَيْرَٰتُ ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾

८९. अल्लाह ने उनके लिए तैयार

أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن

تَحْتَهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾

وَجَاۗءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاۗءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۠ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَاۗءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

कर रखी है बेहिशते जिनके नीचे नहरें रवाँ हमेशा उनमें रहेंगे यही बड़ी मुराद मिलनी है।

रुकूअ १२

९०. और बहाने बनाने वाले गँवार आए कि उन्हें रूख़्सत दी जाए और बैठ रहें वो जिन्होंने अल्लाह व रसूल से झूट बोला था जल्द उनमें के काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।

९१. ज़ईफ़ों पर कुछ हर्ज नहीं और न बीमारों पर और न उनपर जिन्हें ख़र्च का मक़दूर न हो जबकि अल्लाह और रसूल के ख़ैर ख़्वाह रहें नेकी वालों पर कोई राह नहीं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

९२. और न उनपर जो तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों कि तुम उन्हें सवारी अता फ़रमाओ तुमसे ये जवाब पाएँ कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिसपर तुम्हें सवार करूँ उसपर यूँ वापस जाएँ कि उनकी आँखों से आँसू उबलते हों इस ग़म से कि ख़र्च का मक़दूर न पाया।

९३. मुआख़ज़ा तो उनसे है जो तुमसे रुख़सत माँगते हैं और वो दौलतमन्द हैं उन्हें पसन्द आया कि औरतों के साथ पीछे बैठ रहें और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी तो वो कुछ नहीं जानते।

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ
اِلَيْهِمْ ۚ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ
لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ
وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ
رَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾

९४. तुमसे बहाने बनाएँगे जब तुम उनकी तरफ़ लौटकर जाओगे तुम फ़रमाना बहाने न बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारी ख़बरें दे दी हैं और अब अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे फिर उसकी तरफ़ पलटकर जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सबको जानता है वो तुम्हें जता देगा जो कुछ तुम करते थे।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ
اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۚ فَاَعْرِضُوْا
عَنْهُمْ ۚ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۚ وَّمَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

९५. अब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़सम खायेंगे जब तुम उनकी तरफ़ पलटकर जाओगे इसलिए कि तुम उनके ख़याल में न पड़ो तो हाँ तुम उनका ख़याल छोड़ दो वो तो निरे पलीद हैं और उन का ठिकाना जहन्नम है बदला उसका जो कमाते थे।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ
تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى
عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

९६. तुम्हारे आगे क़समें खाते हैं कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ तो अगर तुम उनसे राज़ी हो जाओ तो बेशक अल्लाह तो फ़ासिक़ लोगों से राज़ी न होगा।

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا
وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾

९७. गँवार कुफ्र और निफ़ाक़ में ज़्यादा सख़्त हैं और इसी क़ाबिल हैं कि अल्लाह ने जो हुक्म अपने रसूल पर उतारे उससे जाहिल रहें और अल्लाह इल्म-ो हिकमत वाला है।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ

९८. और कुछ गँवार वो हैं कि

مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ
عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾

जो अल्लाह की राह में ख़र्च करे तो उसे तावान समझे और तुम पर गर्दिशें आने के इन्तेज़ार में रहे उन्हीं पर है बुरी गर्दिश और अल्लाह सुनता जानता है।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ
قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ
اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ
اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
ع رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

९९. और कुछ गाँव वाले वो है जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते है और जो ख़र्च करें उसे अल्लाह के नज़दीकियो और रसूल से दुआएँ लेने का ज़रिया समझें हाँहाँ वो उनके लिए बाइसे कुर्ब है अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाखिल करेगा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ
وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ
بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا
عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾

रुकूअ १३

१००. और सबमें अगले पहले मुहाजिर और अनसार और जो भलाई के साथ उनके पैरो हुए अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी और उनके लिए तैय्यार कर रखे है बाग़ जिनके नीचे नहरें बहे हमेशा हमेशा उनमे रहे यही बड़ी कामयाबी है।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ
مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ
مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ
نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ

१०१. और तुम्हारे आसपास के कुछ गँवार मुनाफ़िक है और कुछ मदीना वाले उनकी ख़ू (आदत) हो गई है निफ़ाक़ तुम उन्हें नही जानते हम उन्हे जानते है जल्द हम उन्हे दोबारह अज़ाब करेंगे फिर बड़े अज़ाब

की तरफ़ फेरे जायेंगे।

१०२. और कुछ और हैं जो अपने गुनाहों के मुक़िर हुए और मिलाया एक काम अच्छा और दूसरा बुरा क़रीब है कि अल्लाह उनकी तौबा क़ुबूल करे बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

१०३. ऐ महबूब उनके माल में से ज़कात तहसील करो जिससे तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उनके हक़ में दुआए ख़ैर करो बेशक तुम्हारी दुआ उनके दिलों का चैन है और अल्लाह सुनता जानता है।

१०४. क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और सदक़े खुद अपने दस्ते कुदरत में लेता है और ये कि अल्लाह ही क़ुबूल करनेवाला मेहरबान है।

१०५. और तुम फ़रमाओ काम करो अब तुम्हारे काम देखेगा अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमान और जल्द उसकी तरफ़ पलटोगे जो छुपा और खुला सब जानता है तो वो तुम्हारे काम तुम्हें जता देगा।

१०६. और कुछ मौक़ूफ़ रखे गए अल्लाह के हुक्म पर या उनपर

مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ
عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا
عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ۭ عَسَى اللّٰهُ
اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ
وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ
صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ
التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ
الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ
وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ وَسَتُرَدُّوْنَ
اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا

अज़ाब करे या उनकी तौबा कुबूल करे और अल्लाह इल्म-ो हिकमत वाला है।

يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾

१०७. और जिन्होंने मस्जिद बनाई नुक़सान पहुँचाने को कुफ़्र के सबब और मुसलमानों में तफ़रक़ह डालने को और इसके इन्तेज़ार में जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल का मुख़ालिफ़ है और वो ज़रूर क़समें खायेंगे हमने तो भलाई चाही और अल्लाह गवाह है कि वो बेशक झूठे है।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِن قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٠٧﴾

१०८. उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना बेशक वो मस्जिद कि पहले ही दिन से जिसकी बुनयाद परहेज़गारी पर रखी गई है वो इस क़ाबिल है कि तुम इसमें खड़े हो उसमें वो लोग है कि खूब, सुथरा होना चाहते है और सुथरे अल्लाह को प्यारे है।

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُوا ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ﴿١٠٨﴾

१०९. तो क्या जिसने अपनी बुनयाद रखी अल्लाह से डर और उसकी रज़ा पर वो भला या वो जिसने अपनी नेव चुनी एक गिराऊ गढ़े के किनारे तो वो उसे लेकर जहन्नम की आग में ढह पड़ा और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता।

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾

११० वो तअमीर जो चुनी हमेशा

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً

فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ
ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١١٠﴾ ع

उनके दिलों में खटकती रहेगी मगर ये कि उनके दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं और अल्लाह इल्म-ो हिकमत वाला है।

रुकूअ १४

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ
الْجَنَّةَ ۗ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ ۗ وَعْدًا عَلَيْهِ
حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ ۗ
وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ
فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ
بَايَعْتُمْ بِهٖ ۗ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾

१११. बेशक अल्लाह ने मुसलमानों से उनके माल और जान ख़रीद लिए हैं इस बदले पर कि उनके लिए जन्नत है अल्लाह की राह में लड़ें तो मारें और मरें उसके ज़िम्मए करम पर सच्चा वअदा तौरेत और इन्जील और कुरआन में और अल्लाह से ज़्यादा क़ौल का पूरा कौन तो खुशियाँ मनाओ अपने सौदे की जो तुमने उससे किया है और यही बड़ी कामयाबी है।

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ
السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ
الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ
اللّٰهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

११२. तौबा वाले इबादत वाले सराहने वाले रोज़े वाले रूकूअ वाले सज्दा वाले भलाई के बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की हदें निगाह रखने वाले और खुशी सुनाओ मुसलमानों को।

مَا كَانَ لِلنَّبِىِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ
يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا
اُولِىْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ

११३. नबी और ईमान वालों को लायक़ नहीं कि मुश्रिकों की बख़्शिश चाहें अगरचे वो रिश्तेदार हों जबकि

أَنَّهُمْ أَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ
اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ فَلَمَّا
تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ
اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ
اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا
يَتَّقُوْنَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَمَا
لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ
لَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ
وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ
الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ
قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ
عَلَيْهِمْ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٧﴾

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا

उन्हे खुल चुका कि वो दोज़खी है।

११४. और इब्राहीम का अपने बाप की बख़्शिश चाहना वो तो न था मगर एक वअ़दे के सबब जो उससे कर चुका था फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वो अल्लाह का दुश्मन है उससे तिनका तोड़ दिया बेशक इब्राहीम ज़रूर आहें करने वाला मुतहम्मिल है।

११५. और अल्लाह की शान नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत करके गुमराह फ़रमाए जबतक उन्हे साफ़ न बता दे कि किस चीज़ से उन्हे बचना है बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।

११६. बेशक अल्लाह ही के लिए है आसमानो और ज़मीन की सल्तनत जिलाता है और मारता है और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई वाली और न मददगार ।

११७. बेशक अल्लाह की रहमतें मुतवज्जह हुई उन गैब की खबरें बताने वाले और उन मुहाजरीन और अन्सार पर जिन्होंने मुश्किल की घड़ी में उनका साथ दिया बाद इसके के क़रीब था कि उनमें कुछ लोगों के दिल फिर जाएं फिर उन पर रहमत से मुतवज्जह हुआ बेशक वो उनपर निहायत मेहरबान रहमवाला है।

११८. और उन तीन पर जो मौक़ूफ़

रखे गए थे यहाँ तक कि जब ज़मीन इतनी वसीअ होकर उनपर तँग हो गई और वो अपनी जान से तँग आये और उन्हे यक़ीन हुआ कि अल्लाह से पनाह नहीं मगर उसी के पास फिर उनकी तौबा कुबूल की कि ताइब रहे बेशक अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है।	حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ۭ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾ ع
रुकूअ १५	
११९. ऐ ईमान वालों अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾
१२०. मदीना वालों और उनके गिर्द देहात वालो को लायक़ न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें और न ये कि उनकी जान से अपनी जान प्यारी समझें ये इसलिए कि उन्हें जो प्यास या तकलीफ़ या भूक अल्लाह की राह मे पहुचती है और जहां ऐसी जगह क़दम रखते है जिससे काफ़िरों को ग़ैज़ आए और जो कुछ किसी दुश्मन का बिगाड़ते हैं उस सबके बदले उनके लिए नेक अमल लिखा जाता है बेशक अल्लाह नेकों का नेग ज़ाएअ नहीं करता।	مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔـوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾
१२१. और जो कुछ ख़र्च करते हैं छोटा या बड़ा और जो नाला तय करते है सब उनके लिए लिखा जाता	وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا

है ताकि अल्लाह उनके सब से बेहतर कामों का उन्हें सिला दे।

إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

१२२. और मुसलमानों से ये तो हो नही सकता कि सब के सब निकले तो क्यों न हुआ कि उनके हर गिरोह में से एक जमाअत निकले कि दीन की समझ हासिल करें और वापस आकर अपनी क़ौम को डर सुनाएँ इस उम्मीद पर कि वो बचें।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

रुकूअ १६

१२३. ऐ ईमानवालों जिहाद करो उन काफ़िरों से जो तुम्हारे क़रीब हैं और चाहिए कि वो तुम में सख़्ती पाएँ और जान रखो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

१२४. और जब कोई सूरत उतरती है तो उनमें कोई कहने लगता है कि उसने तुममें किसके ईमान को तरक़्क़ी दी तो वो जो ईमानवाले है उनके ईमान को उसने तरक़्क़ी दी और वो खुशियाँ मना रहे हैं।

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

१२५. और जिनके दिलों में आज़ार है उन्हें और पलीदी पर पलीदी बढ़ाई और वो कुफ़्र ही पर मर गये।

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾

१२६. क्या उन्हें नहीं सूझता कि

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي

हर साल एक या दो बार आज़माये जाते है फिर न तो तौबा करते है न नसीहत मानते हैं।

१२७. और जब कोई सूरत उतरती है उनमे एक दूसरे को देखने लगता है कि कोई तुम्हे देखता तो नही फिर पलट जाते है अल्लाह ने उनके दिल पलट दिए कि वो ना समझ लोग है।

१२८. बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम मे से वो रसूल जिनपर तुम्हारा मशक़्क़त मे पड़ना गिराँ है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानो पर कमाले मेहरबान मेहरबान।

१२९. फिर अगर वो मुँह फेरें तो तुम फ़रमादो कि मुझे अल्लाह काफ़ी है उसके सिवा किसी की बन्दगी नही मैं ने उसी पर भरोसा किया और वो बड़े अर्श का मालिक है।

सूरए युनुस

मक्की है इसमें एक सौ नौ आयतें हैं और ग्यारह रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला।

रूकूअ १

१. ये हिकमत वाली किताब की आयतें हैं।

२. क्या लोगों को इसका अचंभा हुआ कि हमने उनमें से एक मर्द को 'वही' भेजी कि लोगो को डर सुनाओ और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दो कि उनके लिऐ उनके रब के पास सच

كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ
لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ١٢٦

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ
إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ
ثُمَّ انصَرَفُوا ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ١٢٧

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ
عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم
بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ١٢٨

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ لَا
إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ
رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ١٢٩

سُورَةُ يُونُسَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَتِسْعُ آيَاتٍ وَفِيهَا أَحَدَ عَشَرَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الر ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ١

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ
رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ النَّاسَ وَ
بَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ

صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ
اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾

का मक़ाम है काफ़िर बोले बेशक ये तो खुला जादूगर है।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ
اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۗ
مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْ بَعْدِ اِذْنِهٖ ۗ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۗ
اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾

३. बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन छः दिनमें बनाए फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लाइक़ है काम की तदबीर फ़रमाता है, कोई सिफ़ारशी नहीं मगर उसकी इजाज़त के बाद ये है अल्लाह तुम्हारा रब तो उसकी बन्दगी करो तो क्या तुम ध्यान नहीं करते।

اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ۗ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقًّا ۗ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ
اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٤﴾

४. उसी की तरफ़ तुम सब को फिरना है अल्लाह का सच्चा वअदा बेशक वो पहली बार बनाता है फिर फ़ना के बाद दोबारा बनायेगा कि उनको जो ईमान लाए और अच्छे काम किए इन्साफ़ का सिला दे और काफ़िरों के लिए पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अज़ाब बदला उनके कुफ़्र का।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً
وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا
عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ۗ مَا خَلَقَ
اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾

५. वही है जिसने सूरज को जगमगाता बनाया और चाँद चमकता और उसके लिए मंज़िलें ठहराईं कि तुम बरसों की गिनती और हिसाब जानो अल्लाह ने उसे न बनाया मगर हक़ निशानियाँ मुफ़स्सल बयान फ़रमाता है इल्म वालों के लिए।

६. बेशक रात और दिन का

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَ
مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ ٦

बदलता आना और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया उनमे निशानियाँ है डर वालों के लिए।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَ
رَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا
بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا
غَافِلُونَ ٧

७. बेशक वो जो हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और दुनिया की जिन्दगी पसन्द कर बैठे और उस पर मुतमइन हो गए और वो जो हमारी आयतों से गफ़लत करते है।

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ٨

८. उन लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है बदला उनकी कमाई का।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ
النَّعِيمِ ٩

९. बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनका रब उनके ईमान के सबब उन्हें राह देगा उनके नीचे नहरें बहती होगी नेअ़मत के बाग़ों में।

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَ
تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ
ع أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ١٠

१०. उनकी दुआ उसमें ये होगी कि अल्लाह तुझे पाकी है और उनके मिलते वक़्त ख़ुशी का पहला बोल सलाम है और उनकी दुआ का ख़ात्मा ये है कि सब ख़ूबियों सराहा अल्लाह जो रब है सारे जहान का।

रुकूअ २

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ
اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ
أَجَلُهُمْ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ

११. और अगर अल्लाह लोगों पर बुराई ऐसी जल्द भेजता जैसी वो भलाई की जल्दी करते है तो उनका वअ़दा पूरा हो चुका होता तो हम छोड़ते उन्हें जो हमसे मिलने की उम्मीद

नहीं रखते कि अपनी सरकशी में भटका करें।

१२. और जब आदमी को तकलीफ़ पहुंचती है हमें पुकारता है लेटे और बैठे और खड़े फिर जब हम उसकी तकलीफ़ दूर कर देते है चल देता है गोया कभी किसी तकलीफ़ के पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था यूँ ही भले कर दिखाए है हद से बढ़ने वालों को उनके काम।

१३. और बेशक हमने तुमसे पहली संगतें हलाक फ़रमा दी जब वो हद से बढ़े और उनके रसूल उनके पास रौशन दलीलें लेकर आए और वो ऐसे थे ही नहीं कि ईमान लाते हम यूँ ही बदला देते है मुजरिमों को।

१४. फिर हमने उनके बाद तुम्हें ज़मीन में जानशीन किया कि देखें तुम कैसे काम करते हो।

१५. और जब उनपर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाती हैं तो वो कहने लगते है जिन्हें हमसे मिलने की उम्मीद नहीं कि इसके सिवा और कुरआन ले आइए या इसी को बदल दीजिए तुम फ़रमाओ मुझे नहीं पहुँचता कि मैं इसे अपनी तरफ़ से बदल दूँ मैं तो उसी का ताबेअ हूँ जो मेरी तरफ़ 'वही' होती है मैं अगर अपने रब की नाफ़रमानी

لِقَآءَنَا فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١﴾

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَاۤ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِىْۤ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِىْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَىَّ ۚ اِنِّىْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ

رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑮

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ
وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ
فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ⑯

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الْمُجْرِمُوْنَ ⑰

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ
هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ
اَتُنَبِّــُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى
السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ⑱

وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً
فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ
رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ⑲

وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا

करूँ तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

१६. तुम फ़रमाओ अगर अल्लाह चाहता तो मै इसे तुम पर न पढ़ता न वो तुमको इससे ख़बरदार करता तो मै इससे पहले तुमम अपनी एक उम्र गुज़ार चुका हूँ तो क्या तुम्हें अक़्ल नही।

१७. तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी आयतें झुठलाए बेशक मुजरिमों का भला न होगा।

१८. और अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ को पूजते है जो उनका कुछ भला न करे और कहते है कि ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारशी है तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह को वो बात बताते हो जो उसके इल्म मे न आसमानों में है ना ज़मीन में उसे पाकी और बरतरी है उनके शिर्क से।

१९. और लोग एक ही उम्मत थे फिर मुख़्तलिफ़ हुए और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो यही उनके इख़्तिलाफ़ों का उनपर फ़ैसला होगया होता।

२०. और कहते है उनपर उनके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नही उतरी तुम फ़रमाओ ग़ैब तो अल्लाह

إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ⑳

के लिए है अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूँ।

रुकूअ ३

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ
ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِي
آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ
رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ㉑

२१. और जबकि हम आदमियों को रहमत का मज़ा देते हैं किसी तकलीफ़ के बाद जो उन्हें पहुँची थी जभी वो हमारे आयतों के साथ दाँव चलते हैं तुम फ़रमा दो अल्लाह की खुफ़िया तदबीर सबसे जल्द हो जाती है बेशक हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे मक्र लिख रहे है।

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ
حَتَّىٰ إِذَا كُنتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ
بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا
جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ
الْمَوْجُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ
أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ
الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ
لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ㉒

२२. वही है कि तुम्हें खुश्की और तरी में चलाता है यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो और वो अच्छी हवा से उन्हे लेकर चलें और उसपर खुश हुए उनपर आँधी का झोंका आया और हर तरफ़ से लहरों ने उन्हें आ लिया और समझ लिए कि हम घिर गए उस वक़्त अल्लाह को पुकारते हैं निरे उसके बन्दे होकर कि अगर तू इससे हमें बचा लेगा तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ार होंगे।

فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يَا أَيُّهَا النَّاسُ
إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنفُسِكُم ۖ مَّتَاعَ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ㉓

२३. फिर अल्लाह जब उन्हें बचा लेता है जभी वो ज़मीन में नाहक़ ज़्यादती करने लगते हैं। ऐ लोगो तुम्हारी ज़्यादती तुम्हारे ही जानों का वबाल है दुनिया के जीते जी बरत लो फिर तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना है उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतक थे।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ

२४. दुनिया की ज़िन्दगी की

कहावत तो ऐसी ही है जैसे वो पानी कि हमने आसमान से उतारा तो उसके सबब ज़मीन से उगने वाली चीज़े सब घनी होकर निकलीं जो कुछ आदमी और चौपाए खाते है यहाँ तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार ले लिया और खूब आरास्ता हो गई और उसके मालिक समझे कि ये हमारे बस मे आ गई हमारा हुक्म उस पर आया रातमें या दिन मे तो हमने उसे कर दिया काटी हुई गोया कल थी ही नही हम यूँ ही आयतें मुफ़स्सल बयान करते है ग़ौर करने वालों के लिए।

२५. और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ पुकारता है और जिसे चाहे सीधी राह चलाता है।

२६. भलाई वालों के लिये भलाई है और उससे भी ज़ाएद और उनके मुँह पर न चढ़ेगी सियाही और न ख़्वारी वही जन्नत वाले हैं वो उसमें हमेशा रहेंगे।

२७. और जिन्होंने बुराइयाँ कमाई तो बुराई का बदला उसी जैसा और उनपर ज़िल्लत चढ़ेगी उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा गोया उनके चेहरों पर अँधेरी रात के टुकड़े

مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ
الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ
حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا
وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَاۤ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ
عَلَيْهَاۤ اَتٰىهَاۤ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا
فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ
بِالْاَمْسِ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

وَاللّٰهُ يَدْعُوْۤا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ وَيَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ
وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّ
لَا ذِلَّةٌ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ
سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ
مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ
كَاَنَّمَاۤ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا
مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٧

चढ़ा दिए है वही दोज़ख़ वाले हैं वो उसमे हमेशा रहेंगे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ
لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَ
شُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ
شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢٨

२८. और जिस दिन हम उन सब को उठायेंगे फिर मुश्रिकों से फ़रमायेगा अपनी जगह रहो तुम और तुम्हारे शरीक तो हम उन्हे मुसलमानों से जुदा कर देंगे और उनके शरीक उनसे कहेंगे तुम हमें कब पूजते थे।

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ
اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝٢٩

२९. तो अल्लाह गवाह काफ़ी है हममें और तुममें कि हमें तुम्हारे पूजने की ख़बर भी न थी।

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ
وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٣٠

३०. यहाँ हर जान जांच ले गी जो आगे भेजा और अल्लाह की तरफ़ फेरे जायेंगे जो उनका सच्चा मौला है और उनकी सारी बनावटें उनसे गुम हो जायेगी।

रुकूअ ४

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَ
الْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ
الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ
مَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ
فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٣١

३१. तुम फ़रमाओ तुम्हे कौन रोज़ी देता है आसमान और ज़मीन से या कौन मालिक है कान और आँखों का और कौन निकालता है ज़िन्दे को मुर्दे से और निकालता मुर्दार को ज़िनदे से और कौन तमाम क़ौमों की तदबीर करता है तो अब कहेंगे कि अल्लाह तो तुम फ़रमाओ तो क्यों नहीं डरते।

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ
الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٣٢

३२. तो ये अल्लाह है तुम्हारा सच्चा रब फिर हक़ के बाद क्या है मगर गुमराही फिर कहाँ फिरे जाते हो।

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ
فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۳﴾
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۳۴﴾
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ
اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ
اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ
اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ
فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۵﴾
وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ
لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾
وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ
بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ
لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۷﴾
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا
بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ

३३. यूँ ही साबित हो चुकी है तेरे रब की बात फ़ासिक़ो पर तो वो ईमान नही लायेंगे.

३४. तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीको मे कोई ऐसा है कि अव्वल बनाए फिर फ़ना के बाद दोबारा बनाए तुम फ़रमाओ अल्लाह अव्वल बनाता है फिर फ़ना के बाद दोबारा बनायेगा तो कहाँ औंधे जाते हो।

३५. तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीको मे कोई ऐसा है कि हक़ की राह दिखाए तुम फ़रमाओ कि अल्लाह हक़ की राह दिखाता है तो क्या जो हक़ की राह दिखाए उसके हुक्म पर चलना चाहिए या उसके जो खुद ही राह न पाए जबतक राह न दिखाया जाए तो तुम्हे क्या हुआ कैसा हुक्म लगाते हो।

३६. और उनमें अक्सर तो नहीं चलते मगर गुमान पर बेशक गुमान हक़ का कुछ काम नहीं देता बेशक अल्लाह उनके कामों को जानता है।

३७. और इस कुरआन की ये शान नहीं कि कोई अपनी तरफ़ से बनाले बे अल्लाह के उतारे हाँ वो अगली किताबों की तसदीक़ है और लौह में जो कुछ लिखा है सबकी तफ़सील है इसमें कुछ शक नहीं है परवरदिगारे आलम की तरफ़ से है।

३८. क्या ये कहते है कि उन्होंने उसे बना लिया है तुम फ़रमाओ तो

उस जैसी कोई एक सूरह ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर जो मिल सके सबको बुलालाओ अगर तुम सच्चे हो।	مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٣٨
३९. बल्कि उसे झुठलाया जिसके इल्म पर क़ाबू न पाया और अभी उन्होंने उसका अंजाम नही देखा ऐसे ही उनसे अगलों ने झुठलाया था तो देखो जालिमो का कैसा अंजाम हुआ।	بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣٩
४०. और उनमे कोई उस पर ईमान लाता है और उनमें कोइ उसपर ईमान नही लाता है और तुम्हारा रब मुफ़्सिदो को खूब जानता है।	وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝٤٠ ع
रुकूअ ५	
४१. और अगर वो तुम्हे झुठलाये तो फ़रमादो कि मेरे लिए मेरी करनी और तुम्हारे लिए तुम्हारी करनी तुम्हें मेरे काम से इलाक़ा नहीं और मुझे तुम्हारे काम से तअल्लुक नही।	وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّاۤ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٤١
४२. और उनमें कोई वो हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते है तो क्या तुम बहरो को सुना दोगे अगरचे उन्हें अक़्ल न हो।	وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٤٢
४३. और उनमे कोई तुम्हारी तरफ़ तकता है क्या तुम अंधो को राह दिखा दोगे अगरचे वो न सूझें।	وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝٤٣
४४. बेशक अल्लाह लोगों पर कुछ जुल्म नहीं करता हाँ लोग ही अपनी जानो पर जुल्म करते हैं।	اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٤٤

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَّمْ يَلْبَثُوٓا إِلَّا
سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ
قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَآءِ اللّٰهِ
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

४५. और जिस दिन उन्हे उठाएगा गोया दुनिया में न रहे थे मगर इस दिन को एक घड़ी आपस में पहचान करेगे कि पूरे घाटे में रहे वो जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और हिदायत पर न थे।

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ
أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
اللّٰهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

४६. और अगर हम तुम्हें दिखा दें कुछ उसमें से जो उन्हे वअदा दे रहे हैं या तुम्हें पहले ही अपने पास बुला लें बहरहाल उन्हे हमारी तरफ़ पलट कर आना है फिर अल्लाह गवाह है उनके कामों पर।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ فَإِذَا جَآءَ رَسُولُهُمْ
قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

४७. और हर उम्मत में एक रसूल हुआ जब उनका रसूल उनके पास आता उनपर इन्साफ़ का फ़ैसला कर दिया जाता और उनपर ज़ुल्म न होता।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

४८. और कहते हैं ये वअदा कब आयेगा अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَّآ أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا
إِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا
جَآءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً
وَّلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٩﴾

४९. तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के बुरे भले का (ज़ाती) इख़्तियार नहीं रखता मगर जो अल्लाह चाहे हर गिरोह का एक वअदा है जब उनका वअदा आयेगा तो एक घड़ी न पीछे हटें न आगे बढ़ें।

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ
بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ
الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾

५०. तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर उसका अज़ाब तुमपर रात को आए या दिन को तो उसमें वो कौनसी चीज़ है कि मुजरिमों को जिसकी जल्दी है।

५१. तो क्या जब हो पड़ेगा उस वक़्त उसका यक़ीन करोगे क्या अब मानते हो पहले तो उसकी जल्दी मचा रहे थे।

أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنْتُمْ بِهِ ۚ آلْآنَ
وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾

५२. फिर ज़ालिमों से कहा जायेगा हमेशा का अज़ाब चखो तुम्हें कुछ और बदला न मिलेगा मगर वही जो कमाते थे।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ
الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

५३. और तुमसे पूछते है क्या वो हक़ है तुम फ़रमाओ हाँ मेरे रब की क़सम बेशक वो ज़रूर हक़ है और तुम कुछ थका न सकोगे।

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي
وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ
بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾ ع

रुकूअ ६

५४. और अगर हर ज़ालिम जान ज़मीन में जो कुछ है सबकी मालिक होती ज़रूर अपनी जान छुड़ाने में देती और दिलमें चुपके-चुपके पशीमान हुए जब अज़ाब देखा और उनमें इन्साफ़ से फ़ैसला कर दिया गया और उनपर ज़ुल्म न होगा।

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي
الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ
لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٤﴾

५५. सुनलो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में सुनलो बेशक अल्लाह का वअदा सच्चा है मगर उनमें अक्सर को ख़बर नहीं।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ
أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

५६. वो जिलाता और मारता है और उसी की तरफ फिरोगे।

هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

५७. ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत आई और दिलो की सेहत और हिदायत और

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ
مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ

रहमत ईमान वालों के लिए।

५८. तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रहमत उसीपर चाहिए कि खुशी करें वो उनके सब धन दौलत से बेहतर है।

५९. तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारा उसमें तुमने अपनी तरफ़ से हराम और हलाल ठहरा लिया तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह ने उसकी तुम्हें इजाज़त दी या अल्लाह पर झूठ बाँधते हो।

६०. और क्या गुमान है उनका जो अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं कि क़यामत में उनका क्या हाल होगा बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करता है मगर अक्सर लोग शुक्र नही करते।

रुकूअ ७

६१. और तुम किसी काम में हो और उसकी तरफ़ से कुछ कुरआन पढ़ो और तुम लोग कोई काम करो हम तुम पर गवाह होते हैं जब तुम उसको शुरुअ करते हो और तुम्हारे रब से ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ायब नहीं ज़मीन में न आसमान में और न उससे छोटी और न उससे बड़ी कोई चीज़ नहीं जो एक रौशन किताब में न हो।

६२. सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ

وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ
فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ
مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّ
حَلٰلًا ۭ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى
اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ
فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ
مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ
اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ
فِيْهِ ۭ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ
مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي
السَّمَاۗءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ
اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾
الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾
لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي
الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ
ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾
وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ
جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾
أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ
فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ
يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ
إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ
إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾
هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾
قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ
الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۚ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ
أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

ग़म।

६३. वो जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं।

६४. उन्हें ख़ुशख़बरी है दुनिया की ज़िन्दगी मे और आख़ेरत में अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं यही बड़ी कामयाबी है।

६५. और तुम उनकी बातों का ग़म न करो बेशक इज़्ज़त सारी अल्लाह के लिए है वही सुनता जानता है।

६६. सुनलो बेशक अल्लाह ही के मिल्क हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीनों में और काहे के पीछे जा रहे हैं वो जो अल्लाह के सिवा शरीक पुकार रहे हैं वो तो पीछे नहीं जाते मगर गुमान के और वो तो नहीं मगर अटकलें दौड़ाते।

६७. वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई कि उसमें चैन पाओ और दिन बनाया तुम्हारी आँखें खोलता बेशक उसमें निशानियां हैं सुनने वालों के लिए।

६८. बोले अल्लाह ने अपने लिये औलाद बनाई पाकी उसको वही बे नियाज़ है उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में तुम्हारे पास इसकी कोई भी सनद नहीं क्या अल्लाह पर वो बात बताते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं।

६९. तुम फरमाओ वो जो अल्लाह पर झूठ बाँधते है उनका भला न होगा।

७०. दुनिया में कुछ बरत लेना है फिर उन्हे हमारी तरफ वापस आना फिर हम उन्हे सख़्त अज़ाब चखायेंगे बदला उनके कुफ्र का।

रुकूअ ८

७१. और उन्हे नूह की ख़बर पढ़ कर सुनाओ जब उसने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम पर शाक गुज़रा है मेरा खड़ा होना और अल्लाह की निशानियाँ याद दिलाना तो मैने अल्लाह ही पर भरोसा किया तो मिलकर काम करो और अपने झूठे मअबूदों समेत अपना काम पक्का करलो तुम्हारे काम में तुमपर कुछ गुन्जलक (उलझन) न रहे फिर जो होसके मेरा करलो और मुझे मुहलत न दो।

७२. फिर अगर तुम मुँह फेरो तो मै तुम से कुछ उजरत नही मांगता मेरा अज्र तो नही मगर अल्लाह पर और मुझे हुक्म है कि मैं मुसलमानों से हूँ।

७३. तो उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने उसे और जो उसके साथ कश्ती में थे उनको नजात दी और उन्हे हमने नाएब किया और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई उनको हमने डुबो दिया तो देखो डराये हुओं का अंजाम कैसा हुआ।

७४. फिर उसके बाद और रसूल

قل ان الذين يفترون على الله
الكذب لا يفلحون ٦٩

متاع في الدنيا ثم الينا مرجعهم
ثم نذيقهم العذاب الشديد بما
كانوا يكفرون ٧٠

واتل عليهم نبا نوح اذ قال لقومه
يقوم ان كان كبر عليكم مقامي
وتذكيري بايت الله فعلى الله توكلت
فاجمعوا امركم وشركاءكم ثم
لا يكن امركم عليكم غمة ثم
اقضوا الي ولا تنظرون ٧١

فان توليتم فما سالتكم من اجر
ان اجري الا على الله وامرت ان
اكون من المسلمين ٧٢

فكذبوه فنجينه ومن معه في
الفلك وجعلنهم خلئف واغرقنا
الذين كذبوا بايتنا فانظر كيف
كان عاقبة المنذرين ٧٣

ثم بعثنا من بعده رسلا الى قومهم

جَآءُوهُم بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾

हमने उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजे तो वो उनके पास रौशन दलीलें लाए तो वो ऐसे न थे कि ईमान लाते उसपर जिसे पहले झुठला चुके थे हम यूँ ही मुहर लगा देते है सरकशों के दिलों पर।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

७५. फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ अपनी निशानियाँ लेकर भेजा तो उन्होंने तकब्बूर किया और वो मुजरिम लोग थे।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

७६. तो जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ आया बोले ये तो ज़रूर खुला जादू है।

قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾

७७. मूसा ने कहा क्या हक़ की निसबत ऐसा कहते हो जब वो तुम्हारे पास आया क्या ये जादू है और जादूगर मुराद को नहीं पहुंचते।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

७८. बोले क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो कि हमें उससे फेर दो जिसपर हमने अपने बाप दादा को पाया और ज़मीन में तुम्ही दोनों की बड़ाई रहे और हम तुम पर ईमान लाने के नहीं।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾

७९. और फ़िरऔन बोला हर जादूगर इल्म वाले को मेरे पास ले आओ।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى

८०. फिर जब जादूगर आए उनसे

मूसा ने कहा डालो जो तुम्हें डालना है।
८१. फिर जब उन्होंने डाला मूसा
ने कहा ये जो तुम लाए ये जादू है
अब अल्लाह इसे बातिल कर देगा
अल्लाह मुफ़्सिदों का काम नही बनाता।
८२. और अल्लाह अपनी बातो
से हक़ को हक़ कर दिखाता है पड़े
बुरा माने मुजरिम।

रुकूअ ९

८३. तो मूसा पर ईमान न लाए
मगर उसकी क़ौम की अवलाद से
कुछ लोग फ़िरऔन और उसके दरबारियो
से डरते हुए कि कही उन्हे हटने पर
मजबूर न कर दें और बेशक फ़िरऔन
ज़मीन पर सर उठाने वाला था और
बेशक वो हद से गुज़र गया।
८४. और मूसा ने कहा ऐ मेरी
क़ौम अगर तुम अल्लाह पर ईमान
लाए तो उसी पर भरोसा करो अगर
तुम इस्लाम रखते हो।
८५. बोले हमने अल्लाह ही पर
भरोसा किया इलाही हमको ज़ालिम
लोगों के लिए आज़माइश न बना ।
८६. और अपनी रहमत फ़रमाकर
हमें काफ़िरों से नजात दे।
८७. और हमने मूसा और उसके
भाई को 'वही' भेजी कि मिस्र में अपनी

اَلْقُوْا مَا اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝٨٠
فَلَمَّا اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ
السِّحْرُ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٨١
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
ع الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨٢
فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ
عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ
اَنْ يَّفْتِنَهُمْ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي
الْاَرْضِ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٨٣
وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ
بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ
مُّسْلِمِيْنَ ۝٨٤
فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا
لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٨٥
وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ
الْكٰفِرِيْنَ ۝٨٦
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ

क़ौम के लिए मकानात बनाओ और अपने घरों को नमाज़ की जगह करो और नमाज़ क़ायम रखो और मुसलमानों को ख़ुशख़बरी सुनाओ।

८८. और मूसा ने अर्ज़ की ऐ रब हमारे तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को आराइश और माल दुनिया की ज़िन्दगी में दिए ऐ रब हमारे इसलिए कि तेरी राह से बहकादें, ऐ रब हमारे उनके माल बरबाद करदे और उनके दिल सख़्त करदे कि ईमान न लाएं जब तक दर्दनाक अज़ाब न देखलें।

८९. फ़रमाया तुम दोनों की दुआ क़ुबूल हुई तो साबित क़दम रहो और नादानों की राह न चलो।

९०. और हम बनी इसराईल को दरिया पार ले गए तो फ़िरऔन और उसके लश्करों ने उनका पीछा किया सरकशी और ज़ुल्म से यहाँ तक कि जब उसे डूबने ने आलिया बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मअबूद नहीं सिवा उसके जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए और मैं मुसलमान हूँ।

९१. क्या अब और पहले से नाफ़रमान रहा और तू फ़सादी था।

९२. आज हम तेरी लाश को

تَبَوَّآ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾

وَقَالَ مُوسٰى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَانِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَاءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدْوًا حَتّٰى إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ آمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَاءِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٠﴾

آلْئٰنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٩١﴾

उतरा देंगे (बाक़ी रखेंगे) कि तू अपने पिछलों के लिए निशानी हो और बेशक लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं।

रुकूअ १०

९३. और बेशक हमने बनी इसराईल को इज़्ज़त की जगह दी और उन्हें सुथरी रोज़ी अता की तो इख़्तिलाफ़ में न पड़ें मगर इल्म आने के बाद बेशक तुम्हारा रब क़यामत के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ते थे।

९४. और ऐ सुनने वाले अगर तुम्हें कुछ शुबह हो उसमें जो हमने तेरी तरफ़ उतारा तो उनसे पूछ देख जो तुझसे पहले किताब पढ़ने वाले हैं बेशक तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से हक़ आया तो तू हरगिज़ शक वालों में न हो।

९५. और हरगिज़ उनमें न होना जिन्होंने अल्लाह की आयतें झुठलाईं कि तू ख़सारे वालों में हो जायेगा।

९६. बेशक वो जिनपर तेरे रब की बात ठीक पड़ चुकी है ईमान न लायेंगे।

९७. अगरचे सब निशानियाँ उनके पास आईं जबतक दर्दनाक अज़ाब न देख लें।

९८. तो हुई होती न कोई बस्ती

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ
لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ
النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ ﴿٩٢﴾

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مُبَوَّأَ
صِدْقٍ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ
فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۚ
إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِمَّا أَنْزَلْنَا
إِلَيْكَ فَاسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتَابَ
مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ
مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُمْتَرِينَ ﴿٩٤﴾

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا
الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ
اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۚ لَمَّآ اٰمَنُوْا
كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِى الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

के ईमान लाती तो उसका ईमान काम आता हाँ यूनुस की क़ौम जब ईमान लाए हमने उनसे रूसवाई का अज़ाब दुनिया कि ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरतने दिया।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِى
الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۚ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ
النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

९९. और अगर तुम्हारा रब चाहता ज़मीन में जितने हैं सबके सब ईमान ले आते तो क्या तुम लोगों को ज़बरदस्ती करोगे यहाँतक कि मुसलमान हो जाएँ।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى
الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾

१००. और किसी जान की कुदरत नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से और अज़ाब उनपर डालता है जिन्हें अक़्ल नहीं।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِى الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ
عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾

१०१. तुम फ़रमाओ देखो आसमानों और ज़मीन में क्या है और आयतें और रसूल उन्हें कुछ नहीं देते जिनके नसीब में ईमान नहीं।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ
الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا
اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

१०२. तो उन्हें काहे का इन्तेज़ार है मगर उन्ही लोगों के से दिनों का जो उनसे पहले हो गुज़रे तुम फ़रमाओ तो इन्तेज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तेज़ार में हूँ।

ثُمَّ نُنَجِّىْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ
حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ ع

१०३. फिर हम अपने रसूलों और ईमान वालों को नजात देंगे बात यही है हमारी ज़िम्मे करम पर हक़ है मुसलमानों को नजात देना।

रुकूअ ११

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِىْ شَكٍّ

१०४. तुम फ़रमाओ ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से किसी

शुबह में हो तो मैं तो उसे न पूजूंगा जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो हां उस अल्लाह को पूजता हूं जो तुम्हारी जान निकालेगा और मुझे हुक्म है कि ईमान वालों में हूं।

१०५. और ये कि अपना मुँह दीन के लिए सीधा रख सबसे अलग होकर और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना।

१०६. और अल्लाह के सिवा उसकी बन्दगी न कर जो न तेरा भला कर सके न बुरा फिर अगर ऐसा करे तो उस वक़्त तू ज़ालिमों से होगा।

१०७. और अगर तुझे अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुँचाए तो उसका कोई टालने वाला नही उसके सिवा और अगर तेरा भला चाहे तो उसके फ़ज़्ल का रद करने वाला कोई नहीं उसे पहुँचाता है अपने बन्दों में जिसे चाहे और वही बख़्शने वाला मेहरबान है।

१०८. तुम फ़रमाओ ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ आया तो जो राह पर आया वो अपने भले को राह पर आया और जो बहका वो अपने बुरे को बहका और कुछ मैं कड़ोडा (हाकिमे आला) नही।

१०९. और उसपर चलो जो तुमपर 'वही' होती है और सब्र करो यहां तक कि अल्लाह हुक्म फ़रमाये और वो सबसे

مِنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ
اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَاُمِرْتُ
اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿١٠٤﴾
وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ
وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾
وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ
وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا
مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾
وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ
لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ
فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۚ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ وَهُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾
قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ
لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ
عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾
وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى

बेहतर हुक्म फ़रमाने वाला है।

सूरेए हूद

मक्की है इसमें एकसौ तेइस आयात और दस रूकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शूरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. ये एक किताब है जिसकी आयतें हिकमत भरी हैं फिर तफ़सील की गई हिकमत वाले ख़बरदार की तरफ़ से।

२. कि बन्दगी न करो मगर अल्लाह की बेशक मैं तुम्हारे लिए उसकी तरफ़ से डर और खुशी सुनाने वाला हूँ।

३. और ये कि अपने रब से मुआफ़ी मांगो फिर उसकी तरफ़ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरतना (फ़ायदा उठाना) देगा एक ठहराए वअदा तक और हर फ़ज़ीलत वाले को उसका फ़ज़्ल पहुंचायेगा और अगर मुँह फेरो तो मैं तुमपर बड़े दिन के अज़ाब का ख़ौफ़ करता हूँ।

४. तुम्हें अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है और वो हर शय पर क़ादिर है।

५. सुनो वो अपने सीने दोहरे करते हैं कि अल्लाह से पर्दा करें सुनो जिस वक़्त वो अपने कपड़ों से सारा बदन ढाँप लेते हैं उस वक़्त भी अल्लाह उनका छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है बेशक वो दिलों की बात जानने वाला है।

يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَثَلٰثٌ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَعَشْرَةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿٣﴾

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤﴾

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٥﴾

६. और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे करम पर न हो और जानता है कि कहाँ ठहरेगा और कहाँ सुपुर्द होगा सबकुछ एक साफ़ बयान करने वाली किताब में है।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا
عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَ
مُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦

७. और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छ: दिन में बनाया और उसका अर्श पानी पर था कि तुम्हें आज़माए तुम में किसका काम अच्छा है और अगर तुम फ़रमाओ कि बेशक तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे कि ये तो नहीं मगर खुला जादू।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهُ عَلَى
الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا
وَلَئِنْ قُلْتَ إِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْ بَعْدِ
الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا إِنْ
هٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧

८. और अगर हम उनसे अज़ाब कुछ गिन्ती की मुद्दत तक हटा दें तो ज़रूर कहेंगे किस चीज़ ने रोका है सुन लो जिस दिन उनपर आयेगा उनसे फेरा न जायेगा और उन्हें घेर लेगा वही अज़ाब जिसकी हँसी उड़ाते थे।

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلٰى
أُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهُ
أَلَا يَوْمَ يَأْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا
عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهِ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨

रुकूअ २

९. और अगर हम आदमी को अपनी किसी रहमत का मज़ा दें फिर उसे उससे छीन लें ज़रूर वो बड़ा नाउम्मीद नाशुकरा है।

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ۝٩

१०. और अगर हम उसे नेअमत का मज़ा दें उस मुसीबत के बाद जो उसे पहुंची तो ज़रूर कहेगा कि बुराईयाँ मुझ से दूर हुई बेशक वो खुश होने वाला बड़ाई मारने वाला है।

وَلَئِنْ أَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ
مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ
إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۝١٠

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
أُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١١﴾

११. मगर जिन्होंने सब्र किया और
अच्छे काम किए उनके लिए बख़्शिश
और बड़ा सवाब है।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحٰىٓ إِلَيْكَ
وَضَآئِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَّقُولُوا لَوْلَآ
أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَآءَ مَعَهُ مَلَكٌ
إِنَّمَآ أَنْتَ نَذِيرٌ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ وَّكِيلٌ ﴿١٢﴾

१२. तो क्या जो 'वही' तुम्हारी
तरफ़ होती है उसमें से कुछ तुम छोड़
दोगे और उसपर दिल तंग होगे इस
बिना पर कि वो कहते हैं उनके साथ
कोई ख़ज़ाना क्यों न उतरा या उनके
साथ कोई फ़रिश्ता आता तुम तो डर
सुनाने वाले हो और अल्लाह हर चीज़
पर मुहाफ़िज़ है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرٰىهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ
سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوا مَنِ
اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِينَ ﴿١٣﴾

१३. क्या ये कहते हैं कि उन्होंने
इसे जी से बना लिया तुम फ़रमाओ
के तुम ऐसी बनाइ हुई दस सूरतें ले
आओ और अल्लाह के सिवा जो मिल
सकें सबको बुलालो अगर तुम सच्चे
हो।

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوٓا أَنَّمَآ
أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَأَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ
فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٤﴾

१४. तो ऐ मुसलमानो अगर वो
तुम्हारी इस बात का जवाब न दे सकें
तो समझ लो कि वो अल्लाह के इल्म
ही से उतरा है और ये कि उसके सिवा
कोई सच्चा मअ़बूद नहीं तो क्या अब
तुम मानोगे।

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ
زِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا
وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾

१५. जो दुनिया की ज़िन्दगी और
उसकी आराइश चाहता हो हम उसमें
उनका पूरा फल दे देंगे और उस में
कमी न देंगे।

أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
إِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا

१६. ये हैं वो जिनके लिये आख़ेरत
मे कुछ नही मगर आग और अकारत
गया जो कुछ वहाँ करते थे और नाबूद

हुए जो उनके अ़मल थे।

وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾

१७. तो क्या वो जो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हो और उसपर अल्लाह की तरफ़ से गवाह आए और इससे पहले मूसा की किताब पेशवा और रहमत वो उसपर ईमान लाते हैं और जो उसका मुनकिर हो सारे गिरहों में तो आग उसका वअ़दा है तो ऐ सुननेवाले तुझे कुछ इसमें शक न हो बेशक वो हक़ है तेरे रब की तरफ़ से लेकिन बहुत आदमी ईमान नहीं रखते।

أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَ
يَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ
كِتٰبُ مُوْسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ أُولٰٓئِكَ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ
مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ
فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ إِنَّهُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾

१८. और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बाँधे वो अपने रब के हुज़ूर पेश किए जायेंगे और गवाह कहेंगे ये हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बोला था अरे ज़ालिमों पर खुदा की लअ़नत।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا ؕ أُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ
وَيَقُوْلُ الْأَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ
كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ
عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾

१९. जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उसमें कजी चाहते है और वही आख़ेरत के मुनकिर हैं।

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

२०. वो थकाने वाले नही ज़मीन में और न अल्लाह से जुदा उनके कोई हिमायती उन्हें अज़ाब पर अज़ाब

أُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي
الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ

होगा वो न सुन सकते थे और न देखते।

२१. वही हैं जिन्होंने अपनी जानें घाटे में डालीं और उनसे खोई गईं जो बातें जोड़ते थे

२२. ख़्वाह न ख़्वाह वही आख़िरत में सबसे ज़्यादा नुक़्सान में हैं।

२३. बेशक जो ईमान लाये और अच्छे काम किए और अपने रब की तरफ़ रूजूअ लाए वो जन्नत वाले हैं वो उसमें हमेशा रहेंगे।

२४. दोनों फ़रीक़ का हाल ऐसा है जैसे एक अन्धा और बहरा और दूसरा देखता और सुनता क्या इन दोनों का हाल एक सा है तो क्या तुम ध्यान नहीं करते।

रूकूअ ३

२५. और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि मैं तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूँ।

२६. के अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बेशक मैं तुम पर एक मुसीबत वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ।

२७. तो उसकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर हुए थे बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं और

اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ
الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ
وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾
لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ
الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٢﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٣﴾
مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ
وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ
ع مَثَلًا ۚ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۙ اِنِّيْ
لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٥﴾
اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾
فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ
مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ

हम नहीं देखते कि तुम्हारी पैरवी किसी ने की हो मगर हमारे कमीनों ने सरसरी नज़र से और हम तुममें अपने उपर कोई बड़ाई नहीं पाते बल्कि हम तुम्हे झूठा ख़याल करते है।

२८. बोला ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से दलील पर हूँ और उसने मुझे अपने पाससे रहमत बख़्शी तो तुम इससे अंधे रहे क्या हम इसे तुम्हारे गले चिपट दें और तुम बेज़ार हो।

२९. और ए क़ौम मैं तुम से कुछ इसपर माल नहीं मांगता मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं बेशक वो अपने रब से मिलने वाले है लेकिन मैं तुमको निरे जाहिल लोग पाता हूँ।

३०. और ऐ क़ौम मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा अगर मैं उन्हे दूर करूँगा तो क्या तुम्हें ध्यान नहीं।

३१. और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने है और न ये कि मैं ग़ैब जान लेता हूँ और न ये कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ और मैं उन्हे नहीं कहता जिनको तुम्हारी निगाहें हक़ीर समझती हैं कि हरगिज़ उन्हें अल्लाह कोई भलाई न देगा अल्लाह खूब जानता है जो उनके दिलों मे है ऐसा करूँ तो ज़रूर मैं ज़ालिमों मे से हूँ।

اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ
الرَّأْيِ ۚ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن
فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ
بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِّنْ
عِندِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا
وَأَنتُمْ لَهَا كَارِهُونَ ﴿٢٨﴾

وَيَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ
الَّذِينَ آمَنُوا ۚ إِنَّهُم مُّلَاقُو رَبِّهِمْ وَ
لَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٩﴾

وَيَا قَوْمِ مَن يَنصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِن
طَرَدتُّهُمْ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٠﴾

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ
وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي
مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي
أَعْيُنُكُمْ لَن يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ
اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنفُسِهِمْ ۖ إِنِّي
إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾

३२. बोले ऐ नूह तुम हमसे झगड़े और बहुत ही झगड़े तो ले आओ जिसका हमें वअ़दा दे रहे हो अगर तुम सच्चे हो।

قَالُوا يٰنُوحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٣٢﴾

३३. बोला वो तो अल्लाह तुम पर लाएगा अगर चाहे और तुम थका न सकोगे।

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ بِهِ اللّٰهُ إِنْ شَآءَ وَمَآ أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾

३४. और तुम्हे मेरी नसीहत नफ़अ़ न देगी अगर मै तुम्हारा भला चाहूँ जबकि अल्लाह तुम्हारी गुमराही चाहे वो तुम्हारा रब है और उसी की तरफ फिरोगे ।

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيٓ إِنْ أَرَدْتُّ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيدُ أَنْ يُّغْوِيَكُمْ ۚ هُوَ رَبُّكُمْ ۣ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾

३५. क्या ये कहते है कि उन्होंने इसे अपने जी से बना लिया तुम फ़रमाओ अगर मैंने बना लिया होगा तो मेरा गुनाह मुझ पर है और मै तुम्हारे गुनाह से अलग हूँ।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرٰىهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾ ع

रुकूअ़ ४

३६. और नूह को 'वही' हुई कि तुम्हारे क़ौम से मुसलमान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तो ग़म न खा उसपर जो वो करते है।

وَأُوحِيَ إِلٰى نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

३७. और कश्ती बनाओ हमारे सामने और हमारे हुक्म से और ज़ालिमो के बारे मे मुझ से बात न करना वो ज़रूर डुबाये जायेंगे।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾

३८. और नूह कश्ती बनाता है और जब उसको क़ौम के सरदार उसपर

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۗ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ

مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ
اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ
كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

गुज़रते उसपर हँसते बोला अगर तुम हमपर हँसते हो तो एक वक़्त हम तुम पर हँसेगे जैसा तुम हँसते हो।

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ
يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ
مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾

३९. तो अब जान जाओगे किस पर आता है वो अज़ाब कि उसे रूसवा करे और उतरता है वो अज़ाब जो हमेशा रहे।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ
قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ
اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ
الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ
اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٤٠﴾

४०. यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आया और तनूर उबला हमने फ़रमाया कश्ती में सवार कर ले हर जिन्स में से एक जोड़ा नर व मादा और जिन पर बात पड़ चुकी है उनके सिवा अपने घरवालो और बाक़ी मुसलमानों को और उसके साथ मुसलमान न थे मगर थोड़े।

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا
وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤١﴾

४१. और बोला उसमें सवार हो अल्लाह के नाम पर इसका चलना और इसका ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ
وَنَادٰى نُوْحُ ۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ
مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ
مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾

४२. और वो उन्हें लिए जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़ और नूह ने अपने बेटे को पुकारा और वो उससे कनारे था ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ न हो।

قَالَ سَاٰوِيْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ
مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ

४३. बोला अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूँ वो मुझे पानी से बचा लेगा। कहा आज अल्लाह के

مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ
بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ
الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾

अज़ाब से कोई बचाने वाला नही मगर जिसपर वो रहम करे और उनके बीच मे मौज आड़े आई तो वो डूबतों मे रह गया।

وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ
اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ
وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا
لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

४४. और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा और पानी खुश्क कर दिया गया और काम तमाम हुआ और करती कोहे जूदी पर ठहरी और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इनसाफ़ लोग।

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ
ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ
وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾

४५. और नूह ने अपने रब को पुकारा अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी तो मेरा घरवाला है और बेशक तेरा वअदा सच्चा है और तू सबसे बढ़कर हुक्म वाला।

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ
اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۗ اِنِّيْۤ اَعِظُكَ
اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾

४६. फ़रमाया ऐ नूह वो तेरे घरवालों में नहीं बेशाक उसके काम बड़े नालायक़ हैं तो मुझसे वो बात न मांग जिसका तुझे इल्म नहीं मैं तुझे नसीहत फ़रमाता हूँ कि नादान न बन।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ
مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۗ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ
وَتَرْحَمْنِيْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾

४७. अर्ज़ की ऐ रब मेरे मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि तुझसे वो चीज़ मांगू जिसका मुझे इल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़्शे और रहम न करे तो मैं ज़ियाँकार हो जाऊँ।

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ
عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۚ

४८. फ़रमाया गया ऐ नूह कश्ती से उतर हमारी तरफ़ से सलाम और बरकतों के साथ जो तुझ पर है और

तेरे साथ के कुछ गिरोहों पर और कुछ गिरोह है जिन्हें हम दुनिया बरतने देंगे फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।	وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾
४९. ये ग़ैब की ख़बरें हम तुम्हारी तरफ़ 'वही' करते है इन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी क़ौम इस से पहले तो सब्र करो बेशक भला अन्जाम परहेज़गारों का।	تِلْكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَا أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ مِن قَبْلِ هَٰذَا ۖ فَاصْبِرْ ۖ إِنَّ الْعَاقِبَةَ ع لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾
रुकूअ ५	
५० और आद की तरफ़ उनके हम क़ौम हूद को कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं तुम तो निरे मुफ़तरी हो।	وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾
५१. ऐ क़ौम मैं इसपर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता मेरी मज़दूरी तो उसी के ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।	يَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾
५२. और ऐ मेरी क़ौम अपने रब से मुआफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रुजूअ लाओ तुम पर ज़ोर का पानी भेजेगा और तुममें जितनी क़ूवत है उस से और ज़्यादा देगा और जुर्म करते हुए रुगरदानी न करो।	وَيَا قَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾
५३. बोले ऐ हूद तुम कोई दलील लेकर हमारे पास न आए और हम ख़ाली तुम्हारे कहने से अपने खुदाओं को छोड़ने के नहीं न तुम्हारी बात पर यक़ीन लाएं।	قَالُوا يَا هُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَن قَوْلِكَ وَ مَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾

५४. हम तो यही कहते है कि हमारे किसी ख़ुदा की तुम्हे बुरी झपट पहुँची कहा मै अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम सब गवाह हो जाओ कि मै बेज़ार हूँ इन सबसे जिन्हे तुम अल्लाह के सिवा उसका शरीक ठहराते हो।	اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّیْۤ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَ اشْهَدُوْۤا اَنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۙ﴿۵۴﴾
५५. तुम सब मिलकर मेरा बुरा चाहो फिर मुझे मुहलत न दो।	مِنْ دُوْنِهٖ فَكِیْدُوْنِیْ جَمِیْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۵۵﴾
५६. मैने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब कोई चलने वाला नही जिसकी चोटी उसके क़ब्ज़-ए-कुदरत मे न हो बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर मिलता है।	اِنِّیْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّیْ وَ رَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِیَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۵۶﴾
५७. फिर अगर तुम मुँह फेरो तो मै तुम्हे पहुँचा चुका जो तुम्हारी तरफ़ लेकर भेजा गया और मेरा रब तुम्हारी जगह औरो को ले आयेगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे बेशक मेरा रब हर शैय पर निगहबान है।	فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖۤ اِلَیْكُمْ ؕ وَ یَسْتَخْلِفُ رَبِّیْ قَوْمًا غَیْرَكُمْ ۚ وَ لَا تَضُرُّوْنَهٗ شَیْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّیْ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ حَفِیْظٌ ﴿۵۷﴾
५८. और जब हमारा हुक्म आया हमने हूद और उसके साथ के मुसलमानो को अपनी रहमत फ़रमाकर बचा लिया और उन्हे सख़्त अज़ाब से नजात दी।	وَ لَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّیْنَا هُوْدًا وَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَ نَجَّیْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِیْظٍ ﴿۵۸﴾
५९. और ये आद है कि अपने रब की आयतो से मुनकिर हुए और उसके रसूलो की ना फ़रमानी की और हर बड़े सरकश हटधर्म के कहने पर चले।	وَ تِلْكَ عَادٌ ۟ۙ جَحَدُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ وَ عَصَوْا رُسُلَهٗ وَ اتَّبَعُوْۤا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِیْدٍ ﴿۵۹﴾
६०. और उनके पीछे लगी इस दुनिया मे लअनत और क़यामत के	وَ اُتْبِعُوْا فِیْ هٰذِهِ الدُّنْیَا لَعْنَةً وَّ یَوْمَ

दिन सुनलो बेशक आद अपने रब से मुनकिर हुए अरे दूर हो आद हूद की क़ौम।

रुकूअ ६

६१. और समूद की तरफ़ उनकी हम क़ौम स्वालेह को कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नही उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उसमें तुम्हें बसाया तो उससे मुआफी चाहो फिर उसकी तरफ़ रुजूअ लाओ बेशक मेरा रब क़रीब है दुआ सुनने वाला।

६२. बोले ऐ स्वालेह इससे पहले तो तुम हममें होनहार मालूम होते थे क्या तुम हमें इससे मनअ करते हो कि अपने बाप दादा के मअबूदों को पूजें और बेशक जिस बात की तरफ़ हमें बुलाते हो हम उससे एक बड़े धोका डालने वाले शक में हैं।

६३. बोला ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ और उसने मुझे अपने पाससे रहमत बख़्शी तो मुझे उस से कौन बचायेगा अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूँ तो तुम मुझे सिवा नुक़सान के कुछ न बढ़ाओगे।

६४. और ऐ मेरी क़ौम ये अल्लाह का नाक़ा है तुम्हारे लिए निशानी तो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और उसे बुरी तरह हाथ न लगाना कि तुम को नज़दीक अज़ाब

الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۗ
ع اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦٠﴾

وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ۗ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ
وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ
تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۗ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿٦١﴾

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا
قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ
اٰبَآؤُنَا وَ اِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ
اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٢﴾

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى
بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ اٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً
فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۗ
فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾

وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً
فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَ
لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ
عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾

पहुँचेगा।

६५. तो उन्होंने उस की कोंचे काटी तो स्वालेह ने कहा अपने घरों में तीन दिन और बरत लो ये वअदा है कि झूठा न होगा।

६६. फिर जब हमारा हुक्म आया हमने स्वालेह और उसके साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमाकर बचा लिया और उस दिन की रूसवाई से बेशक तुम्हारा रब कवी इज़्ज़त वाला है।

६७. और ज़ालिमों को चिघाड़ ने आलिया तो सुबह अपने घरों में घुटनेके बल पड़े रह गये ।

६८. गोया कभी यहाँ बसे ही न थे। सुनलो बेशक समूद अपने रब से मुनकिर हुए अरे लअनत हो समूद पर।

रूकूअ ७

६९. और बेशक हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास मुज़दह लेकर आए बोले सलाम कहा सलाम फिर कुछ देर न की कि एक बछड़ा भुना ले आए।

७०. फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुंचते उन को उपरी समझा और जी ही जी में उन से डरने लगा बोले डरिये नहीं हम क़ौमे लूत की तरफ़ भेजे गये हैं।

७१. और उस की बीबी खड़ी थी वो हँसने लगी तो हम ने उसे इसहाक़ की खुशख़बरी दी और इसहाक़ के पीछे [illegible] की ।

فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ
ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ
مَكْذُوبٍ ﴿٦٥﴾

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ
خِزْيِ يَوْمِئِذٍ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ
الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا
فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۟
كَفَرُوْا رَبَّهُمْ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ
بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا قَالَ سَلٰمٌ فَمَا
لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ
نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً قَالُوْا
لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾

وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا
بِاِسْحٰقَ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰىٓ ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّ
هٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ
عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

७२. बोली हाए ख़राबी क्या मेरे बच्चा होगा और मैं बूढ़ी हूँ और ये है मेरे शौहर बूढ़े बेशक ये तो अचम्बे की बात है।

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ
اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ
اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾

७३. फ़रिश्ते बोले क्या अल्लाह के काम का अचम्बा करती हो अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें तुम पर इस घर वालो बेशक वही है सब खूबियों वाला इज़्ज़त वाला।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَ
جَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ
قَوْمِ لُوْطٍ ؕ ﴿٧٤﴾

७४. फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ ज़ायल हुआ और उसे खुशख़बरी मिली हमसे क़ौमे लूत के बारे में झगड़ने लगा।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾

७५. बेशक इब्राहीम तहम्मुल वाला बहुत आहें करने वाला रूजूअ लाने वाला है।

يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ
قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ
عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾

७६. ऐ इब्राहीम इस ख़याल में न पड़ बेशक तेरे रब का हुक्म आ चुका और बेशक उन पर अज़ाब आने वाला है कि फेरा न जायेगा।

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِىْٓءَ
بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ
هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾

७७. और जब लूत के पास हमारे फ़रिश्ते आए उसे इन का ग़म हुआ और उन के सबब दिल तंग हुआ और बोला ये बड़ी सख़्ती का दिन है।

وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَ
مِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ
قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِىْ هُنَّ

७८. और उसके पास उस की क़ौम दौड़ती आई और उन्हें आगे ही से बुरे कामों की आदत पड़ी थी कहा ऐ क़ौम ये मेरी क़ौम की बेटियाँ हैं ये तुम्हारे लिए सुथरी हैं तो अल्लाह से

أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ
فِي ضَيْفِي ۖ أَلَيْسَ مِنكُمْ رَجُلٌ
رَّشِيدٌ ﴿٧٨﴾

डरो और मुझे मेरे मेहमानो में रुसवा न करो क्या तुम में एक आदमी भी नेक चलन नहीं।

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ
مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ﴿٧٩﴾

७९. बोले तुम्हे मअ़लूम है कि तुम्हारी क़ौम की बेटियों में हमारा कोई हक़ नही और तुम ज़रूर जानते हो जो हमारी ख़्वाहिश है।

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوِي
إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ ﴿٨٠﴾

८०. बोले ऐ काश मुझे तुम्हारे मुक़ाबिल ज़ोर होता या किसी मज़बूत पाये की पनाह लेता।

قَالُوا يَا لُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَن
يَصِلُوا إِلَيْكَ ۖ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ
مِّنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنكُمْ أَحَدٌ
إِلَّا امْرَأَتَكَ ۖ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا
أَصَابَهُمْ ۚ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۚ
أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾

८१. फ़रिश्ते बोले ऐ लूत हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं वो तुम तक नहीं पहुँच सकते तो अपने घर वालों को रातों रात ले जाओ और तुममें कोई पीठ फेर कर न देखे सिवाये तुम्हारी औरत के उसे भी वहीं पहुचना है जो उन्हे पहुंचेगा बेशक उन का वअ़दा सुबह के वक़्त है क्या सुबह क़रीब नहीं।

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا
سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً
مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ﴿٨٢﴾

८२. फिर जब हमारा हुक्म आया हमने उस बस्ती के ऊपर को उस का नीचा कर दिया और उस पर कंकर के पत्थर लगातार बरसाये।

مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ
الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾

८३. जो निशान किए हुए तेरे रब के पास है और वो पत्थर कुछ ज़ालिमो से दूर नहीं।

रुकूअ ८

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ

८४. और मदयन की तरफ़ उन

के हम क़ौमे शुऐब को कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा कोई मअबूद नहीं और नाप और तोल में कमी न करो बेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हू और मुझे तुम पर घेर लेने वाले दिन के अज़ाब का डर है।

८५. और ऐ मेरी क़ौम नाप और तोल इनसाफ़ के साथ पूरी करो और लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो।

८६. अल्लाह का दिया जो बच रहे वो तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम्हें यक़ीन हो और मैं कुछ तुम पर निगेहबान नहीं।

८७. बोले ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें ये हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के खुदाओं को छोड़ दें या अपने माल में जो चाहें न करें हाँ जी तुम्हीं बड़े अक़्लमंद नेक चलन हो।

८८. कहा ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपने पाससे अच्छी रोज़ी दी और मैं नहीं चाहता हूँ कि जिस बात से तुम्हें मनअ़ करता हूँ आप उसके ख़िलाफ करने लगूँ मैं तो जहाँ तक बने सवाँरना ही चाहता हूँ और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से है मैंने उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ होता हूँ।

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ؕ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَ
الْمِيْزَانَ اِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّ اِنِّيْۤ
اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿۸۴﴾

وَ يٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَ الْمِيْزَانَ
بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ
وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۸۵﴾

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿۸۶﴾

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ
نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَاۤ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ
فِيْۤ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ
الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿۸۷﴾

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى
بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ رَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا
حَسَنًا ؕ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى
مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ
مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ اِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿۸۸﴾

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ
يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ
اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ
لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾

८९. और ऐ मेरी क़ौम तुम्हे मेरी ज़िद ये न कमवा दे कि तुम पर पड़े जो पड़ा था नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या स्वालेह की क़ौम पर और लूत की क़ौम कुछ तो तुम से दूर नहीं।

وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ
اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾

९०. और अपने रब से मुआफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रूजूअ लाओ बे .क मेरा रब मेहरबान महब्बत वाला है।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا
تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَ
لَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ
عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾

९१. बोले ऐ शुअैब हमारी समझ मे नही आता तुम्हारी बहुत सी बाते और बेशक हम तुम्हे अपने मे कमज़ोर देखते है और अगर तुम्हारा कुंबा न होता तो हमने तुम्हे पथराओ कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह मे तुम्हे इज़्ज़त नही।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ ۭ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ
اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾

९२. कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुम पर मेरे कुम्बा का दबाओ अल्लाह से ज़्यादा है और उसे तुमने अपनी पीठ के पीछे डाल रखा बेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के बस मे है।

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ
عَامِلٌ ۭ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ
عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ
وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾

९३. और ऐ क़ौम तुम अपनी जगह अपना काम किये जाओ मै अपना काम करता हूँ अब जानना चाहते हो किस पर आता है वो अज़ाब के उसे रुसवा करेगा और कौन झूठा है और इन्तेज़ार करो मै भी तुम्हारे साथ इन्तेज़ार मे हूँ।

وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ

९४. और जब हमारा हुक्म आया हमने शुअैब और उसके साथ के मुसालमानो को अपनी रहमत फ़रमाकर

बचा लिया और ज़ालिमों को चिघाड़ ने आ लिया तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गये।

الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ

९५. गोया कभी वहाँ बसे ही न थे अरे दूर हो मदयन जैसे दूर हुए समूद।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾

रुकूअ ९

९६. और बेशक हमने मूसा को अपनी आयतों और सरीह ग़लबे के साथ।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾

९७. फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो वो फ़िरऔन के कहने पर चले और फ़िरऔन का काम रास्ती का न था।

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾

९८. अपनी क़ौम के आगे होगा क़यामत के दिन तो उन्हें दोज़ख में ला उतारेगा और वो क्या ही बुरा घाट उतरने का।

يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾

९९. और उनके पीछे पड़ी इस जहान में लअ़नत और क़यामत के दिन क्या ही बुरा इनआ़म जो उन्हें मिला।

وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾

१००. ये बस्तियों की खबरें हैं तुम्हें सुनाते है उन में कोई खड़ी है और कोइ कट गई।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾

१०१ और हमने उनपर ज़ुल्म न किया बल्कि खुद उन्होंने अपना बुरा किया तो उनके मअ़बूद जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते थे उनके कुछ काम न आए जब तुम्हारे रब का हुक्म आया और उनसे उन्हें हलाक के सिवा कुछ

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَمَاۤ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ

غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿١٠١﴾
وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ
الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ
اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿١٠٢﴾
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ
الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ
وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾
وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿١٠٤﴾
يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ
فَمِنْهُمْ شَقِىٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾
فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ
فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ
وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٠٧﴾
وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ
وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً
غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾

न बढ़ा।

१०२. और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर बेशक उसकी पकड़ दर्दनाक कर्री है।

१०३. बेशक उसमें निशानी है उसके लिए जो आख़ेरत के अज़ाब से डरे वो दिन है जिस में सब लोग इकट्ठे होंगे और वो दिन हाज़िरी का है।

१०४. और हम उसे पीछे नहीं हटाते मगर एक गिनी हुइ मुद्दत के लिए।

१०५. जब वो दिन आयेगा कोई बे हुकमे खुदा बात न करेगा तो उनमें कोई बदबख़्त है और कोई खुश नसीब।

१०६. तो वो जो बदबख़्त है वो तो दोज़ख़ में है वो उसमें गधे की तरह रेंकेंगे।

१०७. वो उसमें रहेंगे जबतक आसमान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा बेशक तुम्हारा रब जब जो चाहे करे।

१०८. और वो जो खुश नसीब हुए वो जन्नत में है हमेशा उसमें रहेंगें जबतक आसमान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा ये बख़्शिश है कभी ख़तम न होगी।

१०९. तो ऐ सुननेवाले धोका में न पड़ उससे जिसे ये काफ़िर पूजते हैं ये वैसा ही पूजते हैं जैसा पहले उन के बाप दादा पूजते थे और बेशक हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा फेर देंगे जिसमें कमी न होगी।

रूकूअ १०

११०. और बेशक हमने मूसा को किताब दी तो उस में फूट पड़ गई अगर तुम्हारे रब की एक बात पहले न हो चुकी होती तो जभी उनका फ़ैसला कर दिया जाता और बेशक वो उस की तरफ़ से धोका डालने वाले शक में है।

१११. और बेशक जितने हैं एक एक को तुम्हारा रब उसका अमल पूरा भर देगा उसे उन के कामों की ख़बर है।

११२. तो क़ायम रहो जैसा तुम्हें हुक्म है और जो तुम्हारे साथ रूजूअ लाया है और ऐ लोगों सरकशी न करो बेशक वो तुम्हारे काम देख रहा है।

११३. और ज़ालिमों की तरफ़ न झुको कि तुम्हें आग छुएगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती नहीं फिर मदद न पाओगे।

११४. और नमाज़ क़ायम रखो दिन के दोनों किनारों और कुछ रात के हिस्सों में बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं ये नसीहत है नसीहत मानने वालों को।

११५. और सब्र करो कि अल्लाह

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ
مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَآؤُهُم
مِّن قَبْلُ وَإِنَّا لَمُوَفُّوهُمْ نَصِيبَهُمْ
ع
غَيْرَ مَنقُوصٍ ﴿١٠٩﴾
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ
فِيهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ
لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ
مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١٠﴾
وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمٰلَهُمْ
إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾
فَاسْتَقِمْ كَمَآ أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾
وَلَا تَرْكَنُوٓا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ
النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللّٰهِ مِنْ
أَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾
وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا
مِّنَ الَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ
السَّيِّـٔاتِ ذٰلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذّٰكِرِينَ ﴿١١٤﴾
وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيعُ

नेको का नेग ज़ायअ नहीं करता।

११६. तो क्यो न हुए तुम से अगली संगतो में ऐसे जिन में भलाई का कुछ हिस्सा लगा रहा होता कि ज़मीन मे फ़साद से रोकते हाँ उन में थोड़े थे वही जिन को हमने नजात दी और ज़ालिम उसी ऐश के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया और वो गुनहगार थे।

११७. और तुम्हारा रब ऐसा नही कि बस्तियों को बेवजह हलाक कर दे और उनके लोग अच्छे हों।

११८. और अगर तुम्हारा रब चाहता तो सब आदमियों को एक ही उम्मत कर देता और वो हमेशा इख़्तिलाफ में रहेंगे।

११९. मगर जिन पर तुम्हारे रब ने रहम किया और लोग इसी लिए बनाये हैं और तुम्हारे रब की बात पूरी हो चुकी कि बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूँगा जिनों और आदमियों को मिलाकर।

१२०. और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरे सुनाते हैं जिससे तुम्हारा दिल ठहराएं और इस सूरत में तुम्हारे पास हक़ आया और मुसलमानो को पन्द व नसीहत।

१२१. और काफ़िरो से फ़रमाओ तुम अपनी जगह काम किए जाओ हम अपना काम करते है।

أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾
فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ
أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي
الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا
مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا
أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾
وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ
وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ﴿١١٧﴾
وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً
وَاحِدَةً ۖ وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾
إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ
وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾
وَكُلًّا نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ
مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ فِي
هَٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ
لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾
وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا
عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾

وَانْتَظِرُوْا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

१२२. और राह देखो हम भी राह देखते हैं।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

१२३. और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन के ग़ैब और उसी की तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है तो उसकी बन्दगी करो और उस पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं।

सूरए यूसुफ़

मक्किया है इसमें एकसौ ग्यारह आयतें और बारह रूकूअ हैं

سورة يوسف مكية وهي مائة واحدى عشرة آية واثنا عشر ركوعا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो बहुत मेहरबान रहम वाला।

रूकूअ १

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۱﴾

१. ये रौशन किताब की आयतें हैं।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲﴾

२. बेशक हमने इसे अ़रबी कुरआन उतारा कि तुम समझो।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖۗ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿۳﴾

३. हम तुम्हें सब से अच्छा बयान सुनाते हैं इसलिये कि हमने तुम्हारी तरफ़ इस कुरआन की 'वही' भेजी अगरचे बेशक इससे पहले तुम्हें ख़बर न थी।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ﴿۴﴾

४. याद करो जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा ऐ मेरे बाप मैं ने ग्याराह तारे और सूरज और चाँद देखे उन्हें अपने लिए सज्दा करते देखा।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ

५. कहा ऐ मेरे बच्चे अपना ख़्वाब अपने भाइयों से न कहना कि वो तेरे साथ कोई चाल चलेंगे बेशक शैतान

الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ⑤

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ
مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ
عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا
عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ
اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑥

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ
لِّلسَّآئِلِيْنَ ⑦

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى
اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّ اَبَانَا
لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ⑧

اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا
يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا
مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ⑨

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ
وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ
بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ⑩

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى
يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ⑪

आदमी का खुला दुश्मन है।

६. और इसी तरह तुझे तेरा रब चुन लेगा और तुझे बातों का अन्जाम निकालना सिखायेगा और तुझ पर अपनी नेअ़मत पूरी करेगा और यअ़क़ूब के घर वालों पर जिस तरह तेरे पहले दोनों बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ पर पूरी की बेशक तेरा रब इल्म-ो हिकमतवाला है।

रुकूअ २

७. बेशक यूसुफ़ और उसके भाइयों में पूछने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

८. जब बोले कि ज़रूर यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे ज़्यादा प्यारे हैं और हम एक जमाअ़त हैं बेशक हमारे बाप सराहतन उनकी महब्बत में डूबे हुए हैं।

९. यूसुफ़ को मार डालो या कहीं ज़मीन में फेंक आओ कि तुम्हारे बाप का मुँह सिर्फ़ तुम्हारी ही तरफ़ रहे और उसके बाद फिर नेक हो जाना।

१०. उन में एक कहने वाला बोला यूसुफ़ को मारो नहीं और उसे अन्धे कुएँ में डाल दो की कोई चलता उसे आकर ले जाए अगर तुम्हें करना है।

११. बोले ऐ हमारे बाप आप को क्या हुआ कि यूसुफ़ के मुआमला में हमारा एअ़तबार नहीं करते और हम तो उसके ख़ैरख़्वाह हैं।

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ
وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿١٢﴾

१२. कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि मेवे खाए और खेले और बेशक हम उसके निगहबान हैं।

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ
وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ
عَنْهُ غَافِلُونَ ﴿١٣﴾

१३. बोला बेशक मुझे रंज देगा कि उसे ले जाओ और डरता हूँ कि उसे भेड़िया खाले और तुम उससे बेख़बर रहो।

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ
عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَخَاسِرُونَ ﴿١٤﴾

१४. बोले अगर उसे भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअ़त हैं जब तो हम किसी मसरफ़ के नहीं।

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَأَجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ
فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ
لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾

१५. फिर जब उसे ले गये और सब की राय यही ठहरी कि उसे अन्धे कुएँ में डाल दें और हमने उसे 'वही' भेजी कि ज़रूर तू उन्हें इनका ये काम जता देगा ऐसे वक़्त कि वो न जानते होंगे।

وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾

१६. और रात हुए अपने बाप के पास रोते हुए आए।

قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَ
تَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ
الذِّئْبُ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَنَا وَ
لَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

१७. बोले ऐ हमारे बाप हम दौड़ करते निकल गए और यूसुफ़ को अपने असबाब के पास छोड़ा तो उसे भेड़िया खा गया और आप किसी तरह हमारा यक़ीन न करेंगे अगरचे हम सच्चे हों।

وَجَاءُوا عَلَىٰ قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ ۚ
قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ
أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ

१८. और उसके कुर्ते पर एक झूठा ख़ून लगा लाए कहा बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात तुम्हारे वास्ते बनाली है तो सब्र अच्छा और अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ उन बातों पर जो तुम

عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ ع

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ؗ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰـكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْۤ

बता रहे हो।

१९. और एक क़ाफ़िला आया उन्होंने अपना पानी लाने वाला भेजा तो उसने अपना डोल डाला बोला आहा कैसी ख़ुशी की बात है ये तो एक लड़का है और उसे एक पूंजी बनाकर छुपा लिया और अल्लाह जानता है जो वो करते हैं।

२०. और भाइयों ने उसे खोटे दामो गिनती के रूपों पर बेच डाला और उन्हें इसमें कुछ रग़बत न थी।

रुकूअ ३

२१. और मिस्र के जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा वो अपनी औरत से बोला इन्हें इज़्ज़त से रखो शायद इनसे हमें नफ़अ पहुँचे या इन को हम बेटा बना लें और इसी तरह हमने यूसुफ़ को उस ज़मीन में जमाओ दिया और इसलिए के उसे बातों का अन्जाम सिखाएँ और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है मगर अक्सर आदमी नहीं जानते।

२२. और जब अपनी पूरी क़ूव्वत को पहुँचा हमने उसे हुक्म और इल्म अता फ़रमाया और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।

२३. और वो जिस औरत के घर में था उसने उसे लुभाया कि अपना आपा न रोके और दरवाज़े सब बन्द कर दिए और बोली आओ तुम्हीं से कहती हूँ कहा अल्लाह की पनाह वो

أَحْسَنَ مَثْوَايَ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ
الظَّٰلِمُونَ ﴿٢٣﴾

अज़ीज़ तो मेरा रब यानी परवरिश करने वाला है उसने मुझे अच्छी तरह रखा बेशक ज़ालिमों का भला नहीं होता।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِۦ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ
أَن رَّءَا بُرْهَٰنَ رَبِّهِۦ كَذَٰلِكَ لِنَصْرِفَ
عَنْهُ ٱلسُّوٓءَ وَٱلْفَحْشَآءَ إِنَّهُۥ مِنْ
عِبَادِنَا ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾

२४. और बेशक औरत ने उस का इरादा किया और वो भी औरत का इरादा करता अगर अपने रब की दलील न देख लेता हमने यूँ ही किया कि उस से बुराई और बेहयाई को फेर दें बेशक वो हमारे चुने हुए बनदों में से है।

وَٱسْتَبَقَا ٱلْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُۥ
مِن دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا ٱلْبَابِ
قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوٓءًا
إِلَّآ أَن يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

२५. और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े और औरत ने उसका कुर्ता पीछे से चीर लिया और दोनों को औरत का मियाँ दरवाज़े के पास मिला बोली क्या सज़ा है उसकी जिसने तेरी घरवाली से बदी चाही मगर ये कि क़ैद किया जाये या दु:ख की मार।

قَالَ هِىَ رَٰوَدَتْنِى عَن نَّفْسِى وَشَهِدَ
شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَآ إِن كَانَ قَمِيصُهُۥ
قُدَّ مِن قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ
مِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿٢٦﴾

२६. कहा उसने मुझ को लुभाया कि मैं अपनी हिफाज़त न करूँ और औरत के घरवालों में से एक गवाह ने गवाही दी अगर उन का कुर्ता आगे से चिरा है तो औरत सच्ची है और उन्होंने ग़लत कहा।

وَإِن كَانَ قَمِيصُهُۥ قُدَّ مِن دُبُرٍ
فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٢٧﴾

२७. और अगर उनका कुर्ता पीछे से चाक हुआ तो औरत झूठी है और ये सच्चे।

فَلَمَّا رَءَا قَمِيصَهُۥ قُدَّ مِن دُبُرٍ قَالَ
إِنَّهُۥ مِن كَيْدِكُنَّ إِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

२८. फिर जब अज़ीज़ ने उसका कुर्ता पीछे से चिरा देखा बोला बेशक ये तुम औरतों का चरित्तर है बेशक तुम्हारा चरित्तर बड़ा है।

يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِىْ
لِذَنْۢبِكِ ۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ
الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾ ع

२९. ऐ यूसुफ़ तुम इसका ख़याल न करो और ऐ औरत तू अपने गुनाह की मुआफ़ी मांग बेशक तू ख़तावारो में है।

रुकूअ ४

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِى الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ
الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ
قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِىْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

३०. और शहर में कुछ औरतें बोली कि अज़ीज की बीबी अपने नौजवान का दिल लुभाती है बेशक उन की महब्बत उसके दिल में पैर गई है हम तो उसे सरीह खुदरफ़्ता पाते हैं।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ
وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ
وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ
اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ
وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ
لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۗ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا
مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾

३१. तो जब ज़ुलैख़ा ने उनका चरचा सुना तो उन औरतो को बुला भेजा और उनके लिए मसनदें तैयार कीं और उनमें हर एक को एक छुरी दी और यूसुफ़ से कहा उन पर निकल आओ जब औरतों ने यूसुफ़ को देखा उसकी बड़ाई बोलने लगी और अपने हाथ काट लिए और बोली अल्लाह को पाकी है ये तो जिन्से बशर से नहीं ये तो नहीं मगर कोई मोअज़्ज़ज़ फ़रिश्ता।

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ۗ
وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ۗ
وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ
وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

३२. ज़ुलैख़ा ने कहा तो ये है वो जिनपर तुम मुझे तअ़ना देती थी और बेशक मैंने उनका जी लुभाना चाहा तो उन्होंने अपने आप को बचाया और बेशक अगर वो ये काम न करेंगे जो मैं उनसे कहती हूँ तो ज़रूर क़ैद में पड़ेंगे और वो ज़रूर ज़िल्लत उठायेंगे।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَىَّ مِمَّا

३३. यूसुफ़ ने अर्ज़ की ऐ मेरे

يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾

रब मुझे क़ैदख़ाना ज़्यादा पसन्द है उस काम से जिसकी तरफ़ ये मुझे बुलाती है और अगर तू मुझसे उनका मक्र न फेरेगा तो मै उनकी तरफ़ माइल होऊँगा और नादान बनूँगा।

فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۗ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾

३४. तो उसके रब ने उसकी सुन ली और उससे औरतों का मक्र फेर दिया बेशक वही सुनता जानता है।

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ ع

३५. फिर सब कुछ निशानियाँ देख दिखाकर पिछली मत उन्हें यही आई कि ज़रूर एक मुद्दत तक उसे क़ैद ख़ाना में डालें।

रुकूअ ५

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۗ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۗ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾

३६. और उसके साथ क़ैद ख़ाना में दो जवान दाख़िल हुए उनमें एक बोला कि मैने ख़्वाब देखा कि शराब निचोड़ता हूँ और दूसरा बोला मैंने ख़्वाब देखा कि मेरे सरपर कुछ रोटियाँ है जिनमें से परिन्दे खाते है हमें इसकी तअबीर बताइए बेशक हम आपको नेकोकार देखते हैं।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ۗ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۗ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

३७. यूसुफ़ ने कहा जो खाना तुम्हें मिला करता है वो तुम्हारे पास न आने पायेगा कि मैं उसकी तअबीर उसके आने से पहले तुम्हें बता दूँगा ये उन इल्मों में से है जो मुझे मेरे रब ने सिखाया है बेशक मैने उन लोगों का दीन न माना जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वो आख़ेरत से मुनकिर हैं।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَ

३८. और मैंने अपने बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ और यअक़ूब

का दीन इख़्तियार किया हमे नही पहुँचता कि किसी चीज को अल्लाह का शरीक ठहराये ये अल्लाह का एक फ़ज़्ल है हमपर और लोगो पर मगर अक्सर लोग शुक्र नही करते।

३९. ऐ मेरे क़ैदखाने के दोनो साथियो क्या जुदा जुदा रब अच्छे या एक अल्लाह जो सब पर ग़ालिब।

४०. तुम उसके सिवा नही पूजते मगर निरे नाम जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने तराश लिए है अल्लाह ने उनकी कोई सनद न उतारी हुक्म नहीं मगर अल्लाह का उसने फ़रमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो ये सीधा दीन है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

४१. ऐ क़ैदख़ाना के दोनों साथियो तुम में एक तो अपने रब (बादशाह) को शराब पिलायेगा रहा दूसरा वो सूली दिया जायेगा तो परिन्दे उसका सर खायेंगे हुक्म हो चुका इस बात का जिस का तुम सवाल करते थे।

४२. और यूसुफ़ ने उन दोनो में से जिसे बचता समझा उस से कहा अपने रब (बादशाह) के पास मेरा ज़िक्र करना तो शैतान ने उसे भुला दिया कि अपने रब (बादशाह) के सामने यूसुफ का ज़िक्र करे तो यूसुफ़ कई बरस और जेलख़ाना मे रहा।

إِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَآ أَنْ
نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ ذٰلِكَ مِنْ
فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَ
لٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَأَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُونَ
خَيْرٌ أَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهٖٓ إِلَّآ أَسْمَآءً
سَمَّيْتُمُوهَآ أَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ
أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ إِنِ
الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّآ
إِيَّاهُ ۚ ذٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّآ أَحَدُكُمَا
فَيَسْقِي رَبَّهٗ خَمْرًا ۖ وَأَمَّا الْاٰخَرُ
فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّأْسِهٖ ۚ
قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿٤١﴾

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا
اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنْسٰهُ الشَّيْطٰنُ
ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ﴿٤٢﴾

रुकूअ ६

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّيٓ أَرٰى سَبْعَ
بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ
عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّ
أُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۚ يٰٓأَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُوْنِيْ
فِيْ رُءْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا
تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾

४३. और बादशाह ने कहा मैंने ख़्वाब में देखा सात गाये फ़रबा कि उन्हें सात दुबली गायें खा रही है और सात बाले हरी और दूसरी सात सूखी ऐ दरबारियो मेरे ख़्वाब का जवाब दो अगर तुम्हें ख़्वाब की तअबीर आती हो।

قَالُوٓا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا نَحْنُ
بِتَأْوِيْلِ الْأَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

४४. बोले परेशान ख़्वाबें है और हम ख़्वाब की तअबीर नही जानते।

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ
بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيْلِهٖ
فَأَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾

४५. और बोला वो जो उन दोनों में से बचा था और एक मुद्दत बाद उसे याद आया मैं तुम्हें इसकी तअबीर बताऊँगा मुझे भेजो।

يُوْسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيْقُ أَفْتِنَا فِيْ
سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ
عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّ
أُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

४६. ऐ यूसुफ़ ऐ सिद्दीक़ हमें तअबीर दीजिए सात फ़रबा गायों की जिन्हें सात दुबली खाती है और सात हरी बाले और दूसरी सात सूखी शायद मैं लोगों की तरफ़ लौट कर जाऊँ शायद वो आगाह हों।

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَأَبًا ۚ
فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ
إِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَأْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾

४७. कहा तुम खेती करोगे सात बरस लगातार तो जो काटो. उसे उसकी बाल में रहने दो मगर थोड़ा जितना खालो।

४८. फिर उसके बाद सात करें बरस (सख़्त तंगी वाले) आयेंगे कि खा जायेंगे जो तुमने उनके लिए पहले जमा कर रखा था मगर थोड़ा जो बचालो।

ثُمَّ يَأْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ
شِدَادٌ يَّأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ
اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾

४९. फिर उनके बाद एक बरस आयेगा जिसमें लोगों को मेंह दिया जायेगा और उसमें रस निचोड़ेंगे।

ثُمَّ يَأْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ
يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾

रुकूअ ७

५०. और बादशाह बोला कि उन्हें मेरे पास ले आओ तो जब उसके पास एलची आया कहा अपने रब (बादशाह) के पास पलट जा फिर उससे पूछ क्या हाल है उन औरतों का जिन्होंने अपने हाथ काटे थे बेशक मेरा रब उनका फ़रेब जानता है।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا
جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ
فَسْــَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ
قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ
بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾

५१. बादशाह ने कहा ऐ औरतो तुम्हारा क्या काम था जब तुमने यूसुफ़ का जी लुभाना चाहा बोलीं अल्लाह को पाकी है हमने उनमें कोई बदी न पाई अज़ीज़ की औरत बोली अब असली बात खुल गई मैंने उनका जी लुभाना चाहा था और वो बेशक सच्चे हैं।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ
يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ
لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ
قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ
الْحَقُّ ؗ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَ
اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾

५२. यूसुफ़ ने कहा ये मैंने इसलिए किया कि अज़ीज़ को मालूम हो जाए कि मैंने पीठ पीछे उसकी ख़यानत न की और आल्लाह दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता।

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ
وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ
الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

५३. और मैं अपने नफ़्स को बे कुसूर नहीं बताता बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिसपर मेरा रब रहम करे बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है।

५४. और बादशाह बोला उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें खास अपने लिये चुन लूं फिर जब उससे बात की कहा बेशक आज आप हमारे यहाँ मोअज़्ज़ज़ मोअतमद हैं।

५५. यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूँ।

५६. और यूँ ही हमने यूसुफ़ को उस मुल्क पर कुदरत बख़्शी उसमें जहाँ चाहे रहे हम अपनी रहमत जिसे चाहें पहुंचाएँ और हम नेकों का नेग ज़ायेअ नहीं करते।

५७. और बेशक आख़ेरत का सवाब उनके लिये बेहतर जो ईमान लाये और परहेज़गार रहे।

रुकूअ ८

५८. और यूसुफ़ के भाई आये तो उसके पास हाज़िर हुए तो यूसुफ़ ने उन्हें पहचान लिया और वो उससे अनजान रहे।

५९. और जब उनका सामान मुहैया कर दिया कहा अपना सौतेला भाई मेरे पास ले आओ क्या नहीं देखते कि मैं पूरा मापता हूँ और मैं

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِیْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ
لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیْ ؕ
اِنَّ رَبِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۵۳﴾
وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِیْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ
لِنَفْسِیْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْیَوْمَ
لَدَیْنَا مَكِیْنٌ اَمِیْنٌ ﴿۵۴﴾
قَالَ اجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ
اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۵﴾
وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِیُوْسُفَ فِی الْاَرْضِ ۚ
یَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَیْثُ یَشَآءُ ؕ نُصِیْبُ
بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِیْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۶﴾
وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا
ع وَكَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿۵۷﴾
وَجَآءَ اِخْوَةُ یُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَیْهِ
فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۸﴾
وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ
ائْتُوْنِیْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِیْكُمْ ۚ اَلَا
تَرَوْنَ اَنِّیْۤ اُوْفِی الْكَیْلَ وَاَنَا

خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٥٩﴾

सबसे बेहतर मेहमान नवाज़ हूँ।

فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ
عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾

६०. फिर अगर उसे लेकर मेरे पास न आओ तो तुम्हारे लिये मेरे यहाँ माप नहीं और मेरे पास न फटकना।

قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا
لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾

६१. बोले हम उसकी ख़्वाहिश करेंगे उसके बाप से और हमें ये ज़रूर करना।

وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ
فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا
انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾

६२. और यूसुफ़ ने अपने गुलामों से कहा उनकी पूंजी उनकी खुरजियों में रख दो शायद वो उसे पहचानें जब अपने घर की तरफ़ लौटकर जाएँ शायद वो वापस आएँ।

فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا
مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا
نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾

६३. फिर जब वो अपने बाप की तरफ़ लौट कर गए बोले ऐ हमारे बाप हमसे गल्ला रोक दिया गया है तो हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिए कि गल्ला लाए और हम ज़रूर उसकी हिफ़ाज़त करेंगे।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا
كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ
فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ
الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾

६४. कहा क्या इसके बारे में तुम पर वैसा ही एअतबार कर लूं जैसा पहले इसके भाई के बारे में किया था तो अल्लाह सबसे बेहतर निगहबान और वो हर मेहरबान से बढ़कर मेहरबान।

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا
بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ قَالُوْا
يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا

६५. और जब उन्होंने अपना असबाब खोला अपनी पूंजी पाई कि उनको फेर दी गई है बोले ऐ हामरे बाप अब क्या और क्या चाहें ये है

رُدَّتْ إِلَيْنَا ۚ وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ
أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ۖ ذَٰلِكَ
كَيْلٌ يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾

हमारी पूंजी कि हमे वापस कर दी गई और हम अपने घर के लिये गल्ला लाएँ और अपने भाई की हिफाज़त करें और एक ऊँट का बोझ और ज़्यादा पाएँ ये देना बादशाह के सामने कुछ नहीं।

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ
تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي
بِهِ إِلَّا أَن يُحَاطَ بِكُمْ ۖ فَلَمَّا آتَوْهُ
مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ
وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾

६६. कहा मै हरगिज़ इसे तुम्हारे साथ न भेजूंगा जबतक तुम मुझे अल्लाह का ये अहद न दे दो कि ज़रूर उसे लेकर आओगे मगर ये कि तुम घर जाओ फिर जब उन्होंने यअकूब को अहद दे दिया कहा अल्लाह का ज़िम्मा है उन बातों पर जो हम कह रहे हैं।

وَقَالَ يَا بَنِيَّ لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ
وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ
مُّتَفَرِّقَةٍ ۖ وَمَا أُغْنِي عَنكُم مِّنَ
اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۖ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾

६७. और कहा ऐ मेरे बेटो एक दरवाज़े से न दाखिल होना और जुदा जुदा दरवाज़ों से जाना मै तुम्हें अल्लाह से बचा नहीं सकता हुक्म तो सब अल्लाह ही का है मैने उसी पर भरोसा किया और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा चाहिये।

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ
أَبُوهُم مَّا كَانَ يُغْنِي عَنْهُم مِّنَ
اللَّهِ مِن شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ
يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ
لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ

६८. और जब वो दाखिल हुए जहाँ से उनके बाप ने हुक्म दिया था वो कुछ उन्हे अल्लाह से बचा न सकता हाँ यअकूब के जी की एक ख़्वाहिश थी जो उसने पूरी करली और बेशक वो साहेबे इल्म है हमारे

सिखाये से मगर अक्सर लोग नहीं जानते।

रुकूअ ९

६९. और जब वो यूसुफ़ के पास गए उसने अपने भाई को अपने पास जगह दी कहा यक़ीन जान मैं ही तेरा भाई हूँ तो ये जो कुछ करते हैं उसका ग़म न खा।

७०. फिर जब उनका सामान मुहैया कर दिया प्याला अपने भाई के कजावे में रख दिया फिर एक मुनादी ने निदा की ऐ क़ाफ़्ला वालो बेशक तुम चोर हो।

७१. बोले और उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुए तुम क्या नहीं पाते।

७२. बोले बादशाह का पैमाना नहीं मिलता और जो उसे लायेगा उसके लिये एक ऊँट का बोझ है और मैं उसका ज़ामिन हूँ।

७३. बोले खुदा की क़सम तुम्हें खूब मअलूम है कि हम ज़मीन में फ़साद करने न आए और न हम चोर।

७४. बोले फिर क्या सज़ा है उसकी अगर तुम झूठे हो।

७५. बोले उसकी सज़ा ये है कि जिसके असबाब मे मिले वही उसके बदले में गुलाम बने हमारे यहाँ ज़ालिमों की यही सज़ा है।

७६. तो अव्वल उनकी खुरजियों से तलाशी शुरू की अपने भाई की

النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ ع

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ
أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾
فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ
السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ
مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ ﴿٧٠﴾
قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾
قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ
جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ
زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾
قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا
لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا
سَارِقِينَ ﴿٧٣﴾
قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَاذِبِينَ ﴿٧٤﴾
قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ
فَهُوَ جَزَاؤُهُ كَذَٰلِكَ نَجْزِي
الظَّالِمِينَ ﴿٧٥﴾
فَبَدَأَ بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ

ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ ۚ
كَذَٰلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ ۖ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ
أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ
اللَّهُ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَنْ نَشَاءُ ۗ وَ
فَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٧٦﴾

खुरजी से पहले फिर उसे अपने भाई की खुरजी से निकाल लिया हमने यूसुफ़ को यही तदबीर बताई। बादशाही क़ानून में उसे नहीं पहुंचता था कि अपने भाई को लेले, मगर ये कि खुदा चाहे हम जिसे चाहें दर्जों बलन्द करें और हर इल्म वाले से उपर एक इल्म वाला है।

قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ
مِنْ قَبْلُ ۚ فَأَسَرَّهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ
وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنْتُمْ شَرٌّ
مَكَانًا ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ﴿٧٧﴾

७७. भाई बोले अगर ये चोरी करे तो बेशक इससे पहले इसका भाई चोरी कर चुका है तो यूसुफ़ ने ये बात अपने दिल में रखी और उनपर ज़ाहिर न की। जी में कहा तुम बदतर जगह हो और अल्लाह ख़ूब जानता है जो बातें बनाते हो।

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا
كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ ۖ إِنَّا نَرَاكَ
مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٧٨﴾

७८. बोले ऐ अज़ीज़ इसके एक बाप हैं बूढ़े बड़े तो हममें इसकी जगह किसी को लेलो बेशक हम तुम्हारे एहसान देख रहे हैं।

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ
وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ إِنَّا إِذًا
لَظَالِمُونَ ﴿٧٩﴾ ع

७९. कहा खुदा की पनाह कि हम लें मगर उसी को जिसके पास हमारा माल मिला जब तो हम ज़लिम होंगे।

रुकूअ १०

فَلَمَّا اسْتَيْأَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا ۖ
قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ
قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ
وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ ۖ

८०. फिर जब उससे ना उम्मीद हुए अलग जाकर सरगोशी करने लगे इनका बड़ा भाई बोला क्या तुम्हें खबर नहीं कि तुम्हारे बाप ने तुमसे अल्लाह का अ़हद ले लिया था और इससे पहले यूसुफ़ के हक़ में तुमने कैसी

तक़सीर की तो मैं यहाँ से न टलूंगा यहाँ तक कि मेरे बाप इजाज़त दें या अल्लाह मुझे हुक्म फ़रमाये और उसका हुक्म सबसे बेहतर।

८१. अपने बाप के पास लौटकर जाओ फिर अर्ज़ करो कि ऐ हमारे बाप बेशक आप के बेटे ने चोरी की और हम तो उतनी ही बात के गवाह हुये थे जितनी हमारे इल्म में थी और हम गैब के निगहबान न थे।

८२. और उस बस्ती से पूछ देखिये जिसमें हम थे और उस काफ़िले से जिस में हम आए और हम बेशक सच्चे हैं।

८३. कहा तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हें कुछ हीला बना दिया तो अच्छा सब्र है क़रीब है कि अल्लाह उन सबको मुझ से ला मिलाये बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है।

८४. और उनसे मुँह फेरा और कहा हाये अफ़सोस यूसुफ़ की जुदाई पर और उसकी आँखें ग़म से सफ़ेद हो गई तो वो गुस्सा खाता रहा।

८५. बोले ख़ुदा की क़सम आप हमेशा यूसुफ़ की याद करते रहेंगे यहाँ तक कि गोर किनारे जा लगें या जान से गुज़र जाएँ।

८६. कहा मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूँ और मुझे अल्लाह की वो शानें मअलूम है जो तुम नहीं जानते।

فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتّٰى يَأْذَنَ لِيْ
أَبِيْ أَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ
الْحٰكِمِيْنَ ٨٠

اِرْجِعُوْا اِلٰى أَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰاَبَانَا اِنَّ
ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَا اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ٨١

وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ
الَّتِيْ أَقْبَلْنَا فِيْهَا ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ٨٢

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ
فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۖ عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَّأْتِيَنِيْ
بِهِمْ جَمِيْعًا ۖ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ٨٣

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰاَسَفٰى عَلٰى
يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ
الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ٨٤

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ
حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا أَوْ تَكُوْنَ مِنَ
الْهٰلِكِيْنَ ٨٥

قَالَ اِنَّمَا أَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْ اِلَى اللّٰهِ
وَأَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ٨٦

८७. ऐ बेटो जाओ यूसुफ़ और उसके भाई का सुराग़ लगाओ और अल्लाह की रह़मत से मायूस न हो बेशक अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग।

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْــَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْــَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

८८. फिर जब वो यूसुफ़ के पास पहुँचे बोले ऐ अज़ीज़ हमें और हमारे घरवालों को मुसीबत पहुँची और हम बे क़द्र पूँजी लेकर आये है तो आप हमें पूरा नाप दीजिये और हमपर ख़ैरात कीजिये बेशक अल्लाह ख़ैरात वालों को सिला देता है।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾

८९. बोले कुछ ख़बर है तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾

९०. बोले क्या सचमुच आप ही यूसुफ़ हैं कहा मैं यूसुफ़ हूँ और ये मेरा भाई बेशक अल्लाह ने हमपर एहसान किया बेशक जो परहेज़गारी और सब्र करे तो अल्लाह नेकों का नेग ज़ायअ नहीं करता।

قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ۭ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۡ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۭ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾

९१. बोले ख़ुदा की क़सम बेशक अल्लाह ने आपको हमपर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम ख़तावार थे।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـــِٕيْنَ ﴿٩١﴾

९२. कहा आज तुमपर कुछ मलामत नहीं अल्लाह तुम्हें मुआफ़ करे और वो सब मेहरबानों से बढ़कर मेहरबान है।

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۭ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۡ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾

९३. मेरा ये कुर्ता ले जाओ। इसे मेरे बाप के मुँह पर डालो उनकी आँखे खुल जायेंगी और अपने सब घर भर को मेरे पास ले आओ।

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى
وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع

रुकूअ ११

९४. जब क़ाफ़िला मिस्र से जुदा हुआ यहाँ उनके बाप ने कहा बेशक मैं यूसुफ़ की ख़ुशबू पाता हूँ अगर मुझे ये न कहो कि सठ (बहक) गया है।

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ
اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ
تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾

९५. बेटे बोले ख़ुदा की क़सम आप अपनी उसी पुरानी ख़ुद रफ़्तगी में हैं।

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ
الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾

९६. फिर जब ख़ुशी सुनानेवाला आया उसने वो कुर्ता यअ़कूब के मुँह पर डाला। उसी वक़्त उसकी आँखें फिर आईं कहा मैं न कहता था कि मुझे अल्लाह की वो शानें मअ़लूम हैं जो तुम नहीं जानते ।

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى
وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ
اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ
مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

९७. बोले ऐ हमारे बाप हमारे गुनाहों की मुआफ़ी माँगिए बेशक हम ख़तावार हैं।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ
اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾

९८. कहा जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब से चाहूँगा, बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ
هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

९९. फिर जब वो सब यूसुफ़ के पास पहुंचे, उसने अपने माँ बाप को अपने पास जगह दी और कहा मिस्र में दाख़िल हों अल्लाह चाहे तो अमान के साथ।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ
اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ
شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

१००. और अपने माँ बाप को तख़्त पर बिठाया और सब उसके लिये सज्दे में गिरे और यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप ये मेरे पहले ख़्वाब की तअबीर है बेशक उसे मेरे रब ने सच्चा किया और बेशक उसने मुझ पर एहसान किया कि मुझे क़ैद से निकाला और आप सब को गाँव से ले आया बाद उसके कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों मे नाचाक़ी करा दी थी बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान करदे बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है।

१०१. ऐ मेरे रब बेशक तूने मुझे एक सल्तनत दी और मुझे कुछ बातों का अन्जाम निकालना सिखाया ऐ आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले तू मेरा काम बनाने वाला है दुनिया और आख़ेरत में मुझे मुसलमान उठा और उनसे मिला जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं।

१०२. ये कुछ ग़ैब की ख़बरें है जो हम तुम्हारी तरफ़ 'वही' करते है और तुम उनके पास न थे जब उन्होंने अपना काम पक्का किया था और वो दाँव चल रहे थे।

१०३. और अक्सर आदमी तुम कितना ही चाहो ईमान न लायेंगे ।

१०४. और तुम उस पर उनसे

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا
لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ
رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ
حَقًّا ۭ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ اِذْ اَخْرَجَنِيْ
مِنَ السِّجْنِ وَجَاۗءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ
مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ
وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا
يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝١٠٠
رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ
مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۣ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ
بِالصّٰلِحِيْنَ ۝١٠١
ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ
وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝١٠٢
وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ
بِمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠٣
وَمَا تَسْــَٔـلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ

कुछ उजरत नहीं मांगते ये तो नहीं मगर सारे जहान को नसीहत ।

रुकूअ १२

१०५. और कितनी निशानियाँ है आसमानों और ज़मीन में कि अक्सर लोग उनपर गुज़रते है और उनसे बेख़बर रहते हैं।

१०६. और उनमें अक्सर वो हैं कि अल्लाह पर यक़ीन नहीं लाते मगर शिर्क करते हुए।

१०७. क्या उस से निडर हो बैठे कि अल्लाह का अज़ाब उन्हें आकर घेर ले या क़यामत उनपर अचानक आजाये और उन्हें ख़बर नहो।

१०८. तुम फ़रमाओ ये मेरी राह है मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ। मैं और जो मेरे क़दमों पर चलें दिल की आँखें रखते हैं और अल्लाह को पाकी है और मैं शरीक करने वाला नहीं।

१०९. और हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे सब मर्द ही थे जिन्हें हम 'वही' करते और सब शहर के साकिन थे तो क्या ये लोग ज़मीन पर चले नहीं तो देखते उनसे पहलों का क्या अन्जाम हुआ और बेशक आख़ेरत का घर परहेज़गारों के लिये बेहतर तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।

११०. यहाँ तक जब रसूलों को ज़ाहिरी असबाब की उम्मीद न रही

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ ع

وَكَأَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ
عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ إِلَّا وَ
هُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾

أَفَأَمِنُوْا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ
عَذَابِ اللّٰهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ
بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْ أَدْعُوْا إِلَى اللّٰهِ قف
عَلٰى بَصِيْرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ وَ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا
نُّوْحِيْ إِلَيْهِمْ مِّنْ أَهْلِ الْقُرٰى أَفَلَمْ
يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا
أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾

حَتّٰى إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْا

أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا
فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ
الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾

और लोग समझे कि रसूलों ने उनसे गलत कहा था उस वक़्त हमारी मदद आई तो जिसे हमने चाहा बचा लिया गया और हमारा अज़ाब मुजरिम लोगों से फेरा नही जाता।

لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي
الْأَلْبَابِ ۗ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى
وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ
وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّ
رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾

१११. बेशक उनकी खबरों से अक़लमनदों की आँखे खुलती है ये कोई बनावट की बात नही लेकिन अपने से अगले कामों की तसदीक़ है और हर चीज़ का मुफ़स्सल बयान और मुसलमानों के लिये हिदायत और रहमत ।

سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

सूरए रअ़द

मदनी है इसमें तैतालीस आयात
और छे रुकूअ़ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत मेहरबान रहमवाला

रुकूअ़ १

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۗ وَالَّذِيْٓ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١﴾

१. ये किताब की आयतें हैं और वो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा हक़ है मगर अक्सर आदमी ईमान नहीं लाते।

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ
تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَ
سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ
لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ﴿٢﴾

२. अल्लाह है जिसने आसमानों को बुलन्द किया बे सुतूनों के कि तुम देखो फिर अर्श पर इसतिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लाइक़ है और सूरज और चांद को मुसख्खर किया हर एक एक ठहराए हुए वअ़दा तक चलता है अल्लाह काम की तदबीर फ़रमाता और मुफ़स्सल निशानियाँ बताता है कही तुम अपने रब का मिलना यक़ीन करो।

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ

३. और वही है जिसने ज़मीन

فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا ۖ وَمِن كُلِّ
الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ
يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣﴾

को फैलाया और उसमें लंगर और नहरें बनाईं और ज़मीन में हर क़िस्म के फल दो दो तरह के बनाये रात से दिन को छुपा लेता है बेशक उसमें निशानियाँ हैं ध्यान करने वालों को।

وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَاوِرَاتٌ وَجَنَّاتٌ
مِّنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ
وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ
وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي
الْأُكُلِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾

४. और ज़मीन के मुख़तलिफ़ क़तअे हैं और है पास पास और बाग़ हैं अंगूरों के और खेती और खजूर के पेड़ एक थाले से उगे और अलग अलग सबको एक ही पानी दिया जाता है और फलों में हम एक को दूसरे से बेहतर करते हैं बेशक उसमें निशानियाँ है अक़लमन्दों के लिये।

وَإِن تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا
تُرَابًا أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَالُ
فِي أَعْنَاقِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥﴾

५. और अगर तुम तअज्जुब करो तो अचबा तो उनके इस कहने का है कि क्या हम मिट्टी हो कर फिर नये बनेंगे वो हैं जो अपने रब से मुनकिर हुए और वो हैं जिनकी गरदनों में तौक़ होंगे और वो दोज़ख वाले हैं उन्हें उसी में रहना।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ
وَقَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِمُ الْمَثُلَاتُ ۗ وَ
إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَىٰ
ظُلْمِهِمْ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾

६. और तुमसे अज़ाब की जल्दी करते हैं रहमत से पहले और उनसे अगलों की सज़ाएँ हो चुकीं और बेशक तुम्हारा रब तो लोगों के ज़ुल्म पर भी उन्हें एक तरह की मुआफ़ी देता है और बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब सख़्त है।

७. और काफ़िर कहते हैं उनपर उनकी तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी तुम तो डर सुनाने वाले हो और हर क़ौम के हादी।	وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّنْ رَّبِّهِ ۗ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ ۖ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ⑦
रुकूअ २	
८. अल्लाह जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है और पेट जो कुछ घटते और बढ़ते हैं और हर चीज़ उसके पास एक अन्दाज़े से है।	اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ⑧
९. हर छुपे और खुले का जानने वाला सबसे बड़ा बुलन्दी वाला ।	عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ⑨
१०. बराबर हैं जो तुममें बात आहिस्ता कहे और जो आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है।	سَوَاءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ⑩
११. आदमी के लिये बदली वाले फ़रिश्ते हैं उसके आगे पीछे कि बहुकमे खुदा उसकी हिफ़ाज़त करते हैं बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी नेअमत नहीं बदलता जबतक वो खुद अपनी हालत न बदलदें और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई चाहे तो वो फिर नहीं सकती और उसके सिवा उनका कोई हिमायती नहीं।	لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۗ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَالٍ ⑪
१२. वही है तुम्हें बिजली दिखाता है डर को और उम्मीद को और भारी बदलियाँ उठाता है ।	هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ⑫

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ
فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ
فِى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾

१३. और गरज उसे सराहती हुई उसकी पाकी बोलती है और फ़रिश्ते उसके डर से और कड़क भेजता है तो उसे डालता है जिसपर चाहे और वो अल्लाह में झगड़ते होते है और उसकी पकड़ सख्त है ।

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۗ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَىْءٍ
اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ
وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ۗ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ
اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ﴿١٤﴾

१४. उसी का पुकारना सच्चा है और उसके सिवा जिनको पुकारते है वो उनकी कुछ भी नहीं सुनते मगर उसकी तरह जो पानी के सामने अपनी हथेलियाँ फैलाए बैठा है कि उसके मुँह में पहुँच जाए और वो हरगिज़ न पहुँचेगा और काफ़िरों की हर दुआ भटकती फिरती है।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ
بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿١٥﴾

१५. और अल्लाह ही को सज्दा करते है जितने आसमानों और ज़मीन में है ख़ुशी से ख़्वाह मजबूरी से और उनकी परछाइयाँ हर सुबह व शाम।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ
قُلِ اللّٰهُ ۗ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ
اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ
نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى
الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِى
الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ
شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ

१६. तुम फ़रमाओ कौन रब है आसमानों और ज़मीन का तुम ख़ुद ही फ़रमाओ अल्लाह तुम फ़रमाओ तो क्या उसके सिवा तुमने वो हिमायती बना लिये हैं जो अपना भला बुरा नहीं कर सकते हैं तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जायेंगे अन्धा और अँखियारा या क्या बराबर हो जाएंगी अन्धेरियाँ और उजाला क्या अल्लाह के लिये ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने अल्लाह की तरह कुछ बनाया तो उन्हें उनका और

उसका बनाना एक सा मअ़लूम हुआ तुम फ़रमाओ अल्लाह हर चीज़ का बनाने वाला है और वो अकेला सब पर ग़ालिब है।

१७. उसने आसमान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक़ बह निकले तो पानी की रौ उसपर उभरे हुये झाग उठा लाई और जिस पर आग दहकाते हैं गहना या और असबाब बनाने को उससे भी वैसे ही झाग उठते है अल्लाह बताता है कि हक़ और बातिल की यही मिसाल है तो झाग तो फुंक (जल) कर दूर हो जाता है और वो जो लोगो के काम आए ज़मीन मे रहता है अल्लाह यूँ ही मिसालें बयान फ़रमाता है।

१८. जिन लोगो ने अपने रब का हुक्म माना उन्हीं के लिए भलाई है और जिन्होंने उसका हुक्म न माना अगर ज़मीन मे जो कुछ है वो सब और उस जैसा और उनकी मिल्क मे होता तो अपनी जान छुड़ाने को दे देते यही है जिनका बुरा हिसाब होगा और उनका ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा बिछौना।

रुकूअ ३

१९. तो क्या वो जो जानता है जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पाससे उतरा हक़ है वो उस जैसा होगा जो अन्धा है नसीहत वही मानते है जिन्हें अक़्ल है।

२०. वो जो अल्लाह का अहद।

الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ
شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾
أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ
بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا
رَابِيًا وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ
ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلُهُ
كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ
فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً وَأَمَّا مَا
يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ
كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾
لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ
وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ
مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ
لَافْتَدَوْا بِهِ أُولٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ
وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾
أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ
رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ إِنَّمَا
يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾
الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا

يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿٢٠﴾

पूरा करते हैं और क़ौल बांध कर फिरते नहीं।

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾

२१. और वो कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया और अपने रब से डरते हैं और हिसाब की बुराई से अन्देशा रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾

२२. और वो जिन्होंने सब्र किया अपने रब की रज़ा चाहने को और नमाज़ क़ायम रखी और हमारे दिये से हमारी राह मे छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया और बुराई के बदले भलाई करके टालते हैं उन्हीं के लिये पिछले घर का नफ़अ है।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾

२३. बसने के बाग़ जिन में वो दाख़ल होंगे और जो लाइक़ हों उन के बाप दादा और बीबियों और अवलाद में और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उन पर ये कहते आयेंगे।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

२४. सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला।

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ

२५. और वो जो अल्लाह का अहद उसके पक्के होने के बाद तोड़ते और जिस के जोड़ने को अल्लाह ने फ़रमाया उसे क़तअ करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं उन का हिस्सा

وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾

लअनत ही है और उनका नसीबा बुरा घर।

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

२६. अल्लाह जिस के लिए चाहे रिज़्क़ कुशादा और तंग करता है और काफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी पर इतरा गए और दुनिया की ज़िन्दगी आख़ेरत के मुक़ाबिल नहीं मगर कुछ दिन बरत लेना।

रुकूअ ४

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿٢٧﴾

२७. और काफ़िर कहते उन पर कोई निशानी उनके रब की तरफ़ से क्यों न उतरी तुम फ़रमाओ बेशक अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करता है और अपनी राह उसे देता है जो उसकी तरफ़ रुजूअ लाये।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۗ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾

२८. वो जो ईमान लाए और उन के दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾

२९. वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन को ख़ुशी है और अच्छा अन्जाम।

كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِىْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا عَلَيْهِمُ الَّذِىْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۗ قُلْ هُوَ رَبِّىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

३०. इसी तरह हमने तुम को उस उम्मत में भेजा जिससे पहले उम्मतें हो गुज़रीं कि तुम उन्हें पढ़कर सुनाओ जो हमने तुम्हारी तरफ़ 'वही' की और वो रहमान के मुनकिर हो रहे हैं तुम फ़रमाओ वो मेरा रब है उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैंने उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ मेरी रूजूअ है।

وَلَوْ أَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ
أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ
الْمَوْتٰى ۗ بَلْ لِّلّٰهِ الْأَمْرُ جَمِيْعًا ۗ أَفَلَمْ
يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَنْ لَّوْ يَشَآءُ
اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ۗ وَلَا
يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا
صَنَعُوْا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ
دَارِهِمْ حَتّٰى يَأْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ۗ إِنَّ
ع اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾

३१. और अगर कोई ऐसा कुरआन आता जिससे पहाड़ टल जाते या ज़मीन फट जाती या मुर्दे बातें करते जब भी ये काफ़िर न मानते बल्कि सब काम अल्लाह ही के इख़्तियार में हैं तो क्या मुसलमान उससे ना उम्मीद न हुए कि अल्लाह चाहता तो सब आदमियों को हिदायत कर देता और काफ़िरों को हमेशा उनके किए पर ये सख़्त धमक पहुँचती रहेगी या उन के घरों के नज़दीक उतरेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वअदा आए बेशक अल्लाह वअदा ख़िलाफ़ नहीं करता।

रुकूअ ५

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ
فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾

३२. और बेशक तुमसे अगले रसूलों से भी हँसी की गई तो मैं ने काफ़िरो को कुछ दिनों ढ़ील दी फिर उन्हें पकड़ा तो मेरा अज़ाब कैसा था।

أَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا
كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ۗ قُلْ
سَمُّوْهُمْ ۗ أَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي
الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ
بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ
وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ۗ وَمَنْ
يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

३३. तो क्या वो हर जान पर उस के अअमाल की निगहदाश्त रखता है और वो अल्लाह के शरीक ठहराते है तुम फ़रमाओ उनका नाम तो लो या उसे वो बताते हो जो उसके इल्म में सारी ज़मीन में नहीं या यूँ ही ऊपरी बात बल्कि काफ़िरों की निगाह में उनका फ़रेब अच्छा ठहरा है और राह से रोके गए और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं।

३४. उन्हें दुनिया के जीते अज़ाब होगा और बेशक आख़िरत का अज़ाब सबसे सख़्त है और उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ
لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ
مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾

३५. अह्वाल उस जन्नत का कि डर वालों के लिए जिस का वअदा है उसके नीचे नहरें बहती हैं उसके मेवे हमेशा और उसका साया डर वालों का तो ये अन्जाम है और काफ़िरों का अन्जाम आग।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا
دَاۗىِٕمٌ وَّظِلُّهَا ۭ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ
اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

३६. और जिनको हमने किताब दी वो उस पर खुश होते जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और उन गिरोहों में कुछ वो हैं कि उसके बअज़ से मुनकिर हैं तुम फ़रमाओ मुझे तो यही हुक्म है कि अल्लाह की बन्दगी करूँ और उसका शरीक न ठहराऊँ मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मुझे फिरना ।

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ
بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ
مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۭ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ
اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۭ اِلَيْهِ
اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾

३७. और इसी तरह हमने इसे अरबी फ़ैसला उतारा और ऐ सुनने वाले अगर तू उनकी ख़्वाहिशों पर चलेगा बाद इसके तुझे इल्म आ चुका तो अल्लाह के आगे न तेरा कोई हिमायती होगा न बचाने वाला।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَ
لَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ مَا
جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ ع

रुकूअ ६

३८. और बेशक हमने तुमसे पहले रसूल भेजे और उनके लिये बीबियाँ और बच्चे किए और किसी रसूल का काम नहीं कि कोई निशानी

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ
وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۭ وَ
مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا

ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से हर वअ़दा की एक लिखत है।

३९. अल्लाह जो चाहे मिटाता और साबित करता है और अस्ल लिखा हुआ उसी के पास है।

४०. और अगर हमीं तुम्हें दिखा दे कोई वअ़दा जो उन्हें दिया जाता है या पहले ही अपने पास बुलाए तो बहरहाल तुम पर तो सिर्फ़ पहुँचाना है और हिसाब लेना हमारा ज़िम्मा।

४१. क्या उन्हें नहीं सूझता कि हम हर तरफ़ से उनकी आबादी घटाते आरहे हैं और अल्लाह हुक्म फ़रमाता है उसका हुक्म पीछे डालने वाला कोई नहीं और उसे हिसाब लेते देर नहीं लगती।

४२. और उनसे अगले फ़रेब कर चुके हैं तो सारी खुफ़िया तदबीर का मालिक तो अल्लाह ही है जानता है जो कुछ कोई जान कमाये और अब जानना चाहते हैं काफ़िर किसे मिलता है पिछला घर।

४३. और काफ़िर कहते हैं तुम रसूल नहीं तुम फ़रमाओ अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुममें और वो जिसे किताब का इल्म है।

بِإِذْنِ اللّٰهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾
يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ وَعِنْدَهُ
أُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾
وَإِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ
أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَ
عَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ
نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللّٰهُ
يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾
وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ
كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ
عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾
وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ
مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيدًا
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهُ
عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾

सूरए इब्राहीम

मक्की है इसमें बावन आयात और सात रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. एक किताब है कि हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी कि तुम लोगों को अंधेरीयों से उजाले में लाओ उनके रब के हुक्म से उसकी राह की तरफ़ जो इज़्ज़तवाला सब ख़ूबियों वाला है।

२. अल्लाह कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और काफ़िरों की ख़राबी है एक सख़्त अज़ाब से।

३. जिन्हें आख़ेरत से दुनिया की ज़िन्दगी प्यारी है और अल्लाह की राह से रोकते और उसमें कजी चाहते है वो दूर की गुमराही में हैं।

४. और हमने हर रसूल उस की क़ौम ही की ज़ुबान में भेजा कि वो उन्हें साफ़ बताये फिर अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और वो राह दिखाता है जिसे चाहे और वही इज़्ज़त हिकमत वाला है।

५. और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियाँ लेकर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरियों से उजाले में ला

سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اِثْنَتَانِ وَخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓرٰ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ ①

اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ ②

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ③

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ④

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ

और उन्हे अल्लाह के दिन याद दिला। बेशक उस मे निशानियाँ हैं हर बड़े सब्र वाले शुक्र गुज़ार को।

६. और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा याद करो अपने ऊपर अल्लाह का एहसान जब उसने तुम्हे फ़िरऔन वालो से नजात दी जो तुमको बुरी मार देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़िबह करते और तुम्हारी बेटियाँ ज़िन्दा रखते और उसमे तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुआ।

रुकूअ २

७. और याद करो जब तुम्हारे रब ने सुना दिया कि अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हे और दूँगा और अगर नाशुकरी करो तो मेरा अज़ाब सख़्त है।

८. और मूसा ने कहा अगर तुम और ज़मीन मे जितने हैं सब काफ़िर होजाओ तो बेशक अल्लाह बेपरवाह सब ख़ूबियों वाला है।

९. क्या तुम्हे उनकी ख़बरें न आई जो तुमसे पहले थी नूह की कौम और आद और समूद और जो उन के बाद हुए उन्हें अल्लाह ही जाने उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लेकर आए तो वो अपने हाथ अपने मुंह की तरफ़ ले गये और बोले हम मुनकिर है

وَذَكِّرْهُم بِأَيَّامِ اللَّهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ⑤

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا
نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجَاكُم مِّنْ
آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ
وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ
نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن
ع
رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ⑥

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ
لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ
عَذَابِي لَشَدِيدٌ ⑦

وَقَالَ مُوسَىٰ إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ
وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ
اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ⑧

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ
مِن بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا
أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا

كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ وَإِنَّا لَفِي
شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ⑨

उसके जो तुम्हारे हाथ भेजा गया और जिस राह की तरफ़ हमें बुलाते हो उसमें हमें वो शक है कि बात खुलने नही देता।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ
لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَ
يُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوا
إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ
أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ
يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ
مُّبِينٍ ⑩

१०. उनके रसूलों ने कहा क्या अल्लाह में शक है आसमान और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हे बुलाता है कि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्शे और मौत के मुक़र्रर वक़्त तक तुम्हारी ज़िन्दगी बे अज़ाब काट दे बोले तुम तो हमही जैसे आदमी हो तुम चाहते हो कि हमें उससे बाज़ रखो जो हमारे बाप दादा पूजते थे अब कोई रौशन सनद हमारे पास ले आओ।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَّحْنُ إِلَّا
بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ
عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَمَا
كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ⑪

११. उनके रसूलों ने उनसे कहा हम हैं तो तुम्हारी तरह इन्सान मगर अल्लाह अपने बन्दों में जिस पर चाहे एहसान फ़रमाता है और हमारा काम नहीं कि हम तुम्हारे पास कुछ सनद ले आएं मगर अल्लाह के हुक्म से और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए।

وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ
وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا وَلَنَصْبِرَنَّ
عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا وَعَلَى اللَّهِ

१२. और हमें क्या हुआ कि अल्लाह पर भरोसा न करें उसने तो हमारी राहें हमें दिखा दीं और तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर उसपर सब्र

करेंगे और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये।

रुकूअ ३

१३. और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम ज़रूर तुम्हें अपनी ज़मीन से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन पर होजाओ तो उन्हें उन के रब ने 'वही' भेजी कि हम ज़रूर ज़ालिमों को हलाक करेंगे।

१४. और ज़रूर हम तुम को उनके बाद ज़नीन में बसाएँगे ये उसके लिये है जो मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अज़ाब का हुकम सुनाया है उससे ख़ौफ़ करे।

१५. और उन्होंने फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म नामुराद हुआ।

१६. जहन्नम उसके पीछे लगी और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा।

१७. ब मुश्किल उसका थोड़ा थोड़ा घूँट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी और उसे हर तरफ़ से मौत आएगी और मरेगा नहीं और उसके पीछे एक गाढ़ा अज़ाब।

१८. अपने रब से मुनकिरों का हाल ऐसा है कि उन के काम हैं जैसे राख कि उस पर हवा का सख़्त झोंका आया आँधी के दिन में सारी कमाई में कुछ हाथ न लगा यही है दूर की

ع فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿١٢﴾
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ
فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ
لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾
وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ
ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ
وَعِيْدِ ﴿١٤﴾
وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ
عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾
مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ
مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾
يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ
وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾
مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ
اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ
الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ
مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ

الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ⑱

गुमराही।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑲

१९. क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान व ज़मीन हक़ के साथ बनाए अगर चाहे तो तुम्हें ले जाये और एक नई मख़लूक़ ले आये।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ⑳

२०. और ये अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं।

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا
لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ
اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
لَهَدَيْنٰكُمْ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ
صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ㉑

२१. और सब अल्लाह के हुज़ूर एअलानिया हाज़िर होंगे तो जो कमज़ोर थे बड़ाई वालों से कहेंगे हम तुम्हारे ताबेअ थे क्या तुम से हो सकता है कि अल्लाह के अज़ाब में से कुछ हम पर से टाल दो कहेंगे अल्लाह हमें हिदायत करता तो हम तुम्हें करते हम पर एकसा है चाहे बेक़रारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं।

रुकूअ ४

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ
اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ
وَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ
لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ
دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ
وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ مَا اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ
وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ
اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ

२२. और शैतान कहेगा जब फ़ैसला हो चुकेगा बेशक अल्लाह ने तुमको सच्चा वअदा दिया था और मैं ने जो तुम को वअदा दिया था वो मैं ने तुमसे झूठा किया और मेरा तुम पर कुछ क़ाबू न था मगर यही कि मैं ने तुम को बुलाया तुम ने मेरी मान ली तो अब मुझ पर इलज़ाम न रखो ख़ुद अपने ऊपर इलज़ाम रखो न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पहुँच सकूँ न तुम मेरी फ़रियाद को पहुँच सको वो जो पहले तुमने मुझे शरीक ठहराया था मैं उससे सख़्त बेज़ार हूँ बेशक ज़ालिमों के लिये

لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾

दर्दनाक अज़ाब है।

وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ تَحِيَّتُهُمْ
فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾

२३. और वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वो बाग़ों में दाख़िल किए जायेंगे जिन के नीचे नहरें रवाँ हमेशा उनमें रहें अपने रब के हुक्म से उसमें उनके मिलते वक़्त का इकराम सलाम है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً
طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ
وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ۙ ﴿٢٤﴾

२४. क्या तुमने न देखा अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई पाकीज़ा बात की जैसे पाकीज़ा दरख़्त जिस की जड़ क़ायम और शाख़ें आसमान में।

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۭ بِاِذْنِ رَبِّهَا ۗ
وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾

२५. हर वक़्त अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से और अल्लाह लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है कि कहीं वो समझे।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۨ
اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا
مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

२६. और गन्दी बात की मिसाल जैसे एक गन्दा पेड़ कि ज़मीन के ऊपर से काट दिया गया अब उसे कोई क़ियाम नहीं।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ
الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ
وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ
اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾ ع

२७. अल्लाह साबित रखता है ईमान वालो को हक़ बात पर दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़ेरत में और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करता है और अल्लाह जो चाहे करे।

रुकूअ ५

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ

२८. क्या तुम ने उन्हें न देखा

जिन्होंने अल्लाह की नेअमत नाशुकरी से बदल दी और अपनी क़ौम को तबाही के घर ला उतारा।

२९. वो जो दोज़ख है उसके अन्दर जायेंगे और क्या ही बुरी ठहरने को जगह।

३०. और अल्लाह के लिए बराबर वाले ठहराये कि उस की राह से बहकावें तुम फ़रमाओ कुछ बरत लो कि तुम्हारा अन्जाम आग है।

३१. मेरे उन बन्दों से फ़रमाओ जो ईमान लाये कि नमाज़ क़ायम रखें और हमारे दिए में से कुछ हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर खर्च करें उस दिन के आने से पहले जिसमें न सौदागरी होगी न याराना।

३२. अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और आसमान से पानी उतारा तो उससे कुछ फल तुम्हारे खाने को पैदा किए और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्ख़र किया कि उसके हुक्म से दरिया में चले और तुम्हारे लिये नदियाँ मुसख़्ख़र की।

३३. और तुम्हारे लिए सूरज और चाँद मुसख़्ख़र किए जो बराबर चल रहे हैं और तुम्हारे लिए रात और दिन मुसख़्ख़र किए।

३४. और तुम्हें बहुत कुछ मुँह मांगा दिया और अगर अल्लाह की नेअमतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे

اللّٰهِ كُفْرًا وَّ اَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ
الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾
جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ
اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾
قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا
وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ
لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ
مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ
الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾
وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾
وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۗ وَ
اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا

إِنَّ الْإِنسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

बेशक आदमी बड़ा ज़ालिम बड़ा ना शुकरा है।

रुकूअ ६

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَٰذَا
الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَن
نَّعْبُدَ الْأَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

३५. और याद करो जब इब्राहीम ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब इस शहर को अमान वाला कर दे और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के पूजने वाले से बचा।

رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ
النَّاسِ ۖ فَمَن تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي ۖ وَ
مَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٦﴾

३६. ऐ मेरे रब बेशक बुतों ने बहुत लोग बहका दिए तो जिसने मेरा साथ दिया वो तो मेरा है और जिसने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है।

رَّبَّنَا إِنِّي أَسْكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ
غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ
رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ
أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ
وَارْزُقْهُم مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ
يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

३७. ऐ मेरे रब मैंने अपनी कुछ अवलाद एक नाले में बसाई जिसमें खेती नहीं होती तेरे हुरमत वाले घर के पास ऐ हमारे रब इसलिए कि वो नमाज़ क़ायम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल उनकी तरफ़ माइल कर दे और उन्हें कुछ फल खाने को दे शायद वो एहसान मानें।

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا
نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِن شَيْءٍ
فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٨﴾

३८. ऐ हमारे रब तू जानता है जो हम छुपाते है और जो ज़ाहिर करते और अल्लाह पर कुछ छुपा नहीं ज़मीन में और न आसमान में।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى
الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبِّي
لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾

३९. सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने मुझे बुढ़ापे में इसमाईल व इसहाक़ दिए बेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है।

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾

४०. ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ायम करने वाला रख और कुछ मेरी अवलाद को ऐ हमारे रब और मेरी दुआ सुन ले।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

४१. ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ायम होगा।

रुकूअ ७

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۗ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾

४२. और हरगिज़ अल्लाह को बे खबर न जानना ज़ालिमो के कामसे उन्हे ढील नही दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिए जिसमें आँखे खुली की खुली रह जाएँगी।

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾

४३. बे तहाशा दौड़ते निकलेगे अपने सर उठाये हुए कि उन की पलक उनकी तरफ़ लौटती नही और उनके दिलों में कुछ सकत न होगी।

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۗ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾

४४. और लोगो को उस दिन से डराओ जब उन पर अज़ाब आएगा तो ज़ालिम कहेंगे ऐ हमारे रब थोड़ी देर हमें मुहलत दे कि हम तेरा बुलाना मानें और रसूलों की गुलामी करे तो क्या तुम पहले क़सम न खा चुके थे कि हमें दुनिया से कही हट कर जाना नहीं।

وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾

४५. और तुम उनके घरो मे बसे जिन्होने अपना बुरा किया था और तुमपर खूब खुल गया हम ने उनके साथ कैसा किया और हमने तुम्हे मिसालें देकर बता दिया।

وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۗ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ

४६. और बेशक वो अपना सा दाँव चले और उनका दाँव अल्लाह के क़ाबू मे है और उनका दाँव कुछ

ऐसा न था जिस से ये पहाड़ टल जाए।

४७. तो हरगिज़ ख़याल न करना कि अल्लाह अपने रसूलों से वअ़दा ख़िलाफ़ करेगा बेशक अल्लाह ग़ालिब है बदला लेना वाला।

४८. जिस दिन बदल दी जाएगी ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और आसमान और लोग सब निकल खड़े होंगे एक अल्लाह के सामने जो सब पर ग़ालिब है।

४९. और उस दिन तुम मुजरिमों को देखोगे कि बेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे।

५०. उनके कुर्ते राल के होंगे और उनके चेहरे आग ढाँप लेगी।

५१. इस लिये कि अल्लाह हर जान को उसकी कमाई का बदला दे बेशक अल्लाह को हिसाब करते कुछ देर नहीं लगती।

५२. ये लोगों को हुक्म पहुँचाना है और इसलिए कि वो इससे डराये जाएँ और इसलिये कि वो जान लें कि वो एक ही मअ़बूद है और इसलिए कि अक़्ल वाले नसीहत मानें।

सूरए हिज्र

मक्की है इसमें निन्नानवे आयात और छः रुकूअ़ है।

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

रुकूअ़ १

१. ये आयतें है किताब और रौशन कुरआॅन की।

لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾
فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ
رُسُلَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾
يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ
وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ
الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾
وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ مُّقَرَّنِيْنَ
فِي الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾
سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى
وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾
لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾
هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ
وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ
لِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَتِسْعُوْنَ اٰيَةً وَسِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ
مُّبِيْنٍ ﴿١﴾

२. बहुत आरज़ूएँ करेंगे काफ़िर काश मुसलमान होते।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝٢

३. उन्हें छोड़ो कि खाएँ और बरतें और उम्मीद उन्हें खेल में डाले तो अब जानना चाहते हैं।

ذَرْهُمْ يَأْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٣

४. और जो बस्ती हमने हलाक की उसका एक जाना हुआ नविश्ता था।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝٤

५. कोई गिरोह अपने वअ़दा से आगे न बढ़े न पीछे हटे।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝٥

६. और बोले कि ऐ वो जिन पर कुरआन उतरा बेशक तुम मजनून हो।

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝٦

७. हमारे पास फ़रिश्ते क्यो नहीं लाते अगर तुम सच्चे हो।

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧

८. हम फ़रिश्ते बेकार नहीं उतारते और वो उतरें तो उन्हें मुहलत न मिले।

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝٨

९. बेशक हमने उतारा है ये कुरऑन और बेशक हम खुद इसके निगहबान हैं।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝٩

१०. और बेशक हमने तुमसे पहले अगली उम्मतों में रसूल भेजे।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٠

११. और उनके पास कोई रसूल

नहीं आता मगर उससे हँसी करते हैं।

१२. ऐसे ही हम उस हँसी को उन मुजरिमों के दिलों में राह देते है।

१३. वो उसपर ईमान नहीं लाते और अगलों की राह पड़ चुकी है।

१४. और अगर हम उनके लिए आसमान में कोई दरवाज़ा खोल दें कि दिन को उसमें चढ़ते।

१५. जब भी यही कहते कि हमारी निगाह बाँध दी गई है बल्कि हम पर जादू हुआ है।

रुकूअ २

१६. और बेशक हमने आसमान में बुर्ज बनाएऔर उसे देखने वालों के लिए आरास्ता किया।

१७. और उसे हमने हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ रखा।

१८. मगर जो चोरी छुपे सुनने जाए तो उसके पीछे पड़ता है रौशन शोअला।

१९. और हमने ज़मीन फैलाई और उसमें लंगर डाले और उसमें हर चीज़ अंदाजे से उगाई।

२०. और तुम्हारे लिए उसमें रोज़ियाँ कर दीं और वो कर दिए

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ رَّسُولٍ اِلَّا كَانُوْا
بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١١﴾
كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٢﴾
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾
وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ
فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ﴿١٤﴾
لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ
نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ﴿١٥﴾
وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّ
زَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾
وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾
اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ
شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾
وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ
شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾
وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

जिन्हें तुम रिज़्क़ नहीं देते।

२१. और कोई चीज़ नहीं जिसके हमारे पास ख़ज़ाने न हों और हम उसे नहीं उतारते मगर एक मअ़लूम अंदाज़ से।

२२. और हमने हवायें भेजीं बादलों को बारवर करने वालियाँ तो हमने आसमान से पानी उतारा फिर वो तुम्हें पीने को दिया और तुम कुछ उसके ख़ज़ान्ची नहीं।

२३. और बेशक हमीं जिलाएँ और हमीं मारें और हमीं वारिस हैं।

२४. और बेशक हमें मअ़लूम हैं जो तुममें आगे बढ़े और बेशक हमें मअ़लूम हैं जो तुम में पीछे रहे।

२५. और बेशक तुम्हारा रब ही उन्हें क़यामत में उठाएगा बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है।

रुकूअ ३

२६. और बेशक हमने आदमी को बजती हुइ मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह बू दार गारा थी।

२७. और जिन्न को उससे पहले बनाया बे धुएँ की आग से।

२८. और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं आदमी को बनाने वाला हूँ बजती मिट्टी से जो बदबूदार सियाह गारे से है।

२९. तो जब मैं उसे ठीक कर

لَسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾
وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ
وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾
وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ
اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾
وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ
الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ
وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾
وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ
حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ ع
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ
مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٦﴾
وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ
نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾
وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ
خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ
حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾

लूँ और उसमें अपनी तरफ़ की ख़ास मुअज़्ज़ज़ रुह फूँक दूँ तो उसके लिए सज्दे मे गिर पड़ना।

३०. तो जितने फ़रिश्ते थे सबके सब सज्दे में गिरे।

३१. सिवा इबलीस के उसने सज्दा वालों का साथ न माना।

३२. फ़रमाया ऐ इबलीस तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों से अलग रहा।

३३. बोला मुझे ज़ेबा नहीं कि बशर को सज्दा करूँ जिसे तूने बजती मिट्टी से बनाया जो सियाह बू दार गारे से थी।

३४. फ़रमाया तो जन्नत से निकल जा कि तू मरदूद है।

३५. और बेशाक क़यामत तक तुझपर लअ़नत है।

३६. बोला ऐ मेरे रब तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वो उठाये जाएँ।

३७. फ़रमाया तू उनमें है जिनको उस मअ़लूम वक़्त ।

३८. के दिन तक मोहलत है।

३९. बोला ऐ रब मेरे क़सम इसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन में भुलावे दूँगा और ज़रूर मैं उन सब को बे राह करूँगा।

४०. मगर जो उनमें तेरे चुने हुए बंदे हैं।

४१. फ़रमाया ये रास्ता सीधा मेरी

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي
فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾
فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾
إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَن يَكُونَ مَعَ
السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾
قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ
مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾
قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ
مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٣﴾
قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾
وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾
قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ
يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾
قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٣٧﴾
إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾
قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ
لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾
إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

तरफ़ आता है।

४२. बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं सिवा उन गुमराहों के जो तेरा साथ दें।

४३. और बेशक जहन्नम उन सबका वअदा है।

४४. उसके सात दरवाज़े है हर दरवाज़े के लिए उनमें से एक हिस्सा बटा हुआ है।

रुकूअ ४

४५. बेशक डर वाले बाग़ों और चश्मों में है।

४६. उनमें दाख़िल हो सलामती के साथ अमान में।

४७. और हमने उनके सीनों मे जो कुछ कीने थे सब खींच लिए आपस में भाई हैं तख़्तों पर रू बरू बैठे।

४८. न उन्हें उसमें कुछ तकलीफ़ पहुँचे न वो उसमें से निकाले जाएँ।

४९. ख़बर दो मेरे बन्दो को कि बेशक मैं ही हूँ बख़्शने वाला मेहरबान।

५०. और मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है।

५१. और उन्हें अहवाल सुनाओ इब्राहीम के मेहमानों का।

५२. जब वो उसके पास आए तो बोले सलाम कहा हमें तुमसे डर मअलूम होता है।

५३. उन्होंने कहा डरिये नहीं हम आपको एक इल्म वाले लड़के की

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿٤١﴾

اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ

اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿٤٢﴾

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٣﴾

لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ

جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿٤٤﴾

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤٥﴾

اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٤٦﴾

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ

اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٧﴾

لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ

مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ﴿٤٨﴾

نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ

الرَّحِيْمُ ﴿٤٩﴾

وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٥١﴾

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا قَالَ

اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ﴿٥٢﴾

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ

बशारत देते हैं।

५४. कहा क्या इसपर मुझे बशारत देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुँच गया अब काहे पर बशारत देते हो।

५५. कहा हमने आपको सच्ची बशारत दी है आप ना उम्मीद न हों।

५६. कहा अपने रब की रहमत से कौन ना उम्मीद हो मगर वही जो गुमराह हुए!

५७. कहा फिर तुम्हारा क्या काम है ऐ फ़रिश्तो।

५८. बोले हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं।

५९. मगर लूत के घरवाले उन सबको हम बचा लेंगे।

६०. मगर उसकी औरत हम ठहरा चुके हैं कि वो पीछे रह जाने वालों में है।

रुकूअ ५

६१. तो जब लूत के घर फ़रिश्ते आए।

६२. कहा तुम तो कुछ बेगाना लोग हो।

६३. कहा बल्कि हम तो आपके पास वो लाए है जिसमे ये लोग शक करते थे।

६४. और हम आपके पास सच्चा हुक्म लाए हैं और हम बेशक सच्चे हैं।

६५. तो अपने घरवालों को कुछ रात रहे लेकर बाहर जाइए और आप उनके पीछे चलिए और तुममें कोई

بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾
قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ
الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾
قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ
مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾
قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ
اِلَّا الضَّاۤلُّوْنَ ﴿٥٦﴾
قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾
قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾
اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾
اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ ع
فَلَمَّا جَاۤءَ اٰلَ لُوْطِ ۨ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾
قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾
قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ
يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾
وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾
فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ
اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ

पीछे फिर कर न देखे और जहाँ को हुक्म है सीधे चले जाइए।

६६. और हमने उसे उस हुक्म का फ़ैसला सुना दिया कि सुबह होते उन काफ़िरों की जड़ कट जाएगी।

६७. और शहर वाले खुशियाँ मनाते आए।

६८. लूत ने कहा ये मेरे मेहमान हैं मुझे फ़ज़ीहत न करो।

६९. और अल्लाह से डरो और मुझे रूसवा न करो।

७०. बोले क्या हमने तुम्हें मनअ न किया था कि औरों के मुआमला में दखल न दो।

७१. कहा ये क़ौम की औरतें मेरी बेटियाँ है अगर तुम्हें करना है।

७२. ऐ महबूब तुम्हारी जान की क़सम बेशक वो अपने नशा में भटक रहे हैं।

७३. तो दिन निकलते उन्हें चिंघाड़ ने आ लिया।

७४. तो हमने उस बस्ती का ऊपर का हिस्सा उसके नीचे का हिस्सा कर दिया और उनपर कंकर के पत्थर बरसाए।

७५. बेशक इसमें निशानियाँ हैं फ़रासत वालों के लिए।

७६. और बेशक वो बस्ती उस राह पर है जो अब तक चलती है।

७७. बेशक उसमें निशानियाँ है ईमान वालों को।

७८. और बेशक झाड़ी वाले ज़रूर ज़ालिम थे।

७९. तो हमने उनसे बदला लिया

وَّ امْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾
وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ
هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾
وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾
قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾
قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾
قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ
فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾
لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾
فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾
فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا
عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾
وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾
وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾
وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾
وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا
مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾
وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا
اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾
فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾
فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾
وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ السَّاعَةَ
لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾
اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ
وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾
لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ
اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾
وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾

और बेशक ये दोनों बस्तियां खुले रस्ता पर पड़ती हैं।

रुकूअ ६

८०. और बेशक हिज्र वालों ने रसूलों को झुठलाया।

८१. और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं तो वो उनसे मुँह फेरे रहे।

८२. और वो पहाड़ो में घर तराशते थे बे ख़ौफ़।

८३. तो उन्हें सुबह होते चिंघाड़ ने आलिया।

८४. तो उनकी कमाई कुछ उनके काम न आई।

८५. और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान है अबस न बनाया और बेशक क़यामत आने वाली है तो तुम अच्छी तरह दरगुज़र करो।

८६. बेशक तुम्हारा रब ही बहुत पैदा करने वाला जानने वाला है।

८७. और बेशक हमने तुमको सात आयते दीं जो दोहराई जाती हैं और अज़मत वाला कुरआँन।

८८. अपनी आँख उठा कर उस चीज़ को न देखो जो हमने उनके कुछ जोड़ो को बरतने दी और उनका कुछ ग़म न खाओ और मुसलमानों को अपने रहमत के परों मे ले लो।

८९. और फ़रमाओ कि मै ही हूँ साफ़ डर सुनाने वाला (उस अज़ाब से)।

९०. जैसा हमने बाँटने वालो पर

उतारा।

९१. जिन्होंने कलामे-इलाही को तिक्के बोटी कर लिया।

९२. तो तुम्हारे रब की क़सम हम ज़रूर उन सब से पूछेंगे।

९३. जो कुछ वो करते थे।

९४. तो एअलानिया कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है और मुश्रिकों से मुँह फेर लो।

९५. बेशक उन हँसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं।

९६. जो अल्लाह के साथ दूसरा मअबूद ठहराते हैं तो अब जान जाएँगे।

९७. और बेशक हमें मअलूम है कि उनकी बातों से तुम दिल तँग होते हो।

९८ तो अपने रब को सराहते हुए उसकी पाकी बोलो और सज्दा वालों में हो।

९९. और मरते दम तक अपने रब की इबादत में रहो।

सूरए नहल

मक्की है इसमें एक सौ अट्ठाइस आयात और सोलह रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. अब आता है अल्लाह का हुक्म तो उसकी जल्दी न करो पाकी और बरतरी है उसे इन शरीकों से।

२. मलायका को ईमान की जान

كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾

فَوَرَبِّكَ لَنَسْــَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾

الربع

عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾

اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ

فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ

بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ

السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ

الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾ ع

سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّثَمَانٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ

وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿٢﴾

यअनी 'वही' लेकर अपने जिन बन्दों पर चाहे उतारता है कि डर सुनाओ कि मेरे सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो मुझ से डरो ।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾

३. उस में आसमान और ज़मीन बजा बनाए वो उनके शिर्क से बरतर है।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾

४. (उसने) आदमी को एक निथरी बूंद से बनाया तो जभी खुला झगड़ालू है।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٥﴾

५. और चौपाये पैदा किए उनमें तुम्हारे लिए गरम लिबास और मनफ़अतें हैं और उनमें से खाते हो।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ﴿٦﴾

६. और तुम्हारा उनमें तजम्मुल है जब उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो।

وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧﴾

७. और वो तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसे शहर की तरफ़ कि तुम उस तक न पहुँचते मगर अध मरे होकर बेशक तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रहम वाला है।

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾

८. और घोड़े और ख़च्चर और गधे के उनपर सवार हो और ज़ीनत के लिए और वो पैदा करेगा जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩﴾

९. और बीच की राह ठीक अल्लाह तक है और कोई राह टेढ़ी है और चाहता तो तुम सबको राह पर लाता।

रुकूअ २

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ

१०. वही है जिसने आसमान से

पानी उतारा उससे तुम्हारा पीना है उससे दरख़्त हैं जिनसे चराते हो।

مِنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ﴿١٠﴾

११. उस पानी से तुम्हारे लिए खेती उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल बेशक उसमें निशानी है ध्यान करने वालों को।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١١﴾

१२. और उस में तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र किए रात और दिन सूरज और चाँद और सितारे उसके हुक्म के बाँधे हैं बेशक उस में निशानियाँ हैं अक़्लमन्दों को।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٢﴾

१३. और वो जो तुम्हारे लिये ज़मीन में पैदा किया रंग बिरंग बेशक उसमें निशानी है याद करने वालों को।

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾

१४. और वही है जिसने तुम्हारे लिए दरिया मुसख़्ख़र किया कि उसमें से ताजा गोश्त खाते हो और उस में से गहना निकालते हो जिसे पहनते हो और तू उसमें कश्तियाँ देखे कि पानी चीर कर चलती हैं और इसलिये कि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और कहीं एहसान मानो।

وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾

१५. और उसने ज़मीन में लंगर डाले कि कहीं तुम्हें लेकर न काँपे और नदियाँ और रस्ते कि तुम राह पाओ

وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾

وَعَلٰمٰتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾

१६. और अलामतें और सितारे से वो राह पाते हैं।

اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ۚ
اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾

१७. तो क्या जो बनाए वो ऐसा हो जाएगा जो न बनाए तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते।

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۚ
اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾

१८. और अगर अल्लाह की नेअमतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾

१९. और अल्लाह जानता है जो छुपाते और ज़ाहिर करते हो।

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾

२०. और अल्लाह के सिवा जिनको पूजते हो वो कुछ भी नही बनाते और वो खुद बनाए हुए हैं।

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ
اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ ع

२१. मुर्दे है ज़िन्दा नहीं और उन्हे ख़बर नहीं लोग कब उठाए जाएँगे।

रुकूअ ३

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ
مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾

२२. तुम्हारा मअबूद एक मअबूद है तो वो जो आख़ेरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल मुनकिर है और वो मग़रूर हैं।

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا
يُعْلِنُوْنَ ۗ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

२३. फ़िलहक़ीक़त अल्लाह जानता है जो छुपाते और जो ज़ाहिर करते है बेशक वो मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ
قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾

२४. और जब उनसे कहा जाए तुम्हारे रब ने क्या उतारा कहें अगलों की कहानियाँ है।

لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ

२५. कि क़यामत के दिन अपने बोझ पूरे उठाए और कुछ बोझ उनके जिन्हे अपनी जिहालत से गुमराह करते

है सुनलो क्या ही बुरा बोझ उठाते है।

يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اَلَا سَآءَ
مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾

रुकूअ ४

२६. बेशक उनसे अगलों ने फ़रेब किया था तो अल्लाह ने उन की चुनाई को नीव से लिया तो ऊपर से उनपर छत गिर पड़ी और अज़ाब उनपर वहाँ से आया जहाँ की उन्हें ख़बर न थी।

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى
اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ
عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

२७. फिर क़यामत के दिन उन्हें रूसवा करेगा और फ़रमाएगा कहाँ हैं मेरे वो शरीक जिनमें तुम झगड़ते थे इल्मवाले कहेंगे आज सारी रूसवाई और बुराई काफ़िरों पर है।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ
اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ
تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

२८. वो कि फ़रिश्ते उनकी जान निकालते हैं इस हाल पर कि वो अपना बुरा कर रहे थे अब सुलह़ डालेंगे कि हम तो कुछ बुराई न करते थे हाँ क्यों नहीं बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कोतक थे।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ ۖ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ
مِنْ سُوْٓءٍ ۗ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

२९. अब जहन्नम के दरवाजों में जाओ कि हमेशा उसमें रहो तो क्या ही बुरा ठिकाना मग़रूरों का।

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ
فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾

३०. और डर वालों से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा बोले ख़ूबी जिन्होंने इस दुनिया में भलाई की उनके लिए भलाई है और बेशक

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ
رَبُّكُمْ ۗ قَالُوْا خَيْرًا ۗ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا

पिछला घर सबसे बेहतर और ज़रूर
क्या ही अच्छा घर परहेज़गारों का।
३१. बसने के बाग़ जिनमें जायेंगे
उनके नीचे नहरें रवाँ उन्हें वहाँ मिलेगा
जो चाहें अल्लाह ऐसा ही सिला देता
है परहेज़गार को।
३२. वो जिनकी जान निकालते
है फ़रिश्ते सुथरे पन में ये कहते हुए
कि सलामती हो तुमपर जन्नत में जाओ
बदला अपने किए का।
३३. काहे के इन्तेज़ार में है मगर
इसके कि फ़रिश्ते उनपर आएं या
तुम्हारे रब का अज़ाब आए इनसे अगलो
ने भी ऐसा ही किया और अल्लाह ने
उनपर कुछ ज़ुल्म न किया हाँ वो खुद
ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।
३४. तो उनकी बुरी कमाइयाँ
उनपर पड़ी और उन्हें घेर लिया उसने
जिसपर हँसते थे।

रुकूअ ५

३५. और मुश्रिक बोले अल्लाह
चाहता तो उसके सिवा कुछ न पूजते
न हम और न हमारे बाप दादा और
न उससे जुदा होकर हम कोई चीज़
हराम ठहराते ऐसा ही उनसे अगलो
ने किया तो रसूलों पर क्या है मगर

فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ
الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾
جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ
كَذَٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾
الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۙ
يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا
الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ
الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ
فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا
ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾
فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ
بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾
وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا
عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ
وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُونِهِ
مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ

साफ़ पहुँचा देना।

३६. और बेशक हर उम्मत में हमने एक रसूल भेजा कि अल्लाह को पूजो और शैतान से बचो तो उनमें किसी को अल्लाह ने राह दिखाई और किसी पर गुमराही ठीक उतरी तो ज़मीन में चल फिर कर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुठलाने वालों का।

३७. अगर तुम उनकी हिदायत की हि़र्स करो तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे गुमराह करे और उनका कोई मददगार नहीं।

३८. और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में हद की कोशिश से कि अल्लाह मुर्दे न उठाएगा हाँ क्यों नहीं सच्चा वअ़दा उसके ज़िम्मे पर लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

३९. इसलिये कि उन्हें साफ़ बता दे जिस बात में झगड़ते थे और इसलिये कि काफ़िर जान लें कि वो झूठे थे।

४०. जो चीज़ हम चाहें उससे हमारा फ़रमाना यही होता है कि हम कहें होजा वो फ़ौरन होजाती है।

مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ
إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾
وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُوْلًا أَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ
فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ
مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ۚ فَسِيْرُوْا
فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾
إِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَإِنَّ اللّٰهَ
لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾
وَأَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ
لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ۚ بَلٰى
وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾
لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ
وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا أَنَّهُمْ كَانُوْا
كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾
إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنٰهُ أَنْ

रुकूअ ६

४१ और जिन्होंने अल्लाह की राह में अपने घर बार छोड़े मज़लूम होकर ज़रूर हम उन्हे दुनिया मे अच्छी जगह देंगे और बेशक आख़ेरत का सवाब बहुत बड़ा है किसी तरह लोग जानते।

४२. वो जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब ही पर भरोसा करते है।

४३. और हमने तुमसे पहले न भेजे मगर मर्द जिनकी तरफ़ हम 'वही' करते तो ऐ लोगों इल्म वालो से पूछो अगर तुम्हें इल्म नही।

४४. रौशन दलीलें और किताबें लेकर और ए महबूब हमने तुम्हारी तरफ़ ये यादगार उतारी कि तुम लोगो से बयान कर दो जो उनकी तरफ़ उतरा और कहीं वो ध्यान करें।

४५. तो क्या जो लोग बुरे मक्र करते हैं इससे नही डरते कि अल्लाह उन्हे ज़मीन में धंसा दे या उन्हे वहाँ से अज़ाब आए जहाँ से उन्हें ख़बर न हो।

४६ या उन्हें चलते फिरते पकड़ ले कि वो थका नहीं सकते।

४७ या उन्हें नुक़सान देते देते गिरफ़्तार करले कि बेशक तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रहम वाला है।

४८. और क्या उन्होने न देखा कि जो चीज़ अल्लाह ने बनाई है

يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا
نُوحِي إِلَيْهِمْ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ
لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَ
لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ
يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ
بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٤٧﴾

उसकी परछाइयाँ दाहिने और बायें झुकती
है अल्लाह को सज्दा करती और वो
उसके हुज़ूर ज़लील है।
४९. और अल्लाह ही को सज्दा
करते है जो कुछ आसमानों में है और
जो कुछ ज़मीन में चलने वाला है और
फ़रिश्ते और वो गुरूर नही करते।
५०. अपने ऊपर अपने रब का
खौफ़ करते है और वही करते है जो
उन्हे हुक्म हो।

रुकूअ ७

५१. और अल्लाह ने फ़रमा दिया
दो खुदा न ठहराओ वो तो एक ही
मअबूद है तो मुझी से डरो।
५२. और उसी का है जो कुछ
आसमानो और ज़मीन में है और उसी
की फ़रमां बरदारी लाज़िम है तो क्या
अल्लाह के सिवा किसी दूसरे से डरोगे।
५३. और तुम्हारे पास जो नेअमत
है सब अल्लाह की तरफ़ से है फिर
जब तुम्हे तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी
की तरफ़ पनाह ले जाते हो।
५४. फिर जब वो तुमसे बुराई
टाल देता है तो तुममें एक गिरोह
अपने रब का शरीक ठहराने लगता
है।
५५. कि हमारी दी नेअमतों की
नाशुकरी करे तो कुछ बरत लो कि
अनक़रीब जान जाओगे।
५६. और अनजानी चीज़ों के
लिए हमारी दी हुई रोज़ी में से हिस्सा
मुक़र्रर करते है खुदा की क़सम तुमसे
ज़रूर सवाल होना है जो कुछ झूठ

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن
شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ
وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾
وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾
يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَ
يَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾
وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ
إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾
وَلَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ
الدِّينُ وَاصِبًا أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾
وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ
إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ﴿٥٣﴾
ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنكُمْ إِذَا فَرِيقٌ
مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾
لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾
وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا

बांधते थे।

५७. और अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते है पाकी है उसको और अपने लिए जो अपना जी चाहता है।

५८. और जब उनमें किसी को बेटी होने की खुशख़बरी दी जाती है तो दिन भर उसका मुँह काला रहता है और वो गुस्सा खाता है।

५९. लोगों से छुपता फिरता है उस बशारत की बुराई के सबब क्या उसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या उसे मिट्टी में दबा देगा अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं।

६०. जो आख़ेरत पर ईमान नहीं लाते उन्हीं का बुरा हाल है और अल्लाह की शान सबसे बुलन्द और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

रुकूअ ८

६१. और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म पर गिरफ़्त करता तो ज़मीन पर कोई चलने वाला नहीं छोड़ता लेकिन उन्हें एक ठहराए वअ्दे तक मुहलत देता है फिर जब उनका वअ्दा आएगा न एक घड़ी पीछे हटें न आगे बढ़ें।

६२. और अल्लाह के लिये वो ठहराते हैं जो [illegible] लिए नागवार है और उनकी ज़ुबान झूटी कहती हैं कि उनके लिए भलाई है तो आप ही हुआ

مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا
كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۶﴾
وَ يَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَ
لَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿۵۷﴾
وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ
وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿۵۸﴾
يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا
بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ
يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا
يَحْكُمُوْنَ ﴿۵۹﴾
لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ
السَّوْءِ ۚ وَ لِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶۰﴾
وَ لَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ
مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ لٰكِنْ
يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا
جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً
وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۶۱﴾
وَ يَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ

कि उनके लिए आग है और वो हद से गुज़ारे हुए है।

६३. खुदा की क़सम हमने तुमसे पहले कितनी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो शैतान ने उनके कोतक उनकी आँखों में भले कर दिखाए तो आज वही उनका रफ़ीक़ है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

६४. और हमने तुमपर ये किताब न उतारी मगर इसलिये कि तुम लोगों पर रौशन कर दो जिस बात में इख़्तिलाफ़ करें और हिदायत और रहमत ईमानवालों के लिए।

६५. और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो उससे ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया उसके मरे पीछे बेशक उसमें निशानी है उनको जो कान रखते हैं।

रुकूअ ९

६६. और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में निगाह हासिल होने की जगह है हम तुम्हें पिलाते हैं उस चीज़ में से जो उनके पेट में है गोबर और ख़ून के बीच में से ख़ालिस दूध गले से सहल उतरता पीने वालों के लिए।

६७. और खजूर और अंगूर के फलों में से कि उससे नबीज़ बनाते हो और अच्छा रिज़्क़ बेशक उसमें निशानी है अक़्ल वालों को।

६८. और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इलहाम किया कि पहाड़ों

أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ
لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُم
مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾
تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن
قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ
فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾
وَمَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا
لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ
وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾
وَاللَّهُ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا
بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي
ع ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٥﴾
وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُّسْقِيكُم
مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَ
دَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾
وَمِن ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ
تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

में घर बना और दरख़्तों में और छतों में।

६९. फिर हर क़िस्म के फल में से खा और अपने रब की राहें चल के तेरे लिए नरम व आसान हैं उसके पेट से एक पीने की चीज रंग बरंग निकलती है जिसमें लोगों को तंदरूस्ती है बेशक उसमें निशानी है ध्यान करने वालों को।

७०. और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारी जान क़ब्ज़ करेगा और तुममें कोई सबसे नाक़िस उम्र की तरफ़ फेरा जाता है कि जानने के बाद कुछ न जाने बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है सब कुछ कर सकता है।

रूकूअ १०

७१. और अल्लाह ने तुममें एक को दूसरे पर रिज़्क़ में बड़ाई दी तो जिन्हें बड़ाई दी है वो अपना रिज़्क़ अपने बांदी गुलामो को न फेर देंगे कि वो सब उसमें बराबर हो जाएं तो क्या अल्लाह की नेअमत से मुकरते है।

७२. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स से औरतें बनाई और तुम्हारे लिए तुम्हारी औरतो से बेटे और पोते और नवासे पैदा किए और तुम्हें सुथरी चीज़ो से रोज़ी दी तो क्या

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِىْ
مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا
يَعْرِشُوْنَ ۝٦٨

ثُمَّ كُلِىْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِىْ
سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِنْۢ
بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ
فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٦٩

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ وَ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ
لِكَىْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۗ اِنَّ
اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝٧٠

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ
فِى الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا
بِرَآدِّىْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ۗ اَفَبِنِعْمَةِ
اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝٧١

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ

झूटी बात पर यक़ीन लाते हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल से मुनकिर होते हैं।

७३. और अल्लाहके सिवा ऐसो को पूजते हैं जो उन्हें आसमान और ज़मीन से कुछ भी रोज़ी देने का इख़्तियार नही रखते न कुछ कर सकते हैं।

७४. तो अल्लाह के लिए मानिन्द न ठहराओ बेशक अल्लाह जानता है और तुम नही जानते!

७५. अल्लाह ने एक कहावत बयान फ़रमाई एक बन्दा है दुसरे की मिल्क आप कुछ मक़्दूर नही रखता और एक वो जिसे हमने अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी अ़ता फ़रमाई तो वो उसमें से ख़र्च करता है छुपे और ज़ाहिर क्या वो बराबर हो जाएँगे सब ख़ूबियाँ अल्लाह को है बल्कि उनमें अक्सर को ख़बर नहीं।

७६. और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई दो मर्द एक गूँगा जो कुछ काम नहीं कर सकता और वो अपने आक़ा पर बोझ है जिधर भेजे कुछ भलाई न लाए क्या बराबर हो जाएगा ये और वो जो इन्साफ़ का हुक्म करता है और वो सीधी राह पर है।

रूकूअ ११

७७. और अल्लाह ही के लिए

بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ ۚ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَ
بِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ
لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ
يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا
لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ
مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ
سِرًّا وَّجَهْرًا ۚ هَلْ يَسْتَوٗنَ ۚ اَلْحَمْدُ
لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ
اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ
عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ
بِخَيْرٍ ۚ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ
يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ ع

है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़े और क़यामत का मुआमला नहीं मगर जैसे एक पलक का मारना बल्कि उससे भी क़रीब बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

७८. और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से पैदा किया कि कुछ न जानते थे और तुम्हें कान और आँख और दिल दिए कि तुम एहसान मानो।

७९. क्या उन्होंने परिन्दे न देखे हुक्म के बाँधे आसमान की फ़ज़ा में उन्हें कोई नहीं रोकता सिवा अल्लाह के बेशक उसमें निशानियाँ हैं ईमान वालों को।

८०. और अल्लाह ने तुम्हें घर दिए बसने को और तुम्हारे लिए चौपायो की खालों से कुछ घर बनाए जो तुम्हे हलके पड़ते हैं तुम्हारे सफ़र के दिन और मंज़िलों पर ठहरने के दिन और उन की ऊन और बबरी (रोंगटों) और बालों से कुछ गृहस्ती का सामान और बरतने की चीजें एक वक़्त तक।

८१. और अल्लाह ने तुम्हें अपनी बनाई हुई चीज़ों से साए दिए और तुम्हारे लिए पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए कुछ पहनावे

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ
اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۷۷﴾

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ
لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ
جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا
اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا
وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ
بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَ
يَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَ
اَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا
اِلٰى حِيْنٍ ﴿۸۰﴾

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا

बनाए कि तुम्हें गरमी से बचाएं और कुछ पहनावे कि लड़ाई में तुम्हारी हिफ़ाज़त करे यूँही अपनी नेअ्मत तुम पर पूरी करता है कि तुम फ़रमान मानो।

८२. फिर अगर वो मुँह फेरे तो ए महबूब तुम पर नहीं मगर साफ़ पहुँचा देना।

८३. अल्लाह की नेअमत पहचानते है फिर उससे मुनकिर होते हैं और उन में अक्सर काफ़िर हैं।

रूकूअ १२

८४. और जिस दिन हम उठाएँगे हर उम्मत में से एक गवाह फिर काफ़िरों को न इजाज़त हो न वो मनाए जाएँ।

८५. और ज़ुल्म करने वाले जब अज़ाब देखेंगे उसी वक़्त से न वो उन पर से हलका हो न उन्हें मुहलत मिले।

८६. और शिर्क करने वाले जब अपने शरीकों को देखेंगे कहेंगे ए हमारे रब ये हैं हमारे शरीक कि हम तेरे सिवा पूजते थे तो वो उन पर बात फेकेंगे कि तुम बेशक झूठे हो।

८७. और उस दिन अल्लाह की तरफ़ आजिज़ी से गिरेंगे और उनसे गुम हो जाएँगी जो बनावटें करते थे।

८८. जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका हमने अज़ाब

وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا
وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ
وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ كَذٰلِكَ
يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ
تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾
يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا
وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا
ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ
يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا
يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ
قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ
كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ
الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾

وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ِالسَّلَمَ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾

पर अज़ाब बढ़ाया बदला उनके फ़साद
का।
८९. और जिस दिन हम हर
गिरोह में एक गिरोह उन्हीं में से उठाएँगे
कि उनपर गवाही दें और ए महबूब
तुम्हें उन सब पर शाहिद बना कर
लाएँगे और हमने तुमपर ये कुरआन
उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान
है और हिदायत और रहमत और बशारत
मुसलमानों को।

रूकूअ १३

९०. बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता
है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों
को देने का और मनअ फ़रमाता है बे
हयाई और बुरी बात और सरकशी से
तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि तुम ध्यान
करो।

९१. और अल्लाह का अहद पूरा
करो जब क़ौल बाँधो और क़समें मज़बूत
करके न तोड़ो और तुम अल्लाह को
अपने ऊपर ज़ामिन कर चुके हो बेशक
अल्लाह तुम्हारे काम जानता है।

९२. और उस औरत की तरह न
हो जिसने अपना सूत मज़बूती के बाद
रेज़ा रेज़ा करके तोड़ दिया अपनी
क़समें आपस में एक बे अस्ल बहाना
बनाते हो कि कहीं एक गिरोह दूसरे
गिरोह से ज़्यादा न हो अल्लाह तो
उससे तुम्हें आज़माता है और ज़रूर

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ
بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا
عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ
شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى
ع وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ
وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ
الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَ
لَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا
وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ
غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا
تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ

तुमपर साफ़ ज़ाहिर कर देगा क़यामत के दिन जिस बात में झगड़ते थे।

९३. और अल्लाह चाहता तो तुमको एक ही उम्मत करता लेकिन अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और राह देता है जिसे चाहे और ज़रूर तुमसे तुम्हारे काम पूछे जाएँगे।

९४. और अपनी क़समें आपस में बे अस्ल बहाना न बना लो कि कहीं कोई पाँव जमने के बाद लग़ज़िश न करे और तुम्हें बुराई चखनी हो बदला उसका कि अल्लाह की राह से रोकते थे और तुम्हें बड़ा अज़ाब हो।

९५. और अल्लाह के अ़हद पर थोड़े दाम मोल न लो बेशक वो जो अल्लाह के पास है तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो।

९६. जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा और जो अल्लाह के पास है हमेशा रहने वाला है और ज़रूर हम सब्र करनेवालों को उनका वो सिला देंगे जो उनके सबसे अच्छे काम के क़ाबिल हो।

९७. जो अच्छा काम करे मर्द हो या औरत और हो मुसलमान तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएँगे और ज़रूर उन्हें उनका नेग देंगे जो

أَنْ تَكُوْنَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبٰى مِنْ أُمَّةٍ ۚ
إِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ
لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ
تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾
وَلَا تَتَّخِذُوْٓا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ
فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا
السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾
وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ
إِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾
مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ
وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا أَجْرَهُمْ
بِأَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾
مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثٰى

उनके सबसे बेहतर काम के लाइक़ हो।

९८. तो जब तुम क़ुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह माँगो शैतान मरदूद से।

९९. बेशक उसका कोई क़ाबू उनपर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं।

१००. उसका क़ाबू तो उन्हीं पर है जो उससे दोस्ती करते हैं और उसे शरीक ठहराते हैं।

रुकूअ १४

१०१. और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलें और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उतारता है काफ़िर कहें तुम तो दिल से बना लाते हो बल्कि उनमें अक्सर को इल्म नहीं।

१०२. तुम फ़रमाओ उसे पाकीज़गी की रुह ने उतारा तुम्हारे रब की तरफ़ से ठीक ठीक के उससे ईमान वालों को साबित क़दम करे और हिदायत और बशारत मुसलमानों को।

१०३. और बेशक हम जानते हैं कि वो कहते है ये तो कोई आदमी सिखाता है जिसकी तरफ़ ढालते हैं उस की ज़ुबान अजमी है और ये रौशन अरबी ज़ुबान।

१०४. बेशक वो जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते अल्लाह उन्हे राह नहीं देता और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾
فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾
اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾
اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ ع
وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ وَّاللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ
مُفْتَرٍ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾
قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ
بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى
وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾
وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا
يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ
اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

१०५. झूठ बुहतान वही बाँधते है जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते और वही झूठे हैं।

१०६. जो ईमान लाकर अल्लाह का मुनकिर हो सिवा उसके जो मजबूर किया जाए और उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो हाँ वो जो दिल खोलकर काफ़िर हो उनपर अल्लाह का ग़ज़ब है और उनको बड़ा अज़ाब है।

१०७. ये इसलिए कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी आख़ेरत से प्यारी जानी और इसलिए कि अल्लाह (ऐसे) काफ़िरों को राह नहीं देता।

१०८. ये है वो जिनके दिल और कान और आँखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है और वही गफ़लत मे पड़े हैं।

१०९. आप ही हुआ कि आख़ेरत में वही ख़राब हैं।

११०. फिर बेशक तुम्हारा रब उनके लिए जिन्होंने अपने घर छोड़े बाद उसके के कि सताए गये फिर उन्होंने जिहाद किया और साबिर रहे बेशक तुम्हारा रब उसके बाद ज़रूर बख़्शने वाला है मेहरबान ।

रुकूअ १५

१११. जिस दिन हर जान अपनी

لَا يَهۡدِيهِمُ ٱللَّهُ وَلَهُمۡ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾
إِنَّمَا يَفۡتَرِي ٱلۡكَذِبَ ٱلَّذِينَ لَا يُؤۡمِنُونَ
بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡكَٰذِبُونَ ﴿١٠٥﴾
مَن كَفَرَ بِٱللَّهِ مِنۢ بَعۡدِ إِيمَٰنِهِۦٓ إِلَّا
مَنۡ أُكۡرِهَ وَقَلۡبُهُۥ مُطۡمَئِنُّۢ بِٱلۡإِيمَٰنِ
وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِٱلۡكُفۡرِ صَدۡرٗا
فَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٞ مِّنَ ٱللَّهِ وَلَهُمۡ
عَذَابٌ عَظِيمٞ ﴿١٠٦﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ ٱسۡتَحَبُّواْ ٱلۡحَيَوٰةَ ٱلدُّنۡيَا
عَلَى ٱلۡأٓخِرَةِ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَا يَهۡدِي
ٱلۡقَوۡمَ ٱلۡكَٰفِرِينَ ﴿١٠٧﴾
أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ طَبَعَ ٱللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمۡ
وَسَمۡعِهِمۡ وَأَبۡصَٰرِهِمۡ وَأُوْلَٰٓئِكَ
هُمُ ٱلۡغَٰفِلُونَ ﴿١٠٨﴾
لَا جَرَمَ أَنَّهُمۡ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ هُمُ
ٱلۡخَٰسِرُونَ ﴿١٠٩﴾
ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُواْ مِنۢ
بَعۡدِ مَا فُتِنُواْ ثُمَّ جَٰهَدُواْ وَصَبَرُوٓاْ
ع
إِنَّ رَبَّكَ مِنۢ بَعۡدِهَا لَغَفُورٞ رَّحِيمٞ ﴿١١٠﴾

ही तरफ़ झगड़ती आएगी और हर जान को उसका किया पूरा भर दिया जाएगा और उनपर ज़ुल्म न होगा।

११२. और अल्लाह ने कहावत ब्यान फ़रमाई एक बस्ती कि अमान व इत्मिनान से थी हर तरफ़ से उसकी रोज़ी कसरत से आती तो वो अल्लाह की नेअमतों की ना शुकरी करने लगी तो अल्लाह ने उसे ये सज़ा चखाई कि उसे भूक और डर का पहनावा पहनाया बदला उनके किए का।

११३. और बेशक उनके पास उन्हीं में से एक रसूल तशरीफ़ लाया तो उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें अज़ाब ने पकड़ा और वो बे इन्साफ़ थे।

११४. तो अल्लाह की दी हुई रोज़ी हलाल पाकीज़ा खाओ और अल्लाह की नेअमत का शुक्र करो अगर तुम उसे पूजते हो।

११५. तुम पर तो यही हराम किया है मुरदार और ख़ून और सूअर का गोश्त और वो जिसके ज़िबह करते वक़्त ग़ैर ख़ुदा का नाम पुकारा गया फिर जो लाचार हो ना ख़्वाहिश करता न हद से बढ़ता तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

११६. और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूठ बयान करती है ये हलाल है और ये हराम है कि अल्लाह पर

يَوْمَ تَأْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ
نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ
اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا
رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ
اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ
وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾
وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ
فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾
فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا
وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ
اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾
اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ
وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ
بِهٖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ
الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ

झूठ बाँधो बेशक जो अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं उनका भला न होगा।	لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾
११७. थोड़ा बरतना है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब।	مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾
११८. और खास यहूदियों पर हमने ह़राम फ़रमाई वो चीज़ें जो पहले तुम्हें हमने सुनाई और हमने उनपर ज़ुल्म न किया हाँ वही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।	وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾
११९. फिर बेशक तुम्हारा रब उनके लिए जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर उसके बाद तौबा करें और संवर जाएं बेशक तुम्हारा रब उसके बाद ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।	ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ ع
रुकूअ १६	
१२०. बेशक इब्राहीम एक इमाम था अल्लाह का फ़रमांबरदार और सबसे जुदा और मुशरिक न था।	اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۗ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾
१२१. उसके एह़सानों पर शुक्र करने वाला अल्लाह ने उसे चुन लिया और उसे सीधी राह दिखाई।	شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ۚ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾
१२२. और हमने उसे दुनिया में भलाई दी और बेशक वो आख़ेरत में शायाने क़ुर्ब है।	وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾
१२३. फिर हमने तुम्हें 'वही' भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी करो	ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ

إِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾
إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا
فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾
اُدْعُ إِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ
وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ
بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ
أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ
أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾
وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا
عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۚ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ
خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾
وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللّٰهِ وَ
لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ
مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾
إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ
هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾ ع

जो हर बातिल से अलग था और मुश्रिक न था।

१२४. हफ़्ता तो उन्हीं पर रखा गया था जो उसमें मुख़्तलिफ़ हो गए और बेशक तुम्हारा रब क़यामत के दिन उनमें फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते थे।

१२५. अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से और उनसे उस तरीक़ा पर बहस करो जो सबसे बेहतर हो बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बहका और वो ख़ूब जानता है राह वालों को।

१२६. और अगर तुम सज़ा दो तो वैसी ही सज़ा दो जैसी तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाई थी और अगर तुम सब्र करो तो बेशक सब्र वालों को सब्र सबसे अच्छा।

१२७. और ऐ महबूब तुम सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है और उनका ग़म न खाओ और उनके फ़रेबों से दिल तंग न हो।

१२८. बेशक अल्लाह उनके साथ है जो डरते हैं और जो नेकियाँ करते है।

सूरए बनी इसराईल

मक्की है इसमें एक सौ ग्यारह आयात बारह रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमवाला ।

रूकूअ १

१. पाकी है उसे जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक जिसके गिर्दा गिर्द हमने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अज़ीम निशानियाँ दिखाएं बेशक वो सुनता देखता है।

२. और हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई और उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत किया कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठहराओ।

३. ऐ उनकी अवलाद जिनको हमने नूह के साथ सवार किया बेशक वो बड़ा शुक्रगुज़ार बन्दा था।

४. और हमने बनी इसराईल को किताब में 'वही' भेजी कि ज़रूर तुम ज़मीन में दोबार फ़साद मचाओगे और ज़रूर बड़ा गुरुर करोगे।

५. फिर जब उनमें पहली बार का वअदा आया हमने तुम पर अपने बन्दे भेजे सख़्त लड़ाई वाले तो वो शहरों के अन्दर तुम्हारी तलाश के घुसे और ये एक वअदा था जिसे पूरा होना।

६. फिर हमने उनपर उलट कर तुम्हारा हमला कर दिया और तुमको

سُورَةُ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سُبْحٰنَ الَّذِيٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ
لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى
الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا
حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهٗ هُوَ
السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ①
وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ
هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا
مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ②
ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ
كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ③
وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ فِي
الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ
مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ④
فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ
عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا
خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ وَكَانَ وَعْدًا
مَّفْعُوْلًا ⑤
ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَ

मालों और बेटों से मदद दी और तुम्हारा जत्था बढ़ा दिया।

७. अगर तुम भलाई करोगे अपना भला करोगे और अगर बुरा करोगे तो अपना फिर जब दूसरी बार का वअदा आया कि दुश्मन तुम्हारा मुँह बिगाड़ दें और मस्जिद में दाख़िल हों जैसे पहली बार दाख़िल हुए थे और जिस चीज़ पर क़ाबू पाएँ तबाह करके बरबाद करदें।

८. क़रीब है कि तुम्हारा रब तुमपर रहम करे और अगर तुम फिर शरारत करो तो हम फिर अज़ाब करेंगे और हमने जहन्नम को काफ़िरों का क़ैदख़ाना बनाया है ।

९. बेशक ये कुरआन वो राह दिखाता है जो सबसे सीधी है और खुशी सुनाता है ईमानवालों को जो अच्छे काम करें कि उनके लिए बड़ा सवाब है।

१०. और ये कि जो आख़ेरत पर ईमान नहीं लाते हमने उनके लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

रूकूअ २

११. और आदमी बुराई की दुआ करता है जैसे भलाई माँगता है और आदमी बड़ा जल्दबाज़ है।

१२. और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया तो रात की निशानी मिटी हुई रखी और दिन की

أَمْدَدْنٰكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ
أَكْثَرَ نَفِيْرًا ٦
إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ
وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ
الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا
الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ
لِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ٧
عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ
عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ
حَصِيْرًا ٨
إِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ
أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ
يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا
كَبِيْرًا ٩
وَّأَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا ١٠ ع
وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ
بِالْخَيْرِ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُوْلًا ١١
وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ

निशानियाँ दिखाने वाली कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो और बरसों की गिनती और हिसाब जानो और हमने हर चीज़ ख़ूब जुदा जुदा ज़ाहिर फ़रमा दी।

१३. और हर इन्सान की क़िस्मत हमने उसके गले से लगा दी और उसके लिए क़यामत के दिन एक नविश्ता निकालेंगे जिसे खुला हुआ पाएगा।

१४. फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा पढ़ आज तू ख़ुद ही अपना हिसाब करने को बहुत है।

१५. जो राह पर आया वो अपने ही भले को राह पर आया और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जबतक रसूल न भेज लें।

१६. और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं उसके ख़ुशहालों पर अह़काम भेजते हैं फिर वो उसमें बे हुक्मी करते हैं तो उसपर बात पूरी होजाती है तो हम उसे तबाह करके बरबाद कर देते हैं।

१७. और हमने कितनी ही संगते नूह़ के बादें हलाक कर दीं और तुम्हारा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों से ख़बरदार देखने वाला।

النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ ؕ وَ كُلَّ شَیْءٍ فَصَّلْنٰهُ
تَفْصِيْلًا ﴿۱۲﴾
وَ كُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِیْ
عُنُقِهٖ ؕ وَ نُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا
يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾
اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ
عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿۱۴﴾
مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ
وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ
رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾
وَ اِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا
مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا
الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿۱۶﴾
وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ
بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَ كَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ
عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۱۷﴾

१८. जो ये जल्दी वाली चाहे हम उसे उसमें जल्द देदें जो चाहें जिसे चाहें फिर उसके लिए जहन्नम कर दें कि उसमें जाए मज़म्मत किया हुआ धक्के खाता।

१९. और जो आखेरत चाहे और उसकी सी कोशिश करे और हो ईमानवाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी।

२०. हम सबको मदद देते हैं उनको भी और उनको भी तुम्हारे रब की अता से और तुम्हारे रब की अता पर रोक नहीं।

२१. देखो हमने उनमें एक को एक पर कैसी बड़ाई दी और बेशाक आखेरत दर्जों में सबसे बड़ी और फ़ज़्ल में सबसे आला है।

२२. ऐ सुननेवाले अल्लाह के साथ दुसरा खुदा न ठहरा कि तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया जाता बेकस।

रूकूअ ३

२३. और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उनमे एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उनसे हूँ कहना और उन्हें न झिड़कना

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا
لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ
جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا
مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٨﴾
وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا
سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ
سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾
كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ
عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ عَطَآءُ
رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢٠﴾
اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى
بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّ
اَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿٢١﴾
لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ
مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿٢٢﴾ ع
وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ
اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا
يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ
اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ
وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا

قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾

और उनसे तअज़ीम की बात कहना।

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ
الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا
رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾

२४. और उनके लिए आजिज़ी का बाज़ू बिछा नरम दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू उन दोनों पर रहम कर जैसा कि उन दोनों ने मुझे छुटपन में पाला।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ
تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ
غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾

२५. तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है अगर तुम लाइक़ हुए तो बेशक वो तौबा करने वालों को बख़्शने वाला है।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ
وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾

२६. और रिश्तेदारों को उनका हक़ दे और मिस्कीन और मुसाफ़िर को और फ़ुज़ूल न उड़ा।

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ
الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ
كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾

२७. बेशक उड़ाने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ना शुकरा है।

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاۗءَ رَحْمَةٍ
مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا
مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾

२८. और अगर तू उनसे मुँह फेरे अपने रब की रहमत के इन्तिज़ार में जिसकी तुझे उम्मीद है तो उनसे आसान बात कह।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى
عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ
فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿٢٩﴾

२९. और अपना हाथ अपनी गरदन से बँधा हुआ न रख और न पूरा खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुआ थका हुआ।

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ

३०. बेशक तुम्हारा रब जिसे चाहे रिज़्क़ कुशादा देता और कस्ता है बेशक वो अपने बन्दों को ख़ूब जानता

خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۳۰﴾ ع

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ
نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ
كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ﴿۳۱﴾
وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ
فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾
وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ
اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا
فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا
فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ
مَنْصُوْرًا ﴿۳۳﴾
وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا
بِالَّتِيْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ
اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ
كَانَ مَسْــــُٔـوْلًا ﴿۳۴﴾
وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا
بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ
وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۳۵﴾
وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ
اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ

देखता है।

रूकूअ ४

३१. और अपनी अवलाद को क़त्ल न करो मुफ़लिसी के डर से हम उन्हें भी रोजी देंगे और तुम्हें भी बेशक उनका क़त्ल बड़ी खता है।

३२. और बदकारी के पास न जाओ बेशक वो बेहयाई है और बहुत ही बुरी राह।

३३. और कोई जान जिसकी हुरमत अल्लाह ने रखी है नाहक़ न मारो और जो नाहक़ न मारा जाए तो बेशक हमने उसके वारिस को क़ाबू दिया है तो वो क़त्ल में हद से न बढ़े ज़रूर उसकी मदद होनी है।

३४. और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सबसे भली है यहाँ तक कि वो अपनी जवानी को पहुँचे और अहद पूरा करो बेशक अहद से सवाल होना है।

३५. और मापो तो पूरा मापो और बराबर तराज़ू से तौलो ये बेहतर है और उसका अन्जाम अच्छा।

३६. और उस बात के पीछे न पड़ जिसका तुझे इल्म नहीं बेशक

कान और आँख और दिल उन सब से सवाल होना है।

३७. और ज़मीन में इतराता न चल बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलंदी में पहाड़ों को न पंहुचेगा।

३८. ये जो कुछ गुज़रा उनमें की बुरी बात तेरे रब को ना पसंद है।

३९. ये उन 'वहियों' में से है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी तरफ़ भेजी हिकमत की बातें और ऐ सुननेवाले अल्लाह के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू जहन्नम मे फेंका जाएगा तअना पाता धक्के खाता।

४०. क्या तुम्हारे रब ने तुम को बेटे चुन दिए और अपने लिए फ़रिश्तों से बेटियां बनाई बेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो।

रुकूअ ५

४१. और बेशक हमने इस कुरआन में तरह-तरह से बयान फ़रमाया कि वो समझें और इससे उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत।

४२. तुम फ़रमाओ अगर उसके साथ और ख़ुदा होते जैसा ये बकते हैं जब तो वो अर्श के मालिक की तरफ़ कोई राह ढूंढ निकालते।

४३. उसे पाकी और बरतरी उन

أُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٦﴾
وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ
لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ
الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿٣٧﴾
كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ
رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾
ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ
الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا
اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ﴿٣٩﴾
اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ
مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ۚ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ
ع قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾
وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
لِيَذَّكَّرُوْا ۚ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا
نُفُوْرًا ﴿٤١﴾
قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا
يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ
سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾
سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ

عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾
تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ
الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِّنْ
شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ
لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهٗ كَانَ
حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾
وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَ
بَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْاٰخِرَةِ
حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٤٥﴾
وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ
يَّفْقَهُوهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِذَا
ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ
وَلَّوْا عَلٰٓى أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٤٦﴾
نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهٖٓ إِذْ
يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوٰٓى
إِذْ يَقُولُ الظّٰلِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ
إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٤٧﴾
اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ
فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾
وَقَالُوٓا ءَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَإِنَّا

की बातों से बड़ी बरतरी।

४४. उस की पाकी बोलते हैं सातों आसमान और ज़मीन और जो कोइ उन मे हैं और कोई चीज नही जो उसे सराहती हुई उसकी पाकी न बोले हाँ तुम उनकी तसबीह नहीं समझते बेशक वो ह़िल्म वाला बख़्शने वाला है।

४५. और ऐ महबूब तुमने कुरआन पढ़ा हमने तुम पर और उनमें कि आख़िरत पर ईमान नही लाते एक छुपा हुआ पर्दा कर दिया।

४६. और हमने उनके दिलों पर ग़िलाफ़ डाल दिए हैं कि इसे न समझें और उनके कानो में टेंट (रूई) और जब तुम कुरआन में अपने अकेले रब की याद करते हो वो पीठ फेर कर भागते हैं नफ़रत करते।

४७. हम ख़ूब जानते हैं जिस लिए वो सुनते हैं जब तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब आपस में मश्वरा करते हैं जबकि ज़ालिम कहते है तुम पीछे नहीं चले मगर एक ऐसे मर्द के जिसपर जादू हुआ।

४८. देखो उन्होंने तुम्हें कैसी तशबीहें दी तो गुमराह हुए कि राह नहीं पा सकते।

४९. और बोले क्या जब हम

لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۴۹﴾
قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿۵۰﴾
اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ
فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا قُلِ الَّذِيْ
فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُوْنَ
اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ
قُلْ عَسٰى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿۵۱﴾
يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ
وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۵۲﴾ ع
وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ
اَحْسَنُ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ
اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا
مُّبِيْنًا ﴿۵۳﴾
رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ
اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۵۴﴾
وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ
عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿۵۵﴾
قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ

हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जायेंगे क्या सचमुच नए बनकर उठेंगे।

५०. तुम फ़रमाओ कि पत्थर या लोहा हो जाओ।

५१. या और कोई मख़लूक़ जो तुम्हारे ख़याल में बड़ी हो तो अब कहेंगे हमें कौन फिर पैदा करेगा तुम फ़रमाओ वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया तो अब तुम्हारी तरफ़ मसख़रगी से सर हिलाकर कहेंगे ये कब है तुम फ़रमाओ शायद नज़दीक ही हो।

५२. जिस दिन वो तुम्हें बुलाएगा तो तुम उसकी हम्द करते चले आओगे और समझोगे कि न रहे थे मगर थोड़ा।

रूकूअ ६

५३. और मेरे बन्दों से फ़रमाओ वो बात कहें जो सबसे अच्छी हो बेशक शैतान उनके आपस में फ़साद डालता है बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है।

५४. तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है वो चाहे तो तुम पर रहम करे चाहे तो तुम्हें अज़ाब करे और हमने तुमको उनपर कड़ोड़ा बनाकर न भेजा।

५५. और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आसमानों और ज़मीन में है और बेशक हमने नबियों में एक को एक पर बड़ाई दी और दाऊद को ज़बूर अता फ़रमाई।

५६. तुम फ़रमाओ पुकारो उन्हें

जिनको अल्लाह के सिवा गुमान करते हो तो वो इख़्तियार नही रखते तुमसे तकलीफ़ दूर करने और न फेर देने का।

५७. वो मक़बूल बन्दे जिन्हें ये काफ़िर पूजते हैं वो आप ही अपने रब की तरफ़ वसीला ढूँढते है कि उनमें कौन ज़्यादा मुक़र्रब है उसकी रहमत की उम्मीद रखते और उसके अज़ाब से डरते हैं बेशक तुम्हरे रब का अज़ाब डर की चीज़ है।

५८. और कोई बस्ती नहीं मगर ये कि हम उसे रोज़े क़यामत से पहले नेस्त कर देंगे या उसे सख़्त अज़ाब देंगे ये किताब में लिखा हुआ है।

५९. और हम ऐसी निशानियां भेजने से यू ही बाज़ रहे कि उन्हें अगलों ने झुठलाया और हमने समूद को नाक़ा दिया आँखें खोलने को तो उन्होंने उसपर ज़ुलम किया और हम ऐसी निशानियां नहीं भेजते मगर डराने को।

६०. और जब हमने तुमसे फ़रमाया कि सब लोग तुम्हारे रब के क़ाबू में है और हमने न किया वो दिखावा जो तुम्हें दिखाया था मगर लोगों की आज़माइश को और वो पेड़ जिसपर क़ुरआन में लअनत है और हम उन्हें डराते है तो उन्हें नही बढ़ती मगर बड़ी सरकशी।

रूकूअ ७

६१. और याद करो जब हमने

دُونِهٖ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ
عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿٥٦﴾
أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ
إِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ
وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُونَ عَذَابَهٗ
إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾
وَإِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا
قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا
عَذَابًا شَدِيدًا ۗ كَانَ ذٰلِكَ فِي
الْكِتٰبِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾
وَمَا مَنَعَنَآ أَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ إِلَّآ
أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۗ وَاٰتَيْنَا ثَمُودَ
النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۗ وَمَا
نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿٥٩﴾
وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ
وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ أَرَيْنٰكَ إِلَّا
فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ
فِي الْقُرْاٰنِ ۗ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ
ع إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾
وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِاٰدَمَ

फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो उन सबने सज्दा किया सिवा इबलीस के बोला क्या मैं उसे सज्दा करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया।

६२. बोला देख तो जो ये तूने मुझ से मोअ़ज़्ज़ज़ रखा अगर तूने मुझे क़यामत तक मुहलत दी तो ज़रूर मैं उसकी अवलाद को पीस डालूँगा मगर थोड़ा।

६३. फ़रमाया दूर हो तो उनमें जो तेरी पैरवी करेगा तो बेशक सब का बदला जहन्नम है भरपूर सज़ा ।

६४. और (डगा)दे इनमें से जिसपर क़ुदरत पाये अपने आवाज़ क़्क़से और उनपर लाम बांध ला अपने सवारों और अपने पियादों का और उनका साझी [illegible] मालों और बच्चों में और उन्हें वअदा दे और शैतान उन्हें वअ़दा नहीं देता मगर फ़रेब से।

६५. बेशक जो मेरे बन्दे हैं उनपर तेरा कुछ क़ाबू नहीं और तेरा रब काफ़ी है काम बनाने को।

६६. तुम्हारा रब वो है कि तुम्हारे लिए दरिया में कश्ती रवाँ करता है कि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो बेशक वो तुमपर मेहरबान है।

६७. और जब तुम्हें दरिया मे मुसीबत पहुँचती है तो उसके सिवा जिन्हें पूजते हैं सब गुम हो जाते है फिर जब वो तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ नजात देता है तो मुँह फेर लेते है और

فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ قَالَ ءَاَسْجُدُ
لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿٦١﴾
قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ
عَلَيَّ ۡ لَىِٕنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٢﴾
قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ
جَهَنَّمَ جَزَاۗؤُكُمْ جَزَاۗءً مَّوْفُوْرًا ﴿٦٣﴾
وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ
بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ
وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ
وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۭ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾
اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ۭ
وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾
رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ
فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ
كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾
وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ
مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ
اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۭ وَكَانَ

इन्सान बड़ा ना शुकरा है।

६८. क्या तुम इस से निडर हुए कि वो ख़ुश्की ही का कोई किनारा तुम्हारे साथ धंसा दे या तुम पर पथराव भेजे फिर अपना कोई हिमायती न पाओ।

६९. या इससे निडर हुए कि तुम्हें दोबारा दरिया में लेजाए फिर तुम पर जहाज़ तोड़ने वाली आँधी भेजे तो तुम को तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे फिर अपने लिए कोई ऐसा न पाओ कि उसपर हमारा पीछा करे।

७०. और बेशक हमने औलादे आदम को इज़्ज़त दी और उन को ख़ुश्की और तरी में सवार किया और उनको सुथरी चीज़ें रोज़ी दीं और उनको अपनी बहुत मख़लूक़ से अफ़ज़ल किया।

रूकूअ ८

७१. जिस दिन हम हर जमाअत को उसके इमाम के साथ बुलाएंगे तो जो अपना नामा दाहिने हाथ में दिया गया ये लोग अपना नामा पढ़ेंगे और तागे भर उन का हक़ न दबाया जाएगा।

७२. और जो इस ज़िन्दगी में अन्धा हो वो आखेरत में अन्धा है और, और भी ज़्यादा गुमराह।

७३. और वो तो क़रीब था कि तुम्हें कुछ लग़ज़िश देते हमारी 'वही' से जो हमने तुमको भेजी कि तुम हमारी तरफ़ कुछ और निस्बत करदो और ऐसा होता तो वो तुम को अपना गहरा दोस्त बना लेते।

الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾
اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ
الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ
لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾
اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً
اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ
الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ
لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾
وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ
مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾ ع
يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ
فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ
يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾
وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي
الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾
وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ
وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾

७४. और अगर हम तुम्हें साबित क़दम न रखते तो क़रीब था कि तुम उनकी तरफ़ कुछ थोड़ा सा झुकते।

७५. और ऐसा होता तो हम तुमको दूनी उम्र और दो चन्द मौत का मज़ा देते फिर तुम हमारे मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाते।

७६. और बेशक क़रीब था कि वो तुम्हे इस ज़मीन से डिगा दें (खसका दें) कि तुम्हे इससे बाहर कर दे और ऐसा होता तो वो तुम्हारे पीछे न ठहरते मगर थोड़ा।

७७. दस्तूर उनका जो हमने तुमसे पहले रसूल भेजे और तुम हमारा क़ानून बदलता न पाओगे।

रूकूअ ९

७८. नमाज़ क़ायम रखो सूरज ढलने से रात की अँधेरी तक और सुबह का कुरआन बेशक सुबह के कुरआन में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं।

७९. और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद करो ये ख़ास तुम्हारे लिए ज़्यादा है क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहाँ सब तुम्हारी हम्द करे।

८०. और यूँ अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे सच्ची तरह दाख़िल कर और सच्ची तरह बाहर लेजा और मुझे अपनी तरफ़ से मददगार ग़लबा दे।

८१. और फ़रमाओ कि हक़ आया

وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ
اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾
اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ
الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا
نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾
وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ
لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ
خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾
سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ
ع رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾
اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى
غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ اِنَّ
قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾
وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ
عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا
مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾
وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ
وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ
لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾
وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ

और बातिल मिट गया बेशक बातिल को मिटना ही था।

८२. और हम कुरआन में उतारते है वो चीज़ जो ईमान वालो के लिए शिफ़ा और रह़मत है और इससे ज़ालिमों को नुक़्सान ही बढ़ता है।

८३. और जब हम आदमी पर एहसान करते हैं मुँह फेर लेता है और अपनी तरफ़ दूर हट जाता है और जब उसे बुराई पहुँचे तो ना उम्मीद होजाता है।

८४. तुम फ़रमाओ सब अपने कन्डे (अन्दाज़) पर काम करते हैं तो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कौन ज़्यादा राह पर है।

रूकूअ १०

८५. और तुमसे रूह़ को पूछते है तुम फ़रमाओ रूह़ मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है और तुम्हें इल्म न मिला मगर थोड़ा।

८६. और अगर हम चाहते तो ये 'वह़ी' जो हमने तुम्हारी तरफ़ की उसे ले जाते फिर तुम कोई न पाते कि तुम्हारे लिए हमारे हुज़ूर उस पर वकालत करता।

८७. मगर तुम्हारे रब की रह़मत बेशक तुम पर उस का बड़ा फ़ज़्ल है।

८८. तुम फ़रमाओ अगर आदमी और जिन्न सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं कि इस कुरआन की मानिन्द ले आएं तो इसका मिस्ल न ला सकेंगे

إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿٨١﴾
وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ
رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ
إِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾
وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ
وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ
يَئُوْسًا ﴿٨٣﴾
قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ فَرَبُّكُمْ
أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾ ع
وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ قُلِ الرُّوْحُ
مِنْ أَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ أُوْتِيْتُمْ مِّنَ
الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾
وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ
أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ
عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٦﴾ لا
إِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ إِنَّ فَضْلَهٗ
كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿٨٧﴾
قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ
عَلٰٓى أَنْ يَّأْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
لَا يَأْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ

بِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾
وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ
النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾
وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا
مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾
اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ
وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا
تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾
اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا
كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ
قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾
اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ
اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ وَلَنْ نُّؤْمِنَ
لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا
نَّقْرَؤُهٗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ
كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾
وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ
جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ
اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾

अगरचे उनमे एक दूसरे का मददगार हो।

८९. और बेशक हमने लोगो के लिए इस कुरआन में हर क़िस्म की मसल तरह तरह बयान फ़रमाई तो अक्सर आदमियों ने न माना मगर ना शुकरी करना।

९०. और बोले कि हम तुम पर हरगिज़ ईमान न लाएँगे यहाँ तक कि तुम हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा बहा दो।

९१. या तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरो का कोई बाग़ हो फिर तुम उस के अन्दर बहती नहरें रवाँ करो।

९२. या तुम हम पर आसमान गिरा दो जैसा तुम ने कहा है टुकड़े टुकड़े या अल्लाह और फ़रिश्तों को ज़ामिन ले आओ।

९३. या तुम्हारे लिए तिलाई घर हो या तुम आसमान में चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ जाने पर भी हरगिज़ ईमान न लाएँगे जबतक हम पर एक किताब न उतारो जो हम पढ़ें तुम फ़रमाओ पाकी है मेरे रब को मैं कौन हूँ मगर आदमी अल्लाह का भेजा हुआ।

रूकूअ ११

९४. और किस बात ने लोगों को ईमान लाने से रोका जब उनके पास हिदायत आई मगर उसी ने कि बोले क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा।

९५. तुम फ़रमाओ अगर ज़मीन मे फ़रिश्ते होते चैन से चलते तो उनपर हम रसूल भी फ़रिश्ता उतारते।

९६. तुम फ़रमाओ अल्लाह बस है गवाह मेरे तुम्हारे दरमियान बेशक वो अपने बन्दों को जानता देखता है।

९७. और जिसे अल्लाह राह दे वही राह पर है और जिसे गुमराह करे तो उनके लिए उसके सिवा कोई हिमायत वाले न पाओगे और हम उन्हे क़यामत के दिन उनके मुँह के बल उठायेगे अन्धे और गूँगे और बहरे उनका ठिकाना जहन्नम है जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे।

९८. ये उन की सज़ा है उसपर कि उन्होंने हमारी आयतों से इन्कार किया और बोले क्या जब हम हड्डियाँ और रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे तो क्या सच मुच हम नए बनकर उठाए जायेंगे।

९९. और क्या वो नहीं देखते कि वो अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए उन लोंगो की मिस्ल बना सकता है और उसने उन के लिए एक मीआद ठहरा रखी है जिस में कुछ शुबह नहीं तो ज़ालिम नहीं मानते बे ना शुकरी किए।

قُلْ لَّوْ كَانَ فِى الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿۹۵﴾

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ﴿۹۶﴾

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿۹۷﴾

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۹۸﴾

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۹۹﴾

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآىِٕنَ رَحْمَةِ
رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ
وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ۝١٠٠
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ
فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ
فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ لَاَظُنُّكَ
يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ۝١٠١
قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَاۗءِ
اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآىِٕرَ ۚ
وَاِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ۝١٠٢
فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ
فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ۝١٠٣
وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ
جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ۝١٠٤
وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۭ وَمَآ
اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝١٠٥
وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ
عَلٰي مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ۝١٠٦
قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ

१००. तुम फ़रमाओ अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के खज़ानों के मालिक होते तो उन्हें भी रोक रखते इस डर से कि ख़र्च न हो जाए और आदमी बड़ा कंजूस है।

रूकूअ ११

१०१. और बेशक हमने मूसा को नौ रौशन निशानियाँ दीं तो बनी इसराईल से पूछो जब वो उन के पास आया तो उससे फ़िरऔन ने कहा ऐ मूसा मेरे ख़याल में तो तुम पर जादू हुआ।

१०२. कहा यकीनन तू ख़ूब जानता है कि उन्हें न उतारा मगर आसमानों और ज़मीन के मालिक ने दिल की आँखें खोलने वालियाँ और मेरे गुमान में तो ऐ फ़िरऔन तू जरूर हलाक होने वाला है।

१०३. तो उसने चाहा कि उनको ज़मीन से निकाल दे तो हमने उसे और उसके साथियों को सब को डुबो दिया।

१०४. और उसके बाद हमने बनी इसराईल से फ़रमाया इस ज़मीन में बसो फिर जब आखेरत का वअदा आएगा हम तुम सबको घाल मेल ले आएंगे।

१०५. और हमने कुरआन को हक़ ही के साथ उतारा और हक़ ही के लिए उतरा और हमने तुम्हें न भेजा मगर खुशी और डर सुनाता।

१०६. और कुरआन हमने जुदा जुदा करके उतारा कि तुम उसे लोगों पर ठहर-ठहर कर पढ़ो और हमने उसे बतदरीज रह रह कर उतारा।

१०७. तुम फ़रमाओ कि तुम लोग उस पर ईमान लाओ या न लाओ बेशक वो जिन्हें उसके उतरने से पहले इल्म मिला जब उन पर पढ़ा जाता है ठूडी के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं।

१०८. और कहते हैं पाकी है हमारे रब को बेशक हमारे रब का वअदा पूरा होना था।

१०९. और ठूडी के बल गिरते हैं रोते हुए और ये कुरआन उनके दिल का झुकना बढ़ाता है।

११०. तुम फ़रमाओ अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर जो कह कर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज से पढ़ो न बिल्कुल आहिस्ता और उन दोनों के बीच में रास्ता चाहो।

१११. और यूँ कहो सब खूबियां अल्लाह को जिसने अपने लिए बच्चा इख़्तियार न फ़रमाया और बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं और कमज़ोरी से कोई उसका हिमायती नहीं और उसकी बड़ाई बोलने को तकबीर कहो।

सूरए कहफ़

मक्की है इसमें एक सौ दस आयात और बारह रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला।

रूकूअ १

१. सब खूबियाँ अल्लाह को जिस ने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उस में असलन कजी न रखी।

२. अदल वाली किताब कि

أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ
يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾
وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ وَعْدُ
رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾
وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَ
يَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ﴿١٠٩﴾
قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ أَيًّا مَا
تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ وَلَا
تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا
وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾
وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا
وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ
يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ
تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾

سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ هِيَ مِائَةٌ وَعَشْرُ آيَاتٍ وَاثْنَا عَشَرَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ
الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ﴿١﴾
قَيِّمًا لِيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِنْ
لَدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ

अल्लाह के सख़्त अज़ाब से डराए और ईमान वालो को जो नेक काम करे बशारत दे कि उनके लिए अच्छा सवाब है।

३. जिसमें हमेशा रहेंगे।

४. और उन को डराए जो कहते है कि अल्लाह ने अपना कोई बच्चा बनाया।

५. इस बारे में न वो कुछ इल्म रखते है न उनके बाप दादा कितना बड़ा बोल है कि उनके मुँह से निकलता है निरा झूठ कह रहे है।

६. तो कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उनके पीछे अगर वो इस बात पर ईमान न लाए ग़म से ।

७. बेशक हमने ज़मीन का सिगार किया जो कुछ उस पर है कि उन्हें आज़माएं उनमें किस के काम बेहतर हैं।

८. और बेशक जो कुछ उस पर है एक दिन हम उसे पट पर मैदान (सफेद ज़मीन) कर छोड़ेंगे।

९. क्या तुम्हें मअलूम हुआ कि पहाड़ की खोह और जंगल के किनारे वाले हमारी एक अजीब निशानी थे।

१०. जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे काम मे हमारे लिए राहयाबी के सामान कर

يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا
حَسَنًا ﴿٢﴾
مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ﴿٣﴾
وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ
وَلَدًا ﴿٤﴾
مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ
كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ
اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾
فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ
اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ﴿٦﴾
اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا
لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾
وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا
جُرُزًا ﴿٨﴾
اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ
وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾
اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا
رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ
لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾
فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ

سِنِيْنَ عَدَدًا ﴿١١﴾
ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ
اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ﴿١٢﴾
نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ
اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ
هُدًی ﴿١٣﴾
وَّرَبَطْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا
فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ
قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾
هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ
اٰلِهَةً لَوْلَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍ
بَیِّنٍ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی
عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾
وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ
اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَی الْكَهْفِ یَنْشُرْ لَكُمْ
رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَیُهَیِّئْ لَكُمْ
مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾
وَتَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ
عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ

११. तो हमने उस ग़ार में उन के कानों पर गिन्ती के कई बरस थपका।

१२. फिर हमने उन्हें जगाया कि देखें दो गिरोहों में कौन उनके ठहरने की मुद्दत ज़्यादा ठीक बताता है।

रूकूअ २

१३. हम उनका ठीक ठीक हाल तुम्हें सुनाएं वो कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनको हिदायत बढ़ाई।

१४. और हमने उनकी ढारस बन्धाई जब खड़े होकर बोले कि हमारा रब वो है जो आसमान और ज़मीन का रब है हम उसके सिवा किसी मअबूद को न पूजेंगे ऐसा होतो हमने ज़रूर हद से गुज़री हुई बात कही।

१५. ये जो हमारी क़ौम है उसने अल्लाह के सिवा खुदा बना रखे हैं क्यों नहीं लाते उन पर कोई रौशन सनद तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बाँधे।

१६. और जब तुम उनसे और जो कुछ वो अल्लाह के सिवा पूजते हैं सबसे अलग होजाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा।

१७. और ए महबूब तुम सूरज को देखोगे कि जब निकलता है तो उनके ग़ार से दाहनी तरफ़ बच जाता है और

تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ
فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۚ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۗ مَنْ
يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ
فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾
وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖ
وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ
الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ
بِالْوَصِيْدِ ۗ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ
مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ
رُعْبًا ﴿١٨﴾
وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۗ
قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۗ
قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۗ
قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۗ
فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى
الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا
فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ
وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾
اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ
اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ

जब डूबता है तो उनसे बाएँ तरफ़ कतरा जाता है हालाँकि वो उस ग़ार के खुले मैदान है ये अल्लाह की निशानियों में से है जिसे अल्लाह राह दे तो वही राह पर है और जिसे गुमराह करे तो हरगिज़ उसका कोई हिमायती राह दिखाने वाला न पाओगे।

रूकूअ ३

१८. और तुम उन्हें जागता समझो और वो सोते हैं और हम उन की दाहिनी बाएँ करवटें बदलते हैं और उनका कुत्ता अपनी कलाइयाँ फैलाए हुए है ग़ार की चौखट पर ऐ सुनने वाले अगर तू उन्हें झाँक कर देखे तो उनसे पीठ फेर कर भागे और उनसे हैबत में भर जाए।

१९. और यूँ ही हमने उनको जगाया कि आपस में एक दूसरे से अहवाल पूछें उनमें एक कहने वाला बोला तुम यहाँ कितनी देर रहे कुछ बोले कि एक दिन रहे या दिन से कम दूसरे बोले तुम्हारा रब खूब जानता है जितना तुम ठहरे तो अपने में एक को ये चाँदी लेकर शहर में भेजो फिर वो ग़ौर करे कि वहाँ कौन सा खाना ज़्यादा सुथरा है कि तुम्हारे लिए उसमें से खाने को लाए और चाहिए कि नरमी करे और हरगिज़ किसी को तुम्हारी इत्तिलाअ न दे।

२०. बेशक अगर वो तुम्हें जान

लेंगे तो तुम्हें पथराव करेंगे या अपने दीन में फेर लेंगे और ऐसा हुआ तो तुम्हारा कभी भला न होगा।

२१. और इसी तरह हमने उनकी इत्तिलाअ कर दी कि लोग जान लें कि अल्लाह का वअदा सच्चा है और क़यामत में कुछ शुबह नहीं जब वो लोग उनके मुआमला में बाहम झगड़ने लगे तो बोले उन के ग़ार पर कोई ईमारत बनाओ उन का रब उन्हें खूब जानता है वो बोले जो उस काम में ग़ालिब रहे थे क़सम है कि हम तो उनपर मस्जिद बनायेंगे।

२२. अब कहेंगे कि वो तीन हैं चौथा उनका कुत्ता और कुछ कहेंगे पाँच हैं छटा उनका कुत्ता बे देखे अलाओ तुक्का बात और कुछ कहेंगे सात हैं और आठवां उनका कुत्ता तुम फ़रमाओ मेरा रब उनकी गिन्ती खूब जानता है उन्हें नहीं जानते मगर थोड़े तो उनके बारे में बहस न करो मगर इतनी ही बहस जो ज़ाहिर हो चुकी और उनके बारे में किसी किताबी से कुछ न पूछो।

रूकूअ ४

२३. और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल ये कर दूँगा।

२४. मगर ये कि अल्लाह चाहे और अपने रब की याद कर जब तू भूल जाए और यूँ कह कि क़रीब है मेरा रब मुझे इससे नज़दीक तर रास्ती

تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا

اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ

لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ

اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ

رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ

غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ

مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ

وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ

رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ

وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ

بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۫ۥ

فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّ

لَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ ع

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ

ذٰلِكَ غَدًا ۙ ﴿٢٣﴾

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۫ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا

نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ

رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ
سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾
قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا لَهٗ غَيْبُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ
مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ
لَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾
وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ
رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ وَلَنْ تَجِدَ
مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾
وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ
وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ
تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطِعْ
مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ
هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾
وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ
فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ اِنَّآ
اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ
سُرَادِقُهَا وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا
بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ بِئْسَ

को राह दिखाए।

२५. और वो अपने ग़ार में तीन सौ बरस ठहरे नौ ऊपर।

२६. तुम फ़रमाओ अल्लाह खूब जानता है वो जितना ठहरे उसी के लिए है आसमानों और ज़मीनों के सब ग़ैब वो क्या ही देखता और क्या ही सुनता है उसके सिवा उनका कोई वाली नहीं और वो अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता।

२७. और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब तुम्हें 'वही' हुई उसकी बातों का कोई बदलने वाला नहीं और हरगिज़ तुम उसके सिवा पनाह न पाओगे।

२८. और अपनी जान उनसे मानूस रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी रज़ा चाहते हैं और तुम्हारी आँखें उन्हें छोड़कर और पर न पड़ें क्या तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सिंगार चाहोगे और उसका कहा न मानो जिसका दिल हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वो अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उसका काम हद से गुज़र गया।

२९. और फ़रमा दो कि हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे बेशक हमने ज़ालिमों के लिए वो आग तैयार कर रखी है जिसकी दिवारें उन्हें घेर लेगी और अगर पानी के लिए

الشَّرَابُ ۗ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾
أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا
مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ
ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَ
إِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى
الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۚ وَحَسُنَتْ
ع مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَ
حَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا
زَرْعًا ﴿٣٢﴾
كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ آتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ
تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا
نَهَرًا ﴿٣٣﴾
وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ
وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا
وَأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

फ़रियाद करें तो उनकी फ़रियाद रसी होगी उस पानी से कि चरख दिए हुए (खौलते हुए) धात की तरह है कि उनके मुँह भून देगा क्या ही बुरा पीना है और दोज़ख क्या ही बुरी ठहरने की जगह।

३०. बेशक जो ईमान लाए और नेक काम किए हम उनके नेग ज़ायअ नहीं करते जिनके काम अच्छे हों।

३१. उनके लिए बसने के बाग़ हैं उनके नीचे नदियाँ बहें वो उसमें सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और सब्ज़ कपड़े करेब और कनादीज़ के पहनेंगे वहाँ तख़्तों पर तकिया लगाए क्या ही अच्छा सवाब और जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह।

रूकूअ ५

३२. और उनके सामने दो मर्दों का हाल बयान करो कि उनमें एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिए और उनको खजूरों से ढाँप लिया और उनके बीच बीच में खेती रखी।

३३. दोनों बाग़ अपने फल लाए और उसमें कुछ कमी न दी और दोनों के बीच में हमने नहर बहाई।

३४. और वो फल रखता था तो अपने साथी से बोला और वो उससे रद्दो बदल करता था मैं तुझ से माल में ज़्यादा हूँ और आदमियों का ज़्यादा

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ
قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ هَٰذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾
وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن
رُّدِدتُّ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا
مُنقَلَبًا ﴿٣٦﴾
قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ
أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِن تُرَابٍ
ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾
لَّٰكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي
أَحَدًا ﴿٣٨﴾
وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا
شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِن تَرَنِ
أَنَا أَقَلَّ مِنكَ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٣٩﴾
فَعَسَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّن
جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ
السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾
أَوْ يُصْبِحَ مَاؤُهَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ
لَهُ طَلَبًا ﴿٤١﴾
وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ
عَلَىٰ مَا أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ

ज़ोर रखता हूँ।

३५. अपने बाग़ में गया और अपनी जान पर ज़ुल्म करता हुआ बोला मुझे गुमान नही कि ये कभी फ़ना हो।

३६. और मैं गुमान नहीं करता कि क़यामत क़ायम हो और अगर मैं अपने रब की तरफ़ फिर गया भी तो ज़रूर इस बाग़ से बेहतर पलटने की जगह पाऊँगा।

३७. उसके साथी ने उससे उलट फेर करते हुए जवाब दिया क्या तू उसके साथ कुफ्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निथरे पानी की बूँद से फिर तुझे ठीक मर्द किया।

३८. लेकिन मैं तो यही कहता हूँ कि वो अल्लाह ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं करता हूँ।

३९. और क्यों न हुआ कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे अल्लाह हमें कुछ ज़ोर नही मगर अल्लाह की मदद का अगर तू मुझे अपने से माल व अवलाद में कम देखता था।

४०. तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे और तेरे बाग़ पर आसमान से बिजलियाँ उतारे तो वो पटपर मैदान हो कर रह जाए।

४१. या उसका पानी ज़मीन मे धंस जाए फिर तू उसे हरगिज़ तलाश न कर सके।

४२. और उसके फल घेर लिए

عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ
أُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾
وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ ط
هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۚ هُوَ خَيْرٌ
ع ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ
بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا
تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾
اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ
ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾
وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ
بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ
ع مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾
وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ۗ لَقَدْ
جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۭ بَلْ
زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

गए तो अपने हाथ मलता रह गया उस लागत पर जो उस बाग़ में ख़र्च की थी और वो अपनी टैटों पर गिरा हुआ था और कह रहा है ऐ काश मैंने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता।

४३. और उसके पास कोई जमाअत न थी कि अल्लाह के सामने उसकी मदद करती न वो बदला लेने के क़ाबिल था।

४४. यहाँ खुलता है कि इख़्तियार सच्चे अल्लाह का है उसका सवाब सबसे बेहतर और उसे मानने का अन्जाम सबसे भला।

रुकूअ ६

४५. और उनके सामने जिन्दगानी-ए-दुनिया की कहावत बयान करो जैसे एक पानी हमने आसमान से उतारा तो उसके सबब ज़मीन का सब्ज़ा घना होकर निकला कि सूखी घास होगया जिसे हवाएं उड़ाएँ और अल्लाह हर चीज़ पर क़ाबू वाला है।

४६. माल और बेटे ये जीती दुनिया का सिंगार है और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें उनका सवाब तुम्हारे रब के यहाँ बेहतर और वो उम्मीद में सबसे भली।

४७. और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएँगे और तुम ज़मीन को साफ़ खुली हुई देखोगे और हम उन्हें उठाएंगे तो उनमें से किसी को न छोड़ेंगे।

४८. और सब तुम्हारे रब के हुज़ूर परा बाँधे पेश होंगे बेशक तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसा हमने तुम्हें पहली बार बनाया था बल्कि तुम्हारा गुमान था कि हरगिज़ तुम्हारे लिए

कोई वअ्दा का वक़्त न रखेंगे
४९. और ना-मए-अअ्माल रखा जाएगा तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसके लिखे से डरते होंगे और कहेंगे हाए ख़राबी हमारी इस नविश्ते को क्या हुआ न इसने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो और अपना सब किया उन्होंने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।

रूकूअ ७

५०. और याद करो जब हमने फ़रिश्तों को फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सबने सज्दा किया सिवा इब्लीस के क़ौमे जिन्न से था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया भला क्या उसे और उसकी अवलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो और वो हमारे दुश्मन हैं ज़ालिमों को क्या ही बुरा बदल (बदला) मिला।

५१. न मैंने आसमानों और ज़मीन को बनाते वक़्त उन्हें सामने बिठा लिया था न खुद उनके बनाते वक़्त और न मेरी शान के गुमराह करने वालों को बाज़ू बनाऊँ।

५२. और जिस दिन फ़रमाएगा कि पुकारो मेरे शरीकों को जो तुम गुमान करते थे तो उन्हें पुकारेंगे वो उन्हें जवाब न देंगे और हम उनके दरमियान एक हलाकत का मैदान कर देंगे ।

५३. और मुजरिम दोज़ख़ को देखेंगे तो यक़ीन करेंगे कि उन्हें उसमें गिरना है और उससे

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ
مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ
يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ
صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰهَا ۚ
وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ
رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ
مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ
اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ
لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾
مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ
مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾
وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ
زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا
لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾
وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا
اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا

फिरने की कोई जगह न पाएँगे।

रूकूअ ८

५४. और बेशक हमने लोगों के लिए इस कुरआन में हर क़िस्म की मसल तरह तरह बयान फ़रमाई और आदमी हर चीज़ से बढ़कर झगड़ालू है।

५५. और आदमियों को किस चीज़ ने इससे रोका ईमान लाते जब हिदायत उनके पास आई और अपने रब से मुआफ़ी माँगते मगर ये कि उनपर अगलों का दस्तूर आए या उनपर क़िस्म क़िस्म का अज़ाब आए।

५६. और हम रसूलों को नहीं भेजते मगर खुशी और डर सुनाने वाले और जो काफ़िर हैं वो बातिल के साथ झगड़ते हैं कि उससे हक़ को हटा दे और उन्होंने मेरी आयतों की और जो डर उन्हें सुनाए गए थे उनकी हँसी बना ली।

५७. और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसे उसके रब की आयतें याद दिलाइ जाएँ तो वो उनसे मुँह फेर ले और उसके हाथ जो आगे भेज चुके उसे भूल जाए, हमने उनके दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिए है कि कुरआन न समझें और उनके कानों में गिरानी और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पाएँगे।

५८. और तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहर वाला है अगर वो उन्हें उनके किए पर पकड़ता तो

عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ ع
وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ
الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾
وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ
الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ
تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾
وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ
وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا
اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ
فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ
يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً
اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ
وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ
يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾
وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ
بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ

بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ
دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾
وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا
ع وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ
حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ
اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾
فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا
فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾
فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا
لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾
قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ
فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ
اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ وَاتَّخَذَ
سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٣﴾
قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ فَارْتَدَّا
عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾
فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ
رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ
لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾

जल्द उन पर अज़ाब भेजता बल्कि उनके लिए एक वअदा का वक़्त है जिसके सामने कोई पनाह न पाएँगे।

५९. और ये बस्तियाँ हमने तबाह कर दीं जब उन्होंने ज़ुल्म किया और हमने उनकी बरबादी का एक वअदा रखा था।

रूकूअ ९

६०. और याद करो जब मूसा ने अपने ख़ादिम से कहा मैं बाज़ न रहूँगा जब तक वहाँ न पहुँचूं जहा दो समन्दर मिले हैं या क़रनों चला जाऊँ।

६१. फिर जब वो दोनों उन दरियाओं के मिलने की जगह पहुँचे अपनी मछली भूल गए और उसने समन्दर में अपनी राह ली सुरंग बनाली।

६२. फिर जब वहाँ से गुज़र गए मूसा ने ख़ादिम से कहा हमारा सुबह का खाना लाओ बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुआ।

६३. बोला भला देखिाए तो जब हमने उस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली भूल गया और मुझे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका मज़कूर करूँ और उसने तो समन्दर में अपनी राह ली अचंबा है।

६४. मूसा ने कहा यही तो हम चाहते थे तो पीछे पल्टे अपने क़दमों के निशान देखते।

६५. तो हमारे बन्दों में से एक बन्दा पाया जिसे हमने अपने पास से रहमत दी और उसे अपना इल्मे लदुन्नी अता किया।

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ
تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾
قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾
وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ
خُبْرًا ﴿٦٨﴾
قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا
وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾
قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْئَلْنِيْ عَنْ
شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ
ع ذِكْرًا ﴿٧٠﴾
فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ
خَرَقَهَا قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا
لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾
قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا
تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾
فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ
قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ
لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

६६. उससे मूसा ने कहा क्या मै तुम्हारे साथ रहूँ इस शर्त पर कि तुम मुझे सिखा दोगे नेक बात जो तुम्हे तअ़लीम हुई।

६७. कहा आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे।

६८. और उस बात पर क्यों कर सब्र करेंगे जिसे आपका इल्म मुहीत नहीं।

६९. कहा अन्क़रीब अल्लाह चाहे तो तुम मुझे साबिर पाओगे और मैं तुम्हारे किसी हुक्म के ख़िलाफ़ न करूँगा।

७०. कहा तो अगर आप मेरे साथ रहते है तो मुझ से किसी बात को न पूछना जबतक मैं खुद उसका ज़िक्र न करुं।

रूकूअ १०

७१. अब दोनों चले यहाँ तक कि जब कश्ती में सवार हुए उस बन्दा ने उसे चीर डाला मूसा ने कहा क्या तुमने इसे इसलिए चीरा के इसके सवारों को डूबो दो बेशक ये तुमने बुरी बात की।

७२. कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे।

७३. कहा मुझ से मेरी भूल पर गिरफ़्त न करो और मुझ पर मेरे काम में मुश्किल न डालो।

७४. फिर दोनों चले यहाँ तक कि जब एक लड़का मिला उस बन्दे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा ने कहा क्या तुमने एक सुथरी जान बे किसी जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुमने बहुत बुरी बात की।

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ
مَعِيَ صَبْرًا ٧٥

७५. कहा मैने आपसे न कहा था कि आप हरगिज़ मेरे साथ न ठहर सकेंगे।

قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا
فَلَا تُصَاحِبْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي
عُذْرًا ٧٦

७६. कहा इसके बाद मै तुमसे कुछ पूछूँ तो फिर मेरे साथ न रहना बेशक मेरी तरफ़ से तुम्हारा उज्र पूरा हो चुका।

فَانْطَلَقَا حَتّٰى إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةِ
اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا
فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ
فَأَقَامَهُ ۚ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ
عَلَيْهِ أَجْرًا ٧٧

७७. फिर दोनो चले यहाँ तक कि जब एक गाँव वालों के पास आए उन दहक़ानो से खाना मांगा उन्होंने उन्हें दअवत देनी कुबूल न की फिर दोनों ने उस गाँव में एक दीवार पाई कि गिरा चाहती है उस बन्दा ने उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा तुम चाहते तो इसपर कुछ मज़दूरी ले लेते।

قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ
سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ
عَلَيْهِ صَبْرًا ٧٨

७८. कहा ये मेरी और आपकी जुदाई है अब मैं आपको उन बातो का फेर बताउंगा जिनपर आपसे सब्र न हो सका।

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِينَ
يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ
أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ
كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ٧٩

७९. वो जो कश्ती थी वो कुछ मोहताजों की थी कि दरिया में काम करते थे तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ और उनके पीछे एक बादशाह था कि हर साबित कश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता।

وَأَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ أَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ
فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّ
كُفْرًا ٨٠

८०. और वो जो लड़का था उसके माँ बाप मुसलमान थे तो हमे डर हुआ कि वो उनको सरकशी और कुफ़्र पर चढ़ावे।

८१. तो हमने चाहा कि उन दोनों का रब उससे बेहतर सुथरा और उससे ज़्यादा मेहरबानी के क़रीब अ़ता करे।

८२. रही वो दीवार वो शहर के दो यतीम लड़कों की थी और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना था और उनका बाप नेक आदमी था तो आपके रब ने चाहा कि वो दोनों अपनी जवानी को पहुँचे और अपना ख़ज़ाना निकालें आपके रब की रहमत से और ये कुछ मैंने अपने हुक्म से न किया ये फेर है उन बातों का जिसपर आपसे सब्र न हो सका।

फَاَرَدْنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾ ع

रुकूअ़ ११

८३. और तुमसे ज़ुलक़रनैन को पूछते हैं तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें उसका मज़कूर पढ़ कर सुनाता हूँ।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ ط

८४. बेशक हमने उसे ज़मीन में क़ाबू दिया और हर चीज़ का एक सामान अ़ता फ़रमाया।

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ لا

८५. तो वो एक सामान के पीछे चला।

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

८६. यहाँ तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुँचा उसे एक सियाह कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया और वहाँ एक क़ौम मिली हमने फ़रमाया ऐ ज़ुलक़रनैन या तो तू उन्हें सज़ा दे या उनके साथ भलाई इख़्तियार करे।

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِىْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾

८७. अ़र्ज़ की कि वो जिसने ज़ुल्म किया तो हम अनक़रीब

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ

सज़ा देंगे फिर अपने रब की तरफ़ फेरा जाएगा वो उसे बुरी मार देगा।

८८. और जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उसका बदला भलाई है और अनक़रीब हम उसे आसान काम कहेंगे।

८९. फिर एक सामान के पीछे चला।

९०. यहाँ तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुँचा उसे ऐसी क़ौम पर निकलता पाया जिनके लिए हमने सूरज से कोई आड़ नहीं रखी।

९१. बात यही है और जो कुछ उसके पास था सबको हमारा इल्म मुहीत है।

९२. फिर एक सामान के पीछे चला।

९३. यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुँचा उनसे उधर कुछ ऐसे लोग पाए कि कोई बात समझते मअलूम न होते थे।

९४. उन्होंने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन बेशक याजूज व माजूज ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या हम आपके लिए कुछ माल मुक़र्रर कर दें इसपर कि आप हममें और उनमें एक दीवार बना दें।

९५. कहा वो जिस पर मुझे मेरे

ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِۦ فَيُعَذِّبُهُۥ عَذَابًا
نُّكْرًا ﴿٨٧﴾
وَأَمَّا مَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَلَهُۥ
جَزَآءً ٱلْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُۥ مِنْ
أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾
ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾
حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ ٱلشَّمْسِ
وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل
لَّهُم مِّن دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾
كَذَٰلِكَ ۖ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ
خُبْرًا ﴿٩١﴾
ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾
حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ ٱلسَّدَّيْنِ وَجَدَ
مِن دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ
يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾
قَالُوا۟ يَٰذَا ٱلْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَ
مَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ
فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰٓ أَن
تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾
قَالَ مَا مَكَّنِّى فِيهِ رَبِّى خَيْرٌ

रब ने क़ाबू दिया है बेहतर है तो मेरी मदद ताक़त से करो मैं तुममें और उनमें एक मज़बूत आड़ बना दूँ।

९६. मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ यहाँ तक कि वो जब दीवार दोनों पहाड़ो के किनारों से बराबर कर दी कहा धौंको यहाँ तक कि जब उसे आग कर दिया कहा लाओ मैं उसपर गला हुआ ताँबा उंडेल दूँ।

९७. तो याजूज व माजूज इस पर न चढ़ सके और न उसमे सूराख़ कर सकें।

९८. कहा ये मेरे रब की रहमत है फिर जब मेरे रब का वअ़दा आएगा उसे पाश पाश कर देगा और मेरे रब का वअदा सच्चा है।

९९. और उस दिन हम उन्हें छोड़ देंगे कि उनका एक गिरोह दूसरे पर रेला आवेगा और सूर फूँका जाएगा तो हम सब को इकट्ठा कर लाएँगे।

१००. और हम उस दिन जहन्नम काफ़िरों के सामने लाएँगे।

१०१. वो जिनकी आँखों पर मेरी याद से पर्दा पड़ा था और हक़ बात सुन न सकते थे।

रुकूअ १२

१०२. तो क्या काफ़िर ये समझते है कि मेरे बन्दों को मेरे सिवा हिमायती

فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَ
بَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾
اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى
بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰۤى
اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْۤ اُفْرِغْ
عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾
فَمَا اسْطَاعُوْۤا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا
اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾
قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ
وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ
رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾
وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ
بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ
جَمْعًا ﴿٩٩﴾
وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ
عَرْضَا ﴿١٠٠﴾
الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ
عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
ع سَمْعًا ﴿١٠١﴾
اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنْ يَّتَّخِذُوْا

बना लेगे बेशक हमने काफ़िरो की मेहमानी को जहन्नम तैयार कर रखी है।

१०३. तुम फ़रमाओ क्या हम तुम्हे बता दें कि सबसे बढ़कर नाक़िस अमल किनके हैं।

१०४. उनके जिनकी सारी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में गुम गई और वो इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।

१०५. ये लोग जिन्होंने अपने रब की आयतें और उसका मिलना न माना तो उनका किया धरा सब अकारत है तो हम उनके लिए क़यामत के दिन कोई तौल न क़ायम करेंगे।

१०६. ये उनका बदला है जहन्नम उसपर कि उन्होंने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हँसी बनाई।

१०७. बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किए फ़िरदौस के बाग़ उनकी मेहमानी है।

१०८. वो हमेशा उन ही में रहेंगे उनसे जगह बदलना न चाहेंगे।

१०९. तुम फ़रमा दो अगर समन्दर मेरे रब की बातों के लिए सियाही हो तो जरूर समन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगरचे हम वैसा ही और उस की मदद को ले आएँ।

११०. तुम फ़रमाओ ज़ाहिर सूरतें बशरी में तो मैं तुम जैसा हूँ मुझे 'वही' आती है कि तुम्हारा मअबूद एक ही मअबूद है तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।

عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا
جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾
قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ ط
اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَ
لِقَاۗىِٕهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ
لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾
ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا
وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ
لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ لا
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾
قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ
لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ
وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ
اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ
يَرْجُوْا لِقَاۗءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا
وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾ ع

सूरए मरयम

मक्की है इसमें अठानवे आयात है और छे रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शूरुअ जो बहुत मेहरबान निहायत रहम वाला

रूकूअ १

२. ये मज़कूर है तेरे रब की उस रहमत का जो उसने अपने बन्दा ज़करिया पर की।

३. जब उसने अपने रब को आहिस्ता पुकारा।

४. अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई और सरसे बुढ़ापे का भभूका फूटा और ऐ मेरे रब मैं तुझे पुकार कर कभी ना मुराद न रहा।

५. और मुझे अपने बाद अपने क़राबत वालोंका डर है और मेरी औरत बांझ है तू मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे डाल जो मेरा काम उठाले।

६. वो मेरा जानशीन हो और अवलादे यअ़कूब का वारिस हो और ऐ मेरे रब उसे पसन्दीदा कर।

७. ऐ ज़करिया हम तुझे खुशी सुनाते हैं एक लड़के की जिनका नाम यहया है इसके पहले हमने इस नाम का कोई न किया।

८. अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहाँ से होगा मेरी औ़रत तो बांझ है और मैं बुढ़ापे से सूख जाने की हालत को पहुँच गया।

९. फ़रमाया ऐसा ही है तेरे रब ने फ़रमाया वो मुझे आसान है और

سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

كٓهٰيٰعٓصٓ ①
ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ②
اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ③
قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ
وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ
بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ④
وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَ
كَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ
لَّدُنْكَ وَلِيًّا ⑤
يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ
وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ⑥
يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨاسْمُهٗ يَحْيٰى
لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ⑦
قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ
امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ
الْكِبَرِ عِتِيًّا ⑧
قَالَ كَذٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ
هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ

मैने तो इससे पहले तुझे उस वक़्त बनाया जब तू कुछ भी न था।

१०. अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे कोई निशानी देदे फ़रमाया तेरी निशानी ये है कि तू तीन रात दिन लोगों से कलाम न करे भला चंगा होकर।

११. तो अपनी क़ौम पर मस्जिद से बाहर आया तो उन्हें इशारा से कहा कि सुबह व शाम तसबीह करते रहो।

१२. ऐ यह्या किताब मज़बूत थाम और हमने उसे बचपन ही में नुबूव्वत दी।

१३. और अपनी तरफ़ से मेहरबानी और सुथराई और कमाल डर वाला था।

१४. और अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था ज़बरदस्त व नाफ़रमान न था।

१५. और सलामती है उसपर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन ज़िन्दाउठाया जाएगा।

रुकूअ २

१६. और किताब में मरियम को याद करो जब अपने घरवालों से पूरब की तरफ़ एक जगह अलग गई।

१७. तो उनसे उधर एक पर्दा कर लिया तो उसकी तरफ़ हमने अपना रुहानी भेजा वो उसके सामने एक तन्दुरूस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुआ।

१८. बोली मैं तुझसे रहमान की पनाह माँगती हूँ अगर तुझे खुदा का डर है।

وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ﴿٩﴾
قَالَ رَبِّ اجْعَل لِّي آيَةً قَالَ آيَتُكَ
أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾
فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَوْحَىٰ
إِلَيْهِمْ أَن سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿١١﴾
يَا يَحْيَىٰ خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ وَآتَيْنَاهُ
الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾
وَحَنَانًا مِّن لَّدُنَّا وَزَكَاةً وَكَانَ
تَقِيًّا ﴿١٣﴾
وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُن جَبَّارًا
عَصِيًّا ﴿١٤﴾
وَسَلَامٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ
وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾
وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انتَبَذَتْ
مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾
فَاتَّخَذَتْ مِن دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا
إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا
سَوِيًّا ﴿١٧﴾
قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَٰنِ مِنكَ إِن
كُنتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾

قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ
لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿۱۹﴾
قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّ لَمْ
يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّ لَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿۲۰﴾
قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ
هَيِّنٌ ۚ وَ لِنَجْعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَ
رَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَ كَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿۲۱﴾
فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿۲۲﴾
فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ
قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَ
كُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿۲۳﴾
فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَاۤ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ
جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿۲۴﴾
وَ هُزِّيْۤ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ
عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿۲۵﴾
فَكُلِيْ وَ اشْرَبِيْ وَ قَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا
تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْۤ اِنِّيْ
نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ
الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿۲۶﴾
فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۚ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ

१९. बोला मैं तेरे रब का भेजा
हुआ हूँ कि मैं तुझे एक सुथरा बेटा दूँ।
२०. बोली मेरे लड़का कहाँ से
होगा मुझे तो किसी आदमी ने हाथ न
लगाया न मैं बदकार हूँ।
२१. कहा यूँ ही है तेरे रब ने
फ़रमाया है कि ये मुझे आसान है और
इसलिये कि हम उसे लोगों के वास्ते
निशानी करें और अपनी तरफ़ से एक
रहमत और ये काम ठहर चुका है।
२२. अब मरियम ने उसे पेट में
लिया फिर उसे लिए हुए एक दूर
जगह चली गई।
२३. फिर उसे जनने का दर्द एक
खजूर की जड़ में ले आया बोली हाय
किसी तरह मैं इससे पहले मर गई
होती और भूली बिसरी हो जाती।
२४. तो उसे उसके तले से पुकारा
कि ग़म न खा बेशक तेरे रब ने तेरे
नीचे एक नहर बहा दी है।
२५. और खजूर की जड़ पकड़
कर अपनी तरफ़ हिला तुझपर ताज़ी
पक्की खजूरें गिरेंगी।
२६. तो खा और पी और आँख
ठंडी रख फिर अगर तू किसी आदमी
को देखे तो कह देना मैंने आज रहमान
का रोज़ा माना है तो आज हरगिज़
किसी आदमी से बात न करूँगी।
२७. तो उसे गोदमें ले अपनी
क़ौम के पास आई बोले ऐ मरियम
बेशक तूने बहुत बुरी बात की।

२८. ऐ हारून की बहन तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी माँ बदकार।

२९. इसपर मरियम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया वो बोले हम कैसे बात करें उससे जो पालने में बच्चा है।

३०. बच्चे ने फ़रमाया मै हूँ अल्लाह का बन्दा उसने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया।

३१. और उसने मुझे मुबारक किया मैं कहीं हूँ और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जिऊँ।

३२. और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने वाला और मुझे ज़बरदस्त बदबख़्त न किया।

३३. और वही सलामती मुझपर जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूं और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊँ।

३४. ये है ईसा मरियम का बेटा सच्ची बात जिसमें शक करते हैं।

३५. अल्लाह को लाइक़ नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए पाकी है उसको जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूँ ही कि उससे फ़रमाता है होजा वो फ़ौरन होजाता है।

३६. और ईसा ने कहा बेशक अल्लाह रब है मेरा और तुम्हारा तो उसकी बन्दगी करो ये राह सीधी है।

३७. फिर जमाअतें आपस में

لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾
يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ
سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾
فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ
كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾
قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ
وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾
وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ وَ
اَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا
دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾
وَّبَرًّا بِوَالِدَتِيْ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا
شَقِيًّا ﴿٣٢﴾
وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ
وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾
ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ
الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾
مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ
سُبْحٰنَهٗ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾
وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ

मुख़तलिफ़ हो गई तो ख़राबी है काफ़िरो के लिए एक बड़े दिन की हाज़िरी से।

३८. कितना सुनेंगे और कितना देखेंगे जिस दिन हमारे पास हाज़िर होंगे मगर आज ज़ालिम खुली गुमराही में है।

३९. और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का जब काम हो चुकेगा और वो ग़फ़लत में हैं और नही मानते।

४०. बेशक ज़मीन और जो कुछ उसपर है सबके वारिस हम होंगे और वो हमारी ही तरफ़ फिरेंगे।

रुकूअ ३

४१. और किताब में इब्राहीम को याद करो बेशक वो सिद्दीक़ था (नबी) ग़ैब की ख़बरें बताता।

४२. जब अपने बाप से बोला ऐ मेरे बाप क्यों ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए।

४३. ऐ मेरे बाप बेशक मेरे पास वो इल्म आया जो तुझे न आया तो तू मेरे पीछे चला आ मैं तुझे सीधी राह दिखाउँ।

४४. ऐ मेरे बाप शैतान का बन्दा न बन बेशक शैतान रहमान का ना फ़रमान है।

४५. ऐ मेरे बाप मैं डरता हूँ कि तुझे रहमान का कोई अज़ाब पहुँचे तो तू शैतान का रफ़ीक़ हो जाए।

४६. बोला क्या तू मेरे खुदाओं

هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾
فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ
فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ
يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٣٧﴾
اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ
الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾
وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ
وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾
اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا
وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾ ع
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ اِنَّهٗ
كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٤١﴾
اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ
وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿٤٢﴾
يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ
يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا
سَوِيًّا ﴿٤٣﴾
يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾
يٰۤاَبَتِ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ

से मुँह फेरता है ऐ इब्राहीम बेशक अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे पथराव करूंगा और मुझसे ज़माना दराज़ तक बे इलाक़ा हो जा।

४७. कहा बस तुझे सलाम है करीब है कि मैं तेरे लिए अपने रब से मुआफ़ी माँगूँगा बेशक वो मुझपर मेहरबान है।

४८. और मैं एक किनारे हो जाऊँगा तुमसे और उन सबसे जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हो और अपने रब को पूजूँगा क़रीब है कि मैं अपने रब की बन्दगी से बदबख़्त न हूँ।

४९. फिर जब उनसे और अल्लाह के सिवा उनके मअबूदों से किनारा कर गया हमने उसे इसहाक़ और यअ़कूब अ़ता किए और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया।

५०. और हमने उन्हें अपनी रहमत अ़ता की और उनके लिए सच्ची बुलन्द नामवरी रखी।

रुकूअ ४

५१. और किताब में मूसा को याद करो बेशक वो चुना हुआ था और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताने वाला ।

५२. और उसे हमने तूर की दाहिनी जानिब से निदा फ़रमाई और उसे अपना राज़ कहने को क़रीब किया।

५३. और अपनी रहमत से उसका भाई हारून अ़ता किया (ग़ैब की ख़बरें बताने वाले नबी)।

५४. और किताब मैं इस्माईल को याद करो बेशक वो वअ़दे का

مِنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾
قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ
لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ
مَلِيًّا ﴿٤٦﴾
قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۚ
اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٧﴾
وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ
بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾
فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۗ
وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا
لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾ ع
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ۚ اِنَّهٗ كَانَ
مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾
وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ
وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾
وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ
نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ
صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿۵۴﴾
وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ
وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿۵۵﴾
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ
صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۵۶﴾
وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿۵۷﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ
النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ
حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا
اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ
خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿۵۸﴾
فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا
الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ
يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾
اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ
يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿۶۰﴾
جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ
بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿۶۱﴾

सच्चा था और रसूल था ग़ैब की
ख़बरें बताता।
५५. और अपने घर वालों को
नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता और
अपने रब को पसंद था।
५६. और किताब में इदरीस को
याद करो बेशक वो सिद्दीक़ था ग़ैब
की ख़बरें देता।
५७. और हमने उसे बुलन्द मकान
पर उठा लिया।
५८. ये है जिन पर अल्लाह ने
एहसान किया ग़ैब की ख़बरें बताने
वालों में से आदम की अवलाद से
और उन में जिन को हम ने नूह के
साथ सवार किया था और इब्राहीम
और यअ़क़ूब की अवलाद से और
उनमें से जिन्हे हमने राह दिखाई और
चुन लिया जब उन पर रहमान की
आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सज्दा
करते और रोते।
५९. तो उन के बाद उनकी जगह
वो ना ख़ल्फ़ आए जिन्होंने नमाज़ें
गंवाई और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे
हुए तो अनक़रीब वो दोज़ख़ में ग़य
का जंगल पाएँगे।
६०. मगर जो तायब हुए और
ईमान लाए और अच्छे काम किए तो
ये लोग जन्नत में जाएंगे और उन्हें
कुछ नुक़सान न दिया जाएँगा।
६१. बसने के बाग़ जिन का वअ़दा
रहमान ने अपने बन्दों से ग़ैब में किया
बेशक उसका वअ़दा आने वाला है।

६२. वो उसमें कोई बेकार बात न सुनेंगे मगर सलाम और उन्हे उसमें उनका रिज़्क़ है सुबह व शाम।

६३. ये वो बाग़ है जिसका वारिस हम अपने बन्दो में से उसे करेंगे जो परहेज़गार है।

६४. (और जिबरइल ने महबूब से अर्ज़ की) हम फ़रिश्ते नहीं उतरते मगर हुज़ूर के रब के हुक्म से उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे और जो उसके दरमियान है और हुज़ूर का रब भूलने वाला नहीं।

६५. आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है सबका मालिक तो उसे पूजो और उसकी बन्दगी पर साबित रहो क्या उसके नाम का दूसरा जानते हो।

रूकूअ ५

६६. और आदमी कहता है क्या जब मैं मर जाऊँगा तो ज़रूर अनक़रीब जिला कर निकाला जाऊँगा।

६७. और क्या आदमी को याद नहीं कि हमने इससे पहले उसे बनाया और वो कुछ न था।

६८. तो तुम्हारे रब की क़सम हम उन्हे और शैतानों सबको घेर लाएँगे और उन्हे दोज़ख के आसपास हाज़िर करेंगे घुटनो के बल गिरे।

६९. फिर हम हर गिरोह से निकालेंगे जो उनमें रहमान पर सबसे ज़्यादा बेबाक होगा।

७०. फिर हम खूब जानते हैं जो उस आग में भूनने के ज़्यादा लाइक़ है।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا ۖ وَلَهُمْ
رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿٦٢﴾
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا
مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾
وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ
أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ
وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ
ع تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾
وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ
أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾
أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ
قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِينَ ثُمَّ
لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾
ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ
أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾
ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلٰى
بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾

७१. और तुममें कोई ऐसा नहीं जिसका गुज़र दोज़ख पर न हो तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर ये ज़रूर ठहरी हुई बात है।

७२. फिर हम डरवालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उसमें छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे।

७३. और जब उनपर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाती हैं काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं कौनसे गिरोह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है।

७४. और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपा दीं (क़ौमें हलाक़ कर दीं) कि वो उनसे भी सामान और नुमूद में बेहतर थे।

७५. तुम फ़रमाओ जो गुमराही में हो तो उसे रहमान खूब ढील दे यहाँ तक कि ज़ब वो देखे वो चीज़ जिसका उन्हें वअदा दिया जाता है या तो अज़ाब या क़यामत तो अब जान लेंगे कि किसका बुरा दर्जा है और किसकी फ़ौज़ कमज़ोर।

७६. और जिन्होंने हिदायत पाई अल्लाह उन्हें और हिदायत बढ़ाएगा और बाक़ी रहने वाली नेक बातों का तेरे रबके यहाँ सबसे बेहतर सवाब और सबसे भला अन्जाम।

७७. तो क्या तुमने उसे देखा जो हमारी आयतों से मुनकिर हुआ और कहता है मुझे ज़रूर माल व अवलाद मिलेंगे।

७८. क्या ग़ैब को झाँक आया है या रहमान के पास कोई क़रार रखा है।

७९. हरगिज़ नहीं अब हम लिख

وَإِنْ مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ
رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾
ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِينَ
فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ اٰمَنُوٓا ۙ أَيُّ
الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾
وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ
أَحْسَنُ أَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾
قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ
الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰىٓ إِذَا رَأَوْا مَا
يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ ۗ
فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ
أَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾
وَيَزِيدُ اللّٰهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ
وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ
ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾
أَفَرَءَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ
لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾
أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ

रखेंगे जो वो कहता है और उसे ख़ूब लम्बा अज़ाब देंगे।

८०. और जो चीज़ कह रहा है उनके हम ही वारिस होंगे और हमारे पास अकेला आएगा।

८१. और अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना लिए कि वो उन्हें ज़ोर दें।

८२. हरगिज़ नहीं कोइ दम जाता है कि वो उनकी बन्दगी से मुनकिर होंगे और उनके मुख़ालिफ़ हो जाएँगे।

रुकूअ ६

८३. क्या तुमने न देखा कि हमने काफ़िरों पर शैतान भेजे कि वो उन्हें ख़ूब उछालते हैं।

८४. तो तुम उनपर जल्दी न करो हमतो उनकी गिनती पूरी करते हैं।

८५. जिस दिन हम परहेज़गारों को रहमान की तरफ़ ले जाएँगे मेहमान बनाकर।

८६. और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ हाकेंगे प्यासे।

८७. लोग शफ़ाअत के मालिक नहीं मगर वही जिन्होंने रहमान के पास क़रार रखा है।

८८. और काफ़िर बोले रहमान ने अवलाद इख़्तियार की ।

८९. बेशक तुम हद की भारी बात लाए।

९०. क़रीब है कि आसमान इससे फट पड़े और ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ गिर जाएँ ढहकर।

९१. इसपर कि उन्होंने रहमान के लिए अवलाद बताई।

الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾
كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ
مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾
وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾
وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا
لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾
كَلَّا سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ
عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾
اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾
فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾
يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾
وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾
لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ
عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾
وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾
لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾
تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ
الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾
اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾

९२. और रहमान के लाइक़ नहीं कि अवलाद इख़्तियार करे।

९३. आसमानों और ज़मीन में जितने हैं सब उसके हुज़ूर बन्दे होकर हाज़िर होंगे।

९४. बेशक वो उनका शुमार जानता है और उनको एक एक करके गिन रखा है।

९५. और उनमें हर एक रोज़े क़यामत उसके हुज़ूर अकेला हाज़िर होगा।

९६. बेशक वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किए अनक़रीब उनके लिए रहमान मोहब्बत कर देगा।

९७. तो हमने ये कुरआन तुम्हारी ज़बान मे यूं ही आसान फ़रमाया कि तुम उससे डर वालों को खुश ख़बरी दो और झगड़ालू लोगों को इससे डर सुनाओ।

९८. और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपाईं (क़ौमें हलाक कीं) क्या तुम उनमें किसी को देखते हो या उनकी भनक (ज़रा भी आवाज़) सुनते हो।

सूरए ताहा

मक्कीया है इसमें एक सौ पैंतीस आयात और आठ रूकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शूरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

रूकूअ १

२. ऐ महबूब हमने तुमपर ये कुरआन इसलिए न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो।

३. हां उसको नसीहत जो डर रखता हो।

४. उसका उतारा हुआ जिसने ज़मीन और ऊँचे आसमान बनाए।

وَمَا يَنۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾
اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
اِلَّاۤ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾
لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾
وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾
فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ
الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾
وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ
تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

[illegible]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ ﴿١﴾
مَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰۤى ﴿٢﴾
اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿٣﴾
تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ
الْعُلٰى ﴿٤﴾
اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ

५. वो बड़ी मेहर वाला उसने अर्श पर इसतवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लाइक़ है।

६. उसका है जो कुछ आसमानो मे है और जो कुछ जमीन में और जो कुछ उनके बीच में और जो कुछ इस गीली मिट्टी के नीचे है।

७. और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वो तो भेद को जानता है और उसे जो उससे भी ज़्यादा छुपा है।

८. अल्लाह कि उसके सिवा किसी की बन्दगी नही उसी के है सब अच्छे नाम।

९. और कुछ तुम्हे मूसा की ख़बर आई।

१०. जब उसने एक आग देखी तो अपनी बीबी से कहा ठहरो मुझे एक आग नज़र पड़ी है शायद मै तुम्हारे लिए उसमें से कोई चिंगारी लाऊँ या आग पर रास्ता पाऊँ।

११. फिर जब आग के पास आया निदा फ़रमाइ गई कि ऐ मूसा।

१२. बेशक मैं तेरा रब हूँ तो तू अपने जूते उतार डाल बेशक तू पाक जँगल तोवा में है।

१३. और मैंने तुझे पसंद किया अब कान लगाकर सुन जो तुझे 'वही' होती है।

१४. बेशक मैं ही हूँ अल्लाह कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं तू मेरी बंदगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम रख।

१५. बेशक क़यामत आने वाली है क़रीब था कि मैं उसे सबसे छुपाऊँ कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए।

१६. तो हरगिज़ तुझे उसके मानने से वो बाज़ न रखे जो उसपर ईमान

وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾
وَإِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ
وَأَخْفٰى ﴿٧﴾
اَللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى ﴿٨﴾
وَهَلْ أَتٰىكَ حَدِيثُ مُوسٰى ﴿٩﴾
إِذْ رَأٰى نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي
آنَسْتُ نَارًا لَعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ
أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾
فَلَمَّا أَتٰىهَا نُودِيَ يٰمُوسٰى ﴿١١﴾
إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ إِنَّكَ
بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾
وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحٰى ﴿١٣﴾
إِنَّنِي أَنَا اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي
وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِي ﴿١٤﴾
إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزٰى
كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾
فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ
بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾
وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يٰمُوسٰى ﴿١٧﴾
قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَ

नहीं लाता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला फिर तू हलाक हो जाए।

१७. और ये तेरे दाहिने हाथ में क्या है ऐ मूसा।

१८. अर्ज़ की ये मेरा असा है मैं इस पर तकिया लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूँ और मेरे इसमें और काम है।

१९. फ़रमाया उसे डाल दे ऐ मूसा।

२०. तो मूसा ने डाल दिया तो जभी वो दौड़ता हुआ साँप हो गया।

२१. फ़रमाया इसे उठा ले और डर नहीं अब हम उसे फिर पहली तरह कर देंगे।

२२. और अपना हाथ अपने बाज़ू से मिला ख़ूब सफ़ेद निकलेगा बे किसी मर्ज़ के एक और निशानी।

२३. कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियाँ दिखाएँ।

२४. फ़िरऔन के पास जा उसने सर उठाया।

रुकूअ २

२५. अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिए मेरा सीना खोल दे।

२६. और मेरे लिए मेरा काम आसान कर।

२७. और मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे।

२८. कि वो मेरी बात समझें।

२९. और मेरे लिए मेरे घरवालों में से एक वज़ीर कर दे।

३०. वो कौन मेरा भाई हारून।

३१. इससे मेरी कमर मज़बूत कर।

اَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِىْ وَلِىَ فِيْهَا
مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿١٨﴾
قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾
فَاَلْقٰهَا فَاِذَا هِىَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ﴿٢٠﴾
قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيْدُهَا
سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿٢١﴾
وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ﴿٢٢﴾
لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾
اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٢٤﴾
قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِىْ صَدْرِىْ ﴿٢٥﴾
وَيَسِّرْ لِىْٓ اَمْرِىْ ﴿٢٦﴾
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِىْ ﴿٢٧﴾
يَفْقَهُوْا قَوْلِىْ ﴿٢٨﴾
وَاجْعَلْ لِّىْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِىْ ﴿٢٩﴾
هٰرُوْنَ اَخِى ﴿٣٠﴾
اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِىْ ﴿٣١﴾
وَاَشْرِكْهُ فِىْٓ اَمْرِىْ ﴿٣٢﴾
كَىْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾
وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾

إِنَّكَ كُنتَ بِنَا بَصِيرًا ٣٥
قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يٰمُوسٰى ٣٦
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرٰى ٣٧
إِذْ أَوْحَيْنَا إِلٰى أُمِّكَ مَا يُوحٰى ٣٨
أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ
فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ
عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ
مَحَبَّةً مِّنِّي وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِي ٣٩
إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ
عَلٰى مَن يَكْفُلُهُ فَرَجَعْنٰكَ إِلٰى أُمِّكَ
كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَقَتَلْتَ
نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ
فُتُونًا فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ
ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يٰمُوسٰى ٤٠
وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ٤١
اذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِاٰيٰتِي وَلَا تَنِيَا
فِي ذِكْرِي ٤٢
اذْهَبَا إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغٰى ٤٣
فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ
يَخْشٰى ٤٤

३२. और उसे मेरे काम मे शरीक कर।

३३. कि हम ब कसरत तेरी पाकी बोले।

३४. और ब कसरत तेरी याद करे।

३५. बेशक तू हमे देख रहा है।

३६. फ़रमाया ऐ मूसा तेरी मांग तुझे अता हुई।

३७. और बेशक हमने तुझपर एक बार और एहसान फ़रमाया।

३८. जब हमने तेरी माँ को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था।

३९. कि उस बच्चे को संदूक़ मे रखकर दरिया मे डाल दे तो दरिया उसे किनारे पर डाले कि उसे वो उठा ले जो मेरा दुश्मन और उसका दुश्मन और मैने तुझपर अपनी तरफ़ की महब्बत डाली और इसलिए के तू मेरी निगाह के सामने तैय्यार हो।

४०. तेरी बहन चली फिर कहा क्या मैं तुम्हें वो लोग बता दूं जो उस बच्चे की परवरिश करे तो हम तुझे तेरी माँ के पास फेर लाए कि उसकी आँख ठंडी हो और ग़म न करे और तूने एक जान को क़त्ल किया तो हमने तुझे ग़म से नजात दी और तुझे खूब जांच लिया तो तू कई बरस मदयन वालों में रहा फिर तू एक ठहराए वअदे पर हाज़िर हुआ ऐ मूसा।

४१. और मैंने तुझे ख़ास अपने लिए बनाया।

४२. तू और तेरा भाई दोनों मेरी निशानियाँ लेकर जाओ और मेरी याद

قَالَا رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَآ
أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿٤٥﴾
قَالَ لَا تَخَافَآ إِنَّنِى مَعَكُمَآ أَسْمَعُ وَ
أَرَىٰ ﴿٤٦﴾
فَأْتِيَاهُ فَقُولَآ إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ
مَعَنَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ
قَدْ جِئْنَٰكَ بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَٱلسَّلَٰمُ
عَلَىٰ مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلْهُدَىٰ ﴿٤٧﴾
إِنَّا قَدْ أُوحِىَ إِلَيْنَآ أَنَّ ٱلْعَذَابَ عَلَىٰ
مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾
قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَٰمُوسَىٰ ﴿٤٩﴾
قَالَ رَبُّنَا ٱلَّذِىٓ أَعْطَىٰ كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهُۥ
ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾
قَالَ فَمَا بَالُ ٱلْقُرُونِ ٱلْأُولَىٰ ﴿٥١﴾
قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّى فِى كِتَٰبٍ ۖ
لَّا يَضِلُّ رَبِّى وَلَا يَنسَى ﴿٥٢﴾
ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ مَهْدًا وَ
سَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ
ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجْنَا بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا
مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾

में सुस्ती न करना।

४३. दोनों फ़िरऔन के पास जाओ बेशक उसने सर उठाया।

४४. तो उससे नरम बात कहना इस उम्मीद पर कि वो ध्यान करे या कुछ डरे।

४५. दोनों ने अर्ज़ किया ऐ हमारे रब बेशक हम डरते है कि वो हम पर ज़्यादती करे या शरारत से पेश आए।

४६. फ़रमाया डरो नही मैं तुम्हारे साथ हूँ सुनता और देखता ।

४७. तो उसके पास जाओ और उससे कहो कि हम तेरे रब के भेजे हुए हैं तो अवलादे यअकूब को हमारे साथ छोड़ दे और उन्हें तकलीफ़ न दे बेशक हम तेरे रब की तरफ़ से निशानी लाए हैं और सलामती उसे जो हिदायत की पैरवी करे।

४८. बेशक हमारी तरफ़ 'वही' हुई है कि अज़ाब उसपर है जो झुठलाए और मुँह फेरे।

४९. बोला तो तुम दोनों का खुदा कौन है ऐ मूसा।

५०. कहा हमारा रब वो है जिसने हर चीज़ को उसके लाइक़ सूरत दी फिर राह दिखाई।

५१. बोला अगली संगतों का क्या हाल है।

५२. कहा उनका इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है मेरा रब न बहके न भूले।

५३. वो जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना किया और तुम्हारे लिए उसमें चलती राहें रखीं और आसमान

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿٥٤﴾
مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا
نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾
وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾
قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا
بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾
فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَ
لَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾
قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ
يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾
فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾
قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ
وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾
فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا
النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾
قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ
اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا

से पानी उतारा तो हमने उससे तरह तरह के सब्ज़े के जोड़े निकाले।

५४. तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ बेशक उसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों को।

रुकूअ ३

५५. हमने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और उसीमें तुम्हें फिर ले जाएँगे और उसीसे तुम्हें दोबारा निकालेंगे।

५६. और बेशक हमने उसे अपनी सब निशानियाँ दिखाईं तो उसने झुठलाया और न माना।

५७. बोला क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें अपने जादू के सबब हमारे ज़मीन से निकाल दो ऐ मूसा।

५८. तो ज़रूर हम भी तुम्हारे आगे वैसा ही जादू लाएँगे तो हममें और अपने में एक वअ़दा ठहरा दो जिससे न हम बदला लें न तुम हमवार जगह हो।

५९. मूसा ने कहा तुम्हारा वअ़दा मेले का दिन है और ये कि लोग दिन चढ़े जमअ़ किए जाएँ।

६०. तो फ़िरऔन फिरा और अपने दाओं इकट्ठे किये फिर आया।

६१. उनसे मूसा ने कहा तुम्हें ख़राबी हो अल्लाह पर झूठ न बांधो कि वो तुम्हें अ़ज़ाब से हलाक कर दे और बेशक नामुराद रहा जिसने झूठ बांधा।

६२. तो अपने मुआमले में बाहम मुख़तलिफ़ हो गये और छुप कर मशवरत की।

६३. बोले बेशक ये दोनो ज़रूर जादूगर है चाहते हैं कि तुम्हे तुम्हारी ज़मीन से अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दीन ले जाएं।

६४. तो अपना दांव पक्का करलो फिर परा (सफ़) बांध कर आओ और आज मुराद को पहुँचा जो ग़ालिब रहा।

६५. बोले ऐ मूसा या तो तुम डालो या हम पहले डालें।

६६. मूसा ने कहा बलकि तुम ही डालो जभी उनकी रस्सियाँ और लाठीयाँ उनके जादू के ज़ोर से उनके ख़याल में दौड़ती मअलूम हुई।

६७. तो अपने जी में मूसा ने ख़ौफ़ पाया।

६८. हमने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है।

६९. और डाल तो दे जो तेरे दाहिने हाथ में है और उनकी बनावटों को निगल जाएगा वो जो बनाकर लाए हैं वो तो जादूगर का फ़रेब है और जादूगर का भला नहीं होता कहीं आवे।

७०. तो सब जादूगर सज्दे में गिरा दिए गए बोले हम उसपर ईमान लाए जो हारून और मूसा का रब है।

७१. फ़िरऔन बोला क्या तुम उसपर ईमान लाए क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हे इजाज़त दूँ बेशक वो तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम सब को जादू सिखाया तो मुझे क़सम है ज़रूर मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा और तुम्हें खजूर के ढंड (तने) पर सूली चढ़ाऊँगा और ज़रूर

وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ﴿٦٣﴾
فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَ
قَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾
قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ
نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ﴿٦٥﴾
قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا حِبَالُهُمْ
وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ
أَنَّهَا تَسْعَىٰ ﴿٦٦﴾
فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَىٰ ﴿٦٧﴾
قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ﴿٦٨﴾
وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ
إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ
حَيْثُ أَتَىٰ ﴿٦٩﴾
فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا
بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ ﴿٧٠﴾
قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ
إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ
السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ
فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا

तुम जान जाओगे कि हममें किसका अज़ाब सख़्त और देरपा है।

७२. बोले हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे उन रौशन दलीलों पर जो हमारे पास आईं हमें अपने पैदा करने वाले की क़सम तो तू कर चुक जो तुझे करना है तू इस दुनिया ही की ज़िन्दगी में तो करेगा।

७३. बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वो हमारी ख़ताएँ बख़्श दे और वो जो तूने हमें मजबूर किया जादू पर और अल्लाह बेहतर है और सबसे ज़्यादा बाक़ी रहने वाला।

७४. बेशक जो अपने रब के हुज़ूर मुजरिम होकर आए तो जरूर उसके लिए जहन्नम है जिसमें न मरे न जिए ।

७५. और जो उसके हुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किए हों तो उन्हीं के दर्जे ऊँचे।

७६. बसने के बाग़ जिनके नीचे नहरें बहें हमेशा उनमें रहे और ये सिला है उसका जो पाक हुआ।

रुकूअ ४

७७. और बेशक हमने मूसा को 'वही' की रातों रात मेरे बंदों को ले चल और उनके लिए दरिया में सूखा रास्ता निकाल दे तुझे डर न होगा कि फ़िरऔन आ ले और न ख़तरा।

७८. तो उनके पीछे फ़िरऔन पड़ा अपने लश्कर लेकर तो उन्हें

أَشَدُّ عَذَابًا وَّأَبْقٰى ﴿٧١﴾
قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ
الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا
أَنْتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾
إِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَ
مَآ أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللّٰهُ
خَيْرٌ وَّأَبْقٰى ﴿٧٣﴾
إِنَّهٗ مَنْ يَّأْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهٗ
جَهَنَّمَ ۖ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾
وَمَنْ يَّأْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ
فَأُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾
جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ
تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾
وَلَقَدْ أَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوْسٰٓى ۙ أَنْ أَسْرِ
بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ
يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾
فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ
مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ۝٧٩
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ
عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۝٨٠
كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا
فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ
عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ۝٨١
وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ۝٨٢
وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ۝٨٣
قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ
اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ۝٨٤
قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ
وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝٨٥
فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ
قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا
حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ
اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ۝٨٦
قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا

दरिया ने ढाँप लिया जैसा ढाँप लिया।

७९. और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और राह न दिखाई।

८०. ऐ बनी इसराईल बेशक हमने तुमको तुम्हारे दुशमन से नजात दी और तुम्हें तूर की दाहिनी तरफ़ का वअदा दिया और तुम पर मन और सलवा उतारा।

८१. खाओ जो पाक चीज़ें हमने तुम्हें रोज़ी दी और उसमें ज़्यादती न करो कि तुमपर मेरा ग़ज़ब उतरे और जिसपर मेरा ग़ज़ब उतरा बेशक वो गिरा।

८२. और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूँ उसे जिसने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा।

८३. और तूने अपनी क़ौम से क्यों जल्दी की ऐ मूसा।

८४. अर्ज़ की कि वो ये है मेरे पीछे और ए मेरे रब तेरी तरफ़ मै जल्दी करके हाज़िर हुआ कि तू राज़ी हो।

८५. फ़रमाया तो हमने तेरे आने के बाद तेरी क़ौम को बला में डाला और उन्हें सामरी ने गुमराह कर दिया।

८६. तो मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा गुस्से में भरा अफ़सोस करता कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुमसे तुम्हारे रब ने अच्छा वअदा न किया था क्या तुम पर मुद्दत लम्बी गुज़री या तुमने चाहा कि तुमपर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे तो तुमने मेरा वअदा ख़िलाफ़ किया।

८७. बोले हमने आपका वअदा अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ न किया लेकिन हमसे कुछ बोझ उठवाए गए उस क़ौम के गहने के तो हमने उन्हें डाल दिया फिर उसी तरह सामरी ने डाला।

८८. तो उसने उनके लिए एक बछड़ा निकाला बेजान का धड़ गाय की तरह बोलता तो बोले ये है तुम्हारा मअबूद और मूसा का मअबूद मूसा तो भूल गए।

८९. तो क्या नही देखते कि वो उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और उनके किसी बुरे भले का इख़्तियार नहीं रखता।

रुकूअ ५

९०. और बेशक उनसे हारून ने इससे पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम यूँ ही है कि तुम इसके सबब फ़ितने में पड़े और बेशक तुम्हारा रब रहमान है तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो।

९१. बोले हमतो इसपर आसन मारे जमे रहेंगे जबतक हमारे पास मूसा लौट के आएँ।

९२. मूसा ने कहा ऐ हारून तुम्हें किस बात ने रोका था जब तुमने उन्हें गुमराह होते देखा था।

९३. कि मेरे पीछे आते तो क्या तुमने मेरा हुक्म न माना।

९४. कहा ऐ मेरे माँ जाए न मेरी दाढ़ी पकड़ो और न मेरे सरके बाल मुझे ये डर हुआ कि तुम कहोगे तुमने बनी इसराईल में तफ़रक़ा डाल दिया और तुमने मेरी बात का इन्तेज़ार न किया।

९५. मूसा ने कहा अब तेरा क्या

حُمِّلْنَآ أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا
فَكَذٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾
فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ
فَقَالُوا هٰذَآ إِلٰهُكُمْ وَإِلٰهُ مُوسٰى
فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾
أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ
ع وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾
وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُونُ مِن قَبْلُ
يٰقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِۦ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ
الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوٓا أَمْرِي ﴿٩٠﴾
قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِينَ حَتّٰى
يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسٰى ﴿٩١﴾
قَالَ يٰهٰرُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ
ضَلُّوٓا ﴿٩٢﴾
أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ﴿٩٣﴾
قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَ
لَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ أَن تَقُولَ
فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ وَلَمْ
تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾
قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

हाल है ऐ सामरी।

९६. बोला मैंने वो देखा जो लोगों ने न देखा तो एक मुठ्ठी भर ली फ़रिश्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया और मेरे जी को यही भला लगा।

९७. कहा तो चलता बन कि दुनिया की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा ये है कि तू कहे छूनाजा और बेशक तेरे लिए एक वअ़दा का वक़्त है जो तुझसे ख़िलाफ़ न होगा और अपने इस मअ़बूद को देख जिसके सामने तू दिन भर आसन मारे रहा क़सम है हम ज़रूर इसे जलाएँगे फिर रेज़ा-रेज़ा करके दरिया में बहाएँगे।

९८. तुम्हारा मअ़बूद तो वही अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बंदगी नहीं हर चीज़ को उसका इल्म मुहीत है।

९९. हम ऐसा ही तुम्हारे सामने अगली ख़बरें बयान फ़रमाते है और हमने तुमको अपने पाससे एक ज़िक्र अ़ता फ़रमाया।

१००. जो उससे मुंह फेरे तो बेशक वो क़यामत के दिन एक बोझ उठायेगा।

१०१. वो हमेशा उसमें रहेंगे और वो क़यामत के दिन उनके हक़ में क्या ही बुरा बोझ होगा।

१०२. जिस दिन सूर फूँका जायेगा और हम उस दिन मुजरिमों को उठायेंगे नीली आँखें।

१०३. आपस में चुपके चुपके कहते होंगे कि तुम दुनिया में न रहे मगर

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ
فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ
فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ
نَفْسِيْ ٩٦
قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ
اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا
لَّنْ تُخْلَفَهٗ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ
ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ
لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ٩٧
اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ٩٨
كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ
سَبَقَ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ٩٩
مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ١٠٠
خٰلِدِيْنَ فِيْهِ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ١٠١
يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ
يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ١٠٢
يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ١٠٣

१०४. हम खूब जानते हैं जो वो कहेंगे जबकि उनमें सबके बेहतर रायवाला कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक ही दिन रहे थे।

रुकूअ ६

१०५. और तुमसे पहाड़ों को पूछते हैं तुम फ़रमाओ उन्हें मेरा रब रेज़ा-रेज़ा करके उड़ा देगा।

१०६. तो ज़मीन को पट पर हमवार करके छोडेगा।

१०७. कि तू उसमें नीचा ऊँचा कुछ न देखे।

१०८. उस दिन पुकारने वाले के पीछे दौड़ेंगे उसमें कजी न होगी और सब आवाज़ें रहमान के हुज़ूर पस्त होकर रह जाएँगी तो तू न सुनेगा मगर बहुत अहिस्ता आवाज़।

१०९. उस दिन किसी की शफ़ाअत काम न देगी मगर उसकी जिसे रहमान ने इज़्न दे दिया है और उसकी बात पसंद फ़रमाई।

११०. वो जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे और उनका इल्म उसे नहीं घेर सकता।

१११. और सब मुँह झुक जाएँगे उस ज़िन्दा क़ायम रखने वाले के हुज़ूर और बेशक नामुराद रहा जिसने ज़ुल्म का बोझ लिया।

११२. और जो कुछ नेक काम करे और हो मुसलमान तो न उसे ज़्यादती का ख़ौफ़ होगा न नुक़्सान का।

११३. और यूँ ही हमने उसे अरबी कुरआन उतारा और उसमें तरह तरह से अज़ाब के वअदे दिए कि कही उन्हें डर हो या उनके दिल में कुछ सोच पैदा करे।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ
أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ١٠٤ ع
وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا
رَبِّي نَسْفًا ١٠٥
فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ١٠٦
لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ١٠٧
يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ
وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا
تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ١٠٨
يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ
أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ١٠٩
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ١١٠
وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ وَقَدْ
خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ١١١
وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ١١٢
وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا
فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ
يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ١١٣

११४. तो सबसे बुलंद है अल्लाह सच्चा बादशाह और कुरआन में जल्दी न करो जबतक उसकी 'वही' तुम्हे पूरी न होले और अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे इल्म ज़्यादा दे।

११५. और बेशक हमने आदम को उससे पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था तो वो भूल गया और हमने उसका क़स्द न पाया।

रुकूअ ७

११६. और जब हमने फ़रिश्तो से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दा में गिरे मगर इबलीस उसने न माना।

११७. तो हमने फ़रमाया ऐ आदम बेशक ये तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है तो ऐसा न हो कि वो तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे फिर तू मशक़्क़त में पड़े।

११८. बेशक तेरे लिए जन्नत में ये है कि न तू भूखा हो और न नंगा हो।

११९. और ये कि तुझे न उसमें प्यास लगे न धूप।

१२०. तो शैतान ने उसे वसवसा दिया बोला ऐ आदम क्या मैं तुम्हे बता दूं हमेशा जीने का पेड़ और वो बादशाही कि पुरानी न पड़े।

१२१. तो उन दोनों ने उसमें से खा लिया अब उन पर उनकी शर्म की चीज़ें ज़ाहिर हुईं और जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे और आदम से अपने रब के हुक्म में लग़ज़िश वाक़ेअ हुई तो जो मतलब चाहा था उसकी राह न पाई।

१२२. फिर उसे उसके रब ने

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ
بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ
وَحْيُهٗ ۖ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾
وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ
فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۗ اَبٰى ﴿١١٦﴾
فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ
وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ
فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾
اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾
وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾
فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ
هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَ
مُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾
فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا
وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ
وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۚ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ
فَغَوٰى ﴿١٢١﴾
ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ
هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ
وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾
وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَإِنَّ لَهٗ
مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ أَعْمٰى ﴿١٢٤﴾
قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ أَعْمٰى وَقَدْ
كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾
قَالَ كَذٰلِكَ أَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ
وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾
وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ
يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
أَشَدُّ وَأَبْقٰى ﴿١٢٧﴾
أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ
مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۗ إِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي النُّهٰى ﴿١٢٨﴾ ع
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ
لِزَامًا وَّأَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾
فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

चुन लिया तो उसपर अपनी रहमत से रूजूअ फ़रमाई और अपने कुर्बे ख़ास की राह दिखाई।

१२३. फ़रमाया तुम दोनो मिलकर जन्नत से उतरो तुममें एक दूसरे का दुश्मन है फिर अगर तुम सब को मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पैरो हुआ वो न बहके न बदबख़्त हो।

१२४. और जिसने मेरी याद से मुँह फेरा तो बेशक उस के लिए तंग ज़िन्दगानी है और हम उसे क़यामत के दिन अन्धा उठाएँगे।

१२५. कहेगा ऐ रब मेरे मुझे तूने क्यों अन्धा उठाया मैं तो अँखियाए था।

१२६. फ़रमाएगा यूँही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं तूने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही आज तेरी कोई ख़बर न लेगा।

१२७. और हम ऐसा ही बदला देते हैं जो हद से बढ़े और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए और बेशक आख़ेरत का अज़ाब सबसे सख़्त तर और सबसे देरपा है।

१२८. तो क्या उन्हें उससे राह न मिली कि हमने उनसे पहले कितनी संगतें हलाक कर दीं कि ये उनके बसने की जगह चलते फिरते हैं बेशक उसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों को।

रूकूअ ८

१२९. और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती तो ज़रूर अज़ाब उन्हें लिपट जाता और अगर न होता एक वअदा ठहराया हुआ।

१३०. तो उनकी बातों पर सब

करो और अपने रब को सराहते हुए उसकी पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और उसके डूबने से पहले और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो और दिन के किनारों पर इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो।

१३१. और ऐ सुननेवाले अपनी आँखे न फैला उसकी तरफ़ जो हमने काफ़िरो के जोड़ों को बरतने के लिए दी है जीती दुनिया की ताज़गी कि हम उन्हें उसके सबब फ़ितने में डालें और तेरे रब का रिज़्क़ सबसे अच्छा और सबसे देरपा है।

१३२. और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दे और खुद उस पर साबित रह कुछ हम तुझ से रोज़ी नहीं मांगते हम तुझे रोज़ी देंगे और अंजाम का भला परहेज़गारी के लिए।

१३३. और काफ़िर बोले ये अपने रब के पाससे कोई निशानी क्यों नहीं लाते और क्या उन्हें इसका बयान न आया जो अगले सहीफ़ों मे है।

१३४. और अगर हम उन्हें किसी अज़ाब से हलाक कर देते रसूल के आने से पहले तो ज़रूर कहते ऐ हमारे रब तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों पर चलते क़ब्ल इसके कि ज़लील ओ रूसवा होते।

१३५. तुम फ़रमाओ सब राह देख रहे है तो तुम भी राह देखो तो अब जान जाओगे कि कौन है सीधी राह वाले और किसने हिदायत पाई।

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ
وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ
فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾
وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا
بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ۬
لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ
وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾
وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ
عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ۖ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۖ
وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾
وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ
اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ
الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾
وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ
لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا
فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَ
نَخْزٰى ﴿١٣٤﴾
قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ
مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ
اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾ ع

सूरए अंबिया

मक्की है इसमें एक सौ बारह आयाते और सात रूकूअ

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहमतवाला

रूकूअ १

१. लोगों का हिसाब नज़दीक और वो ग़फ़लत में मुँह फेरे है।

२. जब उनके रब के पाससे उन्हें कोई नई नसीहत आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए।

३. उनके दिल खेल में पड़े हैं और ज़ालिमों ने आपस में खुफ़िया मश्वरत की कि ये कौन है एक तुम्हीं जैसे आदमी तो हैं क्या जादू के पास जाते हो देखभाल कर।

४. नबी ने फ़रमाया मेरा रब जानता है आसमानों और ज़मीन में हर बात को और वही है सुनता जानता।

५. बल्कि बोले परेशान ख़्वाबें हैं बल्कि उनकी गढ़त (गढ़ी हुई चीज़) है बल्कि ये शाअेर है तो हमारे पास कोई निशानी लाएँ जैसे अगले भेजे गए थे।

६. इनसे पहले कोई बस्ती ईमान न लाई जिसे हमने हलाक किया तो क्या ये ईमान लाएँगे।

७. और हमने तुमसे पहले न भेजे मगर मर्द जिन्हें हम 'वही' करते

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَاءِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ①

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ②

لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ③

قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ④

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ⑤

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ⑥

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ

तो ऐ लोगों इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म न हो।

८. और हमने उन्हें ख़ाली बदन न बनाया कि खाना न खाएँ और न वो दुनिया में हमेशा रहें।

९. फिर हमने अपना वअदा उन्हें सच्चा कर दिखाया तो उन्हें नजात दी और जिनको चाही और हद से बढ़ने वालों को हलाक कर दिया।

१०. बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक किताब उतारी जिस में तुम्हारी नामवरी है तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।

रुकूअ २

११. और कितनी ही बस्तियाँ हमने तबाह कर दीं कि वो सितमगार थी और उनके बाद और क़ौम पैदा की।

१२. तो जब उन्होंने हमारा अज़ाब पाया जभी वो उससे भागने लगे।

१३. न भागो और लौट के जाओ उन आसाइशों की तरफ़ जो तुमको दी गई थीं और अपने मकानों की तरफ़ शायद तुमसे पूछना हो।

१४. बोले हाय ख़राबी हमारी बेशक हम ज़ालिम थे।

१५. तो वो यही पुकारते रहे यहाँ तक कि हमने उन्हें कर दिया काटे हुए बुझे हुए।

१६. और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ इनके दरमियान

إِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوٓا۟ أَهْلَ ٱلذِّكْرِ إِن كُنتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ⑦
وَمَا جَعَلْنَٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُونَ
ٱلطَّعَامَ وَمَا كَانُوا۟ خَٰلِدِينَ ⑧
ثُمَّ صَدَقْنَٰهُمُ ٱلْوَعْدَ فَأَنجَيْنَٰهُمْ وَ
مَن نَّشَآءُ وَأَهْلَكْنَا ٱلْمُسْرِفِينَ ⑨
لَقَدْ أَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ كِتَٰبًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑩
وَكَمْ قَصَمْنَا مِن قَرْيَةٍ كَانَتْ
ظَالِمَةً وَأَنشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا
ءَاخَرِينَ ⑪
فَلَمَّآ أَحَسُّوا۟ بَأْسَنَآ إِذَا هُم مِّنْهَا
يَرْكُضُونَ ⑫
لَا تَرْكُضُوا۟ وَٱرْجِعُوٓا۟ إِلَىٰ مَآ أُتْرِفْتُمْ
فِيهِ وَمَسَٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُونَ ⑬
قَالُوا۟ يَٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ⑭
فَمَا زَالَت تِّلْكَ دَعْوَىٰهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَٰهُمْ
حَصِيدًا خَٰمِدِينَ ⑮
وَمَا خَلَقْنَا ٱلسَّمَآءَ وَٱلْأَرْضَ وَمَا

है अबस न बनाएँ।

१७. अगर हम कोई बहलावा इख़्तियार करना चाहते तो अपने पाससे इख़्तियार करते अगर हमें करना होता।

१८. बल्कि हम हक़ को बातिल पर फेंक मारते हैं तो वो उसका भेजा निकाल देता है तो जभी वो मिट कर रह जाता है और तुम्हारी ख़राबी है उन बातों से जो बनाते हो।

१९. और उसी के हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं और उसके पास वाले उसकी इबादत से तकब्बुर नहीं करते और न थकें।

२०. रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते।

२१. क्या उन्होंने ज़मीन में से कुछ ऐसे ख़ुदा बना लिए हैं कि वो कुछ पैदा करते हैं।

२२. अगर आसमान-ो ज़मीन में अल्लाह के सिवा और ख़ुदा होते तो ज़रूर वो तबाह हो जाते तो पाकी है अल्लाह अ़र्श के मालिक को उन बातों से जो ये बनाते हैं।

२३. उससे नहीं पूछा जाता जो वो करे और इन सबसे सवाल होगा।

२४. क्या अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना रखे हैं तुम फ़रमाओ अपनी दलील लाओ ये कुरआन मेरे साथ वालों का ज़िक्र है और मुझसे अगलों

بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾
لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ
لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾
بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ
فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ وَلَكُمُ
الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾
وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَ
مَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ
وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾
يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾
اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ
يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾
لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ
فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا
يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾
لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۚ قُلْ
هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ
مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۚ بَلْ

का तज़किरा बल्कि उनमें अकसर हक़ को नहीं जानते तो वो रूगरदाँ है।

२५. और हमने तुमसे पहले कोई रसूल न भेजा मगर ये कि हम उसकी तरफ़ 'वही' फ़रमाते कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं तो मुझी को पूजो।

२६. और बोले रहमान ने बेटा इख़्तियार किया पाक है वो बल्कि बन्दे है इज़्ज़त वाले।

२७. बात में उससे सबक़त नहीं करते और वो उसी के हुक्म पर कारबन्द होते हैं।

२८. वो जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे हैं और शफ़ाअत नहीं करते मगर उसके लिए जिसे वो पसन्द फ़रमाए और वो उसके ख़ौफ़ से डर रहे हैं।

२९. और उनमें जो कोई कहे कि मैं अल्लाह के सिवा मअबूद हूँ तो उसे हम जहन्नम की जज़ा देंगे हम ऐसी ही सज़ा देते हैं सितमगारों को।

रुकूअ ३

३०. क्या काफ़िरों ने ये ख़याल न किया कि आसमान और ज़मीन बन्द थे तो हमने उन्हें खोला और हमने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई तो क्या वो ईमान लाएँगे।

أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ فَهُمْ
مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾
وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ
إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا
فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾
وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ
بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾
لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِ
يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَ
هُم مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾
وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَٰهٌ مِّن
دُونِهِ فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ كَذَٰلِكَ
ع
نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾
أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا
فَفَتَقْنَاهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ
شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

३१. और ज़मीन में हमने लंगर डाले उन्हें लेकर न कांपे और हमने उसमें कुशादा राहें रखीं कि कहीं वो राह पाएँ।

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ
تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا
سُبُلًا لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

३२. और हमने आसमान को छत बनाया निगाह रखी गई और वो उसकी निशानियों से रूगरदाँ हैं।

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا وَ
هُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾

३३. और वही है जिसने बनाए रात और दिन और सूरज और चाँद हर एक एक घेरे में पैर रहा है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ
وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ فِي فَلَكٍ
يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

३४. और हमने तुमसे पहले किसी आदमी के लिए दुनिया में हमेशगी न बनाई तो क्या अगर तुम इन्तिक़ाल फ़रमाओ तो ये हमेशा रहेंगे।

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ
أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾

३५. हर जान को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हारी आज़माइश करते हैं बुराई और भलाई से जांचने को और हमारी ही तरफ़ तुम्हें लौटकर आना है।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَنَبْلُوكُمْ
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً وَإِلَيْنَا
تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

३६. और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्ठा क्या ये है वो जो तुम्हारे खुदाओं को बुरा कहते हैं और वो रहमान ही की याद से मुनकिर हैं।

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ
يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي
يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ
هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٦﴾

३७. आदमी जल्दबाज़ बनाया गया अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊँगा तो जल्दी न करो।

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ سَأُورِيكُمْ
آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن
كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ
لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَ
لَا عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٣٩﴾

بَلْ تَأْتِيهِم بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ
فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ
يُنظَرُونَ ﴿٤٠﴾

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ
فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤١﴾ ع

قُلْ مَن يَكْلَؤُكُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
مِنَ الرَّحْمَٰنِ بَلْ هُمْ عَن ذِكْرِ
رَبِّهِم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾

أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُم مِّن دُونِنَا
لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنفُسِهِمْ
وَلَا هُم مِّنَّا يُصْحَبُونَ ﴿٤٣﴾

بَلْ مَتَّعْنَا هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ

३८. और कहते हैं कब होगा ये वअदा अगर तुम सच्चे हो।

३९. किसी तरह जानते काफ़िर उस वक़्त को जब न रोक सकेंगे अपने मुँहों से आग और न अपनी पीठों से और न उनकी मदद हो।

४०. बल्कि वो उनपर अचानक आ पड़ेगी तो उन्हें बे हवास कर देगी फिर न वो उसे फेर सकेंगे और न उन्हें मुहलत दी जाएगी।

४१. और बेशक तुमसे अगले रसूलों के साथ ठट्ठा किया गया तो मसख़रगी करने वालों का ठट्ठा उन्हीं को ले बैठा।

रुकूअ ४

४२. तुम फ़रमाओ शबाना रोज़ तुम्हारी कौन निगहबानी करता है रहमान से बल्कि वो अपने रब की याद से मुँह फेरे हैं।

४३. क्या उनके कुछ ख़ुदा है जो उनको हमसे बचाते हैं वो अपनी ही जानों को नहीं बचा सकते और न हमारी तरफ़ से उनकी यारी हो।

४४. बल्कि हमने उनको और ... को बरतावा दिया

यहाँ तक कि ज़िन्दगी उनपर दराज़
हुई तो क्या नहीं देखते के हम ज़मीन
को उसके किनारो से घटाते आ रहे हैं
तो क्या ये ग़ालिब होंगे।
४५. तुम फ़रमाओ कि मैं तुमको
सिर्फ़ 'वही' से डराता हूँ और बहरे
पुकारना नहीं सुनते जब डराए जाएँ।
४६. और अगर उन्हें तुम्हारे रब
के अ़ज़ाब की हवा छू जाए तो ज़रूर
कहेंगे हाय ख़राबी हमारी, बेशक हम
ज़ालिम थे।
४७. और हम अ़द्ल की तराजूएँ
रखेंगे क़यामत के दिन तो किसी जान
पर कुछ ज़ुल्म न होगा और अगर
कोई चीज़ राई के दाने के बराबर
होतो हम उसे ले आएँगे और हम
काफ़ी है हिसाब को ।
४८. और बेशक हमने मूसा और
हारून को फ़ैसला दिया और उजाला
और परहेज़गारो को नसीहत।
४९. वो जो बे देखे अपने रब
से डरते है और उन्हें क़यामत का
अन्देशा लगा हुआ है।
५०. और ये है बरकत वाला
ज़िक्र कि हमने उतारा तो क्या तुम
इसके मुनकिर हो।

रुकूअ ५

५१. और बेशक हमने इब्राहीम

طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ أَفَلَا يَرَوْنَ
أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ
أَطْرَافِهَا ۚ أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾
قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُم بِالْوَحْيِ ۚ وَلَا يَسْمَعُ
الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٤٥﴾
وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ
رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا
ظَالِمِينَ ﴿٤٦﴾
وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ
الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۖ وَإِن
كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا
بِهَا ۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَاسِبِينَ ﴿٤٧﴾
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾
الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَ
هُم مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾
وَهَٰذَا ذِكْرٌ مُّبَارَكٌ أَنزَلْنَاهُ ۚ أَفَأَنتُمْ
لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٥٠﴾ ع
وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن

को पहले ही से उसकी नेक राह अता कर दी और हम उससे ख़बरदार थे।	قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾
५२. जब उसने अपने बाप और क़ौम से कहा ये मूरतें क्या है जिनके आगे तुम आसन मारे (पूजा के लिए बैठे) हो।	إِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾
५३. बोले हमने अपने बाप दादा को इनकी पूजा करते पाया।	قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾
५४. कहा बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा सब खुली गुमराही में हो।	قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾
५५. बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो या यूँही खेलते हो।	قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾
५६. कहा बल्कि तुम्हारा रब वो है जो रब है आसमानों और ज़मीन का जिसने उन्हें पैदा किया और मैं उसपर गवाहों में से हूँ।	قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾
५७. और मुझे अल्लाह की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूँगा बाद इसके कि तुम फिर जाओ पीठ देकर।	وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾
५८. तो उन सब को चूरा कर दिया मगर एक को जो उन सबका बड़ा था कि शायद वो उससे कुछ पूछें।	فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾
५९. बोले किसने हमारे ख़ुदाओं के साथ ये काम किया बेशक वो ज़ालिम है।	قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾
६०. उनमें के कुछ बोले हमने एक जवान को उन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं।	قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾

६१. बोले तो उसे लोगों के सामने लाओ शायद वो गवाही दें।

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾

६२. बोले क्या तुमने हमारे खुदाओं के साथ यह काम किया ऐ इब्राहीम।

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾

६३. फ़रमाया बल्कि उनके उस बड़े ने किया होगा तो उनसे पूछो अगर बोलते हो।

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

६४. तो अपने जी की तरफ़ पलटे और बोले बेशक तुम ही सितमगार हो।

ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾

६५. फिर अपने सरों के बल औंधाएँ गए कि तुम्हें खूब मअ़लूम है ये बोलते नहीं।

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

६६. कहा तो क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़अ़ दे न नुक़्सान पहुँचाए।

اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

६७. तुफ़ है तुमपर और उन बुतों पर जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾

६८. बोले इनको जला दो और अपने खुदाओं की मदद करो अगर तुम्हें करना है।

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾

६९. हमने फ़रमाया ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर।

وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ

७०. और उन्होंने उसका बुरा चाहा तो हमने उन्हें सब से बढ़कर

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٧٠﴾

ज़िया कार कर दिया।

وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ
بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾

७१. और हम उसे और लूत को नजात बख़्शी उस ज़मीन की तरफ़ जिसमे हमने जहान वालो के लिए बरकत रखी।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ
وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾

७२. और हमने उसे इसहाक़ अता फ़रमाया और यअ़कूब पोता और हमने उन सब को अपने कुर्बे ख़ास का सज़ावार किया।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا
وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ
اِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا
لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

७३. और हमने उन्हें इमाम किया के हमारे हुक्म से बुलाते हैं और हमने उन्हें 'वही' भेजी अच्छे काम करने और नमाज़ बरपा रखने और ज़कात देने की और वो हमारी बन्दगी करते थे।

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّ
نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ
تَّعْمَلُ الْخَبٰۗىِٕثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ
سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾

७४. और लूत को हमने हुकूमत और इल्म दिया और उसे उस बस्ती से नजात बख़्शी जो गन्दे काम करती थी बेशक वो बुरे लोग बे हुक्म थे।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

७५. और हमने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वो हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में हैं।

रूकूअ ६

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ
مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

७६. और नूह को जब इससे पहले उसने हमें पुकारा तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे और उसके घरवालों को बड़ी सख़्ती से नजात दी।

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

७७. और हमने उन लोगों पर

उसको मदद दी जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाई बेशक वो बुरे लोग थे तो हमने उन सबको डुबो दिया।

७८. और दाऊद और सुलेमान को याद करो जब खेती का एक झगड़ा चुकाते थे जब रात को उसमें कुछ लोगों की बकरियाँ छुटीं और हम उनके हुक्म के वक़्त हाज़िर थे।

७९. हमने वो मुआमला सुलेमान को समझा दिया और दोनो को हुकूमत और इल्म अता किया और दाऊद के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिए कि तस्बीह करते और परिन्द और ये हमारे काम थे।

८०. और हमने उसे तुम्हारा एक पहनावा बनाना सिखाया कि तुम्हें तुम्हारी आँच से बचाए तो क्या तुम शुक्र करोगे।

८१. और सुलेमान के लिए तेज़ हवा मुसख़्ख़र कर दी कि उसके हुक्म से चलती उस ज़मीन की तरफ़ जिसमें हमने बरकत रखी और हमको हर चीज़ मअलूम है।

८२. और शैतानों में से वो जो उसके लिए ग़ोता लगाते और उसके सिवा और काम करते और हम उन्हे रोके हुए थे।

८३. और अय्यूब को (याद करो) जब उसने अपने रब को पुकारा कि

بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ
فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۷۷﴾
وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى
الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ
وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿۷۸﴾
فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا
حُكْمًا وَّعِلْمًا ؗ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ
الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا
فٰعِلِيْنَ ﴿۷۹﴾
وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ
لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ
شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾
وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ
بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا
فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿۸۱﴾
وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ
لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ
وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۲﴾
وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ مَسَّنِىَ

मुझे तकलीफ़ पहुंची और तू सब मेहर वालों से बढ़कर मेहरवाला है।	الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝٨٣
८४. तो हमने उसकी दुआ सुनली तो हमने दूर करदी जो तकलीफ़ उसे थी और हमने उसे उसके घरवाले और उनके साथ उतने ही और अता किए अपने पाससे रहमत फ़रमाकर और बन्दगी वालों के लिए नसीहत।	فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّ اٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ۝٨٤
८५. और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल को (याद करो) वो सब सब्र वाले थे।	وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِدْرِيْسَ وَ ذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝٨٥
८६. और उन्हें हमने अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वो हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावारो में है।	وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٨٦
८७. और ज़ुन्नून को (याद करो) जब चला गुस्से में भरा तो गुमान किया कि हम उसपर तंगी न करेंगे तो अन्धेरियों में पुकारा कोई मअबूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझको बेशक मुझसे बेजा हुआ।	وَ ذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٨٧
८८. तो हमने उसकी पुकार सुन ली और उसे ग़म से नजात बख़्शी और ऐसी ही नजात देंगे मुसलमानों को।	فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَ نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ وَ كَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨٨
८९. और ज़करीया को जब उसने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़ और तू सबसे बेहतर वारिस।	وَ زَكَرِيَّاۤ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝٨٩
९०. तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे यहया अता फ़रमाया और उसके लिए उसकी बीबी सवारी	فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَ وَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَ اَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ اِنَّهُمْ كَانُوْا

يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَ يَدْعُوْنَنَا
رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾
وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا
مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً
لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾
اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ڮ وَّاَنَا
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾
وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا
ع رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ
كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾
وَحَرٰمٌ عَلٰي قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ
اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾
حَتّٰٓي اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ
وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾
وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ
شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ
يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا

बेशक वो भले कामों मे जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते है।

९१. और उस औरत को जिसने अपनी पारसाई निगाह रखी तो हमने उसमें अपनी रूह फूंकी और उसे और उसके बेटे को सारे जहान के लिए निशानी बनाया।

९२. बेशक तुम्हारा ये दीन एक ही दीन है और मैं तुम्हारा रब हूँ तो मेरी इबादत करो।

९३. और औरों ने अपने काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिए सबको हमारी तरफ़ फिरना है।

रुकूअ ७

९४. तो जो कुछ भले काम करे और हो ईमानवाला तो उसकी कोशिश की बे क़दरी नहीं और हम उसे लिख रहे हैं।

९५. और हराम है उस बस्ती पर जिसे हमने हलाक कर दिया कि फिर लौट कर आएँ।

९६. यहाँ तक कि जब खोले जाएँगे याजूज व माजूज और वो हर बुलन्दी से ढुलकते होंगे।

९७. और क़रीब आया सच्चा वअदा तो जभी आँखें फटकर रह जाएँगी काफ़िरों की कि हाय हमारी ख़राबी [illegible]क हम इससे ग़फ़लत में थे। बल्कि

हम ज़ालिम थे।

९८. बेशक तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हो तुम्हें उसमें जाना।

९९. अगर ये खुदा होते जहन्नम में न जाते और उन सबको हमेशा उसमें रहना।

१००. वो उसमें रेंकेंगे और वो उसमें कुछ न सुनेंगे।

१०१. बेशक वो जिनके लिए हमारा वअदा भलाई का हो चुका वो जहन्नम से दूर रखे गए हैं।

१०२. वो उसकी भनक न सुनेंगे और वो अपनी मन मानती ख़्वाहिशों में हमेशा रहेंगे।

१०३. उन्हे ग़म में न डालेगी वो सबसे बड़ी घबराहट और फ़रिश्ते उनकी पेशवाई को आएँगे कि ये है तुम्हारा वो दिन जिसका तुमसे वअदा था।

१०४. जिस दिन हम आसमान को लपेटेंगे जैसे सिजिल फ़रिश्तह नामए-अअ़माल को लपेटता है जैसे पहले उसे बनाया था वैसे ही फिर कर देंगे ये वअदा है हमारे ज़िम्मे हम को इसका ज़रूर करना।

१०५. और बेशक हमने ज़बूर में नसीहत के बाद लिख दिया कि इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे

بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾
اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ اَنْتُمْ لَهَا
وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾
لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا
وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾
لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا
لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰىٓ
اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾
لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا وَهُمْ فِيْ مَا
اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾
لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ
تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾
يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ
لِلْكُتُبِ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ
وَعْدًا عَلَيْنَا اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾
وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْ بَعْدِ

होगे।

१०६. बेशक ये कुरआन काफ़ी है इबादत वालों को।

१०७. और हमने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिए।

१०८. तुम फ़रमाओ मुझे तो यही 'वही' होती है कि तुम्हारा ख़ुदा नहीं मगर एक अल्लाह तो क्या तुम मुसलमान होते हो।

१०९. फिर अगर वो मुँह फेरें तो फ़रमादो मैंने तुम्हें लड़ाई का एअलान कर दिया बराबरी पर और मैं क्या जानूँ कि पास है या दूर है वो जो तुम्हें वअदा दिया जाता है।

११०. बेशक अल्लाह जानता है आवाज़ की बात और जानता है जो तुम छुपाते हो।

१११. और मैं क्या जानूं शायद वो तुम्हारी जांच हो और एक वक़्त तक बरतवाना।

११२. नबी ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब हक़ फ़ैसला फ़रमा दे और हमारे रब रहमान ही की मदद दरकार है उन बातों पर जो तुम बताते हो।

सूरए हज्ज

मदनी है इसमें अठहत्तर आयात और दस रूकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

रूकूअ १

१. ऐ लोगों अपने रब से डरो बेशक क़यामत का ज़ल्ज़ला बड़ी सख़्त चीज़ है।

२. जिस दिन तुम उसे देखोगे

الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ
الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾
اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾
وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾
قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى
سَوَآءٍ ۭ وَاِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ
مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾
اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ
مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾
وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَ
مَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾
قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۭ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ
الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾

سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ
السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ
عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ
حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى
وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ
اللّٰهِ شَدِيْدٌ ②

हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते को भूल जाएगी और हर गाभनी अपना गाभ डाल देगी और तू लोगों को देखेगा जैसे नशा मे हैं और वो नशा में न होंगे मगर है ये कि अल्लाह की मार कड़ी है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي
اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ
شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ③

३. और कुछ लोग वो हैं कि अल्लाह के मुआमला में झगड़ते हैं बेजाने बूझे और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं।

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ
يُضِلُّهُ وَيَهْدِيْهِ إِلٰى عَذَابِ
السَّعِيْرِ ④

४. जिसपर लिख दिया गया है के जो इसकी दोस्ती करेगा तो ये ज़रूर उसे गुमराह कर देगा और उसे अज़ाबे दोज़ख की राह बताएगा।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ
الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ
مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ
لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا
نَشَآءُ إِلٰى أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ
طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا أَشُدَّكُمْ وَ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ

५. ऐ लोगों अगर तुम्हें क़यामत के दिन जीने में कुछ शक हो तो ये ग़ौर करो कि हमने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से फिर पानी की बून्द से फिर खून की फटक से फिर गोश्त की बोटी से नक़्शा बनी और बे बनी ताकि हम तुम्हारे लिए अपनी निशानियां ज़ाहिर फ़रमाएँ और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें एक मुक़र्रर मीआद तक फिर तुम्हें निकालते है बच्चा फिर इसलिए कि तुम अपनी जवानी को पहुँचो और तुममें कोई पहले ही मर जाता है और कोई सबमे

إِلَىٰٓ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنۢ
بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ وَتَرَى الْأَرْضَ
هَامِدَةً فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ
اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنۢبَتَتْ مِن كُلِّ
زَوْجٍۭ بَهِيجٍ ﴿٥﴾

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُۥ
يُحْىِ الْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيرٌ ﴿٦﴾

وَأَنَّ السَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا
وَأَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَن فِى الْقُبُورِ ﴿٧﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَٰدِلُ فِى اللَّهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَٰبٍ
مُّنِيرٍ ﴿٨﴾

ثَانِىَ عِطْفِهِۦ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ
اللَّهِ ۖ لَهُۥ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ ۖ وَنُذِيقُهُۥ
يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٩﴾

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدَاكَ وَأَنَّ اللَّهَ
لَيْسَ بِظَلَّٰمٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿١٠﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَعْبُدُ اللَّهَ

निकम्मी उम्र तक डाला जाता है कि जानने के बाद कुछ न जाने और तू जमीन को देखे मुरझाई हुई फिर जब हमने उसपर पानी उतारा तरो ताज़ा हुई और उभर आई और हर रौनक़ दार जोड़ा उगा लाई।

६. ये इसलिए है कि अल्लाह ही हक़ है और ये कि वो मुर्दे जिलाएगा और ये कि वो सब कुछ कर सकता है।

७. और इसलिए कि क़यामत आने वाली इसमे कुछ शक नहीं और ये कि अल्लाह उठाएगा उन्हें जो क़बरो में हैं।

८. और कोई आदमी वो है कि अल्लाह के बारे में यूं झगड़ता है कि न तो इल्म न कोई दलील और न कोई रौशन नविश्ता (तहरीर)।

९. हक़ से अपनी गरदन मोड़े हुए ताकि अल्लाह की राह से बहकादे उसके लिए दुनिया में रूसवाई है और क़यामत के दिन हम उसे आग का अज़ाब चखाएँगे।

१०. ये उसका बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा और अल्लाह बन्दो पर ज़ुल्म नहीं करता।

रुकूअ २

११. और कुछ आदमी अल्लाह की बन्दगी एक किनारे पर करते है

फिर अगर उन्हें कोई भलाई पहुँच गई जब तो चैन से है और जब कोई जांच आकर पड़ी मुँह के बल पलट गए दुनिया और आख़ेरत दोनों का घाटा यही है सरीह़ नुक़्सान।

१२. अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हैं जो उनका बुरा भला कुछ न करे यही है दूर की गुमराही।

१३. ऐसे को पूजते है जिसके नफ़अ से नुक़्सान की तवक़्क़ोअ ज़्यादा है बेशक क्या ही बुरा मौला और बेशक क्या ही बुरा रफ़ीक़।

१४. बेशक अल्लाह दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और भले काम किए बाग़ों में जिनके नीचे नहरें रवाँ बेशक अल्लाह करता है जो चाहे।

१५. जो ये ख़याल करता हो कि अल्लाह अपने नबी की मदद न फ़रमाएगा दुनिया और आख़ेरत में तो उसे चाहिए कि ऊपर को एक रस्सी ताने फिर अपने आप को फाँसी देले फिर देखे कि उसका ये दाओ कुछ ले गया उस बात को जिसकी उसे जलन है।

१६. और बात यही है कि हमने ये क़ुरआन उतारा रौशन आयतें और ये कि अल्लाह राह देता है जिसे चाहे।

عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ
اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ
انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ
الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾
يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ
وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ
الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾
يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۚ
لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾
اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا
يُرِيْدُ ﴿١٤﴾
مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ
فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ
اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ
يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ

اللَّهَ يَهْدِي مَن يُرِيدُ ﴿١٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا
وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ
وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾

१७. बेशक मुसलमान और यहूदी और सितारा परस्त और नसरानी और आतिश परस्त और मुशरिक बेशक अल्लाह इन सबमें क़यामत के दिन फ़ैसला कर देगा बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن
فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ
وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ
وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ
النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ
وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۚ
إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾

१८. क्या तुमने न देखा कि अल्लाह के लिए सज्दा करते हैं वो जो आसमानों और ज़मीन में है और सूरज और चाँद और तारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाए और बहुत आदमी और बहुत वो है जिनपर अज़ाब मुक़र्रर हो चुका और जिसे अल्लाह ज़लील करे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नही बेशक अल्लाह जो चाहे करे।

هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ
فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ
مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ
الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾

१९. ये दो फ़रीक़ है कि अपने रब में झगड़े तो जो काफ़िर हुए उनके लिए आग के कपड़े बियोंते (काते) गये है और उनके सरों पर खौलता पानी डाला जाएगा।

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ
وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾

२०. जिससे गल जाएगा जो कुछ उनके पेटों में है और उनकी खाले।

२१. और उनके लिए लोहे की गुर्ज़ है।

२२. जब घुटन के सबब उसमे

से निकलना चाहेंगे और फिर उसी में लौटा दिए जाएँगे और हुक्म होगा कि चखो आग का अज़ाब।

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾
كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ
غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَذُوْقُوْا عَذَابَ
الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾ ع

रुकूअ ३

२३. बेशक अल्लाह दाखिल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किए बहिश्तों में जिनके नीचे नहरें बहे उसमें पहनाए जाएँगे सोने के कंगन और मोती और वहाँ उनकी पोशाक रेशम है।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ
اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ
فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾

२४. और उन्हें पाकीज़ा बात की हिदायत की गई और सब ख़ूबियों सराहे की राह बताई गई।

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَ
هُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾

२५. बेशक वो जिन्होंने कुफ़्र किया और रोकते हैं अल्लाह की राह और उस अदब वाली मस्जिद से जिसे हम ने सब लोगों के लिए मुक़र्रर किया हमने सब लोगों के लिए मुक़र्रर किया के उसमें एक सा हक़ है वहां के रहने वाले और परदेसी का और जो उसमें किसी ज़्यादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अज़ाब चखाएँगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَاۗءَ ۨ
الْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ۭ وَمَنْ يُّرِدْ
فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ
عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ ع

रुकूअ ४

२६. और जबकि हमने इब्राहीम को उस घर का ठिकाना ठीक बता दिया और हुकम दिया कि मेरा कोई शरीक न कर और मेरा घर सुथरा रख तवाफ़ वालों और एअतकाफ़ वालों

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ
اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ

لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾

और रूकूअ सज्दे वालों के लिए।

وَاَذِّنْ فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾

२७. और लोगों में हज्ज की आम निदा कर दे वो तेरे पास हाज़िर होंगे पियादा और हर दुबली ऊँटनी पर कि हर दूर की राह से आती हैं।

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾

२८. ताकि वो अपना फ़ायदा पाएँ और अल्लाह का नाम लें जाने हुए दिनों में इसपर कि उन्हें रोज़ी दी बे जुबान चौपाए तो उनमें से खुद खाओ और मुसीबत ज़दा मोहताज को खिलाओ।

ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

२९. फिर अपना मैल कूचेल उतारें और अपनी मिन्नतें पूरी करें और उस आज़ाद घर का तवाफ़ करें।

ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾

३०. बात ये है और जो अल्लाह की हुरमतों की तअ़ज़ीम करे तो वो उसके लिए उसके रब के यहाँ भला है और तुम्हारे लिए हलाल किए गए बे ज़ुबान चौपाए सिवा उनके जिनकी मुमानअ़त तुमपर पढ़ी जाती है तो दूर हो बुतों की गंदगी से और बचो झूठी बात से।

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ وَ

३१. एक अल्लाह के होकर कि उसका साझी किसी को न करो और जो अल्लाह का शरीक करे वो गोया गिरा आसमान से कि परिंदे उसे उचक

ले जाते हैं या हवा उसे किसी दूर जगह फेंकती है।

३२. बात ये है और जो अल्लाह के निशानों की तअ़ज़ीम करे तो ये दिलों की परहेज़गारी से है।

३३. तुम्हारे लिए चौपायों में फ़ाएदे है एक मुक़र्ररह मीआ़द तक फिर उनका पहुँचना है उस आज़ाद घर तक।

रुकूअ़ ५

३४. और हर उम्मत के लिए हमने एक क़ुर्बानी मुक़र्रर फ़रमाइ कि अल्लाह का नाम ले उसके दिए हुए बे ज़ुबान चौपायों पर तो तुम्हारा मअ़बूद एक मअ़बूद है तो उसी के हुज़ूर गरदन रखो और ऐ मेह़बूब खुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को।

३५. कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है उनके दिल डरने लगते हैं और जो उफ़्ताद पड़े उसके सहने वाले और नमाज़ बरपा रखने वाले और हमारे दिए से ख़र्च करते हैं।

३६. और क़ुर्बानी के डीलदार जानवर ऊँट और गाय हमने तुम्हारे लिए अल्लाह के निशानियों से किए तुम्हारे लिए उनमें भलाई है तो उनपर अल्लाह का नाम लो एक पाँव बांधे तीन पाँवों से खड़े फिर जब उनकी करवटें गिर जाएँ तो उनमें से खुद खाओ और सब्र से बैठने वाले और भीख माँगने वालों को खिलाओ हमने यूँही उनको तुम्हारे बस में दे दिया कि

مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ
السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ
بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿۳۱﴾
ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا
مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿۳۲﴾
لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ مَحِلُّهَاۤ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿۳۳﴾ ع
وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا
اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ
الْاَنْعَامِ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ
اَسْلِمُوْا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿۳۴﴾
الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ
وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ
وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾
وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ
اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ فَاذْكُرُوا اسْمَ
اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ فَاِذَا وَجَبَتْ
جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا

तुम एहसान मानो।

३७. अल्लाह को हरगिज़ न उनके गोश्त पहुँचते है न उनके खून हां तुम्हारी परहेज़गारी उस तक बारयाब होती है यूँ ही उनको तुम्हारे बसमें कर दिया कि तुम अल्लाह की बड़ाई बोलो उसपर कि तुमको हिदायत फ़रमाई और ऐ मेहबूब खुशख़बरी सुनाओ नेकी वालों को।

३८. बेशक अल्लाह बलाएँ टालता है मुसलमानों की बेशक अल्लाह दोस्त नही रखता हर बड़े दग़ाबाज़ ना शुकरे को।

रुकूअ ६

३९. परवानगी (इजाज़त) अ़ता हुई उन्हें जिनसे काफ़िर लड़ते हैं इस बिना पर कि उनपर ज़ुल्म हुआ और बेशक अल्लाह उनकी मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है।

४०. वो जो अपने घरों से नाहक निकाले गए सिर्फ़ इतनी बात पर कि उन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है और अल्लाह अगर आदमियों में एक को दुसरे से दफ़्अ़ न फ़रमाता तो ज़रूर ढ़ह दी जाती ख़ानक़ाहें और गिरजा और कलीसे और मस्जिदे जिन में अल्लाह का बकसरत नाम लिया जाता है और बेशक अल्लाह ज़रूर मदद फ़रमायेगा उसकी जो उसके दीन की मदद करेगा बेशक ज़रूर अल्लाह क़ूव्वत वाला ग़ालिब है।

४१. वो लोग कि अगर हम उन्हें

الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرْنَٰهَا
لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٦﴾

لَن يَنَالَ اللَّهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا
وَلَٰكِن يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ
سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا
هَدَىٰكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٧﴾

إِنَّ اللَّهَ يُدَٰفِعُ عَنِ الَّذِينَ
ءَامَنُوٓا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ
خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾ ع

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَٰتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ
وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَٰرِهِم بِغَيْرِ
حَقٍّ إِلَّآ أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَ
لَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم
بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَٰمِعُ وَبِيَعٌ
وَصَلَوَٰتٌ وَمَسَٰجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا
اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنصُرَنَّ اللَّهُ
مَن يَنصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ
عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾

ٱلَّذِينَ إِن مَّكَّنَّٰهُمْ فِى ٱلْأَرْضِ
أَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَمَرُوا۟
بِٱلْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا۟ عَنِ ٱلْمُنكَرِ ۗ وَلِلَّهِ
عَٰقِبَةُ ٱلْأُمُورِ ﴿٤١﴾

ज़मीन मे क़ाबू दें तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें और अल्लाह ही के लिए सब कामों का अंजाम।

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ
قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودُ ﴿٤٢﴾

४२. और अगर ये तुम्हारी तकज़ीब करते है तो बेशक उनसे पहले झुठला चुकी है नूह की क़ौम और आद और समूद।

وَقَوْمُ إِبْرَٰهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿٤٣﴾

४३. और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम।

وَأَصْحَٰبُ مَدْيَنَ ۖ وَكُذِّبَ مُوسَىٰ
فَأَمْلَيْتُ لِلْكَٰفِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٤﴾

४४. और मदयन वाले और मूसा की तकज़ीब हुई तो मैं ने काफ़िरों को ढ़ील दी फिर उन्हें पकड़ा तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब।

فَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَٰهَا وَهِىَ
ظَالِمَةٌ فَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا
وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَقَصْرٍ مَّشِيدٍ ﴿٤٥﴾

४५. और कितनी ही बस्तियाँ हमने खपा दीं (हलाक करदीं) कि वो सितमगार थीं तो अब वो अपनी छतों पर ढ़ी (गिरी) पड़ी हैं और कितने कुएं बेकार पड़े और कितने महल गच किए हुए।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَتَكُونَ
لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَآ أَوْ ءَاذَانٌ
يَسْمَعُونَ بِهَا ۖ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى
ٱلْأَبْصَٰرُ وَلَٰكِن تَعْمَى ٱلْقُلُوبُ
ٱلَّتِى فِى ٱلصُّدُورِ ﴿٤٦﴾

४६. तो क्या ज़मीन मे न चले कि उनके दिल हों जिनसे समझें या कान होंजिनसे सुनें तो ये कि आँखें अन्धी नहीं होती बल्कि वो दिल अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِٱلْعَذَابِ وَلَن

४७. और ये तुमसे अज़ाब मांगने में जल्दी करते हैं और अल्लाह हरगिज़

अपना वअ़दा झूठा न करेगा और बेशक तुम्हारे रब के यहाँ एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की गिन्ती में हज़ार बरस।

४८. और कितनी बस्तियाँ कि हमने उनको ढील दी उस हाल पर कि वो सितमगार थीं फिर मैं ने उन्हें पकड़ा और मेरी ही तरफ़ पलटकर आना है।

रुकूअ ७

४९. तुम फ़रमादो कि ऐ लोगों मैं तो यही तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूँ।

५०. तो जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी।

५१. और वो जो कोशिश करते हैं हमारी आयतों में हार जीत के इरादे से वो जहन्नमी हैं।

५२. और हमने तुमसे पहले जितने रसूल या नबी भेजे सब पर कभी ये वाक़िआ गुजरा है किजब उन्होंने पढ़ा तो शैतान ने उनके पढ़ने में लोगों पर कुछ अपनी तरफ़ से मिला दिया तो मिटा देता है अल्लाह उस शैतान के डाले हुए को फिर अल्लाह अपनी आयतें पक्की कर देता है और अल्लाह इ़ल्म-ो ह़िकमत वाला है।

५३. ताकि शैतान के डाले हुए

يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَ اِنَّ يَوْمًا
عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا
تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾
وَ كَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا
وَ هِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَ
اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ ع
قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ
نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ ج
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾
وَ الَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾
وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ
رَّسُوْلٍ وَّ لَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى
اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ
فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ
ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾ ۙ
لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً

को फ़ितना कर दे उनके लिए जिनके दिलों में बीमारी है और जिनके दिल सख़्त हैं और बेशक सितमगार धुरके झगड़ालू हैं।

५४. और इसलिए कि जान ले वो जिनको इल्म मिला है कि वो तुम्हारे रब के पाससे हक़ है तो उसपर ईमान लाएँ तो झुक जाएँ उसके लिए उनके दिल और बेशक अल्लाह ईमानवालों को सीधी राह चलाने वाला है।

५५. और काफ़िर उससे हमेशा शक में रहेंगे यहाँ तक कि उनपर क़यामत आ जाए अचानक या उनपर ऐसे दिन का अज़ाब आए जिसका फल उनके लिए कुछ अच्छा न हो।

५६. बादशाही उस दिन अल्लाह ही की है वो उनमें फ़ैसला कर देगा तो जो ईमान लाए और अच्छे काम किए वो चैन के बाग़ों में हैं।

५७. और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुठलाई उनके लिऐ ज़िल्लत का अज़ाब है।

रुकूअ ८

५८. और वो जिन्होंने अल्लाह की राह में अपने घर बार छोड़े फिर मारे गए या मर गए तो अल्लाह ज़रूर

لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ
قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ
بَعِيْدٍ ۙ ﴿۵۳﴾
وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ
فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ
لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۴﴾
وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ
مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ
بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ
عَقِيْمٍ ﴿۵۵﴾
اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۵۶﴾
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
ع فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۵۷﴾
وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
ثُمَّ قُتِلُوْۤا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ

رِزْقًا حَسَنًا ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ
الرَّازِقِينَ ﴿٥٨﴾
لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَ
إِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾
ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ
بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي
النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ
وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ
مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ
وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٦٣﴾
لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَ
إِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦٤﴾

उन्हें अच्छी रोज़ी देगा और बेशक अल्लाह की रोज़ी सबसे बेहतर है।

५९. ज़रूर उन्हें ऐसी जगह ले जाएगा जिसे वो पसंद करेंगे और बेशक अल्लाह इल्म-ो हिल्म वाला है।

६०. बात ये है और जो बदला ले जैसी तकलीफ़ पहुंचाई गई थी फिर उसपर ज़्यादती की जाए तो बेशक अल्लाह उसकी मदद फ़रमाएगा बेशक अल्लाह मुआफ़ करने वाला बख़्शने वाला है।

६१. ये इसलिए कि अल्लाह तआला रात को डालता है दिन के हिस्से में और दिन को लाता है रात के हिस्से में और इसलिए कि अल्लाह सुनता देखता है।

६२. ये इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और उसके सिवा जिसे पूजते हैं वही बातिल है और इसलिए कि अल्लाह ही बुलंदी बड़ाई वाला है।

६३. क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो सुबह को ज़मीन हरियाली हो गई बेशक अल्लाह पाक ख़बरदार है।

६४. उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ सब ख़ूबियों सराहा है।

रुकूअ ९

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي
الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ
بِأَمْرِهِ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَن تَقَعَ
عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ إِنَّ اللَّهَ
بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٥﴾

६५. क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया जो कुछ ज़मीन में है और कश्ती कि दरिया में उसके हुक्म से चलती है और वो रोके हुए हैं आसमान को कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उसके हुक्म से बेशक अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेह्र वाला मेहरबान है।

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ
ثُمَّ يُحْيِيكُمْ إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ ﴿٦٦﴾

६६. और वही है जिसने तुम्हें ज़िन्दा किया फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा बेशक आदमी बड़ा ना शुकरा है।

لِّكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ
فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ
إِلَىٰ رَبِّكَ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى
مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾

६७. हर उम्मत के लिए हमने इबादत के क़ायदे बना दिए कि वो उन पर चले तो हरगिज़ वो तुमसे इस मुआमले में झगड़ा न करें और अपने रब की तरफ़ बुलाओ बेशक तुम सीधी राह पर हो।

وَإِن جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

६८. और अगर वो तुमसे झगड़ें तो फ़रमादो कि अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे कोतक।

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

६९. अल्लाह तुमपर फ़ैसला कर देगा क़यामत के दिन जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हो।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي
كِتَابٍ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

७०. क्या तूने न जाना कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है बेशक ये सब एक किताब में है बेशक ये अल्लाह पर आसान है।

७१. और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते है जिनकी कोई सनद उसने न उतारी और ऐसों को जिनका खुद उन्हें कुछ इल्म नही और सितमगारों का कोई मददगार नहीं।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾

७२. और जब उनपर हमारी रौशन आयते पढ़ी जाएं तो तुम उनके चेहरों पर बिगड़ने के आसार देखोगे जिन्होंने कुफ़्र किया क़रीब है कि लिपट पड़ें उनको जो हमारी आयतें उनपर पढ़ते हैं तुम फ़रमादो क्या मैं तुम्हें बता दूं जो तुम्हारे उस हाल से भी बदतर है वो आग है अल्लाह ने उसका वअदा दिया है काफ़िरों को और क्या ही बुरी पलटने की जगह।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾

रुकूअ १०

७३. ऐ लोगो एक कहावत फ़रमाई जाती है उसे कान लगाकर सुनो वो जिन्हें अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो एक मक्खी न बना सकेंगे अगरचे सब उस पर इकट्ठे हो जाएँ और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन कर ले जाए तो उससे छुड़ा न सकें कितना कमज़ोर चाहने वाला और वो जिसको चाहा।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾

७४. अल्लाह की क़द्र न जानी जैसी चाहिए थी बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला ग़ालिब है।

مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٧٤﴾

७५. अल्लाह चुन लेता है फ़रिश्तों में से रसूल और आदमियों में से बेशक अल्लाह सुनता देखता है।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝٧٥

७६. जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है और सब कामों की रूजूअ अल्लाह की तरफ़ है।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٧٦

७७. ऐ ईमानवालो रूकूअ और सज्दा करो और अपने रब की बन्दगी करो और भले काम करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٧٧

७८. और अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा हक़ है जिहाद करने का उसने तुम्हे पसंद किया और तुमपर दीन में कुछ तंगी न रखी तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है अगली किताबों में और इस कुरआन में ताकि रसूल तुम्हारा निगेहबान व गवाह हो और तुम और लोगों पर गवाही दो तो नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो वो तुम्हारा मौला है तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार।

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ۭ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ۭ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ۭ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ڏ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَاۗءَ عَلَي النَّاسِ ښ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ۭ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝٧٨

सूरए मोअमिनून

मक्की है इसमें एक सौ अठारह आयातें और छः रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहमतवाला।

रूकूअ १

१. बेशक मुराद को पहुँचे ईमान वाले।

२. जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं।

३. और वो जो किसी बेहूदा बात की तरफ़ इलतिफ़ात नहीं करते।

४. और वो किज़कात देने का काम करते हैं।

५. और वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।

६. मगर अपनी बीबियों या शरई बान्दियों पर जो उनके हाथ की मिल्क हैं कि उनपर कोई मलामत नहीं।

७. तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वही हद से बढ़ने वाले हैं।

८. और वो जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की रिआ़यत करते हैं।

९. और वो जो अपनी नमाज़ों की निगहेबानी करते हैं।

१०. यही लोग वारिस हैं।

११. कि फ़िरदौस की मीरास पाएंगे वो उसमें हमेशा रहेंगे।

१२. और बेशक हमने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया।

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَثَمَانَ عَشْرَةَ آيَةً وَسِتَّةُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١﴾

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ﴿٢﴾

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ﴿٤﴾

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿٥﴾

اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ

اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿٦﴾

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

الْعٰدُوْنَ ﴿٧﴾

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ

رٰعُوْنَ ﴿٨﴾

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ

يُحَافِظُوْنَ ﴿٩﴾

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿١٠﴾

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا

خٰلِدُوْنَ ﴿١١﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ

مِّنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾

१३. फिर उसे पानी की बून्द किया एक मज़बूत ठहराओ में।

१४. फिर हमने उस पानी की बून्द को खून की फटक किया फिर खून की फटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियाँ फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सूरत मे उठान दी तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सबसे बेहतर बनाने वाला।

१५. फिर उसके बाद तुम ज़रूर मरने वाले हो।

१६. फिर तुम सब क़यामत के दिन उठाए जाओगे।

१७. और बेशक हमने तुम्हारे ऊपर सात राहें बनाईं और हम ख़ल्क़ से बेख़बर नहीं।

१८. और हमने आसमान से पानी उतारा एक अन्दाज़े पर फिर उसे ज़मीन में ठहराया और बेशक हम उसके ले जाने पर क़ादिर हैं।

१९. तो उससे हमने तुम्हारे बाग़ पैदा किए खजूरों और अंगूरों के तुम्हारे लिए उनमें बहुत से मेवे हैं और उनमें से खाते हो।

२०. और वो पेड़ पैदा किया कि तूरे सैना से निकलता है लेकर उगता है तेल और खाने वालों के लिए सालन।

२१. और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में समझने का मक़ाम है हम तुम्हें पिलाते है उसमें से जो उनके पेट

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿۱۳﴾
ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا
الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ
عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ
اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ
اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿۱۴﴾
ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿۱۵﴾
ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿۱۶﴾
وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ
وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿۱۷﴾
وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ
فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ وَاِنَّا عَلٰى
ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿۱۸﴾
فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ
وَّاَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ
وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۱۹﴾
وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ
تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ
لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿۲۰﴾
وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً

نُسْقِيكُمْ مِّمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ
فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا
تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾
ع وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ
فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم
مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾
فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ
مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ
أَن يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً مَّا سَمِعْنَا بِهَٰذَا
فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾
إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا
بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾
قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾
فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ
بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا
وَفَارَ التَّنُّورُ ۙ فَاسْلُكْ فِيهَا مِن
كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا
مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ

में है और तुम्हारे लिए उनमे बहुत फ़ायदे है और उनसे तुम्हारी ख़ूराक है।

२२. और उनपर और कश्ती पर सवार किए जाते हो।

रुकूअ २

२३. और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हे डर नही।

२४. तो उसकी क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ्र किया बोले ये तो नही मगर तुम जैसा आदमी चाहता है कि तुम्हारा बड़ा बने और अल्लाह चाहता तो फ़रिश्ते उतारता हमने तो ये अपने अगले बाप दादाओं में न सुना।

२५. वो तो नही मगर एक दीवाना मर्द तो कुछ ज़माने-तक उसका इन्तेज़ार किए रहो।

२६. नूह ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा उस पर कि उन्होंने मुझे झुठलाया।

२७. तो हमने उसे 'वही' भेजी कि हमारी निगाह के सामने और हमारे हुक्म से कश्ती बना फिर जब हमारा हुक्म आए और तनूर उबले तो उसमें बिठाले हर जोड़े में से दो और अपने घरवाले मगर उनमें से वो जिन पर बात पहले पड़ चुकी और उन ज़ालिमों के मुआमला में मुझसे बात न करना

وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾
فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى
الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ نَجّٰنَا
مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾
وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِىْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ
اَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا
لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾
ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا
اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾
فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ
ع اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾
وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَاۤءِ الْاٰخِرَةِ وَ
اَتْرَفْنٰهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا
هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ
مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا
تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾

ये ज़रूर डुबोए जाएँगे।

२८. फिर जब ठीक बैठ ले कश्ती पर तू और तेरे साथ वाले तो कह सब खुबियाँ अल्लाह को जिसने हमें इन ज़ालिमों से नजात दी।

२९. और अर्ज़ कर कि ऐ मेरे रब मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू सबसे बेहतर उतारने वाला है।

३०. बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ है और बेशक ज़रूर हम जाँचने वाले थे।

३१. फिर उनके बाद हमने और सँगत (क़ौम) पैदा की।

३२. तो उनमें एक रसूल उन्हीं मे से भेजा कि अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई खुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं।

रुकूअ ३

३३. और बोले उस क़ौम के सरदार जिन्होंने कुफ्र किया और आख़ेरत की हाज़री को झुठलाया और हमने उन्हें दुनिया की जिन्दगी में चैन दिया कि ये तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी जो तुम खाते हो उसी में से खाता है और जो तुम पीते हो उसी मे से पीता है।

३४. और अगर तुम किसी अपने

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ
اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾
اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ
تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾
هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾
اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَ
نَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾
اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾
قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾
قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ
نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾
فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ
غُثَآءً فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾
ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا
اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾
مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا
يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾
ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا كُلَّمَا جَآءَ
اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا

जैसे आदमी की इताअत करो जब तो तुम ज़रूर घाटे मे हो।

३५. क्या तुम्हें ये वअदा देता है कि तुम जब मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे उसके बाद फिर निकाले जाओगे।

३६. कितनी दूर है कितनी दूर है जो तुम्हें वअदा दिया जाता है।

३७. वो तो नहीं मगर हमारी दुनिया की ज़िन्दगी की हम मरते जीते है और हमें उठना नहीं।

३८. वो तो नहीं मगर एक मर्द जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा और हम उसे मानने के नहीं।

३९. अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा उसपर कि उन्होंने मुझे झुठलाया।

४०. अल्लाह ने फ़रमाया कि कुछ देर जाती है कि ये सुबह करेंगे पछताते हुए।

४१. तो उन्हे आ लिया सच्ची चिंघाड़ ने तो हमने उन्हें घास कूड़ा कर दिया तो दूर हो ज़ालिम लोग।

४२. फिर उनके बाद हमने और संगतें (कौमें) पैदा कीं।

४३. कोई उम्मत अपनी मिआद से न पहले जाए ना पीछे रहे।

४४. फिर हमने अपने रसूल भेजे एक पीछे दूसरा जब किसी उम्मत के पास उसका रसूल आया उन्होंने उसे झुटलाया तो हमने अगलों से पिछले मिला दिए और उन्हे कहानियाँ कर

डाला तो दूर हों वो लोग कि ईमान नही लाते।

४५. फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी आयतों और रौशन सनद के साथ भेजा।

४६. फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ तो उन्हों ने गुरूर किया और वो लोग ग़लबा पाए हुए थे।

४७. तो बोले क्या हम ईमान ले आएँ अपने जैसे दो आदमियों पर और उनकी क़ौम हमारी बन्दगी कर रही है।

४८. तो उन्होंने उन दोनों को झुठलाया तो हलाक किए हुओं में हो गए।

४९. और बेशक हमने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई कि उनको हिदायत हो।

५०. और हमने मरियम और उसके बेटे को निशानी किया और उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द ज़मीन जहाँ बसने का मक़ाम और निगाह के सामने बहता पानी।

रूकूअ ४

५१. ऐ पैगम्बरो, पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छा काम करो मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ।

५२. और बेशक ये तुम्हारा दीन एक ही दीन है और मैं तुम्हारा रब हूँ तो मुझसे डरो।

५३. तो उनकी उम्मतों ने अपना काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया

بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ
فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾
ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ
بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَ
كَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾
فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَ
قَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾
فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾
وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً
وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ
مَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾
يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ
وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾
وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾
فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۭ

हर गिरोह जो उसके पास है उसपर खुश है।

५४. तो तुम उनको छोड़ दो उनके नशे मे एक वक़्त तक।

५५. क्या ये ख़याल कर रहे है कि वो जो हम उनकी मदद कर रहे हैं माल और बेटों से।

५६. ये जल्द जल्द उनको भलाइयाँ देते हैं बल्कि उन्हे ख़बर नहीं।

५७. बेशक वो जो अपने रब के डर से सहमे हुए हैं।

५८. और वो जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं।

५९. और वो जो अपने रब का कोई शरीक नहीं करते।

६०. और वो जो देते हैं जो कुछ दें और उनके दिल डर रहे हैं यूँ कि उनको अपने रब की तरफ़ फिरना है।

६१. ये लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही सबसे पहले उन्हें पहुँचे।

६२. और हम किसी जान पर बोझ नहीं रखते मगर उसकी ताक़त भर और हमारे पास एक किताब है कि हक़ बोलती है और उनपर ज़ुल्म न होगा।

६३. बल्कि उनके दिल उससे ग़फ़लत में हैं और उनके काम उन कामों से जुदा हैं जिन्हें वो कर रहे है।

كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾
فَذَرْهُمْ فِیْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰی حِیْنٍ ﴿٥٤﴾
اَیَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ
مَّالٍ وَّبَنِیْنَ ﴿٥٥﴾
نُسَارِعُ لَهُمْ فِی الْخَیْرٰتِ ؕ بَلْ
لَّا یَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾
اِنَّ الَّذِیْنَ هُمْ مِّنْ خَشْیَةِ رَبِّهِمْ
مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾
وَالَّذِیْنَ هُمْ بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ یُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾
وَالَّذِیْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا یُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾
وَالَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ
وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰی رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾
اُولٰٓئِكَ یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَهُمْ
لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾
وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَ
لَدَیْنَا كِتٰبٌ یَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ
لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾
بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِیْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَ
لَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ
لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

६४. यहां तक कि जब हमने उनके अमीरों को अज़ाब में पकड़ा तो अभी वो फ़रियाद करने लगे।

६५. आज फ़रियाद न करो हमारी तरफ़ से तुम्हारी मदद न होगी।

६६. बेशक मेरी आयतें तुम पर पढ़ी जाती थी तो तुम अपनी एड़ियो के बल उल्टे पलटते थे।

६७. ख़िदमते हरम पर बड़ाई मारते हो रात को वहां बेहूदा कहानियाँ बकते हक़ को छोड़े हुए।

६८. क्या उन्होंने बात को सोचा नही या उनके पास वो आया जो उनके बाप दादा के पास न आया था।

६९. या उन्होंने अपने रसूल को न पहचाना तो वो उसे बेगाना समझ रहे है।

७०. या कहते हैं उसे सौदा है बल्कि वो तो उनके पास हक़ लाए और उनमें अक्सर को हक़ बुरा लगता है।

७१. और अगर हक़ उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करता तो ज़रूर आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें है सब तबाह हो जाते बल्कि हम तो उनके पास वो चीज़ लाए जिसमें उनकी नामवरी थी तो वो अपनी इज़्ज़त से ही मुँह फेरे हुए हैं।

७२. क्या तुम उनसे कुछ उजरत मांगते हो तो तुम्हारे रब का अज्र सबसे भला और वो सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला।

७३. और बेशक तुम उन्हें सीधी राह की तरफ़ बुलाते हो।

حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ
اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾
لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا
لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾
قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ
عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾
مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾
اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا
لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾
اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ
مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾
اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ
بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾
وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ
بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ
ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾
اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ
خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾
وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ

७४. और बेशक जो आख़ेरत पर ईमान नहीं लाते ज़रूर सीधी राह से कतराए हुए है।

७५. और अगर हम उनपर रहम करें और जो मुसीबत उनपर पड़ी है टाल दें तो ज़रूर भट पना (एहसान फ़रामोशी) करेंगे अपनी सरकशी में बहकते हुए।

७६. और बेशक हमने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा तो न वो अपने रब के हुज़ूर में झुके और न गिड़गिड़ाते हैं।

७७. यहाँ तक कि जब हमने उनपर खोला किसी सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा तो वो अब उसमें ना उम्मीद पड़े हैं।

रुकूअ ५

७८. और वही है जिसने बनाए तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल तुम बहुत ही कम हक़ मानते हो।

७९. और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन मे फैलाया और उसी की तरफ़ उठना है।

८०. और वही जिलाए और मारे और उसी के लिए हैं रात और दिन की तबदीलें तो क्या तुम्हें समझ नहीं।

८१. बल्कि उन्होंने वही कही जो अगले कहते थे ।

८२. बोले क्या जब हम मर जाएँ

مُسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾
وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾
وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ
مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾
وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ
فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا
يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾
حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا
عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ
ع مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾
وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا
تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾
وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾
وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾
بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾

और मिट्टी और हड्डियाँ होजाएँ क्या फिर निकाले जाएँगे।

८३. बेशक ये वअदा हमको और हमसे पहले हमारे बाप दादा को दिया गया ये तो नहीं मगर वही अगली दास्तानें।

८४. तुम फ़रमाओ किसका माल है ज़मीन और जो कुछ उसमें है अगर तुम जानते हो।

८५. अब कहेंगे कि अल्लाह का तुम फ़रमाओ फिर क्यों नहीं सोचते।

८६. तुम फ़रमाओ कौन है मालिक सातों आसमानों का और मालिक बड़े अर्श का।

८७. अब कहेंगे ये अल्लाह ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर क्यों नहीं डरते?

८८. तुम फ़रमाओ किसके हाथ हैं हर चीज़ का क़ाबू और वो पनाह देता है और उसके ख़िलाफ़ कोई पनाह नहीं दे सकता अगर तुम्हे इल्म हो।

८९. अब कहेंगे यह अल्लाह ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर किस जादू के फ़रेब मे पड़े हो।

९०. बल्कि हम उनके पास हक़ लाए और वो बेशक झूठे हैं।

९१. अल्लाह ने कोई बच्चा इख़्तियार न किया और न उसके साथ कोई दूसरा ख़ुदा यूँ होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़लूक़ ले जाता और ज़रूर एक दूसरे पर अपनी तअल्ली चाहता पाकी है अल्लाह को उन बातों से जो

قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا
ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾
لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا
مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾
قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾
سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾
قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾
سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾
قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ
وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾
سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾
بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾
مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا
كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ
كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

ये बनाते हैं।

९२. जानने वाला हर निहाँ व अयाँ का तो उसे बुलन्दी है उन के शिर्क से।

रूकूअ ६

९३. तुम अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब अगर तू मुझे दिखाए जो उन्हें वअदा दिया जाता है।

९४. तो ऐ मेरे रब मुझे उन ज़ालिमों के साथ न करना।

९५. और बेशक हम क़ादिर हैं कि तुम्हें दिखा दें जो उन्हें वअदा दे रहे हैं।

९६. सबसे अच्छी भलाई से बुराई को दफ़अ करो हम खूब जानते हैं जो बातें ये बनाते हैं।

९७. और तुम अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह श्यातीन के वसवसों से।

९८. और ऐ रब तेरी पनाह कि वो मेरे पास आएँ।

९९. यहाँ तक कि जब उनमें किसी को मौत आए तो कहता है कि ऐ मेरे रब मुझे वापस फेर दीजिए।

१००. शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊँ उसमें जो छोड़ आया हूँ हिश्त ये तो एक बात है जो वो अपने मुँह से कहता है और उनके आगे एक आड़ है उस दिन तक जिसमें उठाए जाएँगे।

१०१. तो जब सूर फूँका जाएगा तो न उनमें रिश्ते रहेंगे और ना एक दूसरे की बात पूछें।

१०२. तो जिन की तौलें भारी

عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾
عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾
قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾
رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾
وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ
لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾
اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ
نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾
وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ
الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾
وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾
حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ
رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾
لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ
كَلَّا ۭ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَاۗىِٕلُهَا ۭ
وَمِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ
يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾
فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ
بَيْنَهُمْ يَوْمَىِٕذٍ وَّلَا يَتَسَاۗءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾

होली वही मुराद को पहुँचे।
१०३. और जिन की तौले हलकी पड़ी वही है जिन्होने अपनी जाने घाटे में डाली हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे।
१०४. उनके मुँह पर आग लपट मारेगी और वो उसमें मुँह चिड़ाए होंगे।
१०५. क्या तुम पर मेरी आयतें न पढ़ी जाती थीं तो तुम उन्हें झुठलाते थे।
१०६. कहेंगे ऐ हमारे रब हमपर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे।
१०७. ऐ रब हमारे हमको दोज़ख से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं।
१०८. रब फ़रमाएगा दुतकारे (ख़ायब व ख़ासिर) पड़े रहो उसमें और मुझ से बात न करो।
१०९. बेशक मेरे बन्दों का एक गिरोह कहता था ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तू हमें बख़्श दे और हमपर रहम कर और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है।
११०. तो तुमने उन्हें ठट्ठा बना लिया यहाँ तक कि उन्हें बनाने के शुग़्ल में मेरी याद भूल गए और तुम उनसे हँसा करते।
१११. बेशक आज मै ने उनके सब्र का उन्हे ये बदला दिया कि वही कामयाब हैं।

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾
وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ
خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾
تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا
كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾
اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ
بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾
قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَ
كُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾
رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا
ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾
قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾
اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ
خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾
فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ
ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾
اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ

११२. फ़रमाया तुम ज़मीन में कितना ठहरे बरसों की गिन्ती से।

११३. बोले हम एक दिन रहे या दिन का हिस्सा तू गिनने वालों से दरयाफ़्त फ़रमा।

११४. फ़रमाया तुम न ठहरे मगर थोड़ा अगर तुम्हें इल्म होता।

११५. तो क्या ये समझते हो कि हमने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं।

११६. तो बहुत बुलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा बादशाह कोई मअबूद नहीं सिवा उसके इज़्ज़त वाले अर्श का मालिक।

११७. और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को पूजे जिसकी उसके पास कोई सनद नहीं तो उसका हिसाब उसके रब के यहाँ है बेशक काफ़िरों का छुटकारा नहीं।

११८. और तुम अर्ज़ करो ऐ मेरे रब बख़्श दे और रहम फ़रमा और तू सबसे बरतर रहम करने वाला।

सूरए नूर

मदनी है इसमें चौसठ आयात और नौ रूकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहमतवाला

रूकूअ १

१. ये एक सूरत है कि हमने उतारी और हमने उसके एहकाम फ़र्ज़ किए और हमने उसमें रौशन आयतें नाज़िल फ़रमाईं कि तुम ध्यान करो।

२. जो औरत बदकार हो और

هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾
قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ
سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾
قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ
فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾
قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾
اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ
اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾
فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾
وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ
لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ
رَبِّهٖ ۗ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾
وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ
خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ
اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١﴾

الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُم
بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِن
كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ
وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ
الْمُؤْمِنِينَ ②

जो मर्द तो उनमें हर एक को सौ कोड़े लगाओ और तुम्हें उनपर तरस न आए अल्लाह के दीन में अगर तुम ईमान लाते हो अल्लाह और पिछले दिन पर और चाहिए कि उनकी सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गिरोह हाज़िर हो।

الزَّانِي لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً
وَالزَّانِيَةُ لَا يَنكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ
وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ③

३. बदकार मर्द निकाह न करे मगर बदकार औरत या शिर्क वाली से और बदकार औरत से निकाह न करे मगर बदकार मर्द या मुशरिक और ये काम ईमानवालों पर हराम है।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ
يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ
ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً
أَبَدًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ④

४. और जो पारसा औरतों को ऐब लगाएं फिर चार गवाह मोआइना के न लाएँ तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उनकी कोई गवाही कभी न मानो और वही फ़ासिक़ है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ
وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ⑤

५. मगर जो उसके बाद तौबा करले और सँवर जाएँ तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ
يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ
فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ
بِاللَّهِ ۙ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ⑥

६. और वो जो अपनी औरतों को ऐब लगाएँ और उनके पास अपने बयान के सिवा गवाह न हो तो ऐसे किसी की गवाही ये है कि चार बार गवाही दे अल्लाह के नाम से कि वो सच्चा है।

७. और पाँचवी ये कि अल्लाह

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ
إِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٧﴾
وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ
أَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ إِنَّهٗ لَمِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ﴿٨﴾
وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ
إِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٩﴾
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ
ع وَأَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾
إِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ
مِّنْكُمْ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ بَلْ
هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ
مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى
كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١﴾
لَوْلَآ إِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَّ
قَالُوْا هٰذَآ إِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٢﴾
لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ
فَإِذْ لَمْ يَأْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَأُولٰٓئِكَ
عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٣﴾

की लअनत हो उसपर अगर झूठा हो।

८. और औरत से यूँ सज़ा टल जाएगी कि वो अल्लाह का नाम लेकर चार बार गवाही दे कि मर्द झूठा है।

९. और पाँचवी यूँ कि औरत पर ग़ज़ब अल्लाह का अगर मर्द सच्चा हो।

१०. और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुमपर न होती और ये कि अल्लाह तौबा कुबूल फ़रमाता हिकमत वाला है तो तुम्हारा पर्दा खोल देता।

रुकूअ २

११. बेशक वो कि ये बड़ा बोहतान लाए हैं तुम्हीं में की एक जमाअत है उसे अपने लिए बुरा न समझो बल्कि वो तुम्हारे लिए बेहतर है उनमें हर शख़्स के लिए वो गुनाह है जो उसने कमाया और उनमें वो जिसने सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अज़ाब है।

१२. क्यों न हुआ जब तुमने उसे सुना था कि मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने अपनों पर नेक गुमान किया होता और कहते ये खुला बोहतान है।

१३. उसपर चार गवाह क्यों न लाए तो जब गवाह न लाए तो वही अल्लाह के नज़दीक झूठे हैं।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ
رَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ
لَمَسَّكُمْ فِىْ مَاۤ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾

१४. और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुमपर दुनिया और आख़ेरत मे न होती तो जिस चर्चे मे तुम पड़े उसपर तुम्हें बड़ा अज़ाब पहुँचता।

اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ
بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ
عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ
اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

१५. जब तुम ऐसी बात अपनी ज़ुबानों पर एक दूसरे से सुनकर लाते थे और अपने मुँह से वो निकालते थे जिसका तुम्हें इल्म नही और उसे सहल समझते थे और वो अल्लाह के नज़दीक बड़ी बात है।

وَلَوْلَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ
لَنَاۤ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا
بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾

१६. और क्यों न हुआ जब तुमने सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुँचता कि ऐसी बात कहें इलाही पाकी है तुझे ये बड़ा बोहतान है।

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾

१७. अल्लाह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि अब कभी ऐसा न कहना अगर ईमान रखते हो।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

१८. और अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें साफ़ बयान फ़रमाता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ
الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

१९. वो लोग जो चाहते हैं कि मुसलमानों में बुरा चर्चा फैले उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है दुनिया और आख़ेरत मे और अल्लाह जानता है और तुम नही जानते।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ

२०. और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुमपर न होती

और ये कि अल्लाह तुमपर निहायत मेहरबान मेहर वाला है तो तुम उसका मज़ा चखते।

रुकूअ ३

२१. ऐ ईमान वालों शैतान के कदमों पर न चलो और जो शैतान के कदमों पर चले तो वो तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न हो सकता हाँ अल्लाह सुथरा कर देता है जिसे चाहे और अल्लाह सुनता जानता है।

२२. और क़सम न खाएँ वो जो तुममें फ़ज़ीलत वाले और गुन्जाइश वाले हैं क़राबत वालों और मिसकीनों और अल्लाह की राह में हिज्जरत करने वालों को देने की और चाहिए कि मुआफ़ करें और दरगुज़रें क्या तुम उसे दोस्त नहीं रखते कि अल्लाह तुम्हारी बख़्शिश करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

२३. बेशक वो जो अैब लगाते हैं अनजान पारसा ईमान वालियों को उनपर लअ़नत है दुनिया और आख़िरत में और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।

२४. जिस दिन उनपर गवाही देंगी उनकी ज़ुबानें और उनके हाथ और उनके पाँव जो कुछ करते थे।

ع
وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ
مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّ
لٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾
وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ
وَالسَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْۤا اُولِي الْقُرْبٰى
وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۪ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا
تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ
الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾
يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَ
اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَ
يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾

२५. उस दिन अल्लाह उन्हे उनकी सच्ची सज़ा पूरी देगा और जान लेंगे कि अल्लाह ही सरीह हक़ है।

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَ الْخَبِيْثُوْنَ
لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَ الطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ
وَ الطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ
مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ۖ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ
ع رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾

२६. गन्दियाँ गन्दो के लिए और गन्दे गन्दियो के लिए और सुथरियाँ सुथरो के लिए और सुथरे सुथरियोके लिए वो पाक है उन बातों से जो ये कह रहे है उनके लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है।

रुकूअ ४

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا
غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا
عَلٰٓى اَهْلِهَا ۚ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾

२७. ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ जबतक इजाज़त न लेलो और उनके साकिनों पर सलाम न करलो ये तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम ध्यान करो।

فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا
تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ
وَ اِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا
هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۚ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾

२८. फिर अगर उनमें किसी को न पाओ जब भी बेमालिकों की इजाज़त कि उनमें न जाओ और अगर तुमसे कहा जाए वापस जाओ तो वापस हो ये तुम्हारे लिए बहुत सुथरा है अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا
بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ
لَّكُمْ ۚ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ
مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾

२९. उसमें तुमपर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत के नहीं और उनके बरतने का तुम्हें इख़्तियार है और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ
اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ
ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ
بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝٣٠

३०. मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें ये उनके लिए बहुत सुथरा है बेशक अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है।

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ
اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ
وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ
مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى
جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ
اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ
بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ
بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ
اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ
نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ
اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِى الْاِرْبَةِ مِنَ
الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ
يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۪ وَ
لَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا
يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَتُوْبُوْٓا اِلَى
اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ

३१. और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाओ न दिखाएँ मगर जितना ख़ुद ही ज़ाहिर है और दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप या शौहरों के बाप या अपने बेटे या शौहरों के बेटे या अपने भाई या अपने भतीजे या अपने भांजे या अपने दीन की औरतें या अपनी कनीज़ें जो अपने हाथ की मिल्क हों या नौकर बशर्ते कि शहवत वाले मर्द न हों या वो बच्चे जिन्हें औरतों की शर्म की चीज़ों की ख़बर नहीं और ज़मीन पर पाँव ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उनका छुपा हुआ सिंगार और अल्लाह की तरफ़ तौबा करो ऐ मुसलमानो सब के

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾
وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ
مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا
فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾
وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ
نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ
وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ
فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ
الَّذِي آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ
عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا
عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ
فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾
وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَ
مَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ
ع وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾
اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهِ
كَمِشْكَاةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ

सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह
पाओ।
३२. और निकाह कर दो अपनों
में उनका जो बे निकाह हों और अपने
लायक बन्दों और कनीज़ों का अगर
वो फ़क़ीर हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी
कर देगा अपने फ़ज़्ल के सबब और
अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है।
३३. और चाहिऐ कि बचे रहें
वो जो निकाह का मक़दूर नहीं रखते
यहाँ तक कि अल्लाह मक़दूर वाला
कर दे अपने फ़ज़्ल से और तुम्हारे
हाथ की मिल्क बाँदी गुलामों में से जो
ये चाहें कि कुछ माल कमाने की शर्त
पर उन्हें आज़ादी लिख दो तो लिख
दो अगर उनमें कुछ भलाई जानो और
उसपर उनकी मदद करो अल्लाह के
माल से जो तुमको दिया और मजबूर
न करो अपनी कनीज़ों को बदकारी पर
जबकि वो बचना चाहें ताकि तुम दुनयवी
ज़िन्दगी का कुछ माल चाहो और जो
उन्हें मजबूर करेगा तो बेशक अल्लाह
बाद उसके कि वो मजबूरी ही की
हालत पर रहें बख़्शनेवाला मेहरबान
है।
३४. और बेशक हमने उतारीं
तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें और कुछ
उन लोगों का बयान जो तुमसे पहले
हो गुज़रे और डरवालों के लिए नसीहत।
रुकूअ ५
३५. अल्लाह नूर है आसमानों

فِي زُجَاجَةٍ ۗ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ
دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ
لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا
يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُّورٌ
عَلَىٰ نُورٍ ۗ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ۚ
وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۗ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾
فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ
فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ
وَالْآصَالِ ﴿٣٦﴾
رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ
عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ
الزَّكَاةِ ۙ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ
الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾
لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَ
يَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ
مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾
وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ
بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً حَتَّىٰ
إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ

और ज़मीन का उसके नूर की मिसाल ऐसी जैसे एक ताक़ कि उसमें चिराग़ है वो चिराग़ एक फ़ानूस में है वो फ़ानूस गोया एक सितारा है मोती सा चमकता रोशन होता है बरकत वाले पेड़ ज़ैतून से जो न पूरब का न पच्छिम का क़रीब है कि उसका तेल भड़क उठे अगरचे उसे आग न छुए नूर पर नूर है अल्लाह अपने नूर की राह बताता है जिसे चाहता है और अल्लाह मिसालें बयान फ़रमाता है लोगों के लिए और अल्लाह सब कुछ जानता है।

३६. उन घरों में जिन्हें बुलन्द करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और उनमें उसका नाम लिया जाता है अल्लाह की तसबीह करते हैं उनमें सुबह और शाम।

३७. वो मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह की याद और नमाज़ बरपा रखने और ज़कात देने से डरते हैं उस दिन से जिसमें उलट जाएँगे दिल और आँखें।

३८. ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उनके सबसे बेहतर काम का और अपने फ़ज़्ल से उन्हें इनआम ज़्यादा दे और अल्लाह रोज़ी देता जिसे चाहे बे गिन्ती।

३९. और जो काफ़िर हुए उनके काम ऐसे हैं जैसे धूप में चमकता रेता किसी जंगल में कि प्यासा उसे पानी

اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۗ وَاللّٰهُ
سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾
اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ
مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ۗ
ظُلُمٰتٌ ۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۗ اِذَآ اَخْرَجَ
يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ
ع اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ۗ
كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ۗ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَ
اِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ
بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ
مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۗ
يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾
يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

समझे यहाँ तक जब उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया और अल्लाह को अपने क़रीब पाया तो उसने उसका हिसाब पूरा भर दिया और अल्लाह जल्द हिसाब कर लेता है।

४०. या जैसे अंधेरियाँ किसी कुन्डे के (गहराई वाले) दरिया में उसके ऊपर मौज, मौज के ऊपर और मौज उसके ऊपर बादल अँधेरे है एक पर एक जब अपना हाथ निकाले तो सुझाई देता मअ्लूम न हो और जिसे अल्लाह नूर न दे उसके लिए कहीं नूर नहीं।

रुकूअ ६

४१. क्या तुमने न देखा कि अल्लाह की तसबीह करते है जो कोई आसमानों और ज़मीन में है और परिन्दे पर फैलाए सबने जान रखी है अपनी नमाज़ और अपनी तसबीह और अल्लाह उनके कामो को जानता है।

४२. और अल्लाह ही के लिए है सल्तनत आसमानों और ज़मीन की और अल्लाह ही की तरफ़ फिर जाना।

४३. क्या तूने न देखा कि अल्लाह नर्म नर्म चलाता है बादल को फिर उन्हे आपस में मिलाता है फिर उन्हे तह पर तह कर देता है तो तू देखे कि उसके बीच में से मेंह निकलता है और उतारता है आसमान से उसमे जो बर्फ़ के पहाड़ है उनमे से कुछ ओले फिर डालता है उन्हे जिसपर चाहे और फेर देता है उन्हें जिससे चाहे क़रीब है कि उसकी बिजली की चमक आँख ले जाए।

४४. अल्लाह बदली करता है रात और दिन की बेशक उसमे समझने का मकाम है निगाह वालो को।

४५. और अल्लाह ने ज़मीन पर हर चलने वाला पानी से बनाया तो उनमे कोई अपने पेट पर चलता है और उनमे कोई दो पांवो पर चलता है और उनमे कोई चार पांवो पर चलता है अल्लाह बनाता है जो चाहे बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

४६. बेशक हमने उतारी साफ़ बयान करने वाली आयतें और अल्लाह जिसे चाहे सीधी राह दिखाए।

४७. और कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हुक्म माना फिर कुछ उनमें कि उसके बाद फिर जाते हैं और वो मुसलमान नहीं।

४८. और जब बुलाए जाएँ अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाए तो जभी उनका एक फ़रीक़ मुँह फेर जाता है।

४९. और अगर उनको डिगरी हो (उनके हक़ में फैसला दो) तो उसकी तरफ़ आएं मानते हुए।

५०. क्या उनके दिलो में बीमारी है या शक रखते हैं या ये डरते हैं कि अल्लाह व रसूल उनपर ज़ुल्म करेंगे बल्कि वो खुद ही ज़ालिम हैं।

रुकूअ ७

५१. मुसलमानो की बात तो यही है जब अल्लाह और रसूल की तरफ़

لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٤٤﴾
وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِّن مَّاءٍ ۖ فَمِنْهُم
مَّن يَمْشِي عَلَىٰ بَطْنِهِ ۖ وَمِنْهُم
مَّن يَمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ ۖ وَمِنْهُم
مَّن يَمْشِي عَلَىٰ أَرْبَعٍ ۚ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا
يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾
لَّقَدْ أَنزَلْنَا آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ ۚ وَاللَّهُ يَهْدِي
مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾
وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَ
أَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُم مِّن بَعْدِ
ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾
وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ
بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٨﴾
وَإِن يَكُن لَّهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ
مُذْعِنِينَ ﴿٤٩﴾
أَفِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ ارْتَابُوا أَمْ
يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَ
رَسُولُهُ ۚ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥٠﴾ ع
إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا
إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

أَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ
اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٥٢﴾
وَأَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ
أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ
طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۚ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ ۢ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٣﴾
قُلْ أَطِيْعُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ
فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ
وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيْعُوْهُ
تَهْتَدُوْا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ إِلَّا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي
الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ
الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ
مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُوْنَنِيْ
لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ

बुलाए जाएं कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाए कि अर्ज़ करें हमने सुना और हुक्म माना और यही लोग मुराद को पहुंचे।

५२. और जो हुक्म माने अल्लाह और उसके रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो यही लोग कामयाब हैं।

५३. और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में हद की कोशिश से कि अगर तुम उन्हें हुक्म दोगे तो वो ज़रूर जिहाद को निकलेंगे तुम फ़रमाओ क़समें न खाओ मुवाफ़िके-शरअ हुक्म बरदारी चाहिए अल्लाह जानता है जो तुम करते हो।

५४. तुम फ़रमाओ हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का फिर अगर तुम मुंह फेरो तो रसूल के ज़िम्मे वही है जो उसपर लाज़िम किया गया और तुम पर वो है जिसका बोझ तुमपर रखा गया और अगर रसूल की फ़रमाँबरदारी करोगे राह पाओगे और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुँचा देना।

५५. अल्लाह ने वअ्दा दिया उनको जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किए कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में खिलाफ़त देगा जैसी उनसे पहलों को दी और ज़रूर उनके लिए जमा देगा उनका वो दीन जो उनके लिए पसन्द फ़रमाया है और ज़रूर उनके अगले ख़ौफ़ को अमन से बदल देगा

بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٥٥﴾
وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ
اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾
لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ
فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۗ وَلَبِئْسَ
ع الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ
مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا
الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۗ مِنْ قَبْلِ
صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ
ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ
بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۗ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ
لَّكُمْ ۗ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ
جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۗ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ
بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ
لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾
وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ
فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ
اٰيٰتِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾

मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहराएँ और जो उसके बाद ना शुकरी करे तो वही लोग बे हुक्म है।

५६. और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रहम हो।

५७. हरगिज़ काफ़िरों को ख़याल न करना कि वो कहीं हमारे क़ाबू से निकल जाएँ ज़मीन में और उनका ठिकाना आग है और ज़रूर क्या ही बुरा अन्जाम।

रुकूअ ८

५८. ऐ ईमान वालो चाहिए कि तुमसे इज़्न लें तुम्हारे हाथ के माल गुलाम और वो जो तुममें अभी जवानी को न पहुँचे तीन वक़्त नमाज़ सुबह से पहले और जब तुम अपने कपड़े उतार रखते हो दोपहर को और नमाज़े इशा के बाद ये तीन वक़्त तुम्हारी शर्म के हैं इन तीन के बाद कुछ गुनाह नही तुमपर न उनपर आमदो रफ़्त रखते हैं तुम्हारे यहाँ एक दूसरे के पास अल्लाह यूँही बयान करता है तुम्हारे लिए आयतें और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

५९. और जब तुममें लड़के जवानी को पहुँच जाएँ तो वो भी इज़्न माँगें जैसे उनके अगलों ने इज़्न माँगा अल्लाह यूँही बयान फ़रमाता है तुमसे अपनी आयतें और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِیْ لَا یَرْجُوْنَ
نِكَاحًا فَلَیْسَ عَلَیْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ
یَّضَعْنَ ثِیَابَهُنَّ غَیْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِیْنَةٍ ؕ
وَاَنْ یَّسْتَعْفِفْنَ خَیْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ
سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿٦٠﴾
لَیْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى
الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِیْضِ حَرَجٌ
وَّلَا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ
بُیُوْتِكُمْ اَوْ بُیُوْتِ اٰبَآىِٕكُمْ اَوْ بُیُوْتِ
اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُیُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُیُوْتِ
اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُیُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُیُوْتِ
عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُیُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُیُوْتِ
خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ اَوْ
صَدِیْقِكُمْ ؕ لَیْسَ عَلَیْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ
تَاْكُلُوْا جَمِیْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ
بُیُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِیَّةً
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَیِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ
یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾ ع
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

६०. और बूढ़ी ख़ाना नशीन औरते जिन्हें निकाह की आरज़ू नही उनपर कुछ गुनाह नही कि अपने बालाई कपड़े उतार रखें जबकि सिंगार न चमकाएं और उससे भी बचना उनके लिए और बेहतर है और अल्लाह सुनता जानता है।

६१. न अन्धे पर तंगी और न लँगड़े पर मुज़ायेक़ा और न बीमार पर रोक और न तुममें किसी पर कि खाओ अपनी औलाद के घर या अपने बाप के घर या अपनी माँ के घर या अपने भाइयों के यहाँ या अपने बहनों के घर या अपने चाचाओं के यहाँ या अपनी फूफियों के घर या अपने मामुओं के यहाँ या अपनी ख़ालाओं के घर या जहाँ की कुंजियाँ तुम्हारे क़ब्ज़े में है या अपने दोस्त के यहाँ तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि मिलकर खाओ या अलग अलग फिर जब किसी घर मे जाओ तो अपनो को सलाम करो मिलते वक़्त कि अच्छी दुआ अल्लाह के पाससे मुबारक पाकीज़ा अल्लाह यूँही बयान फ़रमाता है तुमसे आयतें कि तुम्हे समझ हो।

रुकूअ ९

६२. ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर यक़ीन लाएँ और जब रसूल के पास किसी

ऐसे काम में हाज़िर हुए हों जिसके लिए जमा किए गए हों तो न जाएँ जबतक उनसे इजाज़त न लेलें वो जो तुमसे इजाज़त माँगते हैं वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हैं फिर जब वो तुमसे इजाज़त माँगे अपने किसी काम के लिए तो उनमें जिसे तुम चाहो इजाज़त देदो और उनके लिए अल्लाह से मुआफ़ी माँगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

६३. रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुममें एक दूसरे को पुकारता है बेशक अल्लाह जानता है जो तुममें चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ लेकर तो डरें वो जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़ितना पहुँचे या उनपर दर्दनाक अज़ाब पड़े।

६४. सुनलो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है बेशक वो जानता है जिस हाल पर तुम हो और उस दिन को जिसमें उसकी तरफ़ फेरे जाएँगे तो वो उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने किया और अल्लाह सब कुछ जानता है।

सुरए फ़ुरक़ान

मक्की है इसमें सतहत्तर आयात
और छ: रूकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. बड़ी बरकत वाला है वो कि

وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ
جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ
اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا
اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ
لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ
اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٦٢
لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ
كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ
فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ
اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٦٣
اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
قَدْ يَعْلَمُ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ
يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ
ع وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۝٦٤

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى

عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ﴿١﴾
الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ
فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ﴿٢﴾
وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ
شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ
لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّ
لَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّ
لَا نُشُوْرًا ﴿٣﴾
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ
اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ
اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ﴿٤﴾
وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا
فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٥﴾
قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿٦﴾
وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ
الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْلَآ

जिसने उतारा कुरआन अपने बन्दे पर जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो।

२. वो जिसके लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाहत और उसने न इख़्तियार फ़रमाया बच्चाऔर उसकी सलतनत में कोई साझी नहीं उसने हर चीज़ पैदा करके ठीक अन्दाज़े पर रखी।

३. और लोगों ने उसके सिवा और खुदा ठहरा लिए कि वो कुछ नहीं बनाते और खुद पैदा किए गए हैं और खुद अपनी जानों के बुरे भले के मालिक नहीं और न मरने का इख़्तियार न जीने का न उठने का।

४. और काफ़िर बोले ये तो नहीं मगर एक बोहतान जो उन्होंने बना लिया है और उसपर और लोगों ने उन्हें मदद दी है बेशक वो ज़ालिम और झूठ पर आए।

५. और बोले अगलों की कहानियाँ है जो उन्होंने लिख ली है तो वो उनपर सुबह व शाम पढ़ी जाती हैं।

६. तुम फ़रमाओ उसे तो उसने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन की हर छुपी बात जानता है बेशक वो बख़्शने वाला मेहरबान है।

७. और बोले इस रसूल को क्या हुआ खाना खाता है और बाज़ारों में चलता है क्यों न उतारा गया उनके

साथ कोई फ़रिश्ता कि उनके साथ डर सुनाता।

८. या ग़ैब से उन्हें कोई ख़ज़ाना मिल जाता या उनका कोई बाग़ होता जिसमे से खाते और ज़ालिम बोले तुम तो पैरवी नही करते मगर एक ऐसे मर्द की जिसपर जादू हुआ।

९. ऐ महबूब देखो कैसी कहावतें तुम्हारे लिए बना रहे है तो गुमराह हुए कि अब कोई राह नहीं पाते।

रूकूअ २

१०. बड़ी बरकत वाला है वो कि अगर चाहे तो तुम्हारे लिए बहुत बेहतर उससे करदे जन्नतें जिनके नीचे नहरें बहें और करेगा तुम्हारे लिए ऊँचे ऊँचे महल।

११. बल्कि ये तो क़यामत को झुठलाते हैं और जो क़यामत को झुठलाए हमने उसके लिए तय्यार कर रखी है भड़कती हुई आग।

१२. जब वो उन्हें दूर जगह से देखेगी तो सुनेंगे उसका जोश मारना और चिंघाड़ना।

१३. और जब उसकी किसी तंग जगह में डाले जाएँगे ज़न्जीरो में जकड़े हुए तो वहाँ मौत माँगेगें।

१४. फ़रमाया जाएगा आज एक मौत न माँगो और बहुत सी मौतें माँगो।

१५. तुम फ़रमाओ क्या ये भला या वो हमेशागी के बाग़ जिस का

أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونَ مَعَهُ
نَذِيرًا ⑦
أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ
لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ
الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا
مَسْحُورًا ⑧
انْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ
فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ⑨ ع
تَبَارَكَ الَّذِي إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ
خَيْرًا مِنْ ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَلْ لَكَ قُصُورًا ⑩
بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ
كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ⑪
إِذَا رَأَتْهُمْ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا
لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ⑫
وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُقَرَّنِينَ
دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ⑬
لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا
ثُبُورًا كَثِيرًا ⑭
قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ

वअ़दा डरवालों को है वो उनका सिला और अन्जाम है ।

१६. उनके लिए वहाँ मन मानती मुरादे है जिनमे हमेशा रहेगे तुम्हारे रब के ज़िम्मे वअ़्दा है माँगा हुआ।

१७. और जिस दिन इकट्ठा करेगा उन्हें और जिनको अल्लाह के सिवा पूजते है फिर उन मअ़बूदो से फ़रमाएगा क्या तुमने गुमराह कर दिए ये मेरे बन्दे या ये खुद ही राह भूले।

१८. वो अ़र्ज़ करेंगे पाकी है तुझको हमें सज़ावार न था कि तेरे सिवा किसी और को मौला बनाएँ लेकिन तूने उन्हे और उनके बाप दादाओं को बरतने दिया यहाँ तक कि वो तेरी याद भूल गए और ये लोग थे ही हलाक होने वाले।

१९. तो अब मअ़बूदों ने तुम्हारी बात झुठला दी तो अब तुम न अ़ज़ाब फेर सको न अपनी मदद कर सको और तुममें जो ज़ालिम है हम उसे बड़ा अ़ज़ाब चखाएँगे।

२०. और हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाजारों में चलते और हमने तुममें एक को दूसरे की जांच किया है ऐ लोगो क्या तुम सब्र करोगे और ऐ महबूब तुम्हारा रब देखता है।

الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ
جَزَآءً وَّ مَصِیْرًا ﴿۱۵﴾
لَهُمْ فِیْهَا مَا یَشَآءُوْنَ خٰلِدِیْنَ ؕ كَانَ
عَلٰی رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿۱۶﴾
وَ یَوْمَ یَحْشُرُهُمْ وَ مَا یَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ فَیَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ
عِبَادِیْ هٰۤؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِیْلَ ﴿۱۷﴾
قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ یَنْۢبَغِیْ لَنَاۤ اَنْ
نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِیَآءَ وَ لٰكِنْ
مَّتَّعْتَهُمْ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰی نَسُوا الذِّكْرَ ۚ
وَ كَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿۱۸﴾
فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا
تَسْتَطِیْعُوْنَ صَرْفًا وَّ لَا نَصْرًا ۚ
وَ مَنْ یَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ
عَذَابًا كَبِیْرًا ﴿۱۹﴾
وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِیْنَ
اِلَّاۤ اِنَّهُمْ لَیَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ یَمْشُوْنَ
فِی الْاَسْوَاقِ ؕ وَ جَعَلْنَا بَعْضَكُمْ
لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَ
كَانَ رَبُّكَ بَصِیْرًا ﴿۲۰﴾ ع

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا
لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى
رَبَّنَا لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾
يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ
لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾
وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ
فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا
وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾
وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ
الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾
اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ۭ وَكَانَ
يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾
وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ
يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ
سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾
يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا
خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾
لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ

रुकूअ ३

२१. और बोले वो जो हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे या हम अपने रब को देखते बेशक अपने जी में बहुत ही ऊँची खींची और बड़ी सरकशी पर आए।

२२. जिस दिन फ़रिशतों को देखेंगे वो दिन मुजरिमों की कोई खुशी का न होगा और कहेंगे इलाही हममें उनमें कोई आड़ कर दे रूकी हुई।

२३. और जो कुछ उन्होंने काम किए थे हमने क़स्द फ़रमाकर उन्हें बारीक बारीक गुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते है।

२४. जन्नत वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना और हिसाब के दोपहर के बाद अच्छी आराम की जगह।

२५. और जिस दिन फट जाएगा आसमान बादलों से और फ़रिश्ते उतारे जाएँगे पूरी तरह।

२६. उस दिन सच्ची बादशाही रहमान की है और वो दिन काफ़िरों पर सख़्त है।

२७. और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबा चबा लेगा कि हाय किसी तरह मैंने रसूल के साथ राह ली होती।

२८. वाए ख़राबी मेरी हाय किसी तरह मैंने फुलाने को दोस्त न बनाया होता।

२९. बेशक उसने मुझे बहका

दिया मेरे पास आई हुई नसीहत से और शैतान आदमी को बे मदद छोड़ देता है।

३०. और रसूल ने अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने इस कुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया।

३१. और इसी तरह हमने हर नबी के लिए दुश्मन बना दिए थे मुजरिम लोग और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने और मदद देने को।

३२. और काफ़िर बोले कुरआन उनपर एक साथ क्यों न उतार दिया हमने यूँ ही बतदरीज उसे उतारा है कि उससे तुम्हारा दिल मज़बूत करें और हमने उसे ठहर ठहर कर पढ़ा।

३३. और वो कोई कहावत तुम्हारे पास न लाएँगे मगर हम हक़ और उससे बेहतर बयान ले आएँगे।

३४. वो जो जहन्नम की तरफ़ हांके जाएँगे अपने मुँह के बल उनका ठिकाना सबसे बुरा और वो सबसे गुमराह।

रुकूअ ४

३५. और बेशक हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई और उसके भाई हारून को वज़ीर किया।

३६. तो हमने फ़रमाया तुम दोनों जाओ उस क़ौम की तरफ़ जिसने हमारी आयतें झुठलाई फिर हमने उन्हें तबाह करके हलाक कर दिया।

३७. और नूह की क़ौम को जब

جاءني ۗ وكان الشيطن للإنسان
خذولا ﴿٢٩﴾
وقال الرسول يرب إن قومي اتخذوا
هذا القران مهجورا ﴿٣٠﴾
وكذلك جعلنا لكل نبي عدوا
من المجرمين ۗ وكفى بربك هاديا
ونصيرا ﴿٣١﴾
وقال الذين كفروا لولا نزل عليه
القران جملة واحدة ۚ كذلك ۚ
لنثبت به فؤادك ورتلنه ترتيلا ﴿٣٢﴾
ولا يأتونك بمثل إلا جئنك بالحق
وأحسن تفسيرا ﴿٣٣﴾
الذين يحشرون على وجوههم إلى
جهنم ۙ أولئك شر مكانا وأضل
سبيلا ﴿٣٤﴾ ع
ولقد اتينا موسى الكتب وجعلنا
معه أخاه هرون وزيرا ﴿٣٥﴾
فقلنا اذهبا إلى القوم الذين كذبوا
بايتنا ۗ فدمرنهم تدميرا ﴿٣٦﴾
وقوم نوح لما كذبوا الرسل أغرقنهم

उन्होंने रसूलों को झुठलाया हमने उनको डुबो दिया और उन्हें लोगों के लिए निशानी कर दिया और हमने ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

३८. और आ़द और समूद और कुएँ वालों को और उनके बीच में बहुत सी संगतें (क़ौमें)।

३९. और हमने सबसे मिसालें बयान फ़रमाईं और सब को तबाह करके मिटा दिया।

४०. और ज़रूर ये हो आएँ हैं उस बस्ती पर जिस पर बुरा बरसाओ बरसा था तो क्या ये उसे देखते न थे बल्कि उन्हें जी उठने की उम्मीद थी ही नहीं।

४१. और जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्ठा क्या ये है जिनको अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा।

४२. क़रीब था कि ये हमें हमारे ख़ुदाओं से बहका दें अगर हम उनपर सब्र न करते और अब जाना चाहते हैं जिस दिन अ़ज़ाब देखेंगे कि कौन गुमराह था।

४३. क्या तुमने उसे देखा जिसने अपने जी की ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा बना लिया तो क्या तुम उसकी निगेहबानी का ज़िम्मा लोगे।

४४. या ये समझते हो कि उनमे बहुत कुछ सुनते या समझते हैं वो तो नहीं मगर जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी बदतर गुमराह।

وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۚ وَاَعْتَدْنَا
لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۚ ﴿٣٧﴾
وَّعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَ
قُرُوْنًا ۢ بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾
وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا
تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾
وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْۤ اُمْطِرَتْ
مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ
بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾
وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ
اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾
اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَاۤ
اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ
حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ
سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾
اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ
اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿٤٣﴾
اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ
يَعْقِلُوْنَ ۭ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ
هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٤﴾

रुकूअ ५

४५. ऐ महबूब क्या तुमने अपने रब को न देखा कि कैसा फैलाया साया और अगर चाहता तो उसे ठहराया हुआ कर देता फिर हमने सूरज को उसपर दलील किया।

४६. फिर हमने आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी तरफ़ समेटा।

४७. और वही है जिसने रात को तुम्हारे लिए पर्दा किया और नींद को आराम और दिन बनाया उठने के लिए।

४८. और वही है जिसने हवाएँ भेजी अपनी रहमत के आगे मुज़दह सुनाती हुई और हमने आसमान से पानी उतारा पाक करने वाला ।

४९. ताकि हम उससे ज़िन्दा करें किसी मुर्दा शहर को और उसे पिलाएँ अपने बनाए हुए बहुत से चौपाए और आदमियों को।

५०. और बेशक हमने उनमें पानी के फेरे रखे कि वो ध्यान करें तो बहुत लोगों ने न माना मगर ना शुकरी करना।

५१. और हम चाहते तो हर बस्ती में एक डर सुनानेवाला भेजते।

५२. तो काफ़िरों का कहा न मान और इस कुरआन से उनपर जिहाद कर बड़ा जिहाद।

५३. और वही है जिसने मिले हुए रवाँ किए दो समन्दर ये मीठा है निहायत शीरीं और ये खारी है निहायत तल्ख़ और उनके बीच में पर्दा रखा और रोकी हुई आड़।

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ
وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا
الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾
ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾
وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا
وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ
نُشُورًا ﴿٤٧﴾
وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ
يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً طَهُورًا ﴿٤٨﴾
لِنُحْيِيَ بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا
خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنَاسِيَّ كَثِيرًا ﴿٤٩﴾
وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا
فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٥٠﴾
وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيرًا ﴿٥١﴾
فَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَجَاهِدْهُم بِهِ
جِهَادًا كَبِيرًا ﴿٥٢﴾
وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَٰذَا
عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَ
جَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿٥٣﴾

५४. और वही है जिसने पानी से बनाया आदमी फिर उसके रिश्ते और सुसराल मुक़र्रर की और तुम्हारा रब कुदरत वाला है।	وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿٥٤﴾
५५. और अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हैं जो उनका भला बुरा कुछ न करें और काफ़िर अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है।	وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾
५६. और हमने तुम्हें न भेजा मगर खुशी और डर सुनाता।	وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾
५७. तुम फ़रमाओ मैं उसपर तुमसे कुछ उजरत नहीं माँगता मगर जो चाहे कि अपने रब की तरफ़ राह ले।	قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَن شَاءَ أَن يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾
५८. और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा और उसे सराहते हुए उसकी पाकी बोलो और वही काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों पर खबरदार।	وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾
५९. जिसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान है छः दिन में बनाए फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लाइक़ है वो बड़ी मेहर वाला तो किसी जानने वाले से उसकी तअरीफ़ पूछ।	الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا ﴿٥٩﴾
६०. और जब उनसे कहा जाए, रहमान को सज्दा करो कहते हैं रहमान क्या है क्या हम सज्दा कर लें जिसे तुम कहो और इस हुक्म ने उन्हें और बिदकना बढ़ाया।	وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۩ ﴿٦٠﴾
रुकूअ ६	
६१. बड़ी बरकत वाला है वो जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उनमें चिराग़ रखा और चमकता चाँद।	تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُّنِيرًا ﴿٦١﴾

६२. और वही है जिसने रात और दिन की बदली रखी उसके लिए जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे।

६३. और रहमान के वो बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं और जब जाहिल उनसे बात करते हैं तो कहते हैं बस सलाम।

६४. और वो जो रात काटते हैं अपने रब के लिए सज्दे और क़याम में।

६५. और वो जो अर्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमसे फेर दे जहन्नम का अ़ज़ाब बेशक उसका अ़ज़ाब गले का गुल्ल है (फंदा है)।

६६. बेशक वो बहुत ही बुरी ठहरने की जगह है।

६७. और वो कि जब ख़र्च करते हैं न हद से बढ़ें और न तंगी करें और उन दोनो के बीच एअ़तिदाल पर रहें।

६८. और वो जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअ़बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिसकी अल्लाह ने हुरमत रखी ना हक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो ये काम करे वो सज़ा पाएगा।

६९. बढ़ाया जाएगा उसपर अ़ज़ाब क़यामत के दिन और हमेशा उसमे ज़िल्लत से रहेगा।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ
شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾
وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ
عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ
الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾
وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا
وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾
وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا
عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ
غَرَامًا ﴿٦٥﴾
اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾
وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ
يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾
وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا
اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ
اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ
يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾
يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا
صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ
حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧٠﴾
وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ
إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾
وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا
مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾
وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ
يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾
وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ
أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَ
اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾
أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا
وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٥﴾
خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٧٦﴾
قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ
ع فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

سورة الشعراء مكية وهي مائتان وسبع وعشرون آية وفيها احد عشر ركوعا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
طسم ﴿١﴾

७०. मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

७१. और जो तौबा करे और अच्छा काम करे तो वो अल्लाह की तरफ़ रूजूअ लाया जैसी चाहिए थी।

७२. और जो झूठी गवाही नहीं देते और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं।

७३. और वो कि जब कि उन्हें उनके रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो उनपर बहरे अन्धे होकर नहीं गिरते।

७४. और वो जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी अवलाद से आँखों की ठंडक और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना।

७५. उनको जन्नत का सबसे ऊँचा बाला ख़ाना इनआम मिलेगा बदला उनके सब्र का और वहाँ मुजरे और सलाम के साथ उनकी पेशवाई होगी।

७६. हमेशा उसमें रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह।

७७. तुम फ़रमाओ तुम्हारी कुछ क़द्र नहीं मेरे रब के यहाँ अगर तुम उसे न पूजो तो तुमने तो झुठलाया तो अब होगा वो अ़ज़ाब कि लिपट रहेगा।

सूरए शोअ़रा

मक्की है इसमें दो सौ सत्ताइस आयात और ग्यारह रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

२. ये आयतें हैं रौशन किताब की।

३. कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उनके ग़म में कि वो ईमान नही लाए।

४. अगर हम चाहे तो आसमान से उनपर कोई निशानी उतारें कि उनके ऊँचे ऊँचे उसके हुज़ूर झुके रह जाएँ।

५. और नही आती उनके पास रहमान की तरफ़ से कोइ नई नसीहत मगर उससे मुँह फेर लेते है।

६. तो बेशक उन्होंने झुठलाया तो अब उनपर आया चाहती है ख़बरें उनके ठट्ठे की।

७. क्या उन्होंने ज़मीन को न देखा हमने उसमें कितने इज़्ज़त वाले जोड़े उगाए।

८. बेशक उसमें ज़रूर निशानी है औरउनके अक्सर ईमान लाने वाले नहीं।

९. और बेशक तुम्हारा रब ज़रूर वही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।

रुकूअ २

१०. और याद करो जब तुम्हारे रब ने मूसा को निदा फ़रमाई कि ज़ालिम लोगों के पास जा।

११. जो फ़िरऔन की क़ौम है क्या वो न डरेंगे।

१२. अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं डरता हूँ कि वो मुझे झुठलाएँगे।

१३. और मेरा सीना तंगी करता है और मेरी ज़बान नहीं चलती तो तू

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا

مُؤْمِنِيْنَ ③

اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً

فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ④

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ

مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ⑤

فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا

بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑥

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا

فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ⑦

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

مُّؤْمِنِيْنَ ⑧

ع وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ⑨

وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ⑩ لا

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۭ اَلَا يَتَّقُوْنَ ⑪

قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ⑫ ط

وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ

فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ⑬

हारून को भी रसूल कर।

१४. और उनका मुझपर एक इलज़ाम है तो मैं डरता हूँ कहीं मुझे क़त्ल कर दें।

१५. फ़रमाया यूँ नहीं तुम दोनों मेरी आयतें लेकर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनते है।

१६. तो फ़िरऔन के पास जाओ फिर उससे कहो हम दोनों उसके रसूल है जो रब है सारे जहान का।

१७. कि तू हमारे साथ बनी इसराईल को छोड़ दे।

१८. बोला क्या हमने तुम्हें अपने यहाँ बचपन में न पाला और तुमने हमारे यहाँ अपनी उम्र के कई बरस गुज़ारे।

१९. और तुमने क्या अपना वो काम जो तुमने किया और तुम ना शुक्र थे।

२०. मूसा ने फ़रमाया मैं ने वो काम किया जबकि मुझे राह की ख़बर न थी।

२१. तो मैं तुम्हारे यहाँ से निकल गया जबकि तुमसे डरा तो मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता फ़रमाया और मुझे पैगमबरों से किया।

२२. और ये कोई नेअमत है जिसका तू मुझपर एहसान जताता है कि तूने गुलाम बना कर रखे बनी इसराईल।

२३. फ़िरऔन बोला और सारे जहान का रब क्या है।

२४. मूसा ने फ़रमाया रब आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दरमियान में है अगर तुम्हें यक़ीन हो।

२५. अपने आस पास वालों से बोला क्या तुम ग़ौर से सुनते नहीं।

२६. मूसा ने फ़रमाया रब तुम्हारा

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿١٤﴾
قَالَ كَلَّا فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ
مُسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾
فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾
أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٧﴾
قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ
فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ﴿١٨﴾
وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَ
أَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾
قَالَ فَعَلْتُهَا إِذًا وَأَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٢٠﴾
فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي
رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾
وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدْتَ
بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٢﴾
قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٣﴾
قَالَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ﴿٢٤﴾
قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ﴿٢٥﴾
قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٦﴾

और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का।

२७. बोला तुम्हारे ये रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं ज़रूर अक़्ल नहीं रखते।

२८. मूसा ने फ़रमाया रब पूरब और पच्छिम का और जो कुछ उनके दरमियान है अगर तुम्हें अक़्ल हो ।

२९. बोला अगर तुमने मेरे सिवा किसी और को ख़ुदा ठहराया तो मैं ज़रूर तुम्हें क़ैद कर दूँगा।

३०. फ़रमाया क्या अगरचे मैं तेरे पास कोई रौशन चीज़ लाऊँ।

३१. कहा तो लाओ अगर सच्चे हो।

३२. तो मूसा ने अपना असा डाल दिया जभी वो सरीह अज़दहा हो गया।

३३. और अपना हाथ निकाला तो जभी वो देखने वालों की निगाह में जगमगाने लगा।

रुकूअ ३

३४. बोला अपने गिर्द के सरदारों से कि बेशक ये दाना जादूगर हैं।

३५. चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें अपने जादू के ज़ोर से तब तुम्हारा क्या मश्वरा है।

३६. वो बोले उन्हें और उनके भाई को ठहराए रहो और शहरों में जमअ़ करने वाले भेजो।

३७. कि वो तेरे पास ले आएँ हर बड़े जादूगर दाना को।

३८. तो जमअ़ किए गए जादूगर एक मुक़र्रर दिन के वअ़दा पर।

३९. और लोगों से कहा गया

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِیْۤ اُرْسِلَ اِلَیْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ مَا بَیْنَهُمَاؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

قَالَ لَىٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَیْرِیْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِیْنَ ﴿٢٩﴾

قَالَ اَوَ لَوْ جِئْتُكَ بِشَیْءٍ مُّبِیْنٍ ﴿٣٠﴾

قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿٣١﴾

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِیَ ثُعْبَانٌ مُّبِیْنٌ ﴿٣٢﴾

وَّ نَزَعَ یَدَهٗ فَاِذَا هِیَ بَیْضَآءُ لِلنّٰظِرِیْنَ ﴿٣٣﴾

قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِیْمٌ ﴿٣٤﴾

یُّرِیْدُ اَنْ یُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ فَمَا ذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَ اَخَاهُ وَ ابْعَثْ فِی الْمَدَآىٕنِ حٰشِرِیْنَ ﴿٣٦﴾

یَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِیْمٍ ﴿٣٧﴾

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِیْقَاتِ یَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾

وَّ قِیْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ
الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾
فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ
لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾
قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾
قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ
مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾
فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا
بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾
فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ
مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾ ج
فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ لا
قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾ لا
رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾
قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ
اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۵ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ ج
قَالُوْا لَا ضَيْرَ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾

क्या तुम जमअ होगे।

४०. शायद हम इन जादूगरों ही की पैरवी करें अगर ये ग़ालिब आएं।

४१. फिर जब जादूगर आए फिरऔन से बोले क्या हमें कुछ मजदूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब आए।

४२. बोला हाँ और उस वक़्त तुम मेरे मुक़र्रब हो जाओगे।

४३. मूसा ने उनसे फ़रमाया डालो जो तुम्हें डालना है।

४४. तो उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाली और बोले फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम बेशक हमारी ही जीत है।

४५. तो मूसा ने अपना असा डाला जभी वो उनकी बनावटों को निगलने लगा।

४६. अब सज्दे में गिरे।

४७. जादूगर बोले हम ईमान लाए उसपर जो सारे जहान का रब है।

४८. जो मूसा और हारून का रब है।

४९. फ़िरऔन बोला क्या तुम उसपर ईमान लाए क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ बेशक वो तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया तो अब जाना चाहते हो मुझे क़सम है बेशक मैं तुम्हारे हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूँगा और तुम सब को सूली दूँगा।

५०. वो बोलेकुछ नुक़्सान नहीं हम अपने रब की तरफ़ पलटने वाले है।

إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَٰيَٰنَآ
أَن كُنَّآ أَوَّلَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾

५१. हमें तमअ है कि हमारा रब हमारी ख़तायें बख़्श दे इसपर कि हम सबसे पहले ईमान लाए।

रुकूअ ४

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِىٓ
إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٥٢﴾

५२. और हमने मूसा को 'वही' भेजी कि रातो रात मेरे बन्दों को ले निकल बेशक तुम्हारा पीछा होना है।

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى ٱلْمَدَآئِنِ
حَٰشِرِينَ ﴿٥٣﴾

५३. अब फ़िरऔन ने शहरों में जमअ करने वाले भेजे ।

إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾

५४. कि ये लोग एक थोड़ी जमाअत हैं।

وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُونَ ﴿٥٥﴾

५५. और बेशक वो हम सबका दिल जलाते हैं।

وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَٰذِرُونَ ﴿٥٦﴾

५६. और बेशक हम सब चौकन्ने हैं।

فَأَخْرَجْنَٰهُم مِّن جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾

५७. तो हमने उन्हें बाहर निकाला बाग़ों और चश्मों।

وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾

५८. और ख़ज़ानों और उमदा मकानों से ।

كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَٰهَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿٥٩﴾

५९. हमने ऐसा ही किया और उनका वारिस कर दिया बनी इसराईल को।

فَأَتْبَعُوهُم مُّشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾

६०. तो फ़िरऔनियों ने उनका तअक़्क़ुब किया दिन निकले।

فَلَمَّا تَرَٰٓءَا ٱلْجَمْعَانِ قَالَ أَصْحَٰبُ
مُوسَىٰٓ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ﴿٦١﴾

६१. फिर जब आमना सामना हुआ दोनो गिरोहों का मूसा वालों ने कहा हमको उन्होंने आ लिया।

قَالَ كَلَّآ ۖ إِنَّ مَعِىَ رَبِّى سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾

६२. मूसा ने फ़रमाया यूँ नहीं बेशक मेरा रब मेरे साथ है वो मुझे अब राह देता है।

فَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنِ ٱضْرِب بِّعَصَاكَ
ٱلْبَحْرَ ۖ فَٱنفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ
كَٱلطَّوْدِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾

६३. तो हमने मूसा को 'वही' फ़रमाई कि दरिया पर अपना असा मार तो जभी दरिया फट गया तो हर हिस्सा हो गया जैसे बड़ा पहाड़।

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ ٱلْءَاخَرِينَ ﴿٦٤﴾

६४. और वहाँ क़रीब लाए हम दूसरों को।

६५. और हमने बचा लिया मूसा और उसके सब साथ वालो को।
६६. फिर दूसरों को डुबो दिया।
६७. बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें अक्सर मुसलमान न थे।
६८. और बेशक तुम्हारा रब वही इज़्ज़तवाला मेहरबान है।

रुकूअ ५

६९. और उनपर पढ़ो ख़बर इब्राहीम की ।
७०. जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो।
७१. बोले हम बुतों को पूजते हैं फिर उनके सामने आसन मारे रहते हैं।
७२. फ़रमाया क्या वो तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारो।
७३. या तुम्हारा कुछ भला बुरा करते हैं।
७४. बोले बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते पाया।
७५. फ़रमाया तो क्या तुम देखते हो ये जिन्हें पूज रहे हो।
७६. तुम और तुम्हारे अगले बाप दादा।
७७. बेशक वो सब मेरे दुश्मन हैं मगर परवरदिगारे आलम।
७८. वो जिसने मुझे पैदा किया तो वो मुझे राह देगा।
७९. और वो जो मुझे खिलाता और पिलाता है।
८०. और जब मैं बीमार हूँ तो वही मुझे शिफ़ा देता है।

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ
اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾
ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ
اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾
ع وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾
اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾
قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا
عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾
قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾
اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾
قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ
يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾
قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾
اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾
فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾
الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾
وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾
وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾

८१. और वो मुझे वफ़ात देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा।

८२. और वो जिसकी मुझे आस लगी है कि मेरी ख़ताएँ क़यामत के दिन बख़्शेगा।

८३. ऐ मेरे रब मुझे हुक्म अता कर और मुझे उनसे मिला दे जो तेरे कुर्बे ख़ास के सज़ावार है।

८४. और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में।

८५. और मुझे उनमे कर जो चैन के बाग़ों के वारिस है।

८६. और मेरे बाप को बख़्श दे बेशक वो गुमराह है।

८७. और मुझे रूसवा न करना जिस दिन सब उठाए जाएँगे।

८८. जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे।

८९. मगर वो जो अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुआ सलामत दिल लेकर।

९०. और क़रीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के लिए।

९१. और ज़ाहिर की जाएगी दोज़ख़ गुमराहों के लिए।

९२. और उनसे कहा जाएगा कहाँ हैं वो जिनको तुम पूजते थे।

९३. अल्लाह के सिवा क्या वो तुम्हारी मदद करेंगे या बदला लेंगे।

९४. तो औंधा दिए गए जहन्नम मे वो और सब गुमराह।

९५. और इब्लीस के लश्कर सारे।

९६. कहेंगे और वो उसमें बाहम झगड़ते होंगे।

وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾

وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓئَتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾

رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾

وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾

وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾

وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾

وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾

९७. खुदा की क़सम बेशक हम खुली गुमराही में थे।
९८. जबकि तुम्हें रब्बुल आलमीन के बराबर ठहराते थे।
९९. और हमें न बहकाया मगर मुजरिमों ने।
१००. तो अब हमारा कोई सिफ़ारशी नहीं।
१०१. और न कोई ग़मख़्वार दोस्त।
१०२. तो किसी तरह हमें फिर जाना होता कि हम मुसलमान हो जाते।
१०३. बेशक उसमें जरूर निशानी है और उनमें बहुत ईमानवाले न थे।
१०४. और बेशक तुम्हारा रब वही इज़्ज़तवाला मेहरबान है।

रुकूअ ६

१०५. नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया।
१०६. जबकि उनसे उनके हम क़ौम नूह ने कहा क्या तुम डरते नहीं।
१०७. बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का भेजा हुआ अमीन हूँ।
१०८. तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।
१०९. और मैं इसपर तुमसे कुछ उजरत नहीं माँगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहाँ का रब है।
११०. तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।
१११. बोले क्या हम तुमपर ईमान ले आएँ और तुम्हारे साथ कमीने हुए हैं।
११२. फ़रमाया मुझे क्या ख़बर उनके काम क्या है।
११३. उनका हिसाब तो मेरे रब ही पर है अगर तुम्हें हिस हो।
११४. और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं।

تَاللّٰهِ إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٩٧﴾
إِذْ نُسَوِّيكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿٩٨﴾
وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾
فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾
وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾
فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾
إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾
كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٠٩﴾
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾
قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾
قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾
إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلٰى رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾
وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

११५. मै तो नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला।

११६. बोले ऐ नूह अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर संगसार किए जाओगे।

११७. अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने मुझे झुठलाया।

११८. तो मुझमें और उनमें पूरा फ़ैसला कर दे और मुझे और मेरे साथ वाले मुसलमानो को निजात दे।

११९. तो हमने बचा लिया उसे और उसके साथ वालो को भरी हुई कश्ती में।

१२०. फिर उसके बाद हमने बाक़ियो को डुबो दिया।

१२१. बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमे अक्सर मुसलमान न थे।

१२२. और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़तवाला मेहरबान है।

रूकूअ ७

१२३. आद ने रसूलों को झुठलाया।

१२४. जबकि उनसे उनके हम क़ौम हूद ने फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं।

१२५. बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानत दार रसूल हूँ।

१२६. तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

१२७. और मैं तुमसे उसपर कुछ उजरत नहीं माँगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब।

१२८. क्या हर बुलंदी पर एक निशान बनाते हो राहगीरों से हँसने को।

१२९. और मज़बूत महल चुनते हो इस उम्मीद पर कि तुम हमेशा रहोगे।

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾
قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ
مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾
قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾
فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي
وَمَن مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾
فَأَنجَيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ
الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾
ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ
أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾
كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾
أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾
وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿١٢٩﴾

وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٣١﴾
وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾
أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ﴿١٣٣﴾
وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٣٤﴾
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٥﴾
قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ
تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ ﴿١٣٦﴾
إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٧﴾
وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿١٣٨﴾
فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾
كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾

१३०. और जब किसी पर गिरफ्त करते हो तो बड़ी बेदर्दी से गिरफ्त करते हो।

१३१. तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

१३२. और उससे डरो जिसने तुम्हारी मदद की उन चीज़ो से कि तुम्हें मअ़लूम हैं।

१३३. तुम्हारी मदद की चौपायों और बेटों।

१३४. और बाग़ों और चश्मों से।

१३५. बेशक मुझे तुमपर डर है एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का।

१३६. बोले हमें बराबर है चाहे तुम नसीहत करो या नासेहों में न हो।

१३७. ये तो नही मगर वही अगलों की रीत।

१३८. और हमें अ़ज़ाब होना नहीं।

१३९. तो उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने उन्हें हलाक किया बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे।

१४०. और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़तवाला मेहरबान है।

रूकूअ ८

१४१. समूद ने रसूलों को झुठलाया।

१४२. जबकि उनसे उनके हम क़ौम सालेह ने फ़रमाया क्या डरते नहीं।

१४३. बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ।

१४४. तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

१४५. और मैं तुमसे कुछ इसपर उजरत नहीं माँगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है।

१४६. क्या तुम यहाँ की नेअ़मतों में चैन से छोड़ दिए जाओगे।

१४७. बाग़ों और चशमों।

१४८. और खेतों और खजूरों में जिनका शगूफ़ा नर्म नाज़ुक।

१४९. और पहाड़ों में से घर तराशते हो उस्तादी से।

१५०. तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

१५१. और ह़द से बढ़ने वालों के कहने पर न चलो।

१५२. वो जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं और बनाओ नहीं करते।

१५३. बोले तुम पर तो जादू हुआ है।

१५४. तुम तो हम ही जैसे आदमी हो तो कोई निशानी लाओ अगर सच्चे हो।

१५५. फ़रमाया ये नाक़ा है एक दिन इसके पीने की बारी और एक मुअय्यन दिन तुम्हारी बारी।

१५६. और इसे बुराई के साथ न छुओ कि तुम्हें बड़े दिन का अ़ज़ाब आ लेगा।

१५७ उसपर उन्होंने उसकी कोचें काट दी फिर सुबह को पछताते रह गए।

१५८. तो उन्हें अ़ज़ाब ने आ लिया बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे।

१५९. और बेशक तुम्हारा रब ही इ़ज़्ज़तवाला मेहरबान है।

रुकूअ ९

१६०. लूत की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया।

أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هٰهُنَا آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾
فِي جَنّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾
وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾
وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فٰرِهِينَ ﴿١٤٩﴾
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾
وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾
الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَ
لَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾
مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ
إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿١٥٤﴾
قَالَ هٰذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ
شِرْبُ يَوْمٍ مَعْلُومٍ ﴿١٥٥﴾
وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥٦﴾
فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نٰدِمِينَ ﴿١٥٧﴾
فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾
ع وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾
كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٠﴾

१६१. जबकि उनसे उनके हम क़ौम लूत ने फ़रमाया क्या तुम नहीं डरते।

१६२. बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ।

१६३. तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

१६४. और मैं इसपर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर हैं जो सारे जहान का रब है।

१६५. क्या मख़लूक़ में मर्दों से बदफ़ेअ़ली करते हो।

१६६. और छोड़ते हो वो जो तुम्हारे लिए तुम्हारे रब ने जोरूएँ बनाई बल्कि तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो।

१६७. बोले ऐ लूत अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर निकाल दिए जाओगे।

१६८. फ़रमाया मैं तुम्हारे काम से बेज़ार हूँ।

१६९. ऐ मेरे रब मुझे और मेरे घरवालों को इनके काम से बचा।

१७०. तो हमने उसे और उसके सब घरवालों को नजात बख़्शी।

१७१. मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह गई।

१७२. फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया।

१७३. और हमने उनपर एक बरसाओ बरसाया तो क्या ही बुरा बरसाओ था डराए गयों का।

१७४. बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे।

१७५. और बेशक तुम्हारा रब

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾
أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾
وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ
أَزْوَاجِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾
قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ
مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾
قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾
رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾
فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾
إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٧١﴾
ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٧٢﴾
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ
الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٣﴾
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾

كَذَّبَ أَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾
إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٧٩﴾
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٨٠﴾
أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨١﴾
وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٢﴾
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿١٨٣﴾
وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ
الْأَوَّلِينَ ﴿١٨٤﴾
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٥﴾
وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ
لَمِنَ الْكٰذِبِينَ ﴿١٨٦﴾
فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿١٨٧﴾
قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٨﴾
فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ
إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٨٩﴾

ही इज़्ज़तवाला मेहरबान है।

रुकूअ १०

१७६. बन वालों ने रसूलों को झुठलाया।

१७७. जब उनसे शुऐब ने फ़रमाया क्या डरते नहीं।

१७८. बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ।

१७९. तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

१८०. और मैं इस पर तुमसे कुछ उजरत नहीं माँगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है।

१८१. नाप पूरा करो और घटाने वालों में न हो।

१८२. और सीधी तराज़ू से तौलो।

१८३. और लोगों की चीज़ें कम करके न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो।

१८४. और उससे डरो जिसने तुमको पैदा किया और अगली मख़लूक़ को।

१८५. बोले तुमपर जादू हुआ है।

१८६. तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और बेशक हम तुम्हें झूठा समझते हैं।

१८७. तो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो अगर तुम सच्चे हो।

१८८. फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कोतक (करतूत) है।

१८९. तो उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अ़ज़ाब ने आ लिया बेशक वो बड़े दिन का

अज़ाब था।
१९०. बेशक उसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे।
१९१. और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़तवाला मेहरबान है।

रुकूअ ११

१९२. और बेशक ये कुरआन रब्बुल आलमीन का उतारा हुआ है।
१९३. उसे रुहुल अमीन लेकर उतरा।
१९४. तुम्हारे दिल पर कि तुम डर सुनाओ।
१९५. रौशन अरबी ज़ुबान में।
१९६. और बेशक इसका चर्चा अगली किताबों में है।
१९७. और क्या ये उनके लिए निशानी न थी कि इस नबी को जानते हैं बनी इसराईल के आलिम।
१९८. और अगर हम इसे किसी ग़ैर अरबी शख़्स पर उतारते।
१९९. कि वो उन्हें पढ़ सुनाता जब भी उसपर ईमान न लाते।
२००. हमने यूँ ही झुठलाना पैरा दिया है मुजरिमों के दिलों में।
२०१. वो इसपर ईमान न लाएँगे यहाँ तक कि देखें दर्दनाक अज़ाब।
२०२. तो वो अचानक उनपर आ जाएगा और उन्हें ख़बर न होगी।
२०३. तो कहेंगे क्या हमें कुछ मोहलत मिलेगी।
२०४. तो क्या हमारे अज़ाब की जल्दी करते है।
२०५. भला देखो तो अगर कुछ बरस हम उन्हें बरतने दें।
२०६. फिर आए उनपर वो

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم
مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾
وَإِنَّهُ لَتَنزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾
نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾
عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿١٩٤﴾
بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٥﴾
وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾
أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً أَن يَعْلَمَهُ
عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾
وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾
فَقَرَأَهُ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾
كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾
لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ
الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾
فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾
فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾
أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾
أَفَرَأَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾
ثُمَّ جَاءَهُم مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾

مَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾
وَمَآ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا
مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾
ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿٢٠٩﴾
وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ ٱلشَّيَٰطِينُ ﴿٢١٠﴾
وَمَا يَنۢبَغِى لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾
إِنَّهُمْ عَنِ ٱلسَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾
فَلَا تَدْعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ فَتَكُونَ
مِنَ ٱلْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾
وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ ٱلْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾
وَٱخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ ٱتَّبَعَكَ مِنَ
ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾
فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّى بَرِىٓءٌ مِّمَّا
تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾
وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْعَزِيزِ ٱلرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾
ٱلَّذِى يَرَىٰكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾
وَتَقَلُّبَكَ فِى ٱلسَّٰجِدِينَ ﴿٢١٩﴾
إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾
هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ ٱلشَّيَٰطِينُ ﴿٢٢١﴾
تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾

जिसका वो वअ्दा दिए जाते है।

२०७. तो क्या काम आएगा उनके वो जो बरतते थे।

२०८. और हमने कोई बस्ती हलाक न की जिसे डर सुनाने वाले न हों।

२०९. नसीहत के लिए और हम ज़ुल्म नहीं करते।

२१०. और इस कुरआन को लेकर शैतान न उतरे।

२११. और वो इस क़ाबिल नहीं और न वो ऐसा कर सकते हैं।

२१२. वो तो सुनने की जगह से दूर कर दिएगए हैं।

२१३. तो तू अल्लाह के सिवा दूसरा खुदा न पूज कि तुझपर अ़ज़ाब होगा।

२१४. और ऐ महबूब अपने क़रीबतर रिश्तेदारों को डराओ ।

२१५. और अपनी रहमत का बाज़ू बिछाओ अपने पैरो मुसलमानों के लिए।

२१६. तो अगर वो तुम्हारा हुक्म न मानें तो फ़रमादो मैं तुम्हारे कामों से बे इलाक़ा हूँ।

२१७. और उसपर भरोसा करो जो इज़्ज़तवाला मेहरवाला है।

२१८. जो तुम्हें देखता है जब तुम खड़े होते हो।

२१९. और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को।

२२०. बेशक वही सुनता जानता है।

२२१. क्या मैं तुम्हें बता दूँ कि किस पर उतरते हैं शैतान।

२२२. उतरते हैं हर बड़े बोहतान

वाले गुनहगार पर।

२२३. शैतान अपनी सुनी हुई उनपर डालते है और उनमें अक्सर झूठे है।

२२४. और शाअ़ेरों की पैरवी गुमराह करते हैं।

२२५. क्या तुमने न देखा कि वो हर नाले में सरगर्दां फिरते हैं।

२२६. और वो कहते है जो नहीं करते।

२२७. मगर वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किए और ब कसरत अल्लाह की याद की और बदला लिया बाद उसके कि उनपर ज़ुल्म हुआ और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएँगे।

सूरए नमल

मक्की है और इसमें तीरानवे आयात और सात रूकूअ़ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो बहुत मेहरबान रहम वाला।

रूकूअ़ १

१. ये आयतें हैं कुरआन और रौशन किताब की।

२. हिदायत और खुशख़बरी ईमान वालों को।

३. वो जो नमाज़ बरपा रखते हैं और ज़कात देते हैं और वो आख़िरत पर यक़ीन रखते है।

४. वो जो आख़ेरत पर ईमान नहो लाते हमने उनके कोतक अैब उनकी निगाह में भले कर दिखाए हैं।

५. तो वो भटक रहे है ये वो है जिनके लिए बड़ा अज़ाब है और यही

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾
وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾
أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾
وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَ
ذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ
مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا
أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

سُورَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثٌ وَتِسْعُونَ آيَةً وَسَبْعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
طس ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ
مُبِينٍ ﴿١﴾
هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾
الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ
الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٣﴾
إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا
لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ﴿٤﴾
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَ
هُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٥﴾
وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ

आख़ेरत में सबसे बढ़कर नुक़सान में।

६. और बेशक तुम क़ुरआन सिखाए जाते हो हिकमत वाले इल्म वाले की तरफ़ से।

७. जबकि मूसा ने अपनी घरवाली से कहा मुझे एक आग नज़र पड़ी है अनक़रीब मैं तुम्हारे पास उसकी कोई ख़बर लाता हूँ या उसमें से कोई चमकती चिंगारी लाऊँगा कि तुम तापो।

८. फिर जब आग के पास आया निदा की गई कि बरकत दिया गया वो जो उस आग की जल्वागाह में है यानी मूसा और जो उसके आसपास है यानी फ़रिश्ते और पाकी है अल्लाह को जो रब है सारे जहानका।

९. ऐ मूसा बात ये है कि मैं ही हूँ अल्लाह इज़्ज़त वाला हिकमत वाला।

१०. और अपना असा डाल दे फिर मूसा ने उसे देखा लहराता हुआ गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़कर न देखा हमने फ़रमाया ऐ मूसा डर नहीं बेशक मेरे हुज़ूर रसूलों को ख़ौफ नहीं होता।

११. हाँ जो कोई ज़यादती करे फिर बुराई के बाद भलाई से बदले तो बेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूँ।

१२. और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल निकलेगा सफ़ेद चमकता बे ऐब नौ निशानियों में फ़िरऔन और उसकी क़ौम कि तरफ़ बेशक वो बे हुक्म लोग हैं।

१३. फिर जब हमारी निशानियां आँखें खोलती उनके पास आईं बोले ये तो सरीह जादू है।

حَكِيمٍ عَلِيمٍ ﴿٦﴾
إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا
سَآتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُم بِشِهَابٍ
قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٧﴾
فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَن بُورِكَ مَن فِي
النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨﴾ لا
يَا مُوسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾
وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا
جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَا مُوسَىٰ
لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ﴿١٠﴾ ع
إِلَّا مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ
سُوءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١﴾
وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ فِي تِسْعِ آيَاتٍ
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿١٢﴾
فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا
هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾
وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ

१४. और उनके मुनकिर हुए और उनके दिलो में उनका यक़ीन था जुल्म और तकब्बुर से तो देखो कैसा अन्जाम हुआ फ़सादियो का।

रुकूअ २

१५. और बेशक हमने दाऊद और सुलेमान को बड़ा इल्म अ़ता फ़रमाया और दोनों ने कहा सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने हमें अपने बहुत से ईमानवाले बन्दों पर फ़ज़ीलत बख़्शी।

१६. और सुलेमान दाऊद का जा नशीन हुआ और कहा ऐ लोगों हमें परिंदों की बोली सिखाई गई और हर चीज़ में से हमको अ़ता हुआ बेशक यही ज़ाहिर फ़ज़्ल है।

१७. और जमा किए गए सुलेमान के लिए उसके लश्कर जिनों और आदमियों और परिंदो से तो वो रोके जाते थे।

१८. यहाँ तक कि जब चूंटियों के नाले पर आए, एक चूंटी बोली ऐ चींटियों अपने घरों में चली जाओ तुम्हें कुचल न डालें सुलेमान और उनके लश्कर बे ख़बरी में।

१९. तो उसकी बात से मुस्कुरा कर हँसा और अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र करूँ तेरे एहसान का जो तुने मुझपर और मेरे माँ बाप पर किए और ये कि मैं वो भला काम करूँ जो तुझे पसंद आए और मुझे अपनी रहमत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे कुर्बे ख़ास के सज़ावार हैं।

२०. और परिंदों का जाएज़ा लिया

ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
ع عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ
وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى
كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾
وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا
النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۗ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ
الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾
وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾
حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ
نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ
لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾
فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ
رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ
اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ
اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ
بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ أَرَى
الْهُدْهُدَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِينَ ﴿٢٠﴾
لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَاذْبَحَنَّهُ
أَوْ لَيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢١﴾
فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطتُّ بِمَا
لَمْ تُحِطْ بِهِ وَجِئْتُكَ مِن سَبَإٍ بِنَبَإٍ
يَقِينٍ ﴿٢٢﴾
إِنِّي وَجَدتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ
مِن كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾
وَجَدتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ
مِن دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ
لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾
أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا
تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾
اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٢٦﴾ السجدة
قَالَ سَنَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ
الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾
اذْهَب بِّكِتَابِي هَٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ

तो बोला मुझे क्या हुआ कि मैं हुदहुद को नहीं देखता या वो वाक़ई हाज़िर नहीं।

२१. ज़रूर मैं उसे सख़्त अज़ाब करूँगा या ज़िबह कर दूँगा या कोई रौशन सनद मेरे पास लाए।

२२. तो हुदहुद कुछ ज़्यादा देर न ठहरा और आकर अर्ज़ की कि मैं वो बात देख आया हूँ जो हुज़ूर ने न देखी और मैं शहरे सबा से हुज़ूर के पास एक यकीनी ख़बर लाया हूँ।

२३. मैं ने एक औरत देखी कि उनपर बादशाही कर रही है और उसे हर चीज़ में से मिला है और उसका बड़ा तख़्त है।

२४. मैंने उसे और उसकी क़ौम को पाया कि अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सजदा करते हैं और शैतान ने उनके अअमाल उनकी निगाह में सँवार कर उनको सीधी राह से रोक दिया तो वो राह नहीं पाते।

२५. क्यों नहीं सजदा करते अल्लाह को जो निकालता है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें और जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो।

२६. अल्लाह है कि उसके सिवा कोई सच्चा मअबूद नहीं वो बड़े अर्श का मालिक है।

२७. सुलेमान ने फ़रमाया अब हम देखेंगे कि तूने सच कहा या तू झूठों में है।

२८. मेरा ये फ़रमान ले जाकर उनपर डाल फिर उनसे अलग हटकर

देख कि वो क्या जवाब देते हैं।
२९. वो औरत बोली ऐ सरदारो बेशक मेरी तरफ़ एक इज़्ज़त वाला ख़त डाला गया।
३०. बेशक वो सुलेमान की तरफ़ से है और बेशक वो अल्लाह के नाम से है जो निहायत मेहरबान रहमवाला।
३१. ये कि मुझपर बुलन्दी न चाहो और गरदन रखते मेरे हुज़ूर हाज़िर हो।

रुकूअ ३

३२. बोली ऐ सरदारो मेरे इस मुआमले में मुझे राय दो मैं किसी मुआमले में कोई क़तई फ़ैसला नहीं करती जबतक तुम मेरे पास हाज़िर न हो।
३३. वो बोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई वाले हैं और इख़्तियार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक्म देती है।
३४. बोली बेशक बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं उसे तबाह कर देते है और उसके इज़्ज़त वालों को ज़लील और ऐसा ही करते हैं।
३५. और मैं उनकी तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ फिर देखूंगी कि ऐलची क्या जवाब लेकर पलटे।
३६. फिर जब वो सुलेमान के पास आया फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे अल्लाह ने दिया वो बेहतर है उससे जो तुम्हें दिया बल्कि तुम्ही अपने तोहफ़े पर ख़ुश होते हो।
३७. पलट जा उनकी तरफ़ तो

تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾
قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ
كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾
اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾
اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾
قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ
مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى
تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾
قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ
شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ
مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾
قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً
اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً
وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾
وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ
بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾
فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ
بِمَالٍ فَمَآ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ
بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾

جरूर हम उनपर वो लश्कर लाएंगे जिनकी उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उनको उस शहर से ज़लील करके निकाल देंगे यूँ कि वो पस्त होंगे।

३८. सुलेमान ने फ़रमाया ऐ दरबारियो तुममें कौन है कि वो उसका तख़्त मेरे पास ले आए क़ब्ल इसके कि वो मेरे हुज़ूर मुतीअ होकर हाज़िर हो।

३९. एक बड़ा ख़बीस जिन बोला कि मैं वो तख़्त हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा क़ब्ल इसके कि हुज़ूर इजलास बरख़ासत करें और मै बेशक उसपर कूव्वत वाला अमानतदार हूँ।

४०. उसने अर्ज़ की जिसके पास किताब का इल्म था कि मै उसे हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले फिर जब सुलेमान ने तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा ये मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या ना शुकरी और जो शुक्र करे वो अपने भले को शुक्र करता है और जो ना शुकरी करे तो मेरा रब बे परवाह है सब ख़ूबियों वाला।

४१. सुलेमान ने हुक्म दिया औरत का तख़्त उसके सामने वज़अ बदल कर बेगाना कर दो कि हम देखें कि वो राह पाती है या उनमें होती है जो ना वाक़िफ़ रहे।

४२. फिर जब वो आई उससे कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है बोली गोया ये वही है और हमको इस वाक़ेआ से पहले ख़बर मिल चुकी और हम फ़रमा बरदार हुए।

४३. और उसे रोका उस चीज़ ने

اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ
لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً
وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾
قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ
بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾
قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ
قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ
عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾
قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ
اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ
طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ
هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْۤ ءَاَشْكُرُ
اَمْ اَكْفُرُ ۗ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾
قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْۤ
اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾
فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۗ
قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ
قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾
وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ

اللهِ ۗ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾
قِيْلَ لَهَا ادْخُلِى الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ
حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ
قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬ؕ
قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ وَاَسْلَمْتُ
ع مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا
اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ
يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾
قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ
قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾
قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۚ قَالَ
طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ
تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾
وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ
يُّفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾
قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ
لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ
اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

जिसे वो अल्लाह के सिवा पूजती थी बेशक वो काफ़िर लोगों में से थी।

४४. उससे कहा गया सेहन में आ फिर जब उसने उसे देखा उसे गहरा पानी समझी और अपनी साक़े खोली सुलेमान ने फ़रमाया ये तो एक चिकना सेहन है शीशों जड़ा औरत ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और अब सुलेमान के साथ अल्लाह के हुज़ूर गरदन रखती हूँ जो रब सारे जहान का।

रुकूअ ४

४५. और बेशक हमने समूद की तरफ़ उनके हम क़ौम सालेह को भेजा कि अल्लाह को पूजो तो जभी वो दो गिरोह हो गए झगड़ा करते।

४६. सालेह ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम क्यों बुराई की जल्दी करते हो भलाई से पहले अल्लाह से बख़्शिश क्यों नहीं माँगते शायद तुमपर रहम हो।

४७. बोले हमने बुरा शगुन लिया तुमसे और तुम्हारे साथियों से फ़रमाया तुम्हारी बद शगूनी अल्लाह के पास है बल्कि तुम लोग फ़ित्ने में पड़े हो।

४८. और शहर में नौ शख़्श थे कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते।

४९. आपस में अल्लाह की क़समें खाकर बोले हम ज़रूर रात को छापा मारेंगे सालेह और उसके घरवालों पर फिर उसके वारिस से कहेंगे उस घरवालों के क़त्ल के वक़्त हम हाज़िर न थे और बेशक हम सच्चे हैं।

५०. और उन्होंने अपना सा मक्र किया और हमने अपनी ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई और वो ग़ाफ़िल रहे।

५१. तो देखो कैसा अन्जाम हुआ उनके मक्र का हमने हलाक कर दिया उन्हें और उनकी सारी क़ौम को।

५२. तो ये है उनके घर डहे पड़े बदला उनके ज़ुल्म का बेशक उसमें निशानी है जानने वालों के लिए।

५३. और हमने उनको बचा लिया जो ईमान लाए और डरते थे।

५४. और लूत को जब उसने अपनी क़ौम से कहा क्या बेहयाई पर आते हो और तुम सूझ रहे हो।

५५. क्या तुम मर्दों के पास मस्ती से जाते हो औरतें छोड़कर बल्कि तुम जाहिल लोग हो।

५६. तो उस की क़ौम का कुछ जवाब न था मगर ये कि बोले लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल दो ये लोग तो सुथरापन चाहते हैं।

५७. तो हमने उसे और उसके घरवालों को निजात दी मगर उसकी औरत को हमने ठहरा दिया था कि वो रह जाने वालों में है।

५८. और हमने उनपर एक बरसाओ बरसाया तो क्या ही बुरा बरसाओ था डराए हुओं का।

रुकूअ ५

५९. तुम कहो सब ख़ूबियाँ अल्लाह को और सलाम उसके चुने हुए बन्दे पर क्या अल्लाह बेहतर या ०उनके साझा शरीक।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا
دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾
فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۗ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾
وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾
وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ
الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾
اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ
النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّآ اَنْ قَالُوْۤا
اَخْرِجُوْۤا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ
اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا
مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾
وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ
ع الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾
قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ
اصْطَفٰى ۭ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

६०. या वो जिसने आसमान व ज़मीन बनाए और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा तो हमने उससे बाग़ उगाए रौनक़ वाले तुम्हारी ताक़त न थी कि उनके पेड़ उगाते क्या अल्लाह के साथ कोई और खुदा है बल्कि वो लोग राह से कतराते हैं।

६१. या वो जिसने ज़मीन बसने को बनाई और उसके बीच में नहरें निकालीं और उसके लिए लंगर बनाए और दोनों समन्दरों में आड़ रखी क्या अल्लाह के साथ और खुदा है बल्कि उनमें अक्सर जाहिल हैं।

६२. या वो जो लाचार की सुनता है जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई और तुम्हें ज़मीन का वारिस करता है क्या अल्लाह के साथ और खुदा है बहुत ही कम ध्यान करते हो।

६३. या वो जो तुम्हें राह दिखाता है अंधेरियों में खुशकी और तरी की और वो कि हवाएँ भेजता है अपनी रहमत के आगे खुशख़बरी सुनाती क्या अल्लाह के साथ कोई और खुदा है बरतर है अल्लाह उनके शिर्क से।

६४. या वो जो ख़ल्क़ की इबतिदा फ़रमाता है फिर उसे दोबारह बनाएगा और वो जो तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है क्या अल्लाह के साथ और कोई खुदा है तुम फ़रमाओ कि

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا
بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ
لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ
اللّٰهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾
أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ
خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ
وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ ءَاِلٰهٌ
مَّعَ اللّٰهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾
أَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ
وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ
الْأَرْضِ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ قَلِيْلًا مَّا
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾
أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ
بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۗ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ
تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾
أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ
يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۗ
ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ

إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٦٤﴾
قُل لَّا يَعْلَمُ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ
ٱلْغَيْبَ إِلَّا ٱللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ
أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾
بَلِ ٱدَّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِى ٱلْءَاخِرَةِ ۚ بَلْ
هُمْ فِى شَكٍّ مِّنْهَا ۖ بَلْ هُم مِّنْهَا
عَمُونَ ﴿٦٦﴾ ع
وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَءِذَا كُنَّا تُرَٰبًا
وَءَابَآؤُنَآ أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾
لَقَدْ وُعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَءَابَآؤُنَا مِن
قَبْلُ إِنْ هَٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ
ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾
قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَٱنظُرُوا۟
كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِى
ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا ٱلْوَعْدُ إِن
كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٧١﴾
قُلْ عَسَىٰٓ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم

अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो।

६५. तुम फ़रमाओ खुद ग़ैब नहीं जानते जो कोई आसमानों और ज़मीन में है मगर अल्लाह और उन्हें ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएंगे।

६६. क्या उनके इल्म का सिलसिला आख़िरत के जानने तक पहुँच गया कोई नहीं वो उसकी तरफ़ से शक में है बल्कि वो उससे अन्धे हैं।

रूकूअ ६

६७. और काफ़िर बोले क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएँगे क्या हम फिर निकाले जाएँगे।

६८. बेशक इसका वअदा दिया गया हमको और हमसे पहले हमारे बाप दादाओं को ये तो नहीं मगर अगलों की कहानियाँ।

६९. तुम फ़रमाओ ज़मीन में चलकर देखो कैसा हुआ अन्जाम मुजरिमों का।

७०. और तुम उनपर ग़म न खाओ और उनके मक्र से दिल तंग न हो।

७१. और कहते हैं कब आएगा ये वअदा अगर तुम सच्चे हो।

७२. तुम फ़रमाओ क़रीब है कि तुम्हारे पीछे आ लगी हो बअ्ज़ वो

चीज़ जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो।

७३. और बेशक तेरा रब फ़ज़्ल वाला है आदमियों पर लेकिन अक्सर आदमी हक़ नहीं मानते।

७४. और बेशक तुम्हारा रब जानता है जो उनके सीनों मे छुपी है और जो वो ज़ाहिर करते हैं।

७५. और जितने ग़ैब हैं आसमानों और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में है।

७६. बेशक ये कुरआन ज़िक्र फ़रमाता है बनी इसराईल से अक्सर वो बातें जिसमें वो इख़्तिलाफ़ करते हैं।

७७. और बेशक वो हिदायत और रहमत है मुसलमानों के लिए।

७८. बेशक तुम्हारा रब उनके आपस में फ़ैसला फ़रमाता है अपने हुक्म से और वही है इज़्ज़त वाला इल्मवाला।

७९. तो तुम अल्लाह पर भरोसा करो बेशक तुम रौशन हक़ पर हो।

८०. बेशक तुम्हारे सुनाए नहीं सुनते मुर्दे और न तुम्हारे सुनाए बहरे पुकार सुनें जब फिरें पीठ देकर।

८१. और अन्धों को गुमराही से तुम हिदायत करने वाले नही तुम्हारे

بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى
النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾
وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ
صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾
وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٧٥﴾
إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي
إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾
وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾
إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾
فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ
الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾
إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ
الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾
وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ

सुनाए तो वही सुनते है जो हमारी आयतों पर ईमान लाते है और वो मुसलमान है।

८२. और जब बात उन पर आ पड़ेगी हम ज़मीन से उनके लिए एक चौपाया निकालेंगे जो लोगों से कलाम करेगा इसलिए कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे।

रुकूअ ७

८३. और जिस दिन उठाएँगे हम हर गिरोह में से एक फ़ौज जो हमारी आयतों को झुठलाती हैं तो उनके अगले रोके जाएँगे कि पिछले उनसे आ मिलें।

८४. यहाँ तक कि जब सब हाज़िर हो लेंगे फ़रमाएगा क्या तुमने मेरी आयतें झुठलाई हालाँकि तुम्हारा इल्म उन तक न पहुँचता था या क्या काम करते थे।

८५. और बात पड़ चुकी उन पर उनके ज़ुल्म के सबब तो वो अब कुछ नही बोलते ।

८६. क्या उन्होंने न देखा कि हमने रात बनाई कि उसमें आराम करें और दिन को बनाया सुझाने वाला बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ है उन लोगों के लिए कि ईमान रखते हैं।

८७. और जिस दिन फूंका जाएगा सूर तो घबराए जाएँगे जितने आसमानो में है और जितने ज़मीन मे हैं मगर जिसे खुदा चाहे और सब उसके हुज़ूर

إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا
فَهُم مُّسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا
لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ
ع أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا
مِّمَّن يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ
يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾
حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي
وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾
وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ
لَا يَنطِقُونَ ﴿٨٥﴾

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

وَيَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ
مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي
الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلٌّ

हाज़िर हुए आजिज़ी करते।

८८. और तू देखेगा पहाड़ों को ख़याल करेगा कि वो जमे हुए है और वो चलते होंगे बादल की चाल ये काम है अल्लाह का जिसने हिकमत से बनाई हर चीज़ बेशक उसे ख़बर है तुम्हारे कामों की।

८९. जो नेकी लाए उसके लिए उससे बेहतर सिला है और उनको उस दिन की घबराहट से अमान है।

९०. और जो बदी लाए तो उनके मुँह औंधाए गए आग में तुम्हें क्या बदला मिलेगा मगर उसी का जो करते थे।

९१. मुझे तो यही हुक्म हुआ है कि पूजो इस शहर के रब को जिसने इसे हुरमत वाला किया है और सब कुछ उसी का है और मुझे हुक्म हुआ है कि फ़रमाँबरदारों में हूँ।

९२. और ये कि कुरआन की तिलावत करूँ तो जिस ने राह पाई उसने अपने भले को राह पाई और जो बहके तो फ़रमादो कि मैं तो यही डर सुनाने वाला हूँ।

९३. और फ़रमाओ कि सब ख़ूबियाँ अल्लाह के लिए हैं अनक़रीब वो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखायेगा तो उन्हें पहचान लोगे और ऐ महबूब

أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ﴿٨٧﴾

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً
وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ
الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ
خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٨٨﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ
مِنْهَا وَهُمْ مِنْ فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ
آمِنُونَ ﴿٨٩﴾

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ
وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ
إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٠﴾

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَٰذِهِ
الْبَلْدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ
شَيْءٍ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾

وَأَنْ أَتْلُوَ الْقُرْآنَ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ
فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ
فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿٩٢﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ

तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं ऐ लोगो तुम्हारे अअ़्माल से।

सूरए क़सस

मक्की है और इसमें अट्ठासी आयतें और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला।

रूकूअ १

२. ये आयत हैं रौशन किताब की ।

३. हम तुम पर पढ़ें मूसा और फ़िरऔन की सच्ची ख़बर उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

४. बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन में ग़लबा पाया था और उसके लोगों को अपना ताबेअ् बनाया उनमें एक गिरोह को कमज़ोर देखता उनके बेटों को ज़िबह करता और उनकी औरतों को ज़िन्दा रखता बेशक वो फ़सादी था।

५. और हम चाहते थे कि उन कमज़ोरों पर एह़सान फ़रमाएँ और उनको पेश्वा बनाएँ और उनके मुल्क व माल का उन्हीं को वारिस बनाएँ।

६. और उन्हें ज़मीन में क़ब्ज़ा दें और फ़िरऔन और हामान और उनके लश्करों को वही दिखा दे जिसका उन्हे उनकी तरफ़ से ख़तरा है ।

७. और हमने मूसा की माँ को इल्हाम फ़रमाया कि उसे दूध पिला

فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا
ع تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾
تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾
نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ
بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾
اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْاَرْضِ وَ
جَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ
طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ
وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾
وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ
اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ
اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾
وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ
فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ

फिर जब तुझे उससे अंदेशा हो तो दरिया में डाल दे और न डर और न ग़म कर बेशक हम उसे तेरी तरफ़ फेर लाएँगे और इसे रसूल बनाएँगे।

८. तो उसे उठा लिया फ़िरऔन के घरवालों ने कि वो उनका दुश्मन और उनपर ग़म हो बेशक फ़िरऔन और हामान और उनके लश्कर ख़ताकार थे।

९. और फ़िरऔन की बीबी ने कहा ये बच्चा मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है इसे क़त्ल न करो शायद ये हमें नफ़अ़ दे या हम इसे बेटा बना लें और वो बेख़बर थे।

१०. और सुबह को मूसा की माँ का दिल बे सब्र होगया ज़रूर करीब था कि वो उसका हाल खोल देती अगर हम न ढारस बंधाते उसके दिल पर कि उसे हमारे वअ़दे पर यक़ीन रहे।

११. और उसकी माँ ने उसकी बहन से कहा उसके पीछे चली जा तो वो उसे दूर से देखती रही और उनको ख़बर न थी।

१२. और हमने पहले ही सब दाईयाँ उसपर हराम कर दी थी तो

وَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي
الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا
رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧

فَالْتَقَطَهٗۤ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ
لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ
وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا
خٰطِـِٕيْنَ ۝٨

وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ
لِّيْ وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰۤى اَنْ
يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ
اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَاۤ اَنْ
رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ
عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١١

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

बोलो क्या मै तुम्हे बता दू ऐसे घरवाले कि तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें और वो इसके ख़ैरख़्वाह है।	فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ﴿۱۲﴾
१३. तो हमने उसे उसकी माँ की तरफ़ फेरा कि माँ की आँख ठडी हो और ग़म न खाए और जान ले कि अल्लाह का वअदा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नही जानते।	فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾ ع
रुकूअ २	
१४. और जब अपनी जवानी को पहुँचा और पूरे ज़ोर पर आया हमने उसे हुक्म और इल्म अता फ़रमाया और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।	وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴﴾
१५. और उस शहर में दाख़िल हुआ जिस वक़्त शहर वाले दोपहर के ख़्वाब में बेख़बर थे तो उसमें दो मर्द लड़ते पाए एक मूसा के गिरोह से था और दूसरा उसके दुश्मनों से तो वो जो उसके गिरोह से था उसने मूसा से मदद माँगी उसपर जो उसके दुश्मनो से था तो मूसा ने उसके घूंसा मारा तो उसका काम तमाम कर दिया कहा ये काम शैतान की तरफ़ से हुआ बेशक वो दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला।	وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾
१६. अर्ज की ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़्यादती की तू मुझे बख़्श दे तो रब ने उसे बख़्श दिया	قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾

बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है।

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ
أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ﴿١٧﴾

१७. अर्ज़ की ऐ मेरे रब जैसा तूने मुझपर एहसान किया तो अब हरगिज़ मै मुजरिमों का मददगार न होऊँगा।

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ
فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ
يَسْتَصْرِخُهُ ۚ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ
لَغَوِيٌّ مُبِينٌ ﴿١٨﴾

१८. तो सुबह की उस शहर में डरते हुए इस इन्तेज़ार में कि क्या होता है जभी देखा कि वो जिसने कल उनसे मदद चाही थी फ़रियाद कर रहा है मूसा ने उससे फ़रमाया बेशक तू खुला गुमराह है।

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي
هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا قَالَ يَا مُوسَىٰ أَتُرِيدُ
أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ ۖ
إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي
الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ
مِنَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٩﴾

१९. तो जब मूसा ने चाहा कि उसपर गिरफ़्त करे जो उन दोनों का दुश्मन है वो बोला ऐ मूसा क्या तुम मुझे वैसा ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा तुमने कल एक शख़्स को क़त्ल कर दिया तुम तो यही चाहते हो कि ज़मीन में सख़्तगीर बनो और इस्लाह करना नहीं चाहते।

وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَقْصَى الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ
قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ
لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ
النَّاصِحِينَ ﴿٢٠﴾

२०. और शहर के परले किनारे से एक शख़्स दौड़ता आया कहा ऐ मूसा बेशक दरबार वाले आपके क़त्ल का मशवरा कर रहे है तो निकल जाइए मैं आपका ख़ैरख़्वाह हूँ।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ قَالَ
رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢١﴾ ع

२१. तो उस शहर से निकला डरता हुआ इस इन्तेज़ार में कि अब क्या होता है अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे सितमगारों से बचा ले।

रुकूअ ३

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ
عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ
السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾

२२. और जब मदयन की तरफ़ मुतवज्जा हुआ कहा क़रीब है कि मेरा रब मुझे सीधी राह बताए।

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ
اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۠ وَوَجَدَ
مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ
قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ
حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَاَبُوْنَا
شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾

२३. और जब मदयन के पानी पर आया वहाँ लोगों के एक गिरोह को देखा कि अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और उनसे उस तरफ़ दो औरतें देखी कि अपने जानवरों को रोक रही हैं मूसा ने फ़रमाया तुम दोनों का क्या हाल है वो बोलीं हम पानी नहीं पिलाते जबतक सब चरवाहे पिलाकर फेर न ले जाएँ और हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ
فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ
خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾

२४. तो मूसा ने उन दोनों के जानवरों को पानी पिला दिया फिर साया की तरफ फिरा अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं उस खाने का जो तू मेरे लिए उतारे मोहताज हूँ।

فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫
قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ
اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَ
قَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٝ
نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

२५. तो उन दोनों में से एक उसके पास आई शर्म से चलती हुई बोली मेरा बाप तुम्हें बुलाता है कि तुम्हें मज़दूरी दे उसकी जो तुमने हमारे जानवरों को पानी पिलाया है जब मूसा उसके पास आया और उसे बातें कह सुनाईं उसने कहा डरिये नहीं आप बच गए ज़ालिमों से।

قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫
اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ

२६. उनमें की एक बोली ऐ मेरे बाप इनको नौकर रखलो बेशक बेहतर

नौकर वो जो ताक़तवर अमानत दार हो।

२७. कहा मैं चाहता हूँ कि अपनी दोनों बेटियों में से एक तुम्हें ब्याह दूँ इस महर पर कि तुम आठ बरस मेरी मुलाज़मत करो फिर अगर पूरे दस बरस कर लो तो तुम्हारी तरफ़ से है और मैं तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहता क़रीब है इंशाअल्लाह तुम मुझे नेकों में पाओगे।

२८. मूसा ने कहा यह मेरे और आपके दरमियान इक़रार हो चुका मैं इन दोनों में जो मीआद पूरी कर दूं तो मुझपर कोई मुतालबा नहीं और हमारे इस कहे पर अल्लाह का ज़िम्मा है।

रुकूअ ४

२९. फिर जब मूसा ने अपनी मीआद पूरी कर दी और अपनी बीबी को लेकर चला तूर की तरफ़ से एक आग देखी अपनी घरवाली से कहा तुम ठहरो मुझे तूर की तरफ़ से एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं वहाँ से कुछ ख़बर लाऊँ या तुम्हारे लिए कोई आग की चिंगारी लाऊँ कि तुम तापो।

३०. फिर जब आग के पास हाज़िर हुआ निदा की गई मैदान के दाहिने कनारे से बरकत वाले मुक़ाम में पेड़ से कि ऐ मूसा बेशक मैं ही हूँ अल्लाह रब सारे जहान का।

الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ﴿٢٦﴾

قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ
إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ عَلَىٰ أَن
تَأْجُرَنِي ثَمَانِيَ حِجَجٍ ۖ فَإِنْ أَتْمَمْتَ
عَشْرًا فَمِنْ عِندِكَ ۖ وَمَا أُرِيدُ
أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۚ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ
اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٧﴾

قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا
الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ
وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾ ع

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ
بِأَهْلِهِ آنَسَ مِن جَانِبِ الطُّورِ نَارًا ۖ
قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ
نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ
جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِن شَاطِئِ الْوَادِ
الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ
الشَّجَرَةِ أَن يَا مُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ
رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٠﴾

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَآهَا
تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَّ
لَمْ يُعَقِّبْ ۚ يٰمُوسَىٰ أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۖ
إِنَّكَ مِنَ الْآمِنِينَ ﴿٣١﴾

३१. और ये कि डाल दे अपना असा फिर जब मूसा ने उसे देखा लहराता हुआ गोया साँप है पीठ फेर कर चला और मुड़कर न देखा ऐ मूसा सामने आ और डर नही बेशक तुझे अमान है।

اُسْلُكْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۫ وَّاضْمُمْ
إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ
بُرْهَانَانِ مِنْ رَّبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَ
مَلَإِيْهِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فٰسِقِينَ ﴿٣٢﴾

३२. अपना हाथ गिरेबान में डाल निकलेगा सफ़ेद चमकता बे ऐब और अपना हाथ अपने सीने पर रखले ख़ौफ दूर करने को तो ये दो हुज्जतें हैं तेरे रब की फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ बेशक वो बे हुक्म लोग है।

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا
فَأَخَافُ أَنْ يَّقْتُلُونِ ﴿٣٣﴾

३३. अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने उनमें एक जान मार डाली है तो डरता हूँ कि मुझे क़त्ल कर दें।

وَأَخِي هٰرُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي
لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُّصَدِّقُنِيْٓ ۫
إِنِّيْٓ أَخَافُ أَنْ يُّكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾

३४. और मेरा भाई हारून उसकी ज़बान मुझसे ज्यादा साफ़ है तो उसे मेरी मदद के लिए रसूल बना कि मेरी तसदीक़ करे मुझे डर है कि वो मुझे झुठलाएँगे।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَ
نَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُونَ
إِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ أَنْتُمَا وَمَنِ
اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُونَ ﴿٣٥﴾

३५. फ़रमाया क़रीब है कि हम तेरे बाज़ू को तेरे भाई से कूव्वत देंगे और तुम दोनों को ग़ल्बा अता फ़रमाएँगे तो वो तुम दोनोंका कुछ नुक़्सान न कर सकेंगे हमारी निशानियों के सबब तुम दोनो और जो तुम्हारी पैरवी करेंगे ग़ालिब आओगे।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ

३६. फिर जब मूसा उनके पास

قَالُوۡا مَا هٰذَاۤ اِلَّا سِحۡرٌ مُّفۡتَرًى وَّمَا سَمِعۡنَا بِهٰذَا فِىۡۤ اٰبَآئِنَا الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۳۶﴾	हमारी रौशन निशानियाँ लाया बोला कि ये तो नहीं मगर बनावट का जादू और हमने अपने अगले बाप दादाओं में ऐसा न सुना।
وَقَالَ مُوۡسٰى رَبِّىۡۤ اَعۡلَمُ بِمَنۡ جَآءَ بِالۡهُدٰى مِنۡ عِنۡدِهٖ وَمَنۡ تَكُوۡنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفۡلِحُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۳۷﴾	३७. और मूसा ने फ़रमाया मेरा रब खूब जानता है जो उसके पाससे हिदायत लाया और जिसके लिए आख़ेरत का घर होगा बेशक ज़ालिम मुराद को नही पहुँचते।
وَقَالَ فِرۡعَوۡنُ يٰۤاَيُّهَا الۡمَلَاُ مَا عَلِمۡتُ لَـكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرِىۡ ۚ فَاَوۡقِدۡ لِىۡ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيۡنِ فَاجۡعَلْ لِّىۡ صَرۡحًا لَّعَلِّىۡۤ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوۡسٰى ۙ وَاِنِّىۡ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ ﴿۳۸﴾	३८. और फ़िरऔन बोला ऐ दरबारियों मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई खुदा नहीं जानता तो ऐ हामान मेरे लिए गारा पका कर एक महल बना कि शायद मैं मूसा के खुदा को झाँक आऊँ और बेशक मेरे गुमान में तो वो झूटा है।
وَاسۡتَكۡبَرَ هُوَ وَجُنُوۡدُهٗ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَقِّ وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ اِلَيۡنَا لَا يُرۡجَعُوۡنَ ﴿۳۹﴾	३९. और उसने और उसके लश्करियों ने ज़मीन में बेजा बड़ाई चाही और समझे कि उन्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं।
فَاَخَذۡنٰهُ وَجُنُوۡدَهٗ فَنَبَذۡنٰهُمۡ فِى الۡيَمِّ ۚ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۴۰﴾	४०. तो हमने उसे और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया तो देखो कैसा अन्जाम हुआ सितमगारों का।

४१. और उन्हें हमने दोज़खियो का पेश्वा बनाया कि आग की तरफ़ बुलाते है और क़यामत के दिन उनकी मदद न होगी।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ
وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

४२. और इस दुनिया मे हमने उनके पीछे लअनत लगाई और क़यामत के दिन उनका बुरा है।

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ
ع يَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾

रुकूअ ५

४३. और बेशक हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई बाद इसके कि अगली संगतें हलाक फ़रमा दीं जिस में लोगों के दिल की आँखे खोलने वाली बातें और हिदायत और रहमत ताकि वो नसीहत मानें।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ
بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى
بَصَآىِٕرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً
لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

४४. और तुम तूर की जानिब मग़रिब में न थे जबकि हमने मूसा को रिसालत का हुक्म भेजा और उस वक़्त तुम हाज़िर न थे।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ
اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ
مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾

४५. मगर हुआ ये कि हमने संगतें पैदा कीं कि उन पर ज़माना दराज़ गुज़रा और न तुम अहले मदयन में मुक़ीम थे उनपर हमारी आयतें पढ़ते हुए हाँ हम रसूल बनाने वाले हुए।

وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْۤ اَهْلِ
مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا
كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾

४६. और न तुम तूर के किनारे थे जब हमने निदा फ़रमाई हाँ तुम्हारे रब की मेहर है (कि तुम्हें ग़ैब के इल्म दिए) कि तुम ऐसी क़ौम को डर सुनाओ जिसके पास तुमसे पहले कोई डर सुनाने वाला न आया ये उम्मीद करते हुए कि उनको नसीहत हो।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا
وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ
قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ
قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا
لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ
اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

४७. और अगर न होता कि कभी पहुँचती उन्हे कोई मुसीबत उसके सबब जो उनके हाथों ने आगे भेजा तो कहते ऐ हमारे रब तूने क्यों न भेजा हमारी तरफ़ कोई रसूल कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और ईमान लाते।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا
قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ
مُوْسٰى ۚ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ
مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ
تَظٰهَرَا ۗ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

४८. फिर जब उनके पास हक़ आया हमारी तरफ़ से बोले उन्हें क्यों न दिया गया जो मूसा को दिया गया क्या उसके मुनकिर न हुए थे जो पहले मूसा को दिया गया बोले दो जादू हैं एक दोसरे की पुश्ती पर और बोले हम इन दोनों के मुनकिर हैं।

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾

४९. तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों किताबों से ज़्यादा हिदायत की हो मैं उसकी पैरवी करूँगा अगर तुम सच्चे हो।

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا
يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَمَنْ اَضَلُّ
مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ
اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾ ع

५०. फिर अगर वो ये तुम्हारा फ़रमाना कुबूल न करें तो जान लो कि बस वो अपनी ख़्वाहिशों ही के पीछे हैं और उससे बढ़कर गुमराह कौन जो अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे अल्लाह की हिदायत से जुदा बेशक अल्लाह हिदायत नहीं फ़रमाता ज़ालिम लोगों को।

रूकूअ ६

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ ط

५१. और बेशक हमने उनके लिए बात मुसलसल उतारी कि वो ध्यान करें।

५२. जिनको हमने इससे पहले किताब दी वो इसपर ईमान लाते है।

५३. और जब उनपर ये आयतें पढ़ी जाती हैं कहते हैं हम इसपर ईमान लाए बेशक यही हक़ है हमारे रब के पाससे हम इससे पहले ही गरदन रख चुके थे ।

५४. उनको उनका अज्र दोबाला दिया जाएगा बदला उनके सब्र का और वो भलाई से बुराई को टालते हैं और हमारे दिएसे कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं।

५५. और जब बेहूदा बात सुनते हैं उससे तग़ाफ़ुल करते हैं और कहते हैं हमारे लिए हमारे अमल और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल बस तुमपर सलाम हम जाहिलों के ग़रज़ी नही।

५६. बेशक ये नहीं कि तुम जिसे अपनी तरफ़ से चाहो हिदायत कर दो हाँ अल्लाह हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और वो ख़ूब जानता है हिदायत वालों को।

५७. और कहते है अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो लोग हमारे मुल्क से हमें उचक लें जाएँगे क्या हमने उन्हे जगह न दी अमान वाली हरम में जिसकी तरफ़ हर चीज़ के फल लाए जाते है हमारे पास की रोज़ी लेकिन उनमें अक्सर को इल्म नहीं।

الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ
هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٢

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ
اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ
قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ۝٥٣

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ
بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٥٤

وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ
وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۡ
سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۡ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ۝٥٥

اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَ
لٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ
هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝٥٦

وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ
نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ۭ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ
لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ
كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٧

५८. और कितने शहर हमने हलाक कर दिए जो अपने अैश पर इतरा गए थे तो ये हैं उनके मकान कि उनके बाद उनमें सुकूनत न हुई मगर कम और हम ही वारिस हैं।

५९. और तुम्हारा रब शहरों को हलाक नहीं करता जब तक उनके अस्ल मल्जा में रसूल न भेजे जो उनपर हमारी आयतें पढ़े और हम शहरों को हलाक नहीं करते मगर जबकि उनके साकिन सितमगार हों।

६०. और जो कुछ चीज़ तुम्हें दी गई है वो दुनयवी ज़िन्दगी का बरतावा और उसका सिंगार है और जो अल्लाह के पास है वो बेहतर और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।

रुकूअ ७

६१. तो क्या वो जिसे हमने अच्छा वअ्दा दिया तो वो उससे मिलेगा उस जैसा है जिसे हमने दुनयवी ज़िन्दगी का बरताव बरतने दिया फिर वो क़यामत के दिन गिरफ़्तार करके हाज़िर लाया जाएगा।

६२. और जिस दिन उन्हें निदा करेगा तो फ़रमाएगा कहाँ हैं मेरे वो शरीक जिन्हें तुम गुमान करते थे।

६३. कहेंगे कि वो जिनपर बात साबित हो चुकी ऐ हमारे रब ये हैं वो जिन्हें हमने गुमराह किया हमने उन्हें

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ
مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ
تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۗ وَ
كُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٨﴾

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى
حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْۤ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِى الْقُرٰۤى
اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

وَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ
اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ
لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ
الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ
شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾

قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ
رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ

गुमराह किया जैसे ख़ुद गुमराह हुए थे हम उनसे बेज़ार होकर तेरी तरफ़ रूजूअ लाते हैं वो हमको न पूजते थे।	كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾
६४. और उनसे फ़रमाया जाएगा अपने शरीकों को पुकारो तो वो पुकारेंगे तो वो उनकी न सुनेंगे और देखेंगे अज़ाब क्या अच्छा होता अगर वो राह पाते।	وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾
६५. और जिस दिन उन्हें निदा करेगा तो फ़रमाएगा तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया।	وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾
६६. तो उस दिन उनपर ख़बरें अन्धी हो जाएँगी तो वो कुछ पूछ गछ न करेंगे।	فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾
६७. तो वो जिसने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया क़रीब है कि वो राहयाब हो।	فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾
६८. और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और पसन्द फ़रमाता है उनका कुछ इख़्तियार नहीं पाकी और बरतरी है अल्लाह को उनके शिर्क से।	وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾
६९. और तुम्हारा रब जानता है जो उनके सीनों मे छुपा है और जो ज़ाहिर करते हैं।	وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾
७०. और वही है अल्लाह कि कोई ख़ुदा नहीं उसके सिवा उसी की तअ़रीफ़ है दुनिया और आख़ेरत में और उसी का हुक्म है और उसी की	وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ

तरफ़ फिर जाओगे।

७१. तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर अल्लाह हमेशा तुमपर क़यामत तक रात रखे तो अल्लाह के सिवा कौन खुदा है जो तुम्हें रोशनी लादे तो क्या तुम सुनते नहीं।

७२. तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर अल्लाह क़यामत तक हमेशा दिन रखे तो अल्लाह के सिवा कौन खुदा है जो तुम्हें रात ला दे जिसमें आराम करो तो क्या तुम्हें सूझता नहीं।

७३. और उसने अपनी मेहर से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उसका फ़ज़्ल ढूँढो और इस लिए कि तुम हक़ मानो।

७४. और जिस दिन उन्हें निदा करेगा तो फ़रमाएँगा कहाँ हैं मेरे वो शरीक जो तुम बकते थे।

७५. और हर गिरोह में से हम एक गवाह निकाल कर फ़रमाएँगे अपनी दलील लाओ तो जान लेंगे कि हक़ अल्लाह का है और उनसे खोई जाएँगी जो बनावटें करते थे।

७६. बेशक क़ारून मूसा की क़ौम से था फिर उसने उनपर ज़्यादती की और हमने उसको इतने ख़ज़ाने दिए

وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٧٠
قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن جَعَلَ ٱللَّهُ عَلَيْكُمُ
ٱلَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ
مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ ٱللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَآءٍ
أَفَلَا تَسْمَعُونَ ٧١
قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن جَعَلَ ٱللَّهُ عَلَيْكُمُ
ٱلنَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ
مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ ٱللَّهِ يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ
تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ٧٢
وَمِن رَّحْمَتِهِۦ جَعَلَ لَكُمُ ٱلَّيْلَ
وَٱلنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا۟ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا۟
مِن فَضْلِهِۦ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ٧٣
وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِىَ
ٱلَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ٧٤
وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا
فَقُلْنَا هَاتُوا۟ بُرْهَٰنَكُمْ فَعَلِمُوٓا۟
أَنَّ ٱلْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا
كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ٧٥ ع
إِنَّ قَٰرُونَ كَانَ مِن قَوْمِ مُوسَىٰ

जिनकी कुंजियाँ एक ज़ोर आवर जमाअत पर भारी थीं जब उससे उसकी क़ौम ने कहा इतरा नहीं बेशक अल्लाह इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता।

७७. और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उससे आख़ेरत का घर तलब कर और दुनिया में अपना हिस्सा न भूल और एहसान कर जैसा अल्लाह ने तुझ पर एहसान किया और ज़मीन में फ़साद न चाह बेशक अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता।

७८. बोला ये तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है और क्या उसे ये नहीं मअ्लूम कि अल्लाह ने उससे पहले वो संगतें हलाक फ़रमा दीं जिनकी क़ूवतें उससे सख़्त थी और जमअ उस से ज़्यादा और मुजरिमों से उनके गुनाहों की पूछ नहीं।

७९. तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में बोले वो जो दुनिया की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी तरह हमको भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उसका बड़ा नसीब है।

८०. और बोले वो जिन्हें इल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का सवाब बेहतर है उसके लिए जो

فَبَغٰى عَلَيْهِمْ وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ
مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ
اُولِى الْقُوَّةِ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ
وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَ
اَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَ
لَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ
اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ
قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ
مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا وَلَا يُسْئَلُ
عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِىْ زِيْنَتِهٖ
قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ قَارُوْنُ
اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ

ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَ
عَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا
الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾

ईमान लाए और अच्छे काम करे और ये उन्ही को मिलता है जो सब्र वाले है।

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۟
فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾

८१. तो हमने उसे और उसके घरको ज़मीन में धँसा दिया तो उसके पास कोई जमाअत न थी कि अल्लाह से बचाने में उसकी मदद करती और न वो बदला ले सका।

وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ
بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ
وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا
لَخَسَفَ بِنَا ۗ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع

८२. और कल जिसने उसके मरतबे की आरज़ू की थी सुबह कहने लगे अजब बात है अल्लाह रिज़्क़ वसीअ् करता है अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है अगर अल्लाह हमपर एहसान न फ़रमाता तो हमें भी धँसा देता ऐ अजब काफ़िरों का भला नहीं।

रूकूअ ९

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ
لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا
فَسَادًا ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾

८३. ये आख़िरत का घर हम उनके लिए करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और आक़िबत परहेज़गारों ही की है।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ
وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى
الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا

८४. जो नेकी लाए उसके लिए उससे बेहतर है और जो बदी लाए बद काम वालों को बदला न मिलेगा मगर जितना किया था।

كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ
لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ
مَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨٥﴾

وَمَا كُنتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ
الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۖ فَلَا
تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ
إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ ۖ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ
وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۘ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ
إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَسِتُّونَ آيَةً وَسَبْعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الٓمٓ ﴿١﴾

أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن

८५. बेशक जिसने तुम्हें तुमपर कुरआन फ़र्ज़ किया वो तुम्हें फेर ले जाएगा जहाँ फिरना चाहते हो तुम फ़रमाओ मेरा रब ख़ूब जानता है उसे जो हिदायत लाया और जो खुली गुमराही में है।

८६. और तुम उम्मीद न रखते थे कि किताब तुमपर भेजी जाएगी हाँ तुम्हारे रब ने रहमत फ़रमाई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की पुश्ती (मदद) न करना।

८७. और हरगिज़ वो तुम्हें अल्लाह की आयतों से न रोकें बाद इस के कि वो तुम्हारी तरफ़ उतारी गईं और अपने रब की तरफ़ बुलाओ और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना।

८८. और अल्लाह के साथ दूसरे ख़ुदा को न पूज उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं हर चीज़ फ़ानी है सिवा उसकी ज़ात के उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ फिर जाओगे।

सूरए अन्कबूत

मक्की है और इसमें उन्नासी आयतें और सात रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहमवाला

रूकूअ १

२. क्या लोग इस घमंड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिए जाएँगे कि कहे हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी।

يَقُولُوٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿٢﴾
وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا
وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣﴾
اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ
اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٤﴾
مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ
اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ﴿٥﴾
وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ
اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧﴾
وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ
وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ
لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَيَّ
مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾

३. और बेशक हमने उनसे अगलों को जांचा तो ज़रूर अल्लाह सच्चों को देखेगा और ज़रूर झूठों को देखेगा।

४. या ये समझे हुए है वो जो बुरे काम करते हैं कि हमसे कहीं निकल जाएँगे क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं।

५. जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो तो बेशक अल्लाह की मिआद ज़रूर आने वाली है और वही सुनता जानता है।

६. और जो अल्लाह की राह में कोशिश करे तो अपने ही भले को कोशिश करता है बेशक अल्लाह बेपरवाह है सारे जहान से।

७. और जो ईमान लाए और अच्छे काम किए हम ज़रूर उनकी बुराइयाँ उतार देंगे और ज़रूर उन्हे उस काम पर बदला देंगे जो उनके सब कामों मेंअच्छा था।

८. और हमने आदमी को ताकीद की अपने माँ बाप के साथ भलाई की और अगर वो तुझसे कोशिश करे कि तू मेरा शरीक ठहरा उसे जिसका तुझे इल्म नहीं तो उनका कहा न मान मेरी ही तरफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें जो तुम करते थे।

९. और जो ईमान लाए और

अच्छे काम किए ज़रूर हम उन्हे नेकों में शामिल करेंगे।

१०. और बअ़्ज़ आदमी कहते है हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब अल्लाह की राह में उन्हे कोई तकलीफ़ दी जाती है तो लोगों के फ़ित्ने को अल्लाह के अ़ज़ाब के बराबर समझते है और अगर तुम्हारे रब के पास से मदद आए तो ज़रूर कहेंगे हमतो तुम्हारे ही साथ थे क्या अल्लाह खूब नही जानता जो कुछ जहाँ भरके दिलों में है।

११. और ज़रूर अल्लाह ज़ाहिर कर देगा ईमानवालो को और ज़रूर ज़ाहिर कर देगा मुनाफ़िक़ों को।

१२. और काफ़िर मुसलमानों से बोले हमारी राह पर चलो और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे हालाँकि वो उनके गुनाहों में से कुछ न उठाएँगे बेशक वो झूठे हैं।

१३. और बेशक ज़रूर अपने बोझ उठाएँगे और अपने बोझों के साथ और बोझ और ज़रूर क़यामत के दिन पूछे जाएँगे जो कुछ बोहतान उठाते थे।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ﴿٩﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ۭ وَلَىِٕنْ جَاۗءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۭ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿١١﴾

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ۭ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۡ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾ ع

रुकूअ २

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ
فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ
عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ
ظَالِمُونَ ⑭

१४. और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो वो उनमें पचास साल कम हज़ार बरस रहा तो उन्हें तूफ़ान ने आ लिया और वो ज़ालिम थे।

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَ
جَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ⑮

१५. तो हमने उसे और कश्ती वालों को बचा लिया और उस कश्ती को सारे जहाँन के लिए निशानी किया।

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا
اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑯

१६. और इब्राहीम को जब उसने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि अल्लाह को पूजो और उससे डरो उसमें तुम्हारा भला है अगर तुम जानते।

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ
الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا
عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ
وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ⑰

१७. तुम तो अल्लाह के सिवा बुतों को पूजते हो और निरा झूठ गढ़ते हो बेशक वो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं तो अल्लाह के पास रिज़्क़ ढूँढो और उसकी बन्दगी करो और उसका एहसान मानो तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है।

وَإِنْ تُكَذِّبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا
الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ⑱

१८ और अगर तुम झुठलाओ तो तुमसे पहले कितने ही गिरोह झुठला चुके हैं और रसूल के ज़िम्मे नही मगर साफ़ पहुँचा देना।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ

१९. और क्या उन्होंने न देखा अल्लाह क्यो कर ख़ल्क़ की इब्तिदा

फ़रमाता है फिर इसे दोबारह बनायेगा बेशक ये अल्लाह को आसान है।

२०. तुम फ़रमाओ ज़मीन में सफ़र कर के देखो अल्लाह क्यों कर पहले बनाता है फिर अल्लाह दूसरी उठान उठाता है बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

२१. अज़ाब देता है जिसे चाहे और रहम फ़रमाता है जिसपर चाहे और तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है।

२२. और न तुम ज़मीन में क़ाबू से निकल सको और न आसमान में और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला और न मददगार।

रुकूअ ३

२३. और वो जिन्होंने मेरी आयतों और मेरे मिलने को न माना वो हैं जिन्हें मेरी रहमत की आस नहीं और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

२४. तो उसकी क़ौम को कुछ जवाब बन न आया मगर ये बोले उन्हें क़त्ल कर दो या जला दो तो अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ हैं ईमानवालों के लिए।

२५. और इब्राहीम ने फ़रमाया तुमने तो अल्लाह के सिवा ये बुत बना

الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى
اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا
كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ
النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن
يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾

وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن
دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ
أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِن رَّحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا
اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ
النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ

أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَوٰةِ
الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ
بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم
بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم
مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٢٥﴾

लिए है जिनसे तुम्हारी दोस्ती यही दुनिया की ज़िन्दगी तक है फिर क़यामत के दिन तुममें एक दूसरे के साथ कुफ्र करेगा और एक दूसरे पर लअ्नत डालेगा और तुम सब का ठिकाना जहन्नम है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं।

فَآمَنَ لَهُ لُوطٌ ۘ وَقَالَ إِنِّي
مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾

२६. तो लूत उस पर ईमान लाया और इब्राहीम ने कहा मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूँ बेशक वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَ
جَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ
وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُ
فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٧﴾

२७. और हमने उसे इसहाक़ और यअ्क़ूब अ़ता फ़रमाए और हमने उसकी औलादमें नुबूव्वत और किताब रखी और हमने दुनिया में उसका सवाब उसे अ़ता फ़रमाया और बेशक आख़िरत में वो हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ
لَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا
مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾

२८ . और लूत को नजात दी जब उसने अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम बेशक बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले दुनिया भर में किसी ने न किया।

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ
السَّبِيلَ ۙ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمُ
الْمُنكَرَ ۖ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا
أَن قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِن

२९. क्या तुम मर्दों से बदफ़ेअ्ली करते हो और राह मारते हो और अपनी मजलिस में बुरी बात करते हो तो उसकी क़ौम का कुछ जवाब न हुआ मगर ये कि बोले हमपर अल्लाह का अज़ाब लाओ अगर तुम सच्चे हो।

३०. अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद कर इन फ़सादी लोगों पर।

रुकूअ ४

३१. और जब हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास मुज़दह लेकर आए बोले हम ज़रूर इस शहर वालों को हलाक करेंगे बेशक इसके बसने वाले सितमगार हैं।

३२. कहा इसमें तो लूत है फ़रिश्ते बोले हमें खूब मअलूम है जो कोई इसमें है ज़रूर हम उसे और उसके घरवालों को नजात देंगे मगर उसकी औरत को वो रह जाने वालों में है।

३३. और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आए उनका आना उसे नागवार हुआ और उनके सबब दिल तंग हुआ और उन्होंने कहा न डरिए और न ग़म कीजिए बेशक हम आपको और आपके घरवालों को नजात देंगे मगर आपकी औरत वो रह जाने वालों में है।

३४. बेशक हम इस शहर वालों पर आसमान से अज़ाब उतारने वाले हैं बदला इनकी नाफ़रमानियों का।

३५. और बेशक हमने उससे

كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ٢٩

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ
الْمُفْسِدِيْنَ ٣٠

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ
بِالْبُشْرٰى قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ
هٰذِهِ الْقَرْيَةِ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا
ظٰلِمِيْنَ ٣١

قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا قَالُوْا نَحْنُ
اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا لَنُنَجِّيَنَّهٗ
وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ كَانَتْ مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ٣٢

وَلَمَّآ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا
سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا
وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ اِنَّا
مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ
مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ٣٣

اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ
الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا

كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾
وَلَقَد تَّرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً
لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾
وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا
فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا
الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي
الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٣٦﴾
فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ
فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٣٧﴾
وَعَادًا وَثَمُودَا وَقَد تَّبَيَّنَ لَكُم
مِّن مَّسَاكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ
وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ﴿٣٨﴾
وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ
وَلَقَدْ جَاءَهُم مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ
فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا
سَابِقِينَ ﴿٣٩﴾
فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنبِهِ فَمِنْهُم

रौशन निशानी बाक़ी रखी अक़्ल वालों के लिए।

३६. मदयन की तरफ़ उनके हम क़ौम शुऐब को भेजा तो उसने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो और पिछले दिन की उम्मीद रखो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो।

३७. तो उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया तो सुबह अपने घरों मे घुटनों के बल पड़े रह गए।

३८. और आद और समूद को हलाक फ़रमाया और तुम्हें उनकी बस्तियाँ मअ्लूम हो चुकी हैं और शैतान ने उनके कोतक उनकी निगाह में भले कर दिखाए और उन्हें राह से रोका और उन्हें सूझता था।

३९. और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को और बेशक उनके पास मूसा रौशन निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने ज़मीन में तकब्बुर किया और वो हमसे निकलकर जाने वाले न थे।

४०. तो उन में हर एक को हमने उसके गुनाह पर पकड़ा तो उनमें किसी पर हमने पथराव भेजा और उनमें

مَنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَ
مِنْهُمْ مَنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَ
مِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَ
مِنْهُمْ مَنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾

किसी को चिंघाड़ ने आ लिया और उनमें किसी को ज़मीन में धंसा दिया और उनमें किसी को डुबो दिया और अल्लाह की शान न थी कि उनपर ज़ुल्म करे हाँ वो खुद ही अपनी जानो पर ज़ुल्म करते थे।

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ
الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۚ وَاِنَّ
اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ
لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

४१. उनकी मिसाल जिन्होंने अल्लाह के सिवा और मालिक बना लिए हैं मकड़ी की तरह है उसने जाले का घर बनाया और बेशक सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी का घर क्या अच्छा होता अगर जानते।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾

४२. अल्लाह जानता है जिस चीज़ की उसके सिवा पूजा करते हैं और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ
وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

४३. और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान फ़रमाते हैं और उन्हें नहीं समझते मगर इल्म वाले।

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
بِالْحَقِّ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ ع

४४. अल्लाह ने आसमान और ज़मीन हक़ बनाए बेशक उसमें निशानी है मुसलमानों के लिए।

४५. ऐ महबूब पढ़ो जो किताब तुम्हारी तरफ़ 'वही' की गई और नमाज़ क़ाएम फ़रमाओ बेशक नमाज़ मना करती है बेहयाई और बुरी बात से और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो।

४६. और ऐ मुसलमानों किताबियों से न झगड़ो मगर बेहतर तरीक़े पर मगर वो जिन्होंने उनमें से ज़ुल्म किया और कहो हम ईमान लाए उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और हमारा तुम्हारा एक मअ्बूद है और हम उसके हुज़ूर गरदन रखे हैं।

४७. और ऐ महबूब यूँही तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी तो वो जिन्हें हम ने किताब अता फ़रमाई इस पर ईमान लाते हैं और कुछ उनमें से है जो इस पर ईमान लाते हैं और हमारी आयतों से मुनकिर नहीं होते मगर काफ़िर।

४८. और इससे पहले तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे यूँ होता तो बातिल वाले ज़रूर शक लाते।

४९ बल्कि वो रौशन आयतें हैं उनके सीनों में जिन को इल्म दिया गया और हमारी आयतों का इन्कार

اُتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ
وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی
عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ
اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾
وَلَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا
بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ۖۗ اِلَّا الَّذِیْنَ
ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیْۤ
اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَاُنْزِلَ اِلَیْكُمْ وَ
اِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ
مُسْلِمُوْنَ ﴿۴۶﴾
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ ؕ
فَالَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یُؤْمِنُوْنَ
بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰۤؤُلَآءِ مَنْ یُّؤْمِنُ
بِهٖ ؕ وَمَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا
الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۷﴾
وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ
كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِیَمِیْنِكَ اِذًا
لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۴۸﴾
بَلْ هُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیْ صُدُوْرِ
الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا یَجْحَدُ

नहीं करते मगर ज़ालिम।

५०. और बोले क्यों न उतरीं कुछ निशानियाँ उन पर उनके रब की तरफ़ से तुम फ़रमाओ निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं और मैं तो यही साफ़ डर सुनाने वाला हूँ।

५१. और क्या यह उन्हें बस नहीं कि हम ने तुम पर किताब उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है बेशक उसमें रहमत और नसीहत है ईमानवालों के लिए।

रुकूअ ६

५२. तुम फ़रमाओ अल्लाह बस है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वो जो बातिल पर यक़ीन लाए और अल्लाह के मुन्किर हुए वही घाटे में हैं।

५३. और तुम से अज़ाब की जलदी करते हैं और अगर एक ठहराई मुद्दत न होती तो ज़रूर उनपर अज़ाब आ जाता और ज़रूर उनपर अचानक आएगा जब वो बेख़बर होंगे।

५४. तुम से अज़ाब की जलदी मचाते है और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को।

५५. जिस दिन उन्हें ढाँपेगा अज़ाब उनके उपर और उनके पावँ के नीचे से और फ़रमाएगा चखो अपने किये

بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾
وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ
مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ
اللّٰهِ ۗ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾
اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ ع
قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا
بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾
وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَلَوْلَآ
اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ۗ
وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾
يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَاِنَّ
جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾
يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ
وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا

का मज़ा।

५६. ऐ मेरे बन्दों जो ईमान लाए बेशक मेरी ज़मीन वसीअ है तो मेरी ही बन्दगी करो।

५७. हर जान को मौत का मज़ा चखना है फिर हमारी ही तरफ़ फिरोगे।

५८. और बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किए ज़रूर हम उन्हें जन्नत के बालाखानों पर जगह देंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी हमेशा उनमें रहेंगे क्या ही अच्छा अज्र कामवालों का।

५९. वो जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं।

६०. और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते अल्लाह रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें और वही सुनता जानता है।

६१. और अगर तुम उनसे पूछो किसने बनाए आसमान और ज़मीन और काम में लगाए सूरज और चाँद तो ज़रूर कहें गे अल्लाह ने तो कहाँ औंधे जाते हैं।

६२. अल्लाह कुशादा करता है रिज़्क़ अपने बन्दों में जिस के लिए चाहे और तंगी फ़रमाता जिसके लिए चाहे बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।

مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ

وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ

اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ

رِزْقَهَا اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ

عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ

شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ
السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ
مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ
قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْقِلُونَ ۝٦٣

وَمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
إِلَّا لَهْوٌ وَلَعِبٌ وَإِنَّ الدَّارَ
الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ۝٦٤
فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ
مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ
إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ۝٦٥
لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝٦٦
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا
وَيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ
أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ
يَكْفُرُونَ ۝٦٧
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى
اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا

६३. और जो तुम उनसे पूछो किस ने उतारा आसमान से पानी तो उसके सबब ज़मीन ज़िन्दा करदी मरे पीछे ज़रूर कहेगे अल्लाह ने तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियाँ अल्लाह को बल्कि उनमे अक्सर बेअक़्ल हैं।

रुकूअ ७

६४. और ये दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते।

६५. फिर जब कश्ती में सवार होते हैं अल्लाह को पुकारते हैं एक उसी पर अक़ीदा ला कर फिर जब वो उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है जभी शिर्क करने लगते हैं।

६६. कि नाशुकरी करे हमारी दी हुई नेअमत की और बरतें तो अब जाना चाहते हैं।

६७. और क्या उन्होंने ये न देखा कि हम ने हुरमत वाली ज़मीन पनाह बनाई और उनके आस पासवाले लोग उचक लिए जाते हैं तो क्या बातिल पर यक़ीन लाते हैं और अल्लाह की दी हुई नेअमत से नाशुकरी करते हैं।

६८. और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बाँधे या हक़ को झुटलाए जब वो उसके पास आए क्या जहन्नम में काफ़िरों का

جَآءَهٗ ؕ اَلَیۡسَ فِیۡ جَہَنَّمَ مَثۡوًی لِّلۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۶۸﴾

ठिकाना नहीं।

وَ الَّذِیۡنَ جَاہَدُوۡا فِیۡنَا لَنَہۡدِیَنَّہُمۡ سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰہَ لَمَعَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۶۹﴾

६९. और जिन्होंने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है।

سُوۡرَۃُ الرُّوۡمِ مَکِّیَّۃٌ

सुरए रूम

मक्की है और इसमें साठ आयतें और छ: रूकूअ हैं।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

الٓـمّٓ ﴿۱﴾

रूकूअ १

غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ﴿۲﴾

२. रूमी मग़लूब हुए।

فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ﴿۳﴾

३. पास की ज़मीन में और अपनी मगलूबी के बाद अनक़रीब ग़ालिब हों गे।

فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ لِلّٰہِ الۡاَمۡرُ مِنۡ قَبۡلُ وَ مِنۡۢ بَعۡدُ ؕ وَ یَوۡمَئِذٍ یَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۴﴾

४. चन्द बरस में हुक्म अल्लाह ही का है आगे और पीछे और उस दिन ईमानवाले खुश होंगे।

بِنَصۡرِ اللّٰہِ ؕ یَنۡصُرُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ ہُوَ الۡعَزِیۡزُ الرَّحِیۡمُ ﴿۵﴾

५. अल्लाह की मदद से मदद करता है जिसकी चाहे और वही है इज़्ज़तवाला मेहरबान।

وَعۡدَ اللّٰہِ ؕ لَا یُخۡلِفُ اللّٰہُ وَعۡدَہٗ وَ لٰکِنَّ اَکۡثَرَ النَّاسِ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶﴾

६. अल्लाह का वअ़दा अल्लाह अपना वअ़दा ख़िलाफ़ नहीं करता लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

یَعۡلَمُوۡنَ ظَاہِرًا مِّنَ الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا ۚۖ وَ ہُمۡ عَنِ الۡاٰخِرَۃِ ہُمۡ غٰفِلُوۡنَ ﴿۷﴾

७. जानते हैं आँखों के सामने की दुनियावी ज़िन्दगी और वो आख़ेरत से पूरे बेख़बर हैं।

اَوَ لَمۡ یَتَفَکَّرُوۡا فِیۡۤ اَنۡفُسِہِمۡ ۟ مَا

८. क्या उन्होंने अपने जी में न सोचा कि अल्लाह ने पैदा न किए

आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान है मगर हक़ और एक मुक़र्रर मीआद से और बेशक बहुत से लोग अपने रब से मिलने का इन्कार रखते हैं।

९. और क्या उन्हों ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कि उनसे अगलों का अन्जाम कैसा हुआ वो उनसे ज़्यादा ज़ोरआवर थे और ज़मीन जोती और आबाद की उनकी आबादी से ज़यादा और उनके रसूल उनके पास रौशन निशानियाँ लाए तो अल्लाह की शान न थी कि उनपर ज़ुल्म करता हाँ वो खुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

१०. फिर जिन्होंने हद भर की बुराई की उनका अन्जाम ये हुआ कि अल्लाह की आयतें झुटलाने लगे और उनके साथ तमस्खुर करते।

रुकूअ २

११. अल्लाह पहले बनाता है फिर दुबारह बनाएगा फिर उसकी तरफ़ फिरोगे।

१२. और जिस दिन क़यामत क़ाएम होगी मुजरिमों की आस टूट जाएगी।

१३. और उनके शरीक उनके सिफ़ारशी न होंगे और वो अपने शरीकों से मुन्किर हो जाएँगे।

१४. और जिस दिन क़यामत

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
وَ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ
رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿۸﴾
اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ
كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّ اَثَارُوا
الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا
عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ
فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ؕ ﴿۹﴾
ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا
السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ
ع كَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۰﴾
اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ
الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۲﴾
وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا
وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳﴾

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ
يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٤﴾
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٥﴾
وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ
مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾
فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ
حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾
وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ
الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ
ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ
بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

क़ाएम होगी उस दिन अलग हो जाएंगे।

१५. तो वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किए बाग़ की क्यारी में उनकी ख़ातिरदारी होगी।

१६. और जो काफ़िर हुए और हमारी आयतें और आख़िरत का मिलना झुटलाया वो अज़ाब में ला धरे जाऐंगे।

१७. तो अल्लाह की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुबह हो।

१८. और उसीकी तअ़रीफ है आसमानों और ज़मीन में और कुछ दिन रहे और जब तुम्हें दोपहर हो।

१९. वो ज़िन्द को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से और ज़मीन को जिलाता है उसके मरे पीछे और यूँहीं तुम निकाले जाओगे।

रुकूअ ३

२०. और उसकी निशानियों से है ये कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से फिर जभी तुम इन्सान हो दुनिया में फैले हुए।

२१. और उसकी निशानियों से है कि तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाए कि उनसे आराम पाओ और तुम्हारे आपस में महब्बत और रहमत रखी बेशक उसमें निशानियाँ है ध्यान करनेवालों के लिए।

२२. और उसकी निशानियों से

है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का इख़्तिलाफ़ बेशक उसमे निशानियाँ है जानने वालो के लिए।

२३. और उसकी निशानियों मे है रात और दिन में तुम्हारा सोना और उसका फ़ज़्ल तलाश करना बेशक उसमे निशानियाँ है सुननेवालों के लिए।

२४. और उसकी निशानियों से है के तुम्हें बिजली दिखाता है डराती और उम्मीद दिलाती और आसमान से पानी उतारता है तो उससे ज़मीन को ज़िन्दा करता है उसके मरे पीछे बेशक उसमें निशानियाँ हैं अक़्लवालों के लिए।

२५. और उसकी निशानियो से है कि उसके हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ाएम हैं फिर जब तुम्हे ज़मीन से एक निदा फ़रमाएगा जभी तुम निकल पड़ोगे।

२६. और उसीके हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में है सब उसके ज़ेरे हुक्म हैं।

२७. और वही है कि अव्वल बनाता है फिर उसे दोबारह बनाएगा और ये तुम्हारी समझ में उसपर ज़्यादा आसान होना चाहिए और उसी के लिये है सब से बरतर शान आसमानों और ज़मीन में और वही इज्ज़त व

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ
وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۗؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ
خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۗءِ
مَاۗءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَاۗءُ
وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ
دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ
تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾
وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾
وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ
الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ

हिकमतवाला है।

रुकूअ ४

२८. तुम्हारे लिए एक कहावत बयान फ़रमाता है खुद तुम्हारे अपने हाल से क्या तुम्हारे लिए तुम्हारे हाथ के माल गुलामों में से कुछ शरीक है उसमें जो हम ने तुम्हें रोज़ी दी तो तुम सब उसमें बराबर हो तुम उनसे डरो जैसे आपस में एक दूसरे से डरते हो हम ऐसी मुफ़स्सल निशानियाँ बयान फ़रमाते है अक़्लवालों के लिए।

२९. बल्कि ज़ालिम अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हो लिए बेजाने तो उसे कौन हिदायत करे जिसे खुदा ने गुमराह किया और उनका कोई मददगार नहीं।

३०. तो अपना मुँह सीधा करो अल्लाह की इताअत के लिए एक अकेले उसीके होकर अल्लाह की डाली हुई बिना (बुनियाद) जिस पर लोगों को पैदा किया अल्लाह की बनाई चीज़ न बदलना यही सीधा दीन है मगर बहुत लोग नहीं जानते।

३१. उसकी तरफ़ रूजूअ लाते हुए और उससे डरो और नमाज़ क़ायम रखो और मुश्रिकों से न हो।

३२. उनमें से जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और हो गए गिरोह गिरोह हर गिरोह जो उसके पास है उस पर खुश है।

३३. और जब लोगों को तकलीफ

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ ع

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۗ
هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ
فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ
اَنْفُسَكُمْ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾
بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ
اللّٰهُ ۗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۗ
فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ
عَلَيْهَا ۗ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾
مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾
مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا
شِيَعًا ۗ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ
فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾

पहुँचती है तो अपने रब को पुकारते है उसकी तरफ़ रुजूअ लाते हुए फिर जब वो उन्हें अपने पास से रहमत का मज़ा देता है जभी उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है।

३४. कि हमारे दिए की नाशुकरी करे तो बरत लो अब क़रीब जानना चाहते हो।

३५. या हम ने उन पर कोई सनद उतारी के वो उन्हे हमारी शरीक बता रही है।

३६. और जब हम लोगों को रहमत का मज़ा देते है उस पर खुश हो जाते हैं और अगर उन्हे कोई बुराई पहुँचे बदला उस का जो उनके हाथों ने भेजा जभी वो नाउम्मीद हो जाते हैं।

३७. और क्या उन्हों ने न देखा कि अल्लाह रिज़्क़ वसीअ फ़रमाता है जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है जिसके लिए चाहे बेशक उसमें निशानियाँ हैं ईमानवालों के लिए।

३८. तो रिश्तेदार को उसका हक़ दो और मिसकीन और मुसाफ़िर को ये बेहतर है उनके लिए जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं और उन्ही का काम बना।

३९. और तुम जो चीज़ ज़्यादा लेने को दो कि देने वाले के माल बढ़े तो वो अल्लाह के यहाँ न बढ़ेगी और

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا
رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا
أَذَاقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ
مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾
لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾
أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ
بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾
وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا
بِهَا ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا
قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾
فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ
وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ
يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾
وَمَا آتَيْتُمْ مِنْ رِبًا لِيَرْبُوَ
فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا

जो तुम ख़ैरात दो अल्लाह की रज़ा चाहते हुए तो उन्हीं के दूने है।

४०. अल्लाह है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा क्या तुम्हारे शरीको में भी कोई ऐसा है जो उन कामो में से कुछ करे पाकी और बरतरी है उसे उनके शिर्क से।

रुकूअ ५

४१. चमकी ख़राबी खुश्की और तरी में उन बुराईयो से जो लोगों के हाथों ने कमाई ताकी उन्हे उनके बअ्ज़ कोतकों (बुरे कामों) का मज़ा चखाए कहीं वो बाज़ आएँ।

४२. तुम फ़रमाओ ज़मीन में चल कर देखो कैसा अन्जाम हुआ अगलों का उनमें बहुत मुश्रिक थे।

४३. तो अपना मुँह सीधा कर इबादत के लिए कब्ल इसके कि वो दिन आए जिसे अल्लाह की तरफ़ से. टलना नही उस दिन अलग फट जाएंगे।

४४. जो कुफ़्र करे उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर और जो अच्छा काम करे वो अपने ही लिए तैयारी कर रहे है।

४५. ताकि सिला दे उन्हें जो

عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ
تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ
يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۗ هَلْ مِنْ
شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ
مِّنْ شَيْءٍ ۗ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا
ع يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾
ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ
لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾
قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ۗ
كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ
مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾
مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ
صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۵﴾
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ
وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ
الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۴۶﴾
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى
قَوْمِهِمْ فَجَاۗءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا
مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ۭ وَكَانَ حَقًّا
عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾
اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَاۗءِ كَيْفَ
يَشَاۗءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ
بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ
يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۸﴾
وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ
عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿۴۹﴾
فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ

ईमान लाए और अच्छे काम किए अपने फ़ज़्ल से बेशक वो काफ़िरों को दोस्त नही रखता।

४६. और उसकी निशानियों से है की हवाएँ भेजता है मुज़दह सुनाती और इस लिए की तुम्हें अपनी रहमत का जाएक़ा दे और इस लिए कि कश्ती उसके हुक्म से चले और इसलिए कि उसका फ़ज़्ल तलाश करो और इस लिए कि तुम हक़ मानो।

४७. और बेशक हम ने तुम से पहले कितने रसूल उनकी क़ौम की तरफ़ भेजे तो वो उनके पास खुली निशानियाँ लाए फिर हम ने मुजरिमों से बदला लिया और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना।

४८. अल्लाह है कि भेजता है हवायें कि उभारती हैं बादल फिर उसे फैला देता है आसमान में जैसे चाहे और उसे पारा पारा करता है तो तू देखे कि उसके बीच में से मेंह निकल रहा है फिर जब उसे पहुँचाता है अपने बन्दो में जिसकी तरफ़ चाहे जभी वो खुशियाँ मनाते हैं।

४९. अगरचे उस के उतारने से पहले आस तोड़े हुए थे।

५०. तो अल्लाह की रहमत के असर देखो क्योंकर ज़मीन को जिलाता

है उसके मरे पीछे बेशक ये मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वो सब कुछ कर सकता है।

५१. और अगर हम कोई हवा भेजें जिस से वो खेती को ज़र्द देखें तो ज़रूर उसके बाद ना शुकरी करने लगें।

५२. इस लिए कि तुम मुर्दों को नहीं सुनाते और न बहरों को पुकारना सुनाओ जब वो पीठ दे कर फिरें।

५३. और न तुम अन्धों को उनकी गुमराही से राह पर लाओ तो तुम उसी को सुनाते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए तो वो गरदन रखे हुए हैं।

रुकूअ ६

५४. अल्लाह है जिस ने तुम्हें इब्तिदा में कमज़ोर बनाया फिर तुम्हें नातवानी से ताक़त बख़्शी फिर कूव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया बनाता है जो चाहे और वही इल्म व कुदरत वाला है।

५५. और जिस दिन क़यामत क़ाएम होगी मुजरिम क़सम खाएँगे कि न रहे थे मगर एक घड़ी वो ऐसे ही औंधे जाते थे।

५६. और बोले वो जिनको इल्म और ईमान मिला बेशक तुम रहे अल्लाह के लिखे हुए में उठने के दिन तक तो ये है वो दिन उठने का लेकिन तुम न

يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ اِنَّ ذٰلِكَ
لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِیْرٌ ﴿٥٠﴾
وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِیْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا
لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ یَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾
فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ
الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِیْنَ ﴿٥٢﴾
وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْیِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ
اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ یُّؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا
فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾
اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ
ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً
ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا
وَّشَیْبَةً ؕ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ۚ وَهُوَ
الْعَلِیْمُ الْقَدِیْرُ ﴿٥٤﴾
وَیَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ یُقْسِمُ
الْمُجْرِمُوْنَ ۙ۬ مَا لَبِثُوْا غَیْرَ سَاعَةٍ ؕ
كَذٰلِكَ كَانُوْا یُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾
وَقَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِیْمَانَ
لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى یَوْمِ

जानते थे।

५७. तो उस दिन ज़ालिमों को नफ़अ् न देगी उनकी मअज़िरत और न उनसे कोई राज़ी करना माँगे।

५८. और बेशक हमने लोगों के लिए इस कुरआन में हर क़िस्म की मिसाल बयान फ़रमाई और अगर तुम उनके पास कोई निशानी लाओ तो ज़रूर काफ़िर कहेंगे तुम तो नहीं मगर बातिल पर।

५९. यूँ ही मुहर कर देता है अल्लाह जाहिलों के दिलों पर।

६०. तो सब्र करो बेशक अल्लाह का वअ्दा सच्चा है और तुम्हे सुबुक न करदें वो जो यक़ीन नहीं रखते।

सूरए लुक़्मान

मक्की है और इसमें चौंतीस आयतें और चार रूकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

२. ये हिक़मत वाली किताब की आयतें हैं।

३. हिदायत और रहमत है नेकों के लिए।

४. वो जो नमाज़ क़ाएम रखें और ज़कात दें और आख़िरत पर यक़ीन लाएँ।

५. वही अपने रब की हिदायत पर हैं और उन्हीं का काम बना।

६. और कुछ लोग खेल की बात

الْبَعْثِ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ
لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾
فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ
لَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾

سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓ ﴿١﴾
تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾
هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ٥
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ
الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۗ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ٦
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا
كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ
وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٧
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ٨
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ وَ
هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٩
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا
وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ
تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ
دَاۗبَّةٍ ۭ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً
فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ١٠
هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ
الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ١١

खरीदते है कि अल्लाह की राह से बहका दे बे समझे और उसे हँसी बनाले उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है।

७. और जब उसपर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो तकब्बुर करता हुआ फिरे जैसे उन्हे सुना ही नही जैसे उसके कानों मे टेंट (रूई का फाया) है तो उसे दर्दनाक अज़ाब का मुज़दह दो।

८. बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए चैन के बाग़ है।

९. हमेशा उनमें रहेंगे अल्लाह का वअ्दा है सच्चा और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

१०. उसने आसमान बनाए बे ऐसे सुतूनों के जो तुम्हें नज़र आएँ और ज़मीन में डाले लंगर कि तुम्हें लेकर न कांपे और उसमें हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हमने आसमान से पानी उतारा तो ज़मीन में हर नफ़ीस जोड़ा उगाया।

११. ये तो अल्लाह का बनाया हुआ है मुझे वो दिखाओ जो उसके सिवा औरों ने बनाया बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।

रुकूअ २

१२. और बेशक हम ने लुक़्मान को हिकमत अ़ता फ़रमाई कि अल्लाह का शुक्र कर और जो शुक्र करे वो अपने भले को शुक्र करता है और जो ना शुकरी करे तो बेशक अल्लाह बेपरवाह है सब ख़ूबियों सराहा।

१३. और याद करो जब लुक़्मान ने अपने बेटे से कहा और वो नसीहत करता था ऐ मेरे बेटे अल्लाह का किसी को शरीक न करना बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है।

१४. और हम ने आदमी को उसके माँ बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई उसकी माँ ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई और उसका दूध छूटना दो बरस में है ये कि हक़ मान मेरा और अपने माँ बाप का आख़िर मुझ ही तक आना है।

१५. और अगर वो दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी चीज़ को जिसका तुझे इल्म नही तो उनका कहना न मान और दुनिया में अच्छी तरह उनका साथ दे और उसकी राह चल जो मेरी तरफ़ रुजूअ लाया फिर मेरी ही तरफ़ तुम्हे फिर आना है तो मैं बता दूँगा जो तुम करते थे।

१६. ऐ मेरे बेटे बुराई अगर राई के दाने बराबर हो फिर वो पत्थर की चटान में या आसमानों में या ज़मीन में कही हो अल्लाह उसे ले आएगा बेशक अल्लाह हर बारीकी का जानने वाला

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ
اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ
لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ
حَمِيْدٌ ﴿۱۲﴾
وَ اِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ
يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ
لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۳﴾
وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ
اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّ فِصٰلُهٗ
فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ
اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿۱۴﴾
وَ اِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا
وَ صَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫
وَّ اتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ
اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾
يٰبُنَيَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ
مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ
فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ

بِهَا اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝۱۶
يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ
وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى
مَآ اَصَابَكَ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ
الْاُمُوْرِ ۝۱۷
وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ
فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ
كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝۱۸
وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ
مِنْ صَوْتِكَ ۭ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ
لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ۝۱۹
اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ
عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۭ
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ
مُّنِيْرٍ ۝۲۰
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
اٰبَاۗءَنَا ۭ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ

ख़बरदार है।

१७. ऐ मेरे बेटे नमाज़ बरपा रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मनअ् कर और जो उफ़्तादा तुझ पर पड़े उसपर सब्र कर बेशक ये हिम्मत के काम हैं।

१८. और किसी से बात करने में अपना रुख़सारा कज न कर और ज़मीन में इतराता न चल बेशक अल्लाह को नहीं भाता कोई इतराता फ़ख़्र करता।

१९. और मियाना चाल चल और अपनी आवाज़ कुछ पस्त कर बेशक सब आवाज़ों में बुरी आवाज़, आवाज़ गधे की।

रुकूअ ३

२०. क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए काम में लगाए जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और तुम्हें भरपूर दीं अपनी नेअ़मतें ज़ाहिर और छुपी और बअ़्ज़े आदमी अल्लाह के बारे में झगड़ते है यूँ कि न इल्म न अक़्ल और न कोई रौशन किताब।

२१. और जब उनसे कहा जाए उसकी पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो कहते हैं बल्कि हम तो उसकी पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया क्या अगरचे शैतान उनको अज़ाबे दोज़ख़ की तरफ़ बुलाता हो।

२२. तो जो अपना मुँह अल्लाह की तरफ़ झुका दे और हो नेकोकार तो बेशक उसने मज़बूत गिरह थामी और अल्लाह ही की तरफ़ है सब कामों की इन्तिहा।

२३. और जो कुफ़्र करे तो तुम उसके कुफ़्र से ग़म न खाओ उन्हें हमारी ही तरफ़ फिरना है हम उन्हें बता देंगे जो करते थे बेशक अल्लाह दिलों की बात जानता है।

२४. हम उन्हें कुछ बरतने देंगे फिर उन्हें बेबस करके सख़्त अज़ाब की तरफ़ ले जाएँगे।

२५. और अगर तुम उनसे पूछो किसने बनाए आसमान और ज़मीन तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियाँ अल्लाह को बल्कि उनमें अक्सर जानते नहीं ।

२६. अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।

२७. और अगर ज़मीन में जितने पेड़ हैं सब क़लमें हो जाएँ और समन्दर उसकी सियाही हो उसके पीछे सात समन्दर और तो अल्लाह की बातें ख़त्म न होंगी बेशक अल्लाह इज़्ज़त व हिकमतवाला है।

२८. तुम सब का पैदा करना और क़यामत उठाना ऐसा ही है जैसा एक जान का बेशक अल्लाह सुनता देखता है।

२९. ऐ सुनने वाले क्या तूने न

إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٢١﴾
وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ
وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٢٢﴾
وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهُ إِلَيْنَا
مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا إِنَّ
اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٣﴾
نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ
عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٢٤﴾
وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ
لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾
لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ
اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٦﴾
وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ
أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ
سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٧﴾
مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ
وَاحِدَةٍ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٢٨﴾

देखा कि अल्लाह रात लाता है दिन के हिस्से में और दिन करता है रात के हिस्से में और उसने सूरज और चाँद काम में लगाए हर एक एक मुक़र्रर मिआद तक चलता है और ये कि अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

३०. ये इसलिये कि अल्लाह ही हक़ है और उसके सिवा जिनको पूजते हैं सब बातिल है और इसलिये कि अल्लाह ही बुलंद बड़ाईवाला है।

रुकूअ ४

३१. क्या तूने न देखा कि कश्ती दरिया में चलती है अल्लाह के फ़ज़्ल से ताकि तुम्हें वो अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए बेशक उसमें निशानियाँ हैं हर बड़े सब्र करनेवाले शुक्रगुज़ार को।

३२. और जब उनपर आ पड़ती है कोई मौज पहाड़ों की तरह तो अल्लाह को पुकारते हैं निरे उसी पर अक़ीदा रखते हुए फिर जब उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है तो उनमें कोई एअ्तिदाल पर रहता है और हमारी आयतों का इन्कार न करेगा मगर हर बड़ा बेवफ़ा ना शुकरा।

३३. ऐ लोगो अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस में कोई बाप अपने बच्चा के काम न आएगा और न कोई कामी (कारोबारी) बच्चा अपने बाप को कुछ नफ़अ दे बेशक अल्लाह का वअ्दा सच्चा है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُولِجُ الَّيْلَ فِي
النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَ
سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي
إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى وَأَنَّ اللّٰهَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٩﴾
ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا
يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَ
أَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٣٠﴾
أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ
بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيٰتِهِ
إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيٰتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ ﴿٣١﴾
وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظُّلَلِ
دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ
فَلَمَّا نَجّٰهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ
مُقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيٰتِنَا إِلَّا
كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ﴿٣٢﴾
يٰأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا
يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ
وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا

तो हरगिज़ तुम्हें धोखा न दे दुनिया की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के इल्म पर धोका न दे वो बड़ा फ़रेबी।

३४. बेशक अल्लाह के पास है क़यामत का इल्म और उतारता है मेह और जानता है जो कुछ माओं के पेट में है और कोई जान नहीं जानती कि कल क्या कमाएगी और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में मरेगी बेशक अल्लाह जानने वाला बतानेवाला है।

सूरए सज्दह

मक्की है इसमें तीस आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

२. किताब का उतारना बेशक परवरदिगारे आलम की तरफ़ से है।

३. क्या कहते हैं, इनकी बनाई हुई है बल्कि वही हक़ है तुम्हारे रब की तरफ से कि तुम डराओ ऐसे लोगों को जिन के पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया इस उम्मीद पर कि वो राह पाएँ।

४. अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है छः दिन में बनाए फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया इससे छूट कर (ला

إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
الْحَيَوٰةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ
الْغَرُورُ ﴿٣٣﴾
إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَ
يُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ
وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ
غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ
أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
ع خَبِيرٌ ﴿٣٤﴾

سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثُونَ آيَةً وَثَلَاثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الٓمٓ ﴿١﴾
تَنزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِن
رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢﴾
أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ
مِن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُم
مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُونَ ﴿٣﴾
اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۗ اَفَلَا
تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾
يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ
ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ
مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾
ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦﴾
الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ
وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧﴾
ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ
مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٨﴾
ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ
وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ
ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۗ بَلْ هُمْ
بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾
قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ
الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى

तअल्लुक़ हो कर) तुम्हारा कोई हिमायती और न सिफ़ारशी तो क्या तुम ध्यान नहीं करते।

५. काम की तदबीर फ़रमाता है आसमान से ज़मीन तक फिर उसीकी तरफ़ रूजूअ करेगा उस दिन कि जिस की मिक़्दार हज़ार बरस है तुम्हारी गिन्ती में।

६. ये है हर निहाँ और अयाँ का जानने वाला इज़्ज़त व रहमतवाला।

७. वो जिसने जो चीज़ बनाई खूब बनाई और पैदाइशे इन्सान की इब्तिदा मिट्टी से फ़रमाई।

८. फिर उसकी नस्ल रक्खी एक बेक़द्र पानी के खुलासा से।

९. फिर उसे ठीक किया और उसमें अपनी तरफ़ की रुह फूंकी और तुम्हें कान और आँखें और दिल अता फ़रमाए क्या ही थोड़ा हक़ मानते हो।

१०. और बोले क्या जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे क्या फिर नए बनेंगे बल्कि वो अपने रब के हुज़ूर हाज़िरी से मुनकिर हैं।

११. तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता है मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है फिर अपने रब की तरफ़ वापस जाओगे।

रुकूअ २

१२. और कहीं तुम देखो जब मुजरिम अपने रब के पास सर नीचे डाले होंगे ऐ हमारे रब अब हम ने देखा और सुना हमें फिर भेज कि नेक काम करें हम को यक़ीन आ गया।

१३. और अगर हम चाहते हर जान को उसकी हिदायत फ़रमाते मगर मेरी बात क़रार पा चुकी के ज़रूर जहन्नम को भर दूँगा उन जिनों और आदमियों सब से।

१४. अब चखो बदला उसका के तुम अपने इस दिन की हाज़िरी भूले थे हमने तुम्हें छोड़ दिया अब हमेशा का अज़ाब चखो अपने किये का बदला।

१५. हमारी आयतों पर वही ईमान लाते है के जब वो उन्हें याद दिलाई जाती हैं सज्दे में गिर जाते हैं और अपने रब की तअरीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलते हैं।

१६. और तकब्बुर नहीं करते उनकी करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिए हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं।

१७. तो किसी जी को नहीं मअलूम जो आँख की ठंडक उनके लिये छुपा रखी है सिला उनके कामों का।

رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾ ع
وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا
رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا
وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا
إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿١٢﴾
وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ
هُدَاهَا وَلَٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي
لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ
أَجْمَعِينَ ﴿١٣﴾
فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هَٰذَآ ۚ إِنَّا نَسِينَٰكُمْ ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ
الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾
إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِـَٔايَٰتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا
بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ
رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٥﴾
تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَ
مِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿١٦﴾
فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُمْ
مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا

१८. तो क्या जो ईमान वाला है वो उस जैसा हो जाएगा जो बे हुक्म है ये बराबर नहीं।

१९. जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए बसने के बाग़ है उनके कामों के सिले में मेहमानदारी।

२०. रहे वो जो बे हुक्म हैं उनका ठिकाना आग है जब कभी उसमें से निकलना चाहेंगे फिर उसीमें फेर दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा चखो इस आग का अज़ाब जिसे तुम झुटलाते थे।

२१. और ज़रूर हम उन्हें चखाएँगे कुछ नज़दीक का अज़ाब उस बड़े अज़ाब से पहले जिसे देखने वाला उम्मीद करे अभी बाज़ आएँगे।

२२. और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसे उसके रब की आयतों से नसीहत की गई फिर उसने उनसे मुँह फेर लिया बेशक हम मुजरिमो से बदला लेने वाले है।

रुकूअ ३

२३. और बेशक हम ने मूसा को किताब अता फ़रमाई तो तुम उसके मिलने में शक न करो और हम ने उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत किया।

२४. और हम ने उनमें से कुछ

كَانُوا يَعْمَلُونَ ١٧
أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ
فَاسِقًا ۚ لَا يَسْتَوُونَ ١٨
أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ١٩
وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ
كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا
أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا
عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تُكَذِّبُونَ ٢٠
وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ
دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ٢١
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ
ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ
مُنْتَقِمُونَ ٢٢
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ
فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ
هُدًى لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ٢٣

इमाम बनाए कि हमारे हुक्म से बनाते जब कि उन्होंने सब्र किया और वो हमारी आयतों पर यक़ीन लाते थे।

२५. बेशक तुम्हारा रब उनमें फ़ैसला कर देगा क़यामत के दिन जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते थे।

२६. और क्या उन्हें उस पर हिदायत न हुई के हम ने उनसे पहले कितनी संगतें (क़ौमें) हलाक कर दीं की आज ये उनके घरों में चल फिर रहे हैं बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ हैं तो क्या सुनते नहीं।

२७. और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं खुश्क ज़मीन की तरफ़ फिर उससे खेती निकालते है कि उसमें से उनके चौपाए और वो खुद खाते हैं तो क्या उन्हें सूझता नहीं।

२८. और कहते हैं ये फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो।

२९. तुम फ़रमाओ फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उनका ईमान लाना नफ़अ न देगा और न उन्हें मोहलत मिले।

३०. तो उनसे मुँह फेर लो और इन्तिज़ार करो बेशक उन्हें भी इन्तिज़ार करना है।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ
بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۛ وَكَانُوا بِآيٰتِنَا
يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾
إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾
أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ
قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي
مَسٰكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيٰتٍ ۖ
أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى
الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا
تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۖ
أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾
وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ إِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٢٨﴾
قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٢٩﴾
فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ
مُنْتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾

سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ
الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ ①
وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرًا ۙ ②
وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
وَكِيْلًا ③
مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ
فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ
الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ
وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ
ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي
السَّبِيْلَ ④
اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْۤا اٰبَآءَهُمْ
فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ

सूरए अहज़ाब

मदनी है और इसमे तिहत्तर आयते और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) अल्लाह का यूँ ही ख़ौफ़ रखना और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की न सुनना बेशक अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

२. और उसकी पैरवी रखना जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हें 'वही' होती है ऐ लोगो अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

३. और ऐ महबूब तुम अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह बस है काम बनानेवाला।

४. अल्लाह ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे और तुम्हारी उन औरतों को जिन्हे तुम माँ के बराबर कहदो तुम्हारी माँ न बनाया और न तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारा बेटा बनाया ये तुम्हारे अपने मुँह का कहना है और अल्लाह हक़ फ़रमाता है और वही राह दिखाता है।

५. उन्हें उनके बाप ही का कह कर पुकारो ये अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा ठीक है फिर अगर तुम्हे उनके बाप मअलूम न हो तो दीन में तुम्हारे भाई है और बशरयत मे तुम्हारे चचाज़ाद

और तुम पर उसमें कुछ गुनाह नहीं जो नादानिस्ता तुम से सादिर हुआ हाँ वो गुनाह है जो दिल के क़स्द से करो और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

६. ये नबी मुसलमानों का उनकी जान से ज़्यादा मालिक है और उसकी बीबियाँ उनकी माएँ हैं और रिश्तेवाले अल्लाह की किताब में एक दूसरे से ज़्यादा क़रीब हैं बनिस्बत और मुसलमानों और मुहाजिरों के मगर ये कि तुम अपने दोस्तों पर एहसान करो ये किताब में लिखा है।

७. और ऐ महबूब याद करो जब हम ने नबियों से अहद लिया और तुम से और नूह और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरियम से और हमने उन से गाढ़ा अहद लिया।

८. ताकी सच्चों से उनके सच का सवाल करें और उसने काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

रुकूअ २

९. ऐ ईमानवालो अल्लाह का एहसान अपने उपर याद करो जब तुम पर कुछ लश्कर आए तो हम ने उन पर आँधी और वो लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है।

१०. जब काफ़िर तुम पर आए

وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ
بِهِ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ وَ
كَانَ اللّٰهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ⑤
اَلنَّبِيُّ أَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ
أَنْفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهٰتُهُمْ وَ
أُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلٰى بِبَعْضٍ
فِي كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُهٰجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلٰى
أَوْلِيٰئِكُمْ مَّعْرُوفًا كَانَ ذٰلِكَ فِي
الْكِتٰبِ مَسْطُورًا ⑥
وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيثَاقَهُمْ
وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوحٍ وَّإِبْرٰهِيمَ وَ
مُوسٰى وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا
مِنْهُمْ مِّيثَاقًا غَلِيظًا ⑦
لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ
وَأَعَدَّ لِلْكٰفِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ⑧
يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُودٌ
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَّجُنُودًا
لَّمْ تَرَوْهَا وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا

तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से और जब की ठिठक कर रह गईं निगाहें और दिल गलों के पास आगए और तुम अल्लाह पर तरह तरह के गुमान करने लगे (उम्मीद व यास के)।

११. वो जगह थी कि मुसलमानों की जांच हुई और ख़ूब सख़्ती से झिंझोडे गए।

१२. और जब कहने लगे मुनाफ़िक़ और जिनके दिलों में रोग था हमें अल्लाह व रसूल ने वअ़दा न दिया था मगर फ़रेब का।

१३. और जब उनमे से एक गिरोह ने कहा ऐ मदीना वालो यहाँ तुम्हारे ठहरने की जगह नहीं तुम घरों को वापस चलो और उनमें से एक गिरोह नबी से इज़्न माँगता था ये कहकर कि हमारे घर बे हिफ़ाज़त हैं और वो बेहिफ़ाज़त न थे वो तो न चाहते थे मगर भागना।

१४. और अगर उन पर फ़ौजें मदीना के अतराफ़ से आतीं फिर उनसे कुफ़्र चाहतीं तो ज़रूर उनका मांगा दे बैठते और उसमें देर न करते मगर थोड़ी।

१५. और बेशक उस से पहले वो अल्लाह से अहद कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे और अल्लाह का वअ़दा पूछा जाएगा।

१६. तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम्हें

تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٩﴾
اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ
اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ
وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ
بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ﴿١٠﴾
هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا
زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿١١﴾
وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢﴾
وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ
يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَ
يَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ
اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ
اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾
وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا
ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا
تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٤﴾
وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ
قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ۭ وَكَانَ

भागना नफ़अ न देगा अगर मौत या क़त्ल से भागो और जब भी दुनिया न बरतने दिए जाओगे मगर थोड़ी।

१७. तुम फ़रमाओ वो कौन है जो अल्लाह का हुक्म तुम पर से टाल दे अगर वो तुम्हारा बुरा चाहे या तुम पर मेहर (रहम) फ़रमाना चाहे और वो अल्लाह के सिवा कोई हामी न पाएँगे न मददगार।

१८. बेशक अल्लाह जानता है तुम्हारे उनको जो औरों को जिहाद से रोकते है और अपने भाईयों से कहते है हमारी तरफ़ चले आओ और लड़ाई में नहीं आते मगर थोड़े।

१९. तुम्हारी मदद में गई करते (कमी करते) हैं फिर जब डर का वक़्त आए तुम उन्हें देखोगे तुम्हारी तरफ़ यू नज़र करते हैं के उनकी आँखें घूम रही हैं जैसे किसी पर मौत छाई हो फिर जब डर का वक़्त निकल जाए तुम्हें तअ़्ने देने लगे तेज़ ज़ुबानों से माले ग़नीमत के लालच में ये लोग ईमान लाए ही नहीं तो अल्लाह ने उनके अमल अकारत कर दिए और ये अल्लाह को आसान है।

२०. वो समझ रहे हैं के काफ़िरों के लश्कर अभी न गए और अगर लशकर दोबारह आएँ तो उनकी ख़्वाहिश होगी के किसी तरह गाँवों में निकल कर तुम्हारी खबरे पूछते और अगर वो तुम

عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿١٥﴾
قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ
فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَ
اِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾
قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ
بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾
قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ
وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ
وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾
اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ
رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ
كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ
فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ
حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ
يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَ
كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾
يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ
وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ

में रहते जब भी न लड़ते मगर थोड़े।

रुकूअ ३

२१. बेशक तुम्हे रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है उस के लिए कि अल्लाह और पिछले दिन की उम्मीद रखता हो और अल्लाह को बहुत याद करे।

२२. और जब मुसलमानो ने काफ़िरो के लश्कर देखे बोले ये है वो जो हमें वअ़्दा दिया था अल्लाह और उसके रसूल ने और सच फ़रमाया अल्लाह और उसके रसूल ने और उससे उन्हे न बढ़ा मगर ईमान और अल्लाह की रज़ा पर राज़ी होना।

२३. मुसलमानों में कुछ वो मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद अल्लाह से किया था तो उनमें कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका और कोई राह देख रहा है और वो ज़रा न बदले।

२४. ताकि अल्लाह सच्चों को उनके सच का सिला दे और मुनाफ़िक़ों को अ़ज़ाब करे अगर चाहे या उन्हें तौबा दे बेशक अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है।

२५. और अल्लाह ने काफ़िरों को उनके दिलो की जलन के साथ पलटाया कि कुछ भला न पाया और अल्लाह ने मुसलमानों को लड़ाई की किफ़ायत फ़रमादी और अल्लाह ज़बरदस्त इज़्ज़त वाला है।

२६. और जिन अहले किताब ने

بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ
اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا
اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾
لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ
الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾
وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا
هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَ
صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ
اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا
عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ
قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ
وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾
لِّيَجْزِىَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ
وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ
يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾
وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ
لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ؕ وَكَفَى اللّٰهُ

الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا
عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾
وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ
اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ
فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ
وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾
وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَ
اَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ۚ وَكَانَ
اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾ ع
يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ
كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا
فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا
جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾
وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ
لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾
يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا
الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

उनकी मदद की थी उन्हें उनके क़िलों से उतारा और उनके दिलों में रोअ़ब डाला उनमें एक गिरोह को क़त्ल करते हो और एक गिरोह को क़ैद।

२७. और हम ने तुम्हारे हाथ लगाए उनकी ज़मीन और उनके मकान और उनके माल और वो ज़मीन जिस पर तुमने अभी क़दम नहीं रखा है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

रुकूअ ४

२८. ऐ ग़ैब बतानेवाले (नबी) अपनी बीबियों से फ़रमादे अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी आराइश चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें माल दूँ और अच्छी तरह छोड़ दूँ।

२९. और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम्हारी नेकी वालियों के लिए बड़ा अज्र तैयार कर रखा है।

३०. ऐ नबी की बीबियो जो तुम में सरीह हया के ख़िलाफ कोई जुरअत करे उस पर औरों से दूना अज़ाब होगा और ये अल्लाह को आसान है।

३१. और जो तुम में फ़रमाँबरदार रहे अल्लाह और रसूल कि और अच्छा काम करे हम उसे औरों से दूना सवाब देंगे और हम ने उस के लिए इज्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है।

३२. ऐ नबी की बीबियो तुम और औरतों की तरह नहीं हो अगर अल्लाह से डरो तो बात में ऐसी नरमी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे हाँ अच्छी बात कहो।

३३. और अपने घरों में ठहरी रहो और बेपर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलियत की बेपर्दगी और नमाज़ क़ाएम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो अल्लाह तो यही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे।

३४. और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं अल्लाह की आयतें और हिकमत बेशक अल्लाह हर बारीकी जानता ख़बरदार है।

रुकूअ ५

३५. बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले और ईमान वालियाँ और फ़रमाँबरदार और

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ
اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهَا
رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾
يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ
النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ
بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ
مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾
وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ
تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ
عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ
يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾
وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾
اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ
وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ

وَ الْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ
وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ
وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ
وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ
فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ
اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ
لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝٣٥

फ़रमाबरदारें और सच्चे और सच्चियाँ और सब्रवाले और सब्रवालियाँ और आजज़ी करनेवाले और आजज़ी करने वालियाँ और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करनेवालियाँ और रोज़े वाले और रोज़े वालियाँ और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियाँ और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियाँ इन सब के लिए अल्लाह ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तयार कर रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ
اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا
اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ
وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝٣٦

३६. और न किसी मुसलमान मर्द न मुसलमान औरत को पहुँचता है कि जब अल्लाह व रसूल कुछ हुकम फ़रमादें तो उन्हें अपने मुआमला का कुछ इख़्तियार रहे और जो हुकम न माने अल्लाह और उसके रसूल का वो बेशक सरीह गुमराही बहका।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ
عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ
فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَ
تَخْشَى النَّاسَ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ
تَخْشٰىهُ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا
وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى

३७. और ऐ महबूब याद करो जब तुम फ़रमाते थे उससे जिसे अल्लाह ने नेअ़मत दी और तुम ने उसे नेअ़मत दी कि अपनी बीबी अपने पास रहनेदे और अल्लाह से डर और तुम अपने दिल में रखते थे वो जिसे अल्लाह को ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था और तुम्हें लोगों के तअ़ने का अन्देशा था और अल्लाह ज़्यादा सज़ावार है कि उसका ख़ौफ़ रखो फिर जब ज़ैद की ग़र्ज़ उससे

निकल गई तो हम ने वो तुम्हारे निकाह में देदी कि मुसलमानों पर कुछ हरज न रहे उनके ले पालको (मुँह बोले बेटे) की बीबियों में जब उनसे उनका काम ख़त्म हो जाए और अल्लाह का हुक्म हो कर रहना।

३८. नबी पर कोई हरज नही उस बात में जो अल्लाह ने उसके लिए मुक़र्रर फ़रमाई अल्लाह का दस्तूर चला आ रहा है उनमें जो पहले गुज़र चुके और अल्लाह का काम मुक़र्रर तक़्दीर है।

३९. वो जो अल्लाह के पयाम पहुँचाते और उससे डरते और अल्लाह के सिवा किसी का ख़ौफ़ न करते और, अल्लाह बस है हिसाब लेनेवाला।

४०. मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नही हाँ अल्लाह में रसूल है और सब नबीयों के पिछले और अल्लाह सब कुछ जानता है।

रुकूअ ६

४१. ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत याद करो।

४२. और सुबह व शाम उसकी पाकी बोलो।

४३. वही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वो और उसके फ़रिश्ते कि तुम्हें अंधेरीयों से उजाले की तरफ़ निकाले और वो मुसलमानों पर

الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِيٓ أَزْوَاجِ أَدْعِيَآئِهِمْ
إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ
أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٣٧﴾

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا
فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ
خَلَوْا مِن قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ
قَدَرًا مَّقْدُورًا ﴿٣٨﴾

الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَ
يَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا
إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٣٩﴾

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن
رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ
النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا ﴿٤٠﴾ ع

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ
ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿٤١﴾

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾

هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ
لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ

मेहरबान है।

४४. उनके लिए मिलते वक़्त की दुआ सलाम है और उनके लिए इज़्ज़त का सवाब तैयार कर रखा है।

४५. ऐ ग़ैब की ख़बरें बतानेवाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर और ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता।

४६. और अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़ताब।

४७. और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दो कि उनके लिए अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है।

४८. और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की ख़ुशी न करो और उनकी ईज़ा पर दरगुज़र फ़रमाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह बस है कारसाज़।

४९. ऐ ईमान वालो जब तुम मुसलमान औरतों से निकाह करो फिर उन्हें बे हाथ लगाए छोड़ दो तो तुम्हारे लिए कुछ इद्दत नहीं जिसे गिनो तो उन्हें कुछ फ़ाएदा दो और अच्छी तरह से छोड़ दो।

५०. ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) हम ने तुम्हारे लिए हलाल फ़रमाईं तुम्हारी वो बीबियां जिन को तुम महर दो और तुम्हारे हाथ का माल कनीज़ें

وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾
تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ وَ
أَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا
وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٥﴾
وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا
مُنِيرًا ﴿٤٦﴾
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ
اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٧﴾
وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَ
دَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَ
كَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٤٨﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ
الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ
أَنْ تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ
عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا فَمَتِّعُوهُنَّ وَ
سَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٤٩﴾
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ
اللَّاتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ

يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ
عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ
وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ
وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا
لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا
خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ
قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ
اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ
لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ
اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾
تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْٓ
اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ
مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ
ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ
وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَانَ
اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾
لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْ بَعْدُ وَ
لَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّ

जो अल्लाह ने तुम्हें ग़नीमत में दीं और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और फुफियो की बेटियाँ और मामूँ की बेटियाँ और ख़ालाओ की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की और ईमान वाली औरत अगर वो अपनी जान नबी की नज़्र करे अगर नबी इसे निकाह में लाना चाहे ये ख़ास तुम्हारे लिए है उम्मत के लिए नहीं हमें मअलूम है जो हम ने मुसलमानों पर मुक़र्रर किया है उनकी बीबियों और उनके हाथ के माल कनीज़ों में ये खुसूसियत तुम्हारी इस लिए कि तुम पर कोई तंगी न हो और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान।

५१. पीछे हटाओ उनमें से जिसे चाहो और अपने पास जगह दो जिसे चाहो और जिसे तुमने किनारे कर दिया था उसे तुम्हारा जी चाहे तो उसमें भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं ये अम्र उससे नज़दीक तर है के उनकी आँखें ठंडी हों और ग़म न करें और तुम उन्हें जो कुछ अता फ़रमाओ उस पर वो सब की सब राज़ी रहें और अल्लाह जानता है जो तुम सब के दिलों में है और अल्लाह इल्म व हिल्म वाला है।

५२. उनके बाद और औरतें तुम्हें हलाल नहीं और न ये कि उनके एवज़ और बीबियाँ बदलो अगरचे तुम्हें उनका

لَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ
يَمِيْنُكَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
رَّقِيْبًا ﴿٥٢﴾

हुस्न भाए मगर कनीज़ तुम्हारे हाथ का माल और अल्लाह हर चीज़ पर निगहबान है।

रुकूअ ७

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ
النَّبِيِّ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ
غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ
فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ
لَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ۗ اِنَّ ذٰلِكُمْ
كَانَ يُؤْذِى النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۫
وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ۗ وَاِذَا
سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ
وَّرَآءِ حِجَابٍ ۗ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ
وَقُلُوْبِهِنَّ ۗ وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا
رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ
مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ۗ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ
عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿٥٣﴾

५३. ऐ ईमान वालो नबी के घरों में न हाज़िर हो जब तक इज़्न न पाओ मसलन खाने के लिए बुलाए जाओ न यूँ कि खुद उसके पकने की राह तको हाँ जब बुलाए जाओ तो हाज़िर हो और जब खा चुको तो मुतफ़र्रिक़ हो जाओ न ये कि बैठे बातों में दिल बहलाओ बेशक इसमें नबी को ईज़ा होती थी तो वो तुम्हारा लिहाज़ फ़रमाते थे और अल्लाह ह़क फ़रमाने में नहीं शरमाता और जब तुम उनसे बरतने की कोई चीज़ माँगो तो पर्दे के बाहर से मांगो उसमें ज़्यादा सुथराई है तुम्हारे दिलों और उनके दिलों की और तुम्हे नहीं पहुँचता कि रसूलल्लाह को इज़ा दो और न ये कि उनके बाद कभी उनकी बीबियों से निकाह करो बेशक ये अल्लाह के नज़दीक बड़ी सख़्त बात है।

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٥٤﴾

५४. अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या छुपाओ तो बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآئِهِنَّ وَ

५५. उन पर मुज़ाएक़ा नहीं उनके बाप और बेटों और भाईयों और भतीजों

और भांजों और अपने दीन की औरतों और अपनी कनीज़ों में और अल्लाह से डरती रहो बेशक, हर चीज़ अल्लाह के सामने है।

५६. बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

५७. बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को उन पर अल्लाह की लअ्नत है दुनिया और आख़िरत में और अल्लाह ने उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।

५८. और जो ईमान वाले मर्दों और औरतों को बे किए सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।

रुकूअ ८

५९. ऐ नबी अपनी बीबियों और साहबज़ादियों और मुसलामों की औरतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुँह पर डाले रहे ये उससे नज़्दीक तर है की उनकी पहचान हो तो सताई न जाएँ और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

६०. अगर बाज़ न आए मुनाफ़िक़

لَآ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ
اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ
وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ
وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى
النَّبِيِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا
عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ
وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٥٧﴾

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ
احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٨﴾

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ
وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ
مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ
يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ
فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ
لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾

और जिन के दिलों में रोग है और मदीना में झूट उड़ाने वाले तो ज़रूर हम तुम्हें उनपर शह देंगे फिर वो मदीना में तुम्हारे पास न रहें गे मगर थोड़े दिन।

مَّلْعُوْنِيْنَ ۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا
وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾

६१. फटकारे हुए जहाँ कहीं मिले पकड़े जाएँ और गिन गिन कर क़त्ल किये जाएँ।

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ
تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

६२. अल्लाह का दस्तूर चला आता है उन लोगों में जो पहले गुज़र गए और तुम अल्लाह का दस्तूर हरगिज़ बदलता न पाओगे।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۗ قُلْ
اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَمَا يُدْرِيْكَ
لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾

६३. लोग तुम से क़यामत को पूछते हैं तुम फ़रमाओ उसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है और तुम क्या जानो शायद क़यामत पास ही हो।

اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ
لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾

६४. बेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लअ़नत फ़रमाई और उनके लिए भड़कती आग तैयार रखी है।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ
وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾

६५. उसमें हमेशा रहेंगे उसमें न कोई हिमायती पाएंगे न मददगार।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ
يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا
الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾

६६. जिस दिन उनके मुँह उलट उलट कर आग में तले जाएंगे कहते होंगे हाए किसी तरह हम ने अल्लाह का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता।

६७. और कहेंगे ऐ हमारे रब हम

अपने सरदारों और अपने बड़ों के कहने पर चले तो उन्हो ने हमें राह से बहका दिया।

६८. ऐ हमारे रब उन्हें आग का दूना अज़ाब दे और उन पर बड़ी लअ्नत कर।

रुकूअ ९

६९. ऐ ईमान वालो उन जैसे न होना जिन्हो ने मूसा को सताया तो अल्लाह ने उसे बरी फ़रमा दिया उस बात से जो उन्होंने कही और मूसा अल्लाह के यहाँ आबरू वाला है।

७०. ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो।

७१. तुम्हारे अअ्माल तुम्हारे लिये सँवार देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करे उसने बड़ी कामयाबी पाई।

७२. बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई आसमानों और ज़मीन और पहाड़ो पर तो उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उससे डर गए और आदमी ने उठाली बेशक वो अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है।

७३. ताकी अल्लाह अज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को और अल्लाह तौबा क़ुबूल फ़रमाए मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों की और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَ
كُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا ﴿٦٧﴾
رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ
وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ﴿٦٨﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا
وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ﴿٦٩﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَ
قُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٧٠﴾
يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧١﴾
إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ
يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا
الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾
لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ
وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ
اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

सूरए सबा

मक्की है और इसमें चौवन आयतें और छः रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. सब ख़ूबियाँ अल्लाह को कि ऊसीका माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और आख़िरत में उसी की तअ़रीफ़ है वही है हिकमत वाला ख़बरदार।

२. जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है और जो ज़मीन से निकलता है और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है और वही है मेहरबान बख़्शने वाला।

३. और काफ़िर बोले हम पर क़यामत न आएगी तुम फ़रमाओ क्यों नहीं मेरे रब की क़सम बेशक ज़रूर तुम पर आएगी ग़ैब जाननेवाला उससे ग़याब नहीं ज़र्रा भर कोई चीज़ आसमानों में और न ज़मीन में और न उससे छोटी और न बड़ी मगर एक साफ़ बताने वाली किताब में है।

४. ताकि सिला दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किए ये है जिन के लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी ।

५. और जिन्होंने हमारी आयतों में हराने की कोशिश की उनके लिए

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾ ع

سُوْرَةُ سَبَاٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي
الْاٰخِرَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١﴾

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ
مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا
يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ﴿٢﴾

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ۚ
قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ
الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ
فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَا
اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَا اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ
كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣﴾ ق لا

لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ
رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٤﴾

وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ

أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ
أَلِيمٌ ⑤

सख़्त अज़ाब दर्दनाक में से अज़ाब है।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي
أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ
وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ⑥

६. और जिन्हें इल्म मिला वो जानते हैं कि जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा वही ह़क़ है और इज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे के राह बताता है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ
عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ
كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ
جَدِيدٍ ⑦

७. और काफ़िर बोले क्या हम तुम्हें ऐसा मर्द बतादें जो तुम्हें ख़बर दे कि जब तुम पुरज़ा हो कर बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओ तो फिर तुम्हें नया बनना है।

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَم بِهِ
جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ
الْبَعِيدِ ⑧

८. क्या अल्लाह पर उसने झूठ बांधा या उसे सौदा है बल्कि वो जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते अज़ाब और दूर की गुमराही में हैं।

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَ
مَا خَلْفَهُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ
إِن نَّشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ
نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ
مُّنِيبٍ ⑨ ع

९. तो क्या उन्होंने न देखा जो उनके आगे और पीछे है आसमान और ज़मीन हम चाहें तो उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आसमान का टुकड़ा गिरा दें बेशक उसमें निशानी है हर रुजूअ लाने वाले बन्दे के लिए।

रूकूअ २

१०. और बेशक हम ने दाऊद को अपना बड़ा फ़ज़्ल दिया ऐ पहाड़ों उसके साथ अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करो और ऐ परिन्दो और हम ने उस के लिए लोहा नर्म किया।

११. कि वसीअ ज़िरहें बना और बनाने में अंदाज़े का लिहाज़ रख और तुम सब नेकी करो बेशक तुम्हारे काम देख रहा हूँ।

१२. और सुलेमान के बस में हवा कर दी उसकी सुबह की मन्ज़िल एक महीना की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह और हम ने उस के लिए पिघले हुए तांबे का चश्मा बहाया और जिनों में से वो जो उसके आगे काम करते उसके रब के हुक्म से और जो उनमें हमारे हुक्म से फिरे हम उसे भड़कती आग का अज़ाब चखाएंगे।

१३. उसके लिए बनाते जो वो चाहता ऊँचे-ऊँचे महल और तस्वीरें और बड़े हौज़ों के बराबर लगन और लंगरदार देगें ऐ दाऊद वालो शुक्र करो और मेरे बन्दों में कम है शुक्र वाले।

१४. फिर जब हम ने उस पर मौत का हुक्म भेजा जिनों को उसकी मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने कि उसका असा खाती थी फिर जब सुलेमान ज़मीन पर आया जिनों की हक़ीक़त खुल गई अगर ग़ैब जानते

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾

أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ ۖ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١﴾

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۖ وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ ۖ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِيبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَاسِيَاتٍ ۚ اعْمَلُوا آلَ دَاوُودَ شُكْرًا ۚ وَقَلِيلٌ مِنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ﴿١٣﴾

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ

होते तो उस ख़्वारी के अज़ाब में न होते।

१५. बेशक सबा के लिए उनकी आबादी में निशानी थी दो बाग़ दाहिने और बाएं अपने रब का रिज़्क़ खाओ और उसका शुक्र अदा करो पाकीज़ा शहर और बख़्शने वाला रब।

१६. तो उन्हों ने मुँह फेरा तो हम ने उन पर ज़ोर का अहला (सैलाब) भेजा और उनके बाग़ों के एवज़ दो बाग़ उन्हे बदल दिए जिन में बकटा (बदमज़ा) मेवा और झाव और कुछ थोड़ी सी बेरीयाँ।

१७. हम ने उन्हे ये बदला दिया उनकी ना शुकरी की सज़ा और हम किसे सज़ा देते हैं उसी को जो नाशुकरा है।

१८. और हम ने किए थे उनमें और उन शहरों में जिन में हम ने बरकत रखी सरे राह कितने शहर और उन्हें मन्ज़िल के अन्दाज़े पर रखा उनमें चलो रातों और दिनों अमन व अमान से।

१९. तो बोले ऐ हमारे रब हमारे सफ़र में दूरी डाल और उन्हों ने खुद अपना ही नुक़्सान किया तो हम ने उन्हें कहानियाँ कर दिया और उन्हे पूरी परेशानी से परागन्दा कर दिया बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ है हर बड़े सब्र वाले हर बड़े शुक्र वाले के लिए।

أَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا
لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾
لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ
جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ كُلُوْا
مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ بَلْدَةٌ
طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿١٥﴾
فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ
الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ
ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ
مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾
ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا وَهَلْ
نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى
الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّ
قَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ سِيْرُوْا فِيْهَا
لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾
فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَ
ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ
وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

२०. और बेशक इब्लीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया तो वो उसके पीछे हो लिए मगर एक गिरोह कि मुसलमान था।

२१. और शैतान का उनपर कुछ क़ाबू न था मगर इसलिए कि हम दिखा दें कि कौन आख़िरत पर ईमान लाता है और कौन उससे शक में है और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगेहबान है।

रुकूअ ३

२२. तुम फ़रमाओ पुकारो उन्हें जिन्हें अल्लाह के सिवा समझे बैठे हो वो ज़र्रा भर के मालिक नहीं आसमानों में और न ज़मीन में और न उनका उन दोनों में कुछ हिस्सा और न अल्लाह का उनमें से कोई मददगार।

२३. और उसके पास शफ़ाअत काम नहीं देती मगर जिस के लिए वो इज़्न फ़रमाए यहाँ तक कि जब इज़्न दे कर उनके दिलों की घबराहट दूर फ़रमा दी जाती है एक दूसरे से कहते हैं तुम्हारे रब ने क्या ही बात फ़रमाई वो कहते हैं जो फ़रमाया हक़ फ़रमाया।

२४. और वही है बुलन्द बड़ाई वाला तुम फ़रमाओ कौन जो तुम्हें रोज़ी देता है आसमानों और ज़मीन से तुम ख़ुद ही फ़रमाओ अल्लाह और बेशक हम या तुम या तो ज़रूर हिदायत पर है या खुली गुमराही में।

२५. तुम फ़रमाओ हम ने तुम्हारे

لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾
وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ
فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾
وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ
اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ
مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ
ع عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾
قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي
السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ
فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ
مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾
وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا
لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ
عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ
رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾
قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ

गुमान में अगर कोई जुर्म किया तो उसकी तुम से पूछ नहीं न तुम्हारे कोतको का हम से सवाल।

२६. तुम फ़रमाओ हमारा रब हम सब को जमअ् करेगा फिर हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमादेगा और वही है बड़ा नियाओ चुकाने वाला (दुरूस्त फैसला करने वाला) सब कुछ जानता।

२७. तुम फ़रमाओ मुझे दिखाओ तो वो शरीक जो तुम ने उससे मिलाए हैं हिश्त बल्कि वही है अल्लाह इज़्ज़त वाला हिकमत वाला।

२८. और ऐ महबूब हम ने तुम को न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमीयों को घेरनेवाली है खुशख़बरी देता और डर सुनाता लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

२९. और कहते हैं ये वअ्दा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो।

३०. तुम फ़रमाओ तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन का वअ्दा जिस से तुम न एक घड़ी पीछे हट सको और न आगे बढ़ सको।

रुकूअ ४

३१. और काफ़िर बोले हम हरगिज़ न ईमान लाएँगे इस कुरआन पर और न उन किताबों पर जो इससे आगे थी और किसी तरह तू देखें जब ज़ालिम अपने रब के पास खड़े किए जाएँगे उनमें एक दूसरे पर बात डालेगा वो जो दबे थे उनसे कहेंगे जो ऊँचे खींचते (बड़े

لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢٤
قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَلَا
نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٢٥
قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ
بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ۝٢٦
قُلْ اَرُوْنِىَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ
شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝٢٧
وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ
بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٢٨
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٢٩
قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ
عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ۝٣٠ ع
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ
بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِىْ بَيْنَ
يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ
مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ

बने हुए) थे अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आते।

३२. वो जो ऊँचे खींचते थे उन से कहेंगे जो दबे हुए थे क्या हम ने तुम्हें रोक दिया हिदायत से बाद इसके कि तुम्हारे पास आई बल्कि तुम खुद मुजरिम थे।

३३. और कहेंगे वो जो दबे हुए थे उनसे जो ऊंचे खींचते थे बल्कि रात दिन का दाव (फ़रेब) था जब कि तुम हमें हुक्म देते थे के अल्लाह का इन्कार करें और उसके बराबर वाले ठहराएं और दिल ही दिल में पछताने लगे जब अज़ाब देखा और हम ने तौक़ डाले उनकी गरदनो में जो मुन्किर थे वो क्या बदला पाएंगे मगर वही जो कुछ करते थे।

३४. और हम ने जब कभी किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहाँ के आसूदो (अमीरो) ने यही कहा कि तुम जो लेकर भेजे गए हम उसके मुन्किर हैं।

३५. और बोले हम माल और अवलाद में बढ़ कर हैं और हम पर अज़ाब होना नहीं।

३६. तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ करता है जिस के लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है लेकिन बहुत

بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ
الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ
اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ
الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ
مُجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ
إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ
لَهُ أَنْدَادًا وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا
رَأَوُا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي
أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ يُجْزَوْنَ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ
إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ
بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٤﴾

وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا
نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٣٥﴾

लोग नहीं जानते।

रूकूअ ५

३७. और तुम्हारे माल और तुम्हारी अवलाद उस क़ाबिल नहीं के तुम्हें हमारे क़रीब तक पहुँचाएं मगर वो जो ईमान लाए और नेकी की उनके लिए दूना दून (कई गुना) सिला उनके अमल का बदला और वो बालाख़ानों में अमन व अमान से हैं।

३८. और वो जो हमारी आयतो मे हराने की कोशिश करते हैं वो अज़ाब मे ला धरे जाएंगे।

३९. तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ फ़रमाता है अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता जिसके लिए चाहे और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो वो उसके बदले और देगा और वो सब से बहेतर रिज़्क़ देने वाला।

४०. और जिस दिन उन सब को उठाए गा फिर फ़रिशतों से फ़रमाएगा क्या ये तुम्हें पूजते थे।

४१. वो अर्ज़ करेंगे पाकी है तुझको तू हमारा दोस्त है न वो बल्कि वो जिनों को पूजते थे उनमें अक्सर उन्हीं पर यक़ीन लाए थे।

४२. तो आज तुम में एक दूसरे के भले बुरे का कुछ इख़्तियार न रखे गा

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝٣٦

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي
تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰى إِلَّا مَنْ آمَنَ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ
الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ
آمِنُونَ ۝٣٧

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيٰتِنَا مُعٰجِزِينَ
أُولٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۝٣٨

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا
أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَ
هُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِينَ ۝٣٩

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ
لِلْمَلٰئِكَةِ أَهٰؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا
يَعْبُدُونَ ۝٤٠

قَالُوا سُبْحٰنَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُونِهِمْ ۚ
بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۚ أَكْثَرُهُمْ
بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ۝٤١

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَلَا ضَرًّا ۖ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾

और हम फ़रमाएँगे ज़ालिमों से उस आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَن يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ وَقَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرًى ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٣﴾

४३. और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाएं तो कहते हैं ये तो नहीं मगर एक मर्द कि तुम्हें रोकना चाहते है तुम्हारे बाप दादा के मअ़बूदों से और कहते हैं ये तो नहीं मगर बोहतान जोड़ा हुआ और काफ़िरों ने ह़क़ को कहा जब उनके पास आया ये तो नहीं मगर खुला जादू ।

وَمَا آتَيْنَاهُم مِّن كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِن نَّذِيرٍ ﴿٤٤﴾

४४. और हम ने उन्हें कुछ किताबें न दीं जिन्हें पढ़ते हों न तुम से पहले उनके पास कोई डर सुनाने वाला आया।

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوا مِعْشَارَ مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾

४५. और उनसे अगलों ने झुटलाया और ये उसके दसवीं को भी न पहुँचे जो हम ने उन्हें दिया था फिर उन्हों ने मेरे रसूलों को झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा इन्कार करना।

रुकूअ ६

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُم بِوَاحِدَةٍ ۖ أَن تَقُومُوا لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ

४६. तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें एक नसीहत करता हूँ कि अल्लाह के लिए खड़े रहो दो दो और अकेले अकेले फिर सोचो कि तुम्हारे इन साहिब में जुनून की कोई बात नहीं वो तो नहीं मगर तुम्हें डर सुनाने वाले एक सख़्त अज़ाब के आगे।

४७. तुम फ़रमाओ मैं ने तुम से उसपर कुछ अज्र मांगा हो तो वो तुम ही को मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है और वो हर चीज़ पर गवाह है।

४८. तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब हक़ का इल्का फ़रमाता है बहुत जानने वाला सब ग़ैबों का तुम फ़रमाओ हक़ आया और बातिल न पहल करे और न फिर कर आए।

४९. तुम फ़रमाओ अगर मैं बहका तो अपने ही बुरे को बहका और अगर मैं ने राह पाई तो उसके सबब जो मेरा रब मेरी तरफ़ 'वही' फ़रमाता है बेशक वो सुननेवाला नज़दीक है।

५१. और किसी तरह तू देखे जब वो घबराहट में डाले जाएंगे फिर बच कर न निकल सकेंगे और एक क़रीब जगह से पकड़ लिए जाएँगे।

५२. और कहेंगे हम उस पर ईमान लाए और अब वो उसे क्योंकर पाएँ इतनी दूर जगह से

५३. कि पहले तो उससे कुफ्र कर चुके थे और बेदेखे फेंक मारते हैं दूर मकान से।

५४. और रोक कर दी गई उनमें और उसमें जिसे चाहते हैं जैसे उनके पहले गिरोहों से किया गया था बेशक वो धोका डालने वाले शक में थे।

يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾
قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ؕ
اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾
قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ
الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾
قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ
وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾
قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى
نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ
اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَ
اُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾
وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ
مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾
وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ
بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾
وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ
كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ

सूरए फ़ातिर

मक्की है इसमें पैंतालीस आयतें और पांच रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहेरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़रिश्तों को रसूल करने वाला जिनके दो दो तीन तीन चार चार पर हैं बढ़ाता है आफ़रीनश (पैदाइश) में जो चाहे बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

२. अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोले उसका कोई रोकने वाला नहीं और जो कुछ रोक ले तो उसकी रोक के बाद उसका कोई छोड़ने वाला नहीं और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

३. ऐ लोगो अपने उपर अल्लाह का एहसान याद करो क्या अल्लाह के सिवा कोई और भी ख़ालिक़ है कि आसमान और ज़मीन से तुम्हें रोज़ी दे उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं तो तुम कहाँ औंधे जाते हो।

४. और अगर ये तुम्हें झुटलाएँ तो बेशक तुम से पहले कितने ही रसूल झुटलाए गए और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं।

५. ऐ लोगो बेशक अल्लाह का वअ़दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुनिया की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें

إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ﴿٥٤﴾

سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَخَمْسُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
جَاعِلِ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا أُولِي أَجْنِحَةٍ
مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ
مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿١﴾
مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ
فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ
فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢﴾
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ
يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٣﴾
وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ
مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤﴾
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا

अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वो बड़ा फ़रेबी।

६. बेशक शैतान तुम्हार दुश्मन है तुम भी उसे दुश्मन समझो वो तो अपने गिरोह को इसी लिए बुलाता है के दोज़ख़ियों में हों।

७. काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब है और जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है।

रुकूअ २

८. तो क्या वो जिसकी निगाह में उसका बुरा काम आरास्ता किया गया कि उसने उसे भला समझा हिदायत वाले की तरह हो जाएगा इस लिए अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और राह देता है जिसे चाहे तो तुम्हारी जान उन पर हसरतों मे न जाए अल्लाह खूब जानता है जो कुछ वो करते हैं।

९. और अल्लाह है जिसने भेजीं हवाएँ कि बादल उभारती हैं फिर हम उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ रवाँ करते हैं तो उसके सबब हम ज़मीन को ज़िन्दा फ़रमाते हैं उसके मरे पीछे यूँहीं हश्र में उठना है।

१०. जिसे इज़्ज़त की चाह हो तो इज़्ज़त तो सब अल्लाह के हाथ है उसी की तरफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम और जो नेक काम है वो उसे बुलन्द

تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ
بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ⑤
إِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ
عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا
مِنْ أَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑥
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۚ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑦
أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ
حَسَنًا ۚ فَإِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ
نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ۚ إِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ⑧
وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ أَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
سَحَابًا فَسُقْنٰهُ إِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ
كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ⑨
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ
جَمِيْعًا ۚ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ

करता है और वो जो बुरे दांवों (फ़रेब) करते है उनके लिए सख़्त अज़ाब है और उन्हीं का मक्र बरबाद होगा।

११. और अल्लाह ने तुम्हें बनाया मिट्टी से फिर पानी की बूंद से फिर तुम्हें किया जोड़े जोड़े और किसी मादा को पेट नहीं रहता और न वो जनती है मगर उसके इल्म से और जिस बड़ी उम्र वाले को उम्र दी जाए या जिस किसी की उम्र कम रखी जाए ये सब एक किताब में है बेशक ये अल्लाह को आसान है।

१२. और दोनों समन्दर एक से नहीं ये मीठा है ख़ूब मीठा पानी खुशगवार और ये खारी है तल्ख़ और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोश्त और निकालते हो पहननें का एक गहना (ज़ेवर) और तू कश्तियों को उसमे देखे कि पानी चीरती हैं ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और किसी तरह हक़ मानो।

१३. रात लाता है दिन के हिस्से में और दिन लाता है रात के हिस्से में और उसने काम में लगाए सूरज और चाँद हर एक एक मुक़र्रर मिआद तक चलता है ये है अल्लाह तुम्हार रब उसी की बादशाही है और उसके सिवा जिन्हे तुम पूजते हो दाना खुरमा के

وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ
يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ
وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يَبُورُ ﴿١٠﴾

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ
نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا
تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ
وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُعَمَّرٍ وَلَا يُنْقَصُ مِنْ
عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى
اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١١﴾

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ ۖ هَٰذَا عَذْبٌ
فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۖ
وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَ
تَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ وَتَرَى
الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوا مِنْ
فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ
فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمُ
اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ

छिलके तक के मालिक नहीं।

१४. तुम उन्हें पुकारो तो वो तुम्हारी पुकार न सुने और बिलफ़र्ज़ सुन भी ले तो तुम्हारी हाजत रवा न कर सकें और क़यामत के दिन वो तुम्हारे शिर्क से मुन्किर होंगे और तुझे कोई न बताएगा उस बताने वाले की तरह।

रुकूअ ३

१५. ऐ लोगो तुम सब अल्लाह के मोहताज और अल्लाह ही बेनियाज़ है सब खूबियों सराहा।

१६. वो चाहे तो तुम्हें ले जाए और नई मख़लूक़ ले आए।

१७. और ये अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं।

१८. और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी और अगर कोई बोझ वाली अपना बोझ बटाने को कीसी को बुलाए तो उसके बोझ में से कोई कुछ न उठाएगा अगरचे क़रीब रिश्तेदार हो ऐ महबूब तुम्हारा डर सुनाना उन्हीं को काम देता है जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ाएम रखते हैं और जो सुथरा हुआ तो अपने ही भले को सुथरा हुआ और अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है।

१९. और बराबर नहीं अन्धा और आँखियारा।

२०. और न अंधेरीयां और

تَدْعُونَ مِن دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ
مِن قِطْمِيرٍ ﴿١٣﴾
إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ
وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ وَ
لَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾
يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ
وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾
إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ
جَدِيدٍ ﴿١٦﴾
وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ
وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا
لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا
قُرْبَىٰ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ
رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَمَن تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ
وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾
وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۝٢٠

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ۝٢١

وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ
اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ وَمَآ اَنْتَ
بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝٢٢

اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ۝٢٣

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَ
اِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ۝٢٤

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝٢٥

ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيْرِ ۝٢٦

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا
اَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيْضٌ
وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ
سُوْدٌ ۝٢٧

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ

उजाला।

२१. और न साया और न तेज़ धूप।

२२. और बराबर नहीं ज़िन्दे और मुर्दे बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे चाहे और तुम नहीं सुनाने वाले उन्हें जो क़ब्रों में पड़े हैं।

२३. तुम तो यही डर सुनाने वाले हो।

२४. ऐ महबूब बेशक हम ने तुम्हें हक़ के साथ भेजा खुशख़बरी देता और डर सुनाता और जो कोई गिरोह था सब में एक डर सुनाने वाला गुज़र चुका।

२५. और अगर ये तुम्हें झुटलाएँ तो इनसे अगले भी झुटला चुके हैं उनके पास उनके रसूल आए रौशन दलीलें और सहीफ़े और चमकती किताब ले कर।

२६. फिर मैं ने काफ़िरों को पकड़ा तो कैसा हुआ मेरा इन्कार।

रुकूअ ४

२७. क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो हम ने उससे फल निकाले रंग बरंग और पहाड़ों में रास्ते हैं सफ़ेद और सुर्ख़ रंग-रंग के और कुछ काले भुजंग (सियाह काले)।

२८. और आदमियों और जानवरों और चौपायों के रंग यूँही तरह तरह के हैं अल्लाह से उसके बन्दों में वही

डरते है जो इल्म वाले है बेशक अल्लाह बख़्शने वाला इज़्ज़त वाला है।

२९. बेशक वो जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाएम रखते हैं और हमारे दिए से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर वो ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं।

३०. जिस में हरगिज़ टोटा (नुक़्सान) नही ताकि उनके सवाब उन्हें भरपूर दें और अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा अ़ता करें बेशक वो बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है।

३१. और वो किताब जो हम ने तुम्हारी तरफ़ 'वही' भेजी वही हक़ है अपने से अगली किताबों की तसदीक़ फ़रमाती हुई बेशक अल्लाह अपने बन्दों से ख़बरदार देखने वाला है।

३२. फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को तो उनमे कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करता है और उनमें कोई मियाना चाल पर है और उनमें कोई वो है जो अल्लाह के हुक्म से भलाईयों में सबक़त ले गया यही बड़ा फ़ज़्ल है।

३३. बसने के बागों में दाख़िल होंगे वो उनमें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहाँ उनकी पोशाक रेशमी है।

مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا يَخْشَى
اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ
عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَ
أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً
لَنْ تَبُورَ ﴿٢٩﴾

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ
مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ
هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ
اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا
مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ
وَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ
بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ
الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ
فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا

३४. और कहेंगे सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने हमारा ग़म दूर किया बेशक हमारा रब बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है।

३५. वो जिसने हमें आराम की जगह उतारा अपने फ़ज़्ल से हमें उसमें न कोई तकलीफ़ पहुँचे न हमें उसमें कोई तकान लाहिक़ हो।

३६. और जिन्हों ने कुफ़्र किया उनके लिए जहन्नम की आग है न उनकी क़ज़ा आए कि मर जाएं और न उन पर उसका अज़ाब कुछ हलका किया जाए हम ऐसी ही सज़ा देते हैं हर बड़े नाशुकरे को।

३७. और वो उसमें चिल्लाते होंगे ऐ हमारे रब हमें निकाल कि हम अच्छा काम करें उसके ख़िलाफ़ जो पहले करते थे और क्या हम ने तुम्हें वो उम्र न दी थी जिसमें समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाल तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था तो अब चखो कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

रूकूअ ५

३८. बेशक अल्लाह जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की हर छुपी बात का बेशक वो दिलों की बात जानता है।

३९. वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में अगलों का जा नशीन किया तो जो कुफ़्र करे उसका कुफ़्र उसी पर पड़े और

وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا
الْحَزَنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ
فَضْلِهِ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا
يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ
لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي
كُلَّ كَفُورٍ ﴿٣٦﴾

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ
أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ
تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا
لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ﴿٣٧﴾ ع

إِنَّ اللَّهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ
إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي
الْأَرْضِ ۚ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ

काफ़िरों को उनका कुफ़्र उनके रब के यहाँ नही बढ़ाएगा मगर बेज़ारी और काफ़िरो को उनका कुफ़्र न बढ़ाएगा मगर नुक़्सान।

وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

४०. तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अपने वो शरीक जिन्हे अल्लाह के सिवा पूजते हो मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन में से कौन सा हिस्सा बनाया या आसमानों में कुछ उनका साझा है या हम ने उन्हें कोई किताब दी है कि वो उसकी रौशन दलीलों पर हैं बल्कि ज़ालिम आपस में एक दूसरे को वअ़दा नहीं देते मगर फ़रेब का।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِنْهُ ۚ بَلْ إِنْ يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ﴿٤٠﴾

४१. बेशक अल्लाह रोके हुए है आसमानों और ज़मीन को कि जुंबिश न करें और अगर वो हट जाएँ तो उन्हे कौन रोके अल्लाह के सिवा बेशक वो हिल्म वाला बख़्शने वाला है।

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤١﴾

४२. और उन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई अपनी क़समों में हद की कोशिश से कि अगर उनके पास कोई डर सुनाने वाला आया तो वो ज़रूर किसी न किसी गिरोह से ज़्यादा राह पर होंगे फिर जब उनके पास डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया तो उसने उन्हें न बढ़ाया मगर नफ़रत करना।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤٢﴾

४३. अपनी जान को ज़मीन में ऊंचा खींचना और बुरा दावँ और बुरा दावँ (फ़रेब) अपने चलने वाले ही पर पड़ता है तो काहे के इन्तेज़ार में है मगर उसी के जो अगलो का दस्तूर हुआ

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ

तो तुम हरगिज़ अल्लाह के दस्तूर को बदलता न पाओगे और हरगिज़ अल्लाह के क़ानून को टलता न पाओगे।

४४. और क्या उन्हों ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का कैसा अन्जाम हुआ और वो उनसे ज़ोर में सख़्त थे और अल्लाह वो नहीं जिसके क़ाबू से निकल सके कोई शैय आसमानों और न ज़मीन में बेशक वो इल्म व कुदरत वाला है।

४५. और अगर अल्लाह लोगों को उनके किए पर पकड़ता तो ज़मीन की पीठ पर कोई चलने वाला न छोड़ता लेकिन एक मुक़र्रर मिआद तक उन्हें ढील देता है फिर जब उनका वअ़दा आएगा तो बेशक अल्लाह के सब बन्दे उसकी निगाह में हैं।

सूरए यासीन

मक्की है इसमें तिरासी आयतें और पांच रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत महेरबान रहम वाला

रूकूअ १

२. हिक़मत वाले कुरआन की क़सम।

३. बेशक तुम।

४. सीधी राह पर भेजे गए हो।

५. इज़्ज़त वाले मेहरबान का उतारा

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ
فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ
تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾
اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا
فِى الْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾
وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا
مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ
لٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا
جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ
بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
يٰسٓ ﴿١﴾
وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾
اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾
عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾

हुआ।

६. ताकि तुम उस क़ौम को डर सुनाओ जिसके बाप दादा न डराए गए।

७. तो वो बेख़बर हैं बेशक उनमें अक्सर पर बात साबित हो चुकी है तो वो ईमान न लाएँगे।

८. हम ने उनकी गरदनों में तौक़ कर दिए हैं कि वो ठोड़ियों तक हैं तो ये ऊपर को मुँह उठाए रह गए।

९. और हम ने उनके आगे दीवार बना दी और उनके पीछे एक दीवार और उन्हे ऊपर से ढाँक दिया तो उन्हें कुछ नही सूझता।

१०. और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न डराओ वो ईमान लाने के नहीं।

११. तुम तो उसी को डर सुनाते हो जो नसीहत पर चले और रह़मान से बे देखे डरे तो उसे बख़्शिश और इज़्ज़त के सवाब की बिशारत दो।

१२. बेशक हम मुर्दों को जिलाएँगे और हम लिख रहे हैं जो उन्हों ने आगे भेजा और जो निशानियाँ पीछे छोड़ गए और हर चीज़ हम ने गिन रखी है एक बताने वाली किताब में।

रुकूअ २

१३. और उनसे निशानियाँ बयान करो उस शहर वालों की जब उन के पास फ़िरिस्तादे (रसूल) आए।

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝٥
لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ
غٰفِلُوْنَ ۝٦
لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٧
اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ
اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝٨
وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّ
مِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ
لَا يُبْصِرُوْنَ ۝٩
وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ
تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠
اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ
الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ
وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝١١
اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا
قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ
اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝١٢ ع
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ

<table>
<tr><td>१४. जब हम ने उनकी तरफ़ दो भेजे फिर उन्हो ने उनको झुठलाया तो हम ने तीसरे से जोर दिया अब उन सब ने कहा कि बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए है।</td><td>إِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿١٣﴾
إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوٓا إِنَّآ إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ﴿١٤﴾</td></tr>
<tr><td>१५ बोले तुम तो नही मगर हम जैसे आदमी और रहमान ने कुछ नही उतारा तुम निरे झूटे हो।</td><td>قَالُوا مَآ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَآ أَنزَلَ الرَّحْمَٰنُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ﴿١٥﴾</td></tr>
<tr><td>१६. वो बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए है।</td><td>قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ﴿١٦﴾</td></tr>
<tr><td>१७. और हमारे ज़िम्मे नही मगर साफ़ पहुँचा देना।</td><td>وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا الْبَلَٰغُ الْمُبِينُ ﴿١٧﴾</td></tr>
<tr><td>१८. बोले हम तुम्हे मनहूस समझते है बेशक अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर हम तुम्हे संगसार करेंगे बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की मार पड़ेगी।</td><td>قَالُوٓا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِن لَّمْ تَنتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾</td></tr>
<tr><td>१९. उन्होंने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ है क्या इस पर बिदकते हो कि तुम समझाए गए बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो।</td><td>قَالُوا طَٰٓئِرُكُم مَّعَكُمْ أَئِن ذُكِّرْتُم بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿١٩﴾</td></tr>
<tr><td>२०. और शहर के परले किनारे से एक मर्द दौड़ता आया बोला ऐ मेरी क़ौम भेजे हुवों की पैरवी करो।</td><td>وَجَآءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٠﴾</td></tr>
<tr><td>२१. ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग (अज्र) नही मांगते और वो राह पर है।</td><td>اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْـَٔلُكُمْ أَجْرًا وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٢١﴾</td></tr>
</table>

२२. और मुझे क्या है कि उसकी बन्दगी न करुं जिसने मुझे पैदा किया और उसीकी तरफ़ तुम्हें पलटना है।

२३. क्या अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहराऊँ कि अगर रह़मान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और न वो मुझे बचा सकें।

२४. बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूँ।

२५. मुक़र्रर मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो मेरी सुनो।

२६. उससे फ़रमाया गया कि जन्नत मे दाख़िल हो कहा किसी तरह मेरी क़ौम जानती।

२७. जैसी मेरे रब ने मेरी मग़फ़िरत की और मुझे इज़्ज़त वालों में किया।

२८. और हम ने उसके बाद उसकी क़ौम पर आसमान से कोई लश्कर न उतारा और न हमें वहाँ कोई लश्कर उतारना था।

२९. वो तो बस एक ही चीख़ थी जभी वो बुझ कर रह गए।

३०. और कहा गया कि हाए अफ़सोस उन बन्दों पर जब उनके पास कोई रसूल आता है तो उससे ठट्ठा ही करते हैं।

३१ क्या उन्हों ने न देखा हम ने उन से पहले कितनी संगतें हलाक फ़रमाई कि वो अब उनकी तरफ़ पलटने वाले नहीं।

وَمَا لِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي
وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٢﴾
ءَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً إِن يُرِدْنِ
الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَٰعَتُهُمْ
شَيْـًٔا وَلَا يُنقِذُونِ ﴿٢٣﴾
إِنِّيٓ إِذًا لَّفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾
إِنِّيٓ ءَامَنتُ بِرَبِّكُمْ فَٱسْمَعُونِ ﴿٢٥﴾
قِيلَ ٱدْخُلِ ٱلْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَٰلَيْتَ
قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾
بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ
ٱلْمُكْرَمِينَ ﴿٢٧﴾
وَمَآ أَنزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِۦ مِنۢ بَعْدِهِۦ
مِن جُندٍ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَمَا كُنَّا
مُنزِلِينَ ﴿٢٨﴾
إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً فَإِذَا هُمْ
خَٰمِدُونَ ﴿٢٩﴾
يَٰحَسْرَةً عَلَى ٱلْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن
رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٠﴾
أَلَمْ يَرَوْا۟ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ
ٱلْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

३२. और जितने भी हैं सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर लाए जाएंगे।

وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۲﴾

रुकूअ ३

३३. और उनके लिए एक निशानी मुर्दा ज़मीन है हम ने उसे ज़िन्दा किया और फिर उससे अनाज निकाला तो उसमें से खाते हैं।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚۖ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿۳۳﴾

३४. और हम ने उसमें बाग़ बनाए खजूरों और अंगूरों के और हम ने उसमें कुछ चश्मे बहाए।

وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿۳۴﴾

३५. कि उसके फलों में से खाएँ और ये उनके बनाए नहीं तो क्या हक़ न मानेंगे।

لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ۗ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۵﴾

३६. पाकी है उसे जिस ने सब जोड़े बनाए उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है और खुद उनसे और उन चीज़ों से जिनकी उन्हें ख़बर नहीं।

سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾

३७. और उनके लिए एक निशानी रात है हम उसपर से दिन खींच लेते हैं जभी वो अँधेरे में हैं।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾

३८. और सूरज चलता है अपने एक ठहराव केलिए ये हुक्म है ज़बरदस्त इल्म वाले का।

وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۳۸﴾

३९. और चाँद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं यहाँ तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी डाल।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿۳۹﴾

४०. सूरज को नहीं पहुँचता कि चाँद को पकड़ ले और न रात दिन पर सबक़त ले जाए और हर एक एक घेरे में पैर रहा है।

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿۴۰﴾

४१. और उनके लिए एक निशानी ये है कि उन्हें उनके बुज़ुर्गों की पीठ में हम ने भरी कश्ती मे सवार किया।

४२. और उन के लिए वैसी ही कश्तियाँ बना दीं जिन पर सवार होते हैं।

४३. और हम चाहें तो उन्हें डूबो दें तो न कोई उनकी फ़रियाद को पहुँचने वाला हो और न वो बचाए जाएँ।

४४. मगर हमारी तरफ़ की रहमत और एक वक़्त तक बरतने देना।

४५. और जब उनसे फ़रमाया जाता है डरो तुम उससे जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है इस उम्मीद पर कि तुम पर मेहर हो तो मुँह फेर लेते हैं।

४६. और जब कभी उनके रब की निशानियों से कोई निशानी उनके पास आती है तो उससे मुँह ही फेर लेते हैं।

४७. और जब उन से फ़रमाया जाए अल्लाह के दिए में से कुछ उसकी राह में ख़र्च करो तो काफ़िर मुसलमानों के लिए कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं जिसे अल्लाह चाहता तो खिला देता तुम तो नहीं मगर खुली गुमराही में ।

४८. और कहते हैं कब आएगा ये वअ़दा अगर तुम सच्चे हो।

४९. राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की कि उन्हें आ लेगी जब वो दुनिया के झगड़े में फंसे होंगे।

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى
الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾
وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا
يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾
وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾
اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ
وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾
وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ
اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ
اللّٰهُ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ
اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾
مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً
تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾
فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى

اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٥٠

५०. तो न वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जाएँ।

रुकूअ ४

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ
اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝٥١

५१. और फूंका जाएगा सूर जभी वो क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ दौड़ते चलेंगे।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ
مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ
وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٥٢

५२. कहेंगे हाए हमारी ख़राबी किसने हमें सोते से जगा दिया ये है वो जिसका रहमान ने वअ़दा दिया था और रसूलों ने हक़ फ़रमाया।

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا
هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝٥٣

५३. वो तो न होगी मगर एक चिंघाड़ जभी वो सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर हो जाएँगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ
اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٥٤

५४. तो आज किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किए का।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ
فٰكِهُوْنَ ۝٥٥

५५. बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं।

هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى
الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝٥٦

५६. वो और उनकी बीबियाँ सायों में हैं तख़्तों पर तकिया लगाए।

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ۝٥٧

५७. उनके लिए उसमें मेवा है और उनके लिए है उसमें जो मांगें।

سَلٰمٌ ۣ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ۝٥٨

५८. उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुआ।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝٥٩

५९. और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमों।

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا
تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ۝٦٠

६०. ऐ अवलादे आदम क्या मैं ने तुम से अ़हद न लिया था कि शैतान को न पूजना बेशक वो तुम्हारा खुला

दुश्मन है।

६१. और मेरी बन्दगी करना ये सीधी राह है।

६२. और बेशक उसने तुम मे से बहुत सी ख़िलक़त को बहका दिया तो क्या तुम्हें अक़्ल न थी।

६३. ये है वो जहन्नम जिसका तुम से वअ़दा था।

६४. आज इसी में जाओ बदला अपने कुफ़्र का।

६५. आज हम उनके मुँहों पर मोहर कर देंगे और उनके हाथ हम से बात करेंगे और उनके पावँ उनके किए की गवाही देंगे।

६६. और अगर हम चाहते तो उनकी आँखें मिटा देते फिर लपक कर रस्ता की तरफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता।

६७. और अगर हम चाहते तो उनके घर बैठे उनकी सूरतें बदल देते न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते।

रुकूअ ५

६८. और जिसे हम बड़ी उम्र का करें उसे पैदाइश में उलटा फेरें तो क्या समझते नहीं।

६९. और हम ने उनको शेअ़र कहना न सिखाया और न वो उनकी शान के लाइक है वो तो नहीं मगर नसीहत और रौशन कुरआन।

७०. कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए।

७१. और क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने अपने हाथ के बनाए हुए चौपाए उनके लिए पैदा किए तो ये

وَّاَنِ اعْبُدُوْنِیْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿٦١﴾

وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِیْرًا ؕ اَفَلَمْ

تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

اِصْلَوْهَا الْیَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾

اَلْیَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَاۤ

اَیْدِیْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا

یَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤى اَعْیُنِهِمْ

فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى یُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ

فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِیًّا وَّلَا یَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِی الْخَلْقِ ؕ

اَفَلَا یَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا یَنْۢبَغِیْ لَهٗ ؕ

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِیْنٌ ﴿٦٩﴾

لِّیُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَیًّا وَّیَحِقَّ الْقَوْلُ

عَلَى الْكٰفِرِیْنَ ﴿٧٠﴾

اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ

اَیْدِیْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾

उनके मालिक है।

७२. और उन्हें उनके लिए नर्म कर दिया तो किसी पर सवार होते है और किसी को खाते है।

७३. और उनके लिए उन में कई तरह के नफ़अ और पीने की चीज़े हैं तो क्या शुक्र न करेंगे।

७४. और उन्हों ने अल्लाह के सिवा और खुदा ठहरा लिए कि शायद उनकी मदद हो।

७५. वो उनकी मदद नहीं कर सकते और वो उनके लश्कर सब गिरफ़्तार हाज़िर आएँगे।

७६. तो तुम उनकी बात का ग़म न करो बेशक हम जानते हैं जो वो छुपाते है और ज़ाहिर करते हैं।

७७. और क्या आदमी ने न देखा कि के हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वो सरीह झगड़ालू है।

७८. और हमारे लिए कहावत कहता है और अपनी पैदाइश भूल गया बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को ज़िन्दा करे जब वो बिल्कुल गल गई।

७९. तुम फ़रमाओ उन्हें वो ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार उन्हे बनाया और उसे हर पैदाइश का इल्म है।

८०. जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उससे सुलगाते हो।

८१. और क्या वो जिसने आसमान और ज़मीन बनाए उन जैसे और नहीं

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ
مِنْهَا يَأْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾
وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۭ اَفَلَا
يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾
وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾
لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ
لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾
فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا
يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾
اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ
نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾
وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ۭ قَالَ
مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾
قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ
وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿٧٩﴾
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ
نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾
اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ

बना सकता क्यों नहीं और वही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता।

८२. उस का काम तो यही है कि जब किसी चीज़ को चाहे तो उससे फ़रमाए हो जा वो फ़ौरन हो जाती है।

८३. तो पाकी है उसे जिसके हाथ हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फेरे जाओगे।

सूरए साफ़्फ़ात

मक्की है इसमें एक सौ बयासी आयतें और पाँच रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. क़सम उनकी कि बाक़ायेदा सफ़ बाँधें।

२. फिर उनकी कि झिड़क कर चलाएँ।

३. फिर उन जमाअतों की कि कुरआन पढें।

४. बेशक तुम्हारा मअ्बूद ज़रूर एक है।

५. मालिक आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दरमियान है और मालिक मुश्रिकों का बेशक हम ने नीचे के आसमान को तारों के सिंगार से आरास्ता किया।

७. और निगाह रखने को हर शैतान सरकश से।

८. आलमे बाला कि तरफ़ कान नहीं लगा सकते और उनपर हर तरफ़ से मार फेंक होती है।

९. उन्हें भगाने को और उन के लिए हमेशा का अज़ाब।

१०. मगर जो एक आध बार उचक

مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۱﴾
اِنَّمَاۤ اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۸۲﴾
فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ
شَيْءٍ وَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۳﴾

سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاثْنَتَانِ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾
فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ﴿۲﴾
فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿۳﴾
اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾
اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ
ِۨالْكَوَاكِبِ ۙ﴿۶﴾
وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿۷﴾
لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَ
يُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ﴿۸﴾
دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ﴿۹﴾
اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ

شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾
فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ
مَّنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُم مِّن طِينٍ
لَّازِبٍ ﴿١١﴾
بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ﴿١٢﴾
وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ﴿١٣﴾
وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ﴿١٤﴾
وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾
أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا
لَمَبْعُوثُونَ ﴿١٦﴾
أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ﴿١٧﴾
قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ ﴿١٨﴾
فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ
يَنظُرُونَ ﴿١٩﴾
وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿٢٠﴾
هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنتُم بِهِ
تُكَذِّبُونَ ﴿٢١﴾
احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ
وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٢﴾
مِن دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ

ले चला तो रौशन अंगारा उसके पीछे लगा।

११. तो उनसे पूछो क्या उनकी पैदाइश ज़्यादा मज़बूत है या हमारी और मख़लूक आसमानो और फ़रिश्तो वग़ैरा की बेशक हम ने उनको चिपकती मिट्टी से बनाया।

१२. बलकि तुम्हे अचंबा आया और वो हँसी करते हैं।

१३. और समझाए नही समझते।

१४. और जब कोई निशानी देखते है ठट्ठा करते हैं।

१५. और कहते हैं ये तो नहीं मगर खुला जादू।

१६. क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे क्या हम ज़रूर उठाए जाएँगे।

१७. और क्या हमारे अगले बाप दादा भी।

१८ तुम फ़रमाओ हाँ यूँ कि ज़लील हो के।

१९. तो वो तो एक ही झिड़क है जभी वो देखने लगेंगे।

२०. और कहेंगे हाए हमारी ख़राबी उनसे कहा जाएगा ये इन्साफ़ का दिन है।

२१. ये है वो फ़ैसले का दिन जिसे तुम झुटलाते थे।

रुकूअ २

२२. हाँको ज़ालिमों और उनके जोड़ों को और जो कुछ वो पूजते थे।

२३. अल्लाह के सिवा उन सब

को हाँको राहे दोज़ख की तरफ़।

२४. और उन्हें ठहराओ उनसे पूछना है।

२५. तुम्हे क्या हुआ एक दूसरे की मदद क्यों नही करते।

२६. बल्कि वो आज गरदन डाले हैं।

२७. और उनमें एक ने दूसरे की तरफ़ मुँह किया आपस में पूछते हुऐ।

२८. बोले तुम हमारे दाहिनी तरफ़ से बहकाने आते थे।

२९. जवाब देंगे तुम खुद ही ईमान न रखते थे।

३०. और हमारा तुम पर कुछ क़ाबू न था बल्कि तुम सरकश लोग थे।

३१. तो साबित हो गई हम पर हमारे रब की बात हमें ज़रूर चखना है।

३२. तो हम ने तुम्हें गुमराह किया कि हम खुद गुमराह थे।

३३. तो उस दिन वो सब के सब अज़ाब में शरीक है।

३४. मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं।

३५. बेशक जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो ऊंची खींचते थे (तकब्बुर करते थे)।

३६. और कहते थे क्या हम अपने खुदाओं को छोड़ दे एक दीवाने शाएर के कहने से।

३७. बल्कि वो तो हक़ लाए है और उन्हों ने रसूलों की तसदीक़ फ़रमाई।

३८. बेशक तुम्हें ज़रूर दु:ख की मार चखनी है।

३९. तो तुम्हें बदला ना मिले गा मगर अपने किए का।

صِرَاطِ الْجَحِيمِ ٢٣
وَقِفُوهُمْ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ ٢٤
مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ٢٥
بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ٢٦
وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ٢٧
قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ٢٨
قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ٢٩
وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ
بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ٣٠
فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ٣١
فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ٣٢
فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ٣٣
إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ٣٤
إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا
اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ٣٥
وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ
مَّجْنُونٍ ٣٦
بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ٣٧
إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ٣٨
وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ٣٩

४०. मगर जो अल्लाह के चुने हुए बन्दे है।

४१. उनके लिए वो रोज़ी है जो हमारे इल्म में है।

४२. मेवे और उनकी इज़्ज़त होगी।

४३. चैन के बाग़ों में।

४४. तख़्तों पर होंगे आमने सामने।

४५. उन पर दौरह हो गा निगाह के सामने बहती शराब के जाम का।

४६. सफ़ेद रंग पीने वालों के लिए लज़्ज़त।

४७. न उसमें खुमार है और न उससे उनका सर फिरे।

४८. और उनके पास हैं जो शौहरों के सिवा दूसरी तरफ़ आँख उठा कर न देखें गी।

४९. बड़ी आँखों वालियाँ गोया वो अन्डे हैं पोशीदा रखे हुए।

५०. तो उन में एक ने दूसरे की तरफ़ मुँह किया पूछते हुए।

५१. उनमें से कहने वाला बोला मेरा एक हम नशीन था।

५२. मुझ से कहा करता क्या तुम उसे सच मानते हो।

५३. क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डीयाँ हो जाएँ गे तो क्या हमें जज़ा सज़ा दी जाएगी।

५४. कहा क्या तुम झाँक कर देखोगे।

५५. फिर झाँका तो उसे बीच भड़कती आग में देखा।

५६. कहा खुदा की क़सम क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर दे।

५७. और मेरा रब फ़ज़्ल न करे तो ज़रूर मैं भी पकड़ कर हाज़िर किया जाता।

५८. तो क्या हमें मरना नहीं।

إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾
أُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾
فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾
فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾
عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾
بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾
لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾
وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾
كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾
قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾
يَّقُوْلُ أَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾
ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَإِنَّا
لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾
قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾
فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾
قَالَ تَاللّٰهِ إِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾
وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾
أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾

५९. मगर हमारी पहली मौत और हम पर अज़ाब न होगा।

६०. बेशक यही बड़ी कामयाबी है।

६१. ऐसी ही बात के लिए कामियों को काम करना चाहिए।

६२. तो ये मेहमानी भली या थोहर का पेड़।

६३. बेशक हम ने उसे ज़ालिमों की जाँच किया है।

६४. बेशक वो एक पेड़ है कि जहन्नम की जड़ में निकलता है।

६५. उसका शगूफ़ा जैसे देवों के सर।

६६. फिर बेशक वो उसमें से खाएंगे फिर उससे पेट भरेंगे।

६७. फिर बेशक उनके लिए उस पर खौलते पानी की मिलौनी (मिलावट) है।

६८. फिर उनकी बाज़गश्त ज़रूर भड़कती आग के तरफ़ है।

६९. बेशक उन्हों ने अपने बाप दादा गुमराह पाए।

७०. तो वो उन्हीं के निशाने क़दम पर दौड़े जाते हैं।

७१. और बेशक उनसे पहले बहुत से अगले गुमराह हुए।

७२. और बेशक हम ने उनमें डर सुनाने वाले भेजे।

७३. तो देखो डराए गयों का कैसा अन्जाम हुआ।

७४. मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे।

रुकूअ ३

७५. और बेशक हमें नूह ने पुकारा तो हम क्या ही अच्छे क़ुबूल फ़रमाने वाले।

७६. और हम ने उसे और उसके घर वालों को बड़ी तकलीफ़ से नजात दी।

७७. और हम ने उसी की अवलाद बाक़ी रखी।

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ٥٩
إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ٦٠
لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ٦١
أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ٦٢
إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ٦٣
إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ٦٤
طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ٦٥
فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا
الْبُطُونَ ٦٦
ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِنْ حَمِيمٍ ٦٧
ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ٦٨
إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ٦٩
فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ٧٠
وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ٧١
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُنْذِرِينَ ٧٢
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ٧٣
إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ٧٤
وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ٧٥
وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ٧٦
وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ٧٧

७८. और हम ने पिछलों में उसकी तअरीफ़ बाक़ी रखी।

७९. नूह पर सलाम हो जहाँ वालों में।

८०. बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।

८१. बेशक वो हमारे आला दर्जे का कामिलुल ईमान बन्दों में है।

८२ फिर हम ने दूसरों को डूबो दिया।

८३ और बेशक उसी के गिरोह से इब्राहीम है।

८४. जबकि अपने रब के पास हाज़िर हुआ गैर से सलामत दिल ले कर।

८५. जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो।

८६. क्या बोहतान से अल्लाह के सिवा और ख़ुदा चाहते हो।

८७. तो तुम्हारा क्या गुमान है रब्बुल आलमीन पर।

८८. फिर उसने एक निगाह सितारों को देखा।

८९. फिर कहा मैं बीमार होने वाला हूँ।

९०. तो वो उसपर पीठ दे कर फिर गए।

९१. फिर उनके ख़ुदाओं की तरफ़ छुप कर चला तो कहा क्या तुम नहीं खाते।

९२. तुम्हें क्या हुआ के नहीं बोलते।

९३. तो लोगों की नज़र बचा कर उन्हें दाहिने हाथ से मारने लगा।

९४ तो काफ़िर उसकी तरफ़ जल्दी करते आए।

९५. फ़रमाया क्या अपने हाथ के तराशों को पूजते हो।

९६. और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आअ्माल को।

९७. बोले इसके लिए एक इमारत

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝٧٨
سَلٰمٌ عَلٰى نُوحٍ فِي الْعٰلَمِينَ ۝٧٩
إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝٨٠
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝٨١
ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝٨٢
ع وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرٰهِيمَ ۝٨٣
إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝٨٤
إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ۝٨٥
أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللّٰهِ تُرِيدُونَ ۝٨٦
فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝٨٧
فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ۝٨٨
فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۝٨٩
فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۝٩٠
فَرَاغَ إِلٰى آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۝٩١
مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ۝٩٢
فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۝٩٣
فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ۝٩٤
قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ۝٩٥
وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ۝٩٦
قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ۝٩٧

चुनो फिर इसे भड़कती आग में डाल दो।

९८. तो उन्हो ने उस पर दावों चलना (फ़रेब करना) चाहा हम ने उन्हे नीचा दिखाया।

९९. और कहा मैं अपने रब की तरफ़ जानेवाला हूँ अब वो मुझे राह देगा।

१००. इलाही मुझे लाइक़ अवलाद दे।

१०१. तो हम ने उसे खुशख़बरी सुनाई एक अक़लमन्द लड़के की।

१०२. फिर जब वो उसके साथ काम के काबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैं ने ख़्वाब देखा मै तुझे ज़िबह करता हूँ अब तू देख तेरी क्या राए है कहा ऐ मेरे बाप कीजिए जिस बात का आप को हुक्म होता है खुदा ने चाहा तो क़रीब है के आप मुझे साबिर पाएँगे।

१०३. तो जब उन दोनों ने हमारे हुक्म पर गरदन रखी।

१०४ और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया उस वक़्त हाल न पूछ।

१०५. और हम ने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम बेशक तूने ख़्वाब सच कर दिखाया हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।

१०६. बेशक ये रौशन जाँच थी।

१०७. और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उसके फ़िदया में दे कर उसे बचा लिया।

१०८. और हम ने पिछलों में उसकी तअरीफ़ बाक़ी रखी।

१०९ सलाम हो इब्राहीम पर।

११०. हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को।

१११. बेशक वो हमारे आला दर्जे के कामिलुल ईमान बन्दों में है।

११२. और हम ने उसे खुशख़बरी दी इस्हाक़ की के ग़ैब की ख़बरें बतानेवाला

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾
وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾
رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾
فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾
فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ
إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ
فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ
مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ
مِنَ الصَّابِرِينَ ﴿١٠٢﴾
فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾
وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿١٠٤﴾
قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾
إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾
وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾
سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٠٩﴾
كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾
وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٢﴾

नबी हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में।

११३. और हम ने बरकत उतारी उस पर और इस्हाक़ पर और उनकी अवलाद में कोई अच्छा काम करने वाला और कोई अपनी जान पर सरीह ज़ुल्म करने वाला।

रुकूअ ४

११४. और बेशक हम ने मूसा और हारून पर एहसान फ़रमाया।

११५. और उन्हें और उनकी क़ौम को बड़ी सख़्ती से नजात बख़्शी।

११६. और उनकी हम ने मदद फ़रमाई तो वही ग़ालिब हुए।

११७. और हम ने उन दोनों को रौशन किताब अता फ़रमाई।

११८. और उनको सीधी राह दिखाई।

११९. और पिछलों में उनकी तअरीफ़ बाकी रखी।

१२०. सलाम हो मूसा और हारून पर।

१२१. बेशक हम ऐसा ही सिला देते है नेकों को।

१२२. बेशक वो दोनों हमारे आला दर्जे के कामिलुल ईमान बन्दों में है।

१२३. और बेशक इलयास पैग़म्बरों से है।

१२४. जब उस ने अपनी क़ौम से फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं।

१२५. क्या बअल को पूजते हो और छोड़ते हो सब से अच्छा पैदा करने वाले।

१२६. अल्लाह को जो रब है तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादा का।

१२७. फिर उन्हों ने उसे झुटलाया तो वो ज़रूर पकड़े आएंगे।

१२८. मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे।

१२९. और हम ने पिछलों में उसकी

وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ۭ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا

مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ ع

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰي مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾

وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ

الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

سَلٰمٌ عَلٰي مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ

الْخَالِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾

सना बाक़ी रखी।

१३० सलाम हो इलयास पर।

१३१. बेशक हम ऐसा ही सिला देते है नेकों को।

१३२. बेशक वो हमारे आला दर्जे के कामिलुल ईमान बन्दों में है।

१३३. और बेशक लूत पैग़म्बरों में है।

१३४. जब कि हम ने उसे और उसके सब घर वालों को नजात बख़्शी।

१३५. मगर एक बुढ़िया के रह जानेवालों में हुई।

१३६. फिर दूसरों को हम ने हलाक फ़रमा दिया।

१३७. और बेशक तुम उन पर गुज़रते हो सुबह को।

१३८. और रात में तो क्या तुम्हें अक़्ल नही। रूकूअ ५

१३९. और बेशक युनुस पैग़म्बरों से है।

१४० जब कि भरी कश्ती की तरफ़ निकल गया।

१४१. तो कुरआ डाला तो ढकेले हुवों में हुआ।

१४२. फिर उसे मछली ने निगल लिया और वो अपने आप को मलामत करता था।

१४३. तो अगर वो तसबीह करने वाला न होता।

१४४. ज़रूर उसके पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे।

१४५. फिर हम ने उसे मैदान पर डाल दिया और वो बीमार था।

१४६. और हम ने उस पर कद्दू का पेड़ उगाया।

१४७. और हम ने उसे लाख आदमियों की तरफ़ भेजा बल्कि ज़्यादा।

१४८. तो वो ईमान ले आए तो हम ने उन्हें एक वक़्त तक बरतने दिया।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾ ط

اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾ لا

اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾

وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾ لا

وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ ع

وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾ ط

اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾ لا

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾ ج

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾

فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾ لا

لَلَبِثَ فِىْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾ النصف

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ ج

وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾ ج

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ ج

فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾ ط

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ لا

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ إِنَاثًا وَّهُمْ
شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾
أَلَآ إِنَّهُمْ مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾
وَلَدَ اللّٰهُ وَإِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾
أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾
مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾
أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾
أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾
فَأْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾
وَجَعَلُوْا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا وَلَقَدْ
عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾
إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾
فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾
مَآ أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾
إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾
وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾
وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾
وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾
وَإِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾

१४९. तो उनसे पूछो क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियाँ है और उनके बेटे।

१५०. या हम ने मलाएका को औरतें पैदा किया और वो हाज़िर थे.

१५१. सुनते हो बेशक वो अपने बोहतान से कहते है ।

१५२ कि अल्लाह की अवलाद है और बेशक वो ज़रूर झूटे हैं।

१५३. क्या उसने बेटियाँ पसन्द कीं बेटे छोड़ कर।

१५४. तुम्हें क्या है कैसा हुक्म लगाते हो।

१५५. तो क्या ध्यान नही करते।

१५६. या तुम्हारे लिए कोई खुली सनद है।

१५७. तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो।

१५८. और उसमें और जिनों में रिश्ता ठहराया और बेशक जिनों को मअ़लूम है कि वो ज़रूर हाज़िर लाए जाएंगे।

१५९. पाकी है अल्लाह को उन बातों से कि ये बताते हैं।

१६०. मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे।

१६१. तो तुम और जो कुछ तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो।

१६२. तुम उसके ख़िलाफ किसी को बहकाने वाले नहीं।

१६३. मगर उसे जो भड़कती आग में जाने वाला है।

१६४. और फ़रिश्ते कहते है हम मे हर एक का एक मुक़ामे मअ़लूम है।

१६५. और बेशक हम पर फैलाए हुक्म के मुन्तज़िर है।

१६६. और बेशक हम उसकी

तसबीह करने वाले हैं।
१६७. और बेशक वो कहते थे।
१६८. अगर हमारे पास अगलों की कोई नसीहत होती।
१६९. तो ज़रूर हम अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते।
१७०. तो उसके मुन्किर हुए तो अन्क़रीब जान लेगे।
१७१. और बेशक हमारा कलाम गुज़र चुका है हमारे भेजे हुए बन्दो के लिए।
१७२. कि बेशक उन्ही की मदद होगी।
१७३. और बेशक हमारा ही लश्कर ग़ालिब आएगा।
१७४. तो एक वक़्त तुम उनसे मुँह फेर लो।
१७५. और उन्हे देखते रहो कि अन्क़रीब वो देखेंगे।
१७६. तो क्या हमारे अज़ाब की जलदी करते हैं।
१७७. फिर जब उतरेगा उनके आँगन मे तो डराए गयों की क्या ही बुरी सुबह होगी।
१७८. और एक वक़्त तक उनसे मुँह फेर लो।
१७९. और इन्तिज़ार करो कि वो अन्क़रीब देखेंगे।
१८०. पाकी है तुम्हारे रब को इज़्ज़त वाले रब को उनकी बातों से।
१८१. और सलाम है पैग़म्बरों पर।
१८२. और सब ख़ूबियाँ अल्लाह को सारे जहाँ का रब है।

सूरए साद

मक्की है इसमें अट्ठासी आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾
لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾
فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾
وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾
إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ﴿١٧٢﴾
وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾
فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾
وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾
أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾
فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ
الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٧﴾
وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٨﴾
وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٩﴾
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾

سُورَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

صٓ وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿١﴾
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ﴿٢﴾

रुकूअ १

१. इस नामवर कुरआन की क़सम।

२. बल्कि काफ़िर तकब्बुर और ख़िलाफ़ में है।

३. हम ने उन से पहले कितनी संगतें खपाई तो अब वो पुकारें और छूटने का वक़्त न था।

४. और उन्हें इसका अचंबा हुआ कि उनके पास उन्हीं में का एक डर सुनानेवाला तशरीफ़ लाया और काफ़िर बोले ये जादूगर है बड़ा झूटा।

५. क्या उसने बहुत खुदाओं का एक खुदा कर दिया बेशक ये अजीब बात है।

६. और उनमें के सरदार चले कि उसके पास से चल दो और अपने खुदाओं पर साबिर रहो बेशक इसमें उसका कोई मतलब है।

७. ये तो हम ने सब से पिछले दीन नसरानियत में भी न सुनी ये तो निरी नई गढ़त है।

८. क्या उन पर कुरआँन उतारा गया हम सब में से बल्कि वो शक में हैं मेरी किताब से बल्कि अभी मेरी मार नहीं चखी है।

९. क्या वो तुम्हारे रब की रहमत के ख़ज़ान्ची हैं वो इज़्ज़त वाला बहुत अता फ़रमानेवाला है।

१०. क्या उनके लिए है सल्तनत आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरमियान है तो रस्सियाँ लटका कर चढ़ न जाएँ।

११. ये एक ज़लील लश्कर है उन्हीं लश्करों में से जो वहीं भगा दिया जाएगा।

كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ فَنَادَوا
وَّلَاتَ حِينَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾
وَعَجِبُوا أَن جَاءَهُم مُّنذِرٌ مِّنْهُمْ ۖ وَ
قَالَ الْكَافِرُونَ هَٰذَا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾
أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ
هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾
وَانطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا
وَاصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا
لَشَيْءٌ يُرَادُ ﴿٦﴾
مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ
إِنْ هَٰذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿٧﴾
أَأُنزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِن بَيْنِنَا ۚ
بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّن ذِكْرِي ۖ بَل لَّمَّا
يَذُوقُوا عَذَابِ ﴿٨﴾
أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ
الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ﴿٩﴾
أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ﴿١٠﴾
جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ﴿١١﴾
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَ

१२. इनसे पहले झुटला चुके है नूह की क़ौम और आद और चौमेख़ा करने वाला फ़िरऔन।	فِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ﴿١٢﴾
१३. और समूद और लूत की क़ौम और बन वाले ये है वो गिरोह।	وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لْئَيْكَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ﴿١٣﴾
१४. उनमें कोई ऐसा नही जिसने रसूलों को न झुटलाया हो तो मेरा अज़ाब लाज़िम हुआ।	إِنْ كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾
रुकूअ २	
१५. और ये राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की जिसे कोई फेर नहीं सकता।	وَمَا يَنْظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾
१६. और बोले ऐ हमारे रब हमारा हिस्सा हमे जल्द दे दे हिसाब के दिन से पहले।	وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾
१७. तुम उनकी बातों पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद नेअ्मतों वाले को याद करो बेशक वो बड़ा रुजूअ करनेवाला है।	اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٧﴾
१८. बेशक हम ने उसके साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमादिए कि तसबीह करते शाम को और सूरज चमकते।	إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾
१९. और परिन्दे जमअ किए हुए सब उसके फ़रमाँबरदार थे।	وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾
२०. और हम ने उसकी सल्तनत को मज़बूत किया और उसे हिकमत और क़ौले फ़ैसल दिया।	وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾
२१. और क्या तुम्हें उस दावों वालों की भी ख़बर आई जब वो दीवार कूद कर दाऊद की मस्जिद में आए।	وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾
२२. जब वो दाऊद पर दाख़िल हुए तो वो उनसे घबरा गया उन्होंने अर्ज़ की डरिए नहीं हम दो फ़रीक़ है कि एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है	إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا

عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا
تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾
اِنَّ هٰذَآ اَخِىْ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً
وَّلِىَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا
وَعَزَّنِىْ فِى الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾
قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ
اِلٰى نِعَاجِهٖ ۚ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ
لَيَبْغِىْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا
هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ
رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ﴿٢٤﴾
فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۚ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا
لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾
يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ
فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ
الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيْدٌ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۚ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ

तो हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दीजिए और ख़िलाफ़ हक़ न कीजिए और हमें सीधी राह बताइए।

२३. बेशक ये मेरा भाई है इसके पास निनानवे (९९) दुम्बियाँ हैं और मेरे पास एक दुम्बी अब ये कहता है वो भी मुझे हवाले करदे और बात में मुझ पर ज़ोर डालता है।

२४. दाऊद ने फ़रमाया बेशक ये तुझ पर ज़ियादती करता है कि तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने को मांगता है और बेशक अक्सर साझे वाले एक दूसरे पर ज़ियादती करते हैं मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किए और वो बहुत थोड़े हैं अब दाऊद समझा कि हम ने ये उसकी जांच की थी तो अपने रब से मुआफ़ी मांगी और सज्दे में गिर पड़ा और रूजूअ लाया।

२५. तो हम ने उसे ये मुआफ़ फ़रमाया और बेशक उसके लिए हमारी बारगाह में ज़रूर कुर्ब और अच्छा ठिकाना है।

२६. ऐ दाऊद बेशक हम ने तुझे ज़मीन में नाएब किया तू लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी बेशक वो जो अल्लाह की राह से बहकते हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है उस पर कि वो हिसाब के दिन को भूल बैठे।

रूकूअ ३

२७. और हम ने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान है बेकार न बनाए ये काफ़िरों का

फ़वैलुल्लिल्लज़ी...

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿۲۷﴾
اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ اَمْ نَجْعَلُ
الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿۲۸﴾
كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا
اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۹﴾
وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ نِعْمَ الْعَبْدُ
اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿۳۰﴾
اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ
الْجِيَادُ ﴿۳۱﴾
فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ
ذِكْرِ رَبِّيْ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿۳۲﴾
رُدُّوْهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوْقِ
وَالْاَعْنَاقِ ﴿۳۳﴾
وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ
جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿۳۴﴾
قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا
يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ
اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾
فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ

गुमान है तो काफ़िरों की ख़राबी है आग से।

२८. क्या हम उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उन जैसा कर दें जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं या हम परहेज़गारों को शरीर बेहुक्मों के बराबर ठहरा दें।

२९. ये एक किताब है कि हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी बरकत वाली ताकि इसकी आयतों को सोचें और अक़्लमन्द नसीहत मानें।

३०. और हम ने दाऊद को सुलेमान अता फ़रमाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वो बहुत रुजूअ लानेवाला।

३१. जब कि उस पर पेश किए गए तीसरे पहर को कि रोकिए तो तीन पाँव पर खड़े हों चौथे सुम का किनारा ज़मीन पर लगाए हुए और चलाइए तो हवा हो जाएँ।

३२. तो सुलेमान ने कहा मुझे उन घोड़ों की मुहब्बत पसन्द आई है अपने रब की याद के लिए फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहाँ तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए।

३३. फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे पास वापस लाओ तो उनकी पिंडलियों और गरदनों पर हाथ फेरने लगा।

३४. और बेशक हम ने सुलेमान को जाँचा और उसके तख़्त पर एक बे जान बदन डाल दिया।

३५. फिर रुजूअ लाया अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सल्तनत अता कर कि मेरे बाद किसी को लायक़ न हो बेशक तू ही है बड़ी देन वाला।

३६. तो हम ने हवा उसके बस में करदी कि उसके हुक्म से नर्म नर्म चलती जहाँ वो चाहता।

३७. और देव बस में कर दिए हर मेअ्मार और गोताख़ोर।

३८. और दूसरे और बेड़ियों में जकड़े हुए।

३९. ये हमारी अ़ता है अब तू चाहे तो एहसान कर या रोक रख तुझ पर कुछ हिसाब नहीं।

४०. और बेशक उस के लिए हमारी बारगाह में ज़रूर क़ुर्ब और अच्छा ठिकाना है।

रुकूअ ४

४१. और याद करो हमारे बन्दे अय्यूब को जब उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने तकलीफ़ और ईज़ा लगा दी।

४२. हम ने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाँव मार ये है ठंडा चश्मा नहाने और पीने को।

४३. और हम ने उसे उसके घर वाले और उनके बराबर और अ़ता फ़रमा दिए अपनी रहमत करने और अक़्लमन्दों की नसीहत को।

४४. और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर उससे मार दे और क़सम न तोड़ बेशक हम ने उसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वो बहुत रुजूअ लानेवाला है।

४५. और याद करो हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और यअ़कूब क़ुदरत और इल्म वालों को।

४६. बेशक हम ने उन्हें एक खरी बात से इम्तियाज़ बख़्शा कि वो उस घर की याद है।

رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ۝٣٦ لا
وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ۝٣٧ لا
وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝٣٨
هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝٣٩
وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝٤٠
وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ
اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ۝٤١
اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌ
بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ۝٤٢
وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ
رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝٤٣
وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَ
لَا تَحْنَثْ ۭ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۭ نِعْمَ
الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝٤٤
وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝٤٥
اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى
الدَّارِ ۝٤٦
وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ۝٤٧

४७. और बेशक वो हमारे नज़दीक चुने हुए पसन्दीदा हैं।

४८. और याद करो इस्माईल और यसअ और ज़ुलकिफ़्ल को और सब अच्छे हैं।

४९. ये नसीहत है और बेशक परहेज़गारों का ठिकाना भला।

५०. बसने के बाग़ उनके लिए सब दरवाज़े खुले हुए।

५१. उनमें तकिया लगाए उनमें बहुत से मेवे और शराब माँगते हैं।

५२. और उनके पास वो बीबियाँ हैं कि अपने शौहर के सिवा और की तरफ़ आँख नहीं उठातीं एक उम्र की।

५३. ये है वो जिसका तुम्हें वअदा दिया जाता है हिसाब के दिन।

५४. बेशक ये हमारा रिज़्क़ है कि कभी ख़त्म न होगा।

५५. उनको तो ये है और बेशक सरकशों का बुरा ठिकाना।

५६. जहन्नम कि उसमें जाएँगे तो क्या ही बुरा बिछौना।

५७. उनको ये है तो उसे चखें खौलता पानी और पीप।

५८. और उसी शक्ल के और जोड़े।

५९. उन से कहा जाएगा ये एक और फ़ौज तुम्हारे साथ धंसी पड़ती है जो तुम्हारी थी।

६०. वो कहेंगे उनको खुली जगह न मिलयो आग में तो उनको जाना ही है वहाँ भी तंग जगह में रहें ताबेअ बोले बल्कि तुम्हें खुली जगह न मिलयो ये मुसीबत तुम हमारे आगे लाए तो क्या ही बुरा ठिकाना।

६१. वो बोले ऐ हमारे रब जो ये

وَاذْكُرْ إِسْمٰعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ
وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٨﴾
هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ
مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾
جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿٥٠﴾
مُتَّكِـِٕينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ
كَثِيرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾
وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾
هٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾
إِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾
هٰذَا ؕ وَإِنَّ لِلطّٰغِينَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾
جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾
هٰذَا ۙ فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾
وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ أَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾
هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا
بِهِمْ ؕ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾
قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ ۟ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ؕ أَنْتُمْ
قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾
قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ
عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا
نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾
اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ
الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾
ع اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ
اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾
قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾
اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾
مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى
اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾
اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾
اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌ
بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿٧١﴾
فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ
فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾
فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾
اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

मुसीबत हमारे आगे लाया उसे आग में दूना अज़ाब बढ़ा।

६२. और बोले हमें क्या हुआ हम उन मर्दों को नहीं देखते जिन्हें बुरा समझते थे।

६३. क्या हम ने उन्हें हँसी बना लिया या आँखें उनकी तरफ़ से फिर गईं।

६४. बेशक ये ज़रूर हक़ है दोज़ख़ियों का बाहम झगड़ा।

रुकूअ ५

६५. तुम फ़रमाओ मैं डर सुनानेवाला ही हूँ और मअ्बूद कोई नहीं मगर एक अल्लाह सब पर ग़ालिब।

६६. मालिक आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दरमियान है साहीबे इज़्ज़त बड़ा बख़्शने वाला।

६७. तुम फ़रमाओ वो बड़ी ख़बर है।

६८. तुम उससे ग़फ़्लत में हो।

६९. मुझे आलमे बाला की क्या ख़बर थी जब वो झगड़े थे।

७०. मुझे तो यही 'वही' होती है कि मैं नहीं मगर रौशन डर सुनानेवाला, जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं मिट्टी से इन्सान बनाऊँगा।

७१. फिर जब मैं उसे ठीक बनालूँ और उसमें अपनी तरफ़ की रुह फूँकूँ तो तुम उसके लिए सज्दे में गिरना।

७२. तो सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया एक एक ने, कि कोई बाक़ी न रहा।

७३. मगर इब्लीस ने उसने गुरूर किया और वो था ही काफ़िरों में।

७४. फ़रमाया ऐ इब्लीस तुझे किस चीज़ ने रोका कि तू उसके लिए सज्दा करे जिसे मैं ने अपने हाथों से बनाया क्या

तुझे गुरूर आ गाया या तू था ही मग़रूरों में।
७५. बोला मैं उस से बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से पैदा किया।
७६. फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा कि तूराँदा (लअ़नत) गया ।
७७. और बेशक तुझ पर मेरी लअ़नत है क़यामत तक।
७८. बोला ऐ मेरे रब ऐसा है तो मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि उठाए जाएँ।
७९. फ़रमाया तो तू मोहलत वालों में है।
८०. उस जाने हुए वक़्त के दिन तक।
८१. बोला तेरी इज़्ज़त की क़सम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूँगा।
८२. मगर जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं।
८३. फ़रमाया तो सच ये है और मैं सच ही फ़रमाता हूँ।
८४. बेशक मैं ज़रूर जहन्नम भर दूँगा तुझ से और उनमें से जितने तेरी पैरवी करेंगे सब से।
८५. तुम फ़रमाओ मैं इस क़ुरआन पर तुम से कुछ अज्र नहीं माँगता और मैं बनावट वालों से नहीं।
८६. वो तो नहीं मगर नसीहत सारे जहान के लिए।
८७. और ज़रूर एक वक़्त के बाद तुम उसकी ख़बर जानो गे।

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا
خَلَقْتُ بِيَدَيَّ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ
مِنَ الْعَالِينَ ٧٥
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ
وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ٧٦
قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ٧٧
وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ٧٨
قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ٧٩
قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ٨٠
إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ٨١
قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ٨٢
إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ٨٣
قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ٨٤
لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ
مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ٨٥
قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا
أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ٨٦
إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ٨٧
وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ٨٨

सूरए ज़ुमर

मक्की है इसमें पछत्तर आयतें और आठ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. किताब उतारना है अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाले की तरफ़ से।

२. बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ ये किताब हक़ के साथ उतारी तो अल्लाह को पूजो निरे उसके बन्दे हो कर।

३. हाँ ख़ालिस अल्लाह ही की बन्दगी है और वो जिन्होंने उसके सिवा और वाली बना लिए कहते हैं हम तो उन्हें सिर्फ़ इतनी बात के लिए पूजते हैं कि ये हमें अल्लाह के पास नज़दीक कर दें अल्लाह उन में फ़ैसला कर देगा उस बात का जिसमें इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो झूटा बड़ा ना शुकरा हो।

४. अल्लाह अपने लिए बच्चा बनाता तो अपनी मख़लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता पाकी है उसे वही है एक अल्लाह सब पर ग़ालिब।

५. उसने आसमान और ज़मीन हक़ बनाए रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उसने सूरज और चाँद को काम में लगाया हर एक एक ठहराई मीआद के लिए चलता है सुनता है वही साहिबे इज़्ज़त बख़्शने वाला है।

६. उसने तुम्हें एक जान से बनाया फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ

سُورَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَسَبْعُونَ آيَةً وَثَمَانِي رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ (١)
إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ
اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ (٢)
أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ
اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ
إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ
اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ (٣)
لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَاصْطَفَىٰ
مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ اللَّهُ
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (٤)
خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ يُكَوِّرُ
اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى
اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي
لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ (٥)
خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ
مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ
ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ

जोड़े उतारे तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट में बनाता है एक तरह के बाद और तरह तीन अन्धेरीयों में ये है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है उसके सिवा किसी की बन्दगी नही फिर कहाँ फिरे जाते हो।

७. अगर तुम ना शुकरी करो तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ है तुम से और अपने बन्दों की नाशुकरी उसे पसन्द नही और अगर शुक्र करो तो उसे तुम्हारे लिए पसन्द फ़रमाता है और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ नहीं उठाएगी फिर तुम्हें अपने रब ही की तरफ़ फिरना है तो वो तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे बेशक वो दिलों की बात जानता है।

८. और जब आदमी को कोई तकलीफ़ पहुँचती है अपने रब को पुकारता है उसी तरफ़ झुका हुआ फिर जब अल्लाह ने उसे अपने पास से कोई नेअ्मत दी तो भूल जाता है जिस लिए पहले पुकारा था और अल्लाह के लिये बराबर वाले ठहराने लगता है ताकि उसकी राह से बहका दे तुम फ़रमाओ थोड़े दिन अपने कुफ़्र के साथ बरत ले बेशक तू दोज़ख़ियों में है।

९. क्या वो जिसे फ़रमाँबरदारी में रात की घड़ियाँ गुज़री सुजूद में और क़ियाम में आख़िरत से डरता और अपने रब की रहमत की आस लगाए क्या वो नाफ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर है जानने वाले और अनजान नसीहत तो वही मानते है जो अक़्ल वाले है।

أُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ
ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ
الْمُلْكُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ٦
إِنْ تَكْفُرُوْا فَإِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا
يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِنْ تَشْكُرُوْا
يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى
ثُمَّ إِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ إِنَّهُ عَلِيْمٌ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ٧
وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ
مُنِيْبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ
نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْا إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ
وَجَعَلَ لِلّٰهِ أَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ
سَبِيْلِهِ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا
إِنَّكَ مِنْ أَصْحٰبِ النَّارِ ٨
أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّ
قَائِمًا يَّحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهِ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ
لَا يَعْلَمُوْنَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ٩
قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ آمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ
وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ إِنَّمَا يُوَفَّى
الصَّابِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾
قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا
لَّهُ الدِّينَ ﴿١١﴾
وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٢﴾
قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣﴾
قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِينِي ﴿١٤﴾
فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُم مِّن دُونِهِ قُلْ
إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ
وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَلَا ذَٰلِكَ
هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿١٥﴾
لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ
مِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ
بِهِ عِبَادَهُ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ ﴿١٦﴾
وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَن
يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ
الْبُشْرَىٰ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾
الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ

रुकूअ २

१०. तुम फ़रमाओ ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए अपने रब से डरो जिन्होंने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भलाई है। और अल्लाह की ज़मीन वसीअ है। साबिरों ही को उनका सवाब भरपूर दिया जाएगा बेगिन्ती।

११. तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म है कि अल्लाह को पूजूँ निरा उसका बन्दा हो कर।

१२. और मुझे हुक्म है कि मैं सब से पहले गरदन रखूँ।

१३. तुम फ़रमाओ बिलफ़र्ज़ अगर मुझ से नाफ़रमानी हो जाए तो मुझे भी अपने रब से एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

१४. तुम फ़रमाओ मैं अल्लाह ही को पूजता हूँ निरा उसका बन्दा हो कर।

१५. तो तुम उसके सिवा जिसे चाहो पूजो तुम फ़रमाओ पूरी हार उन्हें जो अपनी जान और अपने घर वाले क़यामत के दिन हार बैठे हाँ हाँ यही खुली हार है।

१६. उनके ऊपर आग के पहाड़ हैं और उनके नीचे पहाड़ उस से अल्लाह डराता है अपने बन्दों को ऐ मेरे बन्दो तुम मुझ से डरो।

१७. और वो जो बुतों की पूजा से बचे और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ हुए उन्हीं के लिए खुशख़बरी है तो खुशी सुनाओ मेरे उन बन्दों को।

أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ
وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾
أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ
أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ﴿١٩﴾
لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ
مِنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا
يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ﴿٢٠﴾
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ
بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ
فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾
أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ
عَلَىٰ نُورٍ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ
قُلُوبُهُمْ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي
ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٢﴾
اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا
مُتَشَابِهًا مَثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ
الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ

१८. जो कान लगा कर बात सुने फिर उसके बेहतर पर चले ये है जिनको अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई और ये हैं जिन्को अक़्ल है।

१९. तो क्या वो जिस पर अज़ाब की बात साबित हो चुकी नजात वालों के बराबर हो जाएगा तो क्या तुम हिदायत दे कर आग के मुस्तहिक़ को बचा लोगे।

२०. लेकिन जो अपने रब से डरे उनके लिए बाला ख़ाने हैं उन पर बाला ख़ाने बने उनके नीचे नहरें बहें अल्लाह का वअ्दा अल्लाह वअ्दा ख़िलाफ़ नहीं करता।

२१. क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर उससे ज़मीन में चश्में बनाए फिर उससे खेती निकालता है कई रंगत की फिर सूख जाती है तो तू देखे कि वो पीली पड़ गई फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर देता है बेशक उसमें ध्यान की बात है अक़्लमन्दों को।

रुकूअ ३

२२. तो क्या वो जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वो अपने रब की तरफ़ से नूर पर है उस जैसा हो जाएगा जो संगदिल है तो ख़राबी है उनकी जिनके दिल यादे ख़ुदा की तरफ़ से सख़्त हो गए है वो खुली गुमराही में है।

२३. अल्लाह ने उतारी सब से अच्छी किताब कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है दोहरे बयान वाली उस से बाल खड़े होते हैं उनके बदन पर

जो अपने रब से डरते है फिर उनकी खालें और दिल नर्म पड़ते है यादे खुदा की तरफ़ रग़बत में ये अल्लाह की हिदायत है राह दिखाए उसे जिसे चाहे और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नही।

२४. तो क्या वो जो क़यामत के दिन बुरे अज़ाब की ढ़ाल न पाएगा अपने चेहरे के सिवा नजात वाले की तरह हो जाएगा और ज़ालिमों से फ़रमाया जाएगा अपना कमाया चखो।

२५. उनसे अगलों ने झुटलाया तो उन्हे अज़ाब आया जहाँ से उन्हे ख़बर न थी।

२६. और अल्लाह ने उन्हे दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई का मज़ा चखाया और बेशक आख़िरत का अज़ाब सब से बड़ा क्या अच्छा था अगर वो जानते।

२७. और बेशक हम ने लोगों के लिए इस कुरआन में हर क़िस्म की कहावत बयान फ़रमाई कि किसी तरह उन्हे ध्यान हो।

२८. अरबी ज़ुबान का कुरऑन जिस में असलन कजी नहीं कि कहीं वो डरें।

२९. अल्लाह एक मिसाल बयान फ़रमाता है एक गुलाम में कई बदख़ु आक़ा शरीक और एक निरे एक मौला का क्या उन दोनों का हाल एक सा है सब ख़ूबियाँ अल्लाह को बल्कि उनके अक्सर नहीं जानते।

३०. बेशक तुम्हें इन्तिकाल फ़रमाना है और उनको भी मरना है।

३१. फिर तुम क़यामत के दिन

جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ
ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۲۳﴾
اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا
مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۲۴﴾
كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۵﴾
فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾ ۚ
قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ
يَتَّقُوْنَ ﴿۲۸﴾
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ
مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۗ
هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ
اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۹﴾
اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿۳۰﴾
ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿۳۱﴾

रुकूअ ४

३२. तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे और हक़ को झुटलाए जब उसके पास आए क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

३३. और वो जो ये सच ले कर तशरीफ़ लाए और वो जिन्हों ने उनकी तसदीक़ की यही डर वाले है।

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

३४. उनके लिए है जो वो चाहे अपने रब के पास नेकों का यही सिला है।

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

३५. ताकि अल्लाह उन से उतार दे बुरे से बुरा काम जो उन्होंने किया और उन्हे उनके सवाब का सिला दे अच्छे से अच्छे काम पर जो वो करते थे।

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾

३६. क्या अल्लाह अपने बन्दों को काफ़ी नही और तुम्हे डराते है उसके सिवा औरों से और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसकी कोई हिदायत करने वाला नही।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

३७. और जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोइ बहकाने वाला नही क्या अल्लाह इज़्ज़त वाला बदला लेने वाला नही।

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

३८. और अगर तुम उनसे पूछो आसमान और ज़मीन किस ने बनाए तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो क्या

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ

वो उसकी भेजी तकलीफ़ टाल देंगे या वो मुझ पर मेहर (रहम) फरमाना चाहे तो क्या वो उसकी मेहर को रोक रखेंगे तुम फ़रमाओ अल्लाह मुझे बस है भरोसे वाले उस पर भरोसा करें।

३९. तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम अपनी जगह काम किए जाओ मैं अपना काम करता हूँ तो आगे जान जाओगे।

४०. किस पर आता है वो अज़ाब कि उसे रुसवा करेगा और किस पर उतरता है अज़ाब कि रह पड़ेगा।

४१. बेशक हम ने तुम पर ये किताब लोगों की हिदायत को हक़ के साथ उतारी तो जिस ने राह पाई तो अपने भले को और जो बहका वो अपने ही बुरे को बहका और तुम कुछ उनके ज़िम्मेदार नहीं।

रुकूअ ५

४२. अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उनकी मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उनके सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक रखता है और दूसरी एक मिआद मुक़र्रर तक छोड़ देता है बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ हैं सोचने वालों के लिए।

४३. क्या उन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबिल कुछ सिफ़ारिशी बना रखे हैं

اَرَادَنِیَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ
ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِیْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ
مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِیَ
اللّٰهُ ؕ عَلَیْهِ یَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٨﴾
قُلْ یٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰی مَكَانَتِكُمْ
اِنِّیْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾
مَنْ یَّاْتِیْهِ عَذَابٌ یُّخْزِیْهِ وَ یَحِلُّ
عَلَیْهِ عَذَابٌ مُّقِیْمٌ ﴿٤٠﴾
اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ
بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰی فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ
مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیْهَا ۚ وَمَاۤ
ع اَنْتَ عَلَیْهِمْ بِوَكِیْلٍ ﴿٤١﴾
اَللّٰهُ یَتَوَفَّی الْاَنْفُسَ حِیْنَ مَوْتِهَا
وَالَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا ۚ فَیُمْسِكُ
الَّتِیْ قَضٰی عَلَیْهَا الْمَوْتَ وَ یُرْسِلُ
الْاُخْرٰۤی اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ اِنَّ فِیْ
ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ
قُلْ اَوَ لَوْ كَانُوْا لَا یَمْلِكُوْنَ

तुम फ़रमाओ क्या अगरचे वो किसी चीज़ के मालिक न हों और न अक़्ल रखें।

४४. तुम फ़रमाओ शफ़ाअत तो सब अल्लाह के हाथ में है उसी के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही फिर तुम्हें उसी की तरफ़ पलटना है।

४५. और जब एक अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है दिल सिमट जाते हैं उनके जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र होता है जभी वो खुशियाँ मनाते हैं।

४६. तुम अर्ज़ करो ऐ अल्लाह आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले निहाँ और अयाँ के जानने वाले तू अपने बन्दों में फ़ैसला फ़रमाएगा जिसमें वो इख़्तिलाफ़ रखते थे।

४७. और अगर ज़ालिमों के लिए होता जो कुछ ज़मीन में है सब और उसके साथ उस जैसा तो ये सब छुड़ाई (छोड़ने में) में देते रोज़े क़यामत के बड़े अज़ाब से और उन्हे अल्लाह की तरफ़ से वो बात ज़ाहिर हुई जो उनके ख़याल में न थी।

४८. और उन पर अपनी कमाई हुई बुराईयाँ खुल गईं और उन पर आ

شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ ثُمَّ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾

وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ
قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ
وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ
يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ
بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾
وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ
جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ
مِنْ سُوْۗءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ
وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا
يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ
بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾

पड़ा वो जिस की हँसी बनाते थे।

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ
إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ إِنَّمَا
أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَ
لَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾

४९. फिर जब आदमी को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमें बुलाता है फिर जब उसे हम अपने पास से कोई नेअ्मत अता फ़रमाएँ कहता है ये तो मुझे एक इल्म की बदौलत मिली है बल्कि वो तो आज़माइश है मगर उनमें बहुतों को इल्म नहीं।

قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا
أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾

५०. उनसे अगले भी ऐसे ही कह चुके तो उनका कमाया उनके कुछ काम न आया।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَالَّذِينَ
ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ
سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۖ وَمَا هُمْ
بِمُعْجِزِينَ ﴿٥١﴾

५१. तो उन पर पड़ गई उनकी कमाइयों की बुराईयाँ और वो जो उनमें ज़ालिम हैं अनक़रीब उन पर पड़ेंगी कि उनकी कमाइयों की बुराइयाँ और वो क़ाबू से नहीं निकल सकते।

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ ع

५२. क्या उन्हें मअ्लूम नहीं कि अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिसके लिए चाहे और तंग फ़रमाता है बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिए।

रुकूअ ६

قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ
أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ
هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾

५३. तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वो बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है।

وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا
لَهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ

५४. और अपने रब की तरफ़ रुजूअ लाओ और उसके हुज़ूर गरदन

रखो क़ब्ल इसके कि तुम पर अज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो।

५५. और उसकी पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारी रब से तुम्हरी तरफ़ उतारी गई क़ब्ल इसके कि अज़ाब तुम पर अचानक आजाए और तुम्हें ख़बर न हो।

५६. कि कहीं कोई जान ये न कहे कि हाए अफ़सोस उन तक़सीरों पर जो मैं ने अल्लाह के बारे में कीं और बेशक मैं हँसी बनाया करता था।

५७. या कहे अगर अल्लाह मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता।

५८. या कहे जब अज़ाब देखे किसी तरह मुझे वापसी मिले कि मैं नेकियाँ करूँ।

५९. हाँ क्यों नहीं बेशक तेरे पास मेरी आयतें आई तो तूने उन्हें झुटलाया और तकब्बुर किया और तू काफ़िर था।

६०. और क़यामत के दिन तुम देखोगे उन्हें जिन्होंने अल्लाह पर झूट बाँधा कि उनके मुँह काले हैं क्या मग़रूर का ठिकाना जहन्नम में नहीं।

६१. और अल्लाह बचाएगा

ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾

وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ
رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ
بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾

اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا
فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ
لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ
مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾

اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ
لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ
بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا
عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ
فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾

وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ

ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾

وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ
رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ
بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾

اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا
فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ
لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ
مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾

اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ
لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ
بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ
الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا
عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ اَلَيْسَ
فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾

وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ

रखो क़ब्ल इसके कि तुम पर अज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो।

५५. और उसकी पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारी रब से तुम्हरी तरफ़ उतारी गई क़ब्ल इसके कि अज़ाब तुम पर अचानक आजाए और तुम्हें ख़बर न हो।

५६. कि कहीं कोई जान ये न कहे कि हाए अफ़सोस उन तक़सीरों पर जो मैं ने अल्लाह के बारे में कीं और बेशक मैं हँसी बनाया करता था।

५७. या कहे अगर अल्लाह मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता।

५८. या कहे जब अज़ाब देखे किसी तरह मुझे वापसी मिले कि मैं नेकियाँ करूँ।

५९. हाँ क्यों नहीं बेशक तेरे पास मेरी आयतें आईं तो तूने उन्हें झुटलाया और तकब्बुर किया और तू काफ़िर था।

६०. और क़यामत के दिन तुम देखोगे उन्हें जिन्होंने अल्लाह पर झूट बाँधा कि उनके मुँह काले हैं क्या मग़रूर का ठिकाना जहन्नम में नहीं।

६१. और अल्लाह बचाएगा

لَا يَمَسُّهُمُ السُّوٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾
اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ عَلٰی كُلِّ
شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ﴿٦٢﴾
لَهٗ مَقَالِیْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ
ع هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾
قُلْ اَفَغَیْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّیْٓ اَعْبُدُ
اَیُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾
وَلَقَدْ اُوْحِیَ اِلَیْكَ وَاِلَی الَّذِیْنَ مِنْ
قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَیَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ
وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿٦٥﴾
بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ
الشّٰكِرِیْنَ ﴿٦٦﴾
وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ
جَمِیْعًا قَبْضَتُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ
مَطْوِیّٰتٌۢ بِیَمِیْنِهٖ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰی
عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾
وَنُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِی
السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ

परहेज़गारों को उनकी नजात की जगह न उन्हें अज़ाब छूए और न उन्हें ग़म हो।

६२. अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वो हर चीज़ का मुख़्तार है।

६३. उसी के लिए हैं आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ और जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वही नुक़सान में हैं।

रुकूअ ७

६४. तुम फ़रमाओ तो क्या अल्लाह के सिवा दूसरे के पूजने को मुझ से कहते हो ऐ जाहिलो।

६५. और बेशक 'वही' की गई तुम्हारी तरफ़ और तुम से अगलों की तरफ़ कि ऐ सुननेवाले अगर तूने अल्लाह का शरीक किया तो ज़रूर तेरा सब किया धरा अकारत जाएगा और ज़रूर तू हार में रहे गा।

६६. बल्कि अल्लाह ही की बन्दगी कर और शुक्र वालों से हो।

६७. और उन्हें ने अल्लाह की क़द्र न की जैसा उसका हक़ था और वो क़यामत के दिन सब ज़मीनों को समेट देगा और उसकी कुदरत से सब आसमान लपेट दिए जाएँगे और उनके शिर्क से पाक और बरतर है।

६८. और सूर फूँका जाएगा तो बेहोश हो जाएँगे जितने आसमानों में

हैं और जितने ज़मीन में मगर जिसे अल्लाह चाहे फिर वो दोबारा फूँका जाएगा-जभी वो देखते हुए खड़े हो जाएँगे।

६९. और ज़मीन जगमगा उठेगी अपने रब के नूर से और रखी जाएगी किताब और लाए जाएँगे अंबिया और ये नबी और इसकी उम्मत के उन पर गवाह होंगे और लोगों में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा।

७०. और हर जान को उसका किया भरपूर दिया जाएगा और उसे ख़ूब मअ्लूम है जो वो करते थे।

रुकूअ ८

७१. और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ हाँके जाएंगे गिरोह गिरोह यहाँ तक कि जब वहाँ पहुँचेगें उसके दरवाज़े खोले जाएँगे और उसके दारोग़ा उनसे कहें गे क्या तुम्हारे पास तुम ही में से वो रसूल न आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन के मिलने से डराते थे कहेंगे क्यों नहीं मगर अज़ाब का क़ौल काफ़िरों पर ठीक उतरा।

७२. फ़रमाया जाएगा जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उसमें हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना मुतकब्बिरों का।

७३. और जो अपने रब से डरते थे उनकी सवारियाँ गिरोह गिरोह जन्नत

شَآءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا
هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝٦٨

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ
الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ
وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٦٩

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ
ع اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٧٠

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ
زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ
اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ
يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ
عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ
لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ
لٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ ۝٧١

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٧٢

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى

की तरफ़ चलाइ जाएँगी यहाँ तक कि
जब वहाँ पहुँचेगें और उसके दरवाज़े
खुले हुए होंगे और उसके दारोग़ा उनसे
कहेंगे सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो
जन्नत में जाओ हमेशा रहने।
७४. और वो कहेंगे सब ख़ूबियाँ
अल्लाह को जिसने अपना वअ़्दा हम
से सच्चा किया और हमें इस ज़मीन
का वारिस किया कि हम जन्नत में रहें
जहाँ चाहें तो क्या ही अच्छा सवाब
कामयों (अच्छा काम करनेवालों) का।
७५. और तुम फ़रिश्तों को देखोगे
अ़र्श के आस पास हल्क़ा किए अपने
रब की तअ़रीफ़ के साथ उसकी पाकी
बोलते और लोगों में सच्चा फ़ैसला
फ़रमा दिया जाएगा और कहा जाएगा
कि सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो सारे
जहान का रब।

सूरए मोमिन

मक्की है इसमें पचासी आयतें और नौ रूकूअ़ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो
निहायत मेहरबान रह़्म वाला

रूकूअ़ १

२. ये किताब उतारना है अल्लाह
की तरफ़ से जो इ़ज़्ज़त वाला इल्म
वाला।
३. गुनाह बख़्शने वाला और तौबा
क़ुबूल करने वाला सख़्त अ़ज़ाब करने
वाला बड़े इनआ़म वाला उसके सिवा

الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ
اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ
عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا
خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا
وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ
الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ
الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾
وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ
الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَ
قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ
لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ﴿١﴾
تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ
الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾
غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ
الْعِقَابِ ۙ ذِي الطَّوْلِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

कोई मअबूद नहीं उसी की तरफ फिरना है।

هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾

४. अल्लाह की आयतों में झगड़ा नहीं करते मगर काफ़िर तो ऐ सुनने वाले तुझे धोका न दे इनका शहरों में अहले गहले फिरना।

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾

५. इनसे पहले नूह की क़ौम और उनके बाद के गिरोहों ने झुटलाया और हर उम्मत ने ये क़स्द किया कि अपने रसूल को पकड़ ले और बातिल के साथ झगड़े कि उससे हक़ को टाल दें तो मैं ने उन्हें पकड़ा फिर कैसा हुआ मेरा अज़ाब।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾

६. और यूँ ही तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो चुकी है कि वो दोज़खी है।

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾

७. वो जो अर्श उठाते हैं और जो उसके गिर्द है अपने रब की तअरीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते और उस पर ईमान लाते और मुसलमानों की मग़फ़िरत मांगते हैं ऐ रब हमारे तेरे रहमत व इल्म में हर चीज़ की समाई है तो उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख के अज़ाब से बचा ले।

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٧﴾

८. ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨ الَّتِيْ

وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ
وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٨﴾
وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۚ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ
يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۚ وَذٰلِكَ هُوَ
ع
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ
اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ
اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿١٠﴾
قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا
اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ
اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿١١﴾
ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ
كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۚ
فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿١٢﴾
هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ
مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا
مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾
فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ

वअ्दा फ़रमाया और उनको जो नेक हो उनके बाप दादा और बीबियो और अवलाद में बेशक तू ही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

९. और उन्हे गुनाहो की शामत से बचा ले और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचाए तो बेशक तूने उस पर रह्म फ़रमाया और यही बड़ी कामयाबी है।

रूकूअ २

१०. बेशक जिन्हो ने कुफ्र किया उनको निदा की जाएगी कि ज़रूर तुम से अल्लाह की बेज़ारी उससे बहुत ज़्यादा है जैसे तुम आज अपनी जान से बेज़ार हो जबकि तुम ईमान की तरफ़ बुलाए जाते तो कुफ्र करते।

११. कहेंगे ऐ हमारे रब तूने हमें दो बार मुर्दा किया और दोबार ज़िन्दा किया अब हम अपने गुनाहो पर मुक़िर हुए तो आग से निकलने कि भी कोई राह है।

१२. ये उस पर हुआ कि जब एक अल्लाह पुकारा जाता तो तुम कुफ्र करते और उसका शरीक ठहराया जाता तो तुम मान लेते तो हुक्म अल्लाह के लिए है जो सब से बुलन्द बड़ा।

१३. वही है कि तुम्हे अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है और नसीहत नही मानता मगर जो रूजूअ लाए।

وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ (١٤)

१४. तो अल्लाह की बन्दगी करो निरे उसके बन्दे हो कर पड़े बुरा मानें काफ़िर।

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي
الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ (١٥)

१५. बुलंद दर्जे देने वाला अर्श का मालिक ईमान की जान 'वही' डालता है अपने हुकम से अपने बन्दों में जिस पर चाहे कि वो मिलने के दिन से डराए।

يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ
مِنْهُمْ شَيْءٌ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ
لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ (١٦)

१६. जिस दिन वो बिल्कुल ज़ाहिर हो जाएँगे अल्लाह पर उनका कुछ हाल छुपा न होगा आज किसकी बादशाही है एक अल्लाह सब पर ग़ालिब की।

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا
كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ اِنَّ اللّٰهَ
سَرِيْعُ الْحِسَابِ (١٧)

१७. आज हर जान अपने किए का बदला पाएगी आज किसी पर ज़्यादती नहीं बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ
لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ مَا
لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ
يُّطَاعُ (١٨)

१८. और उन्हें डराओ उस नज़दीक आने वाली आफ़त के दिन से जब दिल गलों के पास आ जाएँगे ग़म में भरे और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारशी जिसका कहा माना जाए।

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي
الصُّدُوْرُ (١٩)

१९. अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपी है।

وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ اِنَّ
اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ (٢٠)

२०. और अल्लाह सच्चा फ़ैसला फ़रमाता है और उसके सिवा जिनको पूजते हैं वो कुछ फ़ैसला नहीं करते

बेशक अल्लाह ही सुनता देखता है।

रुकूअ ३

२१. तो क्या उन्हों ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कैसा अन्जाम हुआ उनसे अगलों का उनकी क़ूव्वत और ज़मीन में जो निशानियाँ छोड़ गए उनसे ज़ाएद तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ा और अल्लाह से उनका कोई बचाने वाला न हुआ।

२२. ये इस लिए कि उनके पास उनके रसूल रौशन निशानियाँ ले कर आए फिर वो कुफ़्र करते तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा बेशक अल्लाह ज़बरदस्त सख़्त अज़ाब वाला है।

२३. और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियों और रौशन सनद के साथ भेजा।

२४. फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो वो बोले जादूगर है बड़ा झूटा।

२५. फिर जब वो उन पर हमारे पास से हक़ लाया बोले जो उस पर ईमान लाए उनके बेटे क़त्ल करो और औरतें ज़िन्दा रखो और काफ़िरों का दावँ नहीं मगर भटकता फिरता।

२६. और फ़िरऔन बोला मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल करूँ और वो अपने रब को पुकारे मैं डरता हूँ कहीं वो

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن
قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ
بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُم مِّنَ اللَّهِ
مِن وَاقٍ ﴿٢١﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم
بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ
إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَ
سُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢٣﴾
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا
سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾
فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا
قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ
الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٢٥﴾
وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ
وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ

तुम्हारा दीन बदल दे या ज़मीन में फ़साद चमकाए।

२७. और मूसा ने कहा मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूँ हर मुतकब्बिर से कि हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं लाता।

रुकूअ ४

२८. और बोला फ़िरऔन वालों में से एक मर्द मुसलमान कि अपने ईमान को छुपाता था क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और बेशक वो रौशन निशानियाँ तुम्हारे पास तुम्हारे रब कि तरफ़ से लाए और अगर बिलफ़र्ज़ वो ग़लत कहते हैं तो उनकी ग़लत गोई का वबाल उन पर और अगर वो सच्चे है तो तम्हें पहुँच जाएगा कुछ वो जिसका तुम्हें वअ़दा देते है बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो हद से बढ़ने वाला बड़ा झूटा हो।

२९. ऐ मेरी क़ौम आज बादशाही तुम्हारी है इस ज़मीन में ग़लबा रखते हो तो अल्लाह के अज़ाब से हमें कौन बचा लेगा अगर हम पर आए फ़िरऔन बोला मैं तो तुम्हें वही समझाता हूँ जो मेरी सूझ है और मैं तुम्हें वही बताता हूँ जो भलाई की राह है।

३०. और वो ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मुझे तुम पर अगले गिरोहों के दिन का सा ख़ौफ़ है।

دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِى الْاَرْضِ
الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّىْ وَ
رَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ
ع الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ
يَّقُوْلَ رَبِّىَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاِنْ يَّكُ
كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ
صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ يَعِدُكُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ
كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ
فِى الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ
اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ
اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ
اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

وَقَالَ الَّذِىْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّىْٓ اَخَافُ

عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ۝٣٠

مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ
وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللّٰهُ
يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝٣١

३१. जैसा दस्तूर गुज़रा नूह की क़ौम और आद और समूद और उनके बाद औरो का और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं चाहता।

وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ
التَّنَادِ ۝٣٢

३२. और ऐ मेरी क़ौम मैं तुम पर उस दिन से डरता हूँ जिस दिन पुकार मचेगी।

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝٣٣

३३. जिस दिन पीठ दे कर भागोगें अल्लाह से तुम्हें कोई बचाने वाला नहीं और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसका कोई राह दिखाने वाला नहीं।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ
بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا
جَآءَكُمْ بِهٖ ۭ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ
لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۭ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ
مُّرْتَابُ ۝٣٤

३४. और बेशक इससे पहले तुम्हारे पास यूसुफ़ रौशन निशानियाँ ले कर आए तो तुम उनके लाए हुए से शक ही में रहे यहाँ तक कि जब उन्हों ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तुम बोले हरगिज़ अब अल्लाह कोई रसूल न भेजेगा अल्लाह यूँ ही गुमराह करता है उसे जो हद से बढ़ने वाला शक लाने वाला है।

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ
سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۭ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ
اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ
يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝٣٥

३५. वो जो अल्लाह की आयतों मे झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के कि उन्हें मिली हो किस क़दर सख़्त बेज़ारी की बात है अल्लाह के नज़दीक और ईमान वालों के नज़दीक अल्लाह यूँही मुहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के सारे दिल पर।

३६. और फ़िरऔन बोला ऐ हामान

मेरे लिए ऊँचा महल बना शायद मैं पहुँच जाऊँ रास्तों तक।

३७. काहे के रास्ते आसमानों के तो मूसा के ख़ुदा को झाँक कर देखूँ और बेशक मेरे गुमान में तो वो झूटा है और यूँ ही फ़िरऔन की निगाह में उसका बुरा काम भला कर दिखाया गया और वो रास्ते से रोका गया और फ़िरऔन का दाव हलाक होने ही को था।

रुकूअ ५

३८. और वो ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मेरे पीछे चलो मैं तुम्हें भलाई की राह बताऊँ।

३९. ऐ मेरी क़ौम ये दुनिया का जीना तो कुछ बरतना ही है और बेशक वो पिछला हमेशा रहने का घर है।

४०. जो बुरा काम करे तो उसे बदला न मिलेगा मगर उतना ही और जो अच्छा काम करे मर्द ख़्वाह औरत और हो मुसलमान तो वो जन्नत में दाख़िल किए जाएँगे वहाँ बे गिन्ती रिज़्क़ पाएँगे।

४१. और ऐ मेरी क़ौम मुझे क्या हुआ मैं तुम्हे बुलाता हूँ नजात की तरफ़ और तुम मुझे बुलाते हो दोज़ख की तरफ़।

४२. मुझे उस तरफ़ बुलाते हो कि अल्लाह का इन्कार करूँ और ऐसे को उसका शरीक करूँ जो मेरे इल्म में

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ
صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾
اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ
مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۚ وَكَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ
عَنِ السَّبِيْلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ
اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾
وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ
اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾
يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۖ
وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾
مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا
مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ
ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ
يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا
بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾
وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ
وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾
تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ

नहीं और मैं तुम्हें उस इज़्ज़त वाले बहुत बख़्शने वाले कि तरफ़ बुलाता हूँ।

مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ وَّ اَنَا اَدْعُوْكُمْ
اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾

४३. आप ही साबित हुआ कि जिसकी तरफ़ मुझे बुलाते हो उसे बुलाना कहीं काम का नहीं दुनिया में न आख़िरत में और ये हमारा फिरना अल्लाह की तरफ़ है और ये कि हद से गुज़रने वाले ही दोज़ख़ी हैं।

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ لَيْسَ
لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ
وَاَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ
هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

४४ तो जल्द वो वक़्त आता है कि जो मैं तुम से कह रहा हूँ उसे याद करोगे और मैं अपने काम अल्लाह को सौंपता हूँ बेशक अल्लाह बन्दों को देखता है।

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَاُفَوِّضُ
اَمْرِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ
بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾

४५. तो अल्लाह ने उसे बचा लिया उनके मक्र की बुराईयों से और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा।

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ
بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾

४६. आग जिस पर सुबह व शाम पेश किए जाते हैं और जिस दिन क़यामत क़ाएम होगी हुक्म होगा फ़िरऔन वालों को सख़्त तर अज़ाब में दाख़िल करो।

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۟ اَدْخِلُوْۤا اٰلَ
فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

४७. और जब वो आग में बाहम झगड़ें गे तो कमज़ोर उनसे कहेंगे जो बड़े बनते थे हम तुम्हारे ताबेअ् थे तो क्या तुम हम से आग का कोई हिस्सा घटा लोगे।

وَاِذْ يَتَحَاجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ
الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُنَّا
لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا
نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

४८. वो तकब्बुर वाले बोले हम सब आग में हैं बेशक अल्लाह बन्दों में फ़ैसला फ़रमा चुका।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَاۤ

إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ
ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ
الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

४९. और जो आग में हैं उसके दारोग़ों से बोले अपने रब से दुआ करो हम पर अज़ाब का एक दिन हल्का कर दे।

قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُم
بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۚ قَالُوا فَادْعُوا ۗ
وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي
ضَلَالٍ ﴿٥٠﴾ ع

५०. उन्हों ने कहा क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल रौशन निशानियाँ न लाते थे बोले क्यों नहीं बोले तो तुम्हीं दुआ करो और काफ़िरों की दुआ नहीं मगर भटकते फिरने को।

रुकूअ ६

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ
الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾

५१. बेशक ज़रूर हम अपने रसूलों की मदद करेंगे और ईमान वालों की दुनिया की ज़िन्दगी में और जिस दिन गवाह खड़े होंगे।

يَوْمَ لَا يَنفَعُ الظَّالِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ ۖ
وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

५२. जिस दिन ज़ालिमों को उनके बहाने कुछ काम न देंगे और उनके लिए लअ्नत है और उनके लिए बुरा घर।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا
بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ﴿٥٣﴾

५३. और बेशक हम ने मूसा को रहनुमाई अता फ़रमाई और बनी इसराईल को किताब का वारिस किया।

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٥٤﴾

५४. अक़्लमन्दों की हिदायत और नसीहत को।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ
وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

५५. तो ऐ महबूब तुम सब्र करो बेशक अल्लाह का वअ्दा सच्चा है और अपनों के गुनाहों की मुआफ़ी चाहो और अपने रब की तअ्रीफ़ करते हुए सुबह और शाम उसकी पाकी बोलो।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ
بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ إِن فِي صُدُورِهِمْ
إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُم بِبَالِغِيهِ
فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْبَصِيرُ ٥٦

५६. वो जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो उनके दिलों में नहीं मगर एक बड़ाई की हवस जिसे न पहुँचेंगे तो तुम अल्लाह की पनाह मांगो बेशक वही सुनता देखता है।

لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ
خَلْقِ النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ٥٧

५७. बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश आदमियों की पैदाइश से बहुत बड़ी लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَ
لَا الْمُسِيءُ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ٥٨

५८. और अन्धा और आँखयारा बराबर नहीं और न वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किए और बदकार कितना कम ध्यान करते हो।

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَ
لَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ٥٩

५९. बेशक क़यामत ज़रूर आने वाली है उसमें कुछ शक नहीं लेकिन बहुत लोग ईमान नहीं लाते।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ
لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ
عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ
دَاخِرِينَ ٦٠ ع

६०. और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा बेशक वो जो मेरी इबादत से ऊँचे खिंचते हैं अन्क़रीब जहन्नम में जाएँगे ज़लील हो कर।

रुकूअ ७

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو

६१. अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई कि उसमें आराम पाओ और दिन बनाया आँखें खोलता बेशक

अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल वाला है लेकिन
बहुत आदमी शुक्र नहीं करते।

فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾

६२. वो है अल्लाह तुम्हारा रब
हर चीज़ का बनाने वाला उसके सिवा
किसी की बन्दगी नहीं तो कहाँ औंधे
जाते हो।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾

६३. यूँ ही औंधे होते है वो जो
अल्लाह की आयतों का इन्कार करते
हैं।

كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

६४. अल्लाह है जिसने तुम्हारे
लिए ज़मीन ठहराव बनाई और आस्मान
छत और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी
सूरतें अच्छी बनाई और तुम्हे सुथरी
चीज़ें रोज़ी दीं ये है अल्लाह तुम्हारा
रब तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह
रब सारे जहान का।

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا
وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ
صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾

६५. वही ज़िन्दा है उसके सिवा
किसी की बन्दगी नहीं तो उसे पूजो
निरे उसी के बन्दे हो कर सब ख़ूबियाँ
अल्लाह को जो सारे जहान का रब।

هُوَ الْحَيُّ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ
مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾

६६. तुम फ़रमाओ मैं मनअ किया
गया हूँ कि उन्हें पूजूँ जिन्हें तुम अल्लाह
के सिवा पूजते हो जब कि मेरे पास
रौशन दलिलें मेरे रब की तरफ़ से
आईं और मुझे हुक्म हुआ है कि
रब्बुल आलमीन के हुज़ूर गर्दन रखूं।

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ
الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ وَاُمِرْتُ اَنْ
اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

६७. वही है जिसने तुम्हें मिट्टी
से बनाया फिर पानी की बूँद से फिर

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ

ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ
يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ
ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ
يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا
مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

खून की फटक से फिर तुम्हें निकालता
है बच्चा फिर तुम्हें बाक़ी रखता है कि
अपनी जवानी को पहुँचो फिर इस
लिए कि बूढ़े हो और तुम में कोई
पहले ही उठा लिया जाता है और इस
लिए कि तुम एक मुक़र्रर वअ्दा तक
पहुँचो और इस लिए कि समझो।

هُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا
قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ
فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ ع

६८. वही है कि जिलाता है और
मारता है फिर जब कोई हुक्म फ़रमाता
है तो उस से यही कहता है कि हो जा
जभी वो हो जाता है।

रुकूअ ८

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ
اللّٰهِ ؕ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾

६९. क्या तुम ने उन्हें न देखा
जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं
कहाँ फेरे जाते हैं।

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا
بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾

७०. वो जिन्होंने झुटलाई किताब
और जो हम ने अपने रसूलों के साथ
भेजा वो अन्क़रीब जान जाएँगे।

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ؕ
يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾

७१. जब उनकी गर्दनों में तौक़
होंगे और ज़न्जीरें घसीटे जाएँगे ।

فِي الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾

७२. खौलते पानी में फिर आग
में दहकाए जाएँगे।

ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ
تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾

७३. फिर उनसे फ़रमाया जाएगा
कहाँ गए वो जो तुम शरीक बताते थे।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ
لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ؕ

७४. अल्लाह के मुक़ाबिल कहेंगे
वो तो हम से गुम गए बल्कि हम
पहले कुछ पूजते ही न थे अल्लाह
यूँही गुमराह करता है काफ़िरों को।

७५. ये उसका बदला है जो तुम ज़मीन में बातिल पर खुश होते थे और उसका बदला है जो तुम इतराते थे।

७६. जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उसमें हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना मग़रूरों का।

७७. तो तुम सब्र करो बेशक अल्लाह का वअ़्दा सच्चा है तो अगर हम तुम्हें दिखा दें कुछ वो चीज़ जिसका उन्हें वअ़्दा दिया जाता है या तुम्हें पहले ही वफ़ात दें बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ़ फिरना ।

७८. और बेशक हम ने तुम से पहले कितने रसूल भेजे कि जिन में किसी का अहवाल तुम से बयान फ़रमाया और किसी का अहवाल न बयान फ़रमाया और किसी रसूल को नहीं पहुंचता कि कोई निशानी ले आए बे हुक्मे खुदा के फिर जब अल्लाह का हुक्म आएगा सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और बातिल वालों का वहाँ ख़सारा।

रुकूअ ९

७९. अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए कि कीसी पर सवार हो और किसी का गोश्त खाओ।

८०. और तुम्हारे लिए उनमें कितने ही फ़ाएदे हैं और इस लिए कि तुम उनकी पीठ पर अपने दिल की मुरादों

كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَاِمَّا
نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ
نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ
مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَ
مِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَ
مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ
اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ
اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ
الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ
لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾

وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا
حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى

الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝٨٠

को पहुँचो और उन पर और कश्तियों पर सवार होते हो।

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنكِرُونَ ۝٨١

८१. और वो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है तो अल्लाह की कौनसी निशानी का इन्कार करोगे।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝٨٢

८२. क्या उन्हों ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का कैसा अंजाम हुआ वो उनसे बहुत थे और उनकी कूव्वत और जमीन में निशानियाँ उनसे ज़्यादा तो उनके क्या काम आया जो उन्हों ने कमाया।

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝٨٣

८३. तो जब उनके पास उनके रसूल रौशन दलीले लाए तो वो उसी पर खुश रहे जो उनके पास दुनिया का इल्म था और उन्हीं पर उलट पड़ा जिस की हँसी बनाते थे।

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ۝٨٤

८३. फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देखा बोले हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और जो उसके शरीक करते थे उनसे मुन्किर हुए।

فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ۖ سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ ۝٨٥

८५. तो उनके ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देख लिया अल्लाह का दस्तूर जो उसके बन्दो में गुज़र चुका और वहाँ काफ़िर घाटे में रहे।

सूरए हा... मी...म सज्दा

मक्की है और इसमें चौवन आयतें और छे रूकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

२. ये उतारा है बड़े रहम वाले मेहरबान का।

३. एक किताब है जिसकी आयतें मुफ़स्सल फ़रमाई गई अरबी कुरऑन अक़्ल वालों के लिए।

४. खुशख़बरी देता और डर सुनाता तो उनमें अक्सर ने मुँह फेरा तो वो सुनते ही नहीं।

५. और बोले हमारे दिल ग़िलाफ़ में हैं उस बात से जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो और हमारे कानों में टेंट हैं और हमारे और तुम्हारे दर्मियान रोक है तो तुम अपना काम करो हम अपना काम करते हैं।

६. तुम फ़रमाओ आदमी होने में तो मैं तुम्हीं जैसा हूँ मुझे 'वही' होती है कि तुम्हरा मअ़बूद एक ही मअ़बूद है तो उसके हुज़ूर सीधे रहो और उससे मुआफ़ी मांगो और ख़राबी है शिर्क वालों को।

७. वो जो ज़कात नहीं देते और वो आख़िरत के मुन्किर हैं।

८. बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए बे इन्तिहा सवाब है।

سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

حٰمٓ ①

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ②

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ③

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ

فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ④

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْۤ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ

اِلَيْهِ وَفِيْۤ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْ ۢ بَيْنِنَا

وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ⑤

قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰۤى

اِلَيَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْۤا

اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ؕ وَوَيْلٌ

لِّلْمُشْرِكِيْنَ ⑥

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ

بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ⑦

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ⑧

रुकूअ २

९. तुम फ़रमाओ क्या तुम लोग उसका इन्कार रखते हो जिसने दो दिन में ज़मीन बनाई और उसके हम सर ठहराते हो वो है सारे जहान का रब।

१०. और उस में उसके उपर से लंगर डाले और उसमें बरकत रखी और उसमें उसके बसने वालों की रोज़ियाँ मुक़र्रर कीं ये सब मिला कर चार दिन में ठीक जवाब पूछने वालों को।

११. फिर आस्मान की तरफ़ क़स्द फ़रमाया और वो धुवाँ था तो उससे और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों हाज़िर हो खुशी से चाहे ना खुशी से दोनों ने अर्ज़ कि हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए।

१२. तो उन्हे पूरे सात आस्मान कर दिया दो दिन में और हर आस्मान में उसके काम के अह्काम भेजे और हम ने नीचे के आस्मान को चिराग़ों से आरास्ता किया और निगेहबानी के लिए ये उस इज़्ज़त वाले इल्म वाले का ठैराया हुआ है।

१३. फिर अगर वो मुँह फेरें तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूँ एक कड़क से जैसी कड़क आद और समूद पर आई थी।

१४. जब रसूल उनके आगे पीछे फिरते थे कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बोले हमारा रब चाहता तो फ़रिश्ते उतारता तो जो कुछ तुम ले कर भेजे गए हम उसे नहीं मानते।

قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِیْ خَلَقَ
الْاَرْضَ فِیْ یَوْمَیْنِ وَ تَجْعَلُوْنَ لَهٗۤ
اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۚ﴿۹﴾

وَ جَعَلَ فِیْهَا رَوَاسِیَ مِنْ فَوْقِهَا وَ
بٰرَكَ فِیْهَا وَ قَدَّرَ فِیْهَاۤ اَقْوَاتَهَا فِیْۤ
اَرْبَعَةِ اَیَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآىٕلِیْنَ ﴿۱۰﴾

ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ وَ هِیَ دُخَانٌ
فَقَالَ لَهَا وَ لِلْاَرْضِ ائْتِیَا طَوْعًا اَوْ
كَرْهًا ؕ قَالَتَاۤ اَتَیْنَا طَآىٕعِیْنَ ﴿۱۱﴾

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِیْ یَوْمَیْنِ
وَ اَوْحٰى فِیْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَ زَیَّنَّا
السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِمَصَابِیْحَ ۖۗ وَ حِفْظًا ؕ
ذٰلِكَ تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ﴿۱۲﴾

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً
مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ؕ﴿۱۳﴾

اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَیْنِ اَیْدِیْهِمْ
وَ مِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ
قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓىٕكَةً
فَاِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾

१५. तो वो जो आद थे उन्हें ज़मीन में ना हक़ तकब्बुर किया और बोले हम से ज़्यादा किसका ज़ोर और क्या उन्होंने न जाना कि अल्लाह जिसने उन्हें बनाया उनसे ज़्यादा क़वी है और हमारी आयतों का इन्कार करते थे।

१६. तो हम ने उन पर एक आँधी भेजी सख़्त ग़रज़ उनकी शामत के दिनों में कि हम उन्हें रुसवाई का अज़ाब चखाएँ दुनिया की ज़िन्दगी में और बेशक आख़िरत के अज़ाब में सब से बड़ी रुसवाई है और उनकी मदद न होगी।

१७. और रहे समूद उन्हें हम ने राह दिखाई तो उन्हों ने सूझने पर अन्धे होने को पसन्द किया तो उन्हें ज़िल्लत के अज़ाब की कड़क ने आलिया सज़ा उनके किए की।

१८. और हम ने उन्हें बचा लिया जो ईमान लाए और डरते थे।

रुकूअ ३

१९. और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की तरफ़ हाँके जाएँगे तो उनके अगलों को रोकेंगे।

२०. यहाँ तक कि पिछले आ मिलें यहाँ तक कि जब वहाँ पहुँचेंगे उनके कान और उनकी आँखें और

فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا
قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ
خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَ
كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿۱۵﴾

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا
فِىْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ
الْخِزْىِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ
الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۶﴾

وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا
الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ
صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۷﴾

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا
يَتَّقُوْنَ ﴿۱۸﴾

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ
فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿۱۹﴾

حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ

उनके चमड़े सब उन पर उनके किए की गवाही देंगे।

२१. और वो अपनी खालों से कहें गे तुम ने हम पर क्यों गवाही दी वो कहें गी हमें अल्लाह ने बुलवाया जिसने हर चीज़ को गोयाई बख़्शी और उसने तुम्हें पहली बार बनाया और उसी की तरफ़ तुम्हें फिरना है।

२२. और तुम उससे कहाँ छुप कर जाते कि तुम पर गवाही दें तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें लेकिन तुम तो ये समझे बैठे थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से काम नहीं जानता।

२३. और ये है तुम्हारा वो गुमान जो तुम ने अपने रब के साथ किया और उसने तुम्हें हलाक कर दिया तो अब रह गए हारे हुओं में।

२४. फिर अगर वो सब्र करें तो आग उनका ठिकाना है और अगर वो मनाना चाहें तो कोई उनका मनाना न माने।

२५. और हम ने उन पर कुछ साथी तऐयुनात किए उन्हों ने उन्हें भला कर दिखाया जो उनके आगे है और जो उनके पीछे और उन पर बात पूरी हुई उन गिरोहों के साथ जो उनसे

سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ
عَلَيْنَا ؕ قَالُوْۤا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِیْۤ
اَنْطَقَ كُلَّ شَیْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ یَّشْهَدَ
عَلَیْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَاۤ اَبْصَارُكُمْ
وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ
اللّٰهَ لَا یَعْلَمُ كَثِیْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِیْ ظَنَنْتُمْ
بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ
الْخٰسِرِیْنَ ﴿٢٣﴾
فَاِنْ یَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ
وَاِنْ یَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ
الْمُعْتَبِیْنَ ﴿٢٤﴾

وَقَیَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَیَّنُوْا لَهُمْ
مَّا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَحَقَّ عَلَیْهِمُ الْقَوْلُ فِیْۤ اُمَمٍ قَدْ

خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ
إِنَّهُمْ كَانُوا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ع

पहले गुज़र चुके जिन्न और आदमियों के बेशक वो ज़ियाँ कार थे।

रुकूअ ४

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا
الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ
تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾

२६. और काफ़िर बोले ये कुरआन न सुनो और इसमें बेहूदा गुल करो शायद यूँही तुम ग़ालिब आओ।

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا
شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

२७. तो बेशक ज़रूर हम काफ़िरों को सख़्त अज़ाब चखाएँगे और बेशक हम उनके बुरे से बुरे काम का उन्हें बदला देंगे।

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ لَهُمْ
فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَآءً بِمَا كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾

२८. ये है अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग उसमें उन्हें हमेशा रहना है सज़ा उसकी कि हमारी आयतों का इन्कार करते थे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا
الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ
نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا
مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾

२९. और काफ़िर बोले ऐ हमारे रब हमें दिखा वो दोनों जिन्न और आदमी जिन्हों ने हमें गुमराह किया कि हम उन्हें अपने पाँव तले डालें कि वो हर नीचे से नीचे रहें।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ
اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا
بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

३०. बेशक वो जिन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर उस पर क़ायम रहे उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि न डरो और न ग़म करो और ख़ुश हो उस जन्नत पर जिसका तुम्हें वअ़दा दिया जाता था।

३१. हम तुम्हारे दोस्त हैं दुनिया

نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيهَا مَا
تَشْتَهِي أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا
مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾

की ज़िन्दगी मे और आख़िरत मे और तुम्हारे लिए है उस मे जो तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिए उसमे जो मांगो।

نُزُلًا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ ﴿٣٢﴾ ع

३२. मेहमानी बख़्शने वाले मेहरबान की तरफ़ से।

रुकूअ ५

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِمَّنْ دَعَا إِلَى
اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

३३. और उससे ज़्यादा किस की बात अच्छी जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसलमान हूँ।

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ
ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي
بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ
حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾

३४. और नेकी और बदी बराबर न हो जाएँ गी ऐ सुनने वाले बुराई को भलाई से टाल जभी वो कि तुझ मे और उसमे दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।

وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ
وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

३५. और ये दौलत नहीं मिलती मगर साबिरों को और उसे नहीं पाता मगर बड़े नसीब वाला।

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ
فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

३६. और अगर तुझे शैतान का कोई कोंचा पहुँचे तो अल्लाह की पनाह मांग बेशक वो ही सुनता जानता है।

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ

३७. और उसकी निशानियों में से है रात और दिन और सूरज और

चाँद सज्दा न करो सूरज को और न चाँद को और अल्लाह को सज्दा करो जिसने उन्हें पैदा किया अगर तुम उसके बन्दे हो।

وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾

३८. तो अगर ये तकब्बुर करें तो वो जो तुम्हारे रब के पास हैं रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और उकताते नहीं।

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْئَمُوْنَ ﴿٣٨﴾

३९. और उसकी निशानियों से है कि तू ज़मीन को देखे बे क़द्र पड़ी फिर जब हम ने उसपर पानी उतारा तरो - ताज़ा हुई और बढ़ चली बेशक जिस ने उसे जिलाया ज़रूर मुर्दे जिलाएगा बेशक वो सब कुछ कर सकता।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾

४०. बेशक वो जो हमारी आयतों में टेढ़े चलते हैं हम से छुपे नहीं तो क्या जो आग में डाला जाएगा वो भला या जो क़यामत में अमान से आएगा जो जी में आए करो बेशक वो तुम्हारे काम देख रहा है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾

४१. बेशक जो ज़िक्र से मुन्किर हुए जब वो उनके पास आया उनकी ख़राबी का कुछ हाल न पूछ और बेशक वो इज़्ज़त वाली किताब है।

४२. बातिल को उसकी तरफ़ राह

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ۙ ﴿٤١﴾

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ
وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنْزِيلٌ مِنْ
حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

नही न उसके आगे से न उसके पीछे से उतारा हुआ है हिकमत वाले सब खूबियाँ सराहे का।

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ
لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو
مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾

४३. तुम से न फ़रमाया जाएगा मगर वही जो तुम से अगले रसूलों को फ़रमाया गया कि बेशक तुम्हारा रब बख़्शिश वाला और दर्दनाक अज़ाब वाला है।

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا
لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ
قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَ
شِفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي
آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ
ع أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٤﴾

४४. और अगर हम उसे अ़ज्मी ज़बान का कुरआँन करते तो ज़रूर कहते कि उसकी आयतें क्यों न खोली गईं क्या किताब अ़ज्मी और नबी अ़रबी तुम फ़रमाओ वो ईमान वालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है और वो जो ईमान नही लाते उनके कानों में टेंट है और वो उन पर अन्धापन है गोया वो दूर जगह से पुकारे जाते है।

रुकूअ ६

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ
فِيهِ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ
رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي
شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ﴿٤٥﴾

४५. और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई तो उसमें इख़्तिलाफ़ किया गया और अगर एक बात तुम्हारे रब की तरफ़ से गुज़र न चुकी होती तो जभी उनका फ़ैसला हो जाता और बेशक वो ज़रूर उसकी तरफ़ से एक धोका डालने वाले शक में हैं।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ
أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ
لِلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾

४६. जो नेकी करे वो अपने भले को और जो बुराई करे तो अपने बुरे को और तुम्हारा रब बन्दों पर ज़ुल्म नही करता।

४७. कयामत के इल्म का उसी पर हवाला है और कोई फल अपने गिलाफ़ से नहीं निकलता और न किसी मादा को पेट रहे और न जने मगर उसके इल्म से और जिस दिन उन्हें निदा फ़रमाएगा कहाँ है मेरे शरीक कहेंगे हम तुझ से कह चुके कि हम में कोई गवाह नहीं।

४८. और गुम गया उनसे जिसे पहले पूजते थे और समझ लिए कि उन्हें कहीं भागने की जगह नहीं।

४९ आदमी भलाई मांगने से नहीं उकताता और कोई बुराई पहुँचे तो ना उम्मीद आस टूटा।

५०. और अगर हम उसे कुछ अपनी रहमत का मज़ा दें उस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुँची थी तो कहेगा ये तो मेरी है और मेरे गुमान में कयामत क़ाएम न होगी और अगर मैं रब की तरफ़ लौटाया भी गया तो ज़रूर मेरे लिए उसके पास भी ख़ूबी ही है तो ज़रूर हम बता देंगे काफ़िरों को जो उन्हों ने किया और ज़रूर उन्हें गाढ़ा अज़ाब चखाएँगे।

५१. और जब हम आदमी पर एहसान करते है तो मुँह फेर लेता है और अपनी तरफ़ दूर हट जाता है और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो चौड़ी दुआ वाला है।

५२. तुम फ़रमाओ भला बताओ अगर ये कुरआन अल्लाह के पास से है फिर तुम उसके मुन्किर हुए तो

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ
مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ
مِنْ أُنْثٰى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهٖ ۚ وَ
يَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَآءِي ۙ قَالُوٓا
اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ
قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾
لَا يَسْـَٔمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۡ
وَإِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾
وَلَئِنْ أَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ
ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هٰذَا لِي ۙ وَمَآ
أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَلَئِنْ رُّجِعْتُ
إِلٰى رَبِّيٓ إِنَّ لِي عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ
فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا ۙ
وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾
وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ
وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ
فَذُو دُعَآءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾
قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ
اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ أَضَلُّ

उससे बढ़ कर गुमराह कौन जो दूर की ज़िद में है।

५३. अभी हम उन्हें दिखाएँगे अपनी आयतें दुनिया भर में और ख़ुद उनके आपे में यहाँ तक कि उनपर खुल जाए कि बेशक वो हक़ है क्या तुम्हारे रब का हर चीज़ पर गवाह होना काफ़ी नहीं।

५४. सुनो उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक है सुनो वो हर चीज़ को मुहीत है।

सूरए शूरा

मक्की है इसमें तिरेपन आयतें और पांच रूकूअ है

अल्लाह के नाम शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

३. यूंही 'वही' फ़रमाता है तुम्हारी तरफ़ और तुम से अगलों की तरफ़ अल्लाह इज़्ज़त-ो हिक़मत वाला।

४. उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वही बुलन्दी-ो अज़मत वाला है।

५. क़रीब होता है कि आसमान अपने ऊपर से शक़ हो जाएं और फ़रिश्ते अपने रब की तअ्रीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते और ज़मीन वालो के लिए मुआफ़ी माँगते हैं सुन लो बेशक अल्लाह ही बख़्शने वाला मेहरबान है।

६. और जिन्हों ने अल्लाह के सिवा

مِمَّنْ هُوَ فِىْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾
سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِى الْاٰفَاقِ وَفِىْٓ
اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ
الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى
كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٥٣﴾
اَلَآ اِنَّهُمْ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ
اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿٥٤﴾

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿١﴾
عٓسٓقٓ ﴿٢﴾
كَذٰلِكَ يُوْحِىْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾
لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ
وَهُوَ الْعَلِىُّ الْعَظِيْمُ ﴿٤﴾
تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ
وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ
وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِى الْاَرْضِ ؕ اَلَآ
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾
وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ

और वाली बना रखे हैं वो अल्लाह की निगाह में है और तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं।

७ और यूँही हम ने तुम्हारी तरफ़ अरबी क़ुरआन 'वही' भेजा कि तुम डराओ सब शहरों की अस्ल मक्का वालों को और जितने उसके गिर्द हैं और तुम डराओ इकट्ठे होने के दिन से जिस में कुछ शक नहीं एक गिरोह जन्नत में है और एक गिरोह दोज़ख में।

८. और अल्लाह चाहता तो उन सब को एक दीन पर कर देता लेकिन अल्लाह अपनी रहमत में लेता है जिसे चाहे और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न मददगार।

९. क्या अल्लाह के सिवा और वाली ठहरा लिए हैं तो अल्लाह ही वाली है। और वो मुर्दे जिलाएगा और वो सब कुछ कर सकता है।

रुकूअ २

१०. तुम जिस बात में इख़्तिलाफ़ करो तो उसका फ़ैसला अल्लाह के सुपुर्द है ये है अल्लाह मेरा रब मैं ने उस पर भरोसा किया और मैं उसकी तरफ़ रुजूअ लाता हूँ।

११. आसमानों और ज़मीन का बनानेवाला तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए और नर – मादा चौपाए उससे तुम्हारी नस्ल [illegible] है उस जैसा कोई नहीं और वही सुनता देखता है।

اللهُ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَآ أَنتَ عَلَيْهِم
بِوَكِيلٍ ﴿٦﴾
وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا
لِّتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ
يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي
الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ﴿٧﴾
وَلَوْ شَآءَ اللهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَلَٰكِن يُدْخِلُ مَن يَشَآءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ
وَالظَّٰلِمُونَ مَا لَهُم مِّن وَلِيٍّ وَلَا
نَصِيرٍ ﴿٨﴾
أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِۦٓ أَوْلِيَآءَ ۖ فَاللهُ
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَهُوَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٩﴾
وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُۥٓ
إِلَى اللهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿١٠﴾
فَاطِرُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُم
مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَٰجًا وَمِنَ الْأَنْعَٰمِ
أَزْوَٰجًا ۖ يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ
شَيْءٌ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿١١﴾

१२. उसी के लिए हैं आसमानों और ज़मीन कि कुंजियाँ रोज़ी वसीअ करता है जिस के लिए चाहे और तंग फ़रमाता है बेशक वो सब कुछ जानता है।

१३. तुम्हारे लिए दीन की वो राह डाली जिसका हुक्म उसने नूह को दिया और जो हम ने तुम्हारी तरफ़ 'वही' की और जिस का हुक्म हम ने इब्राहीम और मूसा और ईसा को दिया कि दीन ठीक रखो और उसमें फूट न डालो मुश्रिकों पर बहुत ही गिराँ है वो जिसकी तरफ़ तुम उन्हें बुलाते हो और अल्लाह अपने क़रीब के लिए चुन लेता है जिसे चाहे और अपनी तरफ़ राह देता है उसे जो रूजूअ लाए।

१४. और उन्हों ने फूट न डाली मगर बाद इसके कि उन्हें इल्म आ चुका था आपस के हसद से और अगर तुम्हारे रब की एक बात गुज़र न चुकी होती एक मुक़र्रर मिआद तक तो कब का उनमें फ़ैसला कर दिया होता और बेशक वो जो उनके बाद कितब के वारिस हुए वो उससे एक धोका डालने वाले शक में है।

१५. तो उसी लिए बुलाओ और साबित क़दम रहो जैसा तुम्हें हुक्म हुआ है और उनकी ख़्वाहिशों पर न चलो और कहो कि मैं ईमान लाया उस पर जो कोई किताब अल्लाह ने उतारी और मुझे हुक्म है कि मैं तुम

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ اِنَّهٗ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٢﴾
شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ
نُوْحًا وَّالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ وَمَا
وَصَّيْنَا بِهٖۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰۤى
اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ
كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ
اِلَيْهِ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَهْدِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾
وَمَا تَفَرَّقُوْۤا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ
الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا
الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ
مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١٤﴾
فَلِذٰلِكَ فَادْعُ وَاسْتَقِمْ كَمَاۤ اُمِرْتَ
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَقُلْ اٰمَنْتُ
بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ وَاُمِرْتُ
لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ لَنَاۤ

أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ لَا حُجَّةَ
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا
وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝١٥
وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝١٦
اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ
وَالْمِيزَانَ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ
السَّاعَةَ قَرِيبٌ ۝١٧
يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِهَا وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا
وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ أَلَا إِنَّ
الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝١٨
اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ
وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝١٩ ع
مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ
لَهُ فِي حَرْثِهِ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ
حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ

मे इन्साफ़ करूँ अल्लाह हमारा और तुम्हारा सब का रब है हमारे लिए हमारा अमल और तुम्हारे लिए तुम्हारा किया कोई हुज्जत नहीं हम मे और तुम मे अल्लाह हम सब को जमअ करेगा और उसी की तरफ़ फिरना है।

१६. और वो जो अल्लाह के बारे में झगड़ते है बाद इसके कि मुसलमान उसकी दअ्वत क़ुबूल कर चुके उनकी दलील महज़ बेसबात है उनके रब के पास और उनपर ग़ज़ब है और उनके लिए सख़्त अज़ाब है।

१७. अल्लाह है जिस ने हक़ के साथ किताब उतारी और इन्साफ़ की तराज़ू और तुम क्या जानो शायद क़यामत क़रीब ही हो।

१८. उसकी जलदी मचा रहे है वो जो उस पर ईमान नही रखते और जिन्हें उस पर ईमान है वो उससे डर रहे हैं। और जानते हैं कि बेशक वो हक़ है सुनते हो बेशक जो क़यामत मे शक करते हैं ज़रूर दूर की गुमराही मे है।

१९. अल्लाह अपने बन्दो पर लुत्फ़ फ़रमाता है जिसे चाहे रोज़ी देता है वही क़ूव्वत-ो इज़्ज़त वाला है।

रुकूअ ३

२०. जो आख़िरत की खेती चाहे हम उसके लिए उसकी खेती बढ़ाएँ और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ देंगे और आख़िरत

में उसका कुछ हिस्सा नहीं।

२१. या उनके लिए कुछ शरीक है जिन्हों ने उनके लिए वो दीन निकाल दिया है कि अल्लाह ने उसकी इजाज़त न दी और अगर एक फ़ैसला का वअ़दा न होता तो यहीं उनमें फ़ैसला कर दिया जाता और बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

२२. तुम ज़ालिमों को देखो गे कि अपनी कमाइयों से सहमे हुए होंगे और वो उन पर पड़ कर रहें गी और जो ईमान लाए और अच्छे काम किए वो जन्नत की फुलवारियों में हैं उनके लिए उनके रब के पास है जो चाहें यही बड़ा फ़ज़्ल है।

२३. यह है वो जिसकी ख़ुशख़बरी देता है अल्लाह अपने बन्दों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए तुम फ़रमाओ मैं उस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत और जो नेक काम करें हम उसके लिए उसमें और ख़ूबी बढाएँ बेशक अल्लाह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है।

२४. या ये कहते हैं कि उन्हों ने अल्लाह पर झूट बाँध लिया और अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रहमत-ो हिफ़ाज़त की मुहर फ़रमा दे और मिटाता है बातिल को और हक़ को साबित फ़रमाता है अपनी बातों से बेशक वो दिलों की बातें जानता है।

فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾
اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ
الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا
كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾
تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا
وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ
لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ
ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾
ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ
قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا
الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ
حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ
فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ
وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ
بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾

२५. और वही है जो अपने बन्दों की तौबा कुबूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है और जानता है जो कुछ तुम करते हो।

२६. और दुआ कुबूल फ़रमाता है उनकी जो ईमान लाए और अच्छे काम किए और उन्हें अपने फ़ज़्ल से और इनआम देता है और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब है।

२७. और अगर अल्लाह अपने सब बन्दों का रिज़्क़ वसीअ कर देता तो ज़रूर ज़मीन में फ़साद फैलाते लेकिन वो अन्दाज़े से उतारता है जितना चाहे बेशक वो अपने बन्दों से ख़बरदार है।

२८. उन्हें देखता है और वही है कि मेंह उतारता है उनके ना उम्मीद होने पर और अपनी रहमत फैलाता है और वही काम बनाने वाला है सब ख़ूबियों सराहा।

२९. और उसकी निशानियों से है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और जो चलने वाले उनमें फैलाए और वो उनके इकट्ठा करने पर जब चाहे क़ादिर है।

रुकूअ ४

३०. और तुम्हें जो मुसीबत पहुँची वो उसके सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है।

३१. और तुम ज़मीन में क़ाबू से नहीं निकल सकते और न अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हारा कोई दोस्त न मददगार।

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ
عِبَادِهِ وَيَعْفُوا عَنِ السَّيِّئَاتِ وَ
يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾
وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ
وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾
وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا
فِي الْأَرْضِ وَلَٰكِنْ يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَا
يَشَاءُ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾
وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ
بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ
وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾
وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِنْ دَابَّةٍ وَهُوَ
عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾ ع
وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا
كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾
وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ
وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣١﴾

३२. और उसकी निशानियों से है दरया में चलने वालियाँ जैसे पहाड़ियाँ।

३३. वो चाहे तो हवा थमा दे कि उसकी पीठ पर ठहरी रह जाएँ बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ हैं हर बड़े साबिर शाकिर को।

३४. या उन्हें तबाह कर दे लोगों के गुनाहों के सबब और बहुत कुछ मुआफ़ फ़रमा दे।

३५. और जान जाएँ वो जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उन्हें कहीं भागने की जगह नहीं।

३६. तुम्हें जो कुछ मिला है वो जीती दुनिया में बरतने का है और वो जो अल्लाह के पास है बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला उनके लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा करते हैं।

३७. और वो जो बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए मुआफ़ कर देते हैं।

३८. और वो जिन्हों ने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ क़ाएम रखी और उनका काम उनके आपस के मश्वरे से है और हमारे दिए से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं।

३९. और वो कि जब उन्हें बग़ावत

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٣٢﴾
اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ
رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣٣﴾
اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ
عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٤﴾
وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ۭ
مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٥﴾
فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّ
اَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٦﴾
وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰۗىِٕرَ الْاِثْمِ
وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ
يَغْفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾
وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ ۠ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۠
وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٨﴾
وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ
يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ
عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ
لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾
وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ
مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤١﴾
اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ
النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾
وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ
عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٣﴾ ع
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ
وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ
لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ
اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٤﴾
وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ
مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ
خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ
الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾

पहुँचे बदला लेते हैं।

४०. और बुराई का बदला उसी की बराबर बुराई है तो जिस ने मुआफ़ किया और काम संवारा तो उसका अज्र अल्लाह पर है बेशक वो दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को।

४१. और बेशक जिस ने अपनी मज़लूमी पर बदला लिया उन पर कुछ मुआख़ज़ा की राह नहीं।

४२. मुआख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते और ज़मीन में नाहक़ सरकशी फैलाते हैं उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

४३. और बेशक जिसने सब्र किया और बख़्श दिया तो ये ज़रूर हिम्मत के काम हैं।

रुकूअ ५

४४. और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसका कोई रफ़ीक़ नहीं अल्लाह के मुक़ाबिल और तुम ज़ालिमों को देखो गे कि जब अ़ज़ाब देखेंगे कहेंगे क्या वापस जाने का कोई रास्ता है।

४५. और तुम उन्हें देखोगे कि आग पर पेश किए जाते हैं ज़िल्लत से दबे लचे छुपी निगाहों देखते हैं और ईमान वाले कहें गे बेशक हार में वो हैं जो अपनी जानें और अपने घर वाले हार बैठे क़यामत के दिन सुनते हो बेशक ज़ालिम हमेशा के अ़ज़ाब

में है।

४६. और उनके कोई दोस्त न हुए कि अल्लाह के मुक़ाबिल उनकी मदद करते और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसके लिए कहीं रास्ता नहीं।

४७. अपने रब का हुक्म मानो उस दिन के आने से पहले जो अल्लाह की तरफ़ से टलने वाला नहीं उस दिन तुम्हें कोई पनाह न होगी और न तुम्हें इन्कार करते बने।

४८. तो अगर वो मुँह फेरें तो हम ने तुम्हें उन पर निगेहबान बना कर नहीं भेजा तुम पर तो नहीं मगर पहुँचा देना और जब हम आदमी को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा देते हैं उस पर ख़ुश हो जाता है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुँचे बदला उसका जो उनके हाथों ने आगे भेजा तो इन्सान बड़ा ना शुकरा है।

४९. अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत पैदा करता है जो चाहे जिसे चाहे बेटियाँ अता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे।

५०. या दोनों मिला दे बेटे और बेटियाँ और जिसे चाहे बाँझ कर दे बेशक वो इल्म-ओ कुदरत वाला है।

५१. और किसी आदमी को नहीं पहुँचता कि अल्लाह उससे कलाम फ़रमाए मगर 'वही' के तौर पर या यूँ कि वो बशर पर्द-ए- अज़मत के उधर हो या कोई फ़रिश्ता भेजे कि वो उसके हुक्म से 'वही' करे जो वो चाहे बेशक

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ أَوْلِيَاءَ يَنصُرُونَهُم
مِّن دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ
فَمَا لَهُ مِن سَبِيلٍ ﴿٤٦﴾
اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ
يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ مَا لَكُم مِّن
مَّلْجَإٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُم مِّن نَّكِيرٍ ﴿٤٧﴾
فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ
حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا
إِذَا أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ
بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ كَفُورٌ ﴿٤٨﴾
لِّلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ
مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ إِنَاثًا وَ
يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذُّكُورَ ﴿٤٩﴾
أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ
مَن يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾
وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا
وَحْيًا أَوْ مِن وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ
يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا
يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ﴿٥١﴾

वो बुलन्दा-ो हिकमत वाला है।

५२. और यूँही हम ने तुम्हें 'वही' भेजी एक जाँफ़िज़ा चीज़ अपने हुक्म से इससे पहले न तुम किताब जानते थे न अहकामे-शरअ की तफ़सील हाँ हम ने उसे नूर किया जिससे हम राह दिखाते हैं अपने बन्दों से जिसे चाहते हैं और बेशक तुम ज़रूर सीधी राह बताते हो।

५३. अल्लाह की राह कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में सुनते हो सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं।

सूरए ज़ुख़रुफ़

मक्की है और इसमें नवासी आयतें और सात रूकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

२. रौशन किताब की क़सम।

३. हम ने इसे अरबी क़ुरआन उतारा कि तुम समझो।

४. और बेशक वो अस्ल किताब में हमारे पास ज़रूर बुलन्दी व हिकमत वाला है।

५. तो क्या हम तुम से ज़िक्र का पहलू फेर दें उस पर कि तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो।

६. और हम ने कितने ही ग़ैब बताने वाले (नबी) अगलों में भेजे।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۭ
مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ
وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ
نَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِنَا ۭ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۙ ﴿٥٢﴾
صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ
الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمۗ ﴿١﴾
وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾
اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿٣﴾
وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ
حَكِيْمٌ ﴿٤﴾
اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ
كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾
وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦﴾
وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا

७. और उनके पास जो ग़ैब बताने वाला (नबी) आया उसकी हँसी ही बनाया किए।

८. तो हम ने वो हिलाक कर दिए जो उनसे भी पकड़ में सख़्त थे और अगलों का हाल गुज़र चुका है।

९. और अगर तुम उन से पूछो कि आसमान और ज़मीन किस ने बनाए तो ज़रूर कहे गे उन्हें बनाया उस इज़्ज़त वाले इल्म वाले ने।

१०. वो जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना किया और तुम्हारे लिये उसमें रास्ते किए कि तुम राह पाओ।

११. और वो जिसने आसमान से पानी उतारा एक अन्दाज़े से तो हम ने उससे एक मुर्दा शहर ज़िन्दा फ़रमा दिया यूँ ही तुम निकाले जाओगे।

१२. और जिस ने सब जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए कश्तियों और चौपायों से सवारियाँ बनाईं।

१३. कि तुम उनकी पीठों पर ठीक बैठो फिर अपने रब की नेअ्मत याद करो जब उस पर ठीक बैठ लो और यूँ कहो पाकी है उसे जिसने इस सवारी को हमारे बस में कर दिया और ये हमारे बूते (क़ाबू) की न थी।

१४. और बेशक हमें अपने रब

بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٧
فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى
مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ
الْعَلِيْمُ ۝٩
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا
وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ۝١٠
وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ
بِقَدَرٍ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا
كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝١١
وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَ
جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ
مَا تَرْكَبُوْنَ ۝١٢
لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا
نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ
وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا
هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۝١٣
وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۝١٤

की तरफ़ पलटना है।

१५. और उस के लिए उसके बन्दों में से टुकड़ा ठहराया बेशक आदमी खुला नाशुक्रा है।

रुकूअ २

१६. क्या उसने अपने लिए अपनी मख़लूक़ में से बेटियाँ लीं और तुम्हें बेटों के साथ ख़ास किया।

१७. और जब उन में किसी को खुशख़बरी दी जाए उस चीज़ की जिसका वस्फ़ रहमान के लिए बता चुका है तो दिन भर उसका मुँह काला रहे और ग़म खाया करे।

१८. और क्या वो जो गहने (ज़ेवर) में परवान चढ़े और बहस मे साफ़ बात न करे।

१९. और उन्होंने फ़रिश्तों को कि रहमान के बन्दे हैं औरतें ठहराया क्या उनके बनाते वक़्त ये हाज़िर थे अब लिख ली जाएगी उनकी गवाही और उनसे जवाब तलब हो गा।

२०. और बोले अगर रहमान चाहता हम उन्हें न पूजते उन्हें उसकी हक़ीक़त कुछ मअ़लूम नही यूँही अटकलें दौड़ाते हैं।

२१. या इससे क़ब्ल हम ने उन्हें कोई किताब दी है जिसे वो थामे हुए हैं।

२२. बल्कि बोले हम ने अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया और हम उनकी लकीर पर चल रहे हैं।

२३. और ऐसे ही हम ने तुम से

وَجَعَلُوا لَهُۥ مِنْ عِبَادِهِۦ جُزْءًا ۚ إِنَّ
الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾
أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُم
بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾
وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ
مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُۥ مُسْوَدًّا وَهُوَ
كَظِيمٌ ﴿١٧﴾
أَوَمَن يُنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي
الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾
وَجَعَلُوا الْمَلَٰٓئِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَٰدُ
الرَّحْمَٰنِ إِنَٰثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ
سَتُكْتَبُ شَهَٰدَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُونَ ﴿١٩﴾
وَقَالُوا لَوْ شَآءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَٰهُم ۗ
مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ
إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾
أَمْ ءَاتَيْنَٰهُمْ كِتَٰبًا مِّن قَبْلِهِۦ فَهُم
بِهِۦ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾
بَلْ قَالُوٓا إِنَّا وَجَدْنَآ ءَابَآءَنَا عَلَىٰٓ
أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم مُّهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾
وَكَذَٰلِكَ مَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي

पहले जब किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहाँ के आसूदों ने यही कहा कि हम ने अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया और हम उनकी लकीर के पीछे हैं।

२४. नबी ने फ़रमाया और क्या जब भी कि मैं तुम्हारे पास वो लाऊँ जो सीधी राह हो उससे जिस पर तुम्हारे बाप दादा थे बोले जो कुछ तुम ले कर भेजे गए हम उसे नहीं मानते।

२५. तो हम ने उन से बदला लिया तो देखो झुटलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ।

रुकूअ ३

२६. और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया मैं बेज़ार हूँ तुम्हारे मअबूदों से।

२७. सिवा उसके जिसने मुझे पैदा किया कि ज़रूर वो बहुत जल्द मुझे राह देगा।

२८. और उसे अपनी नस्ल में बाक़ी कलाम रखा कि कहीं वो बाज़ आऐं।

२९. बल्कि मैं ने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया के फ़ायदे दिए यहाँतक कि उनके पास हक़ और साफ़ बताने वाला रसूल तशरीफ़ लाया।

३०. और जब उनके पास हक़ आया बोले ये जादू है और हम इसके मुन्किर हैं।

३१. और बोले क्यों न उतारा गया ये कुरऑन उन दो शहरों के किसी बड़े आदमी पर।

३२. क्या तुम्हारे रब की रहमत वो

قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ
اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا
عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾
قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا
وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا
بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾
فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
ع النصف عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ
اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾
اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾
وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾
بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى
جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾
وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ
وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾
وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى
رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾
اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ

बाँटते हैं हम ने उनमें उनकी ज़ीस्त का सामान दुनिया की ज़िन्दगी में बाँटा और उनमें एक दूसरे पर दर्जों बुलन्दी दी कि उनमें एक दूसरे की हँसी बनाए और तुम्हारे रब की रह़मत उनकी जमअ़ जथा से बेहतर।

३३. और अगर ये न होता कि सब लोग एक दीन पर हो जाऐं तो हम ज़रूर रह़मान के मुन्किरों के लिये चाँदी की छतें और सीढ़ियाँ बनाते जिन पर चढ़ते।

३४. और उनके घरों के लिए चाँदी के दरवाज़े और चाँदी के तख़्त जिन पर तकिया लगाते।

३५. और तरह तरह की आराइश और ये जो कुछ है जीती दुनिया ही का असबाब है और आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़गारों के लिए है।

रुकूअ़ ४

३६. और जिसे रतौन्द आए (शब कोरी हो) रह़मान के ज़िक्र से हम उस पर एक शैतान तअ़ैयुनात करें कि वो उसका साथी रहे है।

३७. और बेशक वो शयातीन उनको राह से रोकते हैं और समझते ये हैं कि वो राह पर हैं।

३८. यहाँ तक कि जब काफ़िर हमारे पास आएगा अपने शैतान से कहे गा हाए किसी तरह मुझ में तुझ में पूरब पच्छिम का फ़ासला होता तू

قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ
دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا
وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾
وَلَوْلَا أَنْ يَّكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَّاحِدَةً
لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوتِهِمْ
سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا
يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾
وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا
يَتَّكِـُٔونَ ﴿٣٤﴾
وَزُخْرُفًا وَإِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْأٰخِرَةُ عِنْدَ
رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾ ع
وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ
لَهُ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾
وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ
وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾
حَتّٰى إِذَا جَاءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِي
وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ
الْقَرِينُ ﴿٣٨﴾

क्या ही बुरा साथी है।
३९. और हरगिज़ तुम्हारा उससे
भला न होगा आज जब कि तुम ने
ज़ुल्म किया कि तुम सब अज़ाब में
शरीक हो।
४०. तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे
या अन्धों को राह दिखाओगे और
उन्हें जो खुली गुमराही में है।
४१. तो अगर हम तुम्हें ले जाएं
तो उनसे हम ज़रूर बदला लेंगे।
४२. या तुम्हें दिखा दें जिसका
उन्हें हमने वअ्दा दिया है तो हम उन
पर बड़ी कुदरत वाले है।
४३. तो मज़बूत थामे रहो उसे जो
तुम्हारी तरफ़ 'वही' की गई बेशक
तुम सीधी राह पर हो।
४४. और बेशक वो शरफ़ है तुम्हारे
लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए और
अनक़रीब तुम से पूछा जाएगा।
रूकूअ ५
४५. और उनसे पूछो जो हम ने
तुम से पहले रसूल भेजे क्या हम ने
रहमान के सिवा कुछ और खुदा ठहराए
जिनको पूजा हो।
४६. और बेशक हम ने मूसा को
अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन
और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा तो
उसने फ़रमाया बेशक मैं उसका रसूल
हूँ जो सारे जहान का मालिक है।
४७. फिर जब वो उनके पास
हमारी निशानियाँ लाया जभी वो उनपर

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ
فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾
اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ
وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾
فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ
مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾
اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا
عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾
فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ
اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾
وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ
تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾
وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ
ع الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى
فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾
فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا
يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾

हँसने लगे।

४८. और हम उन्हें जो निशानी दिखाते वो पहले से बड़ी होती और हम ने उन्हें मुसीबत में गिरफ़्तार किया कि वो बाज़ आएं।

४९. और बोले कि ऐ जादूगर हमारे लिए अपने रब से दुआ कर इस अहद के सबब जो उसका तेरे पास है बेशक हम हिदायत पर आएंगे।

५०. फिर जब हम ने उनसे वो मुसीबत टाल दी जभी वो अहद तोड़ गए।

५१. और फ़िरऔन अपनी क़ौम में पुकारा कि ऐ मेरी क़ौम क्या मेरे लिये मिस्र की सलनतन नही और ये नहरें कि मेरे नीचे बहती है तो क्या तुम देखते नही।

५२. या मैं बेहतर हूँ उससे कि ज़लील है और बात साफ़ करता मअ्लूम नही होता।

५३. तो उस पर क्यों न डाले गए सोने के कंगन या उसके साथ फ़रिश्ते आते कि उसके पास रहते।

५४. फिर उसने अपनी क़ौम को कम अक़्ल कर लिया तो वो उसके कहने पर चले बेशक वो बे हुक्म लोग थे।

५५. फिर जब उन्हों ने वो किया जिसपर हमारा ग़ज़ब उन पर आया हम ने उन से बदला लिया तो हम ने उन सब को डुबो दिया।

وَمَا نُرِيهِم مِّنْ ءَايَةٍ إِلَّا هِىَ أَكْبَرُ
مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَـٰهُم بِٱلْعَذَابِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾
وَقَالُوا۟ يَـٰٓأَيُّهَ ٱلسَّاحِرُ ٱدْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا
عَهِدَ عِندَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾
فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ ٱلْعَذَابَ إِذَا هُمْ
يَنكُثُونَ ﴿٥٠﴾
وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِى قَوْمِهِۦ قَالَ
يَـٰقَوْمِ أَلَيْسَ لِى مُلْكُ مِصْرَ وَهَـٰذِهِ
ٱلْأَنْهَـٰرُ تَجْرِى مِن تَحْتِىٓ ۖ أَفَلَا
تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾
أَمْ أَنَا۠ خَيْرٌ مِّنْ هَـٰذَا ٱلَّذِى هُوَ
مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾
فَلَوْلَآ أُلْقِىَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ
أَوْ جَآءَ مَعَهُ ٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾
فَٱسْتَخَفَّ قَوْمَهُۥ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ
كَانُوا۟ قَوْمًا فَـٰسِقِينَ ﴿٥٤﴾
فَلَمَّآ ءَاسَفُونَا ٱنتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَـٰهُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾
فَجَعَلْنَـٰهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْـَٔاخِرِينَ ﴿٥٦﴾

५६. उन्हें हम ने कर दिया अगली दास्तान और कहावत पिछलों के लिए।

रूकूअ ६

५७. और जब इब्ने मरयम कि मिसाल बयान कि जाए जभी तुम्हारी क़ौम उससे हँसने लगते है।

५८. और कहते हैं क्या हमारे मअ्बूद बेहतर है या वो उन्हों ने तुम से ये न कही मगर ना हक़ के झगड़े को बल्कि वो हैं ही झगड़ालू लोग।

५९. वो तो नहीं मगर एक बन्दा जिस पर हम ने एहसान फ़रमाया और उसे हम ने बनी इसराईल के लिए अजीब नमूना बनाया।

६०. और अगर हम चाहते तो ज़मीन में तुम्हारे बदले फरिश्ते बसाते।

६१. और बेशक ईसा कयामत की ख़बर है तो हरगिज़ क़यामत में शक न करना और मेरे पैरो होना ये सीधी राह है।

६२. और हरगिज़ शैतान तुम्हे न रोक दे बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

६३. और जब ईसा रौशन निशानियाँ लाया उसने फ़रमाया मैं तुम्हारे पास हिकमत ले कर आया और इस लिए मैं तुम से बयान करदूँ बअ्ज़ वो बातें जिन में तुम इख़्तलाफ़ रखते हो तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।

६४. बेशक अल्लाह मेरा रब और तुम्हारा रब तो उसे पूजो ये सीधी राह है।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا
قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿٥٧﴾
وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۭ مَا ضَرَبُوْهُ
لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٨﴾
اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ
مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ﴿٥٩﴾
وَلَوْ نَشَاۗءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰۗىِٕكَةً فِي
الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦٠﴾
وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا
وَاتَّبِعُوْنِ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾
وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٢﴾
وَلَمَّا جَاۗءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ
بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٦٣﴾
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾
فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ
فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ

६५. फिर वो गिरोह आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए तो ज़ालिमों की ख़राबी है एक दर्दनाक दिन के अ़ज़ाब से।

६६. काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर क़यामत के कि उन पर अचानक आजाए और उन्हें ख़बर न हो।

६७. गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार।

रूकूअ ७

६८. उन से फ़रमाया जाएगा ऐ मेरे बन्दों आज न तुम पर ख़ौफ़ न तुम को ग़म हो।

६९. वो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और मुसलमान थे।

७०. दाख़िल हो जन्नत में तुम और तुम्हारी बीबियाँ और तुम्हारी ख़ातिरें होतीं।

७१. उन पर दौरा होगा सोने के प्यालों और जामों का और उसमें जो जी चाहे और जिस से आँख को लज़्ज़त पहुँचे और तुम उसमें हमेशा रहो गे।

७२. और ये है वो जन्नत जिसके तुम वारिस किए गए अपने अअ़्माल से।

७३. तुम्हारे लिए इसमें बहुत मेवे हैं कि उनमें से खाओ।

७४. बेशक मुजरिम जहन्नम के अ़ज़ाब में हमेशा रहने वाले हैं।

७५. वो कभी उन पर से हलका न पड़ेगा और वो उसमें बे आस रहेंगे।

७६. और हम ने उन पर कुछ

عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾

اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَىِٕذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾

يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ

اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٦٨﴾

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ

تُحْبَرُوْنَ ﴿٧٠﴾

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ

وَّاَكْوَابٍ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ

وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧١﴾

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾

لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا

تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ

خٰلِدُوْنَ ﴿٧٤﴾

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٥﴾

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧٦
وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ؕ
قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ۝٧٧
لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ
لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝٧٨
اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ۝٧٩
اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَ
نَجْوٰىهُمْ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ۝٨٠
قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا
اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ۝٨١
سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ
الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٨٢
فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى
يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝٨٣
وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِي
الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝٨٤
وَتَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ
السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٨٥
وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ

ज़ुल्म न किया हाँ वो ख़ुद ही ज़ालिम थे।

७७. और वो पुकारें गे ऐ मालिक तेरा रब हमें तमाम कर चुके वो फ़रमाएगा तुम्हें तो ठहरना है।

७८. बेशक हम तुम्हारे पास हक़ लाए मगर तुम में अक्सर को हक़ नागवार है।

७९. क्या उन्हों ने अपने ख़याल में कोई काम पक्का कर लिया है।

८०. तो हम अपना काम पक्का करने वाले हैं क्या इस घमंड में हैं की हम उनकी आहिस्ता बात और उन की मश्वरत नहीं सुनते हाँ क्यों नहीं और हमारे फ़रिश्ते उनके पास लिख रहे है।

८१. तुम फ़रमाओ ब फ़र्ज़े मुहाल रहमान के कोई बच्चा होता तो सब से पहले मैं पूजता।

८२. पाकी है आसमानों और ज़मीन के रब को अर्श के रब को उन बातों से जो ये बनाते हैं।

८३. तो तुम उन्हें छोड़ो कि बेहूदा बातें करें और खेलें यहाँ तक कि अपने उस दिन को पाएँ जिस का उन से वअ़्दा है।

८४. और वही आसमान वालों का ख़ुदा और ज़मीन वालों का ख़ुदा और वही हिकमत व इल्म वाला है।

८५. और बड़ी बरकत वाला है वो कि उसी के लिए है सल्तनत आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दर्मियान है और उसी के पास है क़यामत का इल्म और तुम्हें उसी कि तरफ़ फिरना।

८६. और जिनको ये अल्लाह के सिवा पूजते हैं शफ़ाअत का इख़्तियार

नहीं रखते हाँ शफ़ाअत का इख़्तियार उन्हें है जो हक़ की गवाही दें और इल्म रखें।

८७. और अगर तुम उन से पूछो कि उन्हें किस ने पैदा किया तो ज़रूर कहे गे अल्लाह ने तो कहाँ औंधे जाते है।

८८. मुझे रसूल के उस कहने की क़सम कि ऐ मेरे रब ये लोग ईमान नहीं लाते।

८९. तो उन से दरगुज़र करो और फ़रमाओ बस सलाम है कि आगे जान जाएँगे।

सूरए दुख़ान

मक्की है और इसमें उनसठ आयतें और तीन रूकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

२. क़सम उस रौशन किताब की।

३. बेशाक हम ने उसे बरकत वाली रात में उतारा बेशाक हम डर सुनाने वाले हैं।

४. उस में बाँट दिया जाता है हर हिकमत वाला काम।

५. हमारे पास के हुक्म से बेशाक हम भेजने वाले हैं।

६. तुम्हारे रब की तरफ़ से रहमत बेशाक वही सुनता जानता है।

७. वो जो रब है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दर्मियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो।

الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَ
هُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾
وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ
اللَّهُ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾
وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾
فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

سورة الدخان مكية وهي تسع وخمسون آية وثلاث ركوعات

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ﴿١﴾
وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾
إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ إِنَّا
كُنَّا مُنْذِرِينَ ﴿٣﴾
فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ﴿٤﴾
أَمْرًا مِنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٥﴾
رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ﴿٦﴾
رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ﴿٧﴾

८. उसके सिवा किसी की बन्दगी नही वो जिलाए और मारे तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का रब।

९. बल्कि वो शक में पड़े खेल रहे हैं।

१०. तो तुम उस दिन के मुन्तज़िर रहो जब आसमान एक ज़ाहिर धुँवा लाएगा।

११. कि लोगों को ढाँप लेगा ये है दर्दनाक अज़ाब।

१२. उस दिन कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर से अज़ाब खोल दे हम ईमान लाते हैं।

१३. कहाँ से हो उन्हें नसीहत मानना हालाँकि उनके पास साफ़ बयान फ़रमाने वाला रसूल तशरीफ़ ला चुका।

१४. फिर उससे रुगरदाँ हुए और बोले सिखाया हुआ दीवाना है।

१५. हम कुछ दिनों को अज़ाब खोले देते हैं तुम फिर वही करोगे।

१६. जिस दिन हम सब से बड़ी पकड़ पकड़ेंगे बेशक हम बदला लेने वाले हैं।

१७. और बेशक हम ने उन से पहले फ़िरऔन की क़ौम को जाँचा और उनके पास एक मोअज़्ज़ज़ रसूल तशरीफ़ लाया।

१८. कि अल्लाह के बन्दो को मुझे सुपुर्द कर दो बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानत वाला रसूल हूँ।

१९. और अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो मैं तुम्हारे पास एक रौशन सनद लाता हूँ।

२०. और मैं पनाह लेता हूँ अपने रब और तुम्हारे रब की उससे कि तुम

لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِۦ وَيُمِيتُ ۖ رَبُّكُمْ وَ
رَبُّ ءَابَآئِكُمُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾
بَلْ هُمْ فِى شَكٍّ يَلْعَبُونَ ﴿٩﴾
فَٱرْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِى ٱلسَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾
يَغْشَى ٱلنَّاسَ ۖ هَٰذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١﴾
رَّبَّنَا ٱكْشِفْ عَنَّا ٱلْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾
أَنَّىٰ لَهُمُ ٱلذِّكْرَىٰ وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُولٌ
مُّبِينٌ ﴿١٣﴾
ثُمَّ تَوَلَّوْا۟ عَنْهُ وَقَالُوا۟ مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ﴿١٤﴾
إِنَّا كَاشِفُوا۟ ٱلْعَذَابِ قَلِيلًا ۚ إِنَّكُمْ
عَآئِدُونَ ﴿١٥﴾
يَوْمَ نَبْطِشُ ٱلْبَطْشَةَ ٱلْكُبْرَىٰٓ إِنَّا
مُنتَقِمُونَ ﴿١٦﴾
وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَ
جَآءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾
أَنْ أَدُّوٓا۟ إِلَىَّ عِبَادَ ٱللَّهِ ۖ إِنِّى لَكُمْ
رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾
وَأَن لَّا تَعْلُوا۟ عَلَى ٱللَّهِ ۖ إِنِّىٓ ءَاتِيكُم
بِسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ﴿١٩﴾
وَإِنِّى عُذْتُ بِرَبِّى وَرَبِّكُمْ أَن تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾

मुझे संगसार करो।
२१. और अगर तुम मेरा यक़ीन न
लाओ तो मुझ से किनारे हो जाओ।
२२. तो उसने अपने रब से दुआ
की कि ये मुजरिम लोग है।
२३. हम ने हुक्म फ़रमाया कि मेरे
बन्दों को रातों रात ले निकल ज़रूर
तुम्हारा पीछा किया जाएगा।
२४. और दरिया को यूँही जगह
जगह से खुला छोड़ दे बेशक वो
लश्कर डुबोया जाएगा।
२५. कितने छोड़ गए बाग़ और
चश्मे।
२६. और खेत और उम्दा मकानात।
२७. और नेअ्मतें जिन में
फ़ारिगुलबाल थे।
२८. हम ने यूँ ही किया और उनका
वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया।
२९. तो उन पर आसमान और
ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी
गई।

रुकूअ २

३०. और बेशक हम ने बनी
इसराईल को ज़िल्लत के अज़ाब से
नजात बख़्शी।
३१. फ़िरऔन से बेशक वो
मुतकब्बिर हद से बढ़ने वालों में से था।
३२. और बेशक हम ने उन्हें
दानिस्ता चुन लिया उस ज़माने वालों से।
३३. और हम ने उन्हें वो निशानियाँ
अता फ़रमाई जिन में सरीह इनआम था।
३४. बेशक ये कहते है।

وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾
فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾
فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۭ اِنَّهُمْ جُنْدٌ
مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾
كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٢٥﴾
وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٦﴾
وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾
كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ
وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾
وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنَ
الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿٣٠﴾
مِنْ فِرْعَوْنَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ
الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾
وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰي عِلْمٍ عَلَي
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٢﴾
وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰۗـؤٌا
مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾
اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿٣٤﴾

३५. वो तो नहीं मगर हमारा एक दफ़अ का मरना और हम उठाए न जाएँगे।	اِنۡ هِىَ اِلَّا مَوۡتَتُنَا الۡاُوۡلٰى وَمَا نَحۡنُ بِمُنۡشَرِيۡنَ ۝٣٥
३६. तो हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो।	فَاۡتُوۡا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۝٣٦
३७. क्या वो बेहतर है या तुब्बअ की क़ौम और जो उनसे पहले थे हम ने उन्हें हलाक कर दिया बेशक वो मुजरिम लोग थे।	اَهُمۡ خَيۡرٌ اَمۡ قَوۡمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ ۖ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا مُجۡرِمِيۡنَ ۝٣٧
३८. और हम ने न बनाए आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान है खेल के तौर पर।	وَمَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا لٰعِبِيۡنَ ۝٣٨
३९. हम ने उन्हें न बनाया मगर हक़ के साथ लेकिन उन में अक्सर जानते नहीं।	مَا خَلَقۡنٰهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَقِّ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٣٩
४०. बेशक फ़ैसले का दिन उन सब की मिआद है।	اِنَّ يَوۡمَ الۡفَصۡلِ مِيۡقَاتُهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ۝٤٠ لا
४१. जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उनकी मदद होगी।	يَوۡمَ لَا يُغۡنِىۡ مَوۡلًى عَنۡ مَّوۡلًى شَيۡـئًا وَّلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ۝٤١ لا
४२. मगर जिस पर अल्लाह रहम करे बेशक वही इज़्ज़त वाला मेहरबान है।	اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ۝٤٢ ع
रुकूअ ३	
४३. बेशक थूहर का पेड़।	اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوۡمِ ۝٤٣ لا
४४. गुनाहगारों की खुराक है।	طَعَامُ الۡاَثِيۡمِ ۝٤٤
४५. गले हुए तांबे की तरह पेटों में जोश मारता है।	كَالۡمُهۡلِ ۛۚ يَغۡلِىۡ فِى الۡبُطُوۡنِ ۝٤٥ لا
४६. जैसा खौलता पानी जोश मारे।	كَغَلۡىِ الۡحَمِيۡمِ ۝٤٦
४७. उसे पकड़ो ठीक भड़कती आग की तरफ़ बज़ोर घसीटते ले जाओ।	خُذُوۡهُ فَاعۡتِلُوۡهُ اِلٰى سَوَآءِ الۡجَحِيۡمِ ۝٤٧ ق

४८. फिर उसके सर के उपर खौलते पानी का अ़ज़ाब डालो।
४९. चख! हाँ हाँ तू ही बड़ा इज़्ज़त वाला करम वाला है।
५०. बेशक ये है वो जिस में तुम शुबह करते थे।
५१. बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं।
५२. बाग़ों और चश्मों में।
५३. पहनें गे क़रीब और क़नादीज़ आमने सामने।
५४. यूँही है और हम ने उन्हें ब्याह दिया निहायत सियाह और रौशन बड़ी आँखों वालियों से उसमें हर क़िस्म का मेवा माँगे गे अमन व अमान से।
५६. उसमें पहली मौत के सिवा फिर मौत न चखें गे और अल्लाह ने उन्हें आग के अ़ज़ाब से बचा लिया।
५७. तुम्हारे रब के फ़ज़्ल से यही बड़ी कामयाबी है तो हम ने इस क़ुरआन को तुम्हारी ज़ुबान में आसान किया कि वो समझें।
५९. तो तुम इन्तिज़ार करो वो भी किसी इन्तिज़ार में हैं।

सूरए जासिया

मक्की है और इसमें सैंतीस आयतें और चार रूकूअ़ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला

रूकूअ़ १

२. किताब का उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाले कि तरफ़ से।

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾
ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾
إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾
فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾
يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾
كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾
يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾
لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾
فَضْلًا مِنْ رَبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾
فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾
فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

سُورَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ﴿١﴾
تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾

३. बेशक आसमानों और ज़मीन में निशानियाँ है ईमान वालों के लिए।
४. और तुम्हारी पैदाईश में और जो जो जानवर वो फैलाता है उन में निशानियाँ है यकीन वालों के लिए।
५. और रात और दिन की तबदीलियों में और उसमें कि अल्लाह ने आसमान से रोज़ी का सबब मेंह उतारा तो उससे ज़मीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा किया और हवाओं की गर्दिश में निशानियाँ है अक़्लमन्दों के लिए।
६. ये अल्लाह की आयतें हैं कि हम तुम पर हक़ के साथ पढ़ते हैं फिर अल्लाह और उसकी आयतों को छोड़ कर कौन सी बात पर ईमान लाएंगे।
७. ख़राबी है हर बड़े बोहतानहाय गुनाहगार के लिए।
८. अल्लाह की आयतों को सुनता है कि उस पर पढ़ी जाती हैं फिर हट पर जमता है गुरूर करता गोया उन्हें सुना ही नहीं तो उसे ख़ुशख़बरी सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की।
९. और जब हमारी आयतों में से किसी पर इत्तिलाअ पाए उसकी हँसी बनाता है उनके लिए ख़्वारी का अज़ाब।
१०. उनके पीछे जहन्नम है और उन्हें कुछ काम न देगा उनका कमाया हुआ और न वो जो अल्लाह के सिवा हिमायती ठहरा रखे थे और उनके लिए बड़ा अज़ाब है।
११. ये राह दिखाना है और जिन्होंने अपने रब की आयतों को न माना उनके लिए दर्दनाक अज़ाब में

إِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾
وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾
وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾
تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾
وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٧﴾
يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٨﴾
وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئَا اتَّخَذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩﴾
مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْئًا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠﴾
هٰذَا هُدًى وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ أَلِيمٌ ﴿١١﴾
اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ
الْفُلْكُ فِيْهِ بِأَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ
فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾
وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾
قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ
لَا يَرْجُوْنَ أَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾
مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ أَسَاءَ
فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْ إِسْرَاءِيْلَ الْكِتٰبَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾
وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا
إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا
بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾
ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ

से सख़्त तर अज़ाब है।

रूकूअ २

१२. अल्लाह है जिस ने तुम्हारे बस में दरिया कर दिया कि उसमें उसके हुक्म से कश्तियाँ चलें और इस लिए कि उसका फ़ज़्ल तलाश करो और इस लिए कि हक़ मानो।

१३. और तुम्हारे लिए काम में लगाए जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में अपने हुक्म से बेशक इसमें निशानियाँ है सोचने वालों के लिए।

१४. ईमानवालों से फ़रमाओ दरगुज़रें उन से जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नही रखते ताकि अल्लाह एक क़ौम को उसकी कमाई का बदला दे।

१५. जो भला काम करे तो अपने लिए और बुरा करे तो अपने बुरे को फिर अपने रब की तरफ़ फेरे जाओगे।

१६. और बेशक हम ने बनी इसराईल को किताब और हुकूमत और नुबूव्वत अता फ़रमाई और हम ने उन्हें सुथरी रोज़ियाँ दी और उन्हें उनके ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी।

१७. और हम ने उन्हें उस काम की रौशन दलीलें दी तो उन्हो ने इख़्तिलाफ़ न किया मगर बाद इसके कि इल्म उनके पास आचुका आपस के हसद से बेशक तुम्हारा रब क़यामत के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते है।

१८. फिर हम ने उस काम के उम्दा रास्ते पर तुम्हें किया तो उसी राह पर

چलो और नादानों की ख़्वाहिशों का साथ न दो।
१९. बेशक वो अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हें कुछ काम न देंगे और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के दोस्त हैं और डर वालों का दोस्त अल्लाह।
२०. ये लोगों की आँखें खोलना है और ईमान वालों के लिए हिदायत व रहमत।
२१. क्या जिन्होंने बुराईयों का इरतिकाब किया ये समझते हैं कि हम उन्हें उन जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किए कि इनकी उनकी ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं।
२२. और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ बनाया और इस लिए कि हर जान अपने किए का बदला पाए और उन पर ज़ुल्म न होगा।
२३. भला देखो तो वो जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा ठहरा लिया और अल्लाह ने उसे बा वस्फ़े इल्म के गुमराह किया और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखों पर पर्दा डाला तो अल्लाह के बाद उसे कौन राह दिखाए तो क्या तुम ध्यान नहीं करते।
२४. और वो बोले वो तो नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी मरते हैं और जीते हैं और हमें हिलाक

فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾
اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ
وَ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ
وَ اللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾
هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّ
رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾
اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ
اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ
ع سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾
وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ
وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾
اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَ
اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى
سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ
غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ
اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا

नहीं करता मगर ज़माना और उन्हें उस का इल्म नहीं वो तो निरे गुमान दौड़ाते हैं।

२५. और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाएं तो बस उनकी हुज्जत यही होती है कि कहते हैं हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

२६. तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें जिलाता है फिर तुम को मारेगा फिर तुम सब को इकट्ठा करेगा क़यामत के दिन जिस में कोई शक नहीं लेकिन बहुत आदमी नहीं जानते।

रुकूअ ४

२७. और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और जिस दिन क़यामत क़ाएम होगी बातिल वालों की उस दिन हार है।

२८. और तुम हर गिरोह को देखो गे ज़ानू के बल गिरे हुए हर गिरोह अपने ना-मए-अअ्माल की तरफ़ बुलाया जाएगा आज तुम्हें तुम्हारे किए का बदला दिया जाएगा।

२९. हमारा ये नविश्ता तुम पर हक़ बोलता है हम लिखते रहे थे जो तुम ने किया।

३०. तो वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनका रब उन्हें अपनी रह़मत में लेगा यही खुली कामयाबी है।

३१. और जो काफ़िर हुए उन से

نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ
وَمَا لَهُمْ بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ
إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ مَا كَانَ
حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتُوا بِآبَائِنَا
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾
قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ
يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ
ع وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾
وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَ
يَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ
الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾
وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ أُمَّةٍ
تُدْعَىٰ إِلَىٰ كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾
هَٰذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّا
كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾
فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿٣٠﴾

फ़रमाया जाएगा क्या न था मेरी आयतें तुम पर पढ़ी जाती थी तो तुम तकब्बुर करते थे और तुम मुजरिम लोग थे।

३२. और जब कहा जाता बेशक अल्लाह का वअ्दा सच्चा है और कियामत में शक नहीं तुम कहते हम नहीं जानते क़ियामत क्या चीज़ है हमें तो यूँही कुछ गुमान सा होता है और हमें यक़ीन नहीं।

३३. और उन पर खुल गई उनके कामों की बुराईयाँ और उन्हें घेर लिया उस अ़ज़ाब ने जिसकी हँसी बनाते थे।

३४. और फ़रमाया जाएगा आज हम तुम्हें छोड़ देंगे जैसे तुम अपने इस दिन के मिलने को भूले हुए थे और तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं।

३५. ये इस लिए कि तुम ने अल्लाह की आयतों को ठट्ठा (मज़ाक़) बनाया और दुनिया कि ज़िन्दगी ने तुम्हें फ़रेब दिया तो आज न वो आग से निकाले जाएँ और न उनसे कोई मनाना चाहे।

३६. तो अल्लाह ही के लिए सब खूबियाँ हैं आसमानों का रब और ज़मीन का रब और सारे जहान का रब।

३७. और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي
تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنتُمْ
قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٣١﴾
وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ
لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُم مَّا نَدْرِي مَا
السَّاعَةُ إِن نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ
بِمُسْتَيْقِنِينَ ﴿٣٢﴾
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ
بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٣﴾
وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ
يَوْمِكُمْ هَٰذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم
مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٤﴾
ذَٰلِكُم بِأَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا
وَغَرَّتْكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فَالْيَوْمَ
لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٣٥﴾
فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَرَبِّ
الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٦﴾
وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
ع وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣٧﴾

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ①

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ
الْحَكِيْمِ ②

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا
مُعْرِضُوْنَ ③

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ
اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۭ اِيْتُوْنِيْ
بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ
عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ④

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَاۗىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ⑤

وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَاۗءً وَّ
كَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ⑥

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ

सूरए अहक़ाफ़

मक्की है और इसमें पैंतीस आयतें और चार रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

२. ये किताब उतारना है अल्लाह इज़्ज़त-ो हिकमत वाले की तरफ़ से।

३. हम ने न बनाए आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान है मगर हक़ के साथ और एक मुक़र्रर मिआद पर और काफ़िर उस चीज़ से कि डराए गए मुँह फेरे है।

४. तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वो जो तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो मुझे दिखाओ उन्हों ने ज़मीन का कौन सा ज़र्रा बनाया या आसमान मे उनका कोई हिस्सा है मेरे पास लाओ इससे पहली कोई किताब या कुछ बचा खुचा इल्म अगर तुम सच्चे हो।

५. और उससे बढ़ कर गुमराह कौन जो अल्लाह के सिवा ऐसो को पूजे जो क़ियामत तक उसकी न सुने और उन्हे उनकी पूजा की ख़बर तक नही।

६. और जब लोगों का हश्र होगा वो उनके दुश्मन होंगे और उन से मुन्किर हो जाएंगे।

७. और जब उन पर पढ़ी जाएं

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ
فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا هُوَ
اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ كَفٰى
بِهٖ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٨
قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَ
مَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ
اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا
اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٩
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ
وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ
وَاسْتَكْبَرْتُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي
ع الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ وَ
اِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ
اِفْكٌ قَدِيْمٌ ۝١١

हमारी रौशन आयते तो काफ़िर अपने पास आए हुए हक़ को कहते है ये खुला जादू है।

८. क्या कहते है उन्होने उसे जी से बनाया तुम फ़रमाओ अगर मै ने उसे जी से बना लिया होगा तो तुम अल्लाह के सामने मेरा कुछ इख़्तियार नही रखते वो खूब जानता है जिन बातो मे तुम मशगूल हो और वो काफी है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह और वही बख़्शने वाला मेहरबान है।

९. तुम फ़रमाओ मै कोई अनोखा रसूल नही और मै नही जानता मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या मै तो उसी का ताबेअ हूं जो मुझे 'वही' होती है और मै नही मगर साफ़ डर सुनाने वाला।

१०. तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर वो कुरआन अल्लाह के पास से हो और तुम ने उसका इन्कार किया और बनी इसराईल का एक गवाह उस पर गवाही दे चुका तो वो ईमान लाया और तुम ने तकब्बुर किया बेशक अल्लाह राह नही देता ज़ालिमो को।

रुकूअ २

११. और काफ़िरो ने मुसलमानो को कहा अगर उसमे कुछ भलाई होती तो ये हम से आगे उस तक न पहुंच जाते और जब उन्हे उसकी हिदायत न हुई तो अब कहेंगे कि ये पुराना बोहतान है।

१२. और इससे पहले मूसा की किताब है पेशवा और मेहरबानी और ये किताब है तसदीक़ फ़रमाती अरबी ज़ुबान में कि ज़ालिमों को डर सुनाए और नेकों को बिशारत।

१३. बेशक वो जिन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर साबित क़दम रहे न उनपर ख़ौफ़ न उनको ग़म।

१४. वो जन्नत वाले है हमेशा उसमें रहेंगे उनके अअ्माल का इनआम।

१५. और हम ने आदमी को हुक्म किया कि अपने माँ बाप से भलाई करे उसकी माँ ने उसे पेट में रखा तकलीफ़ से और जनी उसको तकलीफ़ से और उसे उठाए फिरना और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में है यहाँ तक कि जब अपने ज़ोर को पहुँचा और चालीस बरस का हुआ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे दिल में डाल कि मै तेरी नेअ्मत का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर की और मैं वो काम करूँ जो तुझे पसन्द आए और मेरे लिए मेरी औलाद में सलाह (नेकी) रख मै तेरी तरफ़ रूजूअ लाया और मैं मुसलमान हूँ।

१६. ये हैं वो जिन की नेकियाँ हम कुबूल फ़रमाएँगे और उनकी तक़्सीरों

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ
وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا
لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى
لِلْمُحْسِنِيْنَ ۚ ﴿١٢﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ
اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ۚ ﴿١٣﴾
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾
وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ
حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ
وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى
اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ
قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ
الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ
وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ
لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَ
اِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٥﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ
مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ

أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِن قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾

से दरगुज़र फ़रमाएँगे जन्नत वालो ने सच्चा वअ्दा जो उन्हें दिया जाता था।

१७. और वो जिस ने अपने माँ बाप से कहा उफ़ तुम से दिल पक गया क्या मुझे ये वअ्दा देते हो कि फिर ज़िन्दा किया जाऊँगा हालाँकि मुझ से पहले संगतें गुज़र चुकी और वो दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते है तेरी ख़राबी हो ईमान ला बेशक अल्लाह का वअ्दा सच्चा है तो कहता है ये तो नही मगर अगलों की कहानियाँ।

१८. ये वो है जिन पर बात साबित हो चुकी उन गिरोहो में जो उन से पहले गुज़रे जिन्न और आदमी बेशक वो ज़ियाँकार थे.

१९. और हर एक के लिए अपने अपने अ़मल के दर्जे है और ताकि अल्लाह उनके काम उन्हें पूरे भर दे।

२०. और उन पर ज़ुल्म न होगा और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किए जाएँगे उनसे फ़रमाया जाएगा तुम अपने हिस्से की पाक चीज़े अपनी दुनिया ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हे बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा सज़ा उसकी कि तुम ज़मीन में ना हक़ तकब्बुर करते थे और सज़ा उसकी कि हुक्म अ़दूली करते थे।

रुकूअ ३

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢١﴾

२१. और याद करो आद के हम क़ौम को जब उसने उनको सर ज़मीने अहक़ाफ़ में डराया और बेशक उससे पहले डर सुनाने वाले गुज़र चुके और उसके बाद आए कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बेशक मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब का अन्देशा है।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٢﴾

२२. बोले क्या तुम इस लिए आए कि हमें हमारे मअबूदों से फेर दो तो हम पर लाओ जिसका हमें वअ्दा देते हो अगर तुम सच्चे हो।

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾

२३. उसने फ़रमाया उसकी ख़बर तो अल्लाह ही के पास है मैं तो तुम्हें अपने रब के पयाम पहुँचाता हूँ हाँ मेरी दानिस्त में तुम निरे जाहिल लोग हो।

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُم بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

२४. फिर जब उन्हों ने अज़ाब को देखा बादल की तरह आसमान के किनारे में फैला हुआ उनके वादियों की तरफ़ आता और बोले ये बादल है कि हम पर बरसेगा बल्कि ये तो वो है जिसकी तुम जल्दी मचाते थे एक आँधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब।

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَاكِنُهُمْ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾

२५. हर चीज़ को तबाह कर डालती है अपने रब के हुक्म से तो सुबह रह गए कि नज़र न आते थे मगर उनके सूने मकान हम ऐसी ही सज़ा देते है मुजरिमों को।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاهُمْ فِيمَا إِن مَّكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا

२६. और बेशक हम ने उन्हें वो मक़दूर दिए थे जो तुम को न दिए और उन के लिए कान और आँख

وَّاَفْـِٕدَةً ۫ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ
وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ
شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا یَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰیٰتِ
اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
ع یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۲۶﴾

दिल बनाए तो उन के कान और आँखें और दिल कुछ काम न आए जब कि वो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और उन्हें घेर लिया उस अज़ाब ने जिसकी हँसी बनाते थे।

रुकूअ ४

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ
مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰیٰتِ لَعَلَّهُمْ
یَرْجِعُوْنَ ﴿۲۷﴾

२७. और बेशक हम ने हिलाक कर दीं तुम्हारे आस पास बस्तियाँ और तरह तरह की निशानियाँ लाए कि वो बाज़ आएँ।

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ
ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَ
مَا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۲۸﴾

२८. तो क्यों न मदद कि उनकी जिन को उन्हों ने अल्लाह के सिवा कुर्ब हासिल करने को खुदा ठहरा रखा था बल्कि वो उन से गुम गए और ये उनका बोह्तान-ो इफ़्तिरा है।

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَیْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ
یَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ
قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِیَ وَلَّوْا
اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِیْنَ ﴿۲۹﴾

२९. और जब कि हम ने तुम्हारी तरफ़ कितने जिन्न फेरे कान लगाकर कुरआॅन सुनते फिर जब वहाँ हाज़िर हुए आपस में बोले ख़ामोश रहो फिर जब पढ़ना हो चुका अपनी क़ौम की तरफ़ डर सुनाते पलटे।

قَالُوْا یٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا
اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا
بَیْنَ یَدَیْهِ یَهْدِیْٓ اِلَى الْحَقِّ
وَاِلٰى طَرِیْقٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۳۰﴾

३०. बोले ऐ हमारी क़ौम हम ने एक किताब सुनी कि मूसा के बाद उतारी गई अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हक़ और सीधी राह दिखाती।

३१. ऐ हमारी क़ौम अल्लाह के मुनादी की बात मानो और उस पर ईमान लाओ कि वो तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे और तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले।

३२. और जो अल्लाह के मुनादी की बात न माने वो ज़मीन में क़ाबू से निकल कर जाने वाला नही और अल्लाह के सामने उसका कोई मददगार नहीं वो खुली गुमराही में हैं।

३३. क्या उन्होंने न जाना कि वो अल्लाह जिस ने आसमान और ज़मीन बनाए और उनके बनाने में न थका क़ादिर है कि मुर्दे जिलाए क्यों नही बेशक वो सब कुछ कर सकता है।

३४. और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किए जाएंगे उन से फ़रमाया जाएगा क्या ये हक़ नही कहेंगे क्यों नहीं हमारे रब कि क़सम फ़रमाया जाएगा तो अ़ज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का।

३५. तो तुम सब्र करो जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया और उनके लिए जलदी न करो गोया वो जिस दिन देखेंगे जो उन्हे वअ़्दा दिया जाता है दुनिया में न ठहरे थे मगर दिन की एक घड़ी भर ये पहुँचाना है तो कौन

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ
يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ
مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾
وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ
بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ
دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ
بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ
الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى
النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا
بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾
فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ
مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ
لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ

हिलाक किए जाएँगे मगर बे हुक्म लोग।

सूरए मुहम्मद

मदनी है इसमें अढ़तीस आयतें और चार रूकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रूकूअ १

१. जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका अल्लाह ने उनके अमल बरबाद किए।

२. और जो ईमान लाए और अच्छे काम किए और उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर उतारा गया और वही उनके रब के पास से हक़ है अल्लाह ने उनकी बुराईयाँ उतार दीं और उनकी हालतें सँवार दीं।

३. ये इस लिए कि काफ़िर बातिल के पैरो हुए और ईमान वालों ने हक़ की पैरवी की जो उनके रब की तरफ़ से है अल्लाह लोगों से उनके अहवाल यूँही बयान फ़रमाता है।

४. तो जब काफ़िरों से तुम्हारा सामना हो तो गरदनें मारना है यहाँ तक कि जब उन्हें खूब क़त्ल कर लो तो मज़बूत बाँधो फिर उसके बाद चाहे एहसान करके छोड़ दो चाहे फ़िदया ले लो यहाँ तक कि लड़ाई अपना बोझ रख दे बात ये है और अल्लाह चाहता तो आप ही उन से बदला लेता मगर इस लिए कि तुम में एक को दूसरे से

بَلٰغٌ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ
الْفٰسِقُوْنَ ۝٣٥

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٍ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝١
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ
اٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ
وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢
ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا
الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا
الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ
اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣
فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ
الرِّقَابِ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا
الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءً
حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۛ
ذٰلِكَ ۛ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ
مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ

जांचे और जो अल्लाह की राह में मारे गए अल्लाह हर गिज़ उनके अमल ज़ाएअ न फ़रमाए गा।

५. जल्द उन्हे राह देगा और उनका काम बना देगा।

६. और उन्हें जन्नत में ले जाएगा उन्हें उसकी पहचान करा दी है।

७. ऐ ईमान वालो अगर तुम दीने-खुदा की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा।

८. और जिन्हों ने कुफ़्र किया तो उन पर तबाही पड़े और अल्लाह उनके अअ्माल बरबाद करे।

९. ये इस लिए कि उन्हें नागवार हुआ जो अल्लाह ने उतारा तो अल्लाह ने उनका किया धरा अकारत किया।

१०. तो क्या उन्हो ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलो का कैसा अंजाम हुआ अल्लाह ने उन पर तबाही डाली और उन काफ़िरो के लिए भी वैसी कितनी ही है।

११. ये इस लिए कि मुसलमान का मौला अल्लाह है और काफ़िरों का कौई मौला नहीं।

रुकूअ २

१२. बेशक अल्लाह दाख़िल फ़रमाएगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किए बागों में जिन के नीचे नहरें रवाँ और काफ़िर बरतते है

بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾
سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾
وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ
يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾
وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ
أَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ
فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن
قَبْلِهِمْ ۚ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ
أَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا
وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿١١﴾
إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ

और खाते है जैसे चौपाए खाएँ और आग उनका ठिकाना है।

१३. और कितने ही शहर कि उस शहर से क़ुव्वत में ज़्यादा थे जिस ने तुम्हें तुम्हारे शहर से बाहर किया हम ने उन्हें हिलाक फ़रमाया तो उनका कोई मददगार नहीं।

१४. तो क्या जो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हो उस जैसा होगा जिसके बुरे अमल उसे भले दिखाए गए और वो अपने ख़्वाहिशों के पीछे चले।

१५. अहवाल उस जन्नत का जिसका वअ्दा परहेज़गारों से है उसमें ऐसी पानी की नहरें हैं जो कभी न बिगड़े और ऐसे दूध की नेहरें हैं जिसका मज़ा न बदला और ऐसी शराब की नहरें है जिसके पीने में लज़्ज़त है और ऐसी शहद की नेहरें हैं जो साफ़ किया गया और उनके लिए उसमें हर क़िस्म के फल हैं और अपने रब की मग़फ़िरत क्या ऐसे चैन वाले उनकी बराबर हो जाएँगे जिन्हें हमेशा आग में रहना और उन्हें खौलता पानी पिलाया जाए कि आँतों के टुकड़े टुकड़े कर दे।

१६. और उनमें से बअ्ज़ तुम्हारे इर्शाद सुनते हैं यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास से निकल कर जाएँ इल्म वालों से कहते हैं अभी उन्होंने क्या फ़रमाया ये है वो जिनके दिलो पर

الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿١٢﴾
وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً
مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ أَهْلَكْنَاهُمْ
فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾
أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهِ
كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا
أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٤﴾
مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ
فِيهَا أَنْهَارٌ مِّنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ
وَأَنْهَارٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ
وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ
وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى
وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ
وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ
خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا
فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ
إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا
لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ
آنِفًا أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ

अल्लाह ने मुहर कर दी और अपनी ख़्वाहिशों के ताबेअ हुए।

१७. और जिन्होंने राह पाई अल्लाह ने उनकी हिदायत और ज़्यादा फ़रमाई और उनकी परहेज़गारी उन्हें अता फ़रमाई।

१८. तो काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर क़यामत के कि उन पर अचानक आ जाए कि उसकी अलामतें तो आ ही चुकी हैं फिर जब वो आ जाएगी तो कहाँ वो और कहाँ उनका समझना।

१९. तो जान लो कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और ऐ महबूब अपने ख़ासों और आम मुसलमान मर्दों और औरतों के गुनाहों की मुआफ़ी माँगो और अल्लाह जानता है दिन को तुम्हारा फिरना और रात को तुम्हारा आराम लेना।

रुकूअ ३

२०. और मुसलमान कहते है कोई सूरत क्यों न उतारी गई फिर जब कोइ पुख़्ता सूरत उतारी गइ और उसमें जिहाद का हुक्म फ़रमाया गया तो तुम देखोगे उन्हें जिन के दिलों में बीमारी है कि तुम्हारी तरफ़ उसका देखना देखते हैं जिस पर मुरदनी छाई हो तो उनके हक़ में बेहतर ये था कि फ़रमाँबरदारी करते।

२१. और अच्छी बात कहते फिर जब हुक्म नातिक़ हो चुका तो अगर अल्लाह से सच्चे रहते तो उनका भला था।

२२. तो क्या तुम्हारे ये लच्छन नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो।

قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ
وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّ
اٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾
فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن
تَأْتِيَهُم بَغْتَةً ۖ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ
فَأَنّٰى لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾
فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ
ع وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾
وَيَقُولُ الَّذِينَ اٰمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ
سُورَةٌ ۚ فَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ
وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۙ رَأَيْتَ الَّذِينَ
فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ
نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ
فَأَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾
طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا
عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ
خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾
فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن تُفْسِدُوا
فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

२३. ये है वो लोग जिन पर अल्लाह ने लअनत की और उन्हें हक से बहरा कर दिया और उनकी आँखे फोड़ दी।

२४. तो क्या वो कुरआन को सोचते नहीं या बअ्ज़े दिलों पर उनके कुफ्ल लगे है।

२५. बेशक वो जो अपने पीछे पलट गए बाद इसके कि हिदायत उन पर खुल चुकी थी शैतान ने उन्हे फरेब दिया और उन्हें दुनिया में मुद्दतों रहने की उम्मीद दिलाई।

२६. ये इस लिए कि उन्हों ने कहा उन लोगों से जिन्हें अल्लाह का उतारा हुआ नागवार है एक काम में हम तुम्हारी मानेंगे और अल्लाह उनकी छुपी हुई जानता है।

२७. तो कैसा होगा जब फरिश्ते उनकी रूह कब्ज़ करेंगे उनके मुँह और उनकी पीठें मारते हुए।

२८. ये इस लिए कि वो ऐसी बात के ताबेअ हुए जिस में अल्लाह की नाराज़ी है और उसकी खुशी उन्हें गवारा न हुई तो उसने उनके अअ्माल अकारत कर दिए।

रुकूअ ४

२९. क्या जिन के दिलों में बीमारी है इस घमन्ड में है कि अल्लाह उनके छुपे बैर (दुश्मनी) ज़ाहिर न फ़रमाएगा।

३०. और अगर हम चाहें तो तुम्हें उनको दिखा दें कि तुम उनकी सूरत से पहचान लो और ज़रूर तुम उन्हें बात के उसलूब में पहचान लो गे और अल्लाह तुम्हारे अमल जानता है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ
وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾
أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ
قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾
إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم
مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى
الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا
نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ
الْأَمْرِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾
فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ
يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ
اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ
ع أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾
أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾
وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم
بِسِيمَاهُمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ
الْقَوْلِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾

३१. और ज़रूर हम तुम्हें जाँचेंगे यहाँ तक कि देख लें तुम्हारे जिहाद करनेवालों और साबिरों को और तुम्हारी ख़बरें आज़मालें।

३२. बेशक वो जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त की बाद इसके कि हिदायत उन पर ज़ाहिर हो चुकी थी वो हरगिज़ अल्लाह को कुछ नुक़्सान न पहुँचाएँगे और बहुत जल्द अल्लाह उनका किया धरा अकारत कर देगा।

३३. ऐ ईमान वालों अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और अपने अमल बातिल न करो।

३४. बेशक जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका फिर काफ़िर ही मर गए तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें न बख़्शे गा।

३५. तो तुम सुसती न करो और आप सुलह की तरफ़ न बुलाओ और तुम ही ग़ालिब आओगे और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वो हरगिज़ तुम्हारे अअ्माल में तुम्हे नुक़्सान न देगा।

३६. दुनिया की ज़िन्दगी तो यही खेल कूद है और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो वो तुम को तुम्हारे सवाब अता फ़रमाएगा और कुछ तुम से तुम्हारे माल न मांगेगा।

३७. अगर उन्हें तुम से तलब करे और ज़्यादा तलब करे तुम बुख़्ल करोगे और वो बुख़्ल तुम्हारे दिलों के मैल ज़ाहिर कर देगा।

३८. हाँ हाँ ये जो तुम हो बुलाए जाते हो कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो तो तुम में कोई बुख़्ल करता है

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ
وَالصّٰبِرِيْنَ وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ
شَيْـًٔا وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾
فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖ وَ
اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ
يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾
اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَ
اِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ
وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾
اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَ
يُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾
هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا

فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ

وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِ ۚ

وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ وَإِن

تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ

لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُم ﴿٣٨﴾

और जो बुख़्ल करे वो अपनी ही जान पर बुख़्ल करता है और अल्लाह बे नियाज़ है और तुम सब मोहताज और अगर तुम मुँह फेरो वो तो तुम्हारे सिवा और लोग बदल लेगा फिर वो तुम जैसे न हो गे।

سُورَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَأَرْبَعُ رُكُوعَاتٍ

सूरए फ़तह

मदनी है और इसमें उनतीस आयतें और चार रूकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴿١﴾

१. बेशक हम ने तुम्हारे लिए रौशन फ़तह फ़रमा दी।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ

وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ

وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٢﴾

२. ताकि अल्लाह तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के और पिछलों के और अपनी नेअ्मतें तुम पर तमाम करदे और तुम्हें सीधी राह दिखा दे।

وَيَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ﴿٣﴾

३. और अल्लाह तुम्हारी ज़बरदस्त मदद फ़रमाए।

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ

الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ

إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ

وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٤﴾

४. वही है जिसने ईमान वालों के दिलों में इत्मिनान उतारा ताकि उन्हें यक़ीन पर यक़ीन बढ़े और अल्लाह ही की मिल्क हैं तमाम लश्कर आसमानों और ज़मीन के और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ

وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٥﴾

५. ताकि ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें रवाँ हमेशा उनमें रहें और उनकी बुराईयाँ उनसे उतार दे और ये अल्लाह के यहाँ बड़ी कामयाबी है।

६. और अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों

और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को जो अल्लाह पर गुमान रखते हैं उन्ही पर है बुरी गर्दिश और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब फ़रमाया और उन्हें लअ़नत की और उनके लिए जहन्नम तैयार फ़रमाया और वो क्या ही बुरा अन्जाम।

७. और अल्लाह ही की मिल्क है आसमानों और ज़मीन के सब लश्कर और अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

८. बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर और खुशी और डर सुनाता।

९. ताकि ऐ लोगो तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की तअ़ज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो।

१०. वो जो तुम्हारी बैअ़त करते है वो तो अल्लाह ही से बैअ़त करते हैं उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है तो जिस ने अहद तोड़ा उसने अपने बड़े अहद को तोड़ा और जिस ने पूरा किया वो अहद जो उसने अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह उसे बड़ा सवाब देगा।

रुकूअ़ २

११. अब तुम से कहेंगे जो गंवार पीछे रह गए थे कि हमें हमारे माल और हमारे घर वालों ने जाने से मशगूल रखा अब हुज़ूर हमारी मग़फ़िरत चाहें अपनी ज़ुबानों से वो बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के सामने किसे तुम्हारा कुछ

وَّ يُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ
بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ
وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ
لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۶﴾
وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَ
كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۷﴾
اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّ
نَذِيْرًا ۙ ﴿۸﴾
لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ
وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۹﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ
اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ
نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَ
مَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ
فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۰﴾ ع
سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ
شَغَلَتْنَاۤ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ
يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ
قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ

इख़्तियार है अगर वो तुम्हारा बुरा चाहे या तुम्हारी भलाई का इरादा फ़रमाए बल्कि अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

१२. बल्कि तुम तो ये समझे हुए थे कि रसूल और मुसलमान हरगिज़ घरों को वापस न आएँगे और उसी को अपने दिलों में भला समझे हुए थे और तुम ने बुरा गुमान किया और तुम हिलाक होने वाले लोग थे.

१३. और जो ईमान न लाए अल्लाह और उसके रसूल पर तो बेशक हम ने काफ़िरों के लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है ।

१४. और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत जिसे चाहे बख़्शे जिसे चाहे अज़ाब करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

१५. अब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले जब तुम ग़नीमतें लेने चलो तो हमें भी अपने पीछे आने दो वो चाहते हैं अल्लाह का कलाम बदल दें तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम हमारे साथ न आओ अल्लाह ने पहले से यूँही फ़रमा दिया है तो अब कहेंगे बल्कि तुम हम से जलते हो बल्कि वो बात न समझते थे मगर थोड़ी।

१६. उन पीछे रह गए हुए गंवारों से फ़रमाओ अन्क़रीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की तरफ़ बुलाए

اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ
بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرًا ﴿۱۱﴾
بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّ
زُيِّنَ ذٰلِكَ فِىْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ
ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا ۢ بُوْرًا ﴿۱۲﴾
وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿۱۳﴾
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۴﴾
سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ
اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا
نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا
كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ
قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ
تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵﴾
قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ

سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ
تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۖ فَإِنْ
تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَ
إِن تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُم مِّن قَبْلُ
يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦﴾
لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى
الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ
حَرَجٌ ۗ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۖ وَمَن يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا
أَلِيمًا ﴿١٧﴾
لَّقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ
إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ
مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنزَلَ السَّكِينَةَ
عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾
وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۗ وَكَانَ
اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٩﴾
وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا
فَعَجَّلَ لَكُمْ هَٰذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ
عَنكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ

जाओगे कि उन से लड़ो या वो मुसलमान हो जाएं फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा और अगर फिर जाओगे जैसे पहले फिर गए तो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा।

१७. अन्धे पर तंगी नहीं और न लंगड़े पर मुआख़ज़ा और न बीमार पर मुआखज़ा और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें रवाँ और जो फिर जाएगा उसे दर्दनाक अज़ाब फ़रमाएगा।

रुकूअ ३

१८. बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जब वो उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअत करते थे तो अल्लाह ने जाना जो उनके दिलों में है तो उन पर इत्मिनान उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़तह का इनआम दिया।

१९. और बहुत सी ग़नीमतें जिन को लें और अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

२० और अल्लाह ने तुम से वअ़दा किया है बहुत सी ग़नीमतों का कि तुम लोगे तो तुम्हें ये जल्द अता फ़रमा दीं और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए और इस लिए कि ईमान वालों के लिए निशानी हो और तुम्हें सीधी राह

दिखावे

२१. और एक और जो तुम्हारे बल (बस) की न थी वो अल्लाह के क़ब्ज़े में है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

२२. और अगर काफ़िर तुम से लड़ें तो ज़रूर तुम्हारे मुक़ाबले से पीठ फेर दें गे फिर कोई हिमायती न पाएँगे न मददगार।

२३. अल्लाह का दस्तूर है कि पहले से चला आता है और हरगिज़ तुम अल्लाह का दस्तूर बदलता न पाओगे।

२४. और वही है जिस ने उनके हाथ तुम से रोक दिए और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिए वादिए मक्का में बाद उसके कि तुम्हे उन पर क़ाबू दे दिया था और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है।

२५. वो है जिन्हों ने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका और क़ुरबानी के जानवर रुके पड़े अपनी जगह पहुँचने से और अगर ये न होता कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरतें जिनकी तुम्हें ख़बर नहीं कहीं तुम उन्हें रौंद डालो तो तुम्हे उनकी तरफ़ से अन्जानी में कोई मकरूह पहुँचे तो हम तुम्हें उनकी क़िताल कि इजाज़त देते उनका ये बचाओ इस

وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٢٠﴾
وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ
أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢١﴾
وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا
الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَ
لَا نَصِيرًا ﴿٢٢﴾
سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلُ ۖ
وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾
وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ
وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِبَطْنِ مَكَّةَ مِن
بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ
اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٢٤﴾
هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا
أَن يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ
مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ
أَن تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُم مِّنْهُم
مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِّيُدْخِلَ اللَّهُ فِي
رَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا

लिए है कि अल्लाह अपनी रहमत में दाख़िल करे जिसे चाहे अगर वो जुदा हो जाते तो हम ज़रूर उनमें के काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब देते।

२६. जब कि काफ़िरों ने अपने दिलों में अड़ रखी वही ज़मानए जाहिलियत की अड़ (ज़िद) तो अल्लाह ने अपना इत्मिनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वो उसके ज़्यादा सज़ावार और उसके अहेल थे और अल्लाह सब कुछ जानता है।

रुकूअ ४

२७. बेशक अल्लाह ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे अगर अल्लाह चाहे अमन व आमान से अपने सरों के बाल मुडांते या तरश्वाते बेख़ौफ़ तो उसने जाना जो तुम्हें मअ्लूम नहीं तो उस से पहले एक नज़दीक आने वाली फ़तह रखी।

२८. वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे और अल्लाह काफ़ी है गवाह।

२९. मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और इनके साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल तू उन्हें देखेगा रूकूअ करते सज्दे में गिरते अल्लाह का फ़ज़्ल व रज़ा चाहते इनकी

لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾
اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ
الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ
اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى
وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ وَكَانَ
ع اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾
لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ
لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَاۗءَ
اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ
مُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ۭ فَعَلِمَ مَا لَمْ
تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ
فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾
هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى
وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ
كُلِّهٖ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾ ط
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ
اَشِدَّاۗءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ
تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا

अलामत इनके चेहरों में है सज्दों के निशान से ये इनकी सिफ़त तौरेत में है और इनकी सिफ़त इन्जील में है जैसे एक खेती उसने अपना पट्ठा निकाला फिर उसे ताक़त दी फिर दबीज़ हुई फिर अपनी साक़ पर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है ताकि उन से काफ़िरों के दिल जलें अल्लाह ने वअ्दा किया उन से जो उनमें ईमान और अच्छे कामों वाले है बख़्शिश और बड़े सवाब का।

सूरए हुजुरात

मदनी है इसमें अट्ठारह आयतें और दो रूकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. ऐ ईमान वालो अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह सुनता जानता है।

२. ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊँची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उनके हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अमल अकारत न हो जाएँ और तुम्हें ख़बर न हो।

३. बेशक वो जो अपनी आवाज़ें पस्त करते है रसूलुल्लाह के पास वो है जिनका दिल अल्लाह ने परहेज़गारी

مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ
وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ
مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۖۛ وَمَثَلُهُمْ فِي
الْاِنْجِيْلِ ۛ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ
فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى
سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ
الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً
وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ ع

سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانَ عَشْرَةَ اٰيَةً فِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ
يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ
فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ
بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ
تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٢﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ

के लिए परख लिया है उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है।	اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٣
४. बेशक वो जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बेअक़्ल हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٤
५. और अगर वो सब्र करते यहाँ तक कि तुम आप उनके पास तशरीफ़ लाते तो ये उनके लिए बेहतर था और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।	وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥
६. ऐ ईमान वालो अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ करलो कि कहीं किसी क़ौम को बेजाने ईज़ा न दे बैठो फिर अपने किए पर पछताते रह जाओ।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦
७. और जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल हैं बहुत मुआमलों में अगर ये तुम्हारी ख़ुशी करें तो तुम ज़रूर मशक़्क़त में पड़ो लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान प्यारा कर दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता कर दिया और कुफ़्र और हुक्म अदूली और नाफ़रमानी तुम्हें नागवार कर दी ऐसे ही लोग राह पर हैं।	وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۗ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧
८. अल्लाह का फ़ज़्ल और एहसान और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।	فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨
९. और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ें तो उनमें सुलह कराओ फिर अगर एक दूसरे पर ज़्यादती करे तो उस ज़्यादती वाले से लड़ो यहाँ तक कि वो अल्लाह के हुक्म	وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ

की तरफ़ पलट आए फिर अगर पलट आए तो इन्साफ़ के साथ उन में इसलाह कर दो और अ़द्ल करो बेशक अ़द्ल वाले अल्लाह को प्यारे हैं।

१०. मुसलमान मुसलमान भाई हैं तो अपने दो भाईयों में सुलह करो और अल्लाह से डरो कि तुम पर रह़मत हो।

रुकूअ २

११. ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों से हँसें अजब नहीं कि वो उन हँसने वालों से बेहतर हों और न औरतें औरतों से दूर नहीं कि वो उन हँसने वालियों से बेहतर हों और आपस में तअ़्ना न करो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबा न करें तो वही ज़ालिम हैं।

१२. ऐ ईमान वालों बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है और अ़ैब न ढूंडो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसंद रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो ये तुम्हें गवारा न होगा और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है।

१३. ऐ लोगों हम ने तुम्हें एक मर्द एक औ़रत से पैदा किया और तुम्हें

بَغَتْ إِحْدٰىهُمَا عَلَى الْأُخْرٰى فَقَاتِلُوا
الَّتِي تَبْغِي حَتّٰى تَفِيْٓءَ إِلٰٓى أَمْرِ
اللّٰهِ ۚ فَإِنْ فَآءَتْ فَأَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا
بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوْا ۖ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٩﴾
إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوْا بَيْنَ ع
أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٠﴾
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ
مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى أَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ
وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى أَنْ يَّكُنَّ
خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا أَنْفُسَكُمْ
وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ الِاسْمُ
الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْإِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ
فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١١﴾
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا
مِّنَ الظَّنِّ ۖ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ
وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ
بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَّأْكُلَ
لَحْمَ أَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ۚ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

शाख़ें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो बेशक अल्लाह के यहाँ तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो जो तुम मे ज़्यादा परहेज़गार है बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है।

१४. गँवार बोले हम ईमान लाए तुम फ़रमाओ तुम ईमान तो न लाए हाँ यूँ कहो कि हम मुतीअ़ हुए और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में कहाँ दाख़िल हुआ और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करोगे तो तुम्हारे किसी अ़मल का तुम्हें नुक़्सान न देगा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

१५. ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर शक न किया और अपनी जान और माल से अल्लाह की राह में जिहाद किया वही सच्चे हैं।

१६. तुम फ़रमाओ क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बताते हो और अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह सब कुछ जानता है।

१७. ऐ महबूब वो तुम पर एहसान जताते हैं कि मुसलमान हो गए तुम फ़रमाओ अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रखो बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ
ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ
قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ۚ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ
اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿١٣﴾
قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ۚ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا
وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ
الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۚ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ۚ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿١٥﴾
قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۚ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿١٦﴾
يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ۚ قُلْ
لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ
اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ

१८. बेशक अल्लाह जानता है आसमानों और ज़मीन के सब ग़ैब और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

सूरए क़ाफ़

मक्की है इसमें पैंतालीस आयतें और तीन रूकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

इज़्ज़त वाले क़ुरआन की क़सम।

२. बल्कि उन्हें इसका अचंबा हुआ कि उनके पास उन्हीं में का एक डर सुनानेवाला तशरीफ़ लाया तो काफ़िर बोले ये तो अजीब बात है।

३. क्या जब हम मर जाएँ और मिट्टी हो जाएंगे फिर जिएँगे ये पलटना दूर है।

४. हम जानते हैं जो कुछ ज़मीन उनमें से घटाती है और हमारे पास एक याद रखने वाली किताब है।

५. बल्कि उन्हों ने हक़ को झुटलाया जब वो उनके पास आया तो वो एक मुज़्तरिब बे सबात बात में हैं।

६. तो क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को न देखा हम ने उसे बनाया और संवारा और उसमें कहीं रख़ना नहीं।

७. और ज़मीन को हम ने फैलाया और उसमें लंगर डाले (भारी वज़न रखे) और उसमें हर बा रौनक जोड़ा उगाया।

८. सूझ और समझ हर रूजूअ

لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾
اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
ع وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾

سورة ق مكية وهي خمس واربعون اية وثلث ركوع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قٓ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ﴿١﴾
بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ
فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ
عَجِيْبٌ ﴿٢﴾
ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ذٰلِكَ رَجْعٌۢ
بَعِيْدٌ ﴿٣﴾
قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ
وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾
بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ
فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾
اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ
كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا
مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾
وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ

वाले बन्दे के लिए।

९. और हम ने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा तो उस से बाग़ उगाए और अनाज कि काटा जाता है।

१०. और खजूर के लम्बे दरख़्त जिनका पक्का गाभा।

११ बन्दों की रोज़ी के लिए और हम ने उससे मुर्दा शहर जिलाया यूँही क़बरों से तुम्हारा निकलना है।

१२. इन से पहले झुटलाया नूह की क़ौम और रस वालों और समूद।

१३. और आद और फ़िरऔन और लूत के हम क़ौमों।

१४. और बन वालों और तुब्बअ की क़ौम ने उनमें हर एक ने रसूलों को झुटलाया तो मेरे अज़ाब का वअ्दा साबित हो गया।

१५. तो क्या हम पहली बार बना कर थक गए बल्कि वो नए बनने से शुबह में है।

रुकूअ २

१६. और बेशक हम ने आदमी को पैदा किया और हम जानते है जो वसवसा उसका नफ़्स डालता है और हम दिल की रग से भी उससे ज़्यादा नज़दीक हैं।

१७. जब उससे लेते है दो लेने वाले एक दाहिने बैठा और बाएँ।

१८. कोई बात वो ज़ुबान से नही निकालता कि उसके पास एक मुहाफ़िज़

كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ﴿٧﴾
تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ﴿٨﴾
وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَٰرَكًا
فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ جَنَّٰتٍ وَحَبَّ
الْحَصِيدِ ﴿٩﴾
وَالنَّخْلَ بَاسِقَٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ﴿١٠﴾
رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِۦ بَلْدَةً
مَّيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ الْخُرُوجُ ﴿١١﴾
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَٰبُ
الرَّسِّ وَثَمُودُ ﴿١٢﴾
وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَٰنُ لُوطٍ ﴿١٣﴾
وَأَصْحَٰبُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ
كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ﴿١٤﴾
أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ
فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٥﴾ ع
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَٰنَ وَنَعْلَمُ مَا
تُوَسْوِسُ بِهِۦ نَفْسُهُۥ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ
إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾
إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ
وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾

तैयार न बैठा हो।
१९. और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ ये है जिस से तू भागता था।
२०. और सूर फूंका गया ये है वअ़्द-ए- अ़ज़ाब का दिन।
२१. और हर जान यूँ हाज़िर हुई कि उसके साथ एक हांकने वाला और एक गवाह।
२२. बेशक तू इससे ग़फ़्लत में था तो हम ने तुझ पर से पर्दा उठाया तो आज तेरी निगाह तेज़ है।
२३. और उसका हम नशीन फ़रिश्ता बोला ये है जो मेरे पास हाज़िर है।
२४. हुक्म होगा तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर बड़े नाशुकरे हट धरम को।
२५. जो भलाई से बहुत रोकने वाला हद से बढ़ने वाला शक करने वाला।
२६. जिस ने अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद ठहराया तुम दोनों उसे सख़्त अ़ज़ाब में डालो।
२७. उसके साथी शैतान ने कहा ऐ हमारे रब मैं ने उसे सरकश न किया हाँ ये आप ही दूर की गुमराही में था।
२८. फ़रमाएगा मेरे पास न झगड़ो मैं तुम्हें पहले ही अ़ज़ाब का डर सुना चुका था।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ
عَتِيدٌ ﴿١٨﴾
وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ
ذَٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ﴿١٩﴾
وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَٰلِكَ يَوْمُ
الْوَعِيدِ ﴿٢٠﴾
وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَهَا سَائِقٌ
وَشَهِيدٌ ﴿٢١﴾
لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِنْ هَٰذَا
فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ
الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٢﴾
وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ
عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾
أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾
مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُرِيبٍ ﴿٢٥﴾
الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ
فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾
قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَ
لَٰكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾
قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ

२९. मेरे यहाँ बात बदलती नहीं और न मैं बन्दों पर ज़ुल्म करूँ।

रुकूअ ३

३० जिस दिन हम जहन्नम से फ़रमाएंगे क्या तू भर गई वो अर्ज़ करेगी कुछ और ज़्यादा है।

३१. और पास लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के कि उनसे दूर न होगी।

३२. ये है वो जिसका तुम वअ्दा दिए जाते हो हर रूजूअ लाने वाले निगहदाश्त वाले के लिए।

३३. जो रह़मान से बे देखे डरता है और रूजूअ करता हुआ दिल लाया। उनसे फ़रमाया जाएगा जन्नत में जाओ सलामती के साथ ये हमेश्गी का दिन है।

३५. उन के लिए है उसमें जो चाहें और हमारे पास उससे भी ज़्यादा है।

३६. और उन से पहले हम ने कितनी संगतें (क़ौमें) हिलाक फ़रमा दीं कि गिरफ़्त में उनसे सख़्त थीं तो शहरों में काविशें कीं, है कहीं भागने की जगह।

३७. बेशक उसमें नसीहत है उसके लिए जो दिल रखता हो या कान लगाए और मुतवज्जह हो।

३८. और बेशक हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है छः दिन में बनाया और तकान हमारे पास न आई।

قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ۝٢٨
مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا
بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝٢٩ ع
يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ
وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝٣٠
وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ
بَعِيْدٍ ۝٣١
هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ
حَفِيْظٍ ۝٣٢
مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ
بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۝٣٣
ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ۝٣٤
لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا
مَزِيْدٌ ۝٣٥
وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ
هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا
فِى الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝٣٦
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ
قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ۝٣٧
وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

३९. तो उनकी बातों पर सब्र करो और अपने रब की तअ्रीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और डूबने से पहले।

४०. और कुछ रात गए उसकी तस्बीही करो और नमाज़ों के बाद।

४१. और कान लगा कर सुनो जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा एक पास जगह से।

४२. जिस दिन चिंघाड़ सुनेंगे हक़ के साथ ये दिन है क़बरों से बाहर आने का।

४३. बेशक हम जिलाएं और हम मारें और हमारी तरफ़ फिरना है।

४४. जिस दिन ज़मीन उन से फटेगा तो जल्दी करते हुए निकलें गे ये हश्र है हम को आसान।

४५. हम ख़ूब जान रहे है जो वो कह रहे है और कुछ तुम उन पर जब्र करनेवाले नहीं तो क़ुरआन से नसीहत करो उसे जो मेरी धमकी से डरे।

सूरए ज़ारियात

मक्की है और इसमें साठ आयतें और तीन रूकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. क़सम उनकी जो बिखेर कर उड़ाने वालियाँ।

२. फिर बोझ उठाने वालियाँ।

३. फिर नर्म चलने वालियाँ।

وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۖ وَمَا
مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ٣٨
فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَ
قَبْلَ الْغُرُوبِ ٣٩
وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ٤٠
وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن
مَّكَانٍ قَرِيبٍ ٤١
يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ
يَوْمُ الْخُرُوجِ ٤٢
إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا
الْمَصِيرُ ٤٣
يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ
ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ٤٤
نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ۖ وَمَا أَنتَ
عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ
مَن يَخَافُ وَعِيدِ ٤٥

سُورَةُ الذَّارِيَاتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتُّونَ آيَةً وَثَلَاثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالذَّارِيَاتِ ذَرْوًا ١

४. फिर हुक्म से बाँटने वालियाँ।
५. बेशक जिस बात का तुम्हें वअ्दा दिया जाता है ज़रूर सच है।
६. और बेशक इन्साफ़ ज़रूर होना।
७. आराइश वाले आसमान की क़सम।
८. तुम मुख़्तलिफ़ बात में हो।
९. इस क़ुरआन से वही औंधा किया जाता है जिसकी क़िस्मत ही में औंधाया जाना हो।
१०. मारे जाएं दिल से तराशने वाले।
११. जो नशे में भूले हुए हैं।
१२. पूछते हैं इन्साफ़ का दिन कब होगा।
१३. उस दिन होगा जिस दिन वो आग पर तपाए जाएँ गे।
१४. और फ़रमाया जाएगा चखो अपना तपना ये है वो जिसकी तुम्हे जलदी थी।
१५. बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में है।
१६. अपने रब की अताएं लेते हुए बेशक वो इस से पहले नेकोकार थे।
१७. वो रात में कम सोया करते।
१८. और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।
१९. और उनके मालों में हक़ था

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝٢
فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۝٣
فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۝٤
اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۝٥
وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ۝٦
وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝٧
اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝٨
يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ۝٩
قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۝١٠
الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۝١١
يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٢
يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ۝١٣
ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ۚ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ
بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝١٤
اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝١٥
اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ اِنَّهُمْ
كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ۝١٦
كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝١٧
وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝١٨

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾
فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾
فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ﴿٤﴾
اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾
وَّ اِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾
وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿٧﴾
اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿٨﴾
يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ﴿٩﴾
قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿١٠﴾
الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿١١﴾
يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٢﴾
يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿١٣﴾
ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ
بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٤﴾
اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٥﴾
اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ اِنَّهُمْ
كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ﴿١٦﴾
كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾
وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿١٨﴾

४. फिर हुक्म से बाँटने वालियाँ।

५. बेशक जिस बात का तुम्हें वअ्दा दिया जाता है ज़रूर सच है।

६. और बेशक इन्साफ़ ज़रूर होना।

७. आराइश वाले आसमान की क़सम।

८. तुम मुख़्तलिफ़ बात में हो।

९. इस क़ुरआॅन से वही औंधा किया जाता है जिसकी क़िसमत ही में औंधाया जाना हो।

१०. मारे जाएं दिल से तराश्ने वाले।

११. जो नशे में भूले हुए हैं।

१२. पूछते हैं इन्साफ़ का दिन कब होगा।

१३. उस दिन होगा जिस दिन वो आग पर तपाए जाएँ गे।

१४. और फ़रमाया जाएगा चखो अपना तपना ये है वो जिसकी तुम्हें जलदी थी।

१५. बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में है।

१६. अपने रब की अताएं लेते हुए बेशक वो इस से पहले नेकोकार थे।

१७. वो रात में कम सोया करते।

१८. और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।

१९. और उनके मालों में हक़ था

وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ
وَالْمَحْرُوْمِ (١٩)
وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ (٢٠)
وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ (٢١)
وَفِي السَّمَاۗءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ (٢٢)
فَوَرَبِّ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ
مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ (٢٣)
هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ
الْمُكْرَمِيْنَ (٢٤)
اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ
سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ (٢٥)
فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَاۗءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ (٢٦)
فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ (٢٧)
فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا
لَا تَخَفْ ۭ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ (٢٨)
فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ
وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ (٢٩)
قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ۭ اِنَّهٗ
هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ (٣٠)

मँगता और बे नसीब का।

२०. और ज़मीन में निशानियाँ हैं यक़ीन वालों को।

२१. और खुद तुम में तो क्या तुम्हें सूझता नहीं।

२२. और आसमानों में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम्हें वअ़्दा दिया जाता है।

२३. तो आसमान और ज़मीन के रब की क़सम बेशक ये क़ुरऑन हक़ है वैसी ही ज़ुबान में जो तुम बोलते हो।

रुकूअ २

२४. ऐ महबूब क्या तुम्हारे पास इब्राहीम के मोअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर आई।

२५. जब वो उसके पास आकर बोले सलाम कहा सलाम ना शनासा लोग हैं।

२६. फिर अपने घर गया तो एक फ़र्बा बछड़ा ले आया।

२७. फिर उसे उनके पास रखा कहा क्या तुम खाते नही।

२८. तो अपने जी में उनसे डरने लगा वो बोले डरिए नहीं और उसे एक इल्म वाले लड़के की बिशारत दी।

२९. उसकी बीबी चिल्लाती आई फिर अपना माथा ठोंका और बोली क्या बुढ़िया बांझ।

३०. उन्हों ने कहा तुम्हारे रब ने यूँही फ़रमा दिया है और वही हकीम दाना है।

३१. इब्राहीम ने फ़रमाया तो ऐ फ़रिश्तो तुम किस काम से आए।

३२. बोले हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं।

३३. कि उन पर गारे के बनाए हुए पत्थर छोड़ें।

३४. जो तुम्हारे रब के पास हद से बढ़ने वालों के लिए निशान किए रखे हैं।

३५. तो हम ने उस शहर में जो ईमान वाले थे निकाल लिए।

३६. तो हम ने वहाँ एक ही घर मुसलमान पाया।

३७. और हम ने उसमें निशानी बाक़ी रखी उनके लिए जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं।

३८. और मूसा में जब हम ने उसे रौशन सनद ले कर फ़िरऔन के पास भेजा।

३९. तो अपने लश्कर समेत फिर गया और बोला जादूगर है या दीवाना।

४०. तो हम ने उसे और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में डाल दिया इस हाल में कि वो अपने आप को मलामत कर रहा था।

४१. और आद में जब हम ने उन पर खुश्क आँधी भेजी।

४२. जिस चीज़ पर गुज़रती उसे गली हुई चीज़ की तरह कर छोडती।

४३. और समूद में जब उन से

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾
قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾
لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾
مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾
فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾
فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾
وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ
الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾
وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٣٨﴾
فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾
فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي
الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾
وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ
الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾
مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا
جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾
وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا

फ़रमाया गया एक वक़्त तक बरत लो।

४४. तो उन्हों ने अपने रब के हुक्म से सरकशी की तो उनकी आँखों के सामने उन्हें कड़क ने आ लिया।

४५. तो वो न खड़े हो सके और न वो बदला ले सकते थे।

४६. और उन से पहले क़ौमे-नूह को हिलाक फ़रमाया बेशक वो फ़ासिक़ लोग थे।

रुकूअ ३

४७. और आसमान को हम ने हाथों से बनाया और बेशक हम वुसअत देने वाले है।

४८. और ज़मीन को हम ने फ़र्श किया तो हम क्या ही अच्छे बिछाने वाले।

४९. और हम ने हर चीज़ के दो जोड़ बनाए कि तुम ध्यान करो।

५०. तो अल्लाह की तरफ़ भागो बेशक मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूँ।

५१. और अल्लाह के साथ और मअबूद न ठहराओ बेशक मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूँ।

५२. यूँ ही जब इन से अगलों के पास कोई रसूल तशरीफ़ लाया तो यही बोले कि जादूगर है या दीवाना।

५३. क्या आपस में एक दूसरे को ये बात कह मरे हैं बल्कि वो सरकश लोग है।

५४. तो ऐ महबूब तुम उन से मुँह फेर लो तो तुम पर कुछ इल्ज़ाम नही।

حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾
فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ
الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾
فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا
مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾
وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا
قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾
وَالسَّمَاۗءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾
وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾
وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾
فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾
وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّىْ
لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥١﴾
كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ
رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٥٢﴾
اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾
فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾
وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝٥٦
مَا أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ
أَن يُطْعِمُونِ ۝٥٧
إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۝٥٨
فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ ذَنُوبِ
أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ۝٥٩
فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن يَوْمِهِمُ
الَّذِي يُوعَدُونَ ۝٦٠

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالطُّورِ ۝١
وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ۝٢
فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ ۝٣
وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝٤
وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۝٥
وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝٦
إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٧
مَّا لَهُ مِن دَافِعٍ ۝٨
يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝٩
وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١٠

५५. और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाएदा देता है।

५६. और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिए बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

५७. मैं उन से कुछ रिज़्क़ नहीं माँगता और न ये चाहता हूँ कि वो मुझे खाना दें।

५८. बेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला क़ूव्वत वाला क़ुदरत वाला है।

५९. तो बेशक इन ज़ालिमों के लिए अज़ाब की एक बारी है जैसे इनके साथ वालों के लिए एक बारी थी तो मुझ से जलदी न करें।

६०. तो काफ़िरों की ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका वअ्दा दिए जाते हैं।

सूरए तूर

मक्की है और इसमें उनचास आयतें और दो रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. तूर की क़सम।

२. और उस नविश्ता की।

३. जो खुले दफ़्तर में लिखा है।

४. और बैते-मअ्मूर।

५. और बुलन्द छत।

६. और सुलगाए हुए समन्दर की।

७. बेशक तेरे रब का अज़ाब ज़रूर होना है।

८. उसे कोई टालने वाला नहीं।

९. जिस दिन आसमान हिलना सा हिलना हिलेंगे।

१०. और पहाड़ चलना सा चलना चलेंगे।

११. तो उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है।

१२. वो जो मश्ग़ले में खेल रहे हैं।

१३. जिस दिन जहन्नम की तरफ़ धक्का दे कर ढकेले जाएँगे।

१४. ये है वो आग जिसे तुम झुटलाते थे।

१५. तो क्या ये जादू है या तुम्हें सूझता नहीं।

१६. उस में जाओ अब चाहे सब्र करो या न करो सब तुम पर एक सा है तुम्हें उसी का बदला जो तुम करते थे।

१७. बेशक परहेज़गार बाग़ों और चैन में हैं।

१८. अपने रब के देन पर शाद शाद और उन्हें उनके रब ने आग के अज़ाब से बचा लिया।

१९. खाओ और पियो खुशगवारी से सिला अपने अअ्माल का।

२०. तख़्तों पर तकिया लगाए जो क़तार लगा कर बिछे हैं और हम ने उन्हें ब्याह दिया बड़ी आँखों वाली हूरों से।

२१. और जो ईमान लाए और उनकी अवलाद ने ईमान के साथ उनकी पैरवी की हम ने उनकी अवलाद उनसे मिला दी और उनके अमल में उन्हें कुछ कमी न दी सब आदमी अपने किए में गिरफ़्तार हैं।

२२. और हम ने उनकी मदद फ़रमाई

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ⑪
الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ⑫
يَوْمَ يُدَعُّوْنَ إِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ⑬
هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا
تُكَذِّبُوْنَ ⑭
أَفَسِحْرٌ هٰذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ⑮
اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْا أَوْ لَا تَصْبِرُوْا
سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ⑯
إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ⑰
فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقٰهُمْ
رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ⑱
كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ⑲
مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ وَزَوَّجْنٰهُمْ
بِحُوْرٍ عِيْنٍ ⑳
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ
بِإِيْمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ
أَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ كُلُّ
امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ㉑

وَأَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا
يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾

मेवे और गोश्त से जो चाहें।

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَ
لَا تَأْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾

२३. एक दूसरे से लेते है वो जाम जिस में न बेहूदगी न गुनहगारी।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ
لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾

२४. और उनके ख़िदमतगार लड़के उनके गिर्द फिरेंगे गोया वो मोती हैं छुपा कर रखे गए।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

२५. और उनमें एक ने दूसरे की तरफ़ मुँह किया पूछते हुए।

قَالُوْٓا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ أَهْلِنَا
مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

२६. बोले बेशक हम इससे पहले अपने घरों में सहमे हुए थे।

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

२७. तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें लूह (गर्म हवा) के अज़ाब से बचा लिया।

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ۖ إِنَّهٗ هُوَ
الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ ع

२८. बेशक हम ने अपनी पहली ज़िन्दगी में उसकी इबादत की थी बेशक वही एहसान फ़रमाने वाला मेहरबान है।

रुकूअ २

فَذَكِّرْ فَمَآ أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ
وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾

२९. तो ऐ महबूब तुम नसीहत फ़रमाओ कि तुम अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हो न मजनून।

أَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ
الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾

३०. या कहते हैं ये शाओर है हमें उन पर हवादिसे ज़माना का इन्तिज़ार है।

قُلْ تَرَبَّصُوْا فَإِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ
الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾

३१. तुम फ़रमाओ इन्तिज़ार किए जाओ मैं भी तुम्हारे इन्तिज़ार में हूं।

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ أَمْ
هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾

३२. क्या उनकी अक़्लें उन्हें यही बताती है या वो सरकश लोग है।

३३. या कहते है उन्हो ने ये कुरआन

बना लिया बल्कि वो ईमान नही रखते।

३४. तो उस जैसी एक बात तो ले आएँ अगर सच्चे है।

३५. क्या वो किसी अस्ल मे न बनाए गए या वही बनाने वाले है।

३६. या आसमान और ज़मीन उन्होने पैदा किए बल्कि उन्हे यकीन नही।

३७. या उनके पास तुम्हारे रब के खज़ाने है या वो कड़ोड़ (हाकिमे आला) हैं।

३८. या उनके पास कोई ज़ीना है जिस मे चढ़ कर सुन लेते है तो उनका सुनने वाला कोई रौशन सनद लाए।

३९. क्या उसको बेटियाँ और तुम को बेटे।

४०. या तुम उनसे कुछ उजरत माँगते हो तो वो चट्टी के बोझ मे दबे है।

४१. या उनके पास ग़ैब है जिस से वो हुक्म लगाते है।

४२. या किसी दावों (फ़रेब) के इरादे में है तो काफ़िरों ही पर दावों (फ़रेब) पड़ना है।

४३. या अल्लाह के सिवा उनका कोई और खुदा है अल्लाह को पाकी उनके शिर्क से।

४४. और अगर आसमान से कोई टुकड़ा गिरता देखें तो कहेंगे तह ब तह बादल है।

४५. तो तुम उन्हे छोड़ दो यहाँ तक कि वो अपने उस दिन से मिलें

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾
فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا
صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾
أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ
الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾
أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا
يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾
أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ
الْمُصَيْطِرُونَ ﴿٣٧﴾
أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ
مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾
أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾
أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ
مُّثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾
أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾
أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا
هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾
أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ
عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾
وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ

जिस में बेहोश हो गे।

४६. जिस दिन उनका दाओं (फ़रेब) कुछ काम न देगा और न उनकी मदद हो।

४७. और बेशक ज़ालिमों के लिए उससे पहले एक अज़ाब है मगर उनमें अक्सर को ख़बर नहीं।

४८. और ऐ महबूब तुम अपने रब के हुक्म पर ठहरे रहो कि बेशक तुम हमारी निगहदाश्त में हो और अपने रब की तअ़रीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलो जब तुम खड़े हो।

४९. और कुछ रात में उसकी पाकी बोलो और तारों के पीठ देते।

सूरए नज्म

मक्की है इसमें बासठ आयतें और तीन रुकूअ़ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ़ १

१. उस प्यारे चमकते तारे मुहम्मद की क़सम जब ये मेअ़राज से उतरे।

२. तुम्हारे साहिब न बहके न बे राह चले।

३. और वो कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते।

४. वो तो नहीं मगर 'वही' जो उन्हें की जाती है।

५. उन्हें सिखाया सख़्त क़ुव्वतों वाले।

६. ताक़तवर ने फिर उस जल्वे ने क़स्द फ़रमाया।

७. और वो आसमाने-बरीं के सब से बुलन्द किनारे पर था।

८. फिर वो जल्वा नज़दीक हुआ

سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٤٦﴾

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ آيَاتُهَا ٦٢ رُكُوعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ﴿١﴾

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿٢﴾

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ﴿٣﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحٰى ﴿٤﴾

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾

ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلٰى ﴿٧﴾

फिर खूब उतर आया।

९. तो उस जल्वा और उस महबूब मे दो हाथ का फासला रहा बल्कि उससे भी कम।

१०. अब 'वही' फ़रमाइ अपने बन्दे को जो 'वही' फ़रमाई ।

११. दिल ने झूट न कहा जो देखा।

१२. तो क्या तुम उन से उनके देखे हुए पर झगड़ते हो।

१३. और उन्हों ने तो वो जल्वा दो बार देखा।

१४. सिद्‌रतुल मुन्तहा के पास।

१५. उसके पास जन्नतुल मावा है।

१६. जब सिद्‌रा पर छा रहा था जो छा रहा था।

१७. आँख न किसी तरफ़ फिरी न हद से बढ़ी।

१८. बेशक अपने रब की बहुत बड़ी निशानियाँ देखीं।

१९. तो क्या तुम ने देखा लात और उज़्ज़ा।

२०. और उस तीसरी मनात को।

२१. क्या तुम को बेटा और उसको बेटी।

२२. जब तो ये सख़्त भोंडी तक़्सीम है।

२३. वो तो नहीं मगर कुछ नाम कि तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए है अल्लाह ने उनकी कोई सनद नही उतारी वो तो निरे गुमान और नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे है हालाँकि बेशक उनके पास उनके रब की तरफ़ से हिदायत आई।

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ﴿٩﴾

فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ﴿١٠﴾

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿١١﴾

اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾

اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾

اِنْ هِىَ اِلَّاۤ اَسْمَاۤءٌ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ

وَاٰبَاۤؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ

سُلْطٰنٍ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا

تَهْوَى الْاَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاۤءَهُمْ

مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ۝٢٤

२४. क्या आदमी को मिल जाएगा जो कुछ वो ख़याल बाँधे।

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۝٢٥

२५. तो आख़ेरत और दुनिया सब का मालिक अल्लाह ही है।

रुकूअ २

وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ
لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ
بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَ
يَرْضَىٰ ۝٢٦

२६. और कितने ही फ़रिश्ते हैं आसमानों में कि उनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती मगर जब कि अल्लाह इजाज़त दे दे जिस के लिए चाहे और पसन्द फ़रमाए।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثَىٰ ۝٢٧

२७. बेशक वो जो आख़िरत पर ईमान रखते नहीं मलाईका का नाम औरतों का सा रखते है।

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ
إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ
الْحَقِّ شَيْئًا ۝٢٨

२८. और उन्हें उसकी कुछ ख़बर नहीं वो तो निरे गुमान के पीछे हैं और बेशक गुमान यक़ीन की जगह कुछ काम नहीं देता।

فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا
وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝٢٩

२९. तो तुम उस से मुँह फेर लो जो हमारी याद से फिरा और उस ने न चाही मगर दुनिया की ज़िन्दगी।

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ
هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ
وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ ۝٣٠

३०. यहाँ तक उनके इल्म की पहुँच है बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बहका और वो ख़ूब जानता है जिस ने राह पाई।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَ
يَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ۝٣١

३१. और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में ताकि बुराई करने वालो को उनके किए का बदला दे और नेकी करने वालों को निहायत अच्छा सिला अता फ़रमाए।

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ

३२. वो जो बड़े गुनाहों और बेहयाईयो से बचते हैं मगर इतना कि

गुनाह के पास गए और रुक गए बेशक तुम्हारे रब की मग़फ़िरत वसीअ है वो तुम्हें ख़ूब जानता है तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में हमल थे तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ वो खूब जानता है जो परहेज़गार हैं।

रुकूअ ३

३३. तो क्या तुम ने देखा जो फिर गया।

३४. और कुछ थोड़ा सा दिया और रोक रखा।

३५. क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है तो वो देख रहा है।

३६. क्या उसे उस की ख़बर न आई जो सहीफ़ों में है मूसा के।

३७. और इब्राहीम के जो अहकाम पूरे बजा लाया।

३८. कि कोई बोझ उठानेवाली जान दूसरी का बोझ नहीं उठाती।

३९. और ये कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश।

४०. और ये कि उसकी कोशिश अन्क़रीब देखी जाएगी।

४१. फिर उसका भर पूर बदला दिया जाएगा।

४२. और ये कि बेशक तुम्हारे रब ही के तरफ़ इन्तिहा है।

४३. और ये कि वही है जिस ने हँसाया और रुलाया।

४४. और ये कि वही है जिस ने मारा और जिलाया।

४५. और ये कि उसी ने दो जोड़े बनाए नर और मादा।

४६. नुत्फ़े से जब डाला जाए।

وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ
وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ
أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ
أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوا
ع أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ﴿٣٢﴾
أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾
وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿٣٤﴾
أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿٣٥﴾
أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾
وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾
أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾
وَأَنْ لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾
وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾
ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾
وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ﴿٤٢﴾
وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿٤٣﴾
وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾
وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ
وَالْأُنْثَىٰ ﴿٤٥﴾
مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾

४७. और ये कि उसी के ज़िम्मे है पिछला उठाना (दोबारा ज़िन्दा करना)।
४८. और ये कि उसी ने ग़िना दी और क़नाअत दी।
४९. और ये कि वही सितारा शिअ्रा का रब है।
५०. और ये कि उसी ने पहली आद को हिलाक फ़रमाया।
५१. और समूद को तो कोई बाक़ी न छोड़ा।
५२. और उन से पहले नूह की क़ौम को बेशक वो उन से भी ज़ालिम और सरकश थे।
५३. और उस ने उलटने वाली बस्ती को नीचे गिराया।
५४. तो उस पर छाया जो कुछ छाया।
५५. तो ऐ सुनने वाले अपने रब की कौनसी नेअ्मतों में शक करेगा।
५६. ये एक डर सुनाने वाले है अगले डराने वालों की तरह।
५७. पास आई पास आने वाली।
५८. अल्लाह के सिवा उसका कोई खोलने वाला नही।
५९. तो क्या इस बात से तुम तअज्जुब करते हो।
६०. और हँसते हो और रोते नही।
६१. और तुम खेल में पड़े हो।
६२. तो अल्लाह के लिए सज्दा और उसकी बन्दगी करो।

सूरए क़मर

मक्की है इसमें पचपन आयतें और तीन रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. पास आई क़यामत और शक हो

وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿٤٧﴾
وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ﴿٤٨﴾
وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾
وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَا ۨالْاُوْلٰى ﴿٥٠﴾
وَثَمُوْدَا۟ فَمَاۤ اَبْقٰى ﴿٥١﴾
وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا
هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ﴿٥٢﴾
وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ﴿٥٣﴾
فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾
فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾
هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾
اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾
اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾
وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾
وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾
فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿٦٢﴾

سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾

गया चाँद।

२. और अगर देखें कोई निशानी तो मुँह फेरते और कहते हैं ये तो जादू है चला आता।

३. और उन्हों ने झुटलाया और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए और हर काम क़रार पा चुका है।

४. और बेशक उनके पास वो ख़बरें आईं जिन्न में काफ़ी रोक थी.

५. इन्तिहा को पहुँची हुई हिकमत फिर क्या काम दें डर सुनाने वाले ।

६. तो तुम उन से मुँह फेर लो जिस दिन बुलाने वाला एक सख़्त बे पहचानी बात की तरफ़ बुलाएगा।

७. नीचे आँखें किए हुए क़बरों से निकलें गे गोया वो टिड्डी है फैली हुई।

८. बुलाने वाले की तरफ़ लपकते हुए काफ़िर कहें गे ये दिन सख़्त है।

९. इन से पहले नूह की क़ौम ने झुटलाया तो हमारे बन्दे को झूटा बताया और बोले वो मजनून है और उसे झिड़का।

१०. तो उस ने अपने रब से दुआ की कि मैं मग़लूब हूँ तू मेरा बदला ले।

११. तो हम ने आसमान के दरवाज़े खोल दिए ज़ोर के बहते पानी से।

१२. और ज़मीन चश्मे करके बहा दी तो दोनों पानी मिल गए उस मिक़दार पर जो मुक़द्दर थी।

१३. और हम ने नूह को सवार

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝٢

وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝٣

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۝٤

حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۝٥

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٦

خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝٧

مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ۭ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٨

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ۝٩

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠

فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١١

وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝١٣

किया तख़्तों और कीलों वाली पर।

تَجْرِىْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾

१४. कि हमारी निगाह के रूबरू बहती उसके सिले में जिसके साथ कुफ़्र किया गया था।

وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾

१५. और हम ने उसे निशानी छोड़ा तो है कोई ध्यान करने वाला।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿١٦﴾

१६. तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरी धमकियाँ।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾

१७. और बेशक हम ने कुरआॅन याद करने के लिए आसान फ़रमा दिया तो है कोई याद करने वाला।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾

१८. आद ने झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरे डर दिलाने के फ़रमान।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾

१९. बेशक हम ने उन पर एक सख़्त आँधी भेजी ऐसे दिन में जिस की नहूसत उन पर हमेशा के लिए रही।

تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

२०. लोगों को यूँ दे मारती थी कि गोया वो उखड़ी हुई खजूरों के डुंड (सूखे तने) हैं।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾

२१. तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ ع

२२. और बेशक हम ने आसान किया कुरआॅन याद करने के लिए तो है कोई याद करने वाला।

रुकूअ २

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

२३. समूद ने रसूलों को झुटलाया।

فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّفِىْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

२४. तो बोले क्या हम अपने में के एक आदमी की ताबेअदारी करें जब तो हम ज़रूर गुमराह और दीवाने हैं।

ءَاُلْقِىَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا

२५. क्या हम सब में उस पर

بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ﴿٢٥﴾
سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ﴿٢٦﴾
إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ
وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾
وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ
كُلُّ شِرْبٍ مُحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾
فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾
إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً
فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ
مِنْ مُدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾
كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾
إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ
لُوطٍ نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾
نِعْمَةً مِنْ عِنْدِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي
مَنْ شَكَرَ ﴿٣٥﴾
وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا
بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾
وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا

ज़िक्र उतारा गया बल्कि ये सख़्त झूटा उतरोना (शेख़ीबाज़) है।

२६. बहुत जल्द कल जान जाएँगे कौन था बड़ा झूटा इतरोना (शेख़ीबाज़)।

२७. हम नाक़ा भेजने वाले है उनकी जाँच को तो ऐ स्वालेह़ तू राह देख और सब्र कर।

२८. और उन्हें ख़बर दे दे कि पानी उन में हिस्सों से है हर हिस्सा पर वो हाज़िर हो जिस की बारी है।

२९. तो उन्हो ने अपने साथी को पुकारा तो उसने लेकर उसकी कोचें काट दीं।

३०. फिर कैसा हुआ मेरा अज़ाब और डर के फ़रमाना।

३१. बेशक हम ने उन पर एक चिंघाड़ भेजी जभी वो हो गए जैसा घेरा बनानेवाले की बची हुई घास सूखी रौंदी हुई।

३२. और बेशक हम ने आसान किया कुरऑन याद करने के लिए तो है कोई याद करनेवाला।

३३. लूत की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया।

३४. बेशक हम ने उन पर पथराओ भेजा सिवाए लूत के घर वालों के हम ने उन्हें पिछले पहर बचा लिया।

३५. अपनी पास की नेअ्मत फ़रमा कर हम यूँही सिला देते है उसे जो शुक्र करे।

३६. और बेशक उसने उन्हें हमारी गिरफ़्त से डराया तो उन्हों ने डर के फ़रमानों में शक किया।

३७. उन्हों ने उसे उसके मेहमानो

से फ़ुसलाना चाहा तो हम ने उनकी आँखें मेट दीं (चौपट कर दीं) फ़रमाया चखो मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान।

३८. और बेशक सुबह तड़के उन पर ठहरने वाला अज़ाब आया।

३९. तो चखो मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान।

४०. और बेशक हम ने आसान किया क़ुरऑन याद करने के लिए तो है कोई याद करने वाला।

रुकूअ ३

४१. और बेशक फ़िरऔन वालों के पास रसूल आए।

४२. उन्हों ने हमारी सब निशानियाँ झुटलाईं तो हम ने उन पर गिरफ़्त की जो एक इज़्ज़त वाले और अज़ीम क़ुदरत वाले की शान थी ।

४३. क्या तुम्हारे काफ़िर उन से बेहतर हैं या किताबों में तुम्हारी छुट्टी लिखी हुई है।

४४. या ये कहते हैं कि हम सब मिल कर बदला ले लें गे।

४५. अब भगाई जाती है ये जमाअत और पीठें फेर देंगे।

४६. बल्कि उनका वअ्दा क़यामत पर है और क़यामत निहायत कड़ी और सख़्त कड़वी।

४७. बेशक मुजरिम गुमराह और दीवाने हैं।

४८. जिस दिन आग में अपने मुँहों पर घसीटे जाएँगे और फ़रमाया जाएगा चखो दोज़ख़ की आँच।

४९. बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़ा से पैदा फ़रमाई।

५०. और हमारा काम तो एक

اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾
وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾
فَذُوْقُوْا عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ
مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾
وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ
عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾
اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ
بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾
اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾
سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾
بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ
اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾
اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾
يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ
ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾
اِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾
وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ
بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾

बात की बात है जैसे पलक मारना।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾

५१. और बेशक हम ने तुम्हारी वज़अ के हिलाक कर दिए तो है कोई ध्यान करने वाला।

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

५२. और उन्हों ने जो कुछ किया सब किताबों में है।

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾

५३. और हर छोटी और बड़ी चीज़ लिखी हुई है।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

५४. बेशक परहेज़गार बाग़ों और नहर में हैं।

فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

५५. सच की मजलिस में अज़ीम कुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर।

सूरए रहमान

سُورَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ

मदनी है इसमें अठहत्तर आयतें और तीन रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

الرَّحْمٰنُ ﴿١﴾

१. रहमान ने।

عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿٢﴾

२. अपने महबूब को कुरऑन सिखाया।

خَلَقَ الْإِنسَانَ ﴿٣﴾

३. इन्सानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया।

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾

४. 'मा काना मा यकून' का बयान उन्हें सिखाया।

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿٥﴾

५. सूरज और चाँद हिसाब से हैं।

وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ﴿٦﴾

६. और सबज़े और पेड़ सज्दा करते हैं।

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ﴿٧﴾

७. और आसमान को अल्लाह ने बुलन्द किया और तराज़ू रखी।

أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ﴿٨﴾

८. कि तराज़ू में बे एअतिदाली न करो।

وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ﴿٩﴾

९. और इन्साफ़ के साथ तौल क़ाएम करो और वज़न न घटाओ।

وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ﴿١٠﴾

१०. और ज़मीन रखी मखलूक़ के

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ
الْأَكْمَامِ ⑪
وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ⑫
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ⑬
خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ
كَالْفَخَّارِ ⑭
وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ ⑮
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ⑯
رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ⑰
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ⑱
مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ⑲
بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ⑳
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ㉑
يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ㉒
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ㉓
وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ㉔
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ㉕
كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ㉖
وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ
وَالْإِكْرَامِ ㉗

लिए।

११. उसमें मेवे और गिलाफ़ वाली खजूरें।

१२. और भुस के साथ अनाज और खुशबू के फूल।

१३. तो ए जिन्न व इन्स तुम दोनों अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

१४. उसने आदमी को बनाया बजती मिट्टी से जैसे ठीकरी।

१५. और जिन्न को पैदा फ़रमाया आग के लौके (लपट) से।

१६. तो तुम दोनों अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

१७ दोनों पूरब का रब और दोनों पच्छिम का रब।

१८. तो तुम दोनों अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

१९. उस ने दो समन्दर बहाए कि देखने में मअ्लूम हो मिले हुए।

२० और है उन में रोक कि एक दूसरे पर बढ़ नहीं सकता।

२१. तो दोनों अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

२२. उनमें से मोती और मूंगा निकलता है।

२३. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

२४. और उसी की हैं वो चलने वालियाँ कि दरिया में उठी हुई हैं जैसे पहाड़।

२५. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत को झुटलाओगे।

रुकूअ २

२६. ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है।

२७. और बाक़ी है तुम्हारे रब की

ज़ात अज़मत और बुज़ुर्गी वाला।

२८. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

२९. उसीके मंगता हैं जितने आसमानो और ज़मीन में हैं उसे हर दिन एक काम है।

३०. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

३१. जल्द सब काम निब्टा कर हम तुम्हारे हिसाब का क़स्द फ़रमाते है ऐ दोनो भारी गरोह।

३२. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

३३. ऐ जिन्न व इन्सान के गरोह अगर तुम से हो सके कि आसमानों और ज़मीन के किनारो से निकल जाओ तो निकल जाओ जहाँ निकल कर जाओगे उसीकी सल्तनत है।

३४. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

३५. तुम पर छोड़ी जाएगी बे धुँवें की आग की लपट और बेलपट का काला धुँवां तो फिर बदला न ले सको गे।

३६. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

३७. फिर जब आसमान फट जाएगा तो गुलाब के फूल सा हो जाएगा जैसे सुर्ख़ नरी (बकरे की रंगी हुई खाल)।

३८. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

३९. तो उस दिन गुनहगार के गुनाह की पूछ न होगी किसी आदमी और जिन्न से।

४०. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾
یَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
کُلَّ یَوْمٍ هُوَ فِیْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ ج
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾
سَنَفْرُغُ لَکُمْ اَیُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ ج
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾
یٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ
اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا
بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ ج
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾
یُرْسَلُ عَلَیْکُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ
نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ ج
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾
فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَکَانَتْ وَرْدَةً
کَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ ج
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾
فَیَوْمَئِذٍ لَّا یُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ
وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ ج
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ
بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٢﴾
هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾
يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ﴿٤٤﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٥﴾
وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴿٤٦﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٧﴾
ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٩﴾
فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ﴿٥٠﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥١﴾
فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ﴿٥٢﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٣﴾
مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ
إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٥﴾
فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ
إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٥٦﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٧﴾

झुटलाओगे।

४१. मुजरिम अपने चेहरे से पहचाने जाएँगे तो माथा और पाँव पकड़ कर जहन्नम में डाले जाएँगे।

४२. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

४३. ये है वो जहन्नम जिसे मुजरिम झुटलाते हैं।

४४. फेरे करेंगे उसमें और इन्तिहा के जलते खौलते पानी में।

४५. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

रुकूअ ३

४६. और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरें उसके लिए दो जन्नत हैं।

४७. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

४८. बहुत सी डालों वालियाँ।

४९. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

५०. उन में दो चश्मे बहते हैं।

५१. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

५२. उन में हर मेवा दो दो क़िस्म का।

५३. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

५४. और ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए जिन का अस्तर क़नादीज़ का और दोनों के मेवे इतने झुके हुए कि नीचे से चुन लो।

५५. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

५६. उन बिछौनों पर वो औरतें है कि शौहर के सिवा किसी को आँख उठा कर नही देखती उन से पहले उन्हें न छुवा कीसी आदमी और ना जिन्न ने।

५७. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
५८. गोया वो लअ्ल और याक़ूत और मूँगा हैं।
५९. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
६०. नेकी का बदला क्या है मगर नेकी।
६१. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
६२. और उनके सिवा दो जन्नतें और हैं।
६३. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
६४. निहायत सब्ज़ी से सियाही की झलक दे रही हैं।
६५. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
६६. उन में दो चश्मे हैं छलकते हुए।
६७. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
६८. उनमें मेवे और खजूरें और अनार हैं।
६९. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
७०. उनमें औरतें हैं आदत की नेक सूरत की अच्छी।
७१. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
७२. हूरें है ख़ेमों में पर्दा नशीन।
७३. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
७४. उनसे पहले उन्हें हाथ ना लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने।
७५. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۝٥٨
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٥٩
هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۝٦٠
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٦١
وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ۝٦٢
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٦٣
مُدْهَامَّتَانِ ۝٦٤
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٦٥
فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ۝٦٦
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٦٧
فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ۝٦٨
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٦٩
فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ۝٧٠
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٧١
حُورٌ مَقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۝٧٢
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٧٣
لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۝٧٤
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝٧٥
مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ
حِسَانٍ ۝٧٦

फَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٧﴾
تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ
وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَتِسْعُونَ آيَةً وَثَلَاثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾
لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾
خَافِضَةٌ رَافِعَةٌ ﴿٣﴾
إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾
وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾
فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًّا ﴿٦﴾
وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ﴿٧﴾
فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾
وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ﴿٩﴾
وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ﴿١٠﴾
أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ﴿١١﴾
فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿١٢﴾
ثُلَّةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾
وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿١٤﴾
عَلَىٰ سُرُرٍ مَوْضُونَةٍ ﴿١٥﴾

७६. तकिया लगाए हुए सब्ज़ बिछौनों और मुनक़्क़श ख़ूबसूरत चाँदनियों पर।
७७. तो अपने रब की कौनसी नेअ्मत झुटलाओगे।
७८. बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम जो अज़मत और बुज़ुर्गी वाला ।

सूरए वाक़िआ

मक्की है इसमें छेयान्वे आयतें और तीन रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. जब होलेगी वो होने वाली।
२. उस वक़्त उसके होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी।
३. किसी को पस्त करनेवाली किसी को बुलन्दी देने वाली।
४. जब ज़मीन काँपेगी थरथरा कर।
५. और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे चूरा हो कर तो होजाएँगे।
६. जैसे रोज़न की धूप में गुबार के बारीक ज़र्रे फैले हुए।
७. और तुम तीन क़िस्म के हो जाओगे।
८. तो दाहिनी तरफ़ वाले कैसे दाहिनी तरफ़वाले।
९. और बाई तरफ़वाले कैसे बाई तरफ़वाले।
१०. और जो सबक़त ले गए वो तो सबक़त ही ले गए।
११. वही मुक़र्रबे-बारगाह है।
१२. चैन के बाग़ों में।
१३. अगलों में से एक गरोह।

१४. और पिछलों में से थोड़े।
१५. जड़ाओ तख़तों पर होंगे।
१६. उन पर तकिया लगाए हुए आमने सामने।
१७. उनके गिर्द लिए फिरें गे हमेशा रहने वाले लड़के।
१८. कूज़े और आफ़्ताबे और जाम और आँखों के सामने बहती शराब कि उससे न उन्हें दर्दे सर हो।
१९. और न होश में फ़र्क़ आए।
२०. और मेवे जो पसन्द करें।
२१. और परिन्दों का गोश्त जो चाहें।
२२. और बड़ी आँख वालियाँ हूरें।
२३. जैसे छुपे रखे हुए मोती।
२४. सिला उनके अअ्माल का।
२५. उसमें न सुनेंगे न कोई बेकार बात न गुनहगारी।
२६. हाँ ये कहना होगा सलाम सलाम।
२७. और दाहिनी तरफ़ वाले कैसे दाहिनी तरफ़ वाले।
२८. बे काँटों की बेरियों में।
२९. और केले के गुच्छों में।
३०. और हमेशा के साए में।
३१. और हमेशा जारी पानी में।
३२. और बहुत से मेवों में।
३३. जो न ख़त्म हों और न रोके

مُتَّكِـِٔينَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِينَ ﴿١٦﴾
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدٰنٌ مُّخَلَّدُونَ ﴿١٧﴾ لا
بِأَكْوَابٍ وَّأَبَارِيقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّنْ
مَّعِينٍ ﴿١٨﴾ لا
لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ﴿١٩﴾ لا
وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾ لا
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ ط
وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ لا
كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ ج
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾
لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾ لا
إِلَّا قِيلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾
وَأَصْحٰبُ الْيَمِينِ ۙ مَآ أَصْحٰبُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ ط
فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ لا
وَّطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ﴿٢٩﴾ لا
وَّظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾ لا
وَّمَآءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾ لا
وَّفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾ لا
لَّا مَقْطُوعَةٍ وَّلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾ لا
وَّفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾ ط

जाएँ।

३४. और बुलन्द बिछौनों में।

३५. बेशक हम ने उन औरतों को अच्छी उठान उठाया।

३६. तो उन्हें बनाया कुंवारियाँ।

३७. अपने शौहर पर प्यारियाँ उन्हें प्यार दिलातियाँ एक उम्र वालियाँ।

३८. दाहिनी तरफ़ वालों के लिए।

रुकूअ २

३९. अगलों में से एक गरोह।

४०. और पिछलों में से एक गरोह।

४१. और बाईं तरफ़ वाले कैसे बाईं तरफ़ वाले।

४२. जलती हवा और खौलते पानी में।

४३. और जलते धुवें की छावँ में।

४४. जो न ठन्डी न इज़्ज़त की।

४५. बेशक वो इससे पहले नेअ्मतों में थे।

४६. और उस बड़े गुनाह की हट (ज़िद) रखते थे।

४७. और कहते थे क्या जब हम मर जाएँ और हड्डियाँ मिट्टी हो जाएँ तो क्या ज़रूर हम उठाए जाएँगे।

४८. और क्या हमारे अगले बाप दादा भी।

४९. तुम फ़रमाओ बेशक सब अगले और पिछले।

५०. ज़रूर इकट्ठे किए जाएँगे एक जाने हुए दिन की मिआद पर।

५१. फिर बेशक तुम ऐ गुमराहो

إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ﴿٣٥﴾
فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾
عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾
لِّأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾
ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾
وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾
وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ مَا أَصْحَابُ
الشِّمَالِ ﴿٤١﴾
فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ﴿٤٢﴾
وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ﴿٤٣﴾
لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ﴿٤٤﴾
إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ﴿٤٥﴾
وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾
وَكَانُوا يَقُولُونَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا
تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٤٧﴾
أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ﴿٤٨﴾
قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ﴿٤٩﴾
لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾
ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ ﴿٥١﴾
لَآكِلُونَ مِن شَجَرٍ مِّن زَقُّومٍ ﴿٥٢﴾

झुटलाने वालो।

५२. ज़रूर थोहड़ के पेड़ में से खाओगे।

५३. फिर उससे पेट भरोगे।

५४. फिर उस पर खौलता पानी पियोगे।

५५. फिर ऐसा पियोगे जैसे सख़्त प्यासे ऊँट पिएँ।

५६. ये उनकी मेहमानी है इन्साफ़ के दिन।

५७. हम ने तुम्हें पैदा किया तो तुम क्यों नहीं सच मानते।

५८. तो भला देखो तो वो मनी जो गिराते हो।

५९. क्या तुम उसका आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।

६०. हम ने तुम में मरना ठहराया और हम उस से हारे नहीं।

६१. कि तुम जैसे और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वो कर दें जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं।

६२. और बेशक तुम जान चुके हो पहली उठान फिर क्यों नहीं सोचते।

६३. तो भला बताओ तो जो बोते हो।

६४ क्या तुम उसकी खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।

६५. हम चाहें तो उसे रौंदन (पामाल) करदें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ।

६६. कि हम पर चट्टी पड़ी।

فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾

فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾

ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا

نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ

فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ

تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾

اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾

६७. बल्कि हम बे नसीब रहे।

६८. तो भला बताओ तो वो पानी जो पीते हो।

६९. क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या हम है उतारने वाले।

७०. हम चाहे तो उसे खारी कर दे फिर क्यों नहीं शुक्र करते।

७१. तो भला बताओ तो वो आग जो तुम रौशन करते हो।

७२. क्या तुम ने उसका पेड़ पैदा किया या हम है पैदा करने वाले।

७३. हम ने उसे जहन्नम का यादगार बनाया और जंगल में मुसाफ़िरों का फ़ाएदा।

७४. तो ऐ महबूब तुम ..की बोलो अपने अज़्मत वाले रब के नाम की।

रुकूअ ३

७५. तो मुझे क़सम है उन जगहों की जहाँ तारे डूबते हैं।

७६. और तुम समझो तो ये बडी क़सम है।

७७. बेशक ये इज़्ज़त वाला कुरआन है।

७८. महफ़ूज़ नविश्ता में।

७९. इसे न छूएँ मगर बा वज़ू।

८०. उतारा हुआ है सारे जहान के रब का।

८१. तो क्या इस बात मे तुम सुस्ती करते हो।

८२. और अपना हिस्सा ये रखते हो कि झुटलाते हो।

८३. फिर क्यों न हो जब जान

ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ
نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾
لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا
تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾
اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾
ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ
الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾
نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾
فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾
وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾
اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾
فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾
لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾
تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾
اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾
وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾
فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾
وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾
وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ

गले तक पहुँचे।

८४. और तुम उस वक़्त देख रहे हो।

८५. और हम उसके ज़्यादा पास हैं तुम से मगर तुम्हें निगाह नहीं।

८६. तो क्यों न हुआ अगर तुम्हें बदला मिलना नहीं।

८७. कि उसे लौटा लाते अगर तुम सच्चे हो।

८८. फिर वो मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है।

८९. तो राहत और फूल और चैन के बाग़।

९०. और अगर दाहिनी तरफ़ वालों से हो।

९१. तो ऐ महबूब तुम पर सलाम हो दाहिनी तरफ़ वालों से।

९२. और अगर झुटलाने वाले गुमराहों में से हो।

९३. तो उसकी मेहमानी खौलता पानी।

९४. और भड़कती आग में धंसाना।

९५. ये बेशक अअ्ला दर्जा की यक़ीनी बात है।

९६. तो ऐ महबूब तुम अपनी अज़्मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो।

सूरए हदीद

मदनी है और इसमें उनतीस आयतें और चार रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾
فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾
تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾
فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾
فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾
وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾
فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾
وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ
الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾
فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾
وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾
لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْىٖ وَ
يُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾
هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ

وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣﴾
هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ
يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ
مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ
فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾
لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى
اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٥﴾
يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ
فِي الَّيْلِ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٦﴾
اٰمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا
جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ فَالَّذِينَ
اٰمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ
كَبِيرٌ ﴿٧﴾
وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالرَّسُولُ
يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ
أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾
هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهِ اٰيٰتٍ
بَيِّنٰتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّورِ

२. उसी के लिए है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत जिलाता है और मारता और वो सब कुछ कर सकता है।

३. वही अव्वल वही आख़िर वही ज़ाहिर वही बातिन और वही सब कुछ जानता है।

४. वही है जिसने आसमान और ज़मीन छः दिन में पैदा किए फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लाइक़ है जानता है जो ज़मीन के अन्दर जाता है और जो उससे बाहर निकलता है और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है और वो तुम्हारे साथ है तुम कहीं हो और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

५. उसी की है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और अल्लाह ही की तरफ़ सब कामों की रूजूअ।

६. रात को दिन के हिस्से में लाता है और दिन को रात के हिस्से में लाता है और वो दिलों की बात जानता है।

७. अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी राह में कुछ वो ख़र्च करो जिस में तुम्हें औरों का जानशीन किया तो जो तुम में ईमान लाए और उसकी राह में ख़र्च किया उनके लिए बड़ा सवाब है।

८. और तुम्हें क्या है कि अल्लाह पर ईमान न लाओ हालाँकि ये रसूल तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने रब पर ईमान लाओ और बेशक वो तुम से पहले अहद ले चुका है अगर तुम्हें यक़ीन हो।

وَإِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٩﴾
وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ
وَلِلّٰهِ مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ مِن
قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ أُولٰٓئِكَ أَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِنْ
بَعْدُ وَقٰتَلُوا وَكُلًّا وَعَدَ
اللّٰهُ الْحُسْنٰى وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
ع خَبِيرٌ ﴿١٠﴾
مَن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
فَيُضٰعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١١﴾
يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى
نُورُهُم بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمٰنِهِم
بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ذٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾
يَوْمَ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَالْمُنٰفِقٰتُ
لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِن
نُّورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ
فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ

९. वही है कि अपने बन्दे पर रौशन आयतें उतारता है ताकि तुम्हें अँधेरियों से उजाले कि तरफ़ ले जाए और बेशक अल्लाह तुम पर ज़रूर मेहरबान रहमवाला।

१०. और तुम्हें क्या है कि अल्लाह की राह में ख़र्च न करो हालाँकि आसमानो और ज़मीन में सबका वारिस अल्लाह ही है तुम में बराबर नही वो जिन्हों ने फ़त्हे मक्का से क़ब्ल खर्च और जिहाद किया वो मरतबे में उनसे बड़े हैं जिन्हों ने बअदे फ़त्ह के ख़र्च और जिहाद किया और उन सब से अल्लाह जन्नत का वअदा फ़रमा चुका और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

११. कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़ तो वो उसके लिए दूने करे और उस को इज़्ज़त का सवाब है।

१२. जिस दिन तुम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को देखो गे कि उनका नूर उनके आगे और उनके दाहिने दौड़ता है उनसे फ़रमाया जा रहा है कि आज तुम्हारी सब से ज़्यादा खुशी की बात वो जन्नतें है जिनके नीचे नहरें बहें तुम उनमें हमेशा रहो यही बड़ी कामयाबी है।

१३. जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसलमानों से कहेंगे कि हमें एक निगाह देखो कि हम तुम्हारे नूर से कुछ हिस्सा लें कहा जाएगा अपने पीछे लौटो वहाँ नूर

لَهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَ
ظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ؕ ﴿١٣﴾
يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا
بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَ
تَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ
الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ
غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾
فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ
وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ
هِيَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾
اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ
قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ
الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ
الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ
مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾
اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾
اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَ

ढूंडो वो लौटें गे जभी उनके दर्मियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिस में एक दरवाज़ा है उसके अन्दर की तरफ़ रहमत और उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब ।

१४. मुनाफ़िक़ मुसलमानों को पुकारेंगे क्या हम तुम्हारे साथ न थे वो कहें गे क्यों नहीं मगर तुम ने तो अपनी जानें फ़ित्ना में डालीं और मुसलमानों की बुराई तकते और शक रखते और झूटी तमअ़ ने तुम्हें फ़रेब दिया यहाँतक कि अल्लाह का हुक्म आ गया और तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर उस बड़े फ़रेबी ने मग़रूर रखा।

१५. तो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाए और न खुले काफ़िरों से तुम्हारा ठिकाना आग है वो तुम्हारी रफ़ीक़ है और क्या ही बुरा अंजाम।

१६. क्या ईमान वालों को अभी वो वक़्त न आया कि उनके दिल झुक जाएँ अल्लाह की याद और उस हक़ के लिए जो उतरा और उन जैसे न हों जिन्न को पहले किताब दी गई फिर उन पर मुद्दत दराज़ हुई तो उनके दिल सख़्त हो गए और उनमें बहुत फ़ासिक़ हैं।

१७. जान लो कि अल्लाह ज़मीन को ज़िन्दा करता है उसके मरे पीछे बेशक हम ने तुम्हारे लिए निशानियाँ बयान फ़रमा दीं कि तुम्हें समझ हो।

१८. बेशक सदक़ा देने वाले मर्द

और सदक़ा देने वाली औरतें और वो जिन्हों ने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया उनके दूने हैं और उनके लिए इज़्ज़त का सवाब है।

१९. और वो जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाएँ वही हैं कामिल सच्चे और औरों पर गवाह अपने रब के यहाँ उनके लिए उनका सवाब और उनका नूर है और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वो दोज़खी हैं।

रूकूअ ३

२०. जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और अवलाद में एक दूसरे पर ज़्यादती चाहना उस मेंह कि तरह जिस का उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन (पामाल) हो गया और आख़िरत में सख़्त अज़ाब है और अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और उसकी रज़ा और दुनिया का जीना तो नहीं मगर धोके का माल।

२१. बढ़ कर चलो अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ाई जैसे आसमन और ज़मीन का फैलाओ तैयार हुई है उनके लिए जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाएँ ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह

أَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١٨﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ
هُمُ الصِّدِّيقُونَ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ
رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
ع أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١٩﴾
اعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَ
لَهْوٌ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ
فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ
أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ
مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي
الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ
مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿٢٠﴾
سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَ
جَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرُسُلِهِ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ
يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢١﴾

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ
وَلَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرٌ ۚ ﴿۲۲﴾
لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ
وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ
كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ ﴿۲۳﴾
الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ
بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۴﴾
لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَ
اَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ
لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا
الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ
لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ
وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ
عَزِيْزٌ ﴿۲۵﴾ ع
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ
وَجَعَلْنَا فِىْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ
وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ

बड़े फ़ज़्ल वाला है।

२२. नहीं पहुँचती कोई मुसीबत ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में मगर वो एक किताब में है क़ब्ल इसके कि हम उसे पैदा करें बेशक ये अल्लाह को आसान है।

२३. इस लिए कि ग़म न खाओ उस पर जो हाथ से जाए और खुश न हो उस पर जो तुम को दिया और अल्लाह को नहीं भाता कोई इतरोना (शेख़ी बघारने वाला) बड़ाई मारने वाला।

२४. वो जो आप बुख्ल करें और औरों से बुख्ल को कहें और जो मुँह फेरे तो बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।

२५. बेशक हम ने अपने रसूलों को दलीलों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और अद्ल की तराज़ू उतारी कि लोग इन्साफ़ पर क़ाएम हों और हम ने लोहा उतारा उसमें सख़्त आँच (नुक़्सान) और लोगों के फ़ायदे और इस लिये कि अल्लाह देखे उसको जो बे देखे उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है बेशक अल्लाह कूव्वत वाला ग़ालिब है।

२६. और बेशक हम ने नूह और इब्राहीम को भेजा और उनकी अवलाद में नुबूव्वत और किताब रखी तो उनमें

مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ
قَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ
الْاِنْجِيْلَ ۙ۬ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ
وَرَهْبَانِيَّةَ ۨابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا
عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ
فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ
مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ
رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا
تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
ج لا
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾

لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ
عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ
الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
ع وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

कोई राह पर आया और उनमें बहुतेरे फ़ासिक़ है।

२७. फिर हम ने उनके पीछे उसी राह पर अपने और रसूल भेजे और उन के पीछे ईसा बिन मरयम को भेजा और उसे इन्जील अता फ़रमाई और उसके पैरुओं के दिल में नरमी और रहमत रखी और राहिब बनना तो ये बात उन्हों ने दीन मे अपनी तरफ़ से निकाली हम ने उन पर मुक़र्रर न की थी हाँ ये बिदअत उन्हों ने अल्लाह की रज़ा चाहने को पैदा की फिर उसे न निबाहा जैसा उसके निबाहने का हक़ था तो उनके ईमान वालों को हम ने उनका सवाब अता किया और उनमें से बहुतेरे फ़ासिक़ है।

२८. ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ वो अपनी रहमत के दो हिस्से तुम्हें अता फ़रमाएगा और तुम्हारे लिए नूर कर देगा जिस में चलो और तुम्हें बख़्श दे गा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

२९. ये इस लिए कि किताब वाले काफ़िर जान जाएँ कि अल्लाह के फ़ज़्ल पर उनका कुछ क़ाबू नही और ये कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ है देता है जिसे चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

सूरए मुजादला

मदनी है इसमें बाईस आयतें और तीन रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. बेशक अल्लाह ने सुनी उसकी बात जो तुम से अपने शौहर के मुआमले में बहस करती है और अल्लाह से शिकायत करती है और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तुगू सुन रहा है बेशक अल्लाह सुनता देखता है।

२. वो जो तुम में अपनी बीबियों को अपनी माँ की जगह कह बैठते है वो उनकी माएँ नहीं उनकी माएँ तो वही हैं जिन से वो पैदा हैं और वो बेशक बुरी और निरी झूट बात कहते हैं और बेशक अल्लाह ज़रूर मुआफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है।

३. और वो जो अपनी बीबियों को अपनी माँ की जगह कहे फिर वही करना चाहें जिस पर इतनी बड़ी बात कह चुके तो उन पर लाज़िम है एक बुर्दा आज़ाद करना क़ब्ल इसके कि एक दूसरे को हाथ लगाएँ ये है जो नसीहत तुम्हें की जाती है और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

४. फिर जिसे बुर्दा न मिले तो लगातार दो महीने के रोज़े क़ब्ल इसके कि एक दूसरे को हाथ लगाएँ फिर जिससे रोज़े भी न हो सकें तो साठ मिसकीनों का पेट भरना ये इस लिए

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ
فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ
يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ
بَصِيْرٌ ①
اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ
مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۗ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ
اِلَّا الّٰٓـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۗ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ
مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ
لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ②
وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ
ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ
رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۗ ذٰلِكُمْ
تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ③
فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ
مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ
فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ
مِسْكِيْنًا ۗ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۚ وَ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۚ
وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥﴾
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ
بِمَا عَمِلُوْا ۚ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۚ
ع وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٦﴾
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ مَا يَكُوْنُ
مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ
وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ
اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ
مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ
بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧﴾
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى
ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَ
يَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَ

कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखो और ये अल्लाह की हदें हैं और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

५. बेशक वो जो मुख़ालिफ़त करते है अल्लाह और उसके रसूल की ज़लील किए गए जैसे उनसे अगलों को ज़िल्लत दी गई और बेशक हम ने रौशन आयतें उतारीं और काफ़िरों के लिए ख़्वारी का अज़ाब है।

६. जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाए गा फिर उन्हे उनके कोतक जता देगा अल्लाह ने उन्हे गिन रखा है और वो भूल गए और हर चीज़ अल्लाह के सामने है।

रुकूअ २

७. ऐ सुनने वाले क्या तूने न देखा के अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में जहाँ कहीं तीन शख़्सों की सरगोशी हो तो चौथा वो मौजूद है और पाँच की तो छटा वो और न उससे कम और न उससे ज़्यादा की मगर ये कि वो उनके साथ है जहां कहीं हों फिर उन्हे क़यामत के दिन बता देगा जो कुछ उन्हों ने किया बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।

८. क्या तुम ने उन्हे न देखा जिन्हें बुरी मश्वरत से मनअ फ़रमाया गया था फिर वही करते है जिसकी मुमानअत हुई थी और आपस में गुनाह और हद

مَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَاِذَا جَآءُوْكَ
حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَ
يَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا
اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ
يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ
فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا
بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝
اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا
اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ
تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ
اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا
يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ
وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

से बढ़ने और रसूल की नाफ़रमानी के मश्वरे करते हैं और जब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं तो उन लफ़्ज़ों से तुम्हे मुजरा करते है जो लफ़्ज़ अल्लाह ने तुम्हारे एअ्ज़ाज़ में न कहे और अपने दिलों में कहते हैं हमें अल्लाह अज़ाब क्यों नही करता हमारे इस कहने पर उन्हें जहन्नम बस है उसमें धसें गे तो क्या ही बुरा अंजाम।

९. ऐ ईमान वालो तुम जब आपस में मश्वरत करो तो गुनाह और हद से बढ़ने और रसूल की नाफ़रमानी की मश्वरत न करो और नेकी और परहेज़गारी की मश्वरत करो और अल्लाह से डरो जिस की तरफ़ उठाए जाओगे।

१० वो मश्वरत तो शैतान ही की तरफ़ से है इस लिये कि ईमान वालों को रंज दे और वो उनका कुछ न बिगाड़ सकता बेहुक्मे खुदा के और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए।

११. ऐ ईमान वालो जब तुम से कहा जाए मजलिसों में जगह दो तो जगह दो अल्लाह तुम्हे जगह दे गा और जब कहा जाए उठ खड़े हो तो उठ खड़े हो अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उनके जिन को इल्म दिया गया दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा और अल्लाह को तुम्हारे कामों की खबर है।

१२. ऐ ईमान वालो जब तुम रसूल से कोई बात आहिस्ता अर्ज़ करना चाहो तो अपनी अर्ज़ से पहले कुछ सदक़ा दे लो ये तुम्हारे लिए बेहतर और बहुत सुथरा है फिर अगर तुम्हे मक़दूर न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

१३. क्या तुम इस से डरे कि तुम अपनी अर्ज़ से पहले कुछ सदक़े दो फिर जब तुम ने ये न किया और अल्लाह ने अपनी मेहर से तुम पर रूजूअ फ़रमाई तो नमाज़ क़ाएम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल के फ़रमाँबरदार रहो और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।

१३. क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ऐसों के दोस्त हुए जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है वो न तुम में से न उन मे से वो दानिस्ता झूटी क़सम खाते है।

रुकूअ ३

१५. अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है बेशक वो बहुत ही बुरे काम करते है।

१६. उन्हों ने अपनी कसमों को ढाल बना लिया है तो अल्लाह की राह से रोका तो उनके लिए ख़्वारी का अज़ाब है।

१७. उनके माल और उनकी अवलाद अल्लाह के सामने उन्हे कुछ काम न

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ
الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ
نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ
وَاَطْهَرُ ۭ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾
ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ
نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ۭ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا
وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ
ع وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا
غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۭ مَا هُمْ مِّنْكُمْ
وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ
وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۭ اِنَّهُمْ
سَاۗءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾
اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾
لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ
اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا ۭ اُولٰۗىِٕكَ

देंगे वो दोज़खी है उन्हें उसमें हमेशा रहना।

१८. जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा तो उसके हुज़ूर भी ऐसे ही क़समें खाएंगे जैसी तुम्हारे सामने खा रहे है और वो ये समझते हैं कि उन्हों ने कुछ किया सुनते हो बेशक वही झूटे है।

१९. उन पर शैतान ग़ालिब आ गया तो उन्हें अल्लाह की याद भुला दी वो शैतान के गरोह हैं सुनता है बेशक शैतान ही का गरोह हार में है।

२०. बेशक वो जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करतें है वो सब से ज़्यादा ज़लीलों में है।

२१. अल्लाह लिख चुका कि ज़रूर मैं ग़ालिब आऊंगा और मेरे रसूल बेशक अल्लाह कूव्वत वाला इज़्ज़त वाला है।

२२. तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते है अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त की अगरचे वो उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबे वाले हों ये है जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद की और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहे उनमें हमेशा रहें अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी ये अल्लाह को जमाअत है सुनता है अल्लाह ही

اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ
كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ
عَلٰى شَيْءٍ ۚ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾
اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ
ذِكْرَ اللّٰهِ ۚ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۚ اَلَآ
اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ
اُولٰٓئِكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾
كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾
لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ
اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ۚ
اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ
وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ۚ وَيُدْخِلُهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ
رَضُوْا عَنْهُ ۚ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۚ اَلَآ

ع إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

سُورَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلَاثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾
هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ
مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا ۖ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ
مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَاهُمُ
اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا ۖ وَقَذَفَ
فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ ۚ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ
بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا
يَا أُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٢﴾
وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ
لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿٣﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ
وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ﴿٤﴾
مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا

की जमाअत कामयाब है।

सूरए हश्र

मदनी है इसमें चौबीस आयतें और तीन रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

१. आल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

२. वही है जिस ने उन काफ़िर किताबियों को उनके घरों से निकाला उनके पहले हश्र के लिए तुम्हें गुमान न था कि वो निकलें गे और वो समझते थे कि उनके क़िल्अे उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे तो अल्लाह का हुक्म उनके पास आया जहाँ से उनका गुमान भी न था और उस ने उनके दिलों में रोअ्ब डाला कि अपने घर वीरान करते हैं अपने हाथों और मुसलमानों के हाथों तो इबरत लो ऐ निगाह वालो।

३. और अगर न होता कि अल्लाह ने उनपर घर से उजड़ना लिख दिया था तो दुनिया ही में उन पर अज़ाब फ़रमाता और उनके लिए आख़िरत में आग का अज़ाब है।

४. ये इस लिए कि वो अल्लाह से और उसके रसूल से फटे (जुदा) रहे और जो अल्लाह और उसके रसूल से फटा रहे तो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

५. जो दरख़्त तुम ने काटे या उनकी जड़ों पर क़ाएम छोड़ दिए ये

قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ
وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

सब अल्लाह की इजाज़त से था और इस लिए कि फ़ासिक़ों को रुसवा करे।

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ
فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ
وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ
عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦

६. और जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को उन से तो तुमने उन पर न अपने घोड़े दौड़ाए थे और न ऊँट हाँ अल्लाह अपने रसूलों के क़ाबू में दे देता है जिसे चाहे और अल्लाह सब कुछ कर सकता है।

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ
اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَ
لِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ
بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ
الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ
فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝٧

७. जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को शहर वालों से वो अल्लाह और रसूल की है और रिश्तेदारों और यतीमों और मिसकीनों और मुसाफ़िरों के लिए कि तुम्हारे अग़निया का माल न जाए और जो कुछ तुम्हें रसूल अता फ़रमाएं वो लो और जिस से मनअ फ़रमाएं बाज़ रहो और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ
فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الصّٰدِقُوْنَ ۝٨

८. उन फ़क़ीर हिजरत करने वालों के लिए जो अपने घरों और मालों से निकाले गए अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रज़ा चाहते और अल्लाह व रसूल की मदद करते वही सच्चे है।

९. और जिन्हों ने पहले से इस शहर और ईमान में घर बना लिया दोस्त रखते हैं उन्हें जो उनकी तरफ़ हिजरत करके गए और अपने दिलों में कोई हाजत नहीं पाते उस चीज़ की जो दिए गए और अपनी जानों पर उनको तरजीह देते है अगरचे उन्हे शदीद मोहताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वही कामयाब है।

१०. और वो जो उनके बाद आए अर्ज़ करते है ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाईयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की तरफ़ से कीना न रख ऐ हमारे रब बेशक तू ही निहायत मेहरबान रहम वाला है।

रुकूअ २

११. क्या तुम ने मुनाफ़िक़ों को न देखा कि अपने भाईयों काफ़िर किताबियों से कहते है कि अगर तुम निकाले गए तो ज़रूर हम तुम्हारे साथ निकल जाएँगे और हरगिज़ तुम्हारे बारे में किसी की न मानेंगे और तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करें गे और अल्लाह गवाह है कि वो झूटे है।

१२. अगर वो निकाले गए तो ये उनके साथ न निकलेंगे और उन से लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद न करेंगे

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ
مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ
اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى
اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ
وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۝٩
وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ
سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ
قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ
اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝١٠ ع ٢
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ
لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ
مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا
اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۗ
وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١١
لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ
وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَ

अगर उनकी मदद की भी तो ज़रूर पीठ फेर कर भागें गे फिर मदद न पाएँगे।

१३. बेशक उनके दिलों में अल्लाह से ज़्यादा तुम्हारा डर है ये इस लिए कि वो नासमझ लोग हैं।

१४. ये सब मिल कर भी तुम से न लड़ेंगे मगर क़िला बन्द शहरों में या धुस्सों (शहरे पनाह) के पीछे आपस में उनकी आंच (जंग) सख़्त है तुम उन्हें एक जत्था समझो गे और उनके दिल अलग अलग हैं ये इस लिए कि वो बे अक़्ल लोग हैं।

१५. उनकी सी कहावत जो अभी क़रीब ज़माने में उनसे पहले थे उन्हों ने अपने काम का वबाल चखा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

१६. शैतान की कहावत जब उस ने आदमी से कहा कुफ़्र कर फिर जब उसने कुफ़्र कर लिया बोला मैं तुझ से अलग हूँ मैं अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जहान का रब।

१७. तो उन दोनों का अंजाम ये हुआ कि वो दोनों आग में हैं हमेशा उसमें रहें और ज़ालिमों की यही सज़ा है।

रुकूअ ३

१८. ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और हर जान देखे कि कल के लिए क्या आगे भेजा और अल्लाह से

لَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ
لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾
لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ
مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾
لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى
مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ
بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا
وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾
كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا
ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾
كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ
اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ
إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾
فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ
خَالِدَيْنِ فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاءُ
ع الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ
نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ

डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामो की ख़बर है।

१९. और उन जैसे न हो जो अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हे बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहीं वही फ़ासिक़ हैं।

२०. दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं जन्नत वाले ही मुराद को पहुँचे।

२१. अगर हम ये कुरआन किसी पहाड़ पर उतारते तो ज़रूर तू उसे देखता झुका हुआ पाश पाश होता अल्लाह के खौफ़ से और ये मिसालें लोगों के लिए हम बयान फ़रमाते हैं कि वो सोचें।

२२. वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअबूद नही हर निहाँ व अयाँ का जानने वाला वही है बड़ा मेहरबान रहम वाला।

२३. वही है अल्लाह जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं बादशाह निहायत पाक सलामती देने वाला अमान बख़्शने वाला हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इज़्ज़त वाला अज़मत वाला तकब्बुर वाला अल्लाह को पाकी है उनके शिर्क से।

२४. वही है अल्लाह बनानेवाला पैदा करने वाला हर एक को सूरत देने वाला उसी के है सब अच्छे नाम उसकी

إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾
وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ
فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾
لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ
الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ
الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾
لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ
لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ
خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ
نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَالِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۖ هُوَ الرَّحْمَٰنُ
الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ
الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ
الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ
سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾
هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ ۖ
لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ يُسَبِّحُ لَهُ

पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

सूरए मुम्तहिनह

मदनी है इसमें तेरह आयतें और दो रुकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. ऐ ईमान वालो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम उन्हें खबरें पहुंचाते हो दोस्ती से हालांकि वो मुनकिर हैं उस हक़ के जो तुम्हारे पास आया घर से जुदा करते हैं रसूल को और तुम्हें उस पर कि तुम अपने रब (अल्लाह) पर ईमान लाए अगर तुम निकले हो मेरी राह में जिहाद करने और मेरी रज़ा चाहने को तो उनसे दोस्ती न करो तुम उन्हें खुफ़िया प्याम महब्बत का भेजते हो और मैं खूब जानता हूँ जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो और तुम में जो ऐसा करे बेशक वो सीधी राह से बहका।

२. अगर तुम्हें पाएं तो तुम्हारे दुश्मन होंगे और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ और अपनी ज़ुबानें बुराई के साथ दराज़ करेंगे और उनकी तमन्ना है कि किसी तरह तुम काफ़िर हो जाओ।

३. हरगिज़ काम न आएं गे तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी अवलाद क़यामत के दिन तुम्हें उन से अलग कर देगा और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ ... آيَاتُهَا ١٣ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ
وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ
بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ
مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ
اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ۗ اِنْ كُنْتُمْ
خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ
مَرْضَاتِيْ ۗ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ
وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ۗ
وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ
سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١﴾
اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّ
يَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ
بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٢﴾
لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣﴾

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
فِيٓ إِبْرٰهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُۥٓ إِذْ
قَالُوا۟ لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءَٰٓؤُا۟ مِنكُمْ وَ
مِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ
الْعَدَٰوَةُ وَالْبَغْضَآءُ أَبَدًا حَتَّىٰ
تُؤْمِنُوا۟ بِاللَّهِ وَحْدَهُۥٓ إِلَّا قَوْلَ
إِبْرٰهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ
وَمَآ أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن شَىْءٍ
رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا
وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ④

४. बेशक तुम्हारे लिए अच्छी पैरवी थी इब्राहीम और उसके साथ वालों में जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा बेशक हम बेज़ार है तुम से और उन से जिन्हे अल्लाह के सिवा पूजते हो हम तुम्हारे मुन्किर हुए और हम में और तुम मे दुश्मनी और अदावत ज़ाहिर हो गई हमेशा के लिए जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ मगर इब्राहीम का अपने बाप से कहना कि मैं ज़रूर तेरी मग़फ़िरत चाहूँगा और मैं अल्लाह के सामने तेरे किसी नफ़अ का मालिक नहीं ऐ हमारे रब हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रूजूअ लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟
وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ⑤

५. ऐ हमारे रब हमें काफ़िरों की आज़माइश में न डाल और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब बेशक तू ही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
لِّمَن كَانَ يَرْجُوا۟ اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْءَاخِرَ ۚ
وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِىُّ
الْحَمِيدُ ⑥ ع

६. बेशक तुम्हारे लिए उनमें अच्छी पैरवी थी उसे जो अल्लाह और पिछले दिन का उम्मीदवार हो और जो मुँह फेरे तो बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब खूबीयों सराहा।

रुकूअ २

عَسَى اللَّهُ أَن يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ
وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُم

७. करीब है कि अल्लाह तुम में और उन में जो उन में से तुम्हारे दुश्मन है दोस्ती कर दे और अल्लाह

مَّوَدَّةً ۚ وَاللّٰهُ قَدِيرٌ ۚ وَاللّٰهُ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝٧
لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ
يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ
مِّنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا
إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝
إِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ
فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ
وَظٰهَرُوا عَلٰى إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ
وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولٰئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُونَ ۝٩
يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ
الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ
اللّٰهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۖ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ
مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى
الْكُفَّارِ ۖ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ
يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَآتُوهُمْ مَّا أَنْفَقُوا ۚ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ
إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا
بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوا مَا أَنْفَقْتُمْ

क़ादिर है और बख़्शने वाला मेहरबान।

८. अल्लाह तुम्हें उन से मनअ़ नहीं करता जो तुम से दीन में न लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से न निकाला कि उनके साथ एहसान करो और उन से इन्साफ़ का बरताओ बरतो बेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को महबूब हैं।

९. अल्लाह तुम्हें उन्हीं से मनअ़ करता है जो तुम से दीन में लड़े या तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला या तुम्हारे निकालने पर मदद की कि उन से दोस्ती करो और जो उन से दोस्ती करे तो वही सितमगार हैं।

१०. ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें कुफ़्रिस्तान से अपने घर छोड़कर आएं तो उनका इम्तेहान करो अल्लाह उनके ईमान का हाल बेहतर जानता है फिर अगर तुम्हें ईमान वालियाँ मअ़लूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो न ये उन्हें हलाल न वो इन्हें हलाल और उनके काफ़िर शौहरों को देदो जो उनका ख़र्च हुआ और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन से निकाह कर लो जब उनके महर उन्हें दो और काफ़िरनियों के निकाह पर जमे न रहो और माँग लो जो तुम्हारा ख़र्च हुआ और काफ़िर माँग लें जो उन्हों ने ख़र्च किया ये

अल्लाह का हुक्म है वो तुम में फ़ैसला फ़रमाता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

११. और अगर मुसलमानों के हाथ से कुछ औरतें काफ़िरो कि तरफ़ निकल जाएँ फिर तुम काफ़िरों को सज़ा दो तो जिन की औरतें जाती रही थी ग़नीमत में से उन्हें उतना दे दो जो उनका ख़र्च हुआ था और अल्लाह से डरो जिस पर तुम्हें ईमान है ।

१२. ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मुसलमान औरतें हाज़िर हों उस पर बैअत करने को कि अल्लाह का कुछ शरीक न ठहराएँ गी और न चोरी करें गी और न बदकारी और न अपनी अवलाद को क़त्ल करेंगी और न वो बोहतान लाएँगी जिसे अपने हाथों और पावं के दर्मियान यअनी मौज़अ़ए विलादत में उठाई और किसी नेक बात मे तुम्हारी नाफ़रमानी न करें गी तो उन से बैअत लो और अल्लाह से उनकी मग़फ़िरत चाहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

१३. ऐ ईमान वालो उन लोगों से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है वो आख़िरत से आस तोड़ बैठे है जैसे काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्र वालों से।

وَلْيَسْـَٔلُوا مَا أَنفَقُوا ذَٰلِكُمْ حُكْمُ
اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ۝١٠
وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ
إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ
ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ
مُؤْمِنُونَ ۝١١
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ
يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ
شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَ
لَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ
بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ
وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي
مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ
اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝١٢
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا
غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا
مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ
مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝١٣

सूरए सफ़

मदनी है और इसमें चौदह आयतें और दो रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

२. ऐ ईमान वालो क्यों कहते हो वो जो नहीं करते।

३. कैसी सख़्त नापसन्द है अल्लाह को वो बात कि वो कहो जो न करो।

४. बेशक अल्लाह दोस्त रखता है उन्हें जो उसकी राह में लड़ते हैं परा (सफ़) बांध कर गोया वो इमारत है रांगा पिलाई (सीसा पिलाई दीवार)।

५. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे क्यों सताते हो हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ फिर जब वो टेढ़े हुए अल्लाह ने उनके दिल टेढ़े कर दिये और अल्लाह फ़ासिक़ लोगों को राह नहीं देता।

६. और याद करो जब ईसा बिन मरयम ने कहा ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ अपने से पहली किताब तौरेत की तस्दीक़ करता हुआ और उन रसूल

سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ
مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ②
كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ أَنْ تَقُوْلُوْا مَا
لَا تَفْعَلُوْنَ ③
إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ
مَّرْصُوْصٌ ④
وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ
تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ أَنِّيْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوْٓا
أَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤
وَإِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ
إِسْرَآءِيْلَ إِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ
مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ
التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا ۢ بِرَسُوْلٍ يَّأْتِيْ

कि बिशारत सुनाता हुआ जो मेरे बाद तशरीफ़ लाएँगे उनका नाम अहमद है फिर जब अहमद उनके पास रौशन निशानियाँ ले कर तशरीफ़ लाए बोले ये खुला जादू है।

७. और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे हालांकि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो और ज़ालिम लोगों को अल्लाह राह नहीं देता।

८. चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने मुँहों से बुझा दें और अल्लाह को अपना नूर पूरा करना पड़े बुरा मानें काफ़िर।

९. वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे पड़े बुरा मानें मुश्रिक।

रुकूअ २

१०. ऐ ईमान वालो क्या मैं बता दूँ वो तिजारत जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले।

११. ईमान रखो अल्लाह और उसके रसूल पर और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।

१२. वो तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवाँ और पाकीज़ा महलों में जो बसने के बाग़ों में है यही बड़ी

مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝٦
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى
اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى
الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ۝٧
يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ
وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝٨
هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ
وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ
كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝٩
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ
عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ
أَلِيمٍ ۝١٠
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۚ
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝١١
يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ

कामयाबी है।
१३. और एक नेअ्मत तुम्हें और देगा जो तुम्हें प्यारी है अल्लाह की मदद और जल्द आने वाली फ़तह और ऐ महबूब मुसलमानों को खुशी सुना दो।
१४. ऐ ईमान वालो दीने-खुदा के मददगार हो जैसे ईसा बिन मरयम ने हवारियों से कहा था कौन है जो अल्लाह की तरफ़ हो कर मेरी मदद करे हवारी बोले हम दीने खुदा के मददगार हैं तो बनी इसराईल से एक गरोह ईमान लाया और एक गरोह ने कुफ्र किया तो हम ने ईमान वालों को उनके दुश्मनों पर मदद दी तो ग़ालिब हो गए।

सूरए जुमअ्

मदनी है इसमें ग्यारह आयतें और दो रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. अल्लाह को पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है बादशाह कमाल पाकी वाला इज़्ज़त वाला हिक्मत वाला।
२. वही है जिस ने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा कि उन पर उसकी आयतें पढ़ते हैं और उन्हें पाक करते हैं और उन्हें किताब और हिक्मत का इल्म अता फ़रमाते हैं और बेशक वो इससे पहले ज़रूर खुली गुमराही में थे।
३. और उन में से औरों को पाक

طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾
وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ۚ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ
فَتْحٌ قَرِيْبٌ ۚ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ
اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ۚ
قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ
فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ
وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا
ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾
هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا
مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ
كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢﴾

وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣
ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٤
مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ
يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ
بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝٥
قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ
اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ
فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝٦
وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧
قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ
فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
غ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ ع
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِىَ

करते और इल्म अता फ़रमाते हैं जो उन अगलों से न मिले और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है।

४. ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

५. उनकी मिसाल जिन पर तौरेत रखी गई थी फिर उन्हों ने उसकी हुक्म बरदारी न की गधे की मिसाल है जो पीठ पर किताबें उठाए क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने अल्लाह की आयतें झुटलाईं और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता।

६. तुम फ़रमाओ ऐ यहूदियो अगर तुम्हें ये गुमान है कि तुम अल्लाह के दोस्त हो और लोग नहीं तो मरने की आरज़ू करो अगर तुम सच्चे हो।

७. और वो कभी उसकी आरज़ू न करेंगे उन कोतकों के सबब जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं और अल्लाह ज़ालिमों को जानता है।

८. तुम फ़रमाओ वो मौत जिस से तुम भागते हो वो तो ज़रूर तुम्हें मिलनी है फिर उसकी तरफ़ फेरे जाओगे जो छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है फिर वो तुम्हें बता देगा जो तुम ने किया था।

रुकूअ २

९. ऐ ईमान वालो जब नमाज़ की अज़ान हो जुमअ् के दिन तो अल्लाह

के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो और ख़रीद फ़रोख़्त छोड़ दो ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो ।

१०. फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और अल्लाह को बहुत याद करो इस उम्मिद पर कि फ़लाह पाओ।

११. और जब उन्हों ने कोई तिजारत या खेल देखा उसकी तरफ़ चल दिए और तुम्हें ख़ुत्बे में खड़ा छोड़ गए तुम फ़रमाओ वो जो अल्लाह के पास है खेल से और तिजारत से बेहतर है और अल्लाह का रिज़्क़ सब से अच्छा।

सूरए मुनाफ़िक़ून

मदनी है इसमें ग्यारह आयतें और दो रुकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हुज़ूर बेशक यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह जानता है कि तुम उसके रसूल हो और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ ज़रूर झूटे हैं।

२. और उन्हों ने अपनी क़समो को ढाल ठहरा लिया तो अल्लाह की राह से रोका बेशक वो बहुत ही बुरे काम करते हैं।

३. ये इस लिए के वो ज़बान से

الصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا
اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩
فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا
فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ
اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ۝١٠
وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْٓا
اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَاۗىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ
اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۭ
وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١ ع

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَاۗءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ
اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ
لَرَسُوْلُهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۝١
اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢

ईमान लाए फिर दिल से काफ़िर हुए तो उनके दिलों पर मुहर कर दि गई तो अब वो कुछ नहीं समझते।

४. और जब तू उन्हे देखे उनके जिस्म तुझे भले मअलूम हो और अगर बात करे तो तू उनकी बात ग़ौर से सुने गोया वो कड़ियाँ है दीवार से टिकाई हुई हर बुलन्द आवाज़ अपने ही ऊपर ले जाते है वो दुश्मन है तो उन से बचते रहो अल्लाह उन्हे मारे कहाँ औंधे जाते हैं।

५. और जब उन से कहा जाए कि आओ रसूलुल्लाह तुम्हारे लिए मुआफ़ी चाहे तो अपने सर घुमाते है और तुम उन्हे देखो कि ग़ौर करते हुए मुँह फेर लेते है।

६. उन पर एक सा है तुम उनकी मुआफ़ी चाहो या न चाहो अल्लाह हरगिज़ उन्हे ना बख़्शेगा बेशक अल्लाह फ़ासिको, को राह नही देता।

७. वही है जो कहते हैं कि उन पर ख़र्च न करो जो रसूलुल्लाह के पास है यहाँ तक कि परेशान हो जाएँ और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने मगर मुनाफ़िक़ो को समझ नहीं।

८. कहते है हम मदीना फिर कर गए तो ज़रूर जो बड़ी इज़्ज़त वाला है वो उसमे से निकाल देगा उसे जो

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا
فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٣﴾
وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ۚ
وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۚ كَاَنَّهُمْ
خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۚ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ
صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ
قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٤﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ
يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٥﴾
سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ
اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۚ لَنْ يَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَهُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٦﴾
هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا
عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ
حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ۚ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٧﴾
يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ

निहायत ज़िल्लत वाला है और इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों ही के लिए है मगर मुनाफ़िक़ों को ख़बर नहीं।

रुकूअ २

९. ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हरी अवलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वही लोग नुक़्सान में हैं।

१०. और हमारे दिए में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल इसके कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यों मुहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता।

११. और हरगिज़ अल्लाह किसी जान को मुहलत न देगा जब उसका वअ्दा आ जाए और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

सूरए तग़ाबुन

मदनी है और इसमें अट्ठारह आयतें और दो रुकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में उसी का मुल्क है और उसी की तअ्रीफ़ और वो हर चीज़ पर कादिर है।

२. वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया तो तुम में कोई काफ़िर और तुम में कोई मुसलमान और अल्लाह तुम्हारे

لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ
وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ
ع وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ
وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَ
مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩﴾
وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ
رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ
فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾
وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ
ع اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ ... اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾
هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ
كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا

काम देख रहा है।

३. उसने आसमान और ज़मीन हक़ के साथ बनाए और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई और उसीकी तरफ़ फिरना है।

४. जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो और अल्लाह दिलों की बात जानता है।

५. क्या तुम्हें उनकी ख़बर न आई जिन्हों ने तुम से पहले कुफ़्र किया और अपने काम का वबाल चखा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

६. ये इस लिए कि उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लाते तो बोले क्या आदमी हमें राह बताएँगे तो काफ़िर हुए और फिर गए और अल्लाह ने बेनियाज़ी को काम फ़रमाया और अल्लाह बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा।

७. काफ़िरों ने बका कि वो हरगिज़ न उठाए जाएँगे तुम फ़रमाओ क्यों नहीं मेरे रब की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओ गे फिर तुम्हारे कौतक तुम्हें जता दिए जाएँगे और ये अल्लाह को आसान है।

८. तो ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल और उस नूर पर जो हम ने उतारा और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢﴾
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ
وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَ
اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤﴾
اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ
قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٥﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫
فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۭ
وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٦﴾
زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ
قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ
لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۭ وَذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧﴾
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ
اَنْزَلْنَا ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٨﴾

९. जिस दिन तुम्हें इकट्ठा करे गा सब जमअ् होने के दिन वो दिन है हार वालों की हार खुलने का और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे अल्लाह उसकी बुराईयाँ उतार देगा और उसे बाग़ों मे ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें कि वो हमेशा उनमें रहें यही बड़ी कामयाबी है।

१०. और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाई वो आग वाले हैं हमेशा उसमें रहें और क्या ही बुरा अंजाम।

रुकूअ २

११. कोई मुसीबत नही पहुँचती मगर अल्लाह के हुक्म से और जो अल्लाह पर ईमान लाए अल्लाह उसके दिल को हिदायत फ़रमादेगा और अल्लाह सब कुछ जानता है।

१२. और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुकम मानो फिर अगर तुम मुँह फेरो तो जान लो कि हमारे रसूल पर सिर्फ़ सरीह पहुँचा देना है।

१३. अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं और अल्लाह ही पर ईमान वाले भरोसा करें।

१४. ऐ ईमान वालो तुम्हारी कुछ बीबियाँ और बच्चे तुम्हारे दुश्मन है तो इन से एहतियात रखो और अगर

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ
يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ
وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ
وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ
ع وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٠﴾
مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ
يَهْدِ قَلْبَهٗ ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿١١﴾
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ
فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٢﴾
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ
وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ

وَإِنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑭

मुआफ करो और दरगुज़रो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ⑮

१५. तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑯

१६. तो अल्लाह से डरो जहाँ तक हो सके और फ़रमान सुनो और हुक्म मानो और अल्लाह की राह में ख़र्च करो अपने भले को और जो अपनी जान के लालच से बचाया गया तो वही फ़लाह पाने वाले हैं।

إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ⑰

१७. अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे वो तुम्हारे लिए उसके दूने करदेगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह क़द्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है।

عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑱ ع

१८. हर निहाँ और अयाँ का जानने वाला इज़्ज़त वाला हिकमत वाला।

सूरए तलाक़

سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

मदनी है इसमें बारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ ۖ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ

१. ऐ नबी जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत के वक़्त पर उन्हें तलाक़ दो और इद्दत का शुमार रखो और अपने रब अल्लाह से डरो इद्दत में उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वो आप निकलें मगर

وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ
حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۚ
لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ
بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ①
فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ
بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ
وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۚ ذٰلِكُمْ
يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ②
وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ
وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۚ قَدْ جَعَلَ
اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ③
وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ
نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ
ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ۚ
وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ
يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ

ये कि कोई सरीह बे हयाई की बात लाएं और ये अल्लाह की हदें है और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़ा बेशक उसने अपनी जान पर ज़ुल्म किया तुम्हें नही मअ़लूम नही शायद अल्लाह इसके बाद कोई नया हुक्म भेजे।

२. तो जब वो अपनी मिआ़द तक पहुँचने को हों तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो या भलाई के साथ जुदा करो और अपने में दो सिक़ह को गवाह कर लो और अल्लाह के लिए गवाही क़ाएम करो इस से नसीहत फ़रमाई जाती है उसे जो अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान रखता हो और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिए निजात की राह निकाल देगा।

३. और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ उसका गुमान न हो और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वो उसे काफ़ी है बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है।

४. और तुम्हारी औरतों में जिन्हें हैज़ की उम्मीद न रही अगर तुम्हें कुछ शक हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और उनकी जिन्हें अभी हैज़ न आया और हमल वालियों की मिआ़द ये है कि वो अपना हमल जन लें और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उसके

काम में आसानी फ़रमा देगा।

५. ये अल्लाह का हुक्म है कि उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उसकी बुराइयाँ उतार देगा और उसे बड़ा सवाब देगा।

६. औरतों को वहाँ रखो जहाँ खुद रहते हो अपनी ताक़त भर और उन्हें ज़रर न दो कि उन पर तंगी करो और अगर हमल वालियाँ हों तो उन्हें नान नफ़क़ा दो यहाँ तक कि उनके बच्चा पैदा हो फिर अगर वो तुम्हारे लिए बच्चे को दूध पिलाएं तो उन्हें उसकी उजरत दो और आपस में मअक़ूल तौर पर मश्वरा करो फिर अगर बाहम मुज़ाअक़ा करो (दुश्वार समझो) तो क़रीब है कि उसे और दूध पिलानेवाली मिल जाएगी मक़्दूर वाला।

७. अपने मक़्दूर के क़ाबिल नफ़क़ा दे और जिस पर उसका रिज़्क़ तंग किया गया वो उसमें से नफ़क़ा दे जो उसे अल्लाह ने दिया अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल जितना उसे दिया है क़रीब है अल्लाह दुश्वारी के बाद आसानी फ़रमा देगा।

रुकूअ २

८. और कितने ही शहर थे जिन्हों ने अपने रब के हुक्म और उसके रसूलों से सरकशी की तो हम ने उन से सख़्त हिसाब लिया और उन्हें बुरी मार दी।

يَجْعَل لَّهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ﴿٤﴾
ذَٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۚ وَ
مَن يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَ
يُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ﴿٥﴾
أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنتُم
مِّن وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ
لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُولَاتِ
حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ
لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا
بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن تَعَاسَرْتُمْ
فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ﴿٦﴾
لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَ
مَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنفِقْ
مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ
نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ
ع بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ﴿٧﴾
وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ
رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا
شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾

९. तो उन्हों ने अपने किए का वबाल चखा और उनके काम का अंजाम घाटा हुआ।

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ
أَمْرِهَا خُسْرًا ﴿٩﴾

१०. अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है तो अल्लाह से डरो ऐ अक़्ल वालो वो जो ईमान लाए हो बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए इज़्ज़त उतारी है।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا
فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ الَّذِينَ
آمَنُوا قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ
ذِكْرًا ﴿١٠﴾

११. वो रसूल कि तुम पर अल्लाह की रौशन आयतें पढ़ता है ताकि उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किए अंधेरियों से उजाले की तरफ़ लेजाए और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे वो उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें जिन में हमेशा हमेशा रहें बेशक अल्लाह ने उस के लिए अच्छी रोज़ी रखी।

رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ
مُبَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ
وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا قَدْ
أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ﴿١١﴾

१२. अल्लाह है जिस ने सात आसमान बनाए और उन्हीं के बराबर ज़मीनें हुक्म उनके दर्मियान उतरता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है अल्लाह का इल्म हर चीज़ को मुहीत है।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ
وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ
الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ
قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾

सूरए तहरीम

मदनी है इसमें बारह आयतें और दो रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. ऐ गैब बताने वाले (नबी) तुम अपने उपर क्यों हराम किए लेते हो वो चीज़ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की अपनी बीबियों की मरज़ी चाहते हो और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

२. बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़समों का उतार मुक़र्रर फ़रमा दिया और अल्लाह तुम्हारा मौला है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

३. और जब नबी ने अपनी एक बीबी से एक राज़ की बात फ़रमाई फिर जब वो उसका जिक्र कर बैठी और अल्लाह ने उसे नबी पर ज़ाहिर कर दिया तो नबी ने उसे कुछ जताया और कुछ से चश्मपोशी फ़रमाई फिर जब नबी ने उसे उसकी ख़बर दी बोली हुज़ूर को किस ने बताया फरमाया मुझे इल्म वाले खबरदार ने बताया।

४. नबी की दोनों बीबियो अगर अल्लाह की तरफ़ तुम रूजूअ करो तो ज़रूर तुम्हारे दिल राह से कुछ हट गए है और अगर उन पर ज़ोर बांधो तो बेशक अल्लाह उनका मददगार है और जिबरील और नेक ईमान वाले और उसके बाद फ़रिश्ते मदद पर है।

५. उनका रब क़रीब है अगर वो

سُورَةُ التَّحْرِيمِ مَدَنِيَّةٌ آيَاتُهَا ١٢ رُكُوعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ
لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ①
قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ②
وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ
حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ
اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ
عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ
مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ
الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ③
اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ
قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ
فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ
وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰۤئِكَةُ
بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ④
عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ

तुम्हें तलाक़ देदें कि उन्हें तुम से बेहतर बीबियाँ बदल दे इताअत वालियाँ ईमानवालियाँ अदब वालियाँ तौबा वालियाँ बन्दगी वालियाँ रोज़ादारें ब्याहियाँ और कुंवारियाँ।

६. ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसके ईंधन आदमी और पत्थर हैं उस पर सख़्त कर्रे (ताक़तवर) फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वही करते हैं।

७. ऐ काफ़िरों आज बहाने न बनाओ तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे।

रुकूअ २

८. ऐ ईमान वालो अल्लाह की तरफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीहत हो जाए क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराईयाँ तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नहरें बहें जिस दिन अल्लाह रुसवा न करेगा नबी और उनके साथ के ईमान वालों को उनका नूर दौड़ता होगा उनके आगे और उनके दाहिने अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारा नूर पूरा करदे और हमें बख़्श दे बेशक तुझे हर चीज़ पर क़ुदरत है।

يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ
مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ
عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝٥
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ
وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ
شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٦
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا
الْيَوْمَ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ
ع تَعْمَلُوْنَ ۝٧
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ
تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۭ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ
عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا
يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ
لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ
وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩

९. ऐ ग़ैब बतानेवाले (नबी) काफ़िरों पर और मुनाफ़िक़ों पर जिहाद करो और उन पर सख़्ती फ़रमाओ और उनका ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा अंजाम।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا
امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا
تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ
فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ
اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠

१०. अल्लाह काफ़िरों की मिसाल देता है नूह की औरत और लूत की औरत वो हमारे बन्दों में दो सज़ावारे (लाइक़) कुर्ब बन्दों के निकाह में थी फिर उन्हों ने उनसे दग़ा कि तो वो अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न आए और फ़रमा दिया गया कि तुम दोनों औरतें जहन्नम में जाओ जानेवालों के साथ।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا
امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ
ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ
وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَ
نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١

११. और अल्लाह मुसलमानों की मिसाल बयान फ़रमाता है फ़िरऔन की बीबी जब उसने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बनाऔर मुझे फ़िरऔन और उसके काम से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगों से निजात बख़्श।

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ
اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ
مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ
رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ
الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢

१२. और इमरान की बेटी मरयम जिस ने अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त की तो हम ने उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूँकी और उस ने अपने रब की बातों और उसकी किताबों की तस्दीक़ की और फ़रमाँबरदारों में हुई।

सूरए मुल्क

मक्की है इसमें तीस आयतें और दो रुकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. बड़ी बरकत वाला है वो जिसके क़बज़े में सारा मुल्क और वो हर चीज़ पर क़ादिर है।

२. वो जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जाँच हो तुम में किसका काम ज़्यादा अच्छा है और वही इज़्ज़त वाला बख़्शिश वाला है।

३. जिस ने सात आसमान बनाए एक के उपर दूसरा तू रहमान के बनाने में क्या फ़र्क़ देखता है तू निगाह उठा कर देख तुझे कोई रख़्ना नज़र आता है।

४. फिर दोबारा निगाह उठा नज़र तेरी तरफ़ नाकाम पलट आए गी थकी माँदी।

५. और बेशक हम ने नीचे के आसमान को चिराग़ों से आरास्ता किया और उन्हें शैतानों के लिए मार किया और उनके लिए भड़कती आग का अज़ाब तैयार फ़रमाया।

६. और जिन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और क्या ही बुरा अंजाम।

७. जब उसमें डाले जाएंगे उसका रेंकना (चिंघाड़ना) सुनेंगे कि जोश मारती है।

८. मअलूम होता है कि शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई गरोह उसमें डाला जाएगा उसके दारोग़ा

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ ①
الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ
اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ②
الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ
مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ
فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ③
ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ
الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ④
وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاۗءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ
وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ⑤
وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ
جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑥
اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّ
هِيَ تَفُوْرُ ۙ ⑦
تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۭ كُلَّمَآ اُلْقِيَ
فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ

उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनाने वाला न आया था ।

९. कहें गे क्यों नहीं बेशक हमारे पास डर सुनानेवाले तशरीफ़ लाए फिर हम ने झुटलाया और कहा अल्लाह ने कुछ नहीं उतारा तुम तो नहीं मगर बड़ी गुमराही में।

१०. और कहें गे अगर हम सुनते या समझते तो दोज़ख वालों में न होते।

११. अब अपने गुनाह का इकरार किया तो फिटकार हो दोज़खियों को।

१२. बेशक वो जो बे देखे अपने रब से डरते हैं उनके लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है।

१३. और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से वो तो दिलों की जानता है।

१४. क्या वो न जाने जिस ने पैदा किया और वही है हर बारीकी जानता ख़बरदार।

रुकूअ २

१५. वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन राम (ताबेअ) कर दी तो उसके रस्तों में चलो और अल्लाह की रोज़ी में से खाओ और उसी की तरफ़ उठना है।

१६. क्या तुम उससे निडर होगए जिस की सल्तनत आसमान में है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे जभी वो काँपती रहे।

१७. या तुम निडर होगए उस से जिसकी सल्तनत आसमान मे है कि

يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ﴿٨﴾
قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ
أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ﴿٩﴾
وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا
فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿١٠﴾
فَاعْتَرَفُوا بِذَنْبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ
السَّعِيرِ ﴿١١﴾
إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٢﴾
وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٣﴾
أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ
الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾ ع
هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا
فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ
رِزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾
أَأَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ
بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾
أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ

يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾

तुम पर पथराओ भेजे तो अब जानोगे कैसा था मेरा डराना।

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾

१८. और बेशक इनसे अगलों ने झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा इन्कार।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾

१९. और क्या उन्हों ने अपने उपर परिन्दे न देखे पर फैलाते और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता सिवा रहमान के बेशक वो सब कुछ देखता है।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾

२०. या वो कौनसा तुम्हारा लश्कर है कि रहमान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद करे काफ़िर नहीं मगर धोके में।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَلْ لَجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾

२१. या कौनसा ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वो अपनी रोज़ी रोक ले बल्कि वो सरकश और नफ़रत में ढीट बने हुए हैं।

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾

२२. तो क्या वो जो अपने मुँह के बल औंधा चले ज़्यादा राह पर है या वो जो सीधा चले सीधी राह पर ।

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾

२३. तुम फ़रमाओ वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल बनाए कितना कम हक़ मानते हो।

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

२४. तुम फ़रमाओ वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ उठाए जाओगे।

२५. और कहते हैं ये वअ़्दा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो।

२६. तुम फ़रमाओ ये इल्म तो अल्लाह के पास है और मैं तो यही साफ़ डर सुनाने वाला हूँ।

२७. फिर जब उसे पास देखेंगे काफ़िरों के मुँह बिगड़ जाएँगे और उन से फ़रमा दिया जाएगा ये है जो तुम माँगते थे।

२८. तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों को हिलाक कर दे या हम पर रहम फ़रमाए तो वो कौनसा है जो काफ़िरों को दुःख के अज़ाब से बचा लेगा।

२९. तुम फ़रमाओ वही रहमान है हम उस पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया तो अब जान जाओगे कौन खुली गुमराही में है।

३०. तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुबह को तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए तो वो कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता।

सूरए क़लम

मक्की है इसमें बावन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ़ १

१. क़लम और उनके लिखे कि क़सम।

२. तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं।

३. और ज़रूर तुम्हारे लिए बे इन्तिहा सवाब है।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۲۵﴾
قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَاِنَّمَآ
اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۶﴾
فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ
كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿۲۷﴾
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ
مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ
مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۸﴾
قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ
تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۹﴾
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا
فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿۳۰﴾ ع

سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿۱﴾
مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿۲﴾
وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿۳﴾

४. और बेशक तुम्हारी खू-बू (खुल्क) बड़ी शान की है।
وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ④

५. तो अब कोई दम जाता है कि तुम भी देख लोगे और वो भी देख लेंगे।
فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ⑤

६. कि तुम में कौन मजनून था।
بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ⑥

७. बेशक तुम्हारा रब खूब जानता है और जो उसकी राह से बहके और वो खूब जानता है जो राह पर है।
اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ⑦

८. तो झुटलाने वालों की बात न सुनना।
فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ⑧

९. जो तो इस आरज़ू में हैं कि किसी तरह तुम नर्मी करो।
وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ⑨

१०. तो वो भी नर्म पड़ जाएं और हर ऐसे कि बात न सुनना जो बड़ा क़समें खानेवाला ज़लील बहुत तअ्ने देने वाला।
وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ⑩

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ⑪

१२. बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला भलाई से बड़ा रोकने वाला।
مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ⑫

१३. हद से बढ़ने वाला गुनहगार दुरुश्तखू।
عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ⑬

१४. उस सब पर तुर्रा ये कि उसकी अस्ल में ख़ता।
اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ⑭

१५. उस पर कुछ माल और बेटे रखता है जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएँ कहता है कि अगलों की कहानियाँ हैं।
اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ⑮

सَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ⑯

१६. क़रीब है कि हम उसकी सूव्वर की सी थूथनी पर दाग़ देंगे।

१७. बेशक हम ने उन्हें जांचा जैसा उस बाग़ वालों को जांचा था जब उन्हों ने क़सम खाई कि ज़रूर सुबह होते उसके खेत काट लें गे।
اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ⑰

१८. और इन्शा अल्लाह न कहा।
وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ⑱

१९. तो उस पर तेरे रब की तरफ़ से एक फेरी करने वाला फेरा कर गया।
فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ⑲

२०. और वो सोते थे तो सुबह रह गया जैसे फल टूटा हुआ।

२१. फिर उन्हों ने सुबह होते।

२२. एक दूसरे को पुकारा कि तड़के अपनी खेती को चलो अगर तुम्हें काटनी है।

२३. तो चले और आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहते जाते थे कि

हरगिज़ आज कोई मिसकीन तुम्हारे बाग़ में आने न पाए।

२५. और तड़के चले अपने उस इरादा पर कुदरत समझते।

२६. फिर जब उसे देखा बोले बेशक हम रास्ता बहक गए।

२७. बल्कि हम बेनसीब हुए।

२८. उनमें जो सब से ग़नीमत था बोला क्या मैं तुम से नही कहता था कि तस्बीह क्यों नहीं करते।

२९. बोले पाकी है हमारे रब को बेशक हम ज़ालिम थे।

३०. अब एक दूसरे की तरफ़ मलामत करता मुतवज्जह हुआ।

३१. बोले हाए खराबी हमारी बेशक हम सरकश थे।

३२. उम्मीद है हमें हमारा रब इस से बेहतर बदल दे हम अपने रब की तरफ़ रग़बत लाते है।

३३. मार ऐसी होती है और बेशक आख़िरत की मार सब से बड़ी क्या अच्छा था अगर वो जानते।

रुकूअ २

३४. बेशक डर वालों के लिए उनके रब के पास चैन के बाग़ है।

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾
فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾
أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
صَارِمِينَ ﴿٢٢﴾
فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ﴿٢٣﴾
أَنْ لَا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِسْكِينٌ ﴿٢٤﴾
وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ﴿٢٥﴾
فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ﴿٢٦﴾
بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾
قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ
لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾
قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ﴿٣٠﴾
قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طَاغِينَ ﴿٣١﴾
عَسَىٰ رَبُّنَا أَنْ يُبْدِلَنَا خَيْرًا مِنْهَا
إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رَاغِبُونَ ﴿٣٢﴾
كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ
أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾ ع
إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ
النَّعِيمِ ﴿٣٤﴾

३५. क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों का सा करदें।

३६. तुम्हें क्या हुआ कैसा हुक्म लगाते हो।

३७. क्या तुम्हारे लिए कोई किताब है उस में पढ़ते हो।

३८. कि तुम्हारे लिए उसमें जो तुम पसन्द करो।

३९. या तुम्हारे लिए हम पर कुछ क़समें हैं क़यामत तक पहुँचती हुई कि तुम्हें मिलेगा जो कुछ दअ्वा करते हो।

४०. तुम उनसे पूछो उनमें कौनसा उसका ज़ामिन है।

४१. या उनके पास कुछ शरीक हैं तो अपने शरीकों को ले कर आएँ अगर सच्चे हैं।

४२. जिस दिन एक साक़ खोली जाएगी (जिसके मअ्नी अल्लाह ही जानता है) और सज्दा को बुलाए जाएँगे तो न कर सकेंगे।

४३. नीची निगाहे किए हुए उन पर ख़्वारी चढ़ रही होगी और बेशक दुनिया में सज्दा के लिए बुलाए जाते थे जब तंदुरुस्त थे.

४४. तो जो इस बात को झुटलाता है उसे मुझ पर छोड़ दो क़रीब है कि हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता ले जाएँ गे जहाँ से उन्हें ख़बर न होगी।

४५. और मैं उन्हें ढील दूँगा बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर बहुत पक्की है।

४६. या तुम उनसे उजरत माँगते हो कि वो चट्टी के बोझ में दबे हैं।

४७. या उनके पास ग़ैब है कि वो

أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾
مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾
أَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾
إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾
أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾
سَلْهُمْ أَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾
أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ
إِنْ كَانُوا صٰدِقِينَ ﴿٤١﴾
يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ
إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾
خٰشِعَةً أَبْصٰرُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ
وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ
وَهُمْ سٰلِمُونَ ﴿٤٣﴾
فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيثِ
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٤﴾
وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿٤٥﴾
أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ
مُثْقَلُونَ ﴿٤٦﴾
أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤٧﴾

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ
الْحُوتِ إِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾
لَوْلَا أَنْ تَدٰرَكَهُ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهِ
لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾
فَاجْتَبٰهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿٥٠﴾
وَإِنْ يَّكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ
بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ
وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾
وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِينَ ﴿٥٢﴾

سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثِنْتَانِ وَخَمْسُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
الْحَاقَّةُ ﴿١﴾
مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾
وَمَا أَدْرٰىكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾
كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾
فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾
وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ
عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾
سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّ
ثَمٰنِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ

लिख रहे है।

४८. तो तुम अपने रब के हुक्म का इन्तिज़ार करो और उस मछली वाले की तरह न होना जब इस हाल मे पुकारा कि उसका दिल घुट रहा था।

४९. अगर उसके रब की नेअमत उसकी खबर को न पहुंच जाती तो जरूर मैदान पर फेंक दिया जाता इल्ज़ाम दिया हुआ।

५०. तो उसे उसके रब ने चुन लिया और अपने कुर्बे-खास सज़ावारो (हक़दारो) मे कर लिया।

५१. और जरूर काफ़िर तो ऐसे मअलूम होते है कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर तुम्हे गिरा देंगे जब कुरआन सुनते है और कहते है ये ज़रूर अक्ल से दूर हैं।

५२. और वो तो नही मगर नसीहत सारे जहान के लिए।

सूरए हाक्का

मक्की है इसमे बावन आयते और दो रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. वो हक़ होने वाली।

२. कैसी वो हक़ होने वाली।

३. और तुम ने क्या जाना कैसी वो हक़ होने वाली।

४. समूद और आद ने उस सख्त सदमा देने वाली को झुटलाया।

५. तो समूद तो हिलाक किए गए हद से गुज़री हुई चिंघाड से।

६. और रहे आद वो हिलाक किये गए निहायत सख्त गरजती आँधी से।

७. वो उन पर कुव्वत से लगा दी सात रात और आठ दिन लगातार तो उन लोगो

को उनमें देखो बिछड़े हुए गोया वो खजूर के दुन्ड (सूखे तने) हैं गिरे हुए।

فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾

८. तो तुम उनमें किसी को बचा हुआ देखते हो।

فَهَلْ تَرَىٰ لَهُم مِّن بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾

९. और फ़िरऔन और उससे अगले और उलटने वाली बस्तियाँ खता लाए।

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَن قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾

१०. तो उन्हों ने अपने रब के रसूलों का हुक्म न माना तो उसने उन्हें बढ़ी चढ़ी गिरफ़्त से पकड़ा।

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾

११. बेशक जब पानी ने सर उठाया था हम ने तुम्हें कश्ती में सवार किया।

إِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾

१२. कि उसे तुम्हारे लिए यादगार करें और उसे महफ़ूज़ रखें वो कान कि सुनकर महफ़ूज़ रखता हो।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

१३. फिर जब सूर फूंक दिया जाए एक दम।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

१४. और ज़मीन और पहाड़ उठा कर दफ़्अतन चूरा कर दिए जाएँ।

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ﴿١٤﴾

१५. वो दिन है कि हो पड़ेगी वो होने वाली।

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾

१६. और आसमान फट जाएगा तो उस दिन उसका पतला हाल होगा।

وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ﴿١٦﴾

१७. और फ़रिश्ते उस के किनारों पर खड़े हों गे और उस दिन तुम्हारे रब का अर्श अपने उपर आठ फ़रिश्ते उठाएँगे।

وَالْمَلَكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ ﴿١٧﴾

१८. उस दिन तुम सब पेश होगे

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ
فَيَقُولُ هَآؤُمُ ٱقْرَءُوا۟ كِتَٰبِيَهْ ١٩
إِنِّى ظَنَنتُ أَنِّى مُلَٰقٍ حِسَابِيَهْ ٢٠
فَهُوَ فِى عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ٢١
فِى جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ٢٢
قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ٢٣
كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ هَنِيٓـًٔۢا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ
فِى ٱلْأَيَّامِ ٱلْخَالِيَةِ ٢٤
وَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ كِتَٰبَهُۥ بِشِمَالِهِۦ
فَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِى لَمْ أُوتَ كِتَٰبِيَهْ ٢٥
وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ٢٦
يَٰلَيْتَهَا كَانَتِ ٱلْقَاضِيَةَ ٢٧
مَآ أَغْنَىٰ عَنِّى مَالِيَهْ ٢٨
هَلَكَ عَنِّى سُلْطَٰنِيَهْ ٢٩
خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ٣٠
ثُمَّ ٱلْجَحِيمَ صَلُّوهُ ٣١
ثُمَّ فِى سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ
ذِرَاعًا فَٱسْلُكُوهُ ٣٢
إِنَّهُۥ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ ٱلْعَظِيمِ ٣٣
وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ ٱلْمِسْكِينِ ٣٤

कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी।

१९. तो वो जो अपना नामए अअमाल दाहिने हाथ में दिया जाएगा कहेगा तो लो मेरे नामए अअमाल पढ़ो।

२०. मुझे यक़ीन था कि मैं अपने हिसाब को पहुँचूंगा।

२१. तो वो मन मानते चैन में हैं।

२२. बुलन्द बाग़ में।

२३. जिस के ख़ूशे झुके हुए।

२४. खाओ और पियो रचता हुआ सिला उसका जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

२५. और वो जो अपना नामए अअमाल बाएँ हाथ में दिया जाएगा कहे गा हाए किसी तरह मुझे अपना नविश्ता न दिया जाता।

२६. और मै न जानता कि मेरा हिसाब क्या है।

२७. हाए किसी तरह मौत ही क़िस्सा चुका जाती।

२८. मेरे कुछ काम न आया मेरा माल।

२९. मेरा सब ज़ोर जाता रहा।

३०. उसे पकड़ो फिर उसे तौक़ डालो।

३१. फिर उसे भड़कती आग में धसाओ।

३२. फिर ऐसी ज़ंजीरों में जिसका नाप सत्तर हाथ है उसे पिरो दो।

३३. बेशक वो अज़मत वाले

अल्लाह पर ईमान न लाता था।
३४. और मिसकीन को खाना देने की रग़बत न देता।
३५. तो आज यहाँ उसका कोई दोस्त नहीं।
३६. और न कुछ खाने को मगर दोज़ख़ियो का पीप।
३७. उसे न खाऐंगे मगर ख़ताकार।

रुकूअ २

३८. तो मुझे क़सम उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो।
३९. और जिन्हें तुम नहीं देखते।
४०. बेशक ये कुरआॅन एक करम वाले रसूल से बातें हैं।
४१. और वो किसी शाअेर की बात नहीं कितना कम यक़ीन रखते हो।
४२. और न किसी काहिन की बात कितना कम ध्यान करते हो।
४३. उसने उतारा है जो सारे जहान का रब है।
४४. और अगर वो हम पर एक बात भी बना कर कहते।
४५. ज़रूर हम उनसे बक़ूव्वत बदला लेते।
४६. फिर उनकी रगे दिल काट देते।
४७. फिर तुम में कोई उनका बचाने वाला न होता।
४८. और बेशक ये कुरआॅन डर वालों को नसीहत है।
४९. और ज़रूर हम जानते है कि तुम में कुछ झुटलाने वाले है।
५०. और बेशक वो काफ़िरों पर

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۝٣٥
وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۝٣٦
لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ ۝٣٧
فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۝٣٨
وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۝٣٩
اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۝٤٠
وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيْلًا مَّا
تُؤْمِنُوْنَ ۝٤١
وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيْلًا مَّا
تَذَكَّرُوْنَ ۝٤٢
تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٣
وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۝٤٤
لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۝٤٥
ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ۝٤٦
فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ
حٰجِزِيْنَ ۝٤٧
وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٨
وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ۝٤٩
وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٠
وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ۝٥١

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿١﴾

لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ﴿٢﴾

مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ

يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ

سَنَةٍ ﴿٤﴾

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿٥﴾

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ﴿٦﴾

وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ﴿٧﴾

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ﴿١٠﴾

يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ

مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۢ بِبَنِيْهِ ﴿١١﴾

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ﴿١٢﴾

وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُـْٔوِيْهِ ﴿١٣﴾

وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ يُنْجِيْهِ ﴿١٤﴾

हसरत है।

५१. और बेशक वो यक़ीनी हक़ है।

५२. तो ऐ महबूब तुम अपने अज़मत वाले रब की पाकी बोलो।

सूरए मआरिज

मक्की है इसमें चौवालीस आयतें और दो रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. एक माँगने वाला वो अज़ाब माँगता है।

२. जो काफ़िरों पर होने वाला है उसका कोई टालने वाला नहीं।

३. वो होगा अल्लाह की तरफ़ से जो बुलन्दियों का मालिक है।

४. मलाइका और जिब्राईल उसकी बारगाह की तरफ़ उरूज करते हैं वो अज़ाब उस दिन होगा जिसकी मिक़दार पचास हज़ार बरस है।

५. तो तुम अच्छी तरह सब्र करो।

६. वो उसे दूर समझ रहे है।

७. और हम उसे नज़दीक देख रहे है।

८. जिस दिन आसमान होगा जैसे गली चाँदी।

९. और पहाड़ ऐसे हलके हो जाएँगे जैसे ऊन।

१०. और कोई दोस्त किसी दोस्त की बात न पूछेगा।

११. होंगे उन्हें देखते हुए मुजरिम आरज़ू करेगा काश इस दिन के अज़ाब से छुटने के बदले में देदे अपने बेटे।

१२. और अपनी जोरू और अपना भाई।

१३. और अपना कुंबा जिसमें उसकी जगह है।

१४ और जितने ज़मीन में है सब फिर ये बदला देना उसे बचा ले हरगिज़ नहीं।

१५. वो तो भड़कती आग है।

१६. खाल उतार लेने वाली।

१७. बुला रही है उसको जिसने पीठ दी और मुँह फेरा।

१८. और जोड़ कर सेंत रखा (हिफ़ाज़त से रखना) ।

१९. बेशक आदमी बनाया गया है बड़ा बे सब्रा हरीस।

२०. जब उसे बुराई पहुँचे तो सख़्त घबराने वाला।

२१. और जब भलाई पहुँचे तो रोक रखने वाला।

२२. मगर नमाज़ी।

२३. जो अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं।

२४. और वो जिनके माल में एक मअ़लूम हक़ है।

२५. उसके लिए जो माँगे और जो माँग भी न सके तो महरूम रहे।

२६. और वो जो इन्साफ़ का दिन सच जानते हैं।

२७. और वो जो अपने रब के अज़ाब से डर रहे हैं।

२८. बेशक उनके रब का अज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं।

२९. और वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।

३०. अपनी बीबियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों से कि उन पर कुछ मलामत नहीं।

३१. तो जो उन दो के सिवा और

كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿١٥﴾
نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾
تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾
وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ﴿١٨﴾
إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾
إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾
وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾
إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾
الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾
وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾
لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾
وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾
وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم
مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾
إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾
وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾
إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾
فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْعَادُونَ ﴿٣١﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ
رَاعُونَ ﴿٣٢﴾
وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾
ع أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾
فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾
عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾
أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ
يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾
كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾
فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ
إِنَّا لَقَادِرُونَ ﴿٤٠﴾
عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا
نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾
فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ
يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾
يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا
كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ﴿٤٣﴾
خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ
ع ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

चाहे वही हद से बढ़ने वाले हैं।

३२. और वो जो अपनी अमानतों और अपने अहद की हिफ़ाज़त करते है।

३३. और वो जो अपनी गवाहियों पर क़ाएम हैं।

३४. और वो जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते है।

३५. ये हैं जिनका बाग़ों में एअ्ज़ाज़ होगा।

रुकूअ २

३६. तो उन काफ़िरों को क्या हुआ तुम्हारी तरफ़ तेज़ निगाह से देखते है।

३७. दाहिने और बाऐं गरोह के गरोह।

३८. क्या उनमें हर शख़्स ये तमअ् करता है कि चैन के बाग़ में दाखिल किया जाए।

३९. हरगिज़ नहीं बेशक हम ने उन्हें उस चीज़ से बनाया जिसे जानते हैं।

४०. तो मुझे क़सम है उसकी जो सब पूरबों सब पच्छिमों का मालिक है. कि ज़रूर हम क़ादिर हैं।

४१. कि उनसें अच्छे बदल दें और हम से कोई निकल कर नहीं जा सकता।

४२. तो उन्हें छोड़ दो उनकी बेहूदगियों में पड़े और खेलते हुए यहाँ तक कि अपने उस दिन से मिलें जिसका उन्हें वअ्दा दिया जाता है।

४३. जिस दिन क़ब्रों से निकलेंगे झपटते हुए गोया वो निशानों की तरफ़ लपक रहे हैं।

४४. आँखें नीची किये हुए उन पर ज़िल्लत सवार ये है उनका वो दिन

जिसका उन से वअ़दा था।

सूरए नूह

मक्की है इसमें अट्ठाईस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ़ १

१. बेशक हम ने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि उनको डरा इस से पहले कि उन पर दर्दनाक अज़ाब आए।

२. उसने फ़रमाया ऐ मेरी कौम मैं तुम्हारे लिए सरीह डर सुनाने वाला हूँ।

३. कि अल्लाह की बन्दगी करो और उससे डरो और मेरा हुक्म मानो।

४. वो तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श देगा और एक मुक़र्रर मीआद तक तुम्हें मुहलत देगा बेशक अल्लाह का वअ़दा जब आता है हटाया नहीं जाता किसी तरह तुम जानते।

५. अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने अपनी क़ौम को रात दिन बुलाया।

६. तो मेरे बुलाने से उन्हें भागना ही बढ़ा।

७. और मैं ने जितनी बार उन्हें बुलाया कि तू उनको बख़्शे उन्हों ने अपने कानों में उँगलिया दे लीं और अपने कपड़े ओढ़ लिए और हट की और बड़ा गुरूर किया।

८. फिर मैं ने उन्हें एअ़्लानिया बुलाया।

९. फिर मैं ने उन से ब-एअ़्लान भी कहा और आहिस्ता खुफ़िया भी

سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ
قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ①
قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ②
أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَ
أَطِيعُونِ ③
يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا
جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ④
قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَ
نَهَارًا ⑤
فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ⑥
وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ
جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ
وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا
وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ⑦
ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ⑧
ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ

कहा।

१०. तो मैं कहा अपने रब से मुआफ़ी माँगो वो बड़ा मुआफ़ फ़रमाने वाला है।

११. तुम पर शर्राटे (मौसला धार) का मेंह भेजेगा।

१२. और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिए बाग़ बना देगा और तुम्हारे लिए नहरें बनाएगा।

१३. तुम्हें क्या हुआ अल्लाह से इज़्ज़त हासिल करने की उम्मीद नहीं करते।

१४. हालाँकी उसने तुम्हें तरह तरह बनाया।

१५. क्या तुम नही देखते अल्लाह ने क्योंकर सात आसमान बनाए एक पर एक।

१६. और उनमें चाँद को रौशन किया और सूरज को चराग़।

१७. और अल्लाह ने तुम्हें सबज़े की तरह ज़मीन से उगाया।

१८. फिर तुम्हें उसी में ले जाएगा और दोबारा निकाले गा।

१९. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया।

२०. कि उसके वसीअ रास्तों में चलो।

२१. नूह ने अर्ज़ कि ऐ मेरे रब इन्होंने ने मेरी नाफ़रमानी की और ऐसे के पीछे हो लिए जिसे उसके माल और अवलाद ने नुक़सान ही बढ़ाया।

२२. और बहुत बड़ा दाव खेले।

لَهُمْ إِسْرَارًا ⑨
فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ
غَفَّارًا ⑩
يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ⑪
وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ
لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ⑫
مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ⑬
وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ⑭
أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ
سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ⑮
وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ
الشَّمْسَ سِرَاجًا ⑯
وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ⑰
ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ⑱
وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ⑲
لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ⑳
قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي
وَاتَّبَعُوا مَنْ لَمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَ
وَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ㉑
وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ㉒

२३. और बोले हरगिज़ न छोड़ना अपने ख़ुदाओं को और हरगिज़ न छोड़ना वद और सुवाअ और यग़ूस और यऊक़ और नस्र को।

२४. और बेशक उन्हों ने बहुतों को बहकाया और तू ज़ालिमों को ज़्यादा न करना मगर गुमराही।

२५. अपनी कैसी ख़ताओं पर डुबोए गए फिर आग में दाख़िल किए गए तो उन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाया।

२६. और नूह ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।

२७. बेशक अगर तू उन्हे रहने देगा तो तेरे बन्दों को गुमराह करदेंगे और उनकी अवलाद होगी तो वो भी न होगी मगर बदकार बड़ी नाशुक्र।

२८. ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को और उसे जो ईमान केसाथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मर्दों और सब मुसलमान औरतों को और काफ़िरों को न बढ़ा मगर तबाही।

सूरए जिन्न

मक्की है इसमें अट्ठाईस आयतें और दो रुकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. तुम फ़रमाओ मुझे 'वही' हुई कि कुछ जिनों ने मेरा पढ़ना कान लगा कर सुना तो बोले हम ने एक अजीब कुरऑन सुना।

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا
تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا ۙ وَلَا يَغُوثَ
وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾
وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾
مِمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا
نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ
اللَّهِ أَنْصَارًا ﴿٢٥﴾
وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ
مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾
إِنَّكَ إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَ
لَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾
رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ
دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ
إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

سورة الجن مكية وهي ثمان وعشرون آية وفيها ركوعان

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ
مِنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ﴿١﴾

२. कि भलाई की राह बताता है तो हम उस पर ईमान लाए और हम हरगिज़ किसी को अपने रब का शरीक न करेंगे।

३. और ये कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है न उसने औरत इख़्तियार की और न बच्चा।

४. और ये कि हम में का बेवकूफ़ अल्लाह पर बढ़ कर बात कहता था।

५. और ये कि हमें ख़याल था कि हरगिज़ आदमी और जिन्न अल्लाह पर झूट न बांधेंगे।

६. और ये कि आदमियों में कुछ मर्द जिनो के कुछ मर्दों कि पनाह लेते थे तो उससे और भी उनका तकब्बुर बढ़ा।

७. और ये कि उन्हों ने गुमान किया जैसा तुम्हें गुमान है कि अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा।

८. और ये कि हम ने आसमान को छुआ तो उसे पाया कि सख़्त पहरे और आग की चिंगारियों से भर दिया गया है।

९. और ये कि हम पहले आसमान में सुनने के लिये कुछ मौकों पर बैठा करते थे फिर अब जो कोई सुने वो अपनी ताक में आग का लोका (लपेट) पाए।

१०. और ये कि हमें नही मअ्लूम कि ज़मीन वालों से कोई बुराई का इरादा फ़रमाया गया है या उनके रब ने कोई भलाई चाही है।

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ
نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ﴿۲﴾
وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ
صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ﴿۳﴾
وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ
شَطَطًا ۙ﴿۴﴾
وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ
وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ﴿۵﴾
وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ
يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ
رَهَقًا ۙ﴿۶﴾
وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ
يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿۷﴾
وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاۗءَ فَوَجَدْنٰهَا
مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۙ﴿۸﴾
وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ
لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ
شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾
وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي
الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿۱۰﴾

وَاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ
ذٰلِكَ ۚ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ ﴿١١﴾
وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى
الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ ﴿١٢﴾
وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ
فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا
وَّلَا رَهَقًا ۙ ﴿١٣﴾
وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ
فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿١٤﴾
وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ
حَطَبًا ۙ ﴿١٥﴾
وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ
لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ۙ ﴿١٦﴾
لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ
ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۙ ﴿١٧﴾
وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ
اللّٰهِ اَحَدًا ۙ ﴿١٨﴾
وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ
كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ ع
قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّىْ وَلَآ اُشْرِكُ

११. और ये कि हम में कुछ नेक हैं और कुछ दूसरी तरह के हैं हम कई राहें फटे हुए हैं।

१२. और ये कि हम को यक़ीन हुआ कि हरगिज़ ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू से न निकल सकेंगे और न भाग कर उसके क़ब्ज़े से बाहर हों।

१३. और ये कि हम ने जब हिदायत सुनी उस पर ईमान लाए तो जो अपने रब पर ईमान लाए उसे न किसी कमी का ख़ौफ़ और न ज़्यादती का।

१४. और ये कि हम में कुछ मुसलमान हैं और कुछ ज़ालिम तो जो इस्लाम लाए उन्होंने भलाई सोची।

१५. और रहे ज़ालिम वो जहन्नम के ईंधन हुऐ।

१६. और फ़रमाओ कि मुझे ये 'वही' हुई है कि अगर वो राह पर सीधे रहते तो हम ज़रूर उन्हें वाफ़िर पानी देते ।

१७. कि उस पर उन्हें जांचे और जो अपने रब की याद से मुँह फेरे वो उसे चढ़ते अज़ाब में डालेगा।

१८. और ये कि मस्जिदें अल्लाह ही की है तो अल्लाह के साथ किसी कि बन्दगी न करो।

१९. और ये कि जब अल्लाह का बन्दा उसकी बन्दगी करने खड़ा हुआ तो क़रीब था कि वह जिन्न उस पर ठठ के ठठ हो जाएं।

रुकूअ २

२०. तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब ही कि बन्दगी करता हूं और किसी को उसका शरीक नही ठहराता।

२१. तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारे किसी बुरे भले का मालिक नहीं।

२२. तुम फ़रमाओ हरगिज़ मुझे अल्लाह से कोई न बचाएगा और हरगिज़ उसके सिवा कोई पनाह न पाऊँगा।

२३. मगर अल्लाह के पयाम पहुँचाना और उसकी रिसालतें और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने तो बेशक उनके लिए जहन्नम की आग है जिसमें हमेशा हमेशा रहें।

२४. यहाँ तक कि जब देखेंगे जो वअ्दा दिया जाता है तो अब जान जाएँगे कि किसका मददगार कमज़ोर और किसकी गिन्ती कम।

२५. तुम फ़रमाओ मैं नहीं जानता आया नज़दीक है वो जिसका तुम्हें वअ्दा दिया जाता है या मेरा रब उसे कुछ वक़्फ़ा देगा।

२६. ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं करता।

२७. सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के कि उनके आगे पीछे पहरा मुक़र्रर कर देता है।

२८. ताकि देख ले कि उन्हों ने अपने रब के पयाम पहुँचा दिए और जो कुछ उनके पास सब उसके इल्म में है और उसने हर चीज़ कि गिन्ती शुमार कर रखी है।

بِهٖۤ اَحَدًا ﴿٢٠﴾
قُلْ اِنِّیْ لَاۤ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ
لَا رَشَدًا ﴿٢١﴾
قُلْ اِنِّیْ لَنْ یُّجِیْرَنِیْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ
وَّ لَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾
اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِسٰلٰتِهٖ ؕ وَ مَنْ
یَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ
جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ﴿٢٣﴾
حَتّٰۤی اِذَا رَاَوْا مَا یُوْعَدُوْنَ فَسَیَعْلَمُوْنَ
مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّ اَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾
قُلْ اِنْ اَدْرِیْۤ اَقَرِیْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ
اَمْ یَجْعَلُ لَهٗ رَبِّیْۤ اَمَدًا ﴿٢٥﴾
عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖۤ
اَحَدًا ﴿٢٦﴾
اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ
یَسْلُكُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ مِنْ
خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾
لِّیَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ
وَ اَحَاطَ بِمَا لَدَیْهِمْ وَ اَحْصٰی كُلَّ
شَیْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

सूरए मुज़्ज़म्मिल

मक्की है इसमें बीस आयतें और दो रुकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान और रहम वाला

रुकूअ १

१. ऐ झुरमुट मारने वाले।

२. रात में क़ियाम फ़रमा।

३. सिवा कुछ रात के आधी रात या उससे कुछ कम करो।

४. या उस पर कुछ बढ़ाओ और कुरआन खूब ठहर ठहर कर पढ़ो।

५. बेशक अनक़रीब हम तुम पर एक भारी बात डालें गे।

६. बेशक रात का उठना वो ज़्यादा दबाव डालता है और बात खूब सीधी निकलती है।

७. बेशक दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं।

८. और अपने रब का नाम याद करो और सब से टूट कर उसी के हो रहो।

९. वो पूरब का रब और पच्छिम का रब उसके सिवा कोई मअबूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज़ बनाओ।

१०. और काफ़िरों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी तरह छोड़ दो।

११. और मुझ पर छोड़ो उन झुटलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मोहलत दो।

१२. बेशक हमारे पास भारी बेड़ियाँ है और भड़कती आग।

१३. और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अज़ाब।

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ ﴿١﴾

قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ ﴿٢﴾

نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ ﴿٣﴾

اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۭ ﴿٤﴾

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ۭ ﴿٦﴾

اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ۭ ﴿٧﴾

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۭ ﴿٨﴾

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾

وَاصْبِرْ عَلٰي مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿١٠﴾

وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿١١﴾

اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۙ ﴿١٢﴾

وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٣﴾

१४. जिस दिन थर थराएँगे ज़मीन और पहाड़ और पहाड़ हो जाएँगे रेते का टीला बहता हुआ।	يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ﴿١٤﴾
१५. बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजे कि तुम पर हाज़िर नाज़िर है जैसे हम ने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजे।	إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾
१६. तो फ़िरऔन ने उस रसूल का हुक्म न माना तो हम ने उसे सख़्त गिरफ़्त से पकड़ा।	فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ﴿١٦﴾
१७. फिर कैसे बचोगे अगर कुफ्र करो उस दिन जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।	فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٧﴾
१८. आसमान उसके सदमे से फट जाएगा अल्लाह का वअ़्दा हो कर रहना।	السَّمَاءُ مُنفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ﴿١٨﴾
१९. बेशक ये नसीहत है तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले।	إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾ ع
रूकूअ २	
२०. बेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम क़याम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई और एक जमाअत तुम्हारे साथ वाली और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है उसे मअ़्लूम है कि ऐ मुसलमानो तुम से रात का शुमार न हो सकेगा तो उसने अपनी मेहर से तुम पर रूजूअ फ़रमाई अब क़ुरऑन में से जितना तुम पर आसान	إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي

हो उतना पढ़ो उसे मअलूम है कि अनक़रिब कुछ तुम में से बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में सफ़र करेंगे अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने और कुछ अल्लाह की राह में लड़ते होंगे तो जितना कुरऑन मुयस्सर हो पढ़ो और नमाज़ क़ाएम रखो और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो और अपने लिए जो भलाई आगे भेजो गे उसे अल्लाह के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे और अल्लाह से बख़्शिश माँगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

सूरए मुद्दस्सिर

मक्की है इसमें छप्पन आयते और दो रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान और रहम वाला

रुकूअ १

१. ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले।
२. खड़े हो जाओ।
३. फिर डर सुनाओ और अपने रब ही की बड़ाई बोलो।
४. और अपने कपड़े पाक रखो।
५. और बुतों से दूर रहो।
६. और ज़्यादा लेने की निय्यत से किसी पर एहसान न करो।
७. और अपने रब के लिए सब्र किए रहो।
८. फिर जब सूर फूँका जाएगा।
९. तो वो दिन कर्रा (सख़्त) दिन है।

الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ
وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ
فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ
قَرْضًا حَسَنًا ۭ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ
مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا
وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۭ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۭ
ع اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتٌّ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ ﴿١﴾
قُمْ فَاَنْذِرْ ۙ ﴿٢﴾
وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۙ ﴿٣﴾
وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۙ ﴿٤﴾
وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۙ ﴿٥﴾
وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۙ ﴿٦﴾
وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۭ ﴿٧﴾
فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۙ ﴿٨﴾
فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۙ ﴿٩﴾
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ﴿١٠﴾

१०. काफ़िरों पर आसान नहीं।
११. उसे मुझ पर छोड़ो जिसे मैं ने अकेला पैदा किया।
१२. और उसे वसीअ माल दिया।
१३. और बेटे दिए सामने हाज़िर रहते।
१४. और मैं ने उस के लिए तरह तरह की तैयारियाँ कीं।
१५. फिर ये तमअ करता है कि मैं और ज़्यादा दूँ।
१६. हरगिज़ नहीं वो तो मेरी आयतों से अ़ेनाद रखता है।
१७. करीब है कि मैं उसे आग के पहाड़ सऊद पर चढ़ाऊँ।
१८. बेशक वो सोचा और दिल में कुछ बात ठहराई।
१९. तो उस पर लअ़नत हो कैसी ठहराई।
२०. फिर उस पर लअ़नत हो कैसी ठहराई।
२१. फिर नज़र उठा कर देखा।
२२. फिर तेवरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ा।
२३. फिर पीठ फेरी और तकब्बुर किया।
२४. फिर बोला ये तो वही जादू है अगलों से सीखा।
२५. ये नहीं मगर आदमी का कलाम।
२६. कोई दम जाता है कि मैं उसे दोज़ख़ में धंसाता हूँ।
२७. और तुम ने क्या जाना दोज़ख़ क्या है।
२८. न छोड़े न लगी रखे।
२९. आदमी की खाल उतार लेती है।

ذَرْنِىْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ﴿١١﴾
وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ﴿١٢﴾
وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ﴿١٣﴾
وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ﴿١٤﴾
ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ﴿١٥﴾
كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿١٦﴾
سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ﴿١٧﴾
اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾
فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾
ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾
ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾
ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾
ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾
فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ﴿٢٤﴾
اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾
سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾
وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾
لَا تُبْقِىْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾
لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾
عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

وَمَا جَعَلْنَآ أَصْحٰبَ النَّارِ إِلَّا مَلٰٓئِكَةً
وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ
كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ
وَيَزْدَادَ الَّذِينَ اٰمَنُوٓا إِيمٰنًا وَّلَا
يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُونَ
وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ
وَّالْكٰفِرُونَ مَاذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا
مَثَلًا كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَهْدِي مَنْ يَّشَآءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ
رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٰى
لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ ع
كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾
وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾
وَالصُّبْحِ إِذَآ أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾
إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾
نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾
لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ أَنْ يَّتَقَدَّمَ
أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٧﴾
كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿٣٨﴾
إِلَّآ أَصْحٰبَ الْيَمِينِ ﴿٣٩﴾

३०. उस पर उन्नीस दारोग़ा हैं।

३१. और हम ने दोज़ख के दारोग़ा न किए मगर फ़रिश्ते और हम ने उनकी ये गिनती न रखी मगर काफ़िरों की जाँच को इस लिए कि किताब वालों को यक़ीन आए और ईमान वालों का ईमान बढ़े और किताब वालों और मुसलमानों को कोई शक न रहे और दिल के रोगी (मरीज़) और काफ़िर कहें इस अचंबे की बात में अल्लाह का क्या मतलब है यूँ ही अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और तुम्हारे रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता और वो तो नहीं मगर आदमी के लिए नसीहत।

रुकूअ २

३२. हाँ हाँ चाँद की क़सम।

३३. और रात की जब पीठ फेरे।

३४. और सुबह की जब उजाला डाले।

३५. बेशक दोज़ख बहुत बड़ी चीज़ों में की एक है।

३६. आदमियों को डराओ।

३७. उसे जो तुम में चाहे कि आगे आए या पीछे रहे।

३८. हर जान अपनी करनी (अमल) में गिरवी है।

فِيْ جَنّٰتٍ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾
عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾
مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾
قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾
وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾
وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾
وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾
حَتّٰٓى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾
فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾
فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾
كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾
فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾
بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ
يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾
كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾
كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾
فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾
وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ
هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

३९. मगर दाहिनी तरफ़ वाले।
४०. बाग़ों में पूछते हैं।
४१. मुजरिमों से।
४२. तुम्हें क्या बात दोज़ख में ले गई।
४३. वो बोले हम नमाज़ न पढ़ते थे।
४४. और मिसकीन को खाना न देते थे।
४५. और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक़रे करते थे।
४६. और हम इन्साफ़ के दिन को झुटलाते रहे।
४७. यहाँ तक कि हमें मौत आई।
४८. तो उन्हें सिफ़ारिशयों की सिफ़ारिश काम न दे गी।
४९. तो उन्हें क्या हुआ नसीहत से मुँह फेरते है।
५०. गोया वो भड़के हुए गधे हों।
५१. कि शेर से भागे हों।
५२. बल्कि उनमें का हर शख्स चाहता है कि खुले सहीफ़े उसके हाथ में दे दिए जाएं।
५३. हरगिज़ नहीं बल्कि उनको आखिरत का डर नही।
५४. हाँ हाँ बेशक वो नसीहत है।
५५. तो जो चाहे उस से नसीहत ले।
५६. और वो क्या नसीहत मानें मगर जब अल्लाह चाहे वही है डरने के लाएक़ और उसी की शान है

मग़फ़िरत फ़रमाना।

सूरए क़ियामह

मक्की है इसमें ४० आयतें और दो रुकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. रोज़े क़ियामत की क़सम याद फ़रमाता हूँ।

२. और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर मलामत करे।

३. क्या आदमी ये समझता है कि हम हरगिज़ उसकी हड्डियाँ जमअ न फ़रमाएँगे।

४. क्यों नही हम क़ादिर हैं कि उसके पोर ठीक बनादें।

५. बल्कि आदमी चाहता है कि उसकी निगाह के सामने बदी करे।

६. पूछता है क़यामत का दिन कब होगा।

७. फिर जिस दिन आँख चुंधियाएगी।

८. और चाँद गहेगा।

९. और सूरज और चाँद मिला दिए जाएंगे।

१०. उस दिन आदमी कहेगा किधर भाग कर जाऊँ।

११. हरगिज़ नही कोई पनाह नही।

१२. उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ जा कर ठहरना है।

१३. उस दिन आदमी को उसका सब अगला पिछला जता दिया जाएगा।

१४. बल्कि आदमी खुद ही अपने हाल पर पूरी निगाह रखता है

१५. और अगर उसके पास जितने बहाने हों सब लाडाले जब भी न सुना जाएगा।

१६. तुम याद करने की जल्दी मे कुरऑन के साथ अपनी ज़ुबान को हरकत न दो।

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ①

وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ②

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ③

بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ④

بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ⑤

يَسْــَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ⑥

فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ⑦

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ⑧

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ⑨

يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَىٕذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ⑩

كَلَّا لَا وَزَرَ ⑪

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىٕذِ ِالْمُسْتَقَرُّ ⑫

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَىٕذٍۭ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ⑬

بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ⑭

وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ⑮

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ⑯

اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ⑰

१७. बेशक उसका महफ़ूज़ करना और पढ़ना हमारे ज़िम्मा है।
१८. तो जब हम उसे पढ़ चुकें उस वक़्त उस पढ़े हुए की इत्तिबाअ करो।
१९. फिर बेशक उसकी बारीकियाँ का तुम पर ज़ाहिर फ़रमाना हमारे ज़िम्मे है।
२०. कोई नहीं बल्कि ऐ काफ़िरो तुम पावँ तले कि दोस्त रखते हो।
२१. और आख़िरत को छोड़ बैठे हो।
२२. कुछ मुँह उस दिन तरो ताज़ा होंगे।
२३. अपने रब को देखते।
२४. और कुछ मुँह उस दिन बिगड़े हुए होंगे।
२५. समझते होंगे कि उनके साथ वो किया जाएगा जो कमर तोड़ दे।
२६. हाँ हाँ जब जान गले को पहुँच जाएगी।
२७. और कहेंगे कि है कोई झाड़ फूँक करे।
२८. और वो समझ लेगा कि ये जुदाई की घड़ी है और पिडली से पिडली लिपट जाएगी।
३०. उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ हाँकना है।

रुकूअ २

३१. उसने न तो सच माना और न नमाज़ पढ़ी।
३२. हाँ झुटलाया और मुँह फेरा।
३३. फिर अपने घर को अकड़ता चला।
३४. तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी।
३५. फिर तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी।
३६. क्या आदमी इस घमंड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा।

فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ﴿١٨﴾
ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿١٩﴾
كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾
وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٢١﴾
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾
اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾
وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾
تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾
كَلَّا اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾
وَقِيْلَ مَنْ رَاقٍ ﴿٢٧﴾
وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾
وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾
اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۣالْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ ع
فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾
وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾
ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾
اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾
ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾
اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾
اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾

३७. क्या वो एक बूंद ना था उस मनी का कि गिराई जाए।

३८. फिर ख़ून की फटक हुआ तो उसने पैदा फ़रमाया फिर ठीक बनाया।

३९. तो उससे वो जोड़े बनाए मर्द और औरत।

४०. क्या जिस ने ये कुछ किया वो मुर्दे न जिला सकेगा।

सूरए दहर

मदनी है इसमें इक़तीस आयतें और दो रुकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान और रहम वाला

रुकूअ १

१. बेशक आदमी पर एक वक़्त वो गुज़रा कि कहीं उसका नाम भी न था।

२. बेशक हम ने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से कि वो उसे जाँचें तो उसे सुनता देखता कर दिया।

३. बेशक हम ने उसे राह बताई या हक़ मानता या नाशुकरी करता।

४. बेशक हम ने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखी हैं ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कती आग।

५. बेशक नेक पियेंगे उस जाम में से जिस की मिलूनी काफ़ूर है।

६. वो काफ़ूर क्या एक चश्मा है जिसमें से अल्लाह के निहायत ख़ास बन्दे पियेंगे अपने महलों में से जहाँ

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾
فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ
وَالْأُنْثٰى ﴿٣٩﴾
أَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰى أَنْ يُّحْيِۦَ
الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾

سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اِحْدٰى وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ أَتٰى عَلَى الْإِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ
الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾
إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ
نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿٢﴾
إِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ إِمَّا شَاكِرًا وَّ
إِمَّا كَفُوْرًا ﴿٣﴾
إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَأَغْلٰلًا
وَّسَعِيْرًا ﴿٤﴾
إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ
مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿٥﴾
عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا
تَفْجِيْرًا ﴿٦﴾
يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا

चाहें बहा कर ले जाएँगे।
७. अपनी मन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई फैली हुई है।
८. और खाना खिलाते हैं उसकी मुहब्बत पर मिसकीन और यतीम और असीर को।
९. उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास अल्लाह के लिए खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं माँगते।
१०. बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है।
११. तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी।
१२. और उनके सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिए।
१३. जन्नत में तख़्तों पर तकिया लगाए हों गे न उसमें धूप देखें गे न ठिठर (सख़्त सरदी) ।
१४. और उसके साए उन पर झुके होंगे और उसके गुच्छे झुका कर नीचे कर दिए गए होंगे।
१५. और उन पर चाँदी के बरतनों और कूज़ों का दौर होगा जो शीशे के मिस्ल हो रहे होंगे।
१६. कैसे शीशे चाँदी के साक़ियों ने उन्हें पूरे अन्दाज़ा पर रखा होगा।
१७. और उसमें वो जाम पिलाए जाएँगे जिसकी मिलूनी अदरक होगी।
१८. वो अदरक क्या है जन्नत में एक चश्मा है जिसे सलसबील कहते है।

كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝٧
وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا
وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝٨
اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ
مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝٩
اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا
قَمْطَرِيْرًا ۝١٠
فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَ
لَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝١١
وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝١٢
مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ لَا يَرَوْنَ
فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝١٣
وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ
قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝١٤
وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ
وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ۝١٥
قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۝١٦
وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا
زَنْجَبِيْلًا ۝١٧
عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝١٨

१९. और उनके आस पास ख़िदमत फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के जब तू उन्हें देखे तो उन्हें समझे कि मोती हैं बिखेरे हुए।

२०. और जब तू उधर नज़र उठाए एक चैन देखे और बड़ी सल्तनत।

२१. उनके बदन पर हैं करेब के सब्ज़ कपड़े और क़नादीज़ के और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए गए और उन्हें उनके रब ने सुथरी शराब पिलाई।

२२. उनसे फ़रमाया जाएगा ये तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी।

रुकूअ २

२३. बेशक हम ने तुम पर कुरआॅन बतदरीज उतारा।

२४. तो अपने रब के हुक्म पर साबिर रहो और उनमें किसी गुनहगार या नाशुकरे की बात न सुनो।

२५. और अपने रब का नाम सुबह शाम याद करो।

२६. और कुछ रात में उसे सज्दा करो और बड़ी रात तक उसकी पाकी बोलो।

२७. बेशक ये लोग पाँव तले की अज़ीज़ रखते हैं और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं।

२८. हम ने उन्हें पैदा किया और उनके जोड़ बन्द मज़बूत किए और हम जब चाहों उन जैसे और बदल दें।

२९. बेशक ये नसीहत है तो जो

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ
إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ١٩
وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا
كَبِيرًا ٢٠
عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ
وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ مِن
فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ٢١
إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ
سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ٢٢ ع
إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ
تَنزِيلًا ٢٣ ج
فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ
آثِمًا أَوْ كَفُورًا ٢٤ ج
وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ٢٥
وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ
لَيْلًا طَوِيلًا ٢٦
إِنَّ هَٰؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَ
يَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ٢٧
نَّحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ
وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ٢٨

चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले।

३०. और तुम क्या चाहो मगर ये कि अल्लाह चाहे बेशक वो इल्म व हिकमत वाला है।

३१. अपनी रहमत में लेता है जिसे चाहे और ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

सूरए मुरसलात

मक्की है इसमें पचास आयतें और दो रुकूअ हैं

अल्लाह के नाम से शूरुअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. क़सम उनकी जो भेजी जाती हैं लगातार।

२. फिर ज़ोर से झोंका देने वालियाँ

३. फिर उभार कर उठाने वालियाँ।

४. फिर हक़ नाहक़ को खूब जुदा करनेवालियाँ।

५. फिर उनकी क़सम जो ज़िक्र का इल्का करती हैं।

६. हुज्जत तमाम करने या डराने को।

७. बेशक जिस बात का तुम वअ़्दा दिए जाते हो ज़रूर होनी है।

८. फिर जब तारे महव कर दिए जाएँ।

९. और जब आसमान में रख़ने पड़ें।

१०. और जब पहाड़ गुबार करके उड़ा दिए जाएँ।

११ और जब रसूलों का वक़्त आए

१२. किस दिन के लिए ठहराए गए थे।

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَاءَ اتَّخَذَ
إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾
وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾
يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ
وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣١﴾

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ﴿١﴾
فَالْعَاصِفَاتِ عَصْفًا ﴿٢﴾
وَالنَّاشِرَاتِ نَشْرًا ﴿٣﴾
فَالْفَارِقَاتِ فَرْقًا ﴿٤﴾
فَالْمُلْقِيَاتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾
عُذْرًا أَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾
إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾
فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾
وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾
وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾
وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِّتَتْ ﴿١١﴾
لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ﴿١٢﴾

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾
وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٥﴾
أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦﴾
ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ﴿١٧﴾
كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿١٨﴾
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٩﴾
أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ ﴿٢٠﴾
فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ﴿٢١﴾
إِلَىٰ قَدَرٍ مَعْلُومٍ ﴿٢٢﴾
فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ﴿٢٣﴾
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٤﴾
أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾
أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾
وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَ
أَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾
انْطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾
انْطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾
لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

१३. रोज़े-फ़ैसला के लिये।
१४. और तू क्या जाने वो रोज़े फ़ैसला क्या है।
१५. झुटलाने वालों की उस दिन ख़राबी।
१६. क्या हम ने अगलों को हिलाक न फ़रमाया।
१७. फिर पिछलों को उनके पीछे पहुँचाएंगे।
१८. मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं।
१९. उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी।
२०. क्या हम ने तुम्हें एक बेक़द्र पानी से पैदा न फ़रमाया।
२१. फिर उसे एक महफ़ूज़ जगह में रखा।
२२. एक मअ़लूम अन्दाज़ा तक।
२३. फिर हम ने अन्दाज़ा फ़रमाया तो हम क्या ही अच्छे क़ादिर।
२४. उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी।
२५. क्या हम ने ज़मीन को जमअ़ करने वाली न किया।
२६. तुम्हारे ज़िन्दों और मुर्दों की।
२७. और हम ने उस में ऊँचे-ऊँचे लंगर डाले और हम ने तुम्हें ख़ूब मीठा पानी पिलाया।
२८. उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है।
२९. चलो उसकी तरफ़ जिसे झुटलाते थे।
३०. चलो उस धूँवे की साए की तरफ़ जिसकी तीन शाखें।
३१. न साया दे न लिपट से बचाए।

३२. बेशक दोज़ख़ चिंगारियाँ उड़ाती है जैसे ऊँचे महल।

३३. गोया वो ज़र्द रंग के ऊँट हैं।

३४. उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी ।

३५. ये दिन है कि वो बोल सकेंगे।

३६. और न उन्हें इजाज़त मिले कि उज्र करें।

३७. उस दिन झुटलाने वालों की खराबी ।

३८. ये है फ़ैसले का दिन हम ने तुम्हें जमअ किया और सब अगलों को।

३९. अब अगर तुम्हारा कोई दावों हो तो मुझ पर चल लो।

४०. उस दिन झुटलाने वालों की खराबी।

रुकूअ २

४१. बेशक डर वाले सायों और चश्मों में हैं।

४२. और मेवों में जो उनका जी चाहे।

४३. खाओ और पीयो रचता हुआ अपने अअ़्माल का सिला।

४४. बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

४५. उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी।

४६. कुछ दिन खालो और बरत लो ज़रूर तुम मुजरिम हो।

४७. उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी ।

४८. और जब उन से कहा जाए कि नमाज़ पढ़ो तो नही पढ़ते।

४९. उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी ।

५०. फिर उसके बाद कौन सी बात पर ईमान लाएँगे।

إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾

كَأَنَّهُ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٥﴾

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿٣٩﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلٰلٍ وَعُيُونٍ ﴿٤١﴾

وَفَوٰكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

सूरए नबा

मक्की है इसमें चालीस आयतें और दो रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. ये आपस में काहे की पूछ गछ कर रहे हैं।

२. बड़ी ख़बर की।

३. जिस में वो कई राह हैं।

४. हाँ हाँ अब जान जाएँगे।

५. फिर हाँ हाँ जान जाएँगे।

६. क्या हम ने ज़मीन को बिछौना न किया।

७. और पहाड़ों को मेखें।

८. और तुम्हें जोड़े बनाया।

९. और तुम्हारी नींद को आराम किया।

१० और रात को पर्दा पोश किया।

११. और दिन को रोज़गार के लिए बनाया।

१२. और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत चुनाईयाँ चुनीं ।

१३. और उनमें एक निहायत चमकता चराग़ रखा।

१४. और फिर बदलियों से ज़ोर का पानी उतारा।

१५. कि उससे पैदा फ़रमाएँ अनाज और सब्ज़ा।

१६. और घने बाग़।

१७. बेशक फ़ैसला का दिन ठहरा हुआ वक़्त है।

१८. जिस दिन सूर फूँका जाएगा

سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١﴾

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ﴿٢﴾

الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ﴿٣﴾

كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ﴿٦﴾

وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ﴿٧﴾

وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ﴿٨﴾

وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾

وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾

وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾

وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿١٥﴾

وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾

तो तुम चले आओगे फ़ौजों की फ़ौजें।
१९. और आसमान खोला जाएगा कि दरवाज़े हो जाएगा।
२०. और पहाड़ चलाए जाएँगे कि हो जाएँगे जैसे चमकता रेता दूर से पानी का धोका देता।
२१. बेशक जहन्नम ताक में है।
२२. सरकशों का ठिकाना।
२३. उस में क़रनों (मुद्दतों) रहें गे।
२४. उसमें किसी तरह की ठंडक का मज़ा न पाऐंगे और न कुछ पीने को।
२५. मगर खौलता पानी और दोज़ख़ियों का जलता पीप।
२६. जैसे को तैसा बदला।
२७. बेशक उन्हें हिसाब का ख़ौफ़ न था।
२८. और उन्होंने हमारी आयतें हद भर झुटलाईं।
२९. और हम ने हर चीज़ लिख कर शुमार कर रखी है।
३०. अब चखो कि हम तुम्हें न बढ़ाऐंगे मगर अज़ाब।

रुकूअ २

३१. बेशक डर वालों को कामयाबी की जगह है।
३२. बाग़ है और अंगूर।
३३. और उठते जोबन वालियाँ एक उमर की।
३४. और छलकता जाम।
३५. जिसमें न कोई बेहूदा बात सुनें न झुटलाना।
३६. सिला तुम्हारे रब की तरफ़ से निहायत काफ़ी अता।
३७. वो जो रब है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके दर्मियान है रहमान कि उससे बात करने का इख़्तियार न रखेंगे।

وَفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾
وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾
اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾
لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾
لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾
لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾
اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾
جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾
اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾
وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾
وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾
ع فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾
اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣١﴾
حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾
وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾
وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾
لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾
جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾
رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

३८. जिस दिन जिब्रईल खड़ा हो गा और सब फ़रिश्ते परा बांधे (सफ़ बनाए) कोई न बोल सके गा मगर जिसे रहमान ने इज़्न दिया और उसने ठीक बात कही।

३९. वो सच्चा दिन है अब जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह बनाले।

४०. हम तुम्हें एक अज़ाब से डराते है कि नज़दीक आगया जिस दिन आदमी देखेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा और काफ़िर कहेगा हाये मैं किसी तरह ख़ाक हो जाता।

सूरए नाज़िआत

मक्की है इसमें छेयालीस आयतें और दो रुकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. क़सम उनकी कि सख़्ती से जान खींचें।

२. और नरमी से बन्द खोलें।

३. और आसानी से पैरें।

४. फिर आगे बढ़ कर जल्द पहुँचें।

५. फिर काम की तदबीर करें कि काफिरों पर ज़रूर अज़ाब होगा।

६. जिस दिन थर थराएगी थरथराने वाली।

७. उसके पीछे आएगी पीछे आने वाली।

८. कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे।

९. आँख ऊपर न उठा सकेंगे।

१०. काफ़िर कहते है क्या हम फिर उलटे पावँ पलटेंगे।

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۛۙ
لَا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ
وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾
ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ
اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾
اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۖۚ يَّوْمَ
يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ
الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ﴿١﴾
وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ﴿٢﴾
وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ﴿٣﴾
فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ﴿٤﴾
فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ﴿٥﴾
يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿٦﴾
تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ﴿٧﴾
قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿٨﴾
اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ﴿٩﴾
يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ؕ﴿١٠﴾

११. क्या हम जब गली हड्डियाँ हो जाएँगी।
१२. बोले यूँ तो ये पलटना तो निरा नुक़्सान है।
१३. तो वो नहीं मगर एक झिड़की।
१४. जभी वो खुले मैदान में आ पड़े होंगे।
१५. क्या तुम्हें मूसा की ख़बर आई।
१६. जब उसे उसके रब ने पाक जंगल तोवा में निदा फ़रमाई।
१७. कि फ़िरऔन के पास जा उसने सर उठाया।
१८. उससे कह क्या तुझे रग़बत इस तरफ़ है कि सुथरा हो।
१९. और तुझे तेरे रब की तरफ़ राह बताऊँ कि तू डरे।
२०. फिर मूसा ने उसे बहुत बड़ी निशानी दिखाई।
२१. उस पर उसने झुटलाया और ना फ़रमानी की।
२२. फिर पीठ दी अपनी कोशिश में लगा।
२३. तो लोगों को जमअ् किया फिर पुकारा।
२४. फिर बोला मैं तुम्हारा सब से ऊँचा रब हूँ।
२५. तो अल्लाह ने उसे दुनिया व आख़िरत दोनों के अज़ाब में पकड़ा।
२६. बेशक उसमें सीख मिलता है उसे जो डरे।

रुकूअ २

२७. क्या तुम्हारी समझ के मुताबिक तुम्हारा बनाना मुश्किल या आसमान का अल्लाह ने उसे बनाया।

أَءِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ﴿١١﴾
قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾
فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾
فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾
هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ﴿١٥﴾
إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ
طُوًى ﴿١٦﴾
اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿١٧﴾
فَقُلْ هَل لَّكَ إِلَىٰ أَن تَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾
وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ﴿١٩﴾
فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ﴿٢٠﴾
فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ﴿٢١﴾
ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ﴿٢٢﴾
فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ﴿٢٣﴾
فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٤﴾
فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ
وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾
أَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ
بَنَاهَا ﴿٢٧﴾

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ﴿٢٨﴾
وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ﴿٢٩﴾
وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ﴿٣٠﴾
اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ﴿٣١﴾
وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ﴿٣٢﴾
مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾
فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾
يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾
وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ﴿٣٦﴾
فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾
وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾
فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾
وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى
النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾
فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾
يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿٤٢﴾
فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾
اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾
اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا

२८. उसकी छत ऊँची की फिर उसे ठीक किया।

२९. उसकी रात अँधेरी की और उसकी रौशनी चमकाई।

३०. और उसके बाद ज़मीन फैलाई।

३१. उसमें से उसका पानी और चारा निकाला।

३२. और पहाड़ों को जमाया।

३३. तुम्हारे और चौपाओं के फ़ायदा को।

३४. फिर जब आऐगी वो आम मुसीबत सब से बड़ी।

३५. उस दिन आदमी याद करेगा जो कोशिश की थी।

३६. और जहन्नम हर देखने वाले पर ज़ाहिर की जाएगी।

३७. तो वो जिस ने सरकशी की।

३८. और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी।

३९. तो बेशक जहन्नम ही उसका ठिकाना है।

४०. और वो जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका।

४१. तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।

४२. तुम से क़ियामत को पूछते हैं कि वो कब केलिए ठहरी हुई है।

४३. तुम्हें उसके बयान से क्या तअल्लुक़।

४४. तुम्हारे रब ही तक उसकी इन्तिहा है।

४५. तुम तो फ़क़त उसे डराने वाले हो जो उससे डरे।

४६. गोया जिस दिन वो उसे देखेंगे दुनिया में न रहे थे मगर एक शाम या उसके दिन चढ़े।

إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحٰهَا ﴿٤٦﴾ ع

سورة عبس مكية وهي اثنتان واربعون آية وفيها ركوع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ﴿١﴾ لا

أَنْ جَآءَهُ الْأَعْمٰى ﴿٢﴾ ط

وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ﴿٣﴾ لا

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿٤﴾ ط

أَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ﴿٥﴾ لا

فَأَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿٦﴾ ط

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكّٰى ﴿٧﴾ ط

وَأَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ﴿٨﴾ لا

وَهُوَ يَخْشٰى ﴿٩﴾ لا

فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ﴿١٠﴾ ج

كَلَّآ إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ ج

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿١٢﴾ م

فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾ لا

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾ لا

بِأَيْدِيْ سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ لا

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾ ط

قُتِلَ الْإِنْسَانُ مَآ أَكْفَرَهٗ ﴿١٧﴾ ط

सूरए अबसा

मक्की है इसमें बयालीस आयतें और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. तेवरी चढ़ाई और मुँह फेरा।

२. उस पर कि उसके पास वो नाबीना हाज़िर हुआ।

३. और तुम्हें क्या मअ़लूम शायद वो सुथरा हो।

४. या नसीहत ले तो उसे नसीहत फ़ायदा दे।

५. वो जो बेपरवाह बनता है।

६. तुम उसके तो पीछे पड़ते हो।

७. और तुम्हारा कुछ ज़ियाँ नहीं उसमें कि वो सुथरा न हो।

८. और वो जो तुम्हारे हुज़ूर मलकता (नाज़ से दौड़ता हुआ) आता।

९. और वो डर रहा है।

१०. तो उसे छोड़ कर और तरफ़ मश्गूल होते हो।

११. यूँ नहीं ये तो समझाना है।

१२. तो जो चाहे इसे याद करे।

१३. उन सहीफ़ों में कि इज़्ज़त वाले हैं।

१४. बुलन्दी वाले पाकी वाले।

१५. ऐसों के हाथ लिखे हुए।

१६. जो करम वाले निकोई वाले।

१७. आदमी मारा जाइयो क्या नाशुक्र है।

१८. उसे काहे से बनाया।

१९. पानी की बूँद से उसे पैदा फ़रमाया फिर उसे तरह तरह के अनदाज़ों पर रखा।

२०. फिर उसे रास्ता आसान किया।

२१. फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में रखवाया।

२२. फिर जब चाहा उसे बाहर निकाला।

२३. कोई नही उसने अबतक पूरा न किया जो उसे हुक्म हुआ था।

२४. तो आदमी को चाहिए अपने खानों को देखे।

२५. कि हम ने अच्छी तरह पानी डाला।

२६. फिर ज़मीन को खूब चीरा।

२७. तो उसमें उगाया अनाज।

२८. और अंगूर और चारा।

२९. और जैतून और खजूर।

३०. और घने बाग़ीचे।

३१. और मेवे और दूब (घास)।

३२. तुम्हारे फ़ाएदे को और तुम्हारे चौपाओं के।

३३. फिर जब आएगी वो कान फाड़ने वाली चिंघाड़।

३४. उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई।

३५. और माँ और बाप।

३६. और जोरू और बेटों से।

३७. उनमें से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वही उसे बस है।

مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ط ﴿١٨﴾

مِنْ نُّطْفَةٍ ط خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ لا ﴿١٩﴾

ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ لا ﴿٢٠﴾

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ لا ﴿٢١﴾

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ط ﴿٢٢﴾

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ط ﴿٢٣﴾

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ لا ﴿٢٤﴾

اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا لا ﴿٢٥﴾

ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا لا ﴿٢٦﴾

فَاَنْبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا لا ﴿٢٧﴾

وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا لا ﴿٢٨﴾

وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا لا ﴿٢٩﴾

وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا لا ﴿٣٠﴾

وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا لا ﴿٣١﴾

مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ط ﴿٣٢﴾

فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ز ﴿٣٣﴾

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ لا ﴿٣٤﴾

وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ لا ﴿٣٥﴾

وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ط ﴿٣٦﴾

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ط ﴿٣٧﴾

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾
३८. कितने मुँह उस दिन रौशन होंगे।

ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾
३९. हँसते खुशियाँ मनाते।

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾
४०. और कितने मुँहों पर उस दिन गर्द पड़ी होगी।

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾
४१. उन पर सियाही चढ़ रही है।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾
४२. ये वही है काफ़िर बदकार।

सूरए तकवीर

سُورَةُ التَّكْوِيرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً

मक्की है इसमें उन्तीस आयतें है और एक रुकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾
१. जब धूप लपेटी जाए।

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾
२. और जब तारे झड़ पड़ें।

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ﴿٣﴾
३. और जब पहाड़ चलाए जाऐं।

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾
४. और जब थलकी (गाभन) उँटनियाँ छूटी फिरें।

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾
५. और जब वहशी जानवर जमअ़ किए जाएँ।

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾
६. और जब समन्दर सुलगाए जाएँ।

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾
७. और जब जानों के जोड़ बनें।

وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾
८. और जब ज़िन्दा दबाई हुई से पूछा जाए।

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾
९. किस खता पर मारी गई।

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿١٠﴾
१०. और जब नाम-ए-अअमाल खोले जाएं।

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾
११. और जब आसमान जगह से खींच लिया जाए।

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾
१२. और जब जहमन्नम भड़काया जाए।

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾
१३. और जब जन्नत पास लाई जाए।

१४. हर जान को मअ़लूम हो जाएगा जो हाज़िर लाई।
१५. तो क़सम है उनकी जो उलटे फिरें।
१६. सीधे चलें थम रहें।
१७. और रात की जब पीठ दे।
१८. और सुबह की जब दम ले।
१९. बेशक ये इज़्ज़त वाले रसूल का पढ़ना है।
२०. जो कूव्वत वाला है मालिके अ़र्श के हुज़ूर इज़्ज़त वाला।
२१. वहाँ उसका हुक्म माना जाता है अमानतदार है।
२२. और तुम्हारे साहि़ब मजनून नहीं।
२३. और बेशक उन्हों ने उसे रौशन किनारा पर देखा.
२४. और ये नबी ग़ैब बताने में बखील नहीं।
२५. और कुरआँन मरदूद शैतान का पढ़ा हुआ नहीं फिर किधर जाते हो।
२७. वो तो नसीह़त ही है सारे जहान के लिए।
२८. उसके लिए जो तुम में सीधा होना चाहे।
२९. और तुम क्या चाहो मगर ये कि चाहे अल्लाह सारे जहान का रब।

सूरए इनफ़ितार

मक्की है इसमें उन्नीस आयतें है
और एक रुकूअ़ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला

१. जब आसमान फट पड़े।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾
فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾
الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾
وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾
وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾
اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿١٩﴾
ذِيْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ﴿٢٠﴾
مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢١﴾
وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾
وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾
وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾
فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾
اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾
لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾
وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ
رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾

وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾ لا

२. और जब तारे झड़ पड़े।

وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ﴿٣﴾ لا

३. और जब समन्दर बहा दिए जाएँ।

وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ لا

४. और जब क़बरें कुरेदी जाएँ।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ﴿٥﴾ ط

५. हर जान, जान लेगी जो उसने आगे भेजा और जो पीछे।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ
الْكَرِيْمِ ﴿٦﴾ لا

६. ऐ आदमी तुझे किस चीज़ ने फ़रेब दिया अपने करम वाले रब से।

الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ لا

७. जिस ने तुझे पैदा किया फिर ठीक बनाया फिर हमवार फ़रमाया।

فِيْۤ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾ ط

८. जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब दिया।

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ﴿٩﴾ لا

९. कोई नहीं बल्कि तुम इन्साफ़ होने को झुटलाते हो।

وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿١٠﴾ لا

१०. और बेशक तुम पर कुछ निगहबान हैं।

كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ﴿١١﴾ لا

११. मोअज़्ज़ज़ लिखने वाले।

يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾

१२. जानते हैं जो कुछ तुम करो।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿١٣﴾ ج

१३. बेशक नेकोकार ज़रूर चैन में है।

وَاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ﴿١٤﴾ ج

१४. और बेशक बदकार ज़रूर दोज़ख में है।

يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾

१५. इन्साफ़ के दिन उसमें जाएँगे।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿١٦﴾ ط

१६. और उससे कहीं छुप न सकेंगे।

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٧﴾ لا

१७. और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन।

ثُمَّ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٨﴾ ط

१८. फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन।

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ط
وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾ ع

१९. जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी और सारा हुक्म उस दिन अल्लाह का है।

सूरए मुतफ़्फ़फ़ीन

मक्की है इसमें छत्तीस आयतें है और १ रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. कम तौलने वालों की ख़राबी है।

२. वो कि जब औरों से माप लें पूरा लें।

३. और जब उन्हें माप तोल कर दें कम कर दें।

४. क्या उन लोगों को गुमान नही कि उन्हें उठना है।

५. एक अज़्मत वाले दिन के लिए।

६. जिस दिन सब लोग रब्बुल आलमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।

७. बेशक काफ़िरों की लिखत सब से नीची जगह सिज्जीन में है।

८. और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है।

९. वो लिखत एक मुहर किया नविश्ता है।

१०. उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है।

११. जो इन्साफ़ के दिन को झुटलाते है।

१२. और उसे न झुटलाए गा मगर हर सरकश।

१३. जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं कहे अगलों की कहानियाँ है।

१४. कोई नही बल्कि उनके दिलो पर ज़ंग चढ़ा दिया है उनकी कमाइयों ने।

سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتٌّ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۙ ﴿١﴾

الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ
يَسْتَوْفُوْنَ ۖ ﴿٢﴾

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۗ ﴿٣﴾

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۙ ﴿٤﴾

لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۙ ﴿٥﴾

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۗ ﴿٦﴾

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۗ ﴿٧﴾

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۗ ﴿٨﴾

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۗ ﴿٩﴾

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ ﴿١٠﴾

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۗ ﴿١١﴾

وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ
اَثِيْمٍ ۙ ﴿١٢﴾

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ۗ ﴿١٣﴾

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

كَلَّآ إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ﴿١٥﴾

१५. हाँ हाँ बेशक वो उस दिन अपने रब के दीदार से महरूम हैं।

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ﴿١٦﴾

१६. फिर बेशक उन्हें जहन्नम में दाख़िल होना।

ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾

१७. फिर कहा जाएगा ये है वो जिसे तुम झुटलाते थे।

كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾

१८. हाँ हाँ बेशक नेकों कि लिखत सब से ऊँची महल इल्लीयीन में है।

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿١٩﴾

१९. और तू क्या जाने इल्लीयीन कैसी है।

كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ ﴿٢٠﴾

२०. वो लिखत एक मुहर किया नविश्ता है।

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾

२१. कि मुक़र्रब जिसकी ज़ियारत करते हैं।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾

२२. बेशक नेकोकार ज़रूर चैन में है।

عَلَى الْأَرَآئِكِ يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾

२३. तख़्तों पर देखते हैं।

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾

२४. तू उनके चेहरों में चैन की ताज़गी पहचाने।

يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾

२५. निथरी शराब पिलाए जाएँगे जो मुहर की हुई रखी है।

خِتَٰمُهُ مِسْكٌ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَٰفِسُونَ ﴿٢٦﴾

२६. उसकी मुहर मुश्क पर है और उसी पर चाहिए कि ललचाएँ ललचाने वाले।

وَمِزَاجُهُ مِن تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾

२७. और उसकी मिलोनी तसनीम से है।

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾

२८. वो चश्मा जिस से मुक़र्रबाने बारगाह पीते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ ءَامَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾

२९. बेशक मुजरिम लोग ईमान वालों से हँसा करते थे।

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾

३०. और जब वो इन पर गुज़रते तो ये आपसमें उन पर आँखों से इशारे करते।

३१. और जब अपने घर पलटते खुशियाँ करते पलटते।

३२. और जब मुसलमानों को देखते कहते बेशक ये लोग बहके हुए हैं।

३३. और ये कुछ उन पर निगहबान बना कर ना भेजे गए।

३४. तो आज ईमान वाले काफ़िरों से हंसते हैं।

३५. तख़्तों पर बैठे देखते हैं।

३६. क्यों कुछ बदला मिला काफ़िरों को अपने किए का।

सूरए इनशिक़ाक़

मक्की है इसमें पचीस आयतें है और १ रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. जब आसमान शक़ हो।

२. और अपने रब का हुक्म सुने और उसे सज़ावार ही ये है।

३. और जब ज़मीन दराज़ की जाए।

४. और जो कुछ उसमें है डाल दे और ख़ाली हो जाए।

५. और अपने रब का हुक्म सुने और उसे सज़ावार ही ये है।

६. ऐ आदमी बेशक तुझे अपने रब की तरफ़ ज़रूर दौड़ना है फिर उससे मिलना।

७. तो वो जो अपना नाम-ए-अअ़्माल दहिने हाथ में दिया जाए।

८. उससे अन्क़रीब सहल हिसाब लिया जाएगा।

وَإِذَا انْقَلَبُوٓا إِلَىٰٓ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا
فَكِهِينَ ﴿٣١﴾
وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوٓا إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ
لَضَآلُّونَ ﴿٣٢﴾
وَمَآ أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَٰفِظِينَ ﴿٣٣﴾
فَالْيَوْمَ الَّذِينَ ءَامَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ
يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾
عَلَى الْأَرَآئِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾
ع هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

سُورَةُ الْانْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَعِشْرُونَ ءَايَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾
وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾
وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾
وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾
وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾
يَٰٓأَيُّهَا الْإِنْسَٰنُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ
كَدْحًا فَمُلَٰقِيهِ ﴿٦﴾
فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ ﴿٧﴾
فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾

९. और अपने घर वालो की तरफ़ शाद शाद पलटेगा।
१०. और वो जिसका नाम-ए-अअ्माल उसकी पीठ के पीछे दिया जाए।
११. वो अन्क़रीब मौत माँगेगा।
१२. और भड़कती आग में जाएगा।
१३. बेशक वो अपने घर में खुश था।
१४. वो समझा कि उसे फिरना नही।
१५. हॉ क्यों नही बेशक उसका रब उसे देख रहा है।
१६. तो मुझे क़सम है शाम के उजाले की।
१७. और रात की और जो चीज़ें उसमें जमअ होती हैं।
१८. और चॉंद कि जब पूरा हो।
१९. ज़रूर तुम मंज़िल ब मंज़िल चढ़ोगे।
२०. तो क्या हुआ उन्हें ईमान नही लाते।
२१. और जब कुरआॅन पढ़ा जाए सज्दा नही करते।
२२. बल्कि काफ़िर झुटला रहे हैं।
२३. और अल्लाह खूब जानता है जो अपने जी में रखते हैं।
२४. तो तुम उन्हें दर्दनाक अज़ाब की बिशारत दो।
२५. मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए वो सवाब है जो कभी खतम न होगा।

وَّيَنْقَلِبُ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ﴿٩﴾
وَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ كِتَـٰبَهُۥ وَرَآءَ ظَهْرِهِۦ ﴿١٠﴾
فَسَوْفَ يَدْعُوا۟ ثُبُورًا ﴿١١﴾
وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ﴿١٢﴾
إِنَّهُۥ كَانَ فِىٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ﴿١٣﴾
إِنَّهُۥ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ﴿١٤﴾
بَلَىٰٓ إِنَّ رَبَّهُۥ كَانَ بِهِۦ بَصِيرًا ﴿١٥﴾
فَلَآ أُقْسِمُ بِٱلشَّفَقِ ﴿١٦﴾
وَٱلَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾
وَٱلْقَمَرِ إِذَا ٱتَّسَقَ ﴿١٨﴾
لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ﴿١٩﴾
فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾
وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ ٱلْقُرْءَانُ لَا يَسْجُدُونَ ۩ ﴿٢١﴾
بَلِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾
وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾
فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾
إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ
لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍۭ ﴿٢٥﴾

सूरए बुरूज

मक्की है इसमें बाईस आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. क़सम आसमान की जिस में बुर्ज हैं।

२. और उस दिन की जिस का वअ्दा है।

३. और उस दिन की जो गवाह है।

४. और उस दिन की जिस में हाज़िर होते हैं खाई वालों पर लअ्नत हो।

५. उस भड़कती आग वाले।

६. जब वो उसके किनारों पर बैठे थे।

७. और वो खुद गवाह हैं जो कुछ मुसलमानों के साथ कर रहे थे।

८. और उन्हें मुसलमानों का क्या बुरा लगा यही न कि वो ईमान लाए अल्लाह इज़्ज़त वाले सब खूबियों सराहे पर।

९. कि उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

१०. बेशक जिन्हों ने ईज़ा दी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को फिर तौबा न की उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और उनके लिए आग का अज़ाब।

११. बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए बाग़ है जिन के नीचे नहरें रवाँ यही बड़ी कामयाबी है।

سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَانِ وَعِشْرُونَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿١﴾

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٢﴾

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٣﴾

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٤﴾

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿٥﴾

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿٦﴾

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ

شُهُوْدٌ ﴿٧﴾

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا

بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿٨﴾

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٩﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ

وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ﴿١٠﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ﴿١١﴾

१२. बेशक तेरे रब की गिरफ्त बहुत सख्त है।
१३. बेशक वो पहले करे और फिर करे।
१४. और वही बख़्शने वाला अपने नेक बन्दो पर प्यारा।
१५. इज़्ज़त वाले अर्श का मालिक।
१६. हमेशा जो चाहे कर लेने वाला।
१७. क्या तुम्हारे पास लश्करो की बात आई।
१८. वो लश्कर कौन फ़िरऔन और समूद।
१९. बल्कि काफ़िर झुटलाने में है।
२०. और अल्लाह उनके पीछे से उन्हे घेरे हुए है।
२१. बल्कि वो कमाले शरफ़ वाला कुरआॅन है।
२२. लौहे महफ़ूज़ में।

सूरए तारिक़

मक्की है इसमें सतरह आयतें और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. आसमान की क़सम और रात को आने वाले की।
२. और कुछ तुम ने जाना वो रात को आने वाला क्या है।
३. खूब चमकता तारा।
४. कोई जान नहीं जिस पर निगहबान न हो।
५. तो चाहिए कि आदमी ग़ौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया।
६. जस्त करते (उछलते हुए) पानी से।
७. जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से।

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾
إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾
وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ﴿١٤﴾
ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ﴿١٥﴾
فَعَّالٌ لِمَا يُرِيدُ ﴿١٦﴾
هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿١٧﴾
فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾
وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ﴿٢٠﴾
بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ﴿٢١﴾
فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾

سُورَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعَ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾
وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾
النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾
إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾
فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾
خُلِقَ مِنْ مَاءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾
يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ﴿٧﴾

إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ﴿٨﴾

८. बेशक अल्लाह उसके वापस कर दने पर क़ादिर है।

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ﴿٩﴾

९. जिस दिन छुपी बातों की जाँच होगी।

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾

१०. तो आदमी के पास न कुछ ज़ोर होगा न कोई मददगार।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾

११. आसमान की क़सम जिस से मेंह उतरता है।

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾

१२. और ज़मीन की जो उस से खिलती है।

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾

१३. बेशक कुरआॅन ज़रूर फ़ैसला की बात है।

وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

१४. और कोई हँसी की बात नहीं।

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾

१५. बेशक काफ़िर अपना सा दाव चलते है।

وَأَكِيدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾

१६. और मै अपनी खुफ़िया तद्बीर फ़रमाता हूँ।

ع فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

१७. तो तुम काफ़िरों को ढील दो उन्हें कुछ थोड़ी मुहलत दो।

سُورَةُ الْأَعْلَىٰ مَكِّيَّةٌ

सूरए अअ्ला

मक्की है इसमें उन्नीस आयतें हैं और एक रुकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ﴿١﴾

१. अपने रब के नाम की पाकी बोलो जो सब से बुलन्द है।

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٢﴾

२. जिस ने बना कर ठीक किया।

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ ﴿٣﴾

३. और जिस ने अनदाज़ा पर रख कर राह दी।

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ﴿٤﴾

४. और जिस ने चारा निकाला।

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ﴿٥﴾

५. फिर उसे खुश्क सियाह कर दिया।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسَىٰ ﴿٦﴾

६. अब हम तुम्हे पढ़ाएंगे कि तुम न भूलोगे।

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ﴿٧﴾

७. मगर जो अल्लाह चाहे बेशक वो जानता है हर खुले और छुपे को।

८. और हम तुम्हारे लिए आसानी का सामान करदेंगे।

९. तो तुम नसीहत फ़रमाओ अगर नसीहत काम दे।

१०. अनक़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है।

११. और इससे वो बड़ा बदबख़्त दूर रहेगा।

१२. जो सब से बड़ी आग में जाएगा।

१३. फिर न उसमें मरे और न जिए।

१४. बेशक मुराद को पहुँचा जो सुथरा हुआ।

१५. और अपने रब का नाम ले कर नमाज पढ़ी।

१६. बल्कि तुम जीती दुनिया को तरजीह देते हो।

१७. और आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली।

१८. बेशक ये अगले सहीफ़ों में है।

१९. इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।

सूरए ग़ाशिया

मक्की है इसमें छब्बीस आयतें हैं
और १ रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

१. बेशक तुम्हारे पास उस मुसीबत की खबर आई जो छा जाएगी।

२. कितने ही मुँह उस दिन ज़लील होंगे।

३. काम करें मशक़्क़त झेलें जायें।

४. भड़कती आग में।

५. निहायत जलते चश्मे का पानी पिलाए जाएं।

६. उन के लिए कुछ खाना नहीं मगर आग के कांटे।

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۝٨
فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝٩
سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝١٠
وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝١١
الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝١٢
ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝١٣
قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝١٤
وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝١٥
بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝١٦
وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝١٧
اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝١٨
صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۝١٩

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ ...

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝١
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢
عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣
تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝٤
تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝٥
لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝٦

७. कि न फ़रबही लाएँ और न भूक मे काम दें।

८. कितने ही मुँह उस दिन चैन में हैं।

९. अपनी कोशिश पर राज़ी।

१०. बुलन्द बाग़ में।

११. कि उसमें कोई बेहूदा बात न सुनेंगें।

१२. उसमें रवाँ चश्मा है।

१३. उसमें बुलन्द तख़्त है।

१४. और चुने हुए कूज़े।

१५. और बराबर बराबर बिछे हुए क़ालीन।

१६. और फैली हुई चाँदनियाँ।

१७. तो क्या ऊँट को नहीं देखते कैसा बनाया गया।

१८. और आसमान को कैसा ऊँचा किया गया।

१९. और पहाड़ों को कैसे क़ाएम किए गए।

२०. और ज़मीन को कैसे बिछाई गई।

२१. तो तुम नसीहत सुनाओ तुम तो यही नसीहत सुनाने वाले हो।

२२. तुम कुछ उन पर कड़ोड़ा नहो (ज़ामिन) नहीं।

२३. हाँ जो मुँह फेरे और कुफ़्र करे।

२४. तो उसे अल्लाह बड़ा अज़ाब देगा।

२५. बेशक हमारी ही तरफ़ उनका फिरना है।

لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ۝٧

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاعِمَةٌ ۝٨

لِسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠

لَا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ۝١١

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢

فِيهَا سُرُرٌ مَرْفُوعَةٌ ۝١٣

وَأَكْوَابٌ مَوْضُوعَةٌ ۝١٤

وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝١٥

وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ۝١٦

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝١٧

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝١٨

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝١٩

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝٢٠

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝٢١

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۝٢٢

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ۝٢٣

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝٢٤

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝٢٥

२६. फिर बेशक हमारी ही तरफ़ उनका हिसाब है।

सूरए फ़ज्र

मक्की है इसमें तीस आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. उस सुबह की क़सम।
२. और दस रातों की ।
३. और जुफ़्त और ताक़ की।
४. और रात की जब चल दे।
५. क्यों उसमें अक़्लमन्द के लिए क़सम हुई।
६. क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रब ने आद कैसा किया।
७. वो इरम हृद से ज़्यादा तूल वाले।
८. कि उन जैसा शहरों में पैदा न हुआ।
९. और समूद जिन्हों ने वादी में पत्थर की चट्टानें काटीं।
१०. और फ़िरऔन को चौमेख़ा करता।
११. जिन्हों ने शहरों में सर कशी की।
१२. फिर उन में बहुत फ़साद फैलाया।
१३. तो उन पर तुम्हारे रब ने अज़ाब का कोड़ा बक़ूव्वत मारा।
१४. बेशक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ ग़ाएब नहीं।
१५. लेकिन आदमी तो जब उसे उसका रब आज़माए कि उसको जाह और नेअ्मत दे जब तो कहता है मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُونَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾
وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾
وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾
وَالَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾
هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾
أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾
إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾
الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾
وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾
وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾
الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾
فَأَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾
فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿١٣﴾
إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾
فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَأَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْ أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ
رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ﴿١٦﴾
كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿١٧﴾
وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿١٨﴾
وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾
وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾
كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾
وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾
وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍ ۢبِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ
يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ﴿٢٣﴾
يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ﴿٢٤﴾
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٥﴾
وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٦﴾
يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾
ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾
فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾
وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾

१६. और अगर आजमाए और उसका रिज़्क उस पर तंग करे तो कहता है मेरे रब ने मुझे ख़्वार किया यूँ नही।

१७. और बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नही करते.

१८. और आपस मे एक दूसरे को मिसकीन के खिलाने की रग़्बत नहीं देते।

१९. और मीरास का माल हप हप खाते हो।

२०. और माल की निहायत महब्बत रखते हो।

२१. हाँ हाँ जब ज़मीन टकरा कर पाश पाश कर दी जाए।

२२. और तुम्हारे रब का हुक्म आए और फ़रिश्ते क़तार क़तार।

२३. और उस दिन जहन्नम लाई जाए उस दिन आदमी सोचे गा और अब उसे सोचने का वक़्त कहाँ।

२४. कहेगा हाए किसी तरह मैं ने जीते जी नेकी आगे भेजी होती।

२५. तो उस दिन उसका सा अज़ाब कोई नहीं करता।

२६. और उस का सा बाँधना कोई नहीं बाँधता।

२७. ऐ इत्मिनान वाली जान।

२८. अपने रब की तरफ़ वापस हो यूँ कि तू उससे राज़ी वो तुझ से राज़ी।

२९. फिर मेरे ख़ास बन्दों मे दाख़िल हो।

३०. और मेरी जन्नत मे आ।

सूरए बलद

मक्की है इसमें बीस आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. मुझे इस शहर की क़सम।

२. कि ऐ महबूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।
३. और तुम्हारे बाप इब्राहीम की क़सम और उसकी अवलाद की कि तुम हो।
४. बेशक हम ने आदमी को मशक़्क़त में रहता पैदा किया।
५. क्या आदमी ये समझता है कि हरगिज़ इस पर कोई क़ुदरत नही पाएगा।
६. कहता है मैं ने ढेरों माल फ़ना कर दिया।
७. क्या आदमी ये समझता है कि उसे किसी ने न देखा।
८. क्या हम ने उसकी दो आँखें न बनाईं।
९. और ज़ुबान और दो होंट।
१०. और उसे दो उभरी चीज़ों की राह बताई।
११. फिर बे-तअम्मुल घाटी में न कूदा।
१२. और तूने क्या जाना वो घाटी क्या है।
१३. किसी बन्दे की गरदन छुड़ाना।
१४. या भूक के दिन खाना देना।
१५. रिश्तेदार यतीम को।
१६. या खाक नशीन मिसकीन को।
१७. फिर हो उन से जो ईमान लाए और उन्हों ने आपस में सब्र की वसीय्यतें कीं और आपसमें मेहरबानी की वसीय्यतें कीं।
१८. ये दाँ[illegible] तरफ़ वाले हैं।
१९. और जिन्हों ने हमारी आयतों से कुफ़्र किया वो बाएँ तरफ़ वाले।
२०. उन पर आग है कि उसमें डाल कर ऊपर से बन्द कर दी गई।

وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۲﴾
وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۙ﴿۳﴾
لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ ؕ﴿۴﴾
اَیَحْسَبُ اَنْ لَّنْ یَّقْدِرَ عَلَیْهِ اَحَدٌ ۘ﴿۵﴾
یَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ؕ﴿۶﴾
اَیَحْسَبُ اَنْ لَّمْ یَرَهٗۤ اَحَدٌ ؕ﴿۷﴾
اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَیْنَیْنِ ۙ﴿۸﴾
وَلِسَانًا وَّشَفَتَیْنِ ۙ﴿۹﴾
وَهَدَیْنٰهُ النَّجْدَیْنِ ۚ﴿۱۰﴾
فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۖ﴿۱۱﴾
وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ؕ﴿۱۲﴾
فَكُّ رَقَبَةٍ ۙ﴿۱۳﴾
اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ یَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ۙ﴿۱۴﴾
یَّتِیْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۙ﴿۱۵﴾
اَوْ مِسْكِیْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ؕ﴿۱۶﴾
ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ؕ﴿۱۷﴾
اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْمَیْمَنَةِ ؕ﴿۱۸﴾
وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ
الْمَشْئَمَةِ ؕ﴿۱۹﴾

सूरए शम्स

मक्की है इसमें पन्द्रह आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. सूरज और उसकी रौशनी की कसम।

२. और चाँद की जब उसके पीछे आए।

३. और दिन की जब उसे चमकाए।

४. और रात की जब उसे छुपाए।

५. और आसमान और उसके बनाने वाले की क़सम।

६. और ज़मीन और उसके फैलाने वाले की क़सम।

७. और जान की और उसकी जिसने उसे ठीक बनाया।

८. फिर उसकी बदकारी और उसकी परहेज़गारी दिल में डाली।

९. बेशक मुराद को पहुँचाया जिस ने उसे सुथरा किया।

१०. और नामुराद हुआ जिस ने उसे मआसियत में छुपाया।

११. समूद ने अपनी सरकशी से झुटलाया।

१२. जबकि उसका सब से बद बख़्त उठ खड़ा हुआ।

१३. तो उनसे अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया अल्लाह के नाका और उसकी पीने की बारी से बचो।

१४. तो उन्हो ने झुटलाया फिर नाका की कोंचे काट दी तो उन पर उनके रब ने उनके गुनाह के सबब तबाही डाल कर वो बसती बराबर कर दी।

१५. और उसके पीछा करने का उसे ख़ौफ नहीं।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ﴿١﴾
وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ﴿٢﴾
وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ﴿٣﴾
وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ﴿٤﴾
وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ﴿٥﴾
وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ﴿٦﴾
وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ﴿٧﴾
فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا ﴿٨﴾
قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ﴿٩﴾
وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ﴿١٠﴾
كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ﴿١١﴾
اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ﴿١٢﴾
فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ
وَسُقْيٰهَا ﴿١٣﴾
فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۥ فَدَمْدَمَ
عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ﴿١٤﴾
وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿١٥﴾

सूरए लैल

मक्की है इसमें इक्कीस आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. और रात की क़सम जब छाए।
२. और दिन की जब चमके।
३. और उसकी जिस ने नर व मादा बनाऐ।
४. बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ है।
५. तो वो जिस ने दिया और परहेज़गारी की।
६. और सब से अच्छी को सच माना।
७. तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहय्या कर देंगे।
८. और वो जिस ने बुख़्ल किया और बेपरवाह बना।
९. और सब से अच्छी को झुटलाया।
१०. तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी मुहय्या कर दें गे।
११. और उसका माल उसे काम न आए गा जब हिलाकत में पड़ेगा।
१२. बेशक हिदायत फ़रमाना हमारे ज़िम्मे है।
१३. और बेशक आख़िरत और दुनिया दोनों के हम ही मालिक हैं।
१४. तो मैं तुम्हें डराता हूँ उस आग से जो भड़क रही है।
१५. न जाएगा उसमें मगर बड़ा बद बख़्त।
१६. जिस ने झुटलाया और मुँह फेरा।
१७. और बहुत उस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार।
१८. जो अपना माल देता है कि सुथरा हो।

سُوْرَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ﴿١﴾
وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ﴿٢﴾
وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰٓى ﴿٣﴾
اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ﴿٤﴾
فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ﴿٥﴾
وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ﴿٦﴾
فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ﴿٧﴾
وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ﴿٨﴾
وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ﴿٩﴾
فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ﴿١٠﴾
وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ﴿١١﴾
اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ﴿١٢﴾
وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿١٣﴾
فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ﴿١٤﴾
لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿١٥﴾
الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٦﴾
وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿١٧﴾
الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ﴿١٨﴾

१९. और किसी का उस पर कुछ एहसान नहीं जिसका बदला दिया जाए।

२०. सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है जो सब से बुलन्द है।

२१. और बेशक क़रीब है कि वो राज़ी होगा।

सूरए दुहा

मक्की है इसमें ग्यारह आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. चाश्त की क़सम।

२. और रात की जब पर्दा डाले।

३. कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मकरूह जाना।

४. और बेशक पिछली तुम्हारे लिए पहली से बेहतर है।

५. और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

६. क्या उस ने तुम्हें यतीम न पाया फिर जगह दी।

७. और तुम्हें अपनी महब्बत में खुद रफ़्ता पाया तो अपनी तरफ़ राह दी।

८. और तुम्हें हाजतमन्द पाया फिर ग़नी कर दिया।

९. तो यतीम पर दबाव न डालो।

१०. और मंगता को न झिड़को।

११. और अपने रब की नेअमत का खूब चर्चा करो।

सूरए इन्शिराह

मक्की है इसमें आठ आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ ⑲

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ⑳

وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ㉑

سُورَةُ الضُّحَىٰ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالضُّحَىٰ ①

وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ②

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ③

وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَكَ مِنَ الْأُولَىٰ ④

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ⑤

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ⑥

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ⑦

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ⑧

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ⑨

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ⑩

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ⑪

سُورَةُ الْانْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ①

रुकूअ १

१. क्या हम ने तुम्हारा सीना कुशादा न किया।

२. और तुम पर से तुम्हारा वो बोझ उतार लिया।

३. जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ी थी।

४. और हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।

५. तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है।

६. बेशक दुशवारी के साथ आसीनी है।

७. तो जब तुम नमाज़ से फारिग़ हो तो दुआ में मेहनत करो।

८. और अपने रब ही की तरफ़ रग़बत करो।

सूरए तीन

मक्की है इसमें आठ आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. अंजीर की क़सम और ज़ैतून।

२. और तूरे सीना।

३. और इस अमान वाले शहर की।

४. बेशक हम ने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया।

५. फिर उसे हर नीची से नीची हालत की तरफ़ फेर दिया।

६. मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किए कि उन्हें बेहद सवाब है।

७. तो अब क्या चीज़ तुझे इन्साफ़ के झुटलाने पर बाइस है।

८. क्या अल्लाह सब हाकिमों से

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝٢

الَّذِىٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥

اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝٧

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝١

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝٢

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝٣

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِىْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝٤

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝٥

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٦

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٧

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨

बढ़ कर हाकिम नहीं।

सूरए अलक़

मक्की है इसमें १९ आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया।

२. आदमी को ख़ून की फुटक से बनाया।

३. पढ़ो और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम।

४. जिस ने क़लम से लिखना सिखाया।

५. आदमी को सिखाया जो न जानता था।

६. हाँ हाँ बेशक आदमी सरकशी करता है।

७. इस पर कि अपने आप को ग़नी समझ लिया।

८. बेशक तुम्हारे रब ही की तरफ़ फिरना है।

९. भला देखो तो जो मनअ़ करता है।

१०. बन्दे को जब वो नमाज़ पढ़े।

११. भला देखो तो अगर वो हिदायत पर होता।

१२. या परहेज़गारी बताता तो क्या ख़ूब था।

१३. भला देखो तो अगर झुटलाया और मुँह फेरा।

१४. तो क्या हाल होगा क्या न जाना कि अल्लाह देख रहा है।

१५. हाँ हाँ अगर बाज न आया तो ज़रूर हम पेशानी के बाल पकड़ कर

سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۚ ﴿١﴾

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ ﴿٢﴾

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ ﴿٣﴾

الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ ﴿٤﴾

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۗ ﴿٥﴾

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۙ ﴿٦﴾

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۗ ﴿٧﴾

اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۗ ﴿٨﴾

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ۙ ﴿٩﴾

عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۗ ﴿١٠﴾

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۙ ﴿١١﴾

اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ۗ ﴿١٢﴾

اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۗ ﴿١٣﴾

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۗ ﴿١٤﴾

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًۢا
بِالنَّاصِيَةِ ۙ ﴿١٥﴾

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ ﴿١٦﴾

فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۙ ﴿١٧﴾

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾

كَلَّا ۚ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾

سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾

تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ

رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ﴿٤﴾

سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

سُورَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ

الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنفَكِّينَ حَتَّىٰ

تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿١﴾

رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿٢﴾

فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿٤﴾

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ

खींचेंगे।

१६. कैसी पेशानी झूटी ख़ताकार।

१७. अब पुकारे अपनी मजलिस को।

१८. अभी हम सिपाहियों को बुलाते हैं।

१९. हाँ हाँ उसकी न सुनो और सज्दा करो और हम से क़रीब हो जाओ।

सूरए क़द्र

मक्की है इसमें पाँच आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।

२. और तुम ने क्या जाना क्या शबे क़द्र।

३. शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर।

४. उसमें फ़रिश्ते और जिब्रईल उतरते हैं अपने रब के हुक्म से हर काम के लिए।

५. वो सलामती है सुबह चमकने तक।

सूरए बय्येना

मदनी है इसमें आठ आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. किताबी काफ़िर और मुश्रिक अपना दीन छोड़ने को न थे जब तक उनके पास रौशन दलील न आए।

२. वो कौन वो अल्लाह का रसूल कि पाक सहीफ़े पढ़ता है।

३. उन में सीधी बातें लिखी हैं।

४. और फूट न पड़ी किताब वालों में

मगर बाद इसके कि वो रौशन दलील उनके पास तशरीफ़ लाए।

५. और उन लोगों को तो यही हुक्म हुआ कि अल्लाह की बन्दगी करें निरे उसी पर अक़ीदा लाते एक तरफ़ के हो कर और नमाज़ क़ाएम करें और ज़कात दें और ये सीधा दीन है।

६. बेशक जितने काफ़िर हैं किताबी और मुशरिक सब जहन्नम की आग में हैं हमेशा उसमें रहेंगे वही तमाम मख़लूक़ में बद्तर हैं।

७. बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किए वही तमाम मख़लूक़ में बेहतर है।

८. उनका सिला उनके रब के पास बसने के बाग़ जिनके नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा हमेशा रहें अल्लाह उन से राज़ी और वो उस से राज़ी ये उसके लिए है जो अपने रब से डरे।

सूरए ज़िलज़ाल

मदनी है इसमें आठ आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. जब ज़मीन थरथरा दी जाए जैसा उसका थरथराना ठहरा है।

२. और ज़मीन अपने बोझ बाहर फेंक दे।

३. और आदमी कहे उसे क्या हुआ।

४. उस दिन वो अपनी ख़बरें बताएगी।

५. इस लिए कि तुम्हारे रब ने उसे हुक्म भेजा।

६. उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरेंगे कई राह होकर ताकि अपना

لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ
الْبَرِيَّةِ ۝٦
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ
اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧
جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا
عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝٨

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١
وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝٢
وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝٣
يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝٤
بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝٥
يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ

किया दिखाए जाएं।
७. तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा।
८. और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

सूरए आदियात

मक्की है इसमें ग्यारह आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. क़सम उनकी जो दौड़ती हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई।
२. फिर पत्थरों से आग निकालते हैं सुम मारकर।
३. फिर सुबह होते ताराज करते हैं।
४. फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं।
५. फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं।
६. बेशक आदमी अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है।
७. और बेशक वो उस पर खुद गवाह है।
८. और बेशक वो माल की चाहत में ज़रूर कर्रा (तेज़) है।
९. तो क्या नहीं जानता जब उठाए जाएंगे जो क़बरों में हैं।
१०. और खोल दी जाएगी जो सीनों में है।
११. बेशक उनके रब को उस दिन उनकी सब खबर है।

सूरए क़ारिआ

मक्की है इसमें ग्यारह आयतें है और १ रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. दिल दहलाने वाली।
२. क्या वो दहलाने वाली।

لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾
فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ﴿٧﴾
وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ﴿٨﴾

سُورَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدٰى عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ﴿١﴾
فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ﴿٢﴾
فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ﴿٣﴾
فَأَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ﴿٤﴾
فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ﴿٥﴾
إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ﴿٦﴾
وَإِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ﴿٧﴾
وَإِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ﴿٨﴾
أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ﴿٩﴾
وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ﴿١٠﴾
إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ﴿١١﴾

سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدٰى عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

الْقَارِعَةُ ﴿١﴾
مَا الْقَارِعَةُ ﴿٢﴾

३. और तूने क्या जाना क्या है दहलाने वाली।

४. जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतिंगे।

५. और पहाड़ होंगे जैसे धुनकी ऊन।

६. तो जिस की तौलें भारी हुईं।

७. वो तो मन मानते ऐश में है।

८. और जिस की तोलें हलकी पड़ें।

९. वो नीचा दिखाने वाली गोद में है।

१०. और तूने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली।

११. एक आग शोले मारती।

सूरए तकासुर

मक्की है इसमें आठ आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़्यादा तलबी ने।

२. यहाँ तक कि तुम ने क़ब्रें का मुँह देखा।

३. हाँ हाँ जल्द जान जाओगे।

४. फिर हाँ हाँ जल्द जान जाओगे।

५. हाँ हाँ अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की महब्बत न रखते।

६. बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे।

७. फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝٣

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ

الْمَبْثُوْثِ ۝٤

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ

الْمَنْفُوْشِ ۝٥

فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٦

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٧

وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٨

فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝٩

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝١٠

نَارٌ حَامِيَةٌ ۝١١

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۝١

حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٤

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝٥

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧

८. फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से नेअ़मतों से पुरसिश होगी।

सूरए अस्र

मक्की है इसमें तीन आयतें हैं और एक रुकूअ़ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला

रुकूअ़ १

१. उस ज़मानए महबूब की क़सम।
२. बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है।
३. मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किए और एक दूसरे को ह़क़ की ताकीद की और एक दूसरे को सब्र की वसीय्यत की।

सूरए हमज़ा

मक्की है इसमें नौ आयतें हैं और एक रुकूअ़ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला

रुकूअ़ १

१. ख़राबी है उस के लिए जो लोगों के मुँह पर अ़ैब करे पीठ पीछे बदी करे।
२. जिस ने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा।
३. क्या ये समझता है कि उसका माल उसे दुनिया में हमेशा रखे गा।
४. हरगिज़ नहीं ज़रूर वो रौंदने वाली में फेंका जाएगा।
५. और तूने क्या जाना क्या रौंदने वाली।
६. अल्लाह की आग कि भड़क रही है।
७. वो जो दिलों पर चढ़ जाएगी।
८. बेशक वो उन पर बन्द कर दी जाएगी।
९. लम्बे लम्बे सुतूनों में।

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ﴿٨﴾

سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

وَالْعَصْرِ ﴿١﴾
إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ﴿٢﴾
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾

سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ﴿١﴾
الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ﴿٢﴾
يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ﴿٣﴾
كَلَّا لَيُنبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ﴿٤﴾
وَمَا أَدْرٰكَ مَا الْحُطَمَةُ ﴿٥﴾
نَارُ اللّٰهِ الْمُوقَدَةُ ﴿٦﴾
الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ﴿٧﴾
إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ ﴿٨﴾
فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿٩﴾

सूरए फ़ील

मक्की है इसमे पाँच आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया।

२. क्या उनका दाँवा तबाही में ना डाला।

३. और उन पर परिन्दों की टुकड़ियाँ (फ़ौजें) भेजीं।

४. कि उन्हें कंकर के पत्थरों से मारते।

५. तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा)।

सूरए क़ुरैश

मक्की है इसमें चार आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. इस लिए कि क़ुरैश को मेल दिलाया।

२. उनके जाड़े और गर्मी दोनों के कूच में मेल दिलाया।

३. तो उन्हें चाहिए इस घर के रब की बन्दगी करें।

४ जिस ने उन्हें भूक में खाना दिया और उन्हें एक बड़े ख़ौफ़ से अमान बख़्शा।

सूरए माऊन

मक्की है इसमें सात आयतें हैं और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. भला देखो तो जो दीन को झुटलाता है।

२. फिर वो, वो है जो यतीम को धक्के देता है।

३. और मिसकीन को खाना देने की रग़बत नहीं देता।

سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ①

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ②

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ③

تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِنْ سِجِّيلٍ ④

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَأْكُولٍ ⑤

سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ ①

إِيلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ②

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَٰذَا الْبَيْتِ ③

الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ ۙ وَآمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ ④

سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ①

فَذَٰلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ②

وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ③

४. तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है।
५. जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे है।
६. वो जो दिखावा करते हैं।
७. और बरतने की चीज़ माँगे नही देते।

सूरए कौसर

मक्की है इसमें तीन आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. ऐ महबूब बेशक हम ने तुम्हें बेशुमार खूबियाँ अता फ़रमाईं।
२. तो तुम अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो।
३. बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही हर ख़ैर से महरूम है।

सूरए काफ़िरून

मक्की है इसमें छ: आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो।
२. न मैं पूजता हूँ जो तुम पूजते हो।
३. और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूँ।
४. और न मैं पूजूँगा जो तुम ने पूजा।
५. और न तुम पूजोगे जो मैं पूजता हूँ।
६. तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन।

सूरए नस्र

मदनी है इसमें तीन आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

१. जब अल्लाह की मदद और फ़तह आए।

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ﴿٤﴾
الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿٥﴾
الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ﴿٦﴾
وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ﴿٧﴾

سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ﴿١﴾
فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿٢﴾
إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ﴿٣﴾

سُورَةُ الْكَافِرُونَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتُّ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١﴾
لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٢﴾
وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٣﴾
وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ﴿٤﴾
وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٥﴾
لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿٦﴾

سُورَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ﴿١﴾

२. और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं।
३. तो अपने रब की सना करते हुए उसकी पाकी बोलो और उससे बख़्शिश चाहो बेशक वो बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला है।

सूरए लहब

मक्की है इसमें पांच आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. तबाह हो जाएँ अबूलहब के दोनों हाथ और वो तबाह हो ही गया।
२. उसे कुछ काम न आया उसका माल और न जो कमाया।
३. अब धंसता है लिपट मारती आग में वो।
४. और उसकी जोरू लकड़ियों का गट्ठा सर पर उठाती।
५. उसके गले में खजूर की छाल का रस्सा।

सूरए इख़्लास

मक्की है इसमें चार आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. तुम फ़रमाओ वो अल्लाह है वो एक है।
२. अल्लाह बे नियाज़ है।
३. न उसकी कोई अवलाद और न वो किसी से पैदा हुआ।
४. और न उसके जोड़ का कोई।

सूरए फ़लक़

मक्की है इसमें पांच आयतें है और एक रुकूअ है

अल्लाह के नाम से शुरुअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

रुकूअ १

१. तुम फ़रमाओ मैं उसकी पनाह लेता हूँ जो सुबह का पैदा करनेवाला है।

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ
اللّٰهِ اَفْوَاجًا ﴿٢﴾
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ
اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾

سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ﴿١﴾
مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ﴿٢﴾
سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ﴿٣﴾
وَّامْرَاَتُهٗ ۭ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ﴿٤﴾
فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ﴿٥﴾

سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿١﴾
اَللّٰهُ الصَّمَدُ ﴿٢﴾
لَمْ يَلِدْ ڏ وَلَمْ يُوْلَدْ ﴿٣﴾
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿٤﴾

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿٢﴾
وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ﴿٣﴾
وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ﴿٤﴾
وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾ ع

२. उसकी सब मखलूक़ की शर से।
३. और अँधेरी डालने वाले के शर से जब वो डूबे।
४. और उन औरतो के शर से जो गिरहों में फूँकती हैं।
५. और हसद वाले के शर से जब वो मुझ से जले।

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتُّ اٰيٰتٍ

सूरए नास

मक्की है इसमें छ: आयतें हैं और एक रुकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला

قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿١﴾
مَلِكِ النَّاسِ ﴿٢﴾
إِلٰهِ النَّاسِ ﴿٣﴾
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ﴿٤﴾
الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿٥﴾
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾ ع

रुकूअ १

१. तुम कहो मैं उसकी पनाह में आया जो सब लोगों का रब।
२. सब लोगों का बादशाह।
३. सब लोगों का खुदा।
४. उसके शर से जो दिल में बुरे ख़तरे डाले और दबक रहे।
५. वो जो लोगों के दिलों में वसवसे डालते है।
६. जिन और आदमी।



دُعَاءِ خَتْمِ الْقُرْاٰنِ

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِيْ فِيْ قَبْرِيْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِيْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّ
هُدًى وَّرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِيْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِيْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِيْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ
الَّيْلِ وَاٰنَآءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِيْ حُجَّةً يَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۚ اٰمِيْنَ